

**DUE DATE SLIP****GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for two weeks at the most.

BORROWER'S No.	DUE DATE	SIGNATURE

# वंश भास्कर

( पंचम खण्ड )

[ बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि-मंथिनी टीका सहित ]

मूल लेखक :

सूर्य मल्ल मिश्रण

सम्पादक

स्वर्गीय पंडित रामकर्ण आसोपा

भूतपूर्व प्राध्यापक

इतिहास विभाग

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३



एकाधिकारी वितरक

**बाफना बुक डिपो**

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ षष्ठदशराशिप्रारम्भः ॥ ६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती विप्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इम बुंदियपुर आइकैं, रतनसिंह सठ रान ॥

रविमैल्ल १८८१ हिं गारत रिपुन, पंचधन तिन दिय प्रान ॥ १ ॥

इत अर्द्धहिं बसु ८ अवद वय, सठ नृप हुव सुरतान १८९१ ॥

अधिप सठहिं चित्तोर उत, भो विक्रम बिजु भानं ॥ २ ॥

पै बिक्रम १ वय मध्यपर, यातैं नहिं उतैं आस ॥

रसुकेँ इत बुंदीस सुतर, पैहैं स्व वय प्रकास ॥ ३ ॥

षट्पात ॥

बालपनहु यह अक्षुध तियन छलि विर्जन प्रतारहिं ॥

मोचत खिन बस्ति मल्ल पिष्टि लत्ता हनि पारहिं ॥

कतिकन सोयत कुमति पयन विव सल्य प्रवेशहिं ॥

अंलुकैं नारिन अटतैं दूर करि लखत कुंवेसहिं ॥

सामंत १८७१ आदि गुरु बंलु सब बाहिर १ लखि वरजैं बहुत ॥

निजजननि आदि अंवरोधन २ सुचहिं राव जाकों हुनुत ॥ ४ ॥

गुरुजन वरजन गंजि १ सिलुहु गिचरैं स्वतंत्रसम ॥

जननिहु वरजत जानि तर्कैं जलंधात द्रष्टतम ॥

१ धर्मनृप को मारने लें ॥ १ ॥ २ लाहे आठ वर्ष की अवस्था के स्थान में, विक्रमादित्य बिना ३ लानपाला हुआ ॥ २ ॥ ४ विक्रमादित्य मध्य कारवा में था इस कारण ५ चित्तोर में कुमार की आज्ञा नहीं थी ॥ ३ ॥ ६ प्रकाशनें जियों को छुड़कर साधना करता था उन स्त्रियों को छोड़ते समय ७ योगि में पूज रहने के स्थान में बस जातकर, पीठ पर = लात (१६ प्रहार) करके विगाता था और कितनी भी पाप्य करती हुई जियों की योगि में ९ लानपाला हु-  
देता था और ११ फिरतो हुई जियों को १० साधार (लहंगे) दूर करके १२ दूरा लान देतता १३ जनाते लें ॥ ४ ॥ अहे लोनों के मना करने को १४ दवा-  
र १५ पानी लें क्षुण सरता चिन्सारता

इस बारह १२ वय अब्द भयो तदपिहु खल भास्यो ॥

जननील्लग सब जनन प्रदत्तमति कुसुत प्रकार्यो ॥

भटसचिवश्चादि अखिलान भनिय अप्पन नियत बिलोम

इहिं सिसुहिं आदि दैवो उचित रहहिं नतो कुलतिथ निरह ॥

दोहा—पुष्प समय मंचोरपुर, व्याहिय जैहँ बरसीह १८४१ ॥

तैंहँ सगपन खुरतान १८९१ को, अग्यै हुब सब ईहँ ॥ ६ ॥

नृप नारायन १८७१ क्रिय नियत, सुतसुतको संबंध ॥

जिनतिथ तिन लिय जानिकैं, यह हह ६१ प सिसु अंध ॥

सब बुंदोके भटसचिवर, बदि आके कहि व्याह ॥

अवरठाहु मन्त्री न यह, राँच्यो सुनत कुराह ॥ ८ ॥

अहर्पति हह ६१ नईसको, बिंथरयो अपजस वार ॥

कन यह सुनि मंचोरके, करतभये इनकार ॥ ९ ॥

पट्टपात्र—स्वांत तवहि भटसचिवर विजन लागि बीजें विचारन

लोधिय मनन सुपुत्र किति जग हुब सहकारन ॥

तजि समर्तव्य अब त्वरित याहि जित तित उरकावहि ॥

नृप अनूहर्पन निखिल लाज अप्पन सिर लावहि ॥

यातैन लाखहु अब सम १ असनर अदिपसिलुहु व्याहहु कुम

कछुदूर बहुरि बँहूर किय नृप संबंध बिखाह नैति ॥ १० ॥

दोहा—वह चालुक बछूरइन, महा कृपन सिरमोर ॥

भूपति दम्बदुलकर २००००० भुव, जस परबस जस १ जोर ॥

पट्टपात्र—जिहिं नालहु बनि जीव कहत कोउ न अभद्र क

नृप तव कवि तिहिं नाम लिखत एकांत श्रद्ध लाहि ॥

बारह १ पर्य की अवरथा में हुआ तो भी बुष्ट ही दीखा २ हत बुद्धि ३ सयने  
कि अपन ४ आग्य ५ उलटा है ॥ ५ ॥ चरापर की ६ इच्छा से ॥ ६ ॥ ७ ॥ बुरे  
में ७ राजा हुआ सुनकर ॥ ८ ॥ ८ प्रतिदिन ९ कैला १० लखह ॥ ११ मन  
कारण चिनारने लगे १३ फारस सहित १४ सखता (परादरी) को छोड़कर १५  
राजा के १६ कुमार रहने से १७ बाल्योत खोलंखी प्रणिय के १८ नवता

कन्ह कन्ह पुनि कन्ह मनहिं लिखि लिखि हम निर्भय ॥

भोजन अहुमैत येदि जानि जिततित जय जय जय ॥

जिहि कन्ह जानित तंशुजा जुगलखदिनी लाहु तैंहें निर्भयतिवस  
रतान १८९ १ बरहिं व्याहिय लविधि आहि स्वमुख १ सावक २ न अस  
दोहा ॥

जियत होइ इह कन्ह जो, तो बड़ लखु तनयाहु ॥

तुपहु जानि छुट १ हिं न दें, विरहें लख वर व्याहु ॥ १३ ॥

अनहु भयो पुव्वदि दौ, लख न रखा सुत तंतु ॥

हम तिहिं नारिन छुट १ इन, मन्थौ वर अति संतु ॥ १४ ॥

पट्यात् ॥

कन्ह कनिय बालुकिव नाम हरिकुमरि १ = १ १ सुखच्छन ॥

वरि आनिय लुंदीस दिसति १ पक्ष लाहु २ दिवच्छेन ॥

दुनापी १ अंगहि दयितें २ २ चतुर १ कुसइज २ प्रहिचान्यौ ॥

अति अघिज्ज गृह आइ संद निज भाग्य प्रदान्यौ ॥

परि पवन अविष ससुमतिहु ससुभ्तावहु किन स्वीयसुत ॥

बस जो अलैं न तो अब बड़हु देवर १ जेठ २ न सुखि हुन १ १५ ॥

वधू सुगुन गिनि बिहसि इहिल कुलजन चंदाउति १ ८ १ ३ ॥

जंपतें ससुचितें जानि नियत बलिहार फोर लुति ॥

सामंता १ ८ १ १ दिक स्वीय बंधूनत कथित प्रवाधिय ॥

अप्यन जिय अंगमि न लखहु लरिकी सुभ सोधिय ॥

पुनि गिनहु नारि आश्रय पतिहि वहू तदपि अैसी बहत ॥  
 तुम ११ हमर कहैं न इम यह तनय निज कुसंग खलपन नदत ॥  
 इम विचारि नय उचित लिखुहि लिखयो लु समस्तन ॥  
 पै प्रतिदिन प्रतिकूल वन्यो मयमय बय बस्तन ॥  
 हार्यन वपु सोलहम ६१ विसंत भास्यो दूनो रघुध ॥  
 हितकी दोधनदार करे प्रतिहत कलि जुग कुध ॥  
 वपुसेद बहन १ पुनि सूढपन २ वयसंगहि गय हुन २ बहत ॥  
 संभरनरेस सोलह १६ समहु चल्हहि रथ ससुंचित चहत ॥  
 व्यायो १२ न जिल विहित उचित खुरली २ आराधन ॥  
 हित हेरहिं तिन तरैजि सखि गुरु कार्य कुसाधन ॥  
 दसमी १० सुख मैह दिनहु बैठि रथ कर्ज बनावहि ॥  
 अरुंग सबल पय अटत पानि अंसन भर पावहि ॥  
 सामंत १८७ १ आदितकत स्वहित बिबुहि बीज किय सब ॥  
 बाहुकी १८९ १ सहित चंद्राउति १८८ ३ हु कूर वजिय करि हितक  
 दोहा ॥

गुन नव तियि १५६३ सक पुव्वगत, दढि इत वह बनवीर ॥  
 हुव अधीस हनि विक्रमहि, स्वयं रान अधेसीर ॥ १९ ॥

दुष्टा से १ गर्जना करता है २ लवने शिजा दी ३ उलटा ४ लदयस्त; वा  
 ५. मन से अर्थात् बिना जोहरी का जूट जाये लैले जिलको फारसी में (शु-  
 चंदार) कहते हैं अपस्थावाले १ पकरों के समान अर्थात् युवा अवस्था वा  
 पकरा काभी बहुत होता है. सोलहवें ६ वर्ष में ७ प्रवेश किया तब दुष्टा ४  
 दीप्ता ८ शरीर का नांस और मुखपन दोनों अवस्था के साथ बढ़ते गये. स-  
 ल ७ वर्ष की अवस्था में ही ९ उचित रथ पर चढ़कर चलने लगा ॥ १७ ॥  
 पानन नही ११ करता था इसीप्रकार ११ बाण विद्या भी उचित नहीं समझी  
 हित चाहनेवालों को १३ समझा कर. छोटा साधन करके पडा १४ शरीर का  
 विद्या विजय दशली आदि १५ वस्तु के दिनों में भी रथ में बैठकर १६  
 करता था. बलाबाल १७ लवकों के १८ कंधे पर सार देकर पैदल फिरता. बिना को  
 रण ही सब को १९ उड़ा कर देवे २० मुख बनी ॥ १८ ॥ \* दणवीर विक्रमादित्य  
 का मारकर २१ स्वयं चित्तौड़ का राणा बन गया २२ पाप में बंद करानेवाला ॥ १९ ॥

\* यह वरुण महाशय को गोमा के बड़े पुत्र पृथ्वीराज का पाँचवाँ पुत्र था जिसने १५९२ के सभ

कुंभलाननसिय कुमति, जो दासीभव जात ॥

सु बनवीर इस अप्प सिर, चामर छल चलात ॥ २० ॥

पट्टपात्

भोजसु अग्रज भनिय प्रसिय कुमरहि सु कालगति ॥

हन्यौ रतनरहहे ६१स भयउ विक्रमशतव भूपति ॥

उदयसिंह ४तस अनुज हुतो कुंभिलगढ लै हद ॥

तिहिं अंतर बढि अतुल सु हुव बनवीर दुरासद ॥

महिप जु प्रमत्त अहिफेनमद इस नरबद १८७।२दौहित्र वह ॥

विक्रम हन्यौ सु बनवीर बढि वं है नृप प्रतप्यो असह ॥ २१ ॥

दोहा ॥

कुंभिलगढ हो तब कथित, उदयसिंह ४ अनुजात ॥

रोहु रह्यो यह दुखख सहि, परयो समुक्ति पैदिपात ॥ २२ ॥

पट्टपात् ॥

वरस तीन ३ कछु विकल अप्प बनवीर अकंटक ॥

तप्यो असह चित्तोर छलत प्रभु सक्ति छकाछक ॥

कुल सीसोदनकोहु गौंजि न सक्यो जिहिं गौरव ॥

दुजोहन बल दरित रहे नमिनमि जिय कौरव ॥

बनवीर असन इक ३दिन विरथि करत सुदकर सलिल करि ॥

दाधीप वैद्य आचार्य द्विज परंरयो खेमहु विंदु परि ॥ २३ ॥

महाराजा कुम्भा का पोता जो दासी के उदर से पैदा हुआ था उस वनवीर अपने ऊपर चाकर छल चलाए ॥ २० ॥ १ दुरा (दुष्ट) ॥ २१ ॥ विक्रमादित्य का २ छोटा भाई २ यज्ञपात ॥ २२ ॥ ४ विशेष चाराख से ५ नहीं दबासके, जलका ६ गडप्पन ७ हुंयोंधन के गल से ८ बरेहुग ९ भोजन करके जख के साथ पोता था उसका ११ जलकख डंकर जालख के १० लगा ॥ २३ ॥

महाराजा विक्रमादित्य को मारकर चित्तोड़ की गद्दी ली फिर एक दिन, भोजन करते समय अपना विदित भोजन पुरखिया बहुबाण रावत "खान" को दिया जिसने वनवीर को पासवानिया समझकर भोजन नहीं किया। इस पर बाबानुवाद डटकर रावतखान उदयसिंह के पास कुम्भलगढ चलागया, बहुत ही ना एकाग्रित करके सम्वत् १५९७ में वनवीर को निकालकर चित्तोड़ पर अधिकार करके महाराजा उदयसिंह चित्तोड़ के स्वामी हुए।

मृनिप हिज जल असुचि न किम हरि हिजन निवारहु ॥

रान काहिन सब रान विहित कर सुखि बिचारहु ॥

यहुरि खेम खिजि बढिय सुखहुख रान डरे सब ॥

दासीभव तुम द्विजन असुचिबुख जल छुवात अब ॥

यह सुनि महुपि बनबीर अति सु द्विज कहिदिय देस सन ॥

तब उदयधसिंह अभिलाख तकि गो कुंभिलगढ गिरि गहन ॥ २४ ॥

बोहा ॥

पठये दल तँहँ लिखि पिहित, रान भटन इहिरीति ॥

उदयसिंहअनहु इहाँ, तुम द्विज गिराचि प्रतीति ॥ २५ ॥

पट्टपात ॥

सुल्लपो तब द्विज खेम उदयधअगँ सम्मत सब ॥

बढिय उदयध धिनु पित्त कहहु बिस्दास वनै कव ॥

छंद सुभटन प्रति छन्न पुनिहु पठये इहिँ आसय ॥

सूचित धन तब सवन जोरि पठयो अभीष्ट जय ॥

चितोर द्वारपालन चतुर क्रम बरुँ अपि स्वकीय करि ॥

बोहिनी बढत आयउ उदयध धुँव सब मिलन प्रतीति धरि ॥ २६ ॥

अब रजनि गढ आत द्वार भेदिन उघारिदिय ।

परिकर निज समुपेत कहि पर नर प्रवेश किय ।

प्रथमै पैरै बनबीर पिंड तो तो तस पवैर ।

भजिहुजाइ जो भीत तोहु जन जियत बतावै २ ।

राजा के साथ १ करके जल को शुद्ध जायो २ अपवित्र, उदयसिंह की ३ अग्नि  
ताम्रा करके ॥ २४ ॥ ४ छाने पत्र लिखकर भेजा ५ बिस्दास करके ॥ २५ ॥  
उदयसिंह को जाने समय ६ तब प्रकाश किया, उदयसिंह ने कहा कि बि  
ना ७ भय भजे बिस्दास कैसे होसता है, उनरायो के नाम ८ पत्र ९ छाने  
पात्र करने की १० शब्दों से गिराव के ११ द्वारपालों को १२ धन देकर कयले कि  
ये १३ लेना १४ मिश्रण १५ बिस्दास करके ॥ २६ ॥ १६ परचत १७ सहित १८ युद्ध में  
पाया जाता तो बनबीर का शरीर मिलजाता और भयजाता तो बसको हा  
व जोचित प्रताप को दया हुआ वह हमने नहीं जाना ॥ २७ ॥

कैसेहु दोहु जानी न कहु पै सर नव तिथि १५९५ साक पर ॥  
चित्तोर आइ भो वह अचल धनी उदय ४ मेवार धर ॥२७॥  
॥ दोहा ॥

उदय ४ गन चित्तोर इम, लाहि गहिय नय लाइ ॥  
मेवारे निज गिनि सुमति, लिय सब स्व हिय लगाइ ॥२८॥  
स्व हित खेम आचार्यसन, वन्यो दहु सु खुव धारि ।  
सत्त ७ ग्राम पिप्पलि १ सहित, दे दारिद दिय दारि ॥ २९ ॥  
कथन खेम १ के कुलहुको, रान उदय २ कुल राखि ॥  
धन्यंतरि १ जगते सर २ धुर, सब १ रक्खि सब रसंखि ॥ ३० ॥  
पुर बुंदिय सुरतान १ ८९ १ पहु, इत यह पसु आचार ॥  
द्वित आखत ताकँहँ इनत, सठ कुनिपति अहुसार ॥३१॥  
बुंदियदिन बीसे निवल, वरतहि नृप रविमल १ ८८ १ ॥  
जिततिततै जु रि अरिजनन, होतहि खिन किय हल ॥३२॥  
केसर १ हायर २ नाम करि, जुगरंजवनन इत आत ॥  
कोटापति सिसु लखि कियउ, पुर कोटा निज पातै ॥३३॥  
जिन बुंदिय लिय जानिकै, तब यह सिसु सुरतान १ ८९ १ ॥  
इम कोटा करि निज अमल, पेटे जवन समान ॥ ३४ ॥  
॥ पट्टपात ॥

वावर ३ ७ रन भजि बहुरि सुपहु रविमल १ ८८ १ सरन सुनि ।  
भंजि बहुत रान अट पन्यो राघव १ ८७ १ तदीय पुनि ॥  
सुत वीरम १ ८८ १ कन्ह १ ८८ १ सुहि बाल वय औहि दिष्ट बस ।  
जिहिं निकासि पति जवन बने कोटा अरिष्ट बस ॥  
सु अरिष्ट फलाहिं सुर्जन १ १० १ समय पै अनतो खल सबल परि ।  
ए जवन कहि जैताउत दारन कोटापति हुव विजय करि ॥३५॥

दरिद्र को १ काट दिया । २३ ॥ लय २ साजी है ॥ ३० ॥ ३ सुर भाग्य के अनु-  
सार ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ कोटा पर ४ पहे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ १ है ४ भाग्य बल न  
७ लज्जुगता के वल से, यह अज्जुगता राव सुर्जन के समय से पादसे ॥ ३५ ॥



जैत्र १८२३ कुलहु जबतैहि निबल परिगो रहि निर्भुव ।  
 केसर १६ागर २ कहत हुलासि कोटा अधीस हुव ।  
 इम दिसदिस अंधेर दुजनै छुंदिय भुव दब्बहि ।  
 सठ कुपुत्र सुरतान १८९१ गिनत जिततित अरि गब्बहि ।  
 निज जन भजै जु हितकी निपुन ताहि इनै प्रतिकूल तकि ।  
 जिन भुजन भार भट १ वंछु २ जे सब गेहैन बेठे सरकि ॥ ३६ ॥  
 इकदिन काका उभय २ महँस १ सत्तल १ दासी खुव ।  
 अनाकाशनहु आइ हड्डराज १८९१ हिं तर्जत हुव ॥  
 मंदन कुल तजि मग्न भुवन न रहै इस भोरे ।  
 जिन हसाहु रिपुजनन न गिनि हजरेहु निहोरे ।  
 कुलधर्म अबहु बहि तजि कुमति सहनय विलसहु राज्यसुख ।  
 अबतैहि नतौ सहिदै अटक दुर्जन जिम लहि कैददुख ॥ ३७ ॥  
 सुनत एह सुरतान १८९१ कोप अंतर सदर्प करि ।  
 जब बस परत न जानि टारि कछु समय अप्प टरि ।  
 निज सम्मति जन निकट १ दूर २ रोधं क करिकै हुँत ।  
 काका दुव २ छलि किमहु निलज पकराइलये हुँत ।  
 निज डिग कढाइ दोउ २ न नयन कहि अनाच्य तिनको कुटिल ।  
 पठये निकेत मंचन पटाके कहत भली हुव अंध किल ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

इकखत घोर अनर्थ यह, तजि जम जिम सुरतान १८९१ ॥  
 सेसहु कति नही १ सोकर सह, थू थू करि गय थान ॥ ३९ ॥

॥ पट्पात ॥

इमहि जैतगढ अधिप सिंह १८९१ लघुबयहि भीम १८८१ २ सुत ।

१ बिना मूर्खि २ शत्रुओं ने ३ गर्व करते हैं ४ अपने अपने घरों में जा बैठे । ५ बिना बुलाए लाकर ६ धमकाया ७ शत्रुओं को अत हंसा ८ नीति के सहित राज्य को भोग ९ रोक ॥ ३७ ॥ १० रोकनेवालों को दूर करके ११ शीघ्र १२ स्तुति योग्य ॥ ३८ ॥ १३ लज्जा और शोक के साथ ॥ ३९ ॥

कहिप नृपहिं कुल काल जोहु सहि रहिय द्रोहजुत ।  
 रक्खि विरह रोधकन यह १८९११हु लहि कहूँ \* एकाकिय १ ।  
 जिहिं गिराइ तालजल दुष्ट चिरलग + गोता द्विय ।  
 मरतहि सु जानि † बोरत मनुज छोरत हुव तिहिं रक्खि छल ।  
 अटकत निसास जलभृत उदर बच्यो सु निठिन आयुबल ॥४०॥  
 बहत घोरपन बिखिख सु नृप सुर्जन १८६११सामंत १८८११ हु ॥  
 करि अर्पन धिक्कार बारवारहि तँरज्यो बहु ॥

रायमल्ल १८८१२तिम दुष्ट संहज कल्लयानमल्ल १८८१३सह ॥  
 उभयशपितृव्यक एहु अटकि हारे खल आग्रह ॥  
 जननी १८८१३रुतासरानी १८९१२हु जुगवरजि रही तँस सन्नु बनि  
 उपदेस ससुंकि बिप सभ अधम रहत निरंकुस दिन १२जनि ॥४१॥

दोहा ॥

उज्जि अधिप बिश्वास इम, सावधान अब सर्व ॥  
 रुचि जिम बचि लाग्यो रहन, गिनि कुपुत्रपन गर्व ॥ ४२ ॥  
 मन सलज्ज अप्पन मरन, बंछत रन बहु बंधु ॥  
 निज छत न लख्यो जाइ नृप, अवनो गेरत अंधु ॥ ४३ ॥  
 जैपै<sup>१</sup> हित उपदेस जुहि, बरतै सुहि विपरीत ॥  
 हल्ल ६१न कुलन कुपुत्र हुव, असो निर्गम अतीत ॥ ४४ ॥  
 अर्जुन १८८११की खँटो अखिल, प्रभुता सुरजन १८९११ पास ॥  
 जोहु निजन गिनि लखि जैर, बँटै<sup>२</sup> तसहु बिनास ॥ ४५ ॥

\* इकल्ला लेकर. ताखाव के जल में † डुबाया ‡ डुबाते जानकर. पेट में? जल भरकर  
 ॥४०॥ २ देखकर ३ धिक्कार देकर ४ धमकाया ५ दोनों काका ६ हठ करके ७ अंजुश  
 हित ॥ ४१ ॥ राजा का विश्वास ८ छोड़कर ॥ ४२ ॥ बहुत बान्धव लज्जा स-  
 हित सुख में अपना मरना ९ चाहने लगे १० अपने होते हुए ११ श्रुति को १२  
 रूप में डालता है ॥ ४३ ॥ जो हित का उपदेश १३ कहै सो १४ उलटा बर्तता  
 १५ वेद का १६ नाश करनेवाला; अथवा कुल की प्रतिज्ञा को मिटानेवाला  
 ॥ ४४ ॥ १७ सम्पादन की हुई १८ लम्पूर्ण १९ चाहते हैं ॥ ४५ ॥

कर्मध्वज जसकर्णके, जावल पत्तन जाइ ॥

सुत तस भैरवकी सुता, पटु सुर्जन १८९१ लिप पाइ ॥ ४६ ॥

पद्मिका ॥

सुर्जन १८९१ सु लग्न पहिलैं सुजान, बय उचित बीर सह मह विधान  
जसकर्ण तनय भैरव जनीसु, कर सुदुल साहि व्याहिय कनीसु ॥ ४७ ॥  
सौभाग्यदेवि १८९ अभिधान सौहि, जगविदित जसोदा १८९१ नाम जोहि  
आनी सुव्याहिसुर्जन १८९१ उदार, बसु बुद्धि बिरचि अति मह विचार  
सुरतान १८९१ सु सोभा लखिसकयो न, तैसे सु बंधु पर दित तकयो न ॥  
इक रक्खिय माहुंदा अधीन, लुंभि इतर पटाके ग्राम लीन ॥ ४९ ॥  
घर ऋद्धं तदपि सोभा घटी न, हुव सुर्जन १८९१ नैक न बिभवहीन ॥  
बुंदीस ताहि मारन विचारि, सठ विजन बुद्धि स्वमताबुसारि ॥ ५० ॥  
माहुंदा सल्लत कहिय मूढ, गगदावंहु तिहि दल जाइ गुंढ ॥  
अर्जुन १८८१ के उद्धत त्रिकहिं तोरि, बसु अखिल बुद्धि आनहु बहोरि  
यह मंत्रधर्म्यो इक दिवस अग्न, सुनिलिप उन पुबबहि छल समग्न ॥  
मूढन रचेहु कहु दुर्दंत मंल, तकि धर्म चलत रहत सु स्वतंत्र ॥ ५२ ॥  
अर्जुन १८८१ कै खट ६ मित हुव अपत्य, सुत तीन रहे तैं आयु सत्य ॥  
सुर्जन १८९१ तिम अखय राज १८९१ सूर, पुनिराम १८९१ अनुजगुन  
ग्रामपूर ॥ ५३ ॥

सुरतान १८९१ मंत्र यह सुनि ससंक, पुच्छिय निज जोधन फलिप पंक  
बंधुनपर विरखहु स्वामि बैर, नासन सठ चाहत निजहि नैर ॥ ५४ ॥  
कोटा न लेत इनि जवन कूर, सिर बंधुन कटन बनत सूर ॥

कौमल १ हाथ पकड़कर ॥ ४७ ॥ २ नाम ३ धनकी ४ सृष्टि करके, बसुत उत्सव  
५ कैलाकर ॥ ४८ ॥ ६ लोभ करके ॥ ४९ ॥ तो भी घर की अष्ट ७ सृष्टि नहीं  
घटी ८ अकान्त में बुलाकर ॥ ५० ॥ जाहुंदा ९ लालता है, लेना से १० घेरा  
लगाओ ११ जाने अर्जुन के तीनों १२ निरंकुश पुत्रों को मारकर १३ लय ॥ ११ ॥  
१४ समग्र (सब) मूढ़ों की रची हुई लजाह भी कहीं १५ छिपी रहती है ॥ १२ ॥  
१६ गुणों के लखू से पूर्ण ॥ १३ ॥ १७ पाप १८ देखो, अपने १९ नगर का ही  
नाश करना चाहता है ॥ १४ ॥ २० कूर अथवा मूर्ख

अब जियन १ मरन २ सब बिधि अर्पनीन, पै करहु स्वामि स्वागत प्रबो न ५५  
 सुत सुजर्जना १८९ १ दिइम होत सज्ज, लखि स्वामि दोह १ कुल गौरि लज्ज  
 अर्जुन १८८ १ उदूँह जठो जु आहि, जग कहत जयवती १८८ १ नाम जाहि  
 गाहिलोतनी सु अनुचित गिनाइ, छँम सुतन जुल्लि वह हठ छिनाइ ॥  
 बुल्की न स्वामिसन रन विधेय, हे भीरु भजहु यह थान हेर्य ॥ ५७ ॥

दोहा ॥

चपारि ४ हु जननिन इम चवत, सत्रि सु पुत्र सुमंत्र ॥

संब परिकर बैभव सहित, तक्षिय धर्म स्वतंत्र ॥ ५८ ॥

माटुंदा तजि सुदसन, कछि पहिली निसकाल ॥

गो बहुरिहु चित्तो गढ, सुजर्जन १८९ १ सत्रुन साल ॥ ५९ ॥

निज मातुल सुत गिनि निपुन, उदयरान करि अगंध ॥

सुजर्जन १८९ १ रहिखंय प्रीतिसह, बैरी कस्त १ न वगंध २ ॥ ६० ॥

दैन न दिय पहिलो पटा, सीसोवन हठ संधि ॥

कहिय रतन २ मारकहु लहि, बैरी बैरहिं बंधि ॥ ६१ ॥

पट्टपात ॥

उदय धरान उच्चरिय रतन १ रविमल्ल २ रहे रन ॥

बैर तदपि जो बहहु सोहु सुरतान १८९ १ भूप सन ॥

बलि अर्जुन १८८ १ इन्ह वप्य परिय चित्तोर कामपर ॥

पुनि मम मातुल पुत्र किम न रक्खहि निज हितकर ॥

इम उदय ४ समप्पिय सुजर्जन १८९ १ हिं पटा सहै सपैती स ३५००० सौं ॥

मुहु रहिय धारि फूकी सुतहि बंटहु तजि बुंदी समौ ॥ ६२ ॥

१ प्रत्ता के हाथ है. स्वामि के १ आने का आंदर करो ॥ ५५ ॥ ३ सुरजन आदि  
 ४ कुल को कलंक लगने की लज्जा से. अर्जुन की ५ बिदाहिता बड़ी स्त्री ने ॥ ५६ ॥  
 इस वार्ता को ६ अनुचित जनाकर ७ समर्थ पुत्रों को बुलाकर. इस स्थान को - छो-  
 डकर ॥ ५७ ॥ ९ कहते ही १० ओष्ट सलाह को मानकर ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ११ आव  
 (आदर) बैरियों रूपी १२ बकरी के लिये १३ सिंह ॥ ६० ॥ १४ हठ की प्रतिज्ञा  
 से शीपोदिया ने ॥ ६१ ॥ रत्न सिंह और १५ सुवर्णमल्ल, दोनों ही युद्ध में रहे.  
 अर्जुन का १९ पिता. मेरे १७ मामा का पुत्र है १८ बुवा के पुत्र को ॥ ६२ ॥

## ॥ दोहा ॥

अनुज तत्थ सुर्जन १८९।१ उभय २, व्याहे समसंबंध ॥

अकखयराज १८९।२ रु राम १८९।३ ए २, सह सह दुलह सुसंध ॥ ६३ ॥

स्वर्णाकुमरि १८९।१ मंडन सुता, रचि उच्छव रट्टोरि ॥

अनुज सहोदर अकखय १८९।१ हिं, जो व्याहिय कर जोरि ॥ ६४ ॥

सुता कबंध समर्थकी, अमरकुमरि १८९।१ अभिधान ॥

सुर्जन १८९।१ व्याही सोदरहिं, सो राम १८९।३ हिं सह मान ॥ ६५ ॥

बंध त्रय ३ हिं करिहं बहुरि, बुंदिय पाइ विवाह ॥

वंसहु तीन ३ नके बढहिं, रक्खन निज कुल राह ॥ ६६ ॥

पादाकुलकम्प ॥

रायमल्ल १८८।२ कल्लयानमल्ल १८८।३ रचि, विन्नति अति बुंदिय

अपजस बचि ॥

निज भतीज नृप बहुत निवास्यो, पै अनयहिं सुरतान १८९।१

प्रसारयो ॥ ६७ ॥

सगपन इन्ह दोहुरन समकुलसन, रचिय अगग रविमल्ल १८८।१

धराधन ॥

बुंदीपति जिन्ह अबहु न व्याहत १, दाथ हुदै न दहे हिय दाहता ॥ ६८ ॥

जरयो समह व्याहत लाखिं सुर्जन १८९।१, व्याहैं किम सु स्व-

वित्त पितृव्यन ॥

रोध प्रतीपहिं तेशन सराहैं, चित उदास मरन रन चाहैं ॥ ६९ ॥

बुंदिय इम तिन्ह भाग्य बुलायो, अतिबल बढि मंडूपति आयो ॥

घेरा लागत भयो भय घरघर, अब सुरतान १८८।१ भटन किय

आदर ॥ ७० ॥

१ सची प्रतिज्ञावाले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ २ अनोति ३ फैलाई ॥ ६७ ॥

१ राजा सूर्यमल्ल ने १ घंट देने धें, जलेहुए हृदय को जलाता है ॥ ६८ ॥ १ अ-

ने धन से ७ रोकने के ८ विरुद्ध ॥ १९ ॥ ७० ॥

पट्पात ॥

सामंता १८७११दिक सुभट तदपि नृपतैं न मिले तैंह ॥

बाहिरतैं रतिवाह पटकि पीरे जवनन जैंह ॥

रायमल्ल १८८१२कल्लयानमल्ल १८८१३ पुरतैं कढि पदर ॥

मन चहि आयै सरन भये स्वग्गन तिलातिलभर ॥

इनसंग सहैस ११सत्तल २३भयर अंधहि खूब प्रहार असि ॥

चउ ४१जात हह ३१धारन चढि रु गिरतभये बहु भिच्छ ग्रसि ॥ ७१ ॥

दोहा ॥

रिपुसंख्या जानी न रन, पै बहुभिच्छन पारि ॥

पहुँके चउ ४काका परे, अप्पन लौन उजारि ॥ ७२ ॥

मिलि पिथल १८९११जगमाल १८९११मुखँ, सह हरि १८८११कीरतिसीह

वलि दूजे २रतिवाहपैं, आयै सजिजयईहैं ॥ ७३ ॥

जिन वरजत सुरतान १८९११जहँ, प्रतिदिन हुव प्रतिकूल ॥

भारपरत बुंदिय सुभट, मिले तेहि जयमूल ॥ ७४ ॥

सब निजनिज गृहतैं समिटि, बुंदीवाहिर वीर ॥

नृप कुपुत्र ओर न निरखि, सजे कुल पथ सीर ॥ ७५ ॥

दूजो २ इन रतिवाह दिय, इमहि अचानक आइ ॥

पुनि भजिगो मंडूपति नु, पैहिले १जिम भय पाइ ॥ ७६ ॥

इम वचाइ बुंदिय अखिल, गये सुभट निज गेह ॥

न मिले मूढ नृपालतैं, अखिख कुठकुरैं एह ॥ ७७ ॥

रायमल्ल १८८१२कल्लयान १८८१३रन, सहैस १२ सत्तल २सत्य ॥

दुगह लज्ज सुरतान १८९११ दुख, परे लरे जिम पतैं ॥ ७८ ॥

१ राजा का युद्ध करके २ यवनों को पीड़ित किये ३ सीधे ॥ ७१ ॥ ४ राजा के ॥ ७२ ॥ ५ आदि ६ जय की इच्छावाले ॥ ७३ ॥ ७ मुख ॥ ७४ ॥ = एकदिवस होकर. कुल के मार्गमें १ बंद करके ॥ ७५ ॥ १० राजा युद्ध ११ पहिले आगा था वसी प्रकार भय पाकर भागा ॥ ७६ ॥ १२ घुरा ठाकुर (स्वामि) कहकर ॥ ७७ ॥ १३ अर्जुन को समान लड़े ॥ ७८ ॥

पूरब गोपूर बाँह्य प्रभु, अब बापीजुंग २ आहि ॥

बंधु सदैस सत्तलर बिहित, जगत जनावत जाहि ॥ ७६ ॥

स्वाभिविमुख होइ न सके, पिस्खहु राम २०३१४ नृपाल ॥

चउ४काका धारन चढे, सठ भतीजके साल ॥ ८० ॥

पहिले दुव अग्रज परे, ध्रुव चौरा तिन्ह धाम ॥

सदैस १२ सत्तलर केर सुत, कलि ये हैं बलि काम ॥ ८१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो २ षष्ठ्यं राशौ वीतिहोत्र  
वसुधेश्वर १ बीजव्याख्यानबीजहङ्गाधिराडस्थिपाल १५५ वंशयानुबं  
श्यविहितवर्णनवेलाव्याहार्यबुदीवसुधावरसुरताणा १८९१ सिद्धच  
रित्रे सुरताणा १८९१२ राज्याभिषेकः १, चित्तोडे रत्नसिंहसूनुदुरवरित्र  
विक्रमाभिषेकः २, मन्त्र्यादिभिः सुरताणाबोधनेपि तत्प्रबोधाभावः ३, बहू  
रेश्वरचालुक्यकन्हपुत्र्या सह सुरताणकरग्रहः ४, चित्तोडे त्रिनवत्युत्तर-  
पंचशताधिकसहस्रतमसंवत्सरेविक्रममारणापूर्वकं भोजिव्यबसावीर-  
कर्तृकशज्जग्रहणां ५, वसावीरानीतिदुःखितप्रजाभिर्वर्षद्वयोत्तरं कुंभि-  
लमेरादाहूयोदयसिंहस्य राज्ये स्थापनं ६, सुरताणकर्तृकं सहसा सात

पूर्वदिशा के शहर के १ द्वार २ बाहिर ह प्रभु राससिंह ३ दो बा-  
वड़िये हैं ४ चनाईहुई ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ५ बिना सन्तान ६ मन्दिर ७ युद्ध में  
द फिर ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी बहुवाण  
वंशवर्णन के कारण हङ्गाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं के  
कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुरताणसिंह के चरित्र में  
सुरताण का राज्याभिषेक और चित्तोड़ के रत्नसिंह के पुत्र खोटे चरित्रबाले  
विक्रमादित्य का अभिषेक, मन्त्री आदि के सुरताण को सज्जाने पर भी उ-  
नके समझाने के अभाव से बालगणों के पाति सोलंखी कन्ह की पुत्री के सा-  
थ सुरताण का विवाह करना, चित्तोड़ में १५९३ के सम्वत् में विक्रमादित्य  
को मारने पूर्वक पासवानिये वणवीर का राज्य लेना, वणवीर की राजनी-  
ति से दुःखी होकर प्रजा का दो वर्ष पीछे कुम्भलेश्वरसे उदयसिंह को बुला-  
कर राज्य स्थापन करना, सुरताण का मारने के लिये सातल को बुलाकर दो

लेत्पाहूयपितृव्यद्वयाक्षिनिष्कासनं०, सुरताणाकर्तृकस्वप्रभापणावा-  
र्ताश्रवणात्सुर्जनस्य चित्तोदगमनम्८, सुरताणाकर्तृकाणि जैतग-  
ढाधीशसिंहस्य तडागे निमज्जनोन्मज्जनानं९, स्वहितेच्छुद्धुःस्वदसुर-  
ताणां विहाय बंधुवर्गेणा स्वस्वग्रामगमनडागरखाँकेसरखाँनामक-  
यवन्योः कोटाग्रहणाम्१०, माँडूप्रभोर्बुन्ध्याक्रमणारम्भे स्वस्वग्रामेभ्य  
आगत्य बंधुवर्गेणा सौमिकयुद्धे माँडूप्रभोः सैन्यविद्रावणाम्११,  
तत्र रायमल्लकल्लयाणामल्लसहसातलोतिसुरताणापितृव्यचतुष्टयमर-  
णाम्१२, मृतावशिष्टबंधुवर्गस्य स्वस्वगृहं प्रति गमनं चेत्याख्यानयुक्तः  
प्रथमोऽ मसूखः ॥ १ ॥ आदितश्चतुरशी१८४त्युत्तरशततमः ॥ ८४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सौराष्ट्री बोहो ॥

इत चित्तोर अभंग, सुर्जन १८९१ जम्ब खड्डिय असम ॥

जित्ति सबरंपति जंग्र, पुर तानां१ लिन्नो प्रथम१ ॥ १ ॥

धाटिनपति अभिधान, जिहिं मल्लिक१ सो भिल्ल जहँ ॥

बसुं खुड्डिं बलवान, पल्ली करि तानां१ पुरहिं ॥ २ ॥

बल रानहु बहु बेर, पठयो जहँ जयत्ताभपर ॥

नों काकाओं के नेत्र निकालना, सुरताण की अपने मारने की वार्ता सुनने से  
सुरजन का चित्तोद जाना, मारने के लिये सुरताण का जैतगढ के पति सिंह  
को तालाब में बुकाने और निकालने अर्थात् गोता लगाने से अपने हित की  
आहनेवाले बुलदायक सुरताण को छोड़कर बन्धुवर्ग का अपने अपने ग्रामों  
को जाना, डागरखाँ, केसरखाँ नामक दो यवनों का कोटेको लेना, माँडूके प-  
ति का बुन्दी को घेरने के आरम्भ में अपने अपने ग्रामों से आकर बन्धुवर्ग  
का रतिधात देकर माँडू के पति और सेना को भगाना, तदा रायमल्ल क-  
ल्लयाणमल्ल का खातल सहित सुरताण के चानकाकाओं का करना, मरने  
से बाकी रहेहुए बन्धुवर्ग का अपने अपने घर जाने आदि की कथा सहित प्रथ-  
म मसूख खगता हुआ ॥१॥ और आदि से एकसौ चौरासी १८४ मसूख हुए ॥  
१ किसीसे मारा नहीं जावे ऐसा २ सम्पादन (पैदा) किया ३ भीलों के पति  
को ॥ १ ॥ ४ धाडायतिओं के पति का नाम ५ माल्या था ६ धन ७ ताणापुर  
को पाल (भीलों की बसती को पाल कहते हैं) बनाकर ॥ २ ॥



जो जो रन करि जेरै, मल्लिकः प्रतिभंग मुकल्यो ॥ ३ ॥  
 प्रजाविहित पुकार, संसद विच जाकी सुनत ॥  
 विरच्यो रान विचार, कहहु पंच कैसी करहिं ॥ ४ ॥  
 इक्खत सुर्जनः ८९१ ओरै, अर्जुनः ८८१ सुत हसि उच्चरिय ॥  
 दब्बन दिखिय दोरै, राजै पुच्छन रावरो ॥ ५ ॥  
 को खल रंक किरात, त्रासक दीनन तरकर सु ॥  
 परै जंत्य पविपांत १, कहा तत्थ तृनगन २ करै ॥ ६ ॥  
 महानिठुर हरिमंथे १, पै न समर्थ घरहुँ २ पर ॥  
 पापी चोरः न पंथ, जोलों लखहिं धनीरन जगि ॥ ७ ॥

### पदातिका ॥

चित्तोरनाथ तव रन विचार, साहनसिर मंडहिं जसप्रसार ॥  
 कौतर किरात बत्त लु कित्तीक, इक्कलः सिपाह सदाहिं इतीक ॥ ८ ॥  
 जो कहहु अप्प मै अबहि जाइ, छिति खलन गंजि लौहों छुगाइ ॥  
 तव रान दियउ भुज पुजि तास; हत्थी १ हय २ भूखन ३ चंद्रहास ४ ॥ ९ ॥  
 सेना निज दै चउसहंस ४००० सत्थ, पठयो तहँ सुर्जनः ८९१ समरपंथा ॥  
 असवार त्रिसत ३०० अप्पन अधीन, क्रमइम अर्जुनः ८८१ सु-  
 त गमन कीन ॥ १० ॥  
 आयो जब यह बुंदी बिहाइ, पुहवीस हड्ड ६१ भय तवहि पाइ ॥  
 हस्मीर १९०१ कुमार जुत संग होइ, पूराउत १७१३ मान १८९१ हु-  
 हित पुलोइ ॥ ११ ॥

१ दबाकर १ पीछा भेजा ॥ ३ ॥ २ प्रजा की की हुई पुकार ४ सभा में ॥ ४ ॥ ५ तरफ दि-  
 ल्ली का फैलाव दखाने के लिये आपका पूछना ७ शोभा देता है ॥ ५ ॥ दीन  
 खोकों को ८ त्रास देनेवाला ९ जहाँ १० बड़ा पड़ता है ॥ ६ ॥ ११ चने ११ क-  
 ठोर हैं तोभी १२ घरट पर बलवान् नहीं होसके ॥ ७ ॥ १४ यश फैलाता है  
 १५ कायर ॥ १८ ॥ १६ खड्ग ॥ १९ ॥ २० युद्ध में अर्जुन ॥ १० ॥ २८ बढाकर यह दि-

आयोतव सुर्जन १८९१ संग अत्थ, न मिल्यो पटाहु बुंदी अनत्थ ॥  
हम्मीर १९०१ तनय सह तैहँ गौहीर, सोपै हुव सुर्जन १८९१ भीर सीर १२  
अर्जुन १८८१ सुव हं किय इस असंक, तानाँ १ पुर वेछिय हुत तंदंक  
दिन इक्क १ समर तोपन दगाइ, दूजे रहि दिवस किय हल्लदाँइ ॥ १३ ॥  
निकर्यो खल आवत इन्ह निहारि, भिछी जन्घाँहु न भज्योँ इभारि  
सुर्जन १८९१ को भातुल सुत सधीर, भैर दीपचंद गहिलोत भीर ॥ १४ ॥  
यह गो सवरन बिच हय उडाइ, खल गये वलत ताकोँहु खाइ ॥  
चहि जय गिरंत इस दीपचंद, मज्जहि हय हल्ल ६१ न दिय अमंद ॥ १५ ॥  
करवाल पुर १८८१ सुत मान १८६१ केर, फेरयो खल मस्तक चर्क फेर  
कवही न गिरत मल्लिक १ कियत, जई गिरे सहि ६० सब भिछजाँत ॥  
मल्लिक १ के दुवर्सँ होत मेल, सुर्जन १८९१ वँपु लगो मनहु सेल ॥  
अर्जुन १८८१ सुत तोहू हय उडाइ, खल पंचपन दिन्नै सिर खिराह  
गिरतहि पछीपैति विकलगात, क्रम भजिग मेर १ भैने २ किराँत ३ ॥  
सुर्जन १८९१ को जय १ हुव सुजस रसत्थ, तानाँ १ पुर जित्यो संधन तत्थ  
सो तानाँ १ बाबर १ ग्राम संग, इहिँ दियउ रान धरि जय उमंग ॥  
दससहँस १०००० पटा मान १८९१ हिँ दिवाइ, मबिर्यो पुर सुर्जन  
१८९१ विजय पाइ ॥ १९ ॥

अपिय पुनि रीक्ति र रान याहि, सिँधुर १ हय २ भूखन ३ धन ४ सराहि ॥  
जित्यो इस पातोरा २हु जाइ, निरसेस धाटिजन हनि १ न साँइ ॥ २० ॥  
दूजो २हु व्याह सुर्जन १८६१ उदार, चितोरतैहि किय बिधि विचार ॥  
पुर वंसवहाला नाम पत्तै, राउल जसवंतहु मिलिय रत्तै ॥ २१ ॥

गण का प्रचंड है ॥ ११ ॥ १ अनर्थ की घाती है २ गम्भीर ॥ १२ ॥ ३ वल भीलके  
कारण ४ वल्ला किया ॥ १३ ॥ ५ सिंह ६ भय (कीन) ॥ १४ ॥ ७ भीलों में ॥ १५ ॥  
८ जाक (जाक) किरै जिन प्रकार ९ भील लोग ॥ १६ ॥ १० तीर ११ शरीर में  
॥ १७ ॥ १२ पाल का पति १३ भील १४ घन सहित ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ छाया  
२२ भगाकर ॥ २० ॥ २३ जाकर २४ मीति जे

तैंहँ कनकवती १८९१२ कन्या तदीय, सुबिवाहो सुर्जन १८९११ गुन गौरीय  
 अवसर वरात चित्तोर आइ, पातोरा २ सुर्जन १८९११ वहु रि पाइ ॥ २२ ॥  
 भो तत्थ रान विस्वास भाजै, सुनिये व वत्त मिच्छन समाज ॥  
 जिम सेरखान परसजि जात, वावर ३० मरयो सु हुव पुब्ब वात ॥ २३ ॥  
 पहिलैं विहार १ सूवा प्रधान, खल स्वामि विमुख हुव सेरखान ॥  
 वलि जिहिं दवाइ रुहितास २ वंग १, भो प्रबल वावर ३० हिं करन भंग १४  
 वावर ३० सजि जिहिं सिर चलत बेर, ज्वर करि दपुछोरयो दिष्ट जैरा ॥  
 तव सक रस वसु तिथि १५८६ तनय तास, हुव साह बिदित  
 करि चंद्रहास ॥ २५ ॥

जिहिं नाम हुमायों ३११ किन्न जेर, कैलि नत्ती इजाहीम २९ केर ॥  
 रेवत अधीस कैवर्त्तराजै, कछु हारि सु मारयो बिजयकाज ॥ २६ ॥  
 गुजरात रंगजि इम सजि सैयान, पुनि सेरखान सिर किय प्रयान ॥  
 विक्रम सक खट नवतिथि १५८६ विहाइ, पूरव १ दिस हं किय समय पाइ  
 हुत सेरखान सुनि बंगदेस, इत भेदे दिल्ली भट असेस ॥

लहि धन गनिकासैम जे निलज्ज, अरि तंत्र भये अरि करि कुकज्ज  
 जिनके, विसास दिल्लीस जाइ, रन वंग सीम कछु दिन रचाइ ॥  
 मुगले ६ स पराभव लहि महंत, आयो सुरि सह भय समुक्ति अंत २९  
 खल सेरखान नय १ कपट २ खेल, भरदहन रक्खत पिहितें मेल ॥  
 दिल्लीस सीस जिहिं छल उदगै, भरदहे पटके भजत मग्ग ॥ ३० ॥  
 नदि नाम कर्मनासा निकास, तिन्ह दिय दिल्लीसहिं पहुँचि त्रास ॥

१ उस राउल जसपनासिह की कन्या शुणां में २ भारी ॥ २२ ॥ ३ विश्वासपात्र  
 ४ अग्र न्लेच्छों के समाज की पात सुनो ५ पहिले ॥ २३ ॥ ६ नाश करने के लिये ॥ २४ ॥  
 ७ भाग्य के उकायमें होकर ८ उसका पुत्र १० लज्ज से प्रसिद्ध सुजा ॥ २५ ॥ ११ युद्ध  
 में इजाहीम के पोते को १२ कैवाट ॥ २६ ॥ १३ चतुर ॥ २७ ॥ १४ अपने बें मिलाए  
 १५ वेश्या के समान धम देकर १६ रात्रु के अधीन हो गये १७ खोदा कार्य करके  
 ॥ २८ ॥ १८ बंगाल की सीमा में १९ पराजय ॥ २९ ॥ २० छाने २१ उदय ॥ ३० ॥

परिभवं लहि तत्थहु सहत पीर, आयो सु हुमायों १३१२ भजि अधीर  
जिहिं आइ आगरा कटक जोरि, बैरिन सिर हल्ला किय बहोरि ॥  
पुर कान्यकुब्ज अंकित प्रदेस, बलिं हुव समीकँ दुवदिस बिसेस ३२  
जय मुगलदराज तत्थहु न जानि, पुनि सहकुटुंब भजिबो प्रमानि ॥  
दिल्ली तजि परिजन जुत उदास, आयो भजि पच्छिम ३ जियन आस  
तँहँ गर्भसहित बेगम तदीय, ही सोहु भज्यो लौ लस्त हीर्य ॥  
सुनि पिडि लये अरि आत सीस, इहिं सरन लयो अजमेरईस ॥३४॥  
पहु मालदेव तँहँ छलप्रवीन, अजमेर १ आदि जिहिं किय अधीन ॥  
इहिं राष्ट्रकूटनृप पाप अँन, दिल्लीस चहिय पकराइदैन ॥ ३५ ॥  
जब सोहु भेद मुगलेदस जानि, नँहो निसीयँ मन गहन मानि ॥

कोसन सत १०० संतैत वायु कोन ६, भजत लख्योन जल १ अ-  
क्षरभोन ॥ ३६ ॥

धर जंगल लंघत इम अधीर, नर १ वाजि मरे बहु चहत नीर ।  
तस पिडितदपिसन्न न तजी न, लियजाइ पलावतँ थलिन लीन ३७  
बाबर ३० सुत तिन्ह लाखि भजिवहोरि, हुव अस्तव्यस्त जन मन अहोरि  
असवारवीस २० बेगम १ उपेत, रहिगो सु मुगल थकि थलिन रेत ३८  
पहुँचे तँहँ कछु अरि होत प्रात, दिल्लीस लरयो तब बल दिखात ।  
अरिनायक उर दिय तीर एक १, असुहीन गिरयो वह बीर एक ॥३९॥  
बिनु नायक अरि हुव अस्तव्यस्त, तिहिं छिद्र भज्यो पुनि मुगलदरैस्त  
जल कहँ न मिल्यो दिन तीन ३ जाहि, इमसिंधुसीस पहुँच्यो सु आहि ॥  
नृप सोढा ऊमरकोट नैर, तल्लयो सु सरन तिहिं विगैतवैर ॥

वहाँ भी १ पराजय लेकर २ पीड़ा सहता हुआ ॥ ३१ ॥ कान्यकुब्ज से  
३ जाना जावे ऐसे प्रदेश में ४ कुछ ॥ ३२ ॥ ५ अपने लोगों सहित ॥ ३३ ॥  
६ उसकी बेगम गर्भवती थी ७ छरेछूट ८ हृदय से ॥ ३४ ॥ उस ६ राटोड़ों  
के राजा ने १० पाप का घर ॥ ३५ ॥ ११ आगा १२ आधी रात्रि में १३ नि-  
रन्तर ॥ ३६ ॥ १४ भागता हुआ १५ रेगिस्थान में ॥ १७ ॥ ३८ ॥ १६ शत्रुओं के पति के  
हृदय में १७ प्राणहीन होकर ॥ ३९ ॥ १८ तितर चितर १९ डरकर ॥ ४० ॥ २० और रहित

सोढा तिहिं स्वागत करि विसेस, रक्खयो सुहुमायो ३१। १पटु नरसे। ४१।  
अकबर ३७। १हुव बाहुं ल ८मास अत्थ, सक अहु अंक तिथि १५९८मि  
ति समर्थ ॥

यह जन्म जव न १ग्रंथन अधीन, अज २नमत औ हैं पुनि प्रवीन ॥ ४२॥  
सोढा इम सुगल ६हिं रक्खि सूर, दल तास अरिन लरि कियउ दूर ।  
सुनि यह तैं मासपनाम साह, निजबल प्रगल्भ ईराननाह ॥ ४३ ॥  
दें दल जिहिं ऊमरकोट एस, दिल्लीस बुलायो स्वीय देस ।

नीरधि जिस बुद्धत मिलाहि नाव, सो इम बाबर ३० सुत स्वस्थभाव ४४  
स्व कलत्र १पुत्रपरिजन ३समेत, ईरान गयो यह नैतिउपेत ।

इक १अब्द रह्यो पुर इस्फहान, मन्थ्यो तैं मासप सरन मान ॥ ४५॥  
नृप राम २० ३। १सुनहु अव इत उदैं, लहि सेरखान जय नयें लसैंत ।  
अद्यानव तिथि १५९८सक लगत अब्द, सुनि जग निज जस १जयर  
अभय ३सब्द ॥ ४६ ॥

वह सेरखान ३२प्रभुता उपेत, दिल्लीस भयो सुख सवन देत ।  
सत्तानव ९७उतरत अरि नसाह, अद्यानव ९८लगत पटु आह ॥ ४७॥  
सुहि सेरखान हुव सेरसाह ३२, अति निपुन मंत्र १प्रभुता २उछाह ३ ।  
इम वंश १उदय १दिस अटक २अस्त २, सतपंदह १५०० कोसन सुव स-  
मस्त ॥ ४८ ॥

करि सड़क पंथ १प्रतिकोस २दूँ २मस्जिद ३पथिकालय ४रम्यरूप ॥  
॥ ४९ ॥

१ चतुर ॥ ४१ ॥ वहीं पर २ फार्तिक मास में अकबर का जन्म  
पुआ ३ समर्थ ४ वह जन्म फारसी ग्रन्थों के मत के अनुसार है ॥ ४२ ॥  
५ आयों के मत से आगे कहा जावेगा ६ अपने पल से चतुर ॥ ४३ ॥ ७ पत्र  
देकर ८ अपने देण में ९ समुद्र में डूबते हुए को नाव मिले इस प्रकार ॥ ४४ ॥  
अपनी १० स्त्री ११ अपने लोकों सहित १२ नज्दता १३ सहित ॥ ४५ ॥ हजर  
का १४ वृत्तान्त १५ नीति में शोक दायक पुआ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ १६ राजा की  
मन्त्र आदि तांत्रों जगियों में चतुर १० बंगाले तक १८ पूर्व दिशा में और अटक  
नदी तक १९ पश्चिम दिशा में ॥ ३० हुए २१ सराप ३२ सुन्दर ॥ ४९ ॥

सत निज उपदेसक प्रवंगिहार, पथिको दिन उसजाँट इहि प्रकार ।  
 पादपद फल जाई पथ दुर्पास, किय सेरसाह ३२ प्रभुपन प्रकास ५०  
 इम भिसत ३०० कोस इत आगरा १६, मंहूरतन किय मग चतुरचार ।  
 थल थल पुर घोरै न डाक १ अपि, व्यापारिन धिर्हरन अभय अपि ५१  
 संवच्छर तीन ३ हि रहिय साह, पे प्रभु बन्धों सु सब ज्योपनाह ।

प्राकार १ दुर्गरसर ३ नहल ४ पूर, लुखदेन रचे सब ठाम सूर ॥ ५२ ॥  
 प्रमदी १ सिंभुरसंकत कनक पानि, जिहि राज्य मर्माविद्य अभय जानि ।  
 वानिज्य करन हित नरन ब्रौत, जिततित निसंक दिसदिसन जात ॥

पहु सेरसाह ३२ ऐसे प्रताप, दिल्लीस होइ लिय जस दुरार्प ।  
 अजमेर १ सिंभुरसालव ३ अधीस, गुजरात ४ गंजि तपि सवन सीस ॥ ५३ ॥  
 सजुन निहारि रनधंभ सेस, आयउ तिहि जितन सबल एस ॥

बेढिय शिरिनादिर कटक बंदि, सुभ १ असुभ २ देव दिय तबहि संहि ॥ ५५ ॥  
 लिय जिति दुर्ग रनधंभ १ लाह, स्व विसास तास दिवधरि सिपाह ।

हो विजई दिल्ली चलन हाग, विपरीत बन्धों भावी वयारै ॥ ५६ ॥  
 ससि व्योम आदि १६० १ सकलगत सालै, किय देव अचानक अंतकाल  
 बारुद निलैय पावक प्रवेश, दगि उडिय निकाट बल उँददेस ॥ ५७ ॥  
 जाहीविच दिल्लीनारि जार, छर्म सेरसाह ३२ किय निर्यति छारै ॥

सुत ताको तदुहे सलेमसाह ३३ १, नृप सो हुव दिल्ली नारि नाह ॥  
 प्रभु गदिय अद्व दसुल्यह परंतु, सजिग तब जिततित अरिम मंतु ॥

१ बाग (अर्थात्) देनेवाले २ मार्ग चलनेवालों को भोजन ३ जाया ४ फल देने  
 वाले ५ सुत ६ मार्ग के दोनों ओर ॥ ५० ॥ ७ तुन्दर ८ घोड़ों की जाक रक्षक ९  
 फारसे में ॥ ५१ ॥ यह बादशाह तीन ९ वर्ष तक ही रहा १० मार्गों के रक्षक १  
 फौद ॥ ५२ ॥ १२ सिद्ध १३ जोना जगज्जन के १४ मार्ग में १५ सनुप्यों के समूह  
 ॥ ५३ ॥ १६ सुलैम ॥ ५४ ॥ अश्वों में रणपरमार को १५ बागी देवकार १६  
 शेर साहिब १७ भाग्य से २० फलदायक ॥ ५५ ॥ २१ कीर्तन का पवन उड़टा  
 पाया ॥ ५६ ॥ २२ सन्ध्या में २३ नानु दुर्ग, बारुद के २४ घर में अग्नि पड़कर २५  
 जागन का देह ॥ ५७ ॥ २६ समर्थ २७ भाग्य से २८ सहम कर दिया २९ जिसपाँधे  
 ॥ ५८ ॥ ३० जगसाध ॥ ५९ ॥

याकेहिसमय सुरतान १८९१ अंध, बंधुन दिय नास शनिकास रबंध  
 गज उचित स्व वपु गुरुता शिनी न, पटके धमकेहित इतर २पीन ॥  
 कति सचिव १दास २ताडित कराइ, श्रुति १नकरहित कति नीसराइ  
 द्विज १आदि जनंगम २अंतदेस, विनु मंतु प्रजा लुट्टिय विसेस ॥  
 चुंडाउत १४१० राघव १८९१ पग्घ चोरि, जिहिं लिन्न बरूधनि  
 कुजस जोरि ॥ ६१ ॥

पग्घ हि रहै न यातै पयंपि, चुंडाउत १४१० कव्यो हठनचंपि ॥  
 आसापूरनि अर्चन अनेह, सामंत १८७१ हनन धारिय सनेह ॥ ६२ ॥  
 सठ जो निज बलि अज दैन सज्ज, क्रिय ताहि सैन तस घात कज्ज  
 कहहु अज मारन जब कृपान, पहिलैं सूचितके लेहु प्रान ॥ ६३ ॥  
 जोछुअतवहि सामंत १८७१ जानि, सुर्जनसमान १८९१ अवधान आनि  
 अरु सज्जि कहा कुलदेवि अज्ज, अज १थान हड्ड २मंगत अकज्ज ६४  
 मैजरै १ततो सृदु २यह कुमार, है बाल बलिन परमोपहार ॥  
 नृपनंदन अखयराज १९०१ नाम, हो तथ अठ ८सम बय हगाम ॥ ६५ ॥  
 सो लिय उठाइ सामंत १८७१ सुर, दिन्नो उतारि कडि बाह्य दूर ॥  
 इम बचि तजि बंसी स्व भुज आस, पहुँच्यो सामंत १८७१ सलेम  
 ३३१ पास ॥ ६६ ॥

रनथंभमाहिं तिहिं साह रकिख, किल्लापति किन्नो उचित अकिख ॥

हाथी के शरीर का १ बड़प्पन नहीं देखा और केवल धमका खुनमे के कारण  
 २ अन्य ३ पुष्टों को गिराये "यह लोकोक्ति है" ४ ताड़ना युक्त करके कितनों  
 के ही कान और नाक कटाकर निकला दिये ॥ ६० ॥ ५ चण्डालों को ६ अपने  
 देश की सीमा में बिना अपराध प्रजाको लूटी ७ आस का नाम है ॥ ६१ ॥ ८  
 कहकर ९ पूजन के समय ॥ ६२ ॥ अपनी और सेवकरों को बलिदान करने को  
 सज्जित हुआ उसी सामन्तसिंह को मारने का इशारा किया कि जब १० बकरा  
 मारने को खड़ा निकाले तब ॥ ६३ ॥ उस ११ छल को १२ सावधान होकर  
 ॥ ६४ ॥ मैं १३ बुढ़ा हूँ, बालक की १४ बड़ी भेट है, अवस्था के १५ आराम में  
 अथवा उत्सव में ॥ ६५ ॥ १६ बाहर निकाल दिया ॥ ६६ ॥

संह भट सतसप्तक ७०० \* पानपूर, रनथंभ रक्षो सामंत १८७१२ सूर  
सक नव नभ सोलह १६०९ लगत साल, कछु गिद सलेम ३३किय  
घास काल ॥

नंदन तदीय फीरोज ३४१२ नाम, ग्वालेर गयो कछु सीधकाम ॥ ६८ ॥  
सुनि जनकमरन फीरोज ३४१२ साह, ग्वालेरहि बैठो पट्टगाई ॥

आयो पितृव्य १ मातुल २ हु आहि, जग अनत सुबारकखान ३३१२  
जाहि ॥ ६९ ॥

साहहि कछु मासनमें नसाई, सो साह बन्यो बैरहि बसाइ ॥  
निज रक्खि मुहेम्मद ३२१२ अपर २ नाम, पायो अदली ३५१२ पद अध  
प्रकास ॥ ७० ॥

भानेज भंजि तस पाइ पट्ट, बच्छर १ बहो सु कछु घटि कुवट्ट ॥  
पहुंचत दह सोलह १६१० सक प्रमान, मिलि अरिन हन्यो रन यह  
अमान ॥ ७१ ॥

तव सेरसाह ३२काका तनूज, हुव साह सिकंदर ३६१२ प्राप्तपूज ॥  
इत आकुल बुंदियजन असेस, सुरतान १८९१२ सठहि न चहैं नरेस  
उपदोहा ॥

बुंदिय भट १ मंलि २ न विविध, छैनैं दिय इम छदन ॥  
सुर्जन १८९१२ इम सुरतान १८९१२ सठ, करहु दूर १ के कदन २ ॥ ७३ ॥  
इष्ट सपर्य जुत लिपि उचित, सुर्जन १८९२ ते दल सकल ॥  
कहि इम दिन्नै रान कर, निरखहु सत्य १ कि नकल २ ॥ ७४ ॥  
कह्यो रान सत्य १ कि नकल २, जानैं हम १ तुम २ जबहि ॥

\* पूर्ण पराक्रमवाला ॥ ६७ ॥ कुछ १ रोग से सलेम को काल ने अपना  
आल किया ॥ ६८ ॥ १ सिंहासन के स्थान में २ काका का मामा ॥ ६९ ॥  
३ मारकर ४ दूसरा नाम ५ अदली (इन्साफ करनेवाला) पद पाकर  
६ पाय की ७ विशेष जानना से ॥ ७० ॥ ८ एक वर्ष ९ कुमार्ग चलकर १०  
मान रहित वा अतोल ॥ ७१ ॥ काका का ११ पुत्र १२ पूजायोग्य ॥ ७२ ॥ १३  
शुभ १४ पत्र दिया कि हे सुरजन इस खूब सुरताण को दूर करो; अथवा १५  
मारो ॥ ७३ ॥ इष्ट के १६ सौजन सहित वे सत्य १७ पत्र ॥ ७४ ॥ यह सत्य है



कटक खरच संगहु कथित, सो भेजै मिलि सबहि ॥ ७५ ॥  
 कुंभिलमैरुहि लेख करि, पठयो धन मोप्रतिहु ॥  
 तब मन्नी वह रीति तुम, रक्खि परकखहु रतिहु ॥ ७६ ॥  
 सोहि लिखी तब सुर्जन १८९११ हु, पृतनाके व्यय प्रमित ॥  
 बसु भेजहु जिम विस्वसहि, अरु रच्छक गिनि अमित ॥ ७७ ॥  
 बुंदी जो दल बंचितहि, प्रचुर सचिव १ भट २ पिहित ॥  
 द्वैअयुत २००००० न हुंडी दई, सुर्जन १८९१२ के सन्निहित ॥ ७८ ॥  
 सुर्जन १८९११ लहि व्यय बसु सब सु, मन्नि रान अनुमतिहु ॥  
 इकसहस १००० दल किय असह, तह बुंदिय भटकतिहु ॥ ७९ ॥  
 आरंभिय गृह आगमन, स्वरित सजि भट १ तुरंग २ ॥  
 बुंदीके हरखे विविध, देस १ प्रकृति २ पुर ३ दुरंग ४ ॥ ८० ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वाध्याये पष्ठदशौ वीतिहोत्रव-  
 सुधेश्वरबीजव्याख्यानाबीजहृद्वाधिराडस्थिपाल १५५ वंशप्रानुवंशवि-  
 हितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरताणसिंहचरिते  
 चित्रकूटाधीशमहाराणोदयसिंहाज्ञया हृदसुरताणस्य ताखारूपमि-  
 ल्लपल्लीं विजित्य मल्लिकाभिधमिल्लनिपातन १ दिल्लीन्द्रसम्राट्कुमायोःशे  
 कि नकल है सो तुम और हम जब जानें कि उन लोगों से १ फौज खरच मांगो  
 ॥ ७५ ॥ २ मेरे पाल भी धन भेजा था ३ प्रीति की परीक्षा करो ॥ ७६ ॥ ४  
 सेना के खरच के ५ प्रमाण ६ धन भेजो ७ विश्वास करेंगे ८ प्राखरचक जानकर  
 ॥ ७७ ॥ ९ बहुत १० गुप्त सुरजन के ११ समीप ॥ ७८ ॥ राणा की १२ सलाह  
 मानकर १३ सेना बुन्दी के १४ कितने ही उमराव ॥ ७९ ॥ १५ अमात्य आदि  
 राज्य के प्रधान पुरुष ॥ ८० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वाध्याय के पष्ठ राशि में अग्निवंशी राजाओं  
 की व्याख्या के बीज हृद्वाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृ-  
 त्तान्त की व्याख्या में वर्णनीय बुन्दी के राजा सुरताणसिंह के चरित्र में चि-  
 त्तोड़ के स्वामी महाराणा उदयसिंह की आज्ञा से हाडा सुरताण का ताणा  
 नामक भिल्लों के नांव को जीतकर मल्लिक नाम भिल्ल को मारना, बादशाह  
 कुमायू का शेरखां यवन से बङ्गाल में पराजय पाकर आगरा शहर में सेना इ-

रखांयवनाद्वृद्धदेशे पराजयमवाप्यार्गलापुरे कटकमाहृत्य कान्यकुब्जं  
 जनपदसमरे स्वयिजयानिश्चयादन्तर्वत्न्या निजपत्न्या सहावाचीका  
 ट्याया वायुकोष्ठापलायन २ वस्वङ्गवाणविधु ( १५९८ ) वर्षस्योर्जेपा  
 रसीकेतिहासमतादुसरकोटप्रदेशेऽकबरप्रादुर्भावकथन ३ ईरानेशमा  
 सपामिधसम्राजो दलदानेन हुमायोनर्निजजनपदाकारणाशेरखांयवन  
 स्यास्मिन्नेव शरदिशेरशाहाभिख्यया दिल्लीद्रङ्गपालन ४ शेरशाहाराज्य  
 प्रशंसापूर्वकरणतमैवद्रङ्गविजयानन्तरं शशिखरसविधु ( १६०१ ) व  
 र्षे बन्दिच्छासद्वदहनाच्छेरशाहमरणा ५ शेरशाहसूनुफीरोजसम्राजः  
 कतिपयमासान्तरेण तन्मातुलमुबारकशाहसाम्राज्यासादन ६ भा  
 गिनेयहन्तुमुबारकशाहस्य शत्रुकरकर्तन ७ शेरशाहपितृव्यपुत्रसिक  
 न्दरस्यसाम्राज्यासादन ८ बुन्दीन्दसुरताणापाकरणार्थं सैन्यसंग्रेष  
 णेन चित्रकूटाद्वदसुरजनाह्वाने द्वितीयो मयूखः ॥ २ ॥ आदितः पञ्चा  
 शीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८५ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कट्टी करके कलोज की लड़ाई में अपना विजय न दीखने से गर्भवती अपनी  
 स्त्री के साथ पश्चिम दिशा की ओर वायुकोष्ठा में भागना, संवत् १५९८ के  
 कार्तिक मास में परसी तवारियों के मत के अकबर को धीं अकबर का पैदा  
 होना, ईरान के बादशाह सासपनादशाह का कौज देकर हुमायू को अपने  
 देश में लुलाना और शेरशाह पदन का उसी वर्ष में शेरशाह नाम से दिल्ली का  
 राज्य करना, शेरशाह के राज्य की प्रशंसा के साथ रगतअकबर किले को फा  
 ण करने के बाद संवत् १५०१ में वास्व से अकान जल कर शेरशाह का मर  
 ना, शेरशाह के पुत्र फिरोजशाह के जितनेक नदीनों ने बाद उसके मामा हु  
 मारकशाह का बादशाहत लेना, भारजो को नारनेवाले मुबारकशाह का शत्रु  
 के साथ से मरना, शेरशाह के लखे पुत्र खिंदर का बादशाह होना, बुन्दी  
 के राजा सुरनाथ को दूर करने के लिये सेना भेज कर चित्तौड़ से डाला सु  
 रजन को पुताने का कजर मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि के एक सौ  
 पचासवां मयूख हुए ॥ १८५ ॥

इकशहायने ईरान इत, सु रहि हुमायौं ३११ साह ।  
 स्वस्थ भयो अवलंब सुभ, लहि तैं मासपश्लाह ॥ १ ॥  
 तह मासप पुच्छिय तहाँ, कोनै प्रजाः भतै कोन ।  
 उत्तर दिय हिंदू उहाँ, दीन जुदे हम दोर न ॥ २ ॥  
 साह कहिय तिनकी सुता, निज पुत्रन परिनाइ ।  
 अप्पनकरि दैभू अधिक भूमि रूपहु तर भाइ ॥ ३ ॥  
 तैं मासप इम अक्खि तस, सैन्य अयुत १०००० दिय संग ।  
 ताविच चउधमट मुख्य तिन, जयकारक हुव जंग ॥ ४ ॥  
 कंदहार कावल करहु, अक्खिय प्रथम अधीन ।  
 इम धरि दिल्ली पट्ट इहिं, प्रकटावहु जस पीन ॥ ५ ॥  
 भाखि इम सु चउधनिज भटन, सह अनैकि दै सत्य ।  
 वावर ३० सुत सिर करै विरचि, अक्खिय अदहु अत्य ॥ ६ ॥  
 सो तस माहपशाहके, प्रभुपन पाइ प्रसाद ।  
 मुख्यो हुमायौं ३११ पुव्व सम, विजित करत प्रतिवाद ॥ ७ ॥  
 सब भ्रातन बहिकाइ सठ, अबुज कामराँ ३१२ अगग ।  
 पंजाव सर कावल प्रमुख, दवने सुलक उदगग ॥ ८ ॥  
 कामराँ ३१२ रु गदरु ३१२ कलहैं, तिमफलान ३१४ ए तीन ॥  
 हद निजनिज जय साहि हुव, न्यारे तरतन सीन ॥ ९ ॥

एक १ वर्ष, मासपशाह का शुभ आधार लेकर २ स्थिर बित्तवाला हुआ ॥ १ ॥  
 उस मासपशाह ने पूछा कि ३ हिन्दुस्थान में प्रजा कौनसी है और उसका ४  
 धर्म क्या है इसके उत्तर में हुमायों ने कहा कि वहाँ प्रजा हिन्दू है, जिसका  
 ५ धर्म जुदा है, परन्तु हम और वे जुदे नहीं हैं ॥ २ ॥ मासपशाह ने कहा कि  
 उनकी ६ पुष्टि अपने पुत्रों को व्याह कर अपने कर लो और अधिक ७ भूमि  
 देकर जिसप्रकार भूमि में = जड़ जमाकर वृक्ष रूपते हैं तिस प्रकार रूपो ॥ ३ ॥  
 ॥ ४ ॥ यश को ९ पुष्ट करके प्रकट करो; वा पुष्ट यश प्रकट करो ॥ ५ ॥ १० सेवा  
 साध देकर ११ गिराज नियत करके कहा कि आधा यहाँ भेजा करो ॥ ६ ॥ १२।  
 प्रसन्नता पाकर १३ विरोधियों को विजय करता हुआ ॥ ७ ॥ १४ उदय (निरंकुश)  
 होकर ॥ ८ ॥ १५ युद्ध ॥ ९ ॥

कंदहार१कावल२कथित, पहिलौ लैन प्रमानि ।

बब्बो हुमायूँ३११२जय चहत, अंजुन सिररिस आनि ॥१०॥

तह मासप दिय संग तिन्ह, नामहु राम२०३१४नरेस ।

सुभट चउ४न जानहु सुयति, इहाँ जनश्रुति एस ॥ ११ ॥

अबिषमपयोधराऽष्टऽडगशाखीलावती ।

जखमी अबहुलाखान१प्रथम१निज बलि दूजो२बहरा२वली ।

तीजो३सु अलाउदीन३कडम४तिय खानजिहाँ४किय भीर भली ।

तह मासपके असवार अयुत१००००तिम पंचसहस्र५०००निज

कटक करे ।

इस कंदहार१कावल२पर अंगलि धुर धर प्रति रनविजय धरे ।१२॥

गदरू३१३अभिधानक तास अंजुन इक१आतहि अग्रज१पयन परयो

मन१बचन२काय३करि सासन सिर धरि लुनत अरिन रन अ-

ग लरयो ।

जयसाधक जानत हुलसि हुमायूँ३११लघु गदरू३१३हिय लाइ लयो

हुदिता ताकी सन अतिमह अप्पन अंगज अकबर१व्यादियो ।१३॥

अग्रज१जय सद्धत ताहिसनय कहूँ आयो कानहु अंजुन२यहै ।

करि हिय लस चिंता साह हुमायूँ३११२हत बत हाहा हानि कहै ।

अतिबल लखि अग्रज१आइ सरन अब कामरा३१२हु इस प्रनतिकरै

गधु साफ पता करि देहु अयनपद अब हनु अनुचर पयन परै ।१४॥

रीकन लुनि अग्रज गो तरा डेरन कामरान३११२ सिर नाई रह्यो ॥

इक१२३३ जनम जय अहुन आकुल गाढ दिन सु दुहुँ२ओर गयो

वलि हठसह विनति कासुराँन ३१।२ करि मक्का निवसि रु एह मरयो  
 अनुजांत न लग्यो चोथो ४ चरनन करि रन सो गहि अंध करयो ॥ १५ ॥  
 भुव कावल १ आदिकलारि छदसमाँ लग जित्ति हुमायों ३१।२ अधिप भयो  
 इतकों पुनि आयउ दिल्ली २३ बन लारि मग जिततित विजय लयो  
 सज्जित साँदी १ गन पंद्रह सहँस १५००० रु पँति १ प्रबल बहु सहँस बढे ॥  
 इततँहु सिकंदर ३६।१ तजि घर अंदर बल्लिय पुनि दुब रत्नारन बढे ॥ १६ ॥  
 सरहिंद सीम छियघोर समर हुव सुर १ सिकंदर ३६।१ भीत भज्यो ॥  
 भुव जित्ति अरिन हनि आइ हुमायों ३१।१ दिल्ली पड सु भीत भज्यो ॥  
 सिव सोलह १६।१ लगत विक्रम संगत जित्ति सिकंदर ३१।१ जुद्ध जई  
 लारि इम वावर ३० सुत दूजी २ बेरहु अतिबल दिल्ली जीतिलई ॥ १७ ॥  
 पच्छो ईरान कटक सब पठयो कहत रह्यो बहरान १ किते ॥  
 अकबर १ छत हुव बहरास २ शु ओरहु जंपत इम दुबर गिनत जिते ॥  
 भो बहुरि खानखानाँ नवाब ताको यह ततिहि बहुत भनै ॥  
 विधि सत्य किमहु कह्यो होहु हेमहिँ हठ नैक न बर्षानमात्र बनै ॥ १८ ॥  
 वलि इम अज्जेन भुव अकबर १ जन्महु बंधू विदित बघेलनके ॥  
 भजि सेरसाह ३२।१ भय गर्भवती गय हुरम तहाँ त्रिबु हेलै नके ॥  
 हुव तथहि अकबर १ जन्म सुहात बघेलहिँ मातुल कहतहुतो ॥

इस कारण मजा में ? निवास करके सरा, चौथा २ छोटा भाई चरणों में नहीं  
 सागा इस कारण दूसको युद्ध में पकड़कर अन्धा कर दिया ॥ ११ ॥ छः ३ वर्ष  
 लड़कर ४ समुद्र ५ सवार ६ पैदल ॥ १२ ॥ ७ युद्ध ॥ १३ ॥ ८ पिता ॥ १४ ॥  
 ९ आर्यावर्त में १० बिना श्रमराध, अकबर \* बघेलों को ११ याता कहता था

\* अकबर का जन्म दिनांक मन् १५९, तारीख १४ रवाना मुताबिक विजयी सम्बत् १५९९ मार्गशि  
 २ शुद्ध पूर्णमासी को ऊमरकोट में हुआ था सो अकबर जीहरी की कितान "तज्जिकरुनुवाकियात" से सि  
 द है इसमें कई फारसी तारीखों में भी मत भेद है, परन्तु आधुनिक विद्वानों के मत से उल्लेख लेख ही  
 मय मान्यता है जिसका अधिक शक्तत विस्तार के मत से लिखना होच दिया है, परन्तु अधिक प्रमाण  
 देताने होते तो "शुद्धर के जन्म दिन से सम्बद्ध" इस नाम की उदयपुर की कविराजा श्यामलदास की ब  
 सई हुई किताब में देखें, यहाँ मजा कहने का प्रमाण दिया सो तो सत्यवचन से भी होसता है अर्थात्  
 नाम भी सत्ता भीमसिंह यासेटिया के सखी बंधनो की सुनकारण होटा के राजा भीमसिंह को नुरम सागा  
 कहता था, ऐसा ही नाम ही यहाँ भी होसता ॥

सतकार अधिक करि भूप बघेलहि मन्नों किम\*विनुहेतु सुतो। १९।  
 †गदि इस मतभेदहु कति गति नावहिं समुझहु संभव है सु सवै॥  
 है बिजई दूजी २२वर हुमायों ३१। १ तिम लिय दिल्लियतखत तवै ॥  
 बुंदिय भट १ सचिव २ न भेजि इत सधन बुल्लिय सुर्जन १८९। १ वेग बली  
 सो रान उदय अनुमत लाहि सत्वर बुध नय-हं किय तेग बली ॥ २०।  
 तव नृप सुरतान १८९। १ हिं भोग बिभानहिं पहुँचत आनहिं सुँधि परी  
 पुच्छिय तव पंचन पिहित प्रपंच न कारन रंच न आत अरी ॥  
 दिय उत्तर पंचन आत सुरथपुर रक्तादंताके दरसन ॥  
 जब लंछिसुरथपुर आत कहिय जड क्यों आवत अब जंपहु जन  
 भट १ सचिव २ न भाखिय तात १ पितामह २ चौरन अर्चत आत यहै ॥  
 करि पूजन जैहै बहुरि न अहै हित निज व्हैहै सकल कहै ॥  
 जितने प्रभु पट्टनि चलहु नतो जन नाहक दोउसन कोप करै ॥  
 जड जड मिलि जुझै विहित न जुझै प्रभु तब इत १ दोउ २ द्रोह परै  
 गदि इस सुरतान १८९। १ हिं लै सब पट्टनि नृप जडपन जसकरन गए ॥  
 भट तहँ सब यासन लाहिलहि सिक्ख रु भोनन कछुमिस आत भए ॥  
 अवसेसन अक्खिय तैटिनी चम्मलि परतट बिबिध सिकार बनै ॥  
 चढि नाव सुनत नृप परतट बल्लिय संग नहुव तव स्वजन सनै ॥ २३।  
 अही तटिनी पहुँचत नृप अक्खिय भटवर आवहु क्यों न भलै ॥  
 ऐसे प्रभुवेनुहि भले तिन अक्खिय चलहु तुमहिं हम नाहिं चलै ॥  
 गिनितव बदल सब वंदन बिगारत सिटि परतट सुरतान १८९। १ गयो  
 भूपतिके अनुसंतमें जोजो खलजन हो सोसो संग भयो ॥ २४ ॥

\* बिना कारण उनका रान क्यों बढ़ाया ॥ १९॥ इस प्रकार मतभेद † कहकर  
 १ धन भेजकर महाराणा उदयसिंह की २ सम्मति लेकर ३ शीघ्र ॥ २० ॥  
 धाँगा नामक आल पर आये ४ खबर हुई ५ सुत ६ तुच्छ शत्रु के आने का कुछ  
 भी कारण नहीं है ॥ २१ ॥ ७ पिता और दादा के दण्ड स्थान पर बने हुए स्थानों  
 का पूजने आना है ८ नृप स्वर्ण मिलकर लड़ने ९ उचित ॥ २२ ॥ १० चाकी रहे  
 जिन्होंने कहा ११ चावल नदी के परले किनारे ॥ २३ ॥ १२ मुख बिगाड़कर  
 १३ सलाह में ॥ २४ ॥

इत बुंदी आतहिः राजनिलय रहि कछुदिन सुर्जन १८९१ कछु न कही  
 पंचम ५५ दिन अक्खिय चंद्राउति १८६३ मति सुतगति सवन न जात सही  
 जंपिय पुनि पंचन सुत ढिग जावहु भूपति हम सुर्जन १८६१ हिः भज्यो  
 कहि इम वह कछिय पुनि तस परिजन लोक सकल हुव संग लज्यो  
 सहँस ११ सत्तल २ सुत जँह विक्रम जुत पहिलैं अरिहनि उभय २ परे ॥  
 कही सुरतान १८९१ प्रसू तदनंतर क्रम परिजन सब संग करे ।  
 सिसु अक्खिय राज १९०१ कुमार सहित लजि पुनवंधू निज संग लई ।  
 इम धावर १ धाई २ आदि स अनुर्ग ३ न भूप्रसू कछिजात भई ॥ २६ ॥  
 बुंदी नारायन १८७१ के कुलतैं वचि कुल नरवद १८७१ भव स्वाधि  
 करयो ॥

धरनीपति सुर्जन १६०१ सक सिव सोलह १६११ वैठि तखत छँम  
 छल धरयो ।

लाखि सब अनुकूल सुभट १ सचिवारदिक अनुर्ग ३ अधि हिय  
 लाइ लये ।

निजनाम पटा करि सवन निवेदि रु द्वादित कछु कछु अधिक दये २७  
 भ्राता भटसिंह १८९१ रु मान १८९१ रु भैरव १८९१ भीम १८९१ रु पु  
 ११८८१ रु मोकल १८८१ रु भव ।

इन्ह जैतगड १ रु विंडोली २ अप्पिय जक्खमूल ३ जुत दान सजव ।

चुंडाउत १४१० रावव १८९१ सादर आहत दुहि वरुपनि ४ दंग दयो

कुंभकरन १८८१ सुत जगमाल १८९१ उदय १८६१ कुल पिप्पलादा

४ पति नृपति नैयो ॥ २८ ॥

वंसी ६ पुरपति सावंत १८७१ सुलायड जिहि रनथंज तज्यो न जई ।

\* राजपुत्र में सत्कार सुभाह में हुव की पति रुक छे सही मर्ती जाति. इजने  
 सुर्जन को राजा ५५ दिमा छे १७ अयते लोक ॥ २७ ॥ जिम पीके सुरताज की  
 रमाता को बिकाही २ मेहे की बहुत को ३ साज ४ खेवको कछित ५ राजा की  
 माता ॥ २८ ॥ ६ भूपति ७ लमके ८ खेवको तज ९ अपम नाथ को पट्टेकारके सभको  
 दिये ॥ २७ ॥ १० पुत्र ११ सीध १२ सुता ॥ २८ ॥

बिनुभुव राघव १८७१ सुत कन्ह १८८१ हिं बिक्खिं रु कोटा गंजन  
मंत्र कियउ ।

लाखि, दढ भट १ सचिवरन किय तब बिन्नति रहहु अबहि नयराज्य  
लियउ ।

कन्ह १८८१ हिं तब सुर्जन १९०१ अपि जयस्थल १ लै दै हैं कोटा २  
हु कस्यो ।

पै तिहिं बालिसपन जंपन निजजन लेहु लरहु सुनि चपल चह्यो ३३  
जुब्बन मदकरि प्रभुसासन बिनु जैं सत दुव २०० मेद १ रु सबर १ सजे:

ग्राम चिपथ चम्मलि उत्तर निस गय सृध करि कोटा लैन मजे ॥

जवनन यह जानी पहुँचत पुब्बहि भट अतिमानी समुद भये ।

राघव १८७१ सुत कन्ह १८८१ समेत मिलत रन मिल्ल १ रु मेद २ भ-  
जाइदये ॥ ३४ ॥

महिप सु सुनि अक्खी जैसे हैं जन १ तैसे सुहदं सहाय मिलैं ।  
जयथल इम जंपि रु छिन्निलयो छमं बहुरि न बुल्लयो खीजिं खिलैं १२ ।

जब नृप चितोरहिं जात जाजपुर दूजे २ दिवस सुकाम दयो ।

निज गुरु सिख्यो तैं एक वैनिक नमि भूप सरन लाहि अनुगं भयो ३५

नृपके कर १ चरन रन रेखा निरखि रु गुरु यह १ वी भूप भन्यो ॥

वैनिक सु नारायन १ नाम २ रु जाति रखटोर २ सु सुनि नृप अनुग बन्यो ।

बुंदी अब आइ रु गद्दी बैठत कोनिदैं वैनिक सु संचिव करयो ।

तैं दुलहनि तीजी ३ चिमन कुमरि १९०१ चालुक सूरसुता बहुरि

वरयो ॥ ३६ ॥

१ देखकर २ कोटा को विजय करने की सलाह की. आपने बुन्दी का राज्य ३  
नवीन लिया है इस कारण अभी उधरो ४ लूखपन से ॥ ३३ ॥ ५ कोटा ६ भील  
७ ग्राम का नाम है ८ युद्ध करके ॥ ३४ ॥ ९ निज १० सन्धि ने ११ क्रोध करके  
१२ बाकी. अपने गुरु का १३ सिखाया हुआ १४ बनिया (वैश्य) १५ सेवक हुआ  
॥ ३५ ॥ १६ राजा के चरण और हाथों की रेखा देखकर गुरु ने कहा था कि आनेवाले  
समय में यह राजा होवेगा १७ उस चतुर बनिये को १८ प्रधान किया ॥ ३६ ॥



सुर्जन १९०१२ के हुव चितोशहि हुव २ सुत भूपतिपन तीजो ३ हु भयो ॥  
दूदा १९१११ तिभ भोज १९१२२ रायमल्ल १९१३३ यह नायं धेय त्रिक ३  
लिक ३ हि दयो ॥

क्रमतें हुव तीन ३ हि रानिनके सुत तीन ३ हि ए रन १ दान २ गुरि ॥  
मानत नव ९ व्याह करे कति मागधं भाखत सु विदित त्रिक ३ हि  
गुरि ॥ ३७॥

सुर्जन १९०१२ अब बुंदिय हैरही सोदर व्याह व्याह लय ३ हु भयंत्यो  
क्रम जे कहियत है प्रभु राम २०३१२ सुनो सब दान बडे हुव त्यों ॥  
हुव त्यों १ हुव त्यों २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

बरनी कछवाही सेखाउति इंदुमती १८९१२ अकखयराज १८९१२ बरी  
क्रमतें बरि तीजी ३ चिमनकुमरि १८९१३ सिसोदनी सु बांमांग करी  
नामहु करि कुमरी १८९१४ अल्लिय बोथो ४ अकखय १८९१२ निपुन  
लही ललाम ॥

स्वसुरहु तस अलुपम १ रामसाहि ३ तिल सेरसिह ३ हि त्रिक ३ लनाम  
इम राज १८९१३ हु चालुक भीमसुता अजवकुमरि १८९१२ दूजे  
व्याह वरयो ॥

क्रम तीजी ३ अर्जुन कूरमकी तनया गंगा १८९१३ करप्रह्न कत्यो ३ १५  
अकखय १८९१२ के पुत्र दयालु १९०१२ उदय १९०१२ सुगर पहिली  
१२ होरि जने ॥

सेखाउति दूजी २ के सुरतान १९०१३ भयो तीजो ३ इम अय ३ हि भने ॥  
इम तीनन ३ तें जग अकखयराज १८९१२ जनन प्रकट्यो बढि जंग जई  
जा अर्जुन अकखयराज पउत्त १९१५ गिंदा सुनई सम १९ संख्य भई ४०  
वासो लखु राम १८९१३ लहे चउ ४ हांगज जर्तय विजय १९०१२ होरि  
१ जन्यो ॥

१ राजा दृग पीछ २ नाम ३ पत्तिउत ४ जिततें ही पाटलो क गौ विवाह कहते  
हैं ५ चहुत प्रसिद्ध तीन ही विवाह हैं ॥ ३७ ॥ ६ रति पताई ॥ ३८ ॥ ७ विवा  
ही ॥ ३९ ॥ ८ पंश ६ भेद ॥ ४० ॥ १० जहां चार पुत्र

दूजीके सुत दुव२ भूत हठी जुतसिंह१६०।२ रुदोलतसिंह१९०।३ अन्या  
गंगा१८९।३ कछवाही तीजी१के सुत अकखयसिंह१९०।४ चउत्थ४ गद्यो  
वीसम२० इम च्यारि४ नतै हि बढ्यो कुल राम२०।१६ जिहि नाम बढ्यो  
सुरतान१८६।१ कुमार जु अकखय१६०।१ सूचिय कुल तस अवसर  
भावि कह्यो ॥

सुरतानपउत्तर१।१७ तथा इकवीसम२ विदित लु हड्ड६१ न भेद बढ्यो  
वैठो सुरतान१८९।१ तखत सुर्जन१९०।१ बुधधीधन तासहि छत्र धरयो  
पीठिन संख्या१८९।१ सन नृपति नाम पर एक१ अंक इम अधिक  
१९०।१ परयो ॥ ४२ ॥

तनया हु भई सुर्जन१९०।१ कै तीन३ हु जेठो पूरकुमारि१९१।३ जहाँ  
सो भोज१९१।२ स्वसा दूजी२ लालकुमारि१९१।२ तीजी३ मदनकुमा-  
रि१९१।३ तहाँ ॥

अनुजाँ दुवरजाँमि अनूढ मरी तिनकी जननी न कही तासौं ॥  
सुभ गुनइम सुर्जन१९० बुंदी वैठि तप्यो सबके सिरं सुखमासौं ॥ ४३ ॥  
दोहा ॥

इत सिटाइ सुरतान१८९।१ अरु, छमपन निनु मन छिज्जि ॥  
पलंटी समुझी सब प्रजा, खल दुर्बल जिम खिज्जि ॥ ४४ ॥  
जननी सुत१ पतनी२ जुत लु, सब निज वस लै सत्थ ॥  
पहुँची पुरतट पुत्रपँह, जठरहि निंदत जत्थ ॥ ४५ ॥  
मनकरि१ भुव इच्छत कुलति, निकल करि२ सु बिगोई ॥  
गज१ हु वैठि न सकै गरुष, हयारुढ कब होइ ॥ ४६ ॥

\* छुप १ कहा ॥ ४१ ॥ १ रुतय पर २ बुद्धि ही है धन जिसके ऐसा सुरजन  
सुरताणसिंह के पाठपर पैठा ॥ ४२ ॥ ३ भोज की कहिन ४ दोनों छोटी ५ व-  
हिन ६ बिना बिवाही मरी ७ प्ररम गोसा ले ॥ ४३ ॥ ८ बिना समर्थपन के  
॥ ४४ ॥ ९ अपने पेट की निन्दा करती हुई ॥ ४५ ॥ १० पराक्रम से खाई हुई  
भूमि को वह सूर्य जन से चाहता रहा ११ शरीर से मोटा होने के कारण  
हाथी पर भी नहीं बैठ सकता था सो घोड़े पर सवार कैसे होवे ॥ ४६ ॥

सुरताणका स्त्रीवियों के शरणमें रहना] पछराशि-तृतीयमयूख (२२३१)

चंद्राउति दुर्मन चविय, रे कुपुत्र अब रोइ ॥

हमरी सिक्ख गिनी न हित, लै फल बीजहिं बोइ ॥ ४७ ॥

खिजि तिभहि सोलंखिनी, रानी कहिय कुरांज ॥

अप्प गजानन तुंद यह, कित भरिहो अंशु काज ॥ ४८ ॥

अब तुमको मरनों उचित, बुंदीद्वारहि बेग ॥

अतिबल मैं न सहैं इभहु, तब कहते मम तेन ॥ ४९ ॥

सुरिंरौं जिमजिम स्वजन, इनइम कहि जल याहि ॥

पटु तिमतिम छिज्योपरै, किमकिम सहैं काहि ॥ ५० ॥

मुख बिगारि बुंदीबहिष, परतट इन पछिताइ ॥

सु तकि ग्रंथु खिजि१३न सरन, पत्तो तैंहं दुख पाइ ॥ ५१ ॥

बिकल कोप असो कुबुध, करत सुन्यो जन कोहु ॥

गदत सिक्ख जिहिं अरि गिनी, जननी१अरु तिय२जोहु ॥ ५२ ॥

जाइ मऊ पुर हहु६१ जिहिं, रायमल्ल नरराय ॥

प्रभु किनौं खिजि१३ प्रथित, कुंजर भर गुरुकाय ॥ ५३ ॥

पुर बरोदको परगनां, सुरतान१८९हिं दै सूर ॥

रायमल्ल तैंहं रक्खयो, दांयटरघो लखि दूर ॥ ५४ ॥

जवनन कोटा लिन्न जब, परतट सेसैं प्रवेश ॥

दब्बे खिजि१३न तिन दिनन, बिनु रविमल्ल१८८१बलेसैं ॥ ५५ ॥

पहिलैं छिनि बरोदपुर, अब पछो तिहिं अप्पि ॥

खिजि१३ रक्खिय हहु६१ खल, थल निवाहेंमित अप्पि ॥ ५६ ॥

१ उदास मनसे कहा ॥ ४७ ॥ २ हे छोटा राजा आप हय ३ गजेज के समान पैद को ४ प्राण के छिये कहां अरोगे ॥ ४८ ॥ तुम कहते थे कि मैं ५ बड़ा पलवान हूँ, सो मेरा खड्ग ६ हाथी भी सहन नहीं कर सकता ॥ ४९ ॥ ७ अपने लोक ज्यों ज्यों सोड़ते थे ॥ ५० ॥ ८ कांक्षल नदी के पार, स्त्रीवियों को आई जानकर उनके शरण ९ गया ॥ ५१ ॥ १० अलिख स्वामि किया ११ हाथी के बराबर १२ गड़े करीर वाले उस सुरताण के ॥ ५२ ॥ १३ अपना दायभाग छूटा हुआ देखकर ॥ ५३ ॥ बाबल के पैते बिलारे का १४ बाजी का प्रवेश १५ आटापला नामक पर्वत के पति स्वयंमल्ल बिना ॥ ५४ ॥ १६ निर्वाह के नाफिक छोटा स्थल देकर ॥ ५५ ॥

निवेस्य जो है नानता, निकट नंदना १ नाम ॥

चंद्राउतिके जो १ रु चंड ४, गेल इतर है ग्राम ॥ ५७ ॥

तहँ जननी सुरतान १८९१ की, बापी १ रुचिर बनाइ ॥

बिरची छिग वर कोटिका २, जे जस अवहु जनाइ ॥ ५८ ॥

इति श्री वंशशास्त्रे महाप्रभू के पूर्वायणे षष्ठदशौ वीतिहोत्र-  
वसुधेश्वरवीजव्याख्यानवीजहृत्पाधिराडस्थिपाल १५५ वंद्यानुवंश्य  
विहितहृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यद्वुन्दीवसुधावरसुरताखसिंहच-  
रित्रे ईरानदेशाधीशालापसम्राज ईरानदेशस्थितहुमायुसम्राजं प्रति  
तत्पुत्राखामार्गपुत्रीभिः सह पाण्डिग्रहणाशिक्षाकरणा १ ईरानदेशा-  
धीशालाहायणेन पुनरार्थावर्तागतहुमायुसम्राजः काबुलसीमाविजये  
सिकन्दरशयनं विजित्य दिल्लीसिंहासनारोहणा २ आर्यलोकमतानु-  
सारेणाकबरजन्ममवचनं दुन्दीन्द्रावसुरताखसिंहपत्न्याने सुरजन  
स्वामितालादनेन दुन्दीराज्यस्य नारायणदासकुलसंपर्कपरित्यागा-  
त्तदंजुनरपदकुलसंपर्कीकरणा ४ दुन्दीन्द्रसुरजनस्य बन्धुवर्गस्यः  
सामन्तादिभ्यश्च निजनामाङ्कितग्रामापिपत्यप्रतिपादकपत्रप्रदानेन  
तद्विंशसन ५ अर्जुनसूनुविवाहपुरःसरसंतानकथन ६ दुन्दीराज्यच्यु-

१ ग्राम २ अन्य ग्राम वस्तुके साथ हैं ॥ ५७ ॥ ३ ग्राम ॥ ५८ ॥

श्रीवंशशास्त्रे महाप्रभू के पूर्वायण के षष्ठ राशि में अग्निचंशी राजाओं  
की व्याख्या के धीज हृत्पाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृ-  
त्तांत की व्याख्या में वर्णनीय दुन्दी के राजा सुरताखसिंह के चरित्र में ईरा-  
न देश के बादशाह पालस का ईरान देश में स्थित हुमायों को उनके पुत्रों को  
आयों की कन्याओं के साथ विवाह करने की शिक्षा देना, ईरान के बादशाह  
की सहायता से फिर आर्यावर्त में आये हुए प्रजाओं को काबुल की सरहद  
तक कर, सिकंदर बादशाह को जीत कर दिल्ली के तख्त पर बैठना, आर्यलो-  
कों के मतानुसार अकबर के जन्म का कथन, दुन्दी के राजा सुरताखसिंह के  
भानने पर सुरजन के स्वागान करने से पुन्दी के राज्य का नारायणदास के  
कुल का संबंध कटकर उसके छोटे भाई नरपद के कुल में जाना, दुन्दी के रा-  
जा सुरजन का बन्धुवर्ग और सामन्त आदि को अपने नाम की सुहर लगा  
कर पद लिख देने से विरवार उत्पन्न करना, अर्जुन के पुत्र के विवाह के सा-

अकबरका भगवंतदासकी कन्या व्याहना]षट्तराशि-तृतीयमयूख (२२३३)

तसुरताग्रस्य मऊराजखिचिरायमल्लाश्रयश्च भयानं तृतीयो मयूखः ॥३॥

आदितः षडशीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

साह हुमायों ३१।१ इत सबल, पुनि लंहि दिखियपट ॥

तह मांसप\*उपदेस तब, बिधि चित्यो नयबंद ॥ १ ॥

आँखेरे भगवंतकी, कन्या हीरकुमारि ॥

व्याहण नंगी अकबर३७।१हिं, धर१ धन२ दैवो धारि ॥ २ ॥

कूरमनूप भगवंत किय, आराधन इनकोहि ॥

बाबर३०तैं, अबलौं वजैं, सासन साधक सोहि ॥ ३ ॥

बदिय साहं तासौं जिहसि, दुहिता तुम नृप देहु ॥

ब्याही अब हमरेहु बनि, लाभ धराधनरलेहु ॥ ४ ॥

मिरजापद\*अवतैं तुमहिं, दुर्लभ यह हग देत ॥

संबंधी बनि दै सुता, हमरो पिकखहु हेत ॥ ५ ॥

सजातीय हमरे लकल, मौरैं पंति न मोहि ॥

तनया लेहु भलौंहिं तो, हम अकिख्य नृप ओहि ॥ ६ ॥

षट्पात ॥

कहिय हुमायों ३१।१ कोन पंति नृप तुमहिं प्रतारहिं ॥

काल संतुं को करहिं होहिं दारक सो हारहिं ॥

यें संतान का कथन, दुम्ही के राज्य के पारिज हुए सूरताण का मऊ के राजा  
लीची राज्यभल के करण एतने का कहने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥३॥

और आदि से एक सौ छियासी मयूख हुए ॥ १८६ ॥

\* बादशाह हुमायों को ईरान के बादशाह सामरा ने आय्यों की पुत्रियों से  
विवाह करने का उपदेश दिया था उसको स्मरण किया १ नीति के मार्ग से  
॥ १ ॥ २ आँखेरे के राजा भगवन्तदास की ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३ हमारी जा  
तिवाले (जत्रिय) ४ पंक्ति बाहिर नहीं करें ५ आहर्च्य है ॥ ६ ॥ ६ हे राजा !  
तुमको पंक्ति के बाहिर कौन निकालेगा ७ काल का अपराध कौन करेगा ८  
दासनेवाला होवेगा सो ही हारेगा

तस्यहं लब्धं नृप कतिहं हुने मनेकायति वागति ॥  
 मिरजानृप दममाहि कतिहं इमं तिनहं लोभ कति ॥  
 भगवंतभृष आमेरंदन हीरकुमारि तनया तवहि ॥  
 अधिराज मुगलनुत अक्रवर् ३७११ दि व्याही निर्गम विरोधवहि ॥ ७ ॥  
 तवहि १ धवहि २ अन्त्यानुभासः ॥ ३ ॥

दोहा ॥

कुमार हुतो भगवंतके, धरत नाम १ अविधान ॥  
 अक्रवर् ३७११ सातक दोषदे, सातक व्याह विधान ॥ ८ ॥  
 अजे १ नृपन जवनन यदे, पुनिन व्याहन पंथ ॥  
 पारयो नृप वृरन प्रथम १, लोभ दुष्टम मिलि अर्थ ॥ ९ ॥  
 किते कदत पुत्रवहु पदुन, पुनिता कहु कहु नान ॥  
 पे विरोध लिखित १ न प्रकटन, दे प्रमानकरि दीने ॥ १० ॥

दोहा ॥

बिदित रीति सुजरा १ दि बहु, सूचिय प्रथम १ असेस ॥

पै हुव बोरन अजपन, असह रीति अष एस ॥ १२ ॥

इम बिबाहि सुत अकबर ३७ १ हिं, कूरमभूप कनी सु ।

करत राज्य आसहि कछुक, वत जु चरम बनी सु ॥ १३ ॥

पुस्तकगृह अटालपर, अटत इकदिन एह ।

बैठि स्वरथ हुव श्रयित बलि, इत हुव संभअनेह ॥ १४ ॥

सोअ अचानक तिहिंसअय, बंगिकार दिय बंगि ।

आसां डिगिगय उठतहि, भरं परि तँहँ कछु भंगि ॥ १५ ॥

केला डिगतहि अंग झुकि, उलटिपरयो भुव आइ ।

तजिय हुमायों ३७ १ साह तनु, प्रबल कालगति पाइ ॥ १६ ॥

सिव सोलह १६ १ मित लगत सक, पुनि लिय दिलिय दृप ।

या १६ १ हि बरसके उत्तरन, इस परि मृत चढि अट ॥ १७ ॥

बय बिताइ बारह १२ बरस, तनुभय अकबर ३७ १ तास ।

बरस तेरहम १३ पहु बन्यो, ससि सितपक्ख प्रकास ॥ १८ ॥

गनित हुमायों ३१ १ नाम गत, आत अंक इकतीस ३१ ।

सेर ३७ १ प्रभुति पीछै सततै, इहाँ पंचपहुव ईस ॥ १९ ॥

अकबर ३१ १ के अभिधान, इम, संख्या हुव सैतीस ३० ।

इक रजियाफन गिनी इहाँ, नरहि गिनै अबनीस ॥ २० ॥

के पास रहना, इत्यादिक दिखि ले उलका वह कथन, बगल (एक ओर) में रहता है अर्थात् इलजाता है ॥ ११ ॥ प्रथम मिलाप में सुजरा करना आदि सम्पूर्ण रीति की सूचना पहिले की गई है परन्तु आख्यपन को १ हुबोनेवाली असह रीति यह अब हुई ॥ १२ ॥ २ अन्तिम वार्ता हुई ॥ १३ ॥ ३ पुस्तकालय (लाइब्रेरी) की ४ छत पर एक दिन यह वादशाह फिरता था ५ सन्ध्या समय हुआ ॥ १४ ॥ ६ निजाम की अजां देनेवाले ने अजां दी ७ भार पड़ने से आशा (सुहारे का काष्ठ) छिन्न कर लूटवया ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ८ पुत्र ९ स्वानिचना ॥ १८ ॥ १० कौरवाह आदि ११ निरन्तर ॥ १९ ॥ इसकारण १२ अकबर के नाम पर सैतीस की संख्या आती है १३ हे राजा रामसिंह यहां पुरुष वाद-

बय१करि सिंहुसम२वैठताहि, नति१करि बुद्ध समान२ ।

राज्य, सम्हारयो न्यायरत, अकबर३७११गुनन अभान ॥२१॥

हरिगीतम् ॥

इत भूप सुर्जन१९०११बैठि बुंदिय अंतरायें दु२अब्दकैं ।

कोटा बसी करिवे अनीक सज्यो नकीवन सब्दकैं ।

सक सकरी खट इक१६१४लगत भूप हहु६१न संकम्पों ।

जबतैं सु ग्राम चिघट्ट लखि रु बट्ट जुज्झनपैंजम्पों ॥ २२ ॥

अभिधानसिंह१८९११रमान१८९११भैरव१८९११सत्य अर्थन अंकये ।

त्रय३ही पितृव्यतनूज भ्रातहरोलैं निर्भय हंकये ।

नरबद१८८११तनूभव आत नरहरि१८९११ईस खटपुर कोइतैं ।

नगराज१८८११नंदन जो बरंधनि२ईस राघव१८९११हू जितैं ॥२३॥

पुनि कुंभ१८८११अंगैज संगही जगमाल१८९११पिप्पलदा३पती ।

नवग्राम४नाह दलेलैं१८८११सुत जगमाल १८९११अंग महामती ।

ब सदारि५सासक मेव१८७११केतुत माल१८८११जुत जयपैंबढ्यो ।

सामंत१८७११सुत बलकर्ण१८८११बंसिप्र६पाइ प्रष्टप्रथी पढ्यो ॥२४॥

गैनोलि७सासक रामसाहि१८८११सु पुत पर्वत१८८११को गज्यो ।

संग्रामप्रिय जुज्झार१८८११सुत संग्राम१८९११ठिठ्ठर८पति सज्यो ।

जिम लाडपुर९पति भरत१८७११नंदन कितिसिंह१८८११बढ्यो जई ।

लागिबावपित्तल१८६११अनथडा१०पति यंग१८८११सुत बलगाँव११ई२५

शाह हुए सो ही गिने हैं राजिया नामक एक स्त्री पादशाह हुई सो नहीं गि-

नी ॥ २० ॥ । अवस्था से बालक के सज्जन और ३ बुद्धि से बूढ़ों के सज्ज-

न ३ न्याय में रत होकर ४ अतोल ॥ २१ ॥ ५ छोटी ६ बर्ष आगल दो वर्ष के

अन्तर से ७ सेना ८ नकीयों के शब्द से ९ बुद्ध करने के मार्ग पर जचा ॥ २२ ॥

१० अपने भासों के अच्छरों के अर्थ सम्य करकेवाले वा अपने भासों को सत्य

अर्थ से चिन्ह युक्त किये "यहां अहु शब्द अच्छरार्थ बाची है जैसे ब्रह्माके अहु

कहते हैं" ११ काका के बेटे भाई १२ कासी भाषासे आगेको हरोल और पीछे

को चन्दोल कहते हैं १३ पुत्र ॥ २३ ॥ १४ पुत्र १५ अछ रीति अथवा अपनी

कुल परम्परा ॥ २४ ॥ १६ डिंगल भाषा में घोड़ा दौड़ाने को बाग उठाना अथवा

बागलेमा कहते हैं ॥ २५ ॥



खज्जूरि११सासक खेम१८८१२सुत भरतेस१८९१२दास१८९१२दु-  
आत यों ।

जजाउरा१२धिप भीम१८७१२सुत हरिसिंह१८८१२गव्वत जात यों ।

हड्ड१८२१२कुलाधिप लकख१८९१२सुत डव्भी१३स भीम १९०१२

बली हुतो

हम्नोर१८९१२नंदन हत्थ१८१२२कुल संग्राम१९०१२खिन्न१४प्रती

सुतो ॥ २६ ॥

पुनि मोहनोत्तरपताप१८६१२देव१८८१२तनूज बच्छोला १५पती ।

तेजह१८९१२सुत हरि१९०१२नेमडा१६धिप पुग्घुलोत्तरतनी तैती ।

इत्पादि आत गनै सनाभि१सगोत्र२अल्पहु उप्फनै ।

असगोत्र३जे भट अग्न अफिखय जोध छाँ तिनके जनै ॥२७॥

खुंवीस रफिख स्व पिछि यों इतके प्रवीर बहे पत्नी ।

महिपाल पुँव्वहि नीति निब्वहनपै इती कहि बुझली ।

रविमल्ल१८८१२मरतहि सून्य भू सुरतान१८९१२बाल विचारिकै ॥

ताके प्रयाद दई तुम्हैं सु छवीसर२६हायन हारिकै ॥ २८ ॥

अब साहै१ जागिअ प्राण लौ तुम चोर२भग्नहु अज्जही ।

करनौ सैमीक ततो विलंब न होउ सम्बुह कज्जही ।

सुनि एव केसरखान१डागरखान२हंक्रिय सम्बुहे ।

छमै ज्यो सुजंगम होत सम्बुह मंत्रवादिन पै छुँहे ॥ २९ ॥

रन भू भवानाँ आयतैं दिस पुव्व कोसै१मिता रही ।

वत्त छेरमिले तँहँ तेग उम्माट बेग द्वैर दिवतैं वली ।

इक१जान अफिखअनूरुतौ रथ रोकि इफरतु बाक्यो ।

१ गये ताता जूझा २ हात का स्वाभि ३ खीरया नामक आम का पत्ति ॥२९॥

४ गिलगारी ५ ध्वजि ६ लपिखी ॥२७॥ ७ पतिले ही ८ छर्यमल के करने ९ ६

आलस्य अथवा उन्नतता के कारण १० छवील पनै पर्वत ॥२८॥ ११ अग्रा-  
हसार जगा है लो तुम चोर आगो १२ कुछ करना है तो १३ समने अपने के

संगान १४ स्वर्ग किता ॥२९॥ १५ एक जोर १६ अग्रज नामक सारथि से एक

धरनी मचकत धक्क लगि नागेश को नत नकभो ॥ ३० ॥

पलचौर १ भैरव २ जुगिनी ३ सिव ४ सक्ति ५ नारद ६ पाहुने ।

लघु आइ इच्छित पाइ बाह कहैं नहैं सिर लै लुने ।

बचिबो नबंछत जवन जे भटकेनमें भटके झुके ।

कटकेसलों बटके बनावत रंगमें भटके के रुके ॥ ३१ ॥

नृपके चमूपति मान १८९१ भ्रात तुरंग सम्मुह नखखयो ॥

किय रुंड केसरखान १ सिर तस चिल्ह १ गिद्ध २ न चखखयो ॥

आसि भारि डागर २ मानके सिर मान १८९१ के सिर एकही ॥

करि रुंड तिहि निजभ्रातलों बलकी कथा खल के कही ॥ ३२ ॥

भिरि सीसहीन हु मान १८९१ कछुखिन भान ज्यों हनतोभयो ॥

गैनालिसासक रामसाहि १८९१ सराहि डागर २ गयो ॥

दुव २ वीर जुत रहि दाव के भटके परस्पर दे अरे ॥

वर अच्छरी दुलहीन डागर १ रामसाहि २ उभेश्वरे ॥ ३३ ॥

मिहराव मिच्छ भतीज ह्वैं बढि घोर संगर मंडयो ॥

भट स्वीय १ भग्गत थंभि गन परकीय २ खग्गन खंडयो ॥

जजाउराधिप भीम १८९१ सुत हरिसिंह १८८१ को हनि मिच्छजो ॥

अधिराज सोदर राम १८९१ अपै गय अप्प प्राण अनिच्छ जो ॥ ३४ ॥

जिहि कुतै मारिय सत्रुपै सहि सो खिजे बढि संभरी ॥

करवालदे अरिकंधरी धरतै जुदी लैरतै करी ॥

पहर पर्यंत रथ रोकने को सूर्य ने कहा. शेषनाग की १ नासिका भुक्तगई ॥ ३० ॥

२ मांस खानेवाले ३ शीघ्र आकर ४ कटोहण मस्तकों को लेकर ५ शीघ्रता करके

खट्वा के प्रहार से लगे ६ सेनापति नक ७ टुकड़े करतेहुए युद्ध में ८ कितने ही

वीर रुके ॥ ३१ ॥ ९ मानसिंह के मस्तक पर वमण्ड के साथ एक खड्ग मारा ॥ ३२ ॥

१० जिसप्रकार घेत सहित मारे तिस प्रकार मारता रहा ११ खड्ग ॥ ३३ ॥ १२

शत्रुओं के वीरों को १३ जजाउर के पति १४ अपने प्राण की इच्छा नहीं कर

बेवाला ॥ ३४ ॥ १५ भाला १६ खड्ग के प्रहार से १७ कन्ध (गरदन) १८ छड़ते

मिहिराव ३३३ हि मारिं असि सासंत १८७।१ सुत सिव १८८।६ संहरयो ॥  
 बलकर्ण १८८।१ तैंहँ तस बंधु काय कबंधको सु\*द्विधा करयो ॥ ३५ ॥  
 दुवशसर गुलामनवी ४ इतैं वढि भूप सुर्जन १९०।१ कै दये ॥  
 तिहिबेर तुरकन प्रानलोभ तक्यो न गंजतही गये ॥  
 नृपघात अकखय १८९।१ मारि तोसर ह्वां गुलामनवी ४ हन्यो ॥  
 वढि अगग मारि रहीम ५ को जयथंभ बुंदियको वन्यो ॥ ३६ ॥  
 प्रभु राम २०३।१ मिच्छन यों प्रबंध हुतो न जीवत हारिहँ ॥  
 परं भूप सुर्जन १९०।१ भाग्य सुखय १ हनैं रु खिलैं २ अव पारिहैं ।  
 भट सेस जवनन देस छोरि रहीम २ तुष्टतही भजे ॥  
 कोटापुरी पहुँचे रु जित्तन सूर सुर्जन १९०।१ के सजे ॥ ३७ ॥  
 ततकाल पत्तन पैठि हड्ड ६ न जुजिभ सत्रु हने तहाँ ।  
 जवनेस डागर २ भ्रात रोग असाध्य तैंहु जुरयो तहाँ ॥  
 सालारगाजी २ नाम जो तजिमंच सम्मुह संक्रम्यो ॥  
 दल फार हड्ड ६ न द्वार पूगत खग १ हड्डन २ लो दम्यो ॥ ३८ ॥  
 तस भ्रात १ भट २ गन रोगबिलु तजि जुद्ध बाहिर ज्यो जुरयो ॥  
 सहैरोग तिनसुन सो १०० गुनो यह ३ वीरता रन अंकुरयो ॥  
 असि भारि कीरतिसिंह १८८।१ टोप रु मारि खट ६ भट सो मरयो ।  
 तस नाम अजैहु द्वार वज्रत जत्थ जो यवने तरयो ॥ ३९ ॥  
 सालारगाजिय ३ पारि संभर सत्रुगन खिल संहरयो ॥  
 कोटा सु अवद छवोस २ दैं गतैं गांजि अप्पन यों मुरयो ॥

३५ ने ३ दो टुकड़े करदिये ॥ ३५ ॥ १ पाशा ५ भाला मारकर ॥ ३६ ॥ १ हे  
 रामसिंह १ परन्तु ३ पाकी रहे जिनको अव मारेगा ४ पाकी के यवन ॥ ३७ ॥  
 ५ सम्मुख बला हाथों की सेना का सम्मुख द्वार पर पूगने ही खत्र और ६ रोग  
 के कारण अपने शरीर के देहाटमात्र पाकी रहे थे जिनको लेकर मारे ॥ ३८ ॥  
 ७ रोग सहित था तो भी उन मैराजवालों से सांगुना ८ युद्ध में लड़ा हुआ ६  
 पाज भी जिनके नाम द्वार प्रसिद्ध है १० सेमार को तिरा ॥ ३९ ॥ ११ चहु-  
 बाज १२ गया हुआ

तैंहँ मान १८९११ सिव १८८१६८ हरि १८८११ रामसाहि १८८११ स्वधा-  
त ए चउ४ तुट्टये ॥

असगोल वर भट अहु८के अहु छोह लोहन छुट्टये ॥ ४० ॥

पहिलें लिविक्रम१स्वामिसौं रन ठानि सैंगर जो परयो ॥

इहिं मंतु तल सुत सोहु बंधन गाम धाम सु उत्तरयो ॥

सैंगर प्रताप२तथापि तक्षिय सरन भूप सुभांड१८६१४ही ॥

महिपाल लाखि इम सुख पुनि ताकीहि ताहि दई मही ॥ ४१ ॥

इही१मही२अन्त्यानुमासः १ ॥

जुग२घाय बाबर३० जुद्धमें लारि दीप३तास तनै लहे ॥

सुत ताल इहिं रन स्याम४१ वपु तेजि स्वर्गके सुख सैंगहे ॥

प्रतिहार मल्हन२स्यामजुत सोलांखि सिव सुत प्रेम३थ्यों ॥

हरि४कर्णसरबाहिषा तनै दहिया प्रतापज हेम५थ्यों ॥ ४२ ॥

तोमर सुमेर६प्रतापनंदन कलरतन तनै नरु७ ॥

बलराजपुत प्रभार त्यों बलुदेव ८ बुंदिय बाहलू ॥

नरु १ हरु २ अन्त्यानुमासः ॥ १ ॥

असगोत्र अहु ८हि संटि ए सब मिच्छ सुरजन१९०११ संहरे ॥

जिम भ्रात चउ४ असगोत्र पंचक५ पिंड धारनमें जरे ॥ ४३ ॥

नृपआदि त्रिक३ सहजांत दुव दुव२ इक१ छतं क्रम निबन्धो ॥

लारि घाय इक१ सामंत१८७केर कुमार१बलकर्ण१८८११४हु लहो-

असगोत्र वीरनमें समान १ कुवेर२केसरि ३अग्रनी ॥

अमरेस ४ संकर ५ घाय पाइ हनी सु मिच्छनकी अनी ॥ ४४ ॥

सृष्टं ज्यों मरे नृप जात बुंदिय निच्छ यों सबही मरे ॥

१ नारेणये २ अष्ट वीरोंके ३ प्राण शत्रों ले गये ॥ ४० ॥ ४ इस अपराध से

५उलकी भूमि पीछी उली को दी ॥ ४१ ॥ ६ प्रतापसिंह का पुत्र ॥ २४ ॥

७ सहायक = पदले में देकर ॥ ४३ ॥ ९ सनेआई १० पावों का एक

सा क्रम निबन्ध ११ अचनों की सेवा को जारी ॥ ४४ ॥ १२ बुद्ध में बुन्दी

जाने के समय ज्यों बुन्दी के राजा मरे त्यों कोटा जाने के समय सब स्नेहमरे

कोटा १ दि परदस प्रांत सांत निसान निज बजतेकरे ॥

हम जयि खिदि १३ म जो लई धर सो लवे घर आनिक्कें ॥

सृष्टमें नउपति राखमहूर प्रसाधैपतके तन सानिकें ॥ ४५ ॥

खिल किय अर्पाग परतुनेद १८७१११३ कित्तिसिंह १८८११२इहां खिरे

चउ बीर बलि अन्नगोत्र नाम अणुध धारनमें चिरे ॥

लाहि पै मज १ सन प्रांत पच्छिम हउ ६१ हेहि बिजे लाहो ॥

रनमछ प्रायल यत दुंदिय आय उच्छवतैं रह्यो ॥ ४६ ॥

उम१ नाम अपि रमान १८९१११३ तनहमरी १९०१११३ तितित आदरयो ॥

क्रम रामसाहि १८८११३ तनूज अतिपन बाडेमान १८९११३ वली कह्यो ॥

हरिसिंह १८८११३ सोदर रायगह १८८११३ मसोव वै हिय लाइकें ॥

बलि कित्तिसिंह १८८११३ तनूज करन १८९११३ हि अर्घि मान कडाइकें ४७

व सदारिके बघयेव १८७१३ के सुत माल १८९१३ तैं हित विस्तरयो ॥

बलि कर्ण १८८१३ अंधखय १८८१३ अदि यापल दैदयो हित मैवस्यो

तिन आन १ मान बंधारि सुर्जन १९०१३ मृग यों सबमें तप्यो ॥

अरे जंत नरेसन देसदेसन रदिव सेसन औलप्यो ॥ ४८ ॥

कलुकाल अकवर ३७१३ पट्ट बैठतही व्यतीत इतैं करयो ॥

तैं हेम ३८ ऊर्ज ३ अग्रवाल अभीष्ट छिद नदी तस्यो ॥

वर्द्धमान १ गुरुजुत कहि अकवर ३७१३ अण्ण ओसैरमें वली ॥

गहि पट्ट बिलियको लह्यो अब कोन पिच्छनको गली ॥ ४९ ॥

हम जाति बनिक ३ हु साइ ठे नरनाह २ अंजनको हसैं ॥

१ कोटा के प्रांतों के अन्त तक अपने नगरे बजाये २ अत्यन्त असाध्य

॥ ४५ ॥ ३ बाही के ४ बांदवसे ५ जियने नाम उनको साकूत नहीं हैं वे त-

रगारों की धाराओं में गोतेसे ६ हाज कजियों का मर्द ॥ ४६ ॥ ७ आद

र कर्ण ॥ ४७ ॥ ८ धायकों के लहू को लोह में नष्टता दिया ९ उनके य-

ज को १० कल ॥ ४८ ॥ ११ हेम नामक चमरमान वैद्य ने १२ अपने अणुपुत्र

१३ चरमान नामक युव पतिन आत्मान जानने को निमतल १४ अपने बयम

में बलवान हुआ ॥ ४९ ॥ हेम पतिना है तो भी आदखत होकर १५ आपने

विधिजोग अब जय छोग यह तजि भीरु बीरनमें बसैं ॥  
 धरि दर्प यों वह हेम३८ ऊरुज३भोग बिलसनमें धर्यो ॥  
 दुव२जुद्ध जिति सतहुँपार उतारि मुगलदन उल्लस्यो ॥ ५० ॥  
 जिहिं लाखि प्रमत्त रु मुगल६ इत लाहोर पुनि जयकाँ जुरे ॥  
 घन थट्ट संचय बंब बहुविध जंगपै जिनके घुरे ॥  
 जड हेम३८ बानिज३ अग्रवाल सु भोगमें प्रविसैं न जो ॥  
 तैमूर२२को कुलतंतु इक१हु अत्थ दै रहिबै नतो ॥ ५१ ॥  
 पै बनिक३ दुर्लभ राज्य पाइ प्रमत्त भोगनमें परयो ॥  
 विधि एह पिक्खिख रु बनिक भखपर जाल मुगलदन बिस्तरयो  
 सब स्वीयजुत बहराम१ मत इत साह अकबर३७१सज्यो ॥  
 दल दाव बानिज हेम३८ पै बढि वेग मुगलदन वहाँ दयो ॥ ५२ ॥  
 सुनि साह१आवत साहजूर जयलाह सम्मुह संक्रमैं ॥  
 जुग२आंत अभिमुख जंगयों इम रंग पानीपथ जमैं ॥  
 रचि जुद्ध तोपन अग्न होतहि खंगमैं न रुकेरहे ॥  
 बल१हेति१२मूल१कलारु तोल१तुल१दृथा इतके बहे ॥ ५३ ॥  
 उतके प्रवीर कर्जाँक मुगलदन बनिक३बल बढि अंगम्यों ॥  
 बपुरो सु विक्रयकाँर बेदत सोर विक्रयको सँम्यों ॥  
 बाजार गव्वनहार कूटछँइल संचय बिकखरयो ॥  
 करि हेम३८बनिक३हि कैद मुगलदन भेट अकबर३७१की करयो  
 राजाओं को हसता है १ ब्रह्मा के योग से अर्थात् भाग्य से २ उत्साह ३ श-  
 तहुनदी के पार मुगलों को उतार कर ४ बढ़ा ॥ ५० ॥ ५ नगारे ६ वह सू-  
 ख हेनू बनिया भोग भोगने में नहीं लगता तो तैमूर के पंश का एकतन्तु भी  
 यहाँ नहीं रहनेदेता ॥ ५१ ॥ ७ बनियाँ रूपी मच्छी पर ॥ ५२ ॥ ८ वह हेम  
 नामक बनियाँ बादशाह को आया सुनकर जय लेने के लिये सन्मुख चला ९  
 सन्मुख पानीपथ में युद्ध जंचा १० तरवारों में ११ सेना १२ शस्त्र १३ सुल और  
 व्याज (तुद) १४ तराजू ॥ ५३ ॥ १५ युद्ध करनेवाले १६ पकड़ा अथवा काबू में  
 किया १७ चिचारा बेचनेवाला घेरने का शोर सुनकर १८ बेचने को झूलगया  
 १९ बाजार में गर्भ करनेवाला २० झूठे छेले का संचय बिखरगया ॥ ५४ ॥

हनतो न अकबर ३७११ ताहि पै बहराम १ गुरु\* असु दै हन्यो ॥  
बलि आइ दिल्लियत गाह नाह सु साह अकबर ३०ही बन्यो ॥  
रनथंभमै पहिले रहे भट सेरसाह ३२११ सलेम ३३११ के ॥

अब राज्य अकबर ३७११के सम्हारत भीति धारत अकबरके ॥ ५५ ॥

मके १ बके २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

गढईसँ वह सामंत १८७११हहुहि एक शतिन्ह सरनौंगहो ॥

चलाचित्तकै सरनौंन भाइपलाइ उब्बरनौंश्चहो ॥

किय बिनती तुम दुर्गरक्खहु हसहि जीवत कहिकै ॥

बलको धनी सु नतो ब अकबर ३७११दे हमै पहु बहिकै ॥ ५६ ॥

मन्नी सु सुनि सामंत १८७११संत न मोहि दुर्ग यहै मिलै ॥

गुरु ग्राम सुर्जन १९०११भूपबिनु बनि साह सुर्जनको गिलै ॥

दल भूपप्रति यह चितिकै सामंत १८७११अतिहितसौं दयो ॥

गढ अप्प रक्खहु आइ होत नतोब मिच्छनकै गयो ॥ ५७ ॥

दोहा ॥

हतपुब्बहि सुर्जन १९०११अधिप, व्याहे दुवसुत बीर ॥

बल्लनोत बनबीरकी, सुता उभय विधि सीर ॥ ५८ ॥

पुब्ब निहारहु राम २०३११प्रभु, रुचित हुती यह रीति ॥

सुद्धकुलहि इक सोधते, न धनधरा २ दृग नीति ॥ ५९ ॥

ग्रामनपति व्याही गिनि रु, भूमिपतिन छूत भूप ॥

क्रिय सुत दूदा १९१११भोज १९११२के, उपयम जगरअभिरूप ॥ ६० ॥

अकबर उस हेमू को नहीं मारता परन्तु अकबर के उस्ताद बहराम ने\* चित्त देकर अथवा ताप देकर "यहां असु के स्थान में 'असि' होना संभव है जिसका अर्थ 'गुरु बहराम ने तस्वार की देकर मारा यह है' मारा फिर दिल्ली के स्थान (फारसी भाषा में स्थान जगह को 'गाह' कहते हैं) में आकर अकबर ही बादशाह हुआ १ घवराए ॥ ५५ ॥ २ किल्लापति ३ भागकर ॥ ५६ ॥ ४ पत्र ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५ यह रीति अच्छी लगती थी ६ भूमि और धन पर दृष्टि नहीं देते थे ॥ ५९ ॥ ७ राजाओं के होतेहुए भी ८ विवाह ९ सुन्दर ॥ ६० ॥

जेठीःलच्छी१९११नामजुन, दूदा१९११लाहिय उदार ॥  
 राजकुमारि१९११छोटी वरिय, भोजकुमार१९११जस आर ॥६१॥  
 दुजनसल१९११प्रवीरदृढ, व्याहन सल्लिधि धेर ॥  
 सीमा पुं सीखोरकी, धाये मोधन धेर ॥ ६२ ॥  
 तीर प्रगंडेः हत्यतलर, सहि दुयरेदुर्जनसल१९११ ॥  
 कुसर दुराये सो निकर, हनि सिद्धन करि हल ॥ ६३ ॥  
 धीर हनें बहु धादिधर, विनुसिर इहि रनबीच ॥  
 तुलारासःकिय जस अतुल, द्विजन व्यास दाधीच ॥ ६४ ॥  
 पीछें धरि उपनाहपट, कर जोरयो कुमरेस ॥  
 प्रथित चाहुकिन इस परनि आयो साहुज एस ॥ ६५ ॥  
 कर्कनसोचन पुव्वःकिय, पीछें यह करपट ॥  
 दूदा१९११इकदस११बरस वय, द्विजथ लये कुलदृढ ॥ ६६ ॥  
 इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठ ६ राशो वीतिहो  
 त्रवसुधेरवरबीजव्याख्यानबीजहृद्धाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवं-  
 श्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावनरव्याहार्यबुन्दीवनुर्धावरसुरतासासि  
 हचरित्रे दिल्लीन्द्रकुसायुसम्राजो मासपोपदेशेनमिरराजकूर्मभगवंत  
 सिंहपुत्र्या कह स्वकुताकवरपाणिमहारासंपावनः आर्यपुत्रीभिः स-

॥ ११ ॥ १ विवाह के सलीष के समय में ॥ ६२ ॥ २ कलाई (कुहनी के ऊपर का भाग) और हथेली पर दो पाण लदकर ३ गाँछों के सहह को छुड़ाया ॥ ६३ ॥ ४ पाठावतिर्यो का. इस युद्ध में धीर ने बिना अस्त्रक होकर पट्टों को मारे जिसका अत्यन्त यश दाधीच वंश के ९ ब्राह्मण तुलाराज ने किया अर्थात् उसने इस युद्ध का काव्य रचा ॥ ६४ ॥ ५ पाटा (पाव सिंघाने का उपचार) दांधकर कुसर ने हथेलीका जोड़ा ७ प्रसिद्ध ॥ ६५ ॥ ८ कंकणडोरका पहिने खोला और ९ पाव के पाट को पीछे खोला ॥ ६६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वार्णवर्ग के छठे राशि में अग्निवंशी राजाजों का व्याख्या के बीज हृद्धाधिराज अरिपताल के वंश और वंश के पीछे के वृत्तान्त की व्याख्या से वर्णनीय बुन्दी के मृपति सुरजन के चरित्र में दिहो के बादशाह दुसायो का ईशान के बादशाह मासप के उपदेश से आसैर के राजा भगवन्तासिंह कछवाहे की पुत्री से अपने पुत्र अकबर का विवाह करना,



हास्य यवनप्रथमपाणिग्रहणावसरस्य समर्थन २ पुस्तकालयाद्वप-  
तितहुमायुमरणोऽकबरसाम्राज्यासादन ३ बुन्दीन्द्रसुरजनस्य केश  
रखानडागखानविजयनेन कोटाराज्यस्य पुनर्बुन्दीराज्यसंमिश्रणा ४  
अग्रवालवंश्यहेमूवैश्यस्य मुगलयवनान् शतद्रूपरतीरसुत्तार्य दिल्ली-  
सिंहासनारोहणा ५ पानीपथसमरबद्धहेमूवैश्यस्य बहरामविहितवधेऽ-  
कबरस्य दिल्लीपतित्वासादन ६ बुन्दीन्द्रसुरजनज्येष्ठसुतदुर्जनसाल  
स्य गोप्रहणयुद्धक्षतावस्थायां पाणिग्रहणकथनं चतुर्थो मयूखः ॥४॥

आदितः सप्ताशीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इम ग्रामनपति अंगजा, पुत्तजुंग २ हि परिनाइ ॥

सुता नृपन सुर्जन १६०१ समय, अब व्याहहिं अधिकाइ ॥ १ ॥

इकखहु पै प्रभु राम २०३१४ यह, सिसु बय दुर्जन १९११ सल्ल ॥

सन्नह सोलह १६१७ सकसमय, बह्यो विजय मूँध मल्ल ॥ २ ॥

रायमल्ल १९१३ सिसुतर रहत, इम यह अबहि अनूँढ ॥

वयग्यारह ११ नवक्रम वरस, बुध भ्राता जुग २ व्यूँढ ॥ ३ ॥

आर्यों की पुत्रियों का यवनों से विवाह होने के इस प्रथम अवसर का सम-  
र्थन करना, पुस्तकालय की छत के ऊपर से गिरकर हुमायों की मृत्यु और  
अकबर के बादशाह होने का कथन, बुन्दी के राजा सुरजन का केशरखान  
और डागरखान को जीतकर कोटा को फिर बुन्दी के राज्य में मिलाना, हेमू  
नामक अग्रवाला वंश के वैश्य का मुगलों को शतद्रु नदी के पार उतार कर  
दिल्ली का बादशाह होना, पानीपथ के युद्ध में पकड़े हुए हेमू को बहराम के  
मारने पीछे अकबर का दिल्लीश होना, बुन्दी के पति सुरजन के बड़े पुत्र दु-  
र्जनसाल का गौआँ को छुड़ाने के युद्ध में घायल अवस्था में विवाह करने की  
कथा का चौथा मयूख समाप्त हुआ ॥४॥ और आदि से एकसी सत्तासी मयूख  
हुए ॥ १८७ ॥

१ ग्रामों के ठाकुरों की पुत्रियाँ २ दोनों पुत्रों को व्याहकर ॥ १ ॥ ३ युद्ध कर-  
नेवाला मल्ल ॥ २ ॥ ४ बिना विवाह ५ विवाहे ॥ ३ ॥

किय अकखय १८९१ सोदर कुमति, आगंस तब अवनीस ॥

इम दिय इक १ नवताड़ इहिं, तजि पट्टनि १ मुख तीस ३० ॥ ४ ॥

बुंदीपति बनिवे बिमति, यह रनथंभ उदंत ॥

दिय दिल्लिय किय जोहिदढ, मत सुर्जन १९०१ सामंत १८७१ ॥ ५ ॥

सांघिबिग्रहिक सचिवसुत, हो दिल्लिय तब हेम ॥

लहिपिहित सुअकखय १८९१ लिखित, पठयो तिहिं पति प्रेम ॥ ६ ॥

लै पट्टनिसुख छद सु लिखि, अकखय १८९१ सोदर अंत्य ॥

अपिय नृप नवताड़ इक १, तजि बिसासपन तत्थ ॥ ७ ॥

हुँन्यो निलयकोन सु दुमन, लै अकखय १८९१ यह लज्ज ॥

मर्यो अरहि न दिखाइ मुख, खावन न लहि अखज्ज ॥ ८ ॥

तस पत्तिन जेठो तनय, पट्ट दयालु १९०१ खिन पाइ ॥

पटक्यो बुंदिय नृप पयन, प्रमुदित निर्यत पढाइ ॥ ९ ॥

पट्टनि तदपि दई न पहु, इत १ चउ ४ ग्रामहि अपि ॥

सालहरा १ तारज्ज २ सह, थिर परस्तट दिय थपि ॥ १० ॥

षट्पात ॥

चितिय नृप नयचर्तुर पुनिहु जिन राम १८९३ पलाटिय ॥

इतर बंधुकुल अयन खोइ नृपपन कै खटिय ॥

इम अकबर ३७१ आतंकगंजि नभ दग सोलह १६२० सम ॥

अस्वखैव आरूढपति चउसत ४०० बिसास प्रेम ॥

लै भूप अद्रिसिर छत्र लैहु पहुँचन हुँत करवाई पथ ॥

रनथंभ प्रविसि अद्दी १ रजनि वे लिय जवन बिसासि अथ ॥ ११ ॥

१ अपराध २ ग्राम का नाम है ३ पाटण आदि तीस ग्राम छोडकर ॥ ४ ॥ ४

मूर्ख ५ वृत्तान्त ॥ ५ ॥ ६ सन्धि और विग्रह करनेवाला ७ छाने ॥ ६ ॥ ८ पत्र

९ यहां ॥ ७ ॥ १० छिपा ११ घरके कोने में १२ उदास १३ शीघ्र ही १४ अभक्ष्य

नहीं खाया ॥ ५ ॥ १५ प्रसन्न मन से १६ निश्चय ॥ ६ ॥ १७ चामल नदी के

परले किनारे ॥ १० ॥ १८ नीति चतुर १९ अन्य २० बन्धु कुल का घर २१ अ-

कबर के भय को दवाकर २२ छोटे घोड़े पर चढ़कर २३ चार सौ पैदल २४

परम विश्वासवाले के साथ २५ शीघ्र २६ शीघ्र ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

दुर्गअधिप सामंत १८७।१ दह, जवन हुते बस जास ॥  
तिन जुत मुख्य अजीम तिन्ह, प्रैनम्यौ तँहँ पहुपांस ॥ १२ ॥  
अखिखय विन्नति अगहि अग, निजभुव हमहिँ निकासि ॥  
अहँ कछु रक्खि रु लखि अभय, भेजहु घर हितभासि ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

तिन्ह सुरजन १९०।१ तब कहि अगहि अग मग निज आश्रय ॥  
ऊमरथूनाँ अत्थदये छिपिरहंन महासँय ॥  
इक १ वरसलग अवधि निखिल रक्खे तँहँ निर्भय ॥  
पुनि अवसर तिन्ह पर्यत्य पिहित पठये जनाइ जय ॥  
मिलि तेहु सिकंदर ३६।१ कुल मुदित जानतहुव अव आहि जिय ॥  
गहि इत नरेस रनथंभगढ क्रम प्रसन्न सामंत १८७।१ किय ॥ १४ ॥

दोहा ॥

गहिय भूप मम गेह गढ, थित जोलौ रनथंभ ॥  
किल्लापति सामंत १८७।१ कुल, थिर तोलौ पनथंभ ॥ १५ ॥  
इम सामंतहिँ तँहँ अधिप, अप्पि दुर्ग अधिकार ॥  
लखि संचित सम्मद लहो सब जुज्झन संभार ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

भूप सकल भंडार खुलि संचय पिकखन खिनै ।  
अतसी १ कोद्वै २ आदि अन्न निरखे हड्ड ६ १ न ईन ॥  
तैल १ मधु २ रु सन तूल २ गंजदारूद १ रु गोलन २ ॥  
संभृत वस्त्र १ रु सस्त्र २ मुहुर १ रुपय २ कितेहि मन ॥

१ नमस्कार किया (भुक्ता) ॥ १२ ॥ पहिले ही चिन्ति की २ पर्वत अर्थात् इस  
रणतभँवर के पर्वत से हमको युन्दी की भूमि में निकालकर वहाँ ३ कुछ दिन  
रखकर ४ हित का प्रकाश करके घर भेजा ॥ १३ ॥ तब सुरजन ने उन को पर्वत  
के मार्ग से वृत्तों में अपना आश्रय देकर निकाल दिया ५ महाशय ने ६ एक वर्ष  
पर्वत ७ समयको रक्खे ८ घर ९ छाने भेजे १० हैं ॥ १४ ॥ ११ प्रतिज्ञा का धर्म  
॥ १५ ॥ १२ युद्ध करने की सामग्री देखकर ॥ १६ ॥ १३ देखने के समय १४ अलसी  
(धान्य विशेष) १५ कोद्वै (धान्य विशेष) १६ दाँतों के राजा ने १० रु १२ भरे हुए

कनकादि धातुअघटित संकल इतिमुख चिरतनशनव्यश्चब ॥  
 गुड़ःआज्यंश्लवनःपशुःखाद्यर्गनं सुमनःजवाःदिक धान्य सब १७  
 दोहा ॥

सोराशंघकशालःसह, इम नाना उपहार ॥  
 निजगढ कोस खुलाइनृप, देखे अखिल उदार ॥ १८ ॥  
 अतसी संभृत कोस इकः, देख्यो ताबिच दोइ ॥  
 कर्मन विष्णुप्रतिमा कढी, हह्वःलई नतं होइ ॥ १९ ॥  
 प्रतिमा जे बुंदीपुरहि, पुनिभेजहिं महिपाल ॥  
 मन्निय मोद गिनाइ गढ, त्रिसत ३०० नौलिचउंताल ॥ २० ॥  
 वेताल ॥

चहुवानराज दुराइ, चामर थान लिय रनथंभ ॥  
 सुनि ओदके चहुंअर सात्रवै आनि सत्व अछंभ ॥  
 सामंत १८७१ को करि दुर्गसासक स्वीय सो गढ सज्जि ॥  
 दिल्लीस चित्त खटाकि दब्बिय ग्राम चउसत ४०० गज्जि ॥ २१ ॥  
 बुंदीरु पट्टनिःतव दषे सुत दुजनसल्ल १९१ १ हिं सूर ॥  
 पुनिद्वैरहि दिय लखैरि १ खटपुर २ भोज १९१ १ हित बसुपूर ॥  
 सिसु रायमल्ल १९१ ३ हिं त्योंहि अप्पि पलहायथ १ रु मंगोदर ॥  
 रनथंभअप्प बली रह्यो करि स्वीय भुव चहुंअकोद ॥ २२ ॥

१ स्वर्ण आदि २ बिना षड़ीहुई ३ इत्यादि बहुत समय की थी और अब नवीन  
 ४ घृत ५ पशुओं के खाने के पदार्थ ६ गोहू ॥ १७ ॥ ७ नाना प्रकार की सामग्री  
 ॥ १८ ॥ ८ अतसी धान्य से भराहुआ भण्डार देखा जिसमें विष्णु भगवान्  
 की ९ सुन्दर दो मूर्तियां निकली १० अककर ॥ १९ ॥ ११ तोपें ॥ २० ॥ १२ डरे  
 १३ जखु १४ पराक्रम में \* आश्चर्य करके ॥ २१ ॥ १५ धनसे पूर्ण १६ चारों दिशा

\* मेवाड़ के इतिहास में रणतर्भर का गढ चित्तोड़ के आश्रित होना लिखकर राव सुरजन को उसका  
 किञ्चेदर करना लिखा है वही वार्ता कर्नल टॉडने 'टॉडराजस्थान' में भी लिखा है और महाराणा रतसिंह  
 के समय रणतर्भर चित्तोड़ के आधीन था जिसकी सारी तुजकबादरी से भी होती है राव सुरजनने अप  
 ने लाभ करके महाराणा को यह गढ अकबर को दे दिया जिसकी गिन्दा टॉडराजस्थान में बहुत लिखी है।

सुत भोज१९११खटपुर बास करि तब किय स्वदेस सम्हारि ।  
 पगि प्रीति अग्रजसों मिले बूंदीहु कवहु पधारि ॥  
 ही बल्लनोति जु भोज१९१२की कुमरानि रूपविहीन ॥  
 निज भूहु इच्छन ही सु कज्जलकी रचै सु नवीन ॥ २३ ॥  
 बहिनी बडी ढिग जो रहै तिहि लेन खटपुर बुल्लि ॥  
 बूंदीहु आइ रु जाइ बलि तिय मैं हिय हित तुल्लि ।  
 भनि इच्छ रति प्रजावती बूंदीहि रक्खहि भोज१९१२ ॥  
 आधान रत्न१९२१कुमारको रहिहै तबहि अति ओज ॥ २४ ॥  
 सूचकन सूचित सूचना सुनि साह सुजन१९०१सीस ॥  
 चढि दुर्ग जितन चितयो इहि, अखि बूंदियईस ॥॥  
 इहिबौच बत्त सुनी अधानक दुसह कछिय दोरि ॥  
 गुजरात हाकिम गर्वगंजत वित्त देस बिलोरि ॥ २५ ॥  
 भगवंत तब आमैरभूपति पुब्व तत्थ पठाइ ॥  
 बहुरयो सुन्यो वढतोहि बिग्रह नैर अहमद नाइ ॥  
 पठयो सु मानकुमार तस पुनि सहसदस१००००दल सत्थ ।  
 सुत आत सुनि अरिसीसही तस तात रुकिगय तत्थ ॥ २६ ॥  
 मिलिकैपितासुत२६शतहै मद मंद कठिन मारि ॥  
 गुजरातहाकिमपै लगाइ मुरे परस्मयै गारि ॥  
 करजोरि हाकिम मानकुमार सु रक्खयो कछुकाज ॥  
 चितोर चितिय रानतै मिलिवोहि कूरमराज ॥ २७ ॥  
 इहिआत सुनतहि रान उदयहु प्रांत बंधु पठाइ ॥

की भूमि को अपनी करके ॥ २२ ॥ १ बिना रूपवाली २ एक और नहीं था  
 सो काजल का बनाती थी ॥ २३ ॥ ३ भोजाई कथन करके भोजको अकरा-  
 यि बूंदी में रक्खेगी ४ गर्व ५ बड़ा प्रतापी ॥ २४ ॥ ६ सूचना करनेवालों की  
 की हुई सूचना ७ काठी लोग दौगकर गुजरात के हाकिम का घमण्ड मिटाते हैं  
 ८ मथकर ॥ २५ ॥ ९ आमैर के राजा जगबन्तसिंह के पुत्र मानसिंह की १० उ-  
 स मानसिंह का पिता ॥ २६ ॥ ११ जूझ काठियों का घमंड नारकर १२ बंधुओं  
 का गर्व मिटाकर ॥ २७ ॥ १३ महाराणा उदयसिंह ने सीमा तक अपने भाईको

पहुगम्य सीमहु आइ प्रविसत अप्प गो अलसाइ ॥  
 निज रीतिपथ मिलि द्वैरहि नृपचित्तोर आये चाहि ॥  
 प्रविसाइ डेरन कुम्भमपहु गय रानरहित अवगाहि ॥ २८ ॥  
 तिहिंजाइ दुर्ग बिसेस स्वागत दै कही गुरु ताहि ॥  
 जेलौ गये तिन्ह तत्थ जंपिय अप्प गौरव आहि ॥  
 हमरे नरेस कह्यो बडोदिन आत कूरम अज्ज ॥  
 तुमहूबिचारि सु प्रीति तक्कहु यौ रहैं सम अज्ज ॥ २९ ॥

रमअज्ज १ समअज्ज २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

महिपाल उदय कहाइ दिय तुमको बडे नृप मानि ॥  
 बल ईस अकबर ३७ ३तैं बचावहु अप्प इत हित आनि ॥  
 सुनि एह हुव भगवंतके कटि प्रोथ फुल्ल समान ॥  
 रतिकौ दिखाइ कह्यो बडे निजधर्म रच्छक रान ॥ ३० ॥  
 तनया दई अपनी सु विधि तकि चाह मन्निय चित्त ।  
 सीसोदहू अब दैन संतति मोहि मन्नत भित्त ॥  
 इम जानि रान निकेत जाइ रु कुल बडे कछवाह ।  
 एकांत अखिय हमहु हेरत चित्तसौं हितचाह ॥ ३१ ॥  
 सुनि रान उत्तर ना दयो कछु जोध बोधैंक सोधि ।  
 बढती कही भगवंत त्योंहि गिनी महत्त्व प्रबोधि ।

भेजा और वह राजा भी १ जब जान योग्य सीमा में पहुँचा तब आप २ आलस्य करके गया अर्थात् बादशाहों के संबंधी होने से अग्रगामिता उत्साह पूर्वक नहीं की ३ कछवाहे राजा को डेरों में पहुँचाकर ४ हित का थाह लेकर ॥ २८ ॥ ५ आये का आदर करने की सामग्री देकर अपने मनुष्यों को भेजे जिनने जाकर कहा कि आप बडे हैं और हमारे राजा (महाराजा) ने कहा है कि ६ कछवाहे के आने से ७ आज बडा दिन हुआ ८ बराबर आर्यपन ॥ २९ ॥ ९ नितंब फूल गये "धमरुड पूर्वक प्रसन्न होने में यह लोकीक्ति है" १० प्रीति दिखाकर ॥ ३० ॥ भगवंतदास ने जाना कि मैंने मेरी पुत्री बादशाह को विवाही जिसकी चित्त में चाहना करके राजा भी अपना संतान बादशाह को देना चाहता है ११ राजा के घर में जाकर ॥ ३१ ॥ १२ कुछ समराव समझा देंगे यह जानकर राजाने उत्तर नहीं दिया १३ बहृष्पन जनः

सह असन खिन पुनि कुम्भ अखिय रान बैठहु सत्थ ॥  
 तब उदय जंपिय अज्ज मम व्रत इक्क भोजन तत्थ ॥ ३२ ॥  
 भगवंत आखिय भोनभो व्रत इक्क कोरहु अप्प ॥  
 दुत रानके भट सु सुनि बुलिय रक्खि निज कुल दप्प ॥  
 तुम संग भोजन हमहु न करहि दूर रान उदंत ॥  
 दिल्लीसकाँ दुहिताँ बिबाहतहो बडे कुल हंत ॥ ३३ ॥  
 देखो इहाँ असगोत्र सुभटन रान पुत्रिय देत ।  
 हमहु नदेहँ अप्पघरँ अब जानि सुगलन हेत ॥  
 यह सुनत कूरम छिज्जि मन खिजि छोरि भोजन उट्टि ।  
 चलतैं चवी इत मान आवहिं तिहिं न सूत्रहु तुँट्टि ॥ ३४ ॥  
 चवि एह कूरम रुठिगो प्रतिकूल गिनि चितोर ।  
 जिहिसंक अज्जनखंड सो लाखि हो ब अकबर ३७११ जोर ॥  
 कछवाह नृप इम ठानि गो इन्ह दर्प नासन कज्ज ।  
 सुत तास मानहु सोहि सुनि मिलिबेहि आयउ सज्ज ॥ ३५ ॥  
 भगवंततैं जुहि बत्त हुव सुहि मान सुनि मद भार ।

कर १ साथ भोजन करने के समय कछवाहे ने राणा से कहा कि शामिल बैठो ३ उदयसिंह ने कहा कि आज मुझको एकासना है ॥ ३२ ॥ ४ भगवन्तसिंह ने कहा कि एकव्रत हुआ न हुआ इससे एकव्रत को छोड़दो ५ अपने कुल का दर्प (धमंड) रखकर ६ राणा के भोजन करने का वृत्तान्त तो दूर रहा हम भी आपके शामिल भोजन नहीं करते ७ पुत्री = खेद है ॥ ३३ ॥ ८ असगोत्र उमराओं को ९ आपके घर में हम भी पुत्री नहीं देंगे १० चलते समय कहीं ११ इस बात से प्रसन्न होकर ॥ ३४ ॥ १२ चित्तोड़ को विरुद्ध जानकर १३ आर्यावर्त पर जिसका भय है तिस अकबर का जोर अब देखोगे ॥ ३५ ॥ जो वार्ता भगवन्तसिंह से हुई वही भगवन्तसिंह के पुत्र \* मानसिंह से हुई सो

\* यह कथा महाराणा प्रतापसिंह के समय की है उदयसिंह के साथ इस कथा का होना भ्रम से लिखा जाना प्रतीत होता है, उदयपुर से तीन कोश के अन्तर पर पूर्व दिशा में उदयसागर नामक तालाब की पाल पर यह वार्ता हुई थी अर्थात् सम्वत् १६३० के प्रथम आपाढ़ में महाराणा प्रतापसिंह और आमेर के कुमार मानसिंह से भोजन के कारण विरस हुआ जिसकी कथा जयसिंहचरित्र नामक जयपुर के इतिहास में भी लिखा है और अकबरनामे में भी इसकी साक्षी है, और टाडराजस्थान, व. मेवाड़ के इतिहास में तो विस्तार पूर्वक है ।

तुमरी कनी जवनी करौं इम उड्डिगो कहि तौर ॥

सुनि रान बीर गये मनावन मानकुमरहि सुद ॥

तोहु न मन्नि कुमार गो तिम करन अकबर ३७११ क्रुद्ध ॥ ३६ ॥

मिलि बप्प १ सुत २ जुग २ वंधि अक्खिय साह प्रति अतिमान ॥

रनथंभकौं तजि पुब्ब कंटक बेग दब्बहु रान ॥

सुनि स्वसुर १ सालक २ वत्त अकबर ३७११ है बली तिन्हसंग ॥

चित्तोर गंजन रुडि चछिय चक्रलै चतु ४ रंग ॥ ३७ ॥

सुरतान १ ८९११ तोपनसंग दै लक्खेरिसंग गय साह ॥

तिहिं मूढ चिंतिय साह तोपन लैन बुंदिय लाह ॥

जिहिं बाम सुरि भगवंतगढ सन दूर सुर्जन १ ६०११ जानि ॥

दल १ देसको कपतानकौं दिय लोभ परधन दानि ॥ ३८ ॥

सब तोप बाम मुराइ इम कपतान १ सुत सुरतान २ ॥

अतिलोभ बुंदिय लैन आयउ मन्नि नृपपन मान ॥

हो राम १ ८६१३ सुर्जन १ ९०१२ भ्रात बुंदिय सोहु तच्छलै हेरि ॥

सब हड्ड ६१ लै रु भिरयो समी धिय रति खरगन खेरि ॥ ३९ ॥

तैंहैं सो सक्यो न सम्हारि तुंदहु रतिरन सुरतान १ ८९११ ॥

सठ निडिनिडि घंसीटि तोपन भजिगो बिनु भान ॥

पहिलै १ ८७११ जु मेव गुढा बसायउ तत्थ जाइ परंत ॥

बह राम १ ८९१३ तत्थहु गो अचानक हंकि हड्ड ६१ न हंत ॥ ४० ॥

दूजो २ दयो रतिवाह पुनि तैंहैं जाइ राम १ ८९१३ उदार ॥

सुरतान १ सह कपतान २ भेजिगय छोरि सब संमौर ॥

सुनकर १ तुम्हारी पुत्री को सुसलमानी करुंगा इसप्रकार २ उच्चस्वर से कहकर उठगया ॥ ३६ ॥ ३ चतुरङ्गिणी सेना लेकर ॥ ३७ ॥ ४ कप्तान को आधा देश देने का लोभ देकर सुरताणसिंह ने पीछी पुन्नी लेना चाहा ॥ ३८ ॥ ५ राजापन का मान करके ६ उस वा उसके छल को देखकर ७ युद्ध में रात्रि के समय ॥ ३९ ॥ ८ वह सुरताणसिंह बड़े पैर को नहीं सम्हाल सका ९ रात्रि के युद्ध में १० बिना ज्ञान ॥ ४० ॥ ११ सब सामान छोड़कर



पहिलैं १ समीधिय लुटि लिय बिनुतोप कछु बैसु ब्रात ॥  
 दूजैं २ गुढा रतिबाह देत भज्यो सब तजि भात ॥ ४१ ॥  
 सुरतान १ तैं कपतान २ हू खिजि भिन्न भो तजि संधि ॥  
 बलकेर तोपन आदि सब बसु राम १८९।३ लिय जय बंधि ॥  
 वख तोप १ सकंठ २ न जोरि जवनन लुटि बैभव बीर ॥  
 धरि अगंग राम १८९।३ सबै लिवायसु पंत बुंदिय धीर ॥ ४२ ॥  
 सुरतान २ ओ कपतान २ खिजि उत होइ सनुसमान ॥  
 अतिनेह बंटन रंग लागिय माँहिँ माँहिँ अमान ॥  
 कपतान १ अखिखय मूढ तव मर्त मनि मैं हुव कूर ॥  
 सुरतान २ अखिखय जित्तिआवहिँ अबहु अप्पन सूर ॥ ४३ ॥  
 उत होत भंभूँट राम १८९।३ इत सब लुटि बुंदिय आइ ॥  
 भट मुख्य बुल्लि रू बुछयो करतव्य को अब भाइ ॥  
 तिन कहिय अकबर ३७।१ की चमूसनं प्रान लैं लिय तोप ।  
 कैलि जित्ति तिन्ह उपहार इतरहु लैं लये अतिकोप ॥ ४४ ॥  
 सुरतान १८९।१ मान हरयो जु अप्पन सो न संहि सुलतान ॥  
 मुरिआइहैं चितोर तजि इत असन अप्पनमान ॥  
 जवनेस अगंग कितीक बुंदिय कोन अप्पन जोर ।  
 मुरिआइ लारि सुरतान १८६।१ कौ पुनि कराहिँ हड्ड ६१ न मोरै ॥ ४५ ॥  
 नरनाह है रनथंभ ईम हम तुमहिँ गिनि नरनाह ।  
 सुभ कहत न गिनहु अप्प जय प्रभु गिनहु अकबर ३७।१ साह ॥  
 सब अप्पि बृख १ गनजुत तोप २ न आदि दिखिय साँज ॥

१ युद्धमें २ धन का ३ समूह ॥ ४१ ॥ तोपों के चरखों में ४ वृषभ जोतकर ५ युद्ध में गया ॥ ४२ ॥ हे मूर्ख तेरी ६ सलाह मानकर ॥ ४३ ॥ ७ विवाद ८ मुख्य उद्य-  
 राओं को बुलाकर कहा कि ९ अब क्या करना चाहिये १० सेना में प्राण तोपों  
 ही धों सो लेली ११ युद्ध जीतकर उनकी अन्य सामग्री भी लेली ॥ ४४ ॥ १२  
 यादशाह नहीं सहन करके १३ हाडों का मुकुट करेंगे ॥ ४५ ॥ १४ इसकारण  
 १५ पैलों के समूह सहित १६ सामग्री

कपतान बुल्लि रु ठानि स्वागत भेजिये हितकाज ॥ ४६ ॥  
 इत साह अकबर ३७११ क़ुद हुब सुरतान १८९१ क़ुत सुनि एह ।  
 नृपभात राम १८९१३ हु बुल्लि इत कपतानसन किय नेह ॥  
 सब तोप १ बैल २ न जुत समप्पि रु भुजनधरि जय भार ।  
 कपतानकों कछु द्रव्य दैकिय स्वीय परबन्धकार ॥ ४७ ॥  
 किय अरज नालिन लै रु जानहि साहसन कपतान ।  
 सुरतान १८९११ मूढ नहै यहै बूंदीस भ्रात समान ॥  
 तिहिं राम याहि भजाइ लै पुनि मोहि अप्पिय तोप ॥  
 याको विसास अहोन अब इस करत कालहु कोप ॥ ४८ ॥  
 दिन्नौ बिडारि इतीहि गिनि दृढ साहनें सुरतान १८९११ ।  
 सु गयो मऊ बलि रायमल्लहिं मन्नि रक्खन मान ।  
 जवनेस इत चित्तोर जाइ रु विंटयो बहु वीर ॥  
 धुर रान कहि रु अंकुरे गढकेहु प्रतिभट धीर ॥ ४९ ॥  
 जयमल्ल १ मेरतिया पता २ सीसोद ए दुव २ जोध ।  
 गरै बंधि निज चित्तोरगढ विँफुरे चखाइ विरोध ॥  
 कतिदुर्गबाहिर गुल्म हे तिनकों सम्हारनकज ॥  
 करि अन्य बेस निसा कढे सह दैरहि गढपति गर्ज ॥ ५० ॥  
 दोहा ॥

निकसि पता १ जयमल्ल २ निस, बाहिर विक्खि प्रबंध ॥  
 सत्य अलप आवत समय, सवरन मिलिय सुसंध ॥ ५१ ॥  
 भिलान मल्ल साह भट, जे छुन्नै गढ जात ॥  
 वेढिलये लुंटाकै बनि, चापन प्रदैर चलात ॥ ५२ ॥

॥ ४६ ॥ अपने १ चायुओं को मारतेवाला किया ॥ ४७ ॥ २ तोपें ॥ ४८ ॥ ३  
 मुख्य ॥ ४९ ॥ ४ चित्तोरगढ को अपने गले से बांधकर ५ झुपित हुए ६ सेना  
 के हुकमे धें ७ गर्जना करके ॥ ५० ॥ ८ भीलों से मिले ९ अष्ट प्रतिज्ञावाले  
 ॥ ५१ ॥ भीलों ने इनको बादशाह के वीर जाने १० गुप्त ११ लूटनेवाले होकर  
 घेर लिये १२ धनुष से बाण चलाते ॥ ५२ ॥

अक्खिय तँहँ जयमल्ल१ इम, हित मरिवो कित होइ ॥  
 पतार कहिय उत१ जम प्रचुर, धन इतर देहु धकोइ ॥ ५३ ॥  
 को हो तुम सवरन कहिय, सुनतहि यह संलाप ॥  
 किम उत१ इतर संकेत किय, अंगमि मरनहु आप ॥ ५४ ॥  
 होहु निडर डिग आत हम, पहिलैं स्वमत प्रकासि ॥  
 बहुरि देहु आयुध१ वसन२, तुम यह संसय गासि ॥ ५५ ॥  
 जाइ निकट इम अक्खि जिन्ह, परिचित कछु पहिचानि ॥  
 निजरच्छक मन्नें निडर, जुग२हि दुर्गपति जानि ॥ ५६ ॥  
 पानि जोरि प्रथुँत मनमि, मंतु तु छमन छमाइ ॥  
 जंपिय हम जानैं जवन, जिन गढ अदन जाइ ॥ ५७ ॥  
 तिन्ह किंकर पछिताइ ते, अरज भिल्ल इम अक्खि ॥  
 गढलौं पहुँचावन गये, रंच न मन भय रक्खि ॥ ५८ ॥  
 दुर्गपतिन तब दुर्गके, दक्खिन२ दिस लधुँ द्वार ॥  
 बाहिर चोकी तेहि बुधैं, हसिकिय रक्खनहार ॥ ५९ ॥  
 बारह१२ हायनैं कति बढत, गँदित त्रि३ चउ४ कति ग्रंथ ॥  
 भो चिरैं घेरा हम मनत, पै न मिल्यो गढपंथ ॥ ६० ॥  
 अनुचर इक जयमल्ल जँहँ, आगसैं कछु अनखाँइ ॥  
 करन१ सिंघिनी२ हीन करि, नापित दिय निकसाइ ॥ ६१ ॥

१ बहुत ॥ ५३ ॥ २ भीलों ने कहा ३ यह बोलना सुनकर ॥ ५४ ॥ ४ पहिले अपना विचार कहो ५ सन्देह मिटाकर ॥ ५५ ॥ ६ कुछ जानेहुओं को पहिचान कर ॥ ५६ ॥ ७ उलटा नमस्कार करके = वह अपराध उन स्वार्थों से जसा कराके ॥ ५७ ॥ ८ उनके सेवक ॥ ५८ ॥ ९ दक्षिण दिशा के छोटे द्वार पर "चित्तोर-दुर्ग के दक्षिण में कोई द्वार नहीं है यह छोटा द्वार उत्तर दिशा में है जिन को लाखोटा की घारी कहते हैं" १० चतुरों ने ॥ ५९ ॥ ११ कितने ही लोक बारह वर्ष तक सुख होना करते हैं और कितने ही अग्र्य तीन बार वर्ष १३ कहते हैं परन्तु हम (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि १४ बहुत समय पर्यन्त ऐसा रहा ॥ ६० ॥ १५ एक सेवक पर १६ कुछ अपराध से १७ क्रोध करके कान और १८ नासिका काटकर उस तार्द को निकाल दिया था ॥ ६१ ॥

पारि मेल जिहिँ साहप्रति, अति बसु दिय सु अवेरि ॥  
 बिगरायउ रुचि भेद विधि, गढजल गोपल गेरि ॥ ६२ ॥  
 दुर्गाधिप जानि सु दुरित, अररहि प्रात उघारि ॥  
 बैस मरन समुचित वनै, फोज परन रन फारि ॥ ६३ ॥  
 गढ सम्हारि गढपति प्रगुन, अद्धी रजनि अनेह ॥  
 इक १ गवकख बैठे उभय २, सुँडा पिबन सनेह ॥ ६४ ॥  
 जिहिँ दिन गिनिय अपेयजल, तास निसीथ हु तथ ॥  
 दिय दिखाइ बैठे दुवहि, नापित विरचि अनर्थ ॥ ६५ ॥  
 जरीवसन रुचि जगमगत, मुख्य सु गिनि जयमल्ल १ ॥  
 पल्लेकी आरिय तुपक, साह निर्गमपथ सल्ल ॥ ६६ ॥  
 पट्टे निजतोप चलाक प्रति, दिय कतिकहत निदेस ॥  
 होहु किमहु जिसतिम हन्यौ, जयमल्ल सु जवनेस ॥ ६७ ॥  
 मेरतिया १ अक्खियमरत, विदित प्रताप २ बकारि ॥  
 कढहु प्रात तबलैकढहु, बैपु मम गज बैठारि ॥ ६८ ॥  
 विरचि निर्गल द्वारबुध, विधि सुहि सद्धि विद्वान ॥  
 जयमल्लहिँ गज थपि जिन्ह, परदलै किय प्रस्थान ॥ ६९ ॥  
 दुजन सुद्धि न परन दियउ, मरन निसहि जयमल्ल ॥

१ द्यूत धन दिया जिसको इकट्ठा करके, गढ के जल में २ गौओं का नाँस डलाकर भिगड़ा डाला ॥ ६२ ॥ ३ किल्लादार ने ४ वह पाप जानकर ५ प्रभात ही बिबाड़ खोलकर ६ मरने के उचित पौसाक (केसरिया) करके ॥ ६३ ॥ ७ विशेष गुणवान् = आधी रात्रि के समय ८ एक झरोखेमें दोनों बैठे १० मद्य पीने को ॥ ६४ ॥ ११ पानी को नहीं पीने योग्य समझकर उसी आधी रात्रि को १२ नाई ने अन्तर्ध करके दोनों को बैठे दिग्वाधे ॥ ६५ ॥ १३ जरदोजी के बन्धों की क्रान्ति १४ दूर पर लगनेवाली १५ बन्दूक चलाई १६ वेद सार्ग के १७ लाल बादशाह अक्षरने ॥ ६६ ॥ १९ कितने ही कहते हैं कि १८ चतुर अपने तंग चलानेवाले को आज्ञा दी ॥ ६७ ॥ २० आमेठ के रावत पत्ता से मेड़गिना जयमल्ल ने मरते समय कहा २१ मेरे शरीर को हाथी पर बैठाकर २२ उस जगिन ने २३ द्वार खोलकर २४ प्रभात समय में २५ शत्रुओं की सेना पर प्रस्थान किया ॥ ६९ ॥ शत्रुओं को २६ खबर नहीं होवे दी ॥ ७० ॥

जान्यौ तव बचि अब जुग२ हि, आवत विरचि उभल्ल ॥ ७० ॥

जिहिं निस मृत जयमल्ल जँहँ, सो जुग२ \*जामहि सेस ॥

नटन१ गानश्वादन३ निचित, बिलसियं मुमह बिसेस ॥ ७१ ॥

हिसेस१ बिसेस२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

देखि तवहि बहु दीपिका, निजगढ उच्छव जानि ।

साह कबंधहिं सँहरन, माँघ जतन लिय मानि ॥ ७२ ॥

अबकुणैप३हिं बैठारि इभँ, प्रातहि निकसि प्रताप२ ॥

मथि अनीक मुगँलैसको, इम तिलतिल हुव आप ॥ ७३ ॥

तँहँ पम्मार असोकसुत, बिंभोलीपति बीर ।

इक१ घरी सिरबिनु अरघो, मारि परघो बहु मीरँ ॥ ७४ ॥

अकबर पहुँ किन्नौ अमल, चढि तव गढ चित्तोर ॥

गढ पुनि कुंभिलमेरु गय, उदय प्रतीची ओर ॥ ७५ ॥

\* दो प्रहर रात्रि बाकी रहते १ रचकर ३ अष्ट उत्सव भोगा ॥ ७१ ॥ बादशाह ने १ राठोड़ जयमल्ल को मारने का पत्तन २ भुटा खाना ॥ ७२ ॥ ३ सुई जयमल्ल को ४ हाथी पर चढाके ५ बादशाह की सेना को मथकर ॥ ७३ ॥ ६ बादशाह के अमीरों को मारकर ॥ ७४ ॥ ७ \* मधु ८ उदयसिंह पश्चिम दिशा में कुम्भलगढ गया ॥ ७५ ॥

\* दिल्ली के बादशाह अकबर का चित्तोड़ पर चढ़ाई का पूर्ण विचार देखकर महाराणा उदयसिंह के छोटे पुत्र सक्तिसिंह ने जो महाराणा की अपसन्नता के कारण पहिले से बादशाही सेना में चलागया था अकबर को छोड़कर चित्तोड़ में आकर महाराणा उदयसिंह से नादगुद के आने की खबर दी, तब सबकी सलाह से महाराणा अपने कुटुम्ब सहित पश्चिमी पर्वतों में चलेगये और चित्तोड़ का गढ आठ हजार क्षत्रियों के साथ, मेढ़ता के साथ बीरमदेव के पुत्र जयमल्ल राठोड़ और आमेठ के रावत चूण्डादत्त पत्ता के आधीन किया, विपत्ती सम्भूत १६१४ मार्गशिर कृष्ण ६ को अकबर ने चित्तोड़ के किले को घेरा और दोनों ओर से भयंकर युद्ध होता रहा एक दिन रात्रि के समय किलेकी दीवार पर फ़िरता हुआ हजारमेरु चणकदार सिद्ध पद्मे, जयमल्ल मोरचे सम्हाल रहा था उस समय बादशाह अकबरने बग़ीची गोली चलाई जिससे जयमल्ल का पैर घुटना में से तूट गया, और इस जयमल्ल गढ में खानपानादि सामग्री भी तूट हुयी थी इसकारण प्रभाव होये की राजपूतोंने किले के किवाड़ खोलकर बादशाही सेनापर हल्ला किया, इस समय जयमल्ल का पैर तूटवाने के कारण, उसके भाई कल्ला राठोड़ने जयमल्ल को अपने कंधे पर चढा लिया और दोनों वीर उन्न चलातेहुए हनुमानपाँख और भैरवपाँख के बीचमें मारमये और रावत पत्ता भी वीरता के

कति जयमल्लप्रतापकों, समय विभावी सीस ॥

छितिपति रान प्रताप छत, अस्वहिं दुर्ग अधीस ॥ ७६ ॥

इम भगवंतःरु मानरन, जनकसुतन उत जाइ ॥

सँह भोजन टारयो समुक्ति, खल मच्छर अनखाइ ॥ ७७ ॥

रान कुलहु निज सम करन, पिसुनभाँव मन पूरि ॥

अकवर२७कों चितोर इम, भनि आन्याँ फल भूरि ॥ ७८ ॥

रान तदपि कुलरखिबे, छितिपुरदुर्गइन छोरि ॥

वनचरण धरि लिय बिपति, जीवन धर्महिं जोरि ॥ ७९ ॥

संतति दैवे प्रमुख सब, दिल्ली अभिमत दाहि ॥

सुख तजि स्वमटकुटुंबसह, उदय गह्यो दुख आहि ॥ ८० ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदशौ वीतिहोत्रव-  
सुधेश्वरबीजव्याख्यानबीजहृद्वाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यवि

कितने ही लोग इस १ प्रभावशाली जयमल्ल और पत्ता को २ महाराणा प्रतापसिंह के समय में ३ कित्तादार होना कहते हैं ॥ ७६ ॥ ४ शामिल भोजन कराने से जुदा जानकर दुष्टोंने ५ सत्सरता से क्रोध करके ॥ ७७ ॥ ६ राणा के कुल को अपने समान अष्ट करने को ७ चुगली करने से मनक पूर्ण करके ८ बहुत फल दिखाकर लाये “ शामिल भोजन नहीं करने के कारण कहवाहे मानसिंहने बादशाह अकबर को क्रुद्ध करके मेवाड़ पर बादशाही फौज चढ़ा लाया था वह युद्ध महाराणा प्रतापसिंह से हलदी घाटी के स्थान पर हुआ था जिसका वर्णन आने आयेगा” ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ९ सन्तान दे आदि सब दिल्ली की १० हज्जा को जलाकर ॥ ८० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी राजा की व्याख्या के बीज हृद्वाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वंश मारा गया, जिसपरि सन्वत् १६२४ चैतवदि १२ को गव्यान्ह के समय बादशाह अकबरने चित्तौड़ पर अपना भन्दा खड़ा किया वहाँ पर गढ के पानी को गौओं के गोस दाहमे से अपेय कर देना लिखा सो नहीं बनसत्ता क्योंकि इस गढ के जलाशय गढ के ऊपर है वहाँ रात किसी प्रकार से भी नहीं पहुँच सकते थे और गोली लगने से जयमल्ल राठोड़ का उसी राशि में मरजाना लिखा सो आईनअकबरी के अनुसार है परन्तु यह सत्य नहीं है वह तुरंगु पर से ऊपर सूचना किये हुए स्थान पर प्रयात समय में मर गया जिसके अनेक प्रमाण विद्यमान हैं सो स्थानाभाव से नहीं लिखे जाते, जिनको देखना होवे, मेवाड़ इतिहास वीरविनोद में देखें, इस युद्ध का बारह वर्ष तक होना लिखा तो भी असत्य है.

हितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरताखसिंहचरि-  
त्रेबुन्दीप्रतिसुरजनस्य रखातमँवरदुर्गस्थशेरशाहसलेमभटाश्रयप्रदाने  
नरखातमँवरदुर्गस्वाधिकारसंपादन १ रखातमँवरविजिगीषुदिल्लीशा-  
कबरसम्राजोऽहमदाबादपत्तनाधिकारिगर्वगञ्जककाठीजनतोपद्रवो-  
दन्तश्रवणादामेरराजभगवन्तसिंहेन सह स्वसैन्यसंप्रेषणा २ गुर्जरवि-  
जयिप्रत्यावृत्तामेरराजभगवन्तसिंहस्य निजकुमारमानसिंहसहितस्य  
सहभोजनानङ्गीकारकारखोनापकारिमहाराखोदयसिंहपुलीखां यव-  
नीकरणाप्रतिज्ञापूर्वकमकबरान्तिकागमन ३ चित्रकूटप्रयागिसम्राट्  
सैन्यं लोभेनाकृष्य तत्सहायाबुन्दीपुरीप्रत्यादित्सुसुरताखानृपतेर्बुन्दी-  
रोधे शालिसंगरे पराजित्य पत्तायन ४ चित्रकूटरोधात्प्रागेव महारा-  
खोदयसिंहोऽवाचोदिशं संप्रस्थिते चित्रकूटदुर्गाधिकारिमैड़तियारा-  
ष्ट्रकूट ( राठौड़) जयमल्लस्यामेटपतिपत्ताभिधेयस्य च चित्रकूटमधि-  
ष्टापाकवरेण सह समरं करण ५ अकबरकरवन्हिबाखाविद्धजयमल्ले  
पञ्चतामवाप्ते प्रातरेव दुर्गकपाटोद्घाटनेन पत्तादिवीराणां रखाशय्या

तांत की व्याख्या में वर्खनीय बुन्दी के भूपति सुरजन का रखातमँवर के गढ़  
में रहेहुए शेरशाह और सलेम के वीरों को अपने शरख में रखकर रखातमँवर  
को अपने अधिकार में करना १ रखातमँवर को विजय करने की इच्छावाले  
अकबर का अहमदाबाद के हाकिम का गर्व मिटानेवाले काठी लोकों के उप-  
द्रव का वृत्तान्त सुनकर आमैर के राजा भगवन्तसिंह को साथ लेकर प्रथम  
गुजरात पर येजना २ गुजरात को विजय करके पीछे फिरे हुए आमैर के रा-  
जा भगवन्तसिंह और उसके छुसर बानसिंह का चित्तोड़ के महाराणा उद-  
यसिंह के सामिल भोजन नहीं करने का अपमान होकर राणा की पुत्रियों को  
यवनी बनाने की प्रतिज्ञा करके बादशाह अकबर के पास जाना ३ चित्तोड़ पर  
जातीहुई बादशाही सेना को लोभ से भ्रिताकर बुन्दी को पीछी लेने की इ-  
च्छावाले सुरताख का बुन्दी के घर में रात्रि के युद्ध में पराजय होकर भाग-  
ना ४ चित्तोड़ गढ़ को घेरने से पहिले महाराणा उदयसिंह पश्चिम दिशा में  
निकल जाने पीछे चित्तोड़ के किल्लादार मैड़तिया राठौड़ जयमल्ल और आमे-  
ट के राखत पत्ता का चित्तोड़ के किल्ले में रहकर दिल्ली के बादशाह अकबर  
से युद्ध करना ५ अकबर के हाथ की बन्दूक लगने से जयमल्ल के मारे जाने

शयन ६ एतत्समरसमयसंबन्धिन्यूनानाधिकावधिप्रतिपादकमतभेदसूचनार्थिकथनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥ आदितोऽष्टाशीत्युत्तरशततमः ॥ १८८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

अकबर ३७१ लै चित्तोर इम, रच्छक अप्पन रक्खि ॥  
गिनत बंधु आमैरगढ, सबल सुरयो जय सक्खि ॥ १ ॥  
दरकुंचन रनथंभदुतै, आयो जित्तन आस ॥  
समुम्हावन भगवंत सुहि, प्रेरयो सुर्जन १९०१ पास ॥ २ ॥  
साह पाइ क्रूरम सुताँ १, महँ नोरोज मनाइ ॥  
गुरू स्वधर्म नासक गिन्यौ, भूपन सासक भाइ ॥ ३ ॥  
आन न दिय गढमाँहिँ इम, अकबर ३७१ स्वसुरहिँ अक्खि ॥  
हुव सम्मूह सुर्जन १९९१ हरखि, दुर्जन परखि दुःसक्खि ॥ ४ ॥  
न बनै कछु आयैहिँ नृप, बनै कहँ मत बैन ॥  
तातै पठवहु दूत तुम, इत हु यहँ मत औन ॥ ५ ॥

मदनावतारः ॥

भोजि पहु दूत इम कुम्म भगवंतपै, अप्पनिजधर्म थिति ख्यात किय  
अंतपै ॥

के प्रभात ही गढ के द्वार खोलकर पत्ता आदि वीरों का द्वाराजाना ६ इस युद्ध के समय की न्यूनानाधिक अवधि बताते के मत भेदकी सूचना आदि कथाओं का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ इठ्यासी मयूख हुए ॥ १८८ ॥

१ सम्बन्धि २ जय की साजी से मेना सहित पीछा किया ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ॥ २॥ ४ भगवन्तसिंह कछवाहे की पुत्री को पाकर ५ उत्तमव. राव सुरजनने भगवन्तसिंह को अपना धर्म नाश करने में ६ बड़ा समझा ७ राजाओं को चाद-शाही आज्ञा में करने की रीति से ॥ ३ ॥ ८ उसको अकबर का सुस्तरा बाहक र ऊपर कहीहुई दोनों साक्षियों के कारण शत्रु जानकर गढ में नहीं आनेदि-या ॥ ४ ॥ ९ इस स्थान में यही सलाह है ॥ ५ ॥



सुरजन को मानलिहता समझाना पट्टराशि-षष्ठमसूत्र (२२११)

दूत तय भैजि इम कुन्म लिपिदूत दिय, लाहँ खिन बाह तुम साह  
अरि जानिलिय ॥ ६ ॥

हुकम तस होइ विकस्यो दयेले बडे, सहत धन १ धाम २ जिन्हँ  
नाम जसमैं महे ॥

अकबर ३७११ हिं अज्ज को अज्ज रन अंगमैं, निखिल यह खंड  
अरि दंड जिहिपै नयैं ॥ ७ ॥

तुमहु रनथंभ करि भेट हठ देहु तजि, भोग बहु जोग भय रोग  
बिनु लेहु भजि ॥

मान करि रान १ लघु प्रांन तजिगो सही, स्वान अफगान बिनु  
ज्ञान भजिगो सही ॥ ८ ॥

समय अनुसार बल अप्पेनो ए सहेँ, विकस्य इन्ह जोर इस सिर  
हि अप्पन बहेँ ॥

परहु यह जानि हित मान दिल्लीस पय, देहु रनथंभ सुगलेदस  
जिम हे सदैय ॥ ९ ॥

हुग लिय चोर जिय ध्यांत बिनुही दयो, अब न रहि हे सु महि  
साह रवि उगगयो ॥

कहिदिय जियत तुम वधैय अफगान के, हेरहि अपराध गिनि  
ये न प्रभु दानिके ॥ १० ॥

पे वैं रनथंभ करि भेट सुख पाइहो, जो न यह बत तजि ओन  
भजिजाइहो ॥

१ पत्र दिया २ लाभ के समया ॥ ३ दोनो ४ आज अकबर को कोत आखि बुद्ध  
में देना सक्त है ५ सब ॥ ७॥ ६ शय रूपी रोग के दिय ७ नून पराक्रमवाला  
राणा और बिना रक्षा के अफगानिस्थानवाला ८ कुत्ता आगमया ॥ ९॥ १० हाथ के  
अनुसार अर्थात् पादजात का लाभ समस्त पर रहै तो बड़ी चरना बल है १०  
दयावान होवे ॥ ९ ॥ ११ अन्वरे में चोर के समान बिना दिया हुआ गद लि-  
ना है सो शाह रूपी सूर्य नदय होने पर अब नहीं रहेगा १२ मारने योग्य पि-  
नने से अफगानों को तुमने जीवित जिताल दिये ये दोनो अपराध मरु के १३  
देने योग्य नहीं हैं ॥ १० ॥ परन्तु १४ अब

\*कुम्भ दल बाँचि यह हड्डि नृप कुप्पयो, अंग निजभंग गढ  
संग गिनि † उप्पयो ॥ ११ ॥

वीर गढमें हि ‡ परदूत ढिग बुल्लयो, खगभत मग तिहिँ अग  
दढ खुल्लयो ।

कुम्भप्रति जाइ हैमवैन क्रम यौँ कहो, लुँविम तुम अप्पि दुहि  
ताँ हु वसुभूरलहो ॥ १२ ॥

चोर१हम साह लाखि जो व भजिवो चहैं, साह नहिँतो हमहिँ  
लाहलैछ क्यों सहैं ॥

दलकरि मोहि गढद्वार अवही हनहु, एह रनथंभ करि गेह छक  
उप्पनहु ॥ १३ ॥

होत निज सरन अफगान दिय कहि हम, सरनगत बान कुल-  
धर्म गिनि प्रानसम ॥

साह वरजोरँ वचिवो न मम है सही, मोहि हनि लखहु रनथं-  
भगढकी सही ॥ १४ ॥

अधिप इम अक्खि परदूत पठवाइकैं, नाँलि दगिवेहिदिय सैन  
निर्धराइकैं ॥

सूचि पहिलैं न तुम हनहु परसतथैकोँ, वे करैं घात तव सखनों  
अतथैकोँ ॥ १५ ॥

१ कलहवाये का वाप पत्र बाँचकर † जोमित हुआ ॥ ११ ॥ ‡ जलु के दूत को पास बुलाया १ काद चलाये का विचार २ हमारे बचन कलवाये से इस काम में क्यों कि ३ लोग करके ४ पुत्री देकर भन और अपि तुम ही हो ॥ १२ ॥ पादसाह को वेगतर जब जो हम भगजायें तो चोर हैं नहीं तो हम ही साह (साहकार) हैं सो हमारा ५ मिलेहुग लाभ के व्याज को (वाप हुआ अर्थ निहित के अन्य अर्थ का कलना व्याज है) क्यों सहन करें ॥ १३ ॥ ६ कारण गां धूप की रक्षा करना आज भरी है ० बलवान् है ॥ १४ ॥ ० जलु दूत को ० लोप चलाये को १० समीप लंकर ११ जलु के साथ को १२ अपना अर्थ साधना सा-  
दिये ॥ १५ ॥

दुजनदल टारि तब तोप गढकी दगी, लाय सुगलेस उर तदपि  
बढती लगी ॥

बहत रन दुर्ग सिर नाखि उतकी चली, आइ गढमें लगी मि-  
रन गोलावली ॥ १६ ॥

सुर्जन१६०।१हु अकिख तब साह दल संहैरन, सज्ज हुव खरन धु-  
वसरन असरनसरन ॥

तोप दुहुँ२ओर दगि भूत पंचकंधतप्यो, जनन डरि मनन संवर्त  
आगस जप्यो ॥ १७ ॥

भुम्भि डगमगि गिरि शृंग जंगम भये, छित्ति निभं काल कर-  
माल लहरु छये ॥

सामबिधि जानि कति दुर्गाडि हे सिबिर, कदन निज टारि ल  
दि तेहु गय दूर किर ॥ १८ ॥

फैरपर फैर बलि दहन दिसदिस फुरयो, जानि कपिदत्त लंका-  
हिं जारन जुरयो ॥

गोल लागे सीस गजभद्र मुक्ता गिरे, करन भुव चित्रं करको  
निकर ज्यो किर ॥ १९ ॥

तुंग गृह कलस१ध्वज२छत्र३इत उत्तरे, पति१गज२बाजि३वांस-  
त४उत ढहिपर ॥

लुत्थिपर लुत्थि बहु बुत्थि संचितलगै, पार पलचारै दलकार  
पल नाँ पगै ॥ २० ॥

१ शत्रु की सेना को दबाकर २ गोलों की पंक्ति गिरने लगी ॥ १६ ॥ ३ कहा  
४ संहार करने को ५ तैयार हुआ ६ पंचशत (पृथ्वी, अग्नि, तेज, वायु, आ-  
काश) तपगये ७ प्रलय का ८ आना कहा ॥ १७ ॥ ९ चलायमान होगये १० मदश  
११ तरवारों की १२ लहरें छागई १३ सिलाप होजाने की विधि जानकर १४ ढेर  
१५ अपना नाश बचाकर १६ किल (निश्चय) ॥ १८ ॥ १७ अग्नि १८ हनुमान को  
दिया हुआ १९ भद्रजाति के हाथियों के मस्तक पर गोले लगकर २० पृथ्वी  
पर आश्रय करते हैं २१ आँलों (गड़ों) के २२ समूह २३ गिरे ॥ १९ ॥ २४ ऊँचे २५  
पैदल २६ ऊँद २७ मांस के टुकड़ों के समूह लगते हैं २८ मांस खानेवाले ॥ २० ॥

याँ विजय आस कछुमास अकबर ३७१ अरघो, काल नृप  
तास दलआस तोपन करघो ॥

कुम्भ भगवंत तब साहप्रति याँ कछो, लगि \*चिर निहि चितो  
र अप्पन लहो ॥ २१ ॥

सुरुषा दुर्गस जयमल्ल १ जो नाँ मरै, पुनिहु जययाँहिँ बहु अवैदसंसय परै  
तोहु तिम न्हासै बहु आस दलको तहाँ, ज्योहिँ अब आँहिँ गढ-  
याँहिँ सुर्जन १९०१ जहाँ ॥ २२ ॥

इष्ट तिहिँ अप्पि यह दुर्ग अब अंगमै, जिम सु निज होइ इत  
अमल अप्पन जमै ॥

यहहिँ वहरामँमुख भटन हित उचरयो, कुम्भ तब साह सुहि  
राह रच्छक करघो ॥ २३ ॥

कुम्भ गढद्वारंगत एह कहिबुंझली, बुलि छिग भोहि बलि इष्ट  
अवखहु बली ॥

दुर्ग बिच कुम्भ १ चउ४ जुत तब बुलि हुत, पीठ इक १ वैठि  
बुंदीस भिंख्यो प्रनुत ॥ २४ ॥

कहिय कछवाह सम मंतुँ विरमृत करहु, इष्ट लहि अप्पगढ दै  
रु जस उदरहु ॥

बलिप सामंत १८०१ तँहँ साह बलवान है, मरिहु गढ देत तु-  
मरो न इम मान है ॥ २५ ॥

लेहु लिखवाइ मनचाह धित लाह जो, सोहि अब देहिँ गढ  
लहिँ इम साह जो ॥

सत्त७ लहि वत तब देन गढ स्वीकारिय, इमहि नरनाह कछ-  
वाह प्रति उच्चरिय ॥ २६ ॥

\* कछुमास कछुमास ॥ २१ ॥ १. तिहूँ राह १ चपे २ सेना का गाश ३ कुआ  
४ है ॥ २२ ॥ ५. इसकी उच्छा के अलुमार देकर ६ लेवे ७ चतुर्गस आदि ८ इस  
मिलाप के मार्ग की रक्षा करनेवाला ॥ २३ ॥ ९ गढ के द्वार पर जाकर १०  
पैदा सेव (आसन) पर बैठकर ॥ २४ ॥ कछवाहे में कहा कि ११ नेने अप्पगढ  
को १२ भूल जाओ ॥ २५ ॥ १३ सात बातें लेकर गढ को देना स्वीकार किया ॥ २६ ॥

सुर्जन और मानराजा का वार्तालाप] पष्ठराशि-पष्टमयूख (२२११)

पुनि दिय अप्प तिम हम न परिनाइहैं<sup>१</sup>, जु किय नोरोजं तहँ  
न हम तिय जाइहैं<sup>२</sup> ॥

अटकं नदि पार पठवैं सु नहिँ उत्तरैं<sup>३</sup>, आम<sup>१</sup> अरु खास<sup>२</sup> इक<sup>३</sup>  
सखसह अनुसरैं<sup>४</sup> ॥ २७ ॥

लालपाँकारलग बंबं हमरो बजैं<sup>५</sup>, तुरगर्तन लगगत सु दग्ग  
जवन न तजैं<sup>६</sup> ॥

कज कछु सज्ज नहिँ अज्ज अनुगर्तकरैं<sup>७</sup>, सत्त<sup>७</sup> ए बत्त लहि  
साह हित अनुसरैं ॥ २८ ॥

अधिक भुव साह अब दै सु तुम उच्चरहु, कुम्भ नरनाह तब  
चाह गढकी करहु ॥

सुनि सु नृपं मंत भगवंत गय साहपैं, रक्खि रीति कहिय हित  
होत इहिँ राहपैं ॥ २९ ॥

चविषैं खिजि साह तुम हिंदु हिंदुन चहो, क्यों हमहिँ बंचि<sup>१</sup>  
यह स्वीय कल्पित कहो ॥

कहिय भगवंत चलि अप्प सुनिये कथा, तेहु लखिलै<sup>२</sup> बपु बे-  
स बदलहु तथा ॥ ३० ॥

पलटि तब बेस सुगलेस गहि दूतपन, संग गय हड्ड<sup>३</sup> हठ बैन  
निहचै सुनन ॥

आपने पुत्री दी तैसे हम नहीं परखावेंगे<sup>१</sup> जो नोरोजों का उत्सव नियत किया है उसमें हमारी स्त्रियां नहीं जावेंगी<sup>२</sup> अटक नदी के पार भेजे सो नहीं उतरेंगे<sup>३</sup> आम दरबार और खास दरबार में एक सख लेकर जावेंगे ॥ २७ ॥ ४ लालकोट तक हमारा पनगारा यजेगा पवोड़ों के शरीर में दाग लगता है वह दाग लगाना यवन छोड़े<sup>५</sup> ७ किसी कार्य पर खजित करने में ८ आर्य का ९ सेवक नहीं करे अर्थात् किसी आर्य को सेनापति करके हमको उसके साथ नहीं भेजें ॥ २८ ॥ १० राजा सुर्जन का मंत्र (सलाह) सुनकर ११ प्रीति रखकर ॥ २९ ॥ १२ कहा १३ हथको टगकर १४ यह अपनी कल्पना की हुई वार्ता क्यों कहते १५ देखने के लिये शरीर का वेश बदलदो ॥ ३० ॥

इक\*जलधार दुवर दास तिम दूत इक१, संगगढमाँहिं गय  
 पुच्छ यह साहेसिक ॥ ३१ ॥  
 दूतश्वह टारि तँहिं धारि सुगलैसरहुत, तत्थ गय कुम्भ१पुनि स  
 त्थ जन च्यारि४जुत ॥  
 कहिय बुंदीसप्रति एह हठ नाँ करहु, धरनिप्रभु साह आदेस  
 मथैं धरहु ॥ ३२ ॥  
 कोल करि एह करिये न तिहिं कोपमैं, अप्पि गढ दै सु भुव  
 लेहु जस ओपमैं ॥  
 सु सुनिनृप कुप्पि गहि सुच्छ असि संगह्यो, कटि कुल हहु६१  
 रनथंभ दव्वहु कह्यो ॥ ३३ ॥  
 अद्दः तुम जवन इम जवनहित आचरत, धरनि१धन२चाहि मि-  
 रजाहि उँपपद धरत ॥  
 हमहिं बहिकाइ तुम ज्योँ करहु सो न है, कुल्य नृप अज्ज चहि  
 मिच्छसम कोन है ॥ ३४ ॥  
 कोल हम पुव्व कुलधर्म रक्खनकरैं, उचित लहि देस पुनि से  
 स कृति आदरैं ॥  
 तो ब रनथंभ हम अप्पि आश्रय तकैं, नाँहि यह होइ तव छुं-  
 द लोभहि नकैं ॥ ३५ ॥  
 धर्महित सीस दिल्लीस सासनधरैं, कज्ज निज धर्महित रज्ज त्पा-  
 गहु करैं ॥  
 धर्महित रान१सहवामेंश्वन धाम किय, कुंडल१रु बैर्म२तजि क  
 र्ग३जग नाम किय ॥ ३६ ॥

\* जल रखनेवाला १ हठी ॥ ११ ॥ ११५५ का पति बादशाह है जिसकी २ आज्ञा मस्तक पर धरो ॥ ३२ ॥ ३ नियम ४ शोभा में ॥ ३३ ॥ ५ तुम आये यवन हो इसकारण यवन का हित ६ करते हो ७ पदवी (खिताब) ८ कुलवान आर्य ॥ ३४ ॥ ९ तुच्छ लोभ १० नहीं करेंगे ॥ ३५ ॥ ११ अपने राज्य को भी छोड़देवें १२ स्त्री सहित १३ कुण्डल और कवच देकर ॥ ३६ ॥

सुर्जन और मानराजा का वार्ताबाप] षष्ठराशि-पष्ठमयूख (२११७)

भूप सिवि३मंस जिहिं कज्ज अप्पन भयो, देह जिहिं कज्ज जीमूत  
वाहन ४ दयो ॥

तकि जिहिं भूप अजमीठ ५ प्रभुता तजी, भूप हरिअंद ६ जिहिं  
कज्ज छवता भजी ॥ ३७ ॥

सोहि हम रक्खि सुगलेरादिग संघरैं, कोहि तिहिं खोइ जड स्वा-  
मि मिच्छहिं करैं ॥

जो रुचत एह करि देहु तो लेख जिम, अकबर ३७ १ हिं नाह गि-  
नि तजहिं रनथंभ इम ॥ ३८ ॥

हैं न यह लेख तब अप्पि सिरधर्महित, इक्क १ जस रक्खि हम  
हहु ६ १ करिहैं उचित ॥

कहि अफगान रनथंभ लिय नीति करि, ओर विधि ताहि ल-  
हिहो न तुम धर्म अरि ॥ ३९ ॥

साह १ तुमरो रु तुमरोहि जबसंहरहु, कलाह जय पाइ तब दुर्ग  
सासन करहु ॥

कुन्म खुनि दूत निहं साहप्रति यों कह्यो, सुनत तुम हहु ६ १ विनु  
लेख सासन सह्यो ॥ ४० ॥

साह मम वेन विच द्वारपरहि स्वीकरैं, कहहु तुम हहु ६ १ विनु  
कोल रनही करैं ॥

स्वीकरैं १ हीकरैं २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

ध्वस्त लखि धर्म बुंदी हुतनलों तजैं, भूप निजधर्म अनुरूप तु  
मकों यजैं ॥ ४१ ॥

१ मांस २ जीमूतवाहन मानक राजा ने "यहां जितने उदाहरण दिये हैं  
निगली कथा ऊपर आखुकी है इसकारण यहाँ पर टीका करना अनावश्यक है" ३  
पाठ "तल गन लिया" ३७ ४ जायेगा ॥ ३८ ॥ १ धर्म को शत्रु "अकबर को पुत्री दिवाहने से  
भगवन्तरिह को यहाँ धर्म अरि कहा है" ॥ ३९ ॥ १ सुभक्त को मार डालांगे अर्जुन के  
सहस्र धर्म धारण किये हुए बादशाह से कहवाहे ने कहा ॥ ४० ॥ "सन्देह करे तो  
१ धर्म का नारा देवकर १ बुन्दी को भी १ १ अपने सहस्र धर्म रखकर तुमारी

दूतमिससाहसकछवाहरइम तत्थ दुवर, हहृ६१नृप बैन सुनि  
सैन पुनि जातहुव ॥

साहप्रति कहिय कछवाहअप्पहु सुनी, गाँठसह हहृ६१जुहिटैक  
किय सोगुनी ॥ ४२ ॥

अज्ज हम अप्पसन कज्जै छल आदरहिं, पाप सहि ताप तव  
क्यौ न दोजख परहिं ॥

साह तव छापसह कोल लिखि सत्त७ही, कुम्मकर भेजि दैआ-  
हु हहृ६१हि कही ॥ ४३ ॥

भू अधिक लैन जो बैन सुर्जन१९०११भनै, परगनै सत्त७तो देय  
तिहिं अप्पनै ॥

करहि इच्छा पुनिहु लैन छिति तो कहो, लोभ मित देस गुड  
वान जित्ति रु लहो ॥ ४४ ॥

जेहु पुनि दुर्ग गय सत्त७हद लेख जुत, देस सप्तक७सहित दैन  
लग्गो सु इत ॥

सप्त७हदलेख नृप हहृ६१ तँहँ स्वीकरयो, देस लैयो सु गुडवान  
जय आदरयो ॥ ४५ ॥

कहिय गुडवान जय साह उपदा करौ, धरानि इच्छा प्रमित  
तवहि बढती धरौ ॥

देय भुव लेख करिदैन जो आदरहु, सोहु लिखि साह रनथंभ  
अपनौ करहु ॥ ४६ ॥

कुम्म इम लैन भुव हहृ६१इच्छा कहिय, वादनी५२दैन तव सा  
सेवा करेगा ॥ ४१ ॥ १ रंगना में पीछे गये २ दृढता से ॥ ४२ ॥ ३ कार्य में ४ न  
रक में ॥ ४३ ॥ ५ अधिक भूमि लेने का वचन ६ फिर पृथ्वी लेने की इच्छा करें  
तो ७ छोटा देश वा लोभ के माफिक ॥ ४४ ॥ ८ गुडवान देश को विजय  
करके लेना स्वीकार किया ॥ ४५ ॥ गुडवान को विजय करके जय वादशाह  
की ९ नजर कहेगा तब इच्छा के १० अनुसार अधिक भूमि लूंगा ॥ ४६ ॥ ११  
वाचन परगने देने की आदशाह ने



ह संधावहिय ॥

पत्र लिखि साह सुहु दड्ड ६१ ढिगपेसैयो, दुर्ग खालीकरन तदनु  
सासन दयो ॥ ४७ ॥

दोहा ॥

भगवंतहिँ सुर्जन १९०।१ भनिय, अब निँसवेला आत ।  
कलिह दुर्ग खाली करहिँ, पावहु साह प्रभात ॥ ४८ ॥  
कुम्म सुनत तँहँ इम कहिय, सुर्जन १९०।१ प्रति सामंत १८७।१।  
गढ दै तुमसाँसन गहहु, इहाँ चहत हम अंत ॥ ४९ ॥  
जब बुंदिय सुरतान १९६।१ जड, मारनेलग्गो मोहि ॥  
मैं तब निकस्यो रन मरन, दडहि जरठपँन द्रोहि ॥ ५० ॥  
तब सलेम ३३।१ करि दुर्गपति, थप्यो मैं रनथंभ ॥  
ओर सुभट ममबस अखिल, रक्खे जयआरंभ ॥ ५१ ॥  
अबलग तबतैं किय असन, या गढको मैं अन्न ॥  
अब मोहि न जीवन उचित, अतिबार्दकँ आपन्न ॥ ५२ ॥  
तँहँ सुर्जन १९०।१ भगवंत २तिहिँ, सुपहु रहे समुझाइ ॥  
तदापि सज्ज सारन १८६।१ तनुज, भयो मरन रन भाइ ॥ ५३ ॥

षट्पात् ॥

इम तँहँ कूरम इनहिँ कहिय सामंत १८७।१ जोरि कर ।  
बडेशरिपुन कर बडि बनत लँहुरे २हु कितिवर ॥  
अफगाननको अन्न परयो मम जठर बृद्धपन ।

जियत मैहि तिन्ह जोध सकल दिय कछि इहाँ सन ॥

अकबर ३७।१ हि मारि निर्भय अवहु हुलासि सिकंदर ३६।१ चहत हम ।

१ प्रतिज्ञा की २ भेजा ३ जिसपीछे ॥ ४७ ॥ ४ रात्रि का समय आगया है ॥ ४८ ॥ ५ तुम  
गढ देकर बादशाह की आज्ञा ग्रहण करो ३ हथ यहीं मरना चाहते हैं ॥ ४९ ॥ ७ बुढापे  
से डेप रखनेवाला ॥ ५० ॥ ८ सब ॥ ५१ ॥ ९ भोजन १० अत्यन्त बृद्धपन से ११  
दुःखी हूँ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ कछवाहों के राजा को हाथ जोड़ कर सामन्त ने कहा  
कि १२ छोटे भी बड़े शत्रुओं के हाथ से मारे जाकर कीर्ति के पाति होते हैं १३ पैद

आगमं यहै न सहिवो१ उचित दुजन हमहिँ हनिबो२हि दम ॥ ५४ ॥  
 कूरम नृप तब कहिय हहु६१ सामंत१८७१ सुनहु हित ।  
 उहाँ तुमहिँ गढअधिप अबहु रक्खहि जसअंकित ॥  
 पटा१ मरातब२पाइ भुगि खंडारि३मुख भुव ।  
 थिर बिलसहु रनथंभ दुर्ग दुस्सह सारन१८६१ सुव ॥  
 साहकोँ जिते परिकरसहित आवनदेहु तितोहि अब ।  
 गढमैं स्वसंग लावहिँ सुगल६सिर भेलहु यह भार सब ॥ ५५ ॥  
 दोहा ॥

हहु६१ नृपहु दैव कहिय, अधिक परगनाँ१ एक१ ।  
 तदपि जरठ सामंत१८७१ तँहँ, टारी नैक न टेक ॥ ५६ ॥  
 सारन१८६१ सुत अखिखय सुपहु, चित्त न दिलिय चाह ।  
 हमहि दुर्गके द्वारहनि, स्वजुत भविसहु साह ॥ ५७ ॥  
 दै सपथहु याकोँ दुवरहि, सुपहु रहे समुझाइ ।  
 तदपि न हठ सामंत१८७१ तजि, लारन खरो हित लाइ ॥ ५८ ॥  
 पहु कूरम यह साहप्रति, आनि कहिय पट अैन ।  
 पंचलख५०००००० दस्मन पटा, दिलीसहु किय दैन ॥ ५९ ॥  
 हठो तदपि सामंत१८७१ हुव, तनमित मन्नत ताहि ।  
 महिपति इत कहि सुकलिय, अब खिनदागम आहि ॥ ६० ॥  
 कलिह दुर्ग खाली करहिँ, अप्पन विभव अवेरि ।  
 संभ्र दुहाई साहकी, हिय अँफसोसहु हेरि ॥ ६१ ॥

॥ पटपात ॥

क्रम यह अधिप कहाइ विष्णुप्रतिमाँ दुव२वदित ।  
 व्यवहित कहिय बीर दुर्गबाहिर आनंदित ॥

में १ आना २ दरह ॥ ५४ ॥ ३ जय से जाना जायै ऐसा करके ४ इज्जत ५ हे  
 सारण के मुज्रा ६ परगह सहित ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ७ राजा ५८ ॥ ८ डेरा  
 में ॥ ५९ ॥ ९ अथ राजा का आगम है ॥ ६० ॥ १० चिन्ता करके ॥ ६१ ॥ ११  
 विष्णु भगवान की दो मूर्तियाँ १२ सावधान होकर

अगैं निकसी एहि उभयश्चालय अलसीके ॥

ते पठई निस तमहि नेर बुंदिय मिधि नीकैं ॥

तोपहु निकासि रक्खिय अतुल गढबाहिर दुवश्चर्तगता

तनुमात्र तेहु पठई तिमहि निज निकेत दुर्लभ नियत ॥ ६२ ॥

पथ्यागीतिः ॥

इकश्चतुर्भुजश्चाढ्य, दूजीश्कल्पानराजश्नामा द्वै ॥

मूरति स्याम सिलाय, पुरबुंदिय तोप दोइश्चुत पठई ॥ ६३ ॥

सिव मंदिर पहिलीश् सो, प्रतिमाश् बुंदीपुरहि पधराई ॥

महिपसुभक्तिमिली सो, उदित तिलक चोक च्यारिभुजवारी ॥

धुरै नालि धूरिपानी, जिम दूजीश् करैक बिजुली २ जानी ॥

एश् सुभटन पुर आनी, तारागढ तेहु चरखन चढाई ॥ ६५ ॥

दुवश्चप्रतिमा नाली दुवश्च, व्यवहित ए चउश्चपठाइ इम बुंदी ॥

सुर्जनश्च०११नृपश्चर्जुनश्च०८८१श्चुव, पुनिगढ रनयंभ अप्पन प्रमान्यौ ॥

द्वैभव निज कहि बहुदि, करि खाली दुर्ग प्रातहि कहाई ॥

जवर्नजवन आवहु जुरि, दिल्लीपतिकी बै केरहु दुहाई ॥ ६७ ॥

दलै पठयो जव अकबरश्च०११, सम्मुह सायंतश्च०८७१श्च कहितव किलेसौ

प्रधर्न विरचि तोरै नपर, भट निज सतसत ७०० जुत तिलतिल यो ६८

जाहि भरोसा जानत, अफगान सलेमश्च०११साह गढ अप्यो ॥

मस्तक सेंटै सानत, तोको सायंतश्च०८७१श्चो असिन तुडयो ॥ ६९ ॥

सुर्जनश्च०११कोसत्कारहु, सबभूपन अधिक आनि अकबरश्च०११सौ

अकसीको? अगडार में निकली थीं उल्लस शीति खेत्तुलनारहित(बडा) २ गढ के बाहिर दोनहों से भिना चरख तारीर(नाली) मात्र २ अपना घर निश्चय ही दुर्लभ जानकर ॥ ६२ ॥ तामक ॥ ६३ ॥ दमका जिन ॥ ६४ ॥ ६ तुल्य तोप १० खनचाली नामक ११ कटुक बिजुली नामक ॥ ६५ ॥ १२ लावदान लोकर का जामे १३ चर्जुन का पुत्र ॥ ६६ ॥ १४ यवन लोग इकट्ठ होकर जीव आये १५ अब ॥ ६७ ॥ १६ सेना १७ युद्ध १८ बाहिर के द्वार पर ॥ ६८ ॥ १९ मस्तक के बदले २० तरवारों से

प्रयित सुजस करिनिजपहु, अप्पनअफगान लोन उद्धारयो ॥१७॥  
साहभट सहँस१०००संहरि, बिनुसीसहु बहि मुगल बहु मानी ॥  
कुलहड्ड१६न उज्जल करि, सोयो सामंत१८७१चौर भटसैज्जा ॥७१॥

सतसत्त ७०० संग सुभटहु, जो विरुदहु सेरसाह३२ सत्रु जई ॥७२॥  
प्रभु रावरे कुल प्रथम, सुर्जन१९०११चउ नेत्र अष्टि१६२४मित सकमै  
सत्तहि७हद अकबर३७११सन, लिखाइ गढ दै तदाश्रय लयो यों ७३  
राजा च्यारि४ सम्हारहि, भुग्गि सु रनर्थम होइ तस भेदी ॥

गढ दै पुनि आश्रय गहि, इस हुव सुर्जन१९०११सहाय अकबर३७११कै।

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो पष्ठराशौ वीतिहोत्रेवसु  
श्वेश्वरबीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंशयानुवंश्यविहि  
तवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे सुरज-  
नस्यामेरराजभगवन्तसिंहद्वारा नियमसप्तकपुरस्सरं रणतभैरवदुर्ग  
स्याकबरसम्राटायत्तीकरणासूचन १ समरकराकबरसंशीतिदूरीक-  
रणार्थं भगवन्तसिंहस्य दूतवेषावृताकबरसम्राजः सुरजनान्तिकप्राप  
णा २ तादृशाकबरसम्राजः सुरजनहठावलोकेन तद्विहितनियमसप्त-  
कस्वीकरणा ३ प्रतिज्ञापत्राप्तरणस्तम्भदुर्गेऽकबराधिकारकरणां प

तूटा ॥ ६९ ॥ १ प्रसिद्ध ॥ ७० ॥ २ वीरशाय्या सोया ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ३ उस का  
आश्रय लिया ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं  
की कथां बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के रूपति सुर्जन के चरित्र में सु-  
रजन का आखिर के राजा भगवन्तदास द्वारा सात नियम कराकर रणतभैरव  
का गढ बादशाह अकबर के आधीन करने की सूचना करना ? उस युद्ध कर  
नेवाले अकबर का सन्देह दूर करने के कारण दूत के वेष में उस अकबर को  
राजा भगवानदास को हाडा के पास लेजाना २ बादशाह अकबर का दूत के  
वेष में सुरजन का हठ देखकर उसके कहे हुए सात नियमों को स्वीकार कर  
ना ३ अकबर से नियम पत्र पाए पीछे रणतम्भ के गढ को अकबर के आधीन

ष्टो मयूखः ॥ ६ ॥ आदितो नवाशीत्युत्तरशततमः ॥ १८९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

पहिलैं अमल कराइ पुनि, अकबर ३७।१ गढपर आइ ॥

रनथंभहि कतिदिन रह्यो, जोध स्वकीय जमाइ ॥ १ ॥

कुम्भ १ बघेल २ नतैं कियउ, सुर्जन १६०।१ अधिक प्रसन्न ॥

भूपहु सो अकपट भज्यो, स्वामिधर्म संपन्न ॥

याही जिन नृप १६२४ साक इत, भूप उदय जस भव्य ॥

गयो जानि चित्तोरगढ, नगर बसायउ नव्य ॥ ३ ॥

प्रथित नाम तस उदयपुर १, ताके ढिगाहि तड़ांग ॥

रुचिर उदयसागर २ रच्यो, रान उदय जसरादग ॥ ४ ॥

उदयरानकै सुत उदित, बीस २० प्रमितवरबीर ॥

जैठो १ कुमार प्रताप २ जहैं, धर्म सहायक धीर ॥ ५ ॥

सगतासिंह २ जगमाल २ सम, अतिधृति १९ मित सुत ओर ॥

अष्ट ८ भये कुलधर अडर, जिनमें रन घनजोर ॥ ६ ॥

सगत २ जग ३ अगर ४ रु सगर ५, पंचायन ६ गन ७ नाम ॥

कन्ह ८ रु लवनादिक करन ९, कुलतानक जसकाम ॥ ७ ॥

कुल तिनकै तिन्ह नाम करि, अगम कहावत उत्त ॥

सगताउत्त १ प्रमुख सब, जानहु इम असजुत ॥ ८ ॥

करने का छटा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ निवासी १८९ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ कपट रहित स्वामिधर्म से सेवन किया ॥ २ ॥ २ शुभ यश से ३ नवीन \* नगर बसाया ४ प्रसिद्ध ५ तालाब ६ यश में प्रीति करके ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ आठ पुत्र कुल बढ़ानेवाले निर्भय हुए ॥ १ ॥ ८ कुल को फैलानेवाले ॥ ७ ॥ ९ सगता

\* मेवाड़ के इतिहास में लिखा है कि चित्तोड़ छूटने से पहिले सम्वत् १६१६ में महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर बसाया और इसी सम्वत् में उदयसागर नामक तालाब बनाना प्रारम्भ किया सो १६१६ में समाप्त हुआ और सम्वत् १६२२ की वैशाख सुदि ३ को इस तालाब की प्रतिष्ठा हुई ।

किते उदयनृपकै कहत, जेठोसुत जगमाल ॥

पै कछु हेतु अमोघ परि, भयउ प्रतापसुवाल ॥ ६ ॥

पहिलैं हुव इत जोधपुर, मालदेव नृप नाम ॥

ताकै चउध्रकटे तनय, रीति सुनहु प्रभुराम २०३।४ ॥१०॥

पादाकुलकम् ॥

जेठोचंद्रसेन तैंहैं जानहु, पहु तस बंस भनाय प्रमानहु ॥

तनुं छोरिय नृप मालदेव तैंहैं, जरिय अछुत उमा रानी जैंहैं ॥११॥

इम भटसंवधुरजोधपुर आयै, पुत्र सबन जिस्मन पठवायै ॥

जिनदिवसन बंधुन कुमारजन, जाते सब अंतहपुर जिस्मन ॥१२॥

जाइ सिमुन इम असन चहौ जब, तैरजे चंद्रसेन जननी तब ॥

भाखिय तुमहिं असन खिनभावत, पहु अबाहि मेरो लुत पावत ॥१३॥

उत आदि ॥ ८ ॥ १ सचा ॥ ९ ॥ १० ॥ २ मालदेव का देहान्त हुआ तब ३ अ-  
स्पर्श कीहुई बनादे नामक राखी जली ॥ ११ ॥ ४ जनाने में जीमले जाते थे  
॥ १२ ॥ जब बालकों ने भोजन मांगा तब चन्द्रसेन की माता ने ५ धमकाकर  
कहा ६ भोजन करने का समय ॥ १३ ॥

\* मारवाड के इतिहास में राव मालदेव का देहान्त सम्वत् १६१६ के कार्तिक में होना लिखा है और  
१ कुटुंब के बालकों को भोजन नहीं करानेवाली माता के ज्येष्ठ पुत्र को राज्य से वञ्चित रखना और बाल-  
कों को भोजन करानेवाली माता के लघु पुत्र को राज्य विटाने आदि कथा लिखी सो इस संग्रह की नहीं  
है, किन्तु राव सूजा के समय की है, जिसका संक्षेप वृत्तान्त इस प्रकार है, कि राव सूजा को असाध्य रो-  
ग हुआ तब उस समय के सर्नापी सभी भाई एकत्रित हुए उस समय सूजा को बड़ा पुत्र बाबा कुमारपन में  
ही परलोक चला गया था और बाबा के पुत्र बीरम, गांगा आदि विद्यमान थे, जब जोधपुर के समीपी आ-  
ताओं के बालक जनने में भोजन करने गये तब बीरमदेव की माता ने कहा कि मैं मटियारी नहीं हूं सो  
इतने लोकों का भोजन बनाऊं यह सुनकर गांगा की माता ने उन बालकों को अपने स्थान पर लेजाकर  
भोजन कराया इसके कुछ दिन पीछे राव सूजा का देहान्त हो गया तब राज्य के हकदार बीरम को निकाळ  
कर उगराय सरदारों ने निकसी सम्वत् १५७२ के कार्तिक में राव गांगा को जोधपुर का राजा बनाया,  
उस समय बगड़ी के ठाकुर जैता ने तिलक की सामग्री नहीं मिटने के कारण अपने हाथ के अंगूठे को नी-  
रकर शिपर से तिलक किया, तभी से जोधपुर के सिंहासन पर बैठते समय राजाओं को बगड़ीवालों के  
तिलक करने की प्रथा चली आती है ॥ और उन समय बगड़ी के ठाकुर जोधपुर के सिंहासन बैठनेवाले  
नये अधीश को निवेदन करते हैं कि आप को जोधपुर मुबारिक हो इसके उत्तर में अधीश कहते हैं कि,  
मुझको बगड़ी मुबारिक हो.

यातैं मोहि नैकहु न अवसर, धनी भूख तो जाहु खाहु घर ॥  
 सोति अपरं २९ सोतिवचन सुनि, पिक्खिविमुख जावत कुसरन पुनि  
 तिहिं निजगृह लेजाइ जिमाये, असनं विरचि बाहिर सिसु आये ।  
 निजजनकन यह सिसुन निवेदिय, कुपि विलोम प्रपंच भटन  
 किय ॥ १५ ॥

पठई कहि यह चंद्रसेन १ प्रति, अवही पट्टसुहूर्त विघ्न अति ॥  
 पहू गाहिय अच्छे खिन पावहु, बासरं कहु असैंहि विहावहु ॥ १६ ॥  
 इम खिजि भटन लगाइ रोक उत, सिसु भोजे ताको बुल्लयो सुत ।  
 उदय २ नाम मातुलं गृह हो वह, मालदेव सुत दूजो अर्थमह ॥ १७ ॥  
 सो अतिजव बुल्लयो करभासैंन, आतहि भटन धर्यो नृप आसन ।  
 वर्गरीपति जैताउत बंधव, न लाखि त्वरामैं तिलकं वस्तु नव ॥ १८ ॥  
 उदय २ माल तिहिंकाल असांकित, अंगुलिरुधिर कट्टि किय अंकित  
 अधिपति होत तास तिम हा उत, जवतैं तिलक करत जैताउत ॥ १९ ॥  
 जिहिंमाता स्वकुमर भोजेजिमैं, अधम सु उदय २ भटन नृप किय इम ।  
 तातैं चंद्रसेन १ अग्रज तस, विनुगाहिय रहिगो भावीवस ॥ २० ॥  
 अंव भनायसासक तस अन्वयैं, भो नृप उदय २ उहाँ अघ निर्भय ।  
 तीजो ३ ज्ञाता सत्रुसल्लक्षतस, भद्रार्जन कुलभैव जानहु जस ॥ २१ ॥

इसकारण भुंक्तको कुछ भी ? अवकाश (समय) नहीं है २६ उरीसौत ने पहिली  
 ही सौतके ये वचन सुनकर ३ भूखे जातेहुए बालकों को देखकर ॥ १४ ॥ १ भोजन करके  
 ५ क्रोध करके उलटी ६ रचना की ॥ १५ ॥ अच्छे समय में कुछ दिन ९ बिताओ ॥ १६ ॥  
 १० बालकों को भोजन कराया उम्रके पुत्र को बुलाया ११ यामा के घर था  
 १२ पापी "यहाँ पापी कहने का कारण आगे बतावेंगे ॥ १७ ॥ १३ ऊँट पर वि-  
 ठाकर शीघ्र बुलाया १४ बगड़ी नामक ग्राम का पति १५ शीघ्रता में तिलक  
 करने की १६ नवीन वस्तु नहीं देखकर ॥ १८ ॥ १७ उदयसिंह के ललाट में शं-  
 का रहित अंगुली से रुधिर निकाल कर १८ तिलक किया ॥ १९ ॥ जिसकी  
 माता ने अपने कुसरों को भोजन कराया १९ जिससे अधम उदयसिंह को उ-  
 सराओं ने राजा पनाया ॥ २० ॥ २० उलका वंश भणाय में द्रुहमत करता है  
 २१ पापी २२ ग्राम का नाम, २३ कुछ में उत्पन्न ॥ २१ ॥

ताको अनुजराम ४ चोथो ४ तँहँ, तिहिँ कुल मालवँ आमकरा जँहँ ॥  
 दूजो २ उदय २ चउ ४ न बिच दाखनँ, राजाहुव साधुन रोखारनँ ॥ २२ ॥  
 कलिँ मलजो इहिँ घोर कुमायो, अब कहियत अवसर तस आयो ।  
 पहिलँ यह जब हुतो बालपन, जननी तब याकी सह परिजन ॥ २३ ॥  
 जानलगी तीरथ या सुत जुत, दासिन रथ वृख इक १ तब मृत हुत ।  
 स्व प्रातिसीम मग जँहँ बहु सासनँ, नियति कियउ तँहँ तिहिँ  
 वृख नासन ॥ २४ ॥

दस १० दस १० को सहिराया चहुँ ४ दिस, नमिल्यो कहुँ पति ग्राम भई निस  
 सामन ग्राम मिले मंडल सब, तिनमँ नमि इक १ वृख संग्यो तब ॥ २५ ॥  
 कहुँ द्विज १ कहुँ चारन दुँविधि करि, मिलि रू भूढ बोले दैहँ मरि ।  
 भेजै हमन तनहु आजूँ भनि, बालिँ सँ वके विविध परज्यौँ बनि ॥ २६ ॥  
 मुलहु दै रानी वृख संगिय, सोहु दयो न नटेहि कुँसंगिय ॥  
 रति रही तत्थहि तब रानिय, अह दूजे २ अनुगनँ वृख आनिय ॥ २७ ॥

१ उस रामसिंह \* का कुल मालवे में आमकरा नामक नगर में है. २ अग्रंकर  
 ३ श्रेष्ठ पुरुषों पर क्रोधित ॥ २२ ॥ ४ इसने घोर पाप किया ॥ २३ ॥ दासि  
 यों के रथ का एक बैल ५ शीघ्र मर गया ६ अपनी सीमा के मार्ग में ७ उदक के  
 बहुत ग्राम थे वहाँ पर ८ भाग्य ने बैल को मारा ॥ २४ ॥ ९ अपने पति का  
 कोई ग्राम नहीं मिला १० उस प्रान्त में सय उदक के ग्राम ही मिले ११ नष्ट  
 ता करके एक बैल मांगा ॥ २५ ॥ १२ खोटी सलाह करके १३ जंगल १४ मूर्ख  
 ॥ २६ ॥ १५ खोटे संगवाले १६ दूजे दिन सेवकों ने बैल आना ॥ २७ ॥

\* मारवाड़ के इतिहास में लिखा है कि विजयी सम्वत् १६१९ में राव मालदेव का देहान्त हुआ जि-  
 स पहिले ही मालदेव ने अपने नन्हे पुत्र रामसिंह जिसको रामराजा भी लिखते है देश बाहिर निकाल दिया  
 क्योंकि रामसिंह पिता (मालदेव) को मार डालना चाहता था, बाकी १० पुत्र रहे जिन में बड़ा उदयसिं-  
 ह था उसको माता की अप्रसन्नता के कारण मारवाड़ से निकाल के छोटा भाई चंद्रसेन गद्दी बैठ गया, प-  
 रन्तु रामसिंह और उदयसिंह, बादशाह अकबर के पास पुकारा हुए इस कारण बादशाहने सेना भेजकर चं-  
 द्रसेन को दूसरे ही वर्ष निकाल कर जोधपुर को ग्वाले कर लिया, चन्द्रसेन शिवागि में रहकर शाही सेना  
 से १६३६ तक लड़ता भिड़ता रहा, फिर उसका दहान्त हुए पीछे सम्वत् १६४० में बादशाह अकबर ने  
 राजा का पद देकर उदयसिंह को जोधपुर दे दिया, जिसका इतिहास यहां आगे लिखा है । और इस चन्द्र-  
 सेन का वंश इस समय अजमेर के जिले भणाय में है ॥



जब आदरवारी दासिन जुत, द्वारावति सु गई रिसमें दुत ॥  
 रानीकोहि कहत कति वह रथ, पै निज देसहु दुख लह्यो पथ ॥२८॥  
 इहिंसि सु उदयसिंहसू दुख इकरयो, सु नृप लैन बढला अबसि करयो  
 जिते नटे सासनं धारे जन, सासन तिन्ह लियं छिन्नि क्रोधसन ॥२९॥  
 मरुधर रीति यहै दढ मानै, इक दुख सब सासनधर आनै ॥  
 जातैं द्विजं चारन मुख सब जन, संगी हुव तिनके तन मन रसन ३०  
 पुर खैरवा हुतो जब पापी, थिर लै दत्त कुमति तहँ थापी ॥  
 सुनत मिले सासनजीवा सब, तिन्ह इतरन दत्तहु छिन्नै तब ॥३१॥  
 खट्टंदरसन इम अखिल खिजाये, इहिंसि मरन आउवा आये।  
 करि इक सिवमंदिर बिचमैं किर, सब बैठे लंघत धरनाँ सिर ॥३२॥  
 चंपाउत गोपाल सुखनै चाहि, सुभटन नृप बरज्यो कुवैन सहि ।  
 मन्नि न तदपि कह्यो उत धरिमन, धरनाँ तुमहि दिवायो धुत्तनै ३३  
 यह बिखतरु तुम कुमति उपायो, अरु खैहो १० ब फलहु तस आयो।  
 लंघत दिन सप्तम इत लग्यो, अरु तब जियन सबन मन भंग्यो ३४  
 अकखयराज बारहठ अप्पन, सुंघ्याहरपति बुल्लि महीधन ॥

१ शीघ्र ॥ २८ ॥ इस उदयसिंह बालक ने २ साता का दुःख देखा था ॥ २९ ॥ २  
 सांसणवाले एक का दुःख सबका दुःख समझते हैं ४ ब्राह्मण, चारण, आदि  
 सब लोक साथी हुए ॥ ३० ॥ उस समय वह पापी उदयसिंह खैरवा ग्राम में  
 था ५ सांसणों को लेने की कुमति करी सो सुनकर ६ सांसणों से जीनेवाले  
 सब लोग जब अकस्मिक हुए तब ७ अन्य लोकों के उदकग्राम भी छीन लिये  
 ॥ ३१ ॥ इस कारण सभी ८ खट्टदर्शनो को क्रोधित किये सो इस (उदयसिंह)  
 पर मरने को आउवा पुर में आये और ९ निश्चय ही एक शिवमन्दिर का भी  
 च में करके १० उपवास करके धरणा देने को बैठे ॥ ३२ ॥ ११ गोपालदास चं-  
 पाउत आदि १२ तुम ही धूतों ने धरना दिवाया है ॥ ३३ ॥ १३ चिप का वृत्त  
 १४ अब स्वायोगे १५ उपवास करते १६ जीने का अम ॥ ३४ ॥ १७ राजा ने

॥ मायाइ में सन्यासी रागावत, नीमावत, हिन्दू साधु, जो विशेष कर देवमंदिरों के पुजारी भी हो  
 ते हैं १ ब्राह्मण २ चारण ३ जंती (जैनमत के साधु) ४ फकीर (यवनमत के साधु) ५ देवताओं के पु-  
 जारे क्षत्रिय, जैसे रामदेवजी के पुजारे तैवर वंश के क्षत्री हैं ६ इन वृत्तों को खट्टदर्शन कहते हैं अर्थात् ये  
 वृत्तों दर्शन करने योग्य हैं, इन्हींको डिंगलभापा में खट्टन भी कहते हैं ।

भेज्यो वह रु कह्यो इम भाखहु, रसां अमंतु लै रु जिय राखहु ॥३५॥  
 अपराधिन संगति पै उज्झहु, गिनि तिन्ह हेय देह तजि गुज्झहु ॥  
 अकखय इतर पठावन आखिय, राजा वहहि भोजि हठ रक्खिय ३६  
 पटगृहतैं सु निकसि नयँ पावन, स्वामि निदिष्ट चल्या ससुभावन  
 जब नृपको दुंदुभिबादक जो, संगहि गय गोविंद नाम जो ॥ ३७ ॥  
 अकखय जब धरनां बिच आयो, जाचकँजूह विविध बिस्वायो ।  
 बुल्ले बिहँद चारन १ रु बिप्र २हु, छोरन बपुनँ भये हम छिपहु ॥३८॥  
 अकखय सब स्वामीजब अहेँ, वसुंधेसहि तब खेत बतेहैं ।  
 अहेँ लंघाइ इते प्रभु आये, स्वजन तदपि हम अधिक सुहाये ॥३९॥  
 अकखय कहिय मंडि बिच आसनँ, समुभावन आयो नृप सांसन ।  
 अब पै मरत १ जाति २ द्विज २ आदिक; मरन १ हित न २ जावन १ प्रा-  
 सादिक २ ॥ ४० ॥

इम कहि ढीतैं अकखयहु इनमें, रहिगो मरन धरन धारिनमें ॥  
 गह्यो मरन बादकें गोविंदहु, उत यह सुनत कुपि नैरइंदहु ॥४१॥

अपने बारहठ खूँषियावाड़ के पति अखैराज को बुलाकर. जिनमें अपराध नहीं है वे अपनी १ भूमि लेकर जीव को रक्खो अर्थात् मत मरो ॥३५॥ परन्तु अपराधवालों का साथ २ छोड़ दो उन अपराधियों को ३ त्याग्य जानकर ४ दूर से देह को छोड़ने दो ५ अखैसिंह ने दूसरे को भेजने के लिये कहा परन्तु राजा ने हठ करके उसीको भेजा ॥ ३६ ॥ ६ छेदे से ७ पवित्र नीतिवाला ८ स्वामि की आज्ञा से ९ राजा का नगरची (ढोली) ॥ ३७ ॥ १० चरणों के घाचकों के समूह ने अखैसिंह को ११ उत्साह बढ़ावेवाली स्तुति से बिस्वादाया १२ हम शीघ्र ही १३ शरीरों को छोड़नेवाले हुए हैं. हे अखैसिंह जब सब का स्वामि आवेगा तब उस १४ राजा को १५ इतने दिन लंघन कराकर थाप इधर आये हो ॥ ॥ ३९ ॥ अखैसिंह ने सबके बीच में १६ आसन लगाकर कहा १७ अपनी जातिवाले (चारण) और ब्राह्मण आदि मरते हैं इसकारण मरना ही अच्छा है १८ महलोंवाले (राजा) के पास जाना अच्छा नहीं; अथवा सहलों में जाना अच्छा नहीं ॥ ४० ॥ १९ लजित होकर २० धरणा लगाने वालों में रहगया २१ गोविन्द नामक ढोली ने भी मरना ही स्वीकार किया २२ राजा भी क्रोधित हुआ ॥ ४१ ॥

मेजि कटार कहाई निर्मय, यहै तुमहु मारहु गुदं अकखय ॥  
हरखिलयो सुहु उठि बारहठ, हुय प्रातहि अब मरन फौर हठ ॥४२॥  
जरठ इकखाटिके आयो जहँ, तिहिँ प्रातहि छुव मरन सुन्यो तहँ ॥  
जो चारन भाजिगो घर डरजुत, सदन परनि आयो तब तस सुत ॥४३॥  
पुच्छयो तिहिँ वह करत प्रवेसहि, दैवविलोम बच्यो किम देसहि ॥  
किम हुव सौम उठ्यो धरनाँ किम, जंपहु तात उदत वन्यो जिम ॥४४॥  
भीत जनक बुल्लयो खय होतैं, मरिजैवो न वन्यो सुत मोतैं ॥  
आलय में पातैं भजिआयो, सह दुलही त दुलहर सुहायो ॥४५॥  
यह सुनिलैपित छुराह सु अंचल, चढि देहलि दुलही तजि चंचल ॥  
सुरजन वसन मोर कंकन सह, आयो भजि धरनाँ तस सुत वह ॥४६॥  
अहँ खटलंघि दिवस सप्तम ७ इत, दिय धरि छुव प्रातहि मरनोहित  
विबिध सुरस भोजन बनवाये, इकठाँ सब जिम्मन जुरिआये ॥४७॥  
पति वनत वह दुलह पैइछो, हठ करि नैर्म कतिन हसि दिछो ॥  
परिवेसन पैवहु इम अक्खिय, पिता पुत्र ए दुव रहि असन प्रिय ॥४८॥  
पतरि दुव रतातैं परिवेसहु, इक लै जाह खाय इक एसहु ॥  
इम रिस दुलहु खाटिकेहि आई, पत्रावलि द्वैरही परसाई ॥ ४९ ॥  
उमामूर्ति थप्पी सु पूजि अब, सप्तम ७ दिन वितत जिम्मे सब ॥  
अंवाकी प्रतिमाके अंगै, ज्वलन हविसै १ धूप २ जहँ जगै ॥५०॥

१ हे अर्जुनसिंह यह गुदा में मारना २ हठ के समूह से प्रभात ही भरना निश्चय हुआ ॥ ४२ ॥ वहाँ पर एक ३ बूढ़ा खेहिया जान्वा का चारण आया ४ वनके गह में उसका पुत्र व्याहकर आया ही था ॥ ४३ ॥ ५ देश का उलटा भाग कैसे बचा ६ लेल कैसे हुआ ७ हे पिता जैसा वृत्तान्त हुआ सोवे तैसा करो ॥ ४४ ॥ ८ लज्जित ॥ ४५ ॥ ९ लज्जित होकर वह गठजोड़ा छुटाकर १० डक भाग जानेवाले खेहिया जान्वा का पुत्र ॥ ४६ ॥ ११ छः दिन का लंघन हो कर १२ भर जातवें दिन ॥ ४७ ॥ १२ पानि में सुला १३ हसी करते १४ परामने के १५ समन की १६ भोजन के प्यारे हैं ॥ ४८ ॥ इसकारण इसकी दो १७ पत्रावली परीखो १८ लेहिया जान्वा के दृष्टि को इसकारण प्रीति लाया और १९ दो ही पातले परीसाई ॥ ४९ ॥ २० देवी की मूर्ति २१ अग्नि में घृत का घुपा २२

बाद्य पटह<sup>१</sup>हुं<sup>२</sup>दुभि<sup>२</sup>मुख वर्गै, लक्ष्मन विध पद्यन नृति लगै ॥  
 भीरु सुनत सिंधुन स्वर भगै, मरुप उदय पीठहु डगमगै ॥ ५१ ॥  
 अस्त्रन मैं हु उमा आवाहन, करिकरि कहि जजन लगै जन ॥  
 बैठ सवन निसा सु बिहाई, इम इच्छित बेला ढिग आई ॥ ५२ ॥  
 अर्द्धउदित रवि जानि तजन अंसु, सिवगृह सिर थप्यो गोविंद सु<sup>३</sup>  
 खिल रहि मैं लखौ इतनौ खय, इम गल छेदि गिरयो सु इनोदय<sup>३</sup>  
 पिक्खि गिरत गोविंदहिं दृढपन, जिततित मगनलगै जाचकजन ॥  
 वह खाटिक दुल्लह बिच आयो, बप्पै<sup>४</sup>तनय<sup>२</sup>जुग<sup>२</sup>सरन बतायो ५४  
 यहमेरी<sup>१</sup>रु जनककी<sup>२</sup>है यह, विधि इम छिन्न भिन्न किय विग्रह ॥  
 सवन अरज किय इष्टदेवसन, जिम हम भरत<sup>५</sup>सरे नहिं द्वै<sup>२</sup>जन ५५  
 जीवहिं इक<sup>१</sup>दुरसा<sup>२</sup>अहा<sup>३</sup>जैकि, तो इहिं नृपहिं लै जावे खल तकि ॥  
 जीवहिं यह दुल्लह<sup>२</sup>दूजो<sup>२</sup>जिम, तियजुत आयु समेय बिलसैं तिस ५६  
 उमा सवन विन्नति मन्नी यह, जुग<sup>२</sup>ए बचे छिन्नभिन्नहु जह ॥  
 जन खिल सृत<sup>१</sup>घायल हुव जानहु, मानव लक्ष<sup>१००००</sup>अधिक  
 तहँ जानहु ॥ ५७ ॥

१ डोल नगारे आदि २ छन्दों में देवी की स्तुति होती थी ३ सिन्धुची रागिनी  
 के स्वर लगने से अर्थात् बड़े राग के दोहे लगने से कायर भागने लगे ४ मा-  
 रवाड़ के राजा उदयसिंह का ५ सिंहासन छिलने लगा ॥ ५१ ॥ अस्त्रों में देवी  
 का ६ आवधान (निमन्त्रण) ७ पूजन करने लगे ८ आहाहुआ समय ॥ ५२ ॥ आ-  
 ध्या सूर्य उदय होनेपर ९ प्राण छोड़ना जानकर १० शिव के मन्दिर के शिखर  
 पर ११ उस गोविन्द नामक राजा के नगरवासी (नगरखाने की नौकरी करने  
 वाले) दांती को बिठाया १२ उस गोविंद ने सोचा कि मैं बाकी रहकर इनका  
 नाश नहीं देखू इसकारण गला काटकर वह सूर्य १३ उदय होते ही गिरा ॥ ५३ ॥  
 वह खेड़िया दुल्लाह सेवक बीच में आया और १४ पिता और पुत्र दोनों का  
 मरना बताया अर्थात् एक धाव अपने नाम का और एक पिता के नाम का  
 दोनों अपने ही शरीर पर मारे ॥ ५४ ॥ १५ शरीर का १६ दो जने साथ नहीं  
 चले अर्थात् नहीं मरे ॥ ५५ ॥ एक तो दुरसा आढा १७ गिरकर जी जावे १८  
 तो राजा को दृष्ट देखकर लज्जित करे ॥ ५६ ॥ १९ देवी ने ॥ ५७ ॥

बपु गोविंद तज्यो बिनुवाचक, जिहिं कुल हम किन्नों निज जाचक  
लखि बध यह फटिगो सिवलिंगहु, हठि नृप बहुरि भक्त दिय द्विगहु  
भूपहिं सुनि मरतहु नहिं भाये; पीठिबिंदारन अनुगुं पठाये ॥

जब पल्ली पुरपति परिकर जुत, चहि गोपालदास चंपाउत ॥ ५९ ॥  
अडो रहि रु रोकि नृप अनुगत, पीठि भजावतभयो निबहि पन ।

इम खल नृपपल्लीहु उतारी, धीर सु बहि गोपाल सु धारी ॥ ६० ॥  
संग निजहि लेंकैं जाचक सब, तांजि पल्ली मेवार सु गो तब ।

उदयरान जो पट्ट याहि दिय, सु सबन वंदि स्वयंमत बिलसिय ६१  
इम गोपालदास चंपाउत, जाचक अखिल निवाहे जसजुत ।

जब खल नृप मगिहै तब जेहैं, द्विजसूतन पुनि थान दिवैहैं ॥ ६२ ॥  
करि भुव त्यागै बारहठ संकर, बीकानैर तबहि गो बुधवर ।

पाइ पल्लोधिग्राम दुवसतदस २१०, खिल खटद्वरन जिवायो ले जस  
परदुखदुखित देखिइहिं भूप्रिय, पुरनागोरत्रिलक्ष ३००००० पटादिय

अखयः मरयो संकरकडिगो इम, तहँ गल भिन्न वच्यो दुरसी  
इतिम ॥ ६४ ॥

न हुव नाममालानृपन्यारो, इक संदुं जु भदोरेवारो ।

बहुदिन खल सु जातिके बाहिर, जिहिं अपराध रह्यो जगजाहिर ६५

१ गोविंद ने बिना पोले शरीर छोड़ा "गोविंद को मन्दिर के ऊपर बिठाया था कि सुये उदय होने की खबर देवे तो सब भरे, सो गोविंद ने मुख से कहने में सब के मरने का पाप समझा इस कारण मुख से कुछ नहीं कहकर सुये उदय होते ही प्राण अपना गला काटकर समझाया" उस गोविन्द के कुल को हम (चारणों) ने जाचक बनालिया २ फिर हींग का आता दिया ॥ ५८ ॥ ३ निकालने को ४ सेवकों को भेजे ५ पालीपुर का पति ६ परगढ़ साहेब ॥ ५९ ॥ ७ राजा के सेवकों को ८ इस कारण उस दुष्ट राजा ने पाली उतार ली ॥ ६० ॥ ९ श्वान्त्र होकर ॥ ६१ ॥ १० चारणों को ॥ ६२ ॥ ११ भूमि जोड़कर १२ कोट में भाग १३ बांटी रहे जिन स्वद्वनको जिलाप "पान्चाद" में जिनको स्वददर्शन कह्य है, निन्दाको स्वद्वन भी कहते हैं" ॥ ६३ ॥ १४ राजा ने १५ अक्षयसिंह मारा गया इस कारण शंकरदान निकल गया १६ दुरसा भाठा ॥ ६४ ॥ १७ सांदू शाखा

॥ दोहा ॥

पापी नृप हुव जोधपुर, इम सु उदय अभिधान ॥  
 नामतज्यो जाको नरन, भानि अवाच्य समान ॥ ६६ ॥  
 इन १२मित सुत हुव उदयके, कुलधर तहँ जसकाम ॥  
 सूर १ कृष्ण २ दलपति ३ सदित, माधव ४ सगत ५ सनाम ॥ ६७ ॥

॥ बैतालः ॥

भगवानदास ६ रतन ७ पुनि जगनाथ ८ भूपति ९ नाम ॥  
 नव ९९ भये कुलवृद्धि जनक रु मंहिप चउ ४ प्रभुराम २० ३१ ४१  
 पहू सूर १ रु पहू रु कृष्णकुल नृप कृष्णगढ अब आहिं ॥  
 रतलामआदि नरस दलपति ३ वंस मालवमाहिं ॥ ६८ ॥

॥ षट्पात् ॥

माधव ४ चोथो ४ मंहिप प्रथित हुव पुर पीसंगनि ।  
 महर्घो १ जुन्या २ प्रमुख नदी खारी तस कुल खानि ॥  
 ए चउ ४ नृप खिल इतर पंच ५ कुल अबपदिचानहु ।  
 सगतसिंह ५ खैरवा सु प्रभु १ म २० ३१ ४ प्रमानहु ।  
 गोइंदगढ १ रु बड़ली १ बहुरि बज्जुथल ३ खैरवा ४ दि बहु ॥  
 भगवानदास ६ कुल बस भनत सेल त्रिक ३ ज ग्रामन सुपहु ६९

दोहा ॥

लहँलुट्टी १७ अरु चोसला १८, निडोठी ३१ सुख नाम ।

का चारण भदोरा नामक ग्रामवाला राजा को छोड़कर चारणों की नाममा-  
 ला में शामिल न हुआ वह दुष्ट बहुत दिन तक जात बाहर रहा ॥ ६९ ॥ १  
 उदयसिंह नामक २ नहीं कहने योग्य समझकर लाकों ने उसका नाम लेना  
 छोड़ दिया ॥ ६९ ॥ ६७ ॥ ३ पिता के कुल की वृद्धि करनेवाले ४ चार राजा  
 हुए ५ हे प्रभु रामसिंह! ६ अब कृष्णगढ में हैं ॥ ६८ ॥ ७ प्रसिद्ध ८ आदि ९  
 उसके कुल की खान खारी नदी के पास है अर्थात् उपरोक्त सब ठिकाने खारी  
 नदी के समीप हैं १० हे प्रभु रामसिंह! सगतसिंह के कुल को खैरवा में जानो  
 ११ बाकी के तीन पुत्रों के वंशवाले ग्रामों के ठाकुर हैं ॥ ६९ ॥ १२ ग्राम का  
 नाम है जिसको लैलोटी कहते हैं १३ नीठोठी आदि

क्रमतः ए नव उदयकुल, रमो भजत अविराम ॥ ७० ॥

पीछें छिपहि पाप पकि, मरहि सु उदय महीप ॥

तखत लंहहि सुत सूरतस, दुरित दूर कुलदीप ॥ ७१ ॥

अकबर ३७१ निज रनथंभ इत, थपि रु जावत थान ॥

पठयो जित्तन हड्ड ६१ पहुँहु, गढवारी गुडवान ॥ ७२ ॥

इति श्रीविंशभारकर महाचम्पूके पूर्वायणो पट्टराशौ वीतिहोत्रव-  
सुधेश्वरवीजव्याख्यानवीजहड्डाधिगडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यवि-  
दितवृत्तान्तव्याख्यानावमरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे चि-  
त्रकूटाधीशमहाराणोदयसिंहस्योदयपुत्राभिधनवनगरोदयसागराख्य  
तडागनिर्माणा १ उदयसिंहस्य विंशतिपुत्रेषु नवसूनुसंततिकथन २  
शोधपुराधीशरावमालदेवसुतौ पट्टपुत्रचन्द्रसेनदायापहतिपुरःसरं त-  
दनुजोदयसिंहसिंहासनसमारोहण ३ सातुस्तीर्थाटनसमयवृषभंदा  
नारकीकारकुपितोदयसिंहस्य ब्राह्मणचारणादिभगपहरण ४ धरा-  
पहरणकुपितब्राह्मणचारणादेरा उवाभिधयाम्भेऽनशनत्रतोत्तरमात्मवा-  
तेन लक्ष्मणुप्यमरण ५ अवशिष्टब्राह्मणादीनां गोपालदासचापावत

१ लक्ष्मी का खेवम करने हैं अथवा आदि करत हैं २ निरन्तर (विश्राम रहि-  
त) ॥ ७० ॥ ३ जीव ही इस पाप का फल पककर ४ पाप दूर करके ॥ ७१ ॥ ५  
होटों के राजा को ॥ ७२ ॥

श्रीविंशभारकर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
वंशवर्णन के कारण तनुभिगज अस्थिराल के वंश और वंश की जान्वाओं की  
कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के रूपनि सुरजन के चरित्र में चित्तोड़  
के महाराणा उदयसिंह का उदयपुर नगर के नवीन राजधानी और उदयसागर  
नामक तालाब बनाना १ उदयसिंह के भीतर पुत्रों में नौ पुत्रों के कुल की वृद्धि  
का जयन २ शोधपुर के राजा मालदेव का महान्त होने पर पाटली का एक  
मिठाकर छोटे उदयसिंह का राजा होना ३ सातु के तीर्थाटन समय वृषभ  
देना अस्वीकार करने के कारण क्रोधित होकर उदयसिंह का ब्राह्मण और  
चारण आदि की उदत भूमि उतारना ४ उन खटवजेन का क्रोधित होकर आ-  
उवा शाम में रात दिन का धरणा लगाकर बोक लक्ष्मणों का आत्मघात  
करना ५ शोध यानकों को मेवाड़ में लेजाकर गोपालदास चापावत का जयना

कृतमेदपाटनयनेन निर्वाहकरणा ६ बीकानरेशदत्तदशोत्तरद्विशत-  
२१० ग्रामप्रदानेन बारहठशंकरदानस्य षड्वर्णापालन ७ उदयसिंह  
नृपतिपुत्रद्वादशके नवानां वंशवृद्धिवर्णनं तेषु च चतुर्णां राज्यकरणां  
सर्वेषां च वंशजस्थानसूचनं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥ आदितो नवत्यु-  
त्तरशततमः ॥ १९० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुर्जन१९०।१इम जिन अष्टि१६१४सक, सत्त वचन अनुसार ।

लै आश्रय मुगलैस६कौं, दिय रनथंभ उदार ॥ १ ॥

सर्ज भरोसाके सुभट, अपि अचल रनथंभ ॥

पुर दिहिय प्रस्थानको, अकबर३७।१किय आरंभ ॥ २ ॥

साह कहिय तब सुर्जन१९०।१हिं, जो गुडवान विजेय ॥

जो जयकरि आवहु तुमहिं, देस इष्टं तब दैय ॥ ३ ॥

कुम्हहिं तब सुर्जन१९०।१कहिय, साह बलहु कहु संग ॥

मंगै वा नहि मंल मत, अप्प बदहु नय अंग ॥ ४ ॥

कुम्ह कहिय जो नृप करहु, इच्छितदेसनंआस ॥

चित्त सहाय न तो चहुहु, पाँतिप करहु प्रकास ॥ ५ ॥

हीरकम् ॥

जवँकरि करि सिक्ख तवहि सुर्जन१९०।१जवनेसतैं ॥

पहिलैं बुंदिय पधारि दल सब लिय देसतैं ॥

और से निर्वाह करना ६ बीकानेर के राजा के दिय हुए २१० ग्रामों को देकर  
बारहठ शंकरदान का खटब्रन का पालना ७ राजा उदयसिंह के बारह पुत्रों में  
नौ का वंश वृद्धि करना और उनमें चार का राजा होना तथा सबके वंश के  
स्थानों की सूचना करने का सातवाँ ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक  
सौ १९० मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ तैयार करके ॥ २ ॥ २ वाञ्छित देश ३ फिर देवेंगे ॥ ३ ॥ ४ बादशाह  
की सेना भी ॥ ४ ॥ ५ वाञ्छा किये हुए ६ पराक्रम ॥ ५ ॥ ७ शीघ्रता से



दूदा११११अरु भोज१९११२दुव२हि रच्छक धरि देसमें ॥

सूरहु कति तिन्ह सहाय रक्खिय अवसेसमें ॥ ६ ॥

नववय गृह रक्खि इमसु माइ पयनमें नम्यो ॥

सुर्जन१९०१२समुचित अनीक संगत पुनि संक्रम्यो ॥

रोप रु दग अष्टि१६२५लगत संबत ऋतुराजमें ॥

हंकिय इम हड्ड६१नृपति कोविद जमकाजमें ॥ ७ ॥

बारी गढ गय सबेग गंजत गुडवानको ॥

घेरि रु जरि नालि जाल मंडिय घमसानको ॥

लोपन गढ गोहन जर तोपन दगि लगगयो ॥

मच्छत भरमार भार भूतल डगमगगयो ॥ ८ ॥

कसमसि फनदेस सेस१कुंकरि हुव कुंडली ॥

आसत किरि जास२मचकि जानुनबिच टुंडली ॥

पत्थरनिभ अंग समिटि कच्छप३चिपटो परयो ॥

प्रोथित अतली४दिपुट७न संकट घन स्वीकर्यो ॥ ९ ॥

गोहन बमती प्रलंब नालिन अरि भू ग्रसै ॥

निठिन नरहल्ल१गज टल्ल२न पुनि निक्खसै ॥

मानहु बनि आसक निजनासक निगिलै मही ॥

कहन इत जानि निज कि पीलुव प्रबिसे पैही ॥ १० ॥

१ घाकी ॥ ६ ॥ २ उचित ३ लेना साथ लेकर ४ चला ५ वसन्त ऋतु में ६ षष्ठर. ॥ ७ ॥ ७ तोपों की जाली लगाकर ८ युद्ध रचा ९ तोपों की भरमारी के भार से ॥ ८ ॥ १० फणों को हिलाकर शेषनाग ११ अपने अंग को कुण्डलाकार करके १२ वराह को आस देने लगा १३ वराह ने उससे मचककर १४ घुटनों में १५ तुण्ड कर ली १६ अपने अंगों को समेटकर कच्छप पत्थर के समान चिपटा होगया १७ प्रसिद्ध अथवा घोड़ों (घोड़ों की दौड़) से १८ अतल आदि नीचे के लोकों ने ॥ ९ ॥ १९ गाले उंगलती हुई लम्बी तोपों के पहियों को २० सो मझों अपना नाश करनेवाली जानकर भूमि उन तोपों का आस करके गिटती है और २१ हाथी उनको अपनी जानकर घुसे छुए २२ पहियों को निकालते हैं ॥ १० ॥

जामशु इकशठाम दगत तोपन पकरै जथा ॥  
 परिपरि छिति दूर पूर पलपल पलटैप्रथा ॥  
 संतत तम रत्तिशदिवसरधैति विवस संकुल्यो ॥  
 डरशन गढकेरन मन आन्हिक विधिमें डुल्यो ॥ ११ ॥  
 भासत इकधुंधि भूशनभरप्रसरीभई ॥  
 दिनकरँ उपरार्ग मनहुँ खँ ग्रसि प्रथनाँ दई ॥  
 दिग्गजः सुख ईह न रत चीहँ करत दिग्गजीर ।  
 लीह डरत धीह झरत सीहँ परत ज्यों लजी ॥ १२ ॥  
 पावत इकश हथिय गढ तोपन उडिके परे ॥  
 पावत उतर पंथ परन दुग्ग बरन जे परे ।  
 बाहिर कति गोडनगन सौमिकँ रन बिथरै ॥  
 सुर्जन१९०१ भट सजितकरि लाजित तिन्ह संहरै ॥ १३ ॥  
 बावन ५२ दिन हड्ड ६१ लरत गढविच बल वित्तयो ॥  
 जोधन रतिवाहहु तनि गौडप नहि जित्तयो ।  
 कोटहु ढहि ठामठाम पैठन पदवी करी ।  
 निश्रेनिन दै तब नृप उच्च चढन उच्चरी ॥ १४ ॥  
 सासकँ सह व्याकुल तब बारीगढ सूर है ।  
 दुर्जन इम दै कहाइ सुर्जन१९० रन दूर है ।  
 तो हम बचिबो विचारि संभरै सरनौ तकै ।

१ रीति २ निरन्तर ३ दिन में ही रात्रि घालकर अंधेरा भरगया ४ अंधेरा हो-  
 जाने के कारण सन्ध्या करना भूलगया ॥ ११ ॥ ५ अंधेरा ६ फैली हुई ७ सूर्य के  
 ग्रहण में मानों ९ खग्रस का १० विस्तार दिया ११ दिग्गजोंको सुख की इच्छा  
 नहीं होने से दिग्गज की स्त्री १२ चीख मारने में रत हुई, नगरों के उत्कट शब्द  
 से सीमावधि डरन लगी १३ जैसे सिंहके ऊपर पड़ने से लज्जित होये तैस वे  
 दिशाओं की हथिनियें लाजित हुई ॥ १२ ॥ १४ गढ के १५ कोट १६ रतिवाह १७  
 सजे हुए ॥ ११ ॥ १८ रात्रि का युद्ध १९ गौड़ क्षत्रियों का पति २० मार्ग (पग  
 डगड़ी) ॥ १४ ॥ २१ मालिक सहित २२ चहुवाण का शरण

अप्पहु गुडवान तउ न अप्पहु इम ओदकै ॥ १५ ॥  
 जो अब बिगैरै न मान १ थानहु नहि जाइ २ तो । ७  
 अप्पहिं प्रैनमै चुहान गौडनगन आइ तो ।  
 सुर्जन १९०।१ यह सुनि बिचारि गौडन मत स्वीकरयो ।  
 चीरन गढ़ बीरन कति धीरन तँहँ उच्चरयो ॥ १६ ॥  
 भाखिय नृप मारन १ सन धारन सरन २ भलो ।  
 चारन सुनि कारन इन्ह लारन न किम लैयलो ।  
 अप्पनं अरजीसन इन्ह सासहु भुव अप्पिहै ।  
 थान जु गुडवान सु सुनि गौडन घर अप्पिहै ॥ १७ ॥  
 अक्खि तँहँ राम १८९।२ अनुज पुच्छहु पहिलै पहुँ ।  
 लावहिं १ छिग कै इन्ह हनि आवहिं २ भनिये लहू ।  
 संभर सुनि विन्नति लिखि आसय लिय साहको ।  
 लावन १ हनि आवन २ सन सूचिय जस लाहको ॥ १८ ॥  
 पुब्बहु त्रय ३ बेर कटक गौडनपर प्रेरयो ।  
 हटिहटि उलटो गयो सु काहुन जय हेरयो ।  
 काहु न मित दम्भन व्यय कोसनसन लगगयो ।  
 भी करि रन गौडन मन गर्वन तउ भगगयो ॥ १९ ॥  
 सुर्जन १९०।१ तिन्ह लावन १ हनि आवन २ दुव २ स्वीकरै ॥  
 तो अब गहिलावन तिन्ह धी हम जह महीधरै ॥  
 साहहु यह सोधि रीति सुर्जन १९०।१ प्रति सूचई ॥  
 आनहु गहि तो इम अति जानहु जस हे जई ॥ २० ॥  
 लिखि यह फरमान नृपहु गौडनदत्त लेख्यो ॥

आप गुडवान नहीं दोषे हसकारण १ डरते हैं ॥ १५ ॥ २ नमस्कार करें ॥ १६ ॥  
 ३ हलकारों से कारण सुनवार ॥ १७ ॥ पहिले ४ राजा से पूछा ५ शीघ्र ॥ १८ ॥ कि-  
 सीने भी ६ न्यून खर्च नहीं किया ७ भय ॥ १९ ॥ २० ॥ ८ गौडों का पत्र लिखा

दै बच निज इष्टे उनहिं अप्पहु लिखि त्यों दयो ॥  
 गौडहु तजि बारियगढ नतै तब नृपपै गये ॥  
 भनिभन्ति सरनौ स्वकीय बिन्नति रचतेभये ॥ २१ ॥  
 गौडन तिन्ह दै बिसास भूपहु गढमै गयो ॥  
 अकवर ३७१ ध्वज गड्डि आन फेरत जब उन्नयो ॥  
 नृप तँहँ निजनाम पोलि उच्छिंत इक १ निर्मई ॥  
 भौ तिम दिनदिन बिसेस बारियगढकी भई ॥ २२ ॥  
 पोलि १ सु बनवाइ पतित साँल २ हु सुधराइकै ॥  
 लकखनमित जनपद कर जन पद कर लाइकै ॥  
 घन जिम जयके निसान १ दुँदुभि घुरवाइकै ॥  
 टल्लन १ थरकाइ दुर्ग चामर २ दुरवाइकै ॥ २३ ॥  
 गौडन जुत हंक्रिय इम जय करि गुडवानमै ॥  
 दिल्लिय पहुँच्यो उदार प्रतिपल अतिप्रानमै ॥  
 दिल्लिय बिच थाँन यहाँ सो न लियउ संभरी ॥  
 बाहिर करि दल मुकाम निर्भय तिथिही बरी ॥ २४ ॥  
 जानिय बिनुबंधन लखि गौडहिं पकरै जथा ॥  
 पातल कवहु खिजै हु अप्पन कुलकी प्रथा ॥  
 यौ लखि भुव १ काल २ नगर बाहिर नृप उत्तरयो ॥  
 अवसर गुडवान विजय अकवर ३७१ उपदौ करयो ॥ २५ ॥  
 अखिखय नृप गौड हुकम हे प्रभु तव आदरयो ॥

१ अपमे इष्ट का वचन देकर २ नञ होकर ॥ २१ ॥ ३ उठा ४ ऊंची बनाई ५ क्रान्ति  
 ॥ २२ ॥ ६ डार ७ पड़ी हुई शाला को सुधरा कर ८ देश के लाखों रुपयों का हाँ  
 सिल और मनुष्यों के हाथ अपने पाँवों में लाकर (लगवाकर) ९ नगार "यह  
 निशान शब्द नोयत का और दुन्दुभी शब्द नगार का वाचक है" १० बड़े भक्त  
 खड़े करके ॥ २३ ॥ ११ अत्यन्त बल में १२ दिल्ली में स्थान नहीं लिया १३ शा  
 यागत की रक्षा लेकर ॥ २४ ॥ १४ देशकाल देखकर १५ नज़र ॥ २५ ॥

बंधव कति हे \*विलोम विग्रह तिन बिस्तरयो ॥  
 तिन्ह मरतहि गौड़नृपति अप्पन सरनौं तक्यो ॥  
 बारीगढ साह आन फेरन पहिलैं बक्यो ॥ २६ ॥  
 देसहिँ कर देसखेत शोकन हमको २दई ॥  
 सासन बस जो कही सु लाजित सिरही लई ॥  
 बारीगढ बाहिर निज परिजन सब बुल्लये ।  
 द्वारन निज रक्खि हमहि केवल रहिवे दैये ॥ २७ ॥  
 अगगहु पठये अनीक तब जब मिलिबो तक्यो ॥  
 इतरन अटक्यो यह तिहिँ आगैस पुनि ओदक्यो ॥  
 पिसुनन मत श्रुति परैं सु अप्प न उर आनिये ।  
 गौड़न पति प्रय लगाइ मोदित सनमानिये ॥ २८ ॥  
 संभरपर रीझि साह सूचित सब स्वीकरयो ॥  
 याकँहँ कृत लेख देय अप्पन पुनि उच्चरयो ।  
 यह सुनि फरमा बजीर १ मुनसी २ प्रति मंगयो ।  
 संत्वर विरचि सु समुद्र दिखियपतिकौं दयो ॥ २९ ॥  
 बावन ५२ मित जनपंद लिपि ताबिच पहिलैं बनी ।  
 भाखिय अकबर ३७१ वरं को भुव तुमरो भनी ॥  
 कासी १ सत्रसौं वर नृप अक्खिय हमरै कहैं ।  
 मरतहि जन जत्थ मुक्ति लाह सु सहजें लहैं ॥ ३० ॥  
 दहदह १ हिँ सुनि एह साह अकबर ३७१ अति तुष्ट है ॥  
 जुहु दिय बढती लिखाइ कासिय १ हित जुष्टं वैं ।  
 जंपिय क्रिय माफ तुमहि कासिय १ हद हाजरी ।

गौड़ के कितने ही भाई \* विग्रह थे उन्होंने विग्रह किया ॥ २६ ॥ १ अपने सय  
 सेवकों को बुलाए ॥ २७ ॥ २ अन्य लोगों ने रोका ३ इस अपराध से ४ उरा  
 ५ चुगलों का मत जान पड़े उसका आप मत मानो ६ प्रसन्न होकर ॥ २८ ॥ ७  
 फरमान ८ शीघ्र छाप लगाकर ॥ २९ ॥ ९ देशों की लिखावट १० तुमको अष्ट  
 भूमि कौनसी दीक्षती है ॥ ३० ॥ ११ हित में प्रीति करके

चाहत हित सद्धु खिल बावन ५२ की चाकरी ॥ ३१ ॥  
 जूनपद तब नृप छबीस २६ कासियदिग जँच्चये ।  
 दलः करि इतके छबीस २६ दलविच रहिबेदये ।  
 इहिं क्रम फरमान अपरै २ लिपि जुत करवाइकै ।  
 लेख सु दिय सुर्जन १९०१ हित घन हित मन लाइकै ॥ ३२ ॥  
 पदवि रावराजा निज करि हय पैट अप्पिये ।  
 भूखन अरु हेति पंच सहस हु मुनसब दिये ।  
 अकबर ३७१ बर बैभव इम सुर्जन १९०१ हित अप्पयो ।  
 बारीगढ गौडनपय लाइ रु बहुग्यों दयो ॥ ३३ ॥  
 अग्रज १ हित बुंदिय इत मध्यकुमर आइकै ।  
 भोज १९१२ सु मिलिजावहिं दुन खटपुर निस भाइकै ।  
 राजकुमरि १९११ भोज १६१२ रमनि बुंदिय विमना रहै ।  
 अच्छ न बपु आकृति इम चित न तिहिं जो चहै ॥ ३४ ॥  
 हुव रन रनथंभ तबहु मध्यर कुमर पैत वहाँ ।  
 ही वह कुमरानि न्हाइ पति रित अनुरत्त वहाँ ।  
 अग्रज १ तिय देवर तँहँ राखिय निस इक १ ही ।  
 गर्भ स्थिति ताहि रजनि देवरजुवती गही ॥ ३५ ॥  
 प्रातहि चढि गो कुमार भोज १९१२ सु अपनी पुरी ।  
 क्रम करि इत बुंदिय वह गर्भस्थिति अँकुँरी ।  
 सायक दग सोलह १६२५ सक सावन ५ दलः स्वेत १ मै ।

(१) श्री भावन परगनों की चाकरी लाओ ॥ ३१ ॥ २) सोंते, उन बावन परगनों को  
 ३) छबीस परगने इधर बुन्दी के समीप उपग्राम रहने दिये ४) अन्य ॥ ३२ ॥ राव  
 ५) देकर ६) हाथी ७) वस्त्र ८) अष्ट ॥ ३३ ॥ ९) घर बुंदी में मध्यम कुंवर  
 १०) भोज की स्त्री बुन्दी में उदास रहती थी ११) उसके  
 १२) शरीर की आकृति अच्छी नहीं थी ॥ ३४ ॥ १३) वहाँ गया १४) प्रीतियुक्त १५) बड़े  
 भाई की स्त्री ने ॥ ३५ ॥ १६) उठी १७) आग्रज के शुरु पक्ष में

चउदसि १४ जनम्यौ कुमार गणकन खिन चेतमै ॥  
जयवति १८८१ नृपमाइ जवहि मोहित महं मंडयो  
द्वेय सु बहुस्वापतेय मग्गनगनकों दयो ।  
दुर्जनसल्ल १९११ हु भतीज जनि सु वसु १ भूर दये ।  
बुंदिय महके बिनोद भोज नन बढतेभये ॥ ३७ ॥  
सुर्जन १९०१ अब दिल्लिय इम नत्तिय जनम्यौ सुन्यौ ।  
लकखन करि दान इतर दानन बढिबो लुन्यौ ।  
नत्तिय अभिधानहु नृप रत्न १९२१ हि चहि रक्खयो ॥  
ए हहि गणकनअधीस होवहि इम अक्खयो ॥ ३८ ॥  
अति जस लहि सिक्ख बहुरि बुंदिय नृप आत भो ।  
जेठो १ सुत सम्मुह तस पत्तनसन जात भो ।  
पहु करि पुरमै प्रवेस पय परि प्रैनमी प्रसू ।  
बुल्लि सु सुतसुत बिथारि बलि मह वक्खस्यो बैसू ॥ ३९ ॥  
बुंदिय तव आइ भोज १९१२ खटपुरसन बेगही ।  
बंदित निज तांत १ आत २ आसिखै सुखमो वही ।  
नूतन नृपमाइ पुब्ब सर १ मंदिर २ निर्मये ।  
दोउशन इक १ उच्छव जव संचयै खुलिवे दये ॥ ४० ॥  
पलवेल जुहि मैनन किय तारागढ पुब्बघाँ ।  
हड्ड १ नपति माइ हाल विरतुत किय ताल १ हौ ।  
लकखन खनिवे लगाइ दीनन अवलंबदै ।

१ ज्योतिषियों के ॥ ३१ ॥ २ उत्सव १ धन ४ भतीज के जन्मपर ५ बुंदी में आनंद और  
गोत्र बहुत बूझ; वा बुंदी में तो आनंद बहुत हुआ परंतु भोज को विशेष नहीं  
क्योंकि यह पुत्र दुहागिन स्त्री के हुआ था ॥ ३२ ॥ ३ पीते को ७ अन्य राजाओं  
के दान चढने को काट दिया ॥ ज्योतिषियों ने कहा कि यही राजा होवेगा ॥ ३३ ॥  
६ पुर से १० माता को नमस्कार किया ११ धन दिया ॥ ३४ ॥ १२ पिता को १३ आशीर्वाद  
की १४ शोभा धारण की १५ तालाब १६ धन ॥ ४० ॥ १७ तालाब जो मीनों ने तारागढ  
के पूर्व दिशा में किया था वहाँ बंढा तालाब बनाया १८ खोदने को

रक्खन निज किति दम्भन लक्खन निकुरं ब दै ॥ ४१ ॥  
 ताल १ सु गहिरो खुदाइ अंकिय निजनामते ॥  
 पल्लिहु गिरि प्रमान तास बंधिय विधि बामते ॥  
 बापीसम द्वार तास सेतुहि विचबंधयो ॥  
 सीढिन सुधराइ पंति पद्वर पथ संधयो ॥ ४२ ॥  
 अंदर अपसव्य १ सव्य २ रक्खिय दुवर ओवरी ॥  
 गबीजक लिपि सव्य २ सुद्ध पत्थर तहँ विस्तर ॥  
 अच्युतगृह बीजक लिपि तत्थहि खुदवाइके ॥  
 प्रतिवृति हरिकी पुनि दिय मंदिर पधराइके ॥ ४३ ॥  
 गोलहा कृत बापी दिग सिखदिस २ हरिगेह जो ॥  
 नूतन बिरच्यो अपुव्व जयवति १८८१ अति नेह जो ॥  
 लच्छो १ सह नारायनरे थप्पिय तहँ लाडसौं ॥  
 उच्छ्रितपन मंदिर वह छन्न न कहँ आडसौं ॥ ४४ ॥  
 नव इम सर १ मंदिर २ जुग २ अर्जुन १८८१ तिय निर्मयो ॥  
 भूपति अब आतहि तिन्ह उच्छ्रव विधिसौं भयो ॥  
 व्यंय परि धन लक्खन सर १ मंदिर २ दुवर यौं बनें ॥  
 लक्खन पुनि उच्छ्रव लखि घाँघाँ उधरे घनें ॥ ४५ ॥  
 सायक दग सोलह १६२ सक उच्छ्रव यह इद्धंभो ॥  
 सुनिसुनि जसं जस विसाल बैरिनि हिय विद्धंभो ॥  
 दूदा १९११ दुभगासुत इम ताहि न नृप आदरें ॥  
 वैरा १ स्याम २ नक १ वक १ धीगहु छवि नाँ धरें ॥ ४६ ॥

\* समूह ॥ ४१ ॥ १ पालमें ॥ ४२ ॥ १ दाहिनी + बाई ॥ ओवरी में शुद्ध पत्थर पर उसका  
 बीजक लिखाया १ विष्णु भगवान् के मन्दिर का बीजक उर्मा में खुदवाकर २ मूर्ति  
 ॥ ४३ ॥ ३ गोलहा की बनाई हुई बावड़ी ४ अग्नि दिशा में ५ लक्ष्मी सहित ६ ऊँचे पन  
 में ॥ ४४ ॥ ७ खरच ८ दिशा दिशा में ॥ ४५ ॥ ९ बटा उत्तम लक्ष्मी १० जिसका बडा  
 पशु सुन सुनकर ११ वेधन हुआ १२ दुर्जनशाक्त दुहागन का पुत्र था इसरकाण  
 १३ कालारङ्ग १४ बाँकी नासिका ॥ ४६ ॥



भोज१९१२आसेचनकरु बल्लभ तियकै भयो२ ॥  
 तकि इम अति नेह ताहि लालनपन सो लयो ॥  
 तीजो३सुत रायमल्ल१९१३जाहि हु हितसौं तकै ॥  
 नैकहु जनकत्वेनेह जेठे१सुतपै नकै ॥ ४७ ॥  
 बनिता जेठे१रु मध्य२इक१इक१पहिलैं वरी ॥  
 अब नृपसुत तीन३न जिम व्याहन माति आदरी ॥  
 पुत्रनत्रिक३व्याहिय तिम बेगहि महसौं पहू ॥  
 वर१जुत जितनी बधाइ घर लिय दुलही बहू ॥ ४८ ॥  
 नाम१रु मिति२जाति३नैर४कहियत क्रमकी कथा ॥  
 जे अब प्रभु राम२०३१४सुनहु रविकवि वरनैं जथा ॥  
 कर्मध्वज छत्रसिंह अवहरप्रतिकी कनी ॥  
 जेठे१सुत उमा१९१२नाम दूजी२परनी जनी ॥ ४९ ॥  
 रानाउति धन्यकुमारि१९१३भारत तनया भनी ॥  
 बिजयनगर यह तीजी३दूदा१९१२बिबही बनी ॥  
 भूपति इम तीन३हि निय व्याहिय सुतको भली ॥  
 चंद्राउति चौथी४पुनि अप्पहिं वरिहैं बली ॥ ५० ॥  
 बुंदियपति तिम विबाह भोज१९१२हिं खट६व्याहयो ॥  
 गदियत जिम रूच्य दान अर्गाव अवगाहयो ॥  
 जगन्नाथ कर्मपुति जसोदा१६१२सनाम जो ॥  
 आनी तिय भोज१९१२कुमार दूजी अभिराम जो ॥ ५१ ॥  
 पंचानन पुत्रिय पट्टे रठोर जु छप्पनी ॥  
 जसकुमारि१९१३सु भोज१६१२कुमार तीजी३परनी जनी ॥  
 मालदेव मरुपतिसुत रामसिंहकी सुता ॥

१ अत्यन्त रूपवान् रत्नाड संश्रितापन का स्नेह इनहीं करता ॥ ४७ ॥ २ लिखें ॥ ४८ ॥  
 ३ सूर्यमल्ल कवि वर्णन करता है सो सुनो ७ कर्मध्वज (राठोड़) आहोर के पति  
 की कन्या ॥ ४६ ॥ ५० ॥ ८ कहते हैं ९ दुलह ने १० दान के समुद्र का ११ थाह  
 लिया १२ सुन्दर ॥ ५१ ॥ १३ चतुर १४ छप्पन देश की "ईडर के देश को छप्पन

जो व्याही भाग्यवती १९१४ चुन्थी ४ गुनसंजुता ॥ ५२ ॥

पुत्रि भल्लसिंहकी सु लालकुमरि १९१५ पंचमी ५ ॥

मानकुमरि १९१६ खदिराट गजेससुताही छमी ६ ॥

तनया बलकर्णकी अभिजनकुमरि १९१७ तौमरी ॥

पट्टनिपुर पहुँचि वीर सप्तमी ७ यहै वरी ॥ ५३ ॥

भोज १९१८ हिं पुनि इम छ ६ व्याह व्याहि रु अब भूपती ॥

सत्त ७ हि दिय व्याह रायमल्ल १९१९ कुलजा सती ॥

विक्रम भुवनांगवंस द्रौपदि १९१२ तनया दई ॥

इम चालुक पितृल तिहिं रंगकुमरि १९१२ अप्पई ॥ ५४ ॥

कृष्णकुमरी १९१३ तीजी ३ कछवाह कुंभकी कनी ॥

जिम चौथी ४ अग्रकुमरि १९१४ कुम्भ अचलजा जनी ॥

कावंधिय राजकुमरि १९१५ चंद्रसुता पंचमी ५ ॥

छत्रकुमरि १९१६ चंद्राउति अचलकी सुता छमी ॥ ५५ ॥

सप्तम ७ सीसोदनी सु रामसुता रुक्मिणी १९१७ ॥

गहि क्रम ए दुवर छ ६ सत्त ७ सुत त्रय ३ बिबही गिनी ॥

जंपहि अवसर समस्त संतति इनकी जथा ॥

करि हित प्रभु राम २० ३१ ४ सुनहु संभव पहिली कथा ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

पुत्रत्रिक ३ हिं इम व्याह पट्ट, अवनि विभागहु अप्पि ।

रुचिर कनी उपयम रचिय, थान लगन २ वर थप्पि ॥ ५७ ॥

लालकुमरि १९१२ मध्या २ ललित, मदनकुमरि १९१३ लघु नाम ।

ए कन्याभावहि उभय २, बिनु असु किय विधि बाम ॥ ५८ ॥

इन दोउ २ नसन अग्रजा १, कन्या पूरकुमारि १९११ ॥

कहते हैं और इस छप्पन का थोड़ा सा भाग उदयपुर और डुंगरपुर के अधि-  
कार में भी है ॥ १ चौथी ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ २ राठोड़ी ॥ ५५ ॥ ३ कहेंगे ४  
समय पर ५ सब ६ सन्तान को ॥ ५६ ॥ ७ विवाह ॥ ५७ ॥ ८ सुन्दर ९ कन्या

सुरजन के सन्तान का विवाहना] पट्टराशि-अष्टमयुख (२२९२)

व्याहन नृप-संचय विविध, सह महं दिन्न प्रसारि ॥ ५९ ॥

॥ घनाक्षसे ॥

जोधपुरभूप कीनों पंचम उदयरंपापी भाख्यो भू विहीन चंद्रसे-  
न१ताको जेठो भात ॥

ताके उग्रसेननाम पट्टपकुमार हुतो बुंदीपति ताहि न्यौतिबुल्लयो  
बहु लै बरात ॥

भोज१६११वारी सोदर स्वसा जो पूरकुमारि १९११ सो उचित  
सुदाय अपि ताकैहँ विवाही तात ॥

स्वीय आरतीके नेग सासूसों छुराइदीनों मुर्जन१६०११पुरोहितन  
तवैतँ मिल्योहीजात ॥ ६० ॥

चौथो१४चंद्रसेन१जो भाख्यो रामसिंह१भाई भाग्यवती१९११४ ता-  
की धियँ चौथी१४तिथि व्याहो भोज १९११२ ॥

पीछें कहि आये सो उदंत रु इहाँतो इम कन्या उग्रसेनही वि-  
वाही भूप अति भोज ॥

दीनों आयु अवधि स्वकन्याकाँ सुरथपुर कीनों जसविदित वि-  
वाहत महत सोज ॥

पीछें कर्मसेन१कन्ह२आदि सुत ताके भये भागिनेय भोज १९११२  
के किरावन अरिनि फोज ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

इम विवाहि कन्या अधिप, सह दुल्लह दियँ सिक्ख ।

रस बहत दुव२दिस रह्यो, त्याग१असन२दुव२तिक्ख ॥ ६२ ॥

सुत पट्टप सामंत१८१११को, बलकर्षा१८८११जु अधिवीर ॥

भुजनगरी१तिहिँ सह विभव२, धरनीपति दियँ धीर ॥ ६३ ॥

कुनपु१रूप२जेठो कुमार, दूदा१९१११सूर१उदार२ ॥

यन में ही मरगइ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ १ अष्ट दहेज देकर २ अपनी ॥ ६० ॥ ३ पु-  
र्वा ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ४ राजा ने ॥ ६३ ॥ ५ शरीर से छुल्ल

पितरभक्तकुलधर्म पटु४, अर्चनी१जसरखवार५ ॥ ६४ ॥  
 तदपि जानि दुभगातनय, राक्ष्यो सुभगाँ रंग ॥  
 भूप न रक्खै भूपनहु, इच्छहु याके अंग ॥ ६५ ॥  
 रजतकेहु भूखन रहित, बाजि१रु स्वैर्धाहि बखर ॥  
 अनुजनेसम नहि आदर३हु, सुवरन खचित न सख ॥ ६६ ॥  
 दुजनसल्ल१९१।१दुर्विध दसा, पट रहि तदपि प्रसन्न ॥  
 अनय न चितै कदहु यह, वंसु व्यय विरह विपन्न ॥ ६७ ॥  
 पै याको बुंदी२पुरी, दिय सह पट्टनि३दंग ॥  
 यातै अब कासी१अधिप, मंडै रहन उमंग ॥ ६८ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो पञ्चराशौ वीतिहोत्रवसु  
 धेश्वरबीजव्याख्यानबीजहृद्वाधिराजस्थिपाल १५५ वंशयानुवंश्यविहि  
 तवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे दिल्ली  
 देशाहुन्द्यागतसज्जसेनसुरजनस्य गुडवानवारीदुर्गावरणा १ आवरणा  
 युद्धव्याकुलशरणागतगौडराजसकबरयवनेन्द्रान्तिकमानीय सुरज-  
 नस्य तदर्थतदुर्गदापन २ एतत्समरपारितोषिकद्विपञ्चाशत्प्रान्तप्राप्त्य-  
 नन्तरं वाराणासीमासाद्य सुरजनस्य रावराजापदप्रापणा ३ कनिष्ठा-  
 १ पिता का भक्त २ भूमि की ॥ ६४ ॥ ३ हुहागिन का पुत्र ४ सुहागिन के रङ्ग में  
 रचा शराजापन का चिन्ह एक भी नहीं रखता था ॥ ६५ ॥ ५ अल्पमूल्य के वस्त्र  
 ७ छोटे भाइयों के समान ही उसका आदर नहीं था = स्वर्ण में जड़े हुए शस्त्र  
 नहीं थे ॥ ६६ ॥ ९ दरिद्रता में १० धन के खरब के विरह से आपदा से पीड़ित  
 था तो भी अनीति का स्मरण नहीं करता था ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
 वंश वर्णन के कारण हृद्वाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं  
 के कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुरजन के चरित्र में  
 सुरजन का दिल्ली से बुन्दी आकर सेना सभ्रकर गुडवान में वारी गढ़ को  
 घेरना १ उस घेरे के युद्ध से व्याकुल होकर शरण आये हुए गौड़ों के राजा  
 को बादशाह अकबर के समीप लेजाकर सुरजन का वह गढ़ पीछा उसीको  
 दिलाना २ इस युद्ध की प्रसन्नता के दान में यावन परगने और काशी का नि  
 वास पाकर सुरजन का रावराजा पद पाना ३ सुरजन के छोटे पुत्र आज के पुत्र

त्मजभोजस्य रत्नसिंहाख्यं सुतजन्माकर्णनेन यवनेन्द्राज्ञया सुरजन  
स्य बुन्द्यागमन ४ बुन्दीनगरेऽर्जुनपत्नीसुरजनजनन्योः कासारमन्दि  
रप्रतिष्ठाकरत्नानन्तरं सुरजनसुतासूनुपाणिपीडनसूचन ५ कुरूपदुर्भ  
गापुत्रहेतोर्ज्येष्ठकुमारदुर्जनशाल्योपरि सुरजनस्याप्रसन्नत्वभक्षण ६  
मष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥ आदित एकनवत्युत्तरशततमो मयूखः ॥ १९१ ॥

॥ ग्रायोत्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वारीगढ जयपै बनी, वावनपरगढ बखसीस ॥

अदेरुइतअदेरुइहि उतर, बंटिलये बुंदीस ॥ १ ॥

ग्रामक सह कासीशनगर, मिल्यो इजाफामाहिं ॥

यातै तह रहिवे अधिप, अब मन चिंतन आहिं ॥ २ ॥

॥ मनोहरम् ॥

वावनपरदये जे देस तिनमें छ सात गढ विमुखन दाविराखे ते-  
हू साहनै दये ॥

सवहि लये ज्यों फरमानमें लिखाइ नृप त्योंही काढि विमुख  
स्वकीय करि ते लये ॥

खीचीशरायमल्लहिं फिराऊ सो समुक्ति मऊशताकी राजधानी  
दैन अक्षर जवै भये ॥

भूप तव भ्रातनमें भेद न उचित भाखि गो नटि मऊशपै ताके  
वर्णी बदलेगये ॥ ३ ॥

रत्नसिंह का जन्म सुने पीछे बादशाह से विदा लेकर सुरजन का बुन्दी आना ४  
बुन्दी में अर्जुन की स्त्री और सुरजन की माता के तालाब और मन्दिर की  
प्रतिष्ठा हुए पीछे सुरजन के पुत्रों के विवाहों की सूचना और सुरजन की पु-  
त्री के विवाह का कथन ५ कुरूप और दुहायन का पुत्र होने के कारण बड़े कु-  
मार दुर्जनलाल से सुरजन के अप्रसन्न होने के कथन का आठवां ८ मयूख स-  
माप्त हुआ ॥ और आदि से १९१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ ग्रामों सहित २ अधिकाई में ॥ २ ॥ ३ अक्षुओं ने ४ अक्षर ॥ ३ ॥ ४ ॥

बुंदीके समीप हिंगुलाजगढ १ साहाबादरमालपुर ३ टोडा ४ टोंक ५  
रामपुर ६ मानिये ॥

सेरगढ ७ केकरी ८ सिरोह ९ बरवाडा १० बालि बालाभेट ११ खाताखे-  
री १२ भेलसा १३ वखानिये ॥

खंडारि १४ रु. मल्लारना १५ चैनपुर १६ बारी १७ खैरी १८ रैनगढ १९ सिं-  
घोली २० रु. भैसरोर २१ जानिये ॥

केथोली २२ रु. साढोरा २३ गुगौर २४ पुनि खल्लीपुर २५ प्रीतसह आग  
र २६ छबीस २६ पाहिये ॥ ४ ॥

कासी १ के समीप \* प्रांत प्रथित छबीस २६ पाये जानै जिते नाम  
तिनहूके अवधारिये ॥

गढ चरनाल १ मांडा २ रामगढ ३ सैनपुर ४ सैदाबाद ५ भबलपूर ६ आ-  
वर ७ निहारिये ॥ ५ ॥

कोटापतिभीम १ ९९ १ रावराजा बुधसिंह १ ९७ १ सुद्धै बुंदी लूटि  
लेखालय लेख सब लेगयो ॥

जह सह नाम फरमान इन देसनको जाइ सरवरस साथ कोटा-  
गढमें ठयो ॥

मागधन कल्पित कितेक लिखि दीन यात सखिखसह पायो ति-  
न्है मन कहिये भयो ॥

कासी १ बिनु हाजरी इजाफा सब ग्रामनसों तहाँ रहिये को नृप  
निधम अबै लयो ॥ ६ ॥

रानी मध्यमा २ जो सुर्जन १ ९० १ कै कनकवती १ ६० १ दुर्गापुरी ता-  
कै तँह ताल १ तिहि निर्मयो ॥

सो कनकसागर १ कहावत अबहू ख्यात राम २० ३ ४ नरनाह देखो  
तवको खन्पांगयो ॥

\* प्रदेश १ प्रसिद्ध १ सुनो ॥ ५ ॥ २ दफतर लूट कर ३ रहा ४ बढ़याभाटों ने  
५ सूटे ६ साची सहित ॥ ६ ॥ ७ तालाव बनाया ८ हे राजा रामसिंह

सुरजनका ५२ परगनों में से कुछ बांधवों को देना पठराशि-सप्तममयूख (२२६६)

सो मानी बनिक बेनीदास १ रु मथुरादास २ अधिक अमात्य जु-  
गश्नृपसों करघो नयो ॥

दिल्ली होइ कासी रहिवे पर प्रधान कीनों नूतन अमात्य जुगर्स  
ग यहही लयो ॥ ७ ॥

पट्टनि १ सहित बुंदी २ दूदा १ ९१ १ कौं दई बिचारि लाखैरी रु खटपु-  
र २ भोज १ ९१ २ कौं बिचारिकैं ॥

पलहायथे १ सौं साँगोद २ दोन्ही शयमल्ल १ ९१ ३ हित अप्पन उचित  
यातैं कासी धिय धारिकैं ॥

आगैं भो अमात्य जाजपुरके मुकामन जो सेवराके भाखैं भावी  
नृपहिं निहारिकैं ॥

देसमें सो नारायन बनिक खटोर राखि लीनैं संग नूतन अमा-  
त्य दुव टारिकैं ॥ ८ ॥

उभय २ अमात्यन निवेदी नृपतैं यों कासी रहिवोही आयु अवधि  
—बिचारयो तो ॥

छाया सम संगी अवरोधन १ अनुग २ आदि संग चलिहैही दिल्ली पंथ  
किम धार्यो तो ॥

भिन्न मग स्वीयन पठैवो पहिलैं जो होइ स्वामिबिनु काहु नयो  
अमल निवार्यो तो ॥

माँडा १ दिक दुर्ग लाह राह रुकि जैहैं हाहा हैहैं लिख्यो हुकम  
हजूरको हु हारयो तो ॥ ९ ॥

पहिलैं पधारि कासी अमल जमाइ यातैं अंतेउर १ आदिक ध-  
नीके धाम धरिये ॥

स्वामि अनुरागिनी प्रजाहू सँरिहै ही संग ताकों बास विहित वि-  
सास दै वितरिये ॥

१ नवीन ॥ ७ ॥ २ बुद्धि से ॥ ८ ॥ छाया के समान साथ रहनेवाले ३ जनाना और  
सेवक आदि ॥ ९ ॥ ४ जनाना ५ साथ चलेगी ६ उचित ७ दान करो

माँडाशमुख जो न फरमान मानै ताको जीति आन एक अपनी  
अमोघ अनुसरिये ॥

पीछें पातसाहकी पधारि पीछे प्रीति पहु इच्छित अनहेलों संने  
ह सेवा करिये ॥ १० ॥

————मानि अरजी यौ जवनेसकों दै सीख लौ सुहायो जस  
बागके बगरमैं ॥

अंतहपुरादि ले स्वकीय सब संग चलयो दायादैन देकै देस  
जगरमंगरमैं ॥

बुन्दी तजि द्वैसत २०० गृहस्थ पुरवासी गये सबन निवाहि भक्ति  
लौ गर सगरमैं ॥

सुरजन १९०१ जाइ स्वामी भो स्वकीय अण्डे अंटिति हुकाइ  
विश्वनाथके नगरमैं ॥ ११ ॥

पीछें चरनादिगढादि चउबीस २४ प्रांत कासीके समीप उतर  
पाये अपनाइकैं ॥

रामगढा माँडाशदुवशदस्युन दये न दावि दीनाँ तँह वनीदास १ स  
चिव पठाइकैं ॥

खो हा लहु जाइ लौ दिन त्रय ३मैं रामगढ १ दूजे २ दुर्ग गोलन  
को गजैर लगाइकैं ॥

सुरजन १९०१ के धीसख पलेटा पृतनाको डारि खाँडीके खि-  
ल्हार लयो माँडा २ गरदाइकैं ॥ १२ ॥

१ खाली नहीं जावे ऐसी २ चाञ्छित समय पर्वत ॥ १० ॥ बाग के ३ चगड़ (चोक) में ४  
दायभाग पानेवालों को ५ चमकता हुआ ६ गैल (साथ) में ७ सगड़ (शकट),  
“यहां सगड़ शब्द एक वचनांत है परंतु ऊपर कहेहुए दो सौ गृहस्थों के  
संबंध से यह वचनांत जानना चाहिये” ८ मालिक हुआ ९ काशी में अप-  
ने अण्डे १० शीघ्र खड़े करके ॥ ११ ॥ ११ शत्रुओं ने १२ निरन्तर प्रहार १३  
मन्त्री ने १४ सेना का १५ खत के खिलाड़ी ने ॥ १२ ॥



सुर्जन का काशी में राज्य करना] पट्टराशि-नवममयूख. (२३०१)

वज्रभर गोलनको सोलह<sup>१६</sup>दिवस \*बूढ़ि दावी द्युति कल्पके  
धुमंडेघोर घनकी ॥

तोरन<sup>१</sup>वरन<sup>२</sup>अट्ट<sup>३</sup>गढके गिराइ अधिरोहिनी भिराइ माँहि पैठो  
माँडि मनकी ॥

हुंगी किते दाटि करवालन कितेक काटि पाटि जस खाटि यों  
वडाई वीरपनकी ॥

सो मानी सचिव माँडा<sup>२</sup>सों मानी फिगइ आयो सलहम<sup>१७</sup>दिव  
स दुहाई सुर्जन १९०१ की ॥

ईसपुरी अंतिक छवीस<sup>२६</sup> ही परगनाँ यों अमल जमाइ अप-  
नाइ चरौचरको ॥

थानथान थानाँ धरि आपुनो उचित इत मध्यभाग कासीको  
लयों दे मौल पटकों ॥

नाम राजमंदिर १ बनाइ तहाँ धाम निज प्रासादन चहुँ ४ धों  
वसाइ परिकरको ॥

राखि बीच अवरोध अमित अनीक औसैं आराधन आयो अव  
आप अकबर ३७१ की ॥ १४ ॥

सौध १ नैव रचन उपक्रम लगाइ सिलपी चिति रचनोँ में मति-  
मान चुनि चाहसों ॥

वेल २ विबुधालय ३ निपान ४हु बनाइबेको विविध विदेग्ध रा  
खि राज रुचि राहसों ॥

संगरको सामग्री समस्त चरनाल सजि सेना सविसेस देस बा  
वन ५२ के लाहसों ॥

\* दृष्टि करके १ कान्ति २प्रलय के ३सुरज ४निसरनी लगाकर ५किछवालों को  
६ वैश्य जाति विशेष ७ मानवाला ॥ १३ ॥ काशी के ८ समीप ९ चर और  
अचर सब को अपना करके १० महलों के ११ वासों और १२परमह को १३ पट्टन  
१४ सेना के बीच में जनाने को रखकर १५सेवन करने को ॥ १४ ॥ १६ महल १७  
नवान १८ आरम्भ १९ सिलावट २० चुनावट (महल) बनाने में अनुभव रखने-  
वाले २१ प्राग २२ मन्दिर २३ जलाशय २४ चतुर २५ बुद्ध की ॥ १३ ॥

कासीअधिराज इस सुर्जन १६०११ विलासी वीर आइ पुर आ-

गरा मथामें मिल्यो साहसों ॥ १५ ॥

आगैं लोन आगरतैं ग्राम आगरा जो कीनों नैर गढ बांदलसो

सिकंदर २८११ साहनैं ॥

सो स्वनाम अंकितकों अकबर ३७११ साह बडो विधिसों बसायो

अब स्वर्ग सुखमा हनैं ॥

जमुना तटीपैं जथा जा समैं बनतहो जो वहाँ यों जयनेस ही तहाँ

यों बगवाहनैं ॥

आपुनी अपुव्वआठअयुत ८०००० अनीकिनीसों दिल्ली नर-

नाह १ मेढ्यो कासीनरनाहरनैं ॥ १६ ॥

तबहु कहाई अैसें सुर्जन १९०११ तैं सुलतान आगराके अंदर रहो

धवल धाममें ॥

तदपि न मानि रहि बाहिर कहाई ताहि माँहि बास बंधन बनै-

गो द्रुत काममें ॥

साधिहो समीप रहि सासन निसीथहुको सोही स्वीकराइ स-

सुझाइ सोही सौममें ॥

लालकोट तोरनलों राहतैं बजत बंन साहतैं मिल्यो सो एक १

आयुधसों आसमें ॥ १७ ॥

कहत कितेक बहराम सब अंगेमिकैं आगैंहो बजीर बयवाला

अकबर ३७११ को ॥

पहिले १ बजक (ज्वारी) बजाने के आज़र के कारण जिस ग्राम का नाम आगरा था जिसको पढ़ाकर गिकन्दर ने पुर बनाया उसको अपने नाम से जाना जावे ऐसा अकबर ने विधि पूर्वक बताया जो अब स्वर्ग को २ परम शान्ता को मिटाता है ३ जमुना नदी पर ४ सेना रो ॥ १६ ॥ ५ आधी रात्रि को श्री १ मिलाप में ७ लालकोट के दरवाजे तक नगारा बजाता हुआ ८ बड़ी सभा में एक दाख लेकर मिथा ॥ १७ ॥ बहराम ने सब को ९ दवाकर

तानें छलघात हनि सांढकों चह्यो तखंत सो सुनि भज्यो सिसु

डरायो काल डरको ॥

आगरालों आत खानखानाँ बहराम सुब जाइकैं मिल्यो ले सि

र काटि पाप परको ॥

जाइमिले श्वीय सबही जहाँ तहाँ तबतैं नियत बढैवो बन्ध्यों

आगरा नगरको ॥ १८ ॥

कोबिदै बजीर खानखानाँ आगराही करि पूछि प्रिय अध्याप-

क दूजे बहरामको ॥

स्वामी बनि दिल्लीआइ प्रकृति सुधारिसब नीतिनिपुनत्वकैं

निकारयो निज नामको ॥

मोहिकैं प्रजामन स्वकोस १ देस २ दुर्ग ३ सेना ४ जोग १ खे-

म २ प्रेर सुंघि सचिव छ ६ जामको ॥

आनि आन १ अंडुकैं २ मैं राज्य १ इभ २ साइ अैसे कंदुकैं

कुमार ज्यो उठायो कर कामको ॥ १९ ॥

अजनैकी विद्या उपयोगिकी अधिक जानि आदरी बढै हू खो-

लि स्वतंस खजानाँसे ॥

बानिज टोडरमल्ल १ नरहरि १ गंग २ बंदी सूरि १ कवि २ नाना

सभ्य पावे सुधापानाँसे ॥

विप्र पंच गौडनमैं कान्यकुब्ज वीरबल १ बाँधैं जो विहासैं १

प्रतिउत्तर २ मैं बानाँसे ॥

१षादशाह को छल घात से मारकर तखत लेना चाहता २निश्चय तभी से आगरा  
 गया ॥ १८ ॥ ३ पण्डित ४ पहानेवाले ५ राज्य के अंगों को सुधारकर ६ नीति  
 की निपुणता से ७ अपना खजाना ८ उपाय ९ क्षेत्र में १० चतुर सचियों को  
 दिन रात्रि के आठ पहर में छः प्रहर तक प्रेरणा की और अपनी आण रुपी  
 ११ सांकेतिक में राज्य रुपी हस्ती को लाकर राज्य कार्य को ऐसा उठाया कि जैसे  
 बालक १२ गेंद को उठाता है ॥ १९ ॥ १३ आर्य लोगों की १४ सम्पूर्ण १५ ह-  
 सी के १६ पीछा नहीं हठने का चिन्ह

अजनकी १ आपुनी २ उभै २ ही अपनायें उभै २ स्वामी बुंध  
आप १ से वजीर खानखाना २ से ॥ २० ॥

पंडित१ रु मोलवा१ समान जानै जाकी प्रीति अजनकी १ विद्या  
तऊ मन अति आकैं ॥

मिच्छनतैं पहिलैं गयो घटि द्विजन मान एधमान सो अब स-  
नाथ सुखमाँ धरैं ॥

स्मृति१ श्रुति२ नीति३ आदि आसय सबै समुक्ति काम१ अर्थ२ तं  
बहु प्रमान प्रभु एकरैं ॥

साहकों सुहायें तिते तदपि समाँजो१ मूरि२ जदपि निमाजी आदि  
जवन किते जरैं ॥ २१ ॥

कलमाँ१ निमाज२ रोजा३ आदि अपनो जो कर्म साधि अर्थसहि-  
त कुरान२ मान कहतो ॥

आखरी जभाँके मजहबके अकाम१ अर्चि सासनों सकाम२  
हु फकीरनकी सहतो ॥

विद्यामैं विसेस जानि तदपि स्व बुद्धिवल चित्त अज्ज मूरिनैं स  
वित्त१ मित्तैं२ चहतो ॥

धौतैपटधारक क्रिया अर्थाधि आप्लैंवतैं कच्छाँ एक१ करि कि-  
तैकैकाल रहतो ॥ २२ ॥

नित्य जगि नित्यहिनिवेरि१ मँडैं मूलमंत्र२ ज्योहीं तसैंलामलो सबै  
सचिव जातैपैं३ ॥

१ आर्यों को और यवनों की दोनों धियाओं को २ चतुर ॥ २० ॥ ३ आर्यों की धिया का अधिक आदर करना था ४ बढ़कर ५ परम शोभा ६ आज्ञा ७ समानद = पण्डित ॥ २१ ॥ १ महीना के अन्तिम शुक्रवार के दिन अपने भर्म के कार्य १० कामना सहित करना था ११ पूजन करके फकीरों की आज्ञा को कामना सहित सहन करना १२ आर्य पण्डितों को भन सहित १३ मित्र था- दया था १४ धानी पण्डित १५ कार्य की अवधि पर्यंत १६ स्नान से १० एक कादो १८ कितनेक समय तक रहता ॥ २२ ॥ १९ सन्नाम

निज पर देसनकी सूर उदै सुदि सुनि ४ विविध नियोगे दै सुनत  
तिन ज्ञात पै ५ ॥  
रीति के नई पुनि प्रजा सुख निमित्त रचै दनीति दै नियोगिन ७  
गिनै न श्रम गात पै ८ ॥  
राज्यलाखि ९ एक १ भोजी १० सूरिन समाज रहि ११ जाम जुग २ सो-  
इ ११ जगै पहर १ के प्रात पै १३ ॥ २३ ॥  
जानै पच्छर्पात व्यवहारमै न कहूँ जान्योँ सर्वकोँ सदाही साव  
धान सरसायो २ जो ॥  
सिधिलभयो न गुनवाननको जाके संग ३ कोऊ मतनिंदक न  
कबहु कहायो ४ जो ॥  
भीतनको त्राता ५ सुभकाज अदिलंबी ६ भयो लोकनकोँ हेलैन  
निवारि मग लायो ७ जो ॥  
ईश्वर उपासक ८ अलोलुप ९ सदय १० सूर ११ दाता १२ मिले दुखहु  
प्रसन्नमुख १३ पायो १४ जो ॥ २४ ॥  
दिल्ली १ अरु आगरा २ उभै रही राजधानी राखि नीति १ धर्म २ प्रेरत  
सगह्यो नरनरनै ॥  
दैदै जोर अमल जमायो नये देसनमै कोसैनमै आवत दयो न छेह  
करनै ॥  
चरनै निहारयो निज १ पर २ न जथा चरनै सरनविहीन हैरहे के  
दीन सरनै ॥

१ खबर २ आज्ञा ३ समूह पर ४ आज्ञा पालन करनेवालों को नीति देकर  
५ शरीर पर श्रम नहीं जानता ६ दिन में एक समय भोजन करता ७ पण्डितों  
की सभा में रहकर दो प्रहर शयन करके एक प्रहर रात्रि बाकी रहे उठता  
॥ २३ ॥ ८ पच्छर्पात उदरे हुआ का ९ रत्नक १० शुभ कार्य में दिलंब नहीं करने  
वाला हुआ ११ लोकों के अपराध को मिटाकर मार्ग में लाया ॥ २४ ॥ १२ ख-  
जानों में हांसिल ने छेह नहीं दिया अर्थात् हांसिल निरंतर आता रहा १३  
हलकारों से अपने और पराये को जाना १४ चरणों में आने के बिना ही दीन

पहिलो छत्तीस३६ पातसांइन न जैसी पाई औसी एक अदल ज-  
साई अकबर३७११ नै ॥ २५ ॥

सीकरी१ फतेपुर२ मुकामन रहत साह जाग्य वय जानि रु प्रमा  
नि पैरिचै परै ॥

दूदा१९११ भोज१९११ बुंदी१ खटपुररै तुलाइ द्वैरही भूप हौ  
मिलाये जाइ कुलर सभाभरै ॥

मुख्य सख्ख१ वस्त्ररूप३ भूखन४ न मानि मुख्य भोज१९११ रहि  
मिल्यो यों पहिलौ१ खिलत भा करै ॥

पीछें मिल्यो दूदा१९११ सो लयो पै पहिस्थो न पेलि पूछें कह्यो  
इष्टहिं बडाइ पहिरयोकरै ॥ २६ ॥

स्यामरंग१ वांकीताक२ साधारन वस्त्र३ सख्ख४ दीस्यो जो१ अमुख्य  
यों न ताहि पहिलें दयो ॥

जानि मुख्य आदर सुहागिनितनूजलुको नायक जनाइवैसैं मौ-  
न नृपहू लयो ॥

सीख लैकें पीछें स्वीय सिधिरं सिधारतहु निरखि बिलोम दूदा  
१९११ अनाखि रु नौ नयो ॥

योहिं चलयो जानी स्तब्ध जानिहसि साह याकों भाख्यो खान  
लकर १९११ सुनाम तयतैं भयो ॥ २७ ॥

राजा रह्यो हांजरि कुमार २ चले डरनकों भोज १९११ रह्यो पीछें  
तव तेसी सोधि भयतैं ॥

लोग शरण में रहे अर्थात् दान लोग दूर रहने पर भी निर्भय रहे ? इत्यादि ॥ २५ ॥ २ जानकारी में आवें, राजा, वस्त्र, रूप और शृणु में बड़े कुमर को मुख्य नहीं जानकर भोज का ३ खिलत पहिले लिटा ४ आन्ति ५ बडाकर, पछने पर कहा कि पहिले ६ इष्टदेव को पहिनाकर पीछे पहिने हैं ॥ २६ ॥ ७ बडा नहीं दीया इस कारण पहिले इसको नहीं दिया ८ सुहागिन का पुत्र जानकर ९ पादवी को सूचना करने में राजा सुरजन भी चुपचाप १० लोगों में ११ यह उलटी रीति देख कर १२ क्रोध करके दूदा ने खाना नहीं की १३ अन्त (अभिहित) जानकर बाद बाद ने इसको १४ लज्जित कहा तभी से इसका नाम लफड़खान हुआ ॥ २७ ॥

जान्यो मोहि लैं दयो सुहि असह जानि अग्रज हनैं ही \* छद्म  
धातके अनयतैं ॥

यातैं पहिराइ अनुगतकों खिलंत एह आप बेस ओर करि जो  
बचोतो अयतैं ॥

संकल्प असों कै गनेस जोइसीको स्वीये खिलत उतारि पहि  
रायो स्वीय सयतैं ॥ २८ ॥

श्रीगोड़ १ रु सेवारे २ उदीर्घ ३ तिम सहोदरे ४ कासिके प्र-  
संगकरि बुंदी बसते भये ॥

पूरकुमरि १९११ के ससुगलयप्रसंग परि ठान लै इहाँही आइ  
विष्णुनगरे ५ ठये ॥

अधिप विवाहो रानी मध्यमा २ कमकवती १९०१२ दान जँह  
सुर्जन १९०११ विमान सबकों दये ॥

बाँसवहालेको लै प्रसंग चउबीस ६ विप्र असैं ए गनेस १ आ-  
दि बुंदीपुर आगये ॥ २९ ॥

सो गनेस १ हो तब कुमार भोज १९११२हीके संग ईरूपो छल  
माँहिं तिहिं दीरूपो दान इतही ॥

अग्रज १ विचारी अग्र भेद जननीको यातैं हेरि हिय धारयो  
नाँ पिताहू सम हितही ॥

सुरूप मानि अनुज २ न बोल्यो तिहिं लैहो मारि नानी उत  
असैं इत भोज १९११२ भयभित्तही ॥

अग्रज १ तैं दुरिवो १ विचारयो सो उचितपै याँ चित्यो बध वि-  
प्रको करैवो २ अनुचितही ॥ ३० ॥

\* छलप्राप्त करते बड़ा भाई आंगनाइस तारण १ खेचक को २ बहू अपना खिलत पादेना कर ३ आनेवाले समय के शुभ क्रमों से ४ ऐसा विचार करके ५ अपना चिन्तित अपने ६ हाथ से गणेश नाम के उपातिपों को पहनाया ॥ २८ ॥ ७ ये ब्राह्मणों के जाति भेद के नाम हैं ॥ २९ ॥ बड़े भाई ने, कृदा ने ६ छोटे को बड़ा मानकर १० परन्तु ब्राह्मण का बध विचार सो अनुचित ही है ॥ ३० ॥

वस्त्र द्विजकों जे पहिराइ भोज १९१२ दूजे २ बेस टोकिन स  
कैं को ज्यों चुकाइ चिन्ह टरिगो ॥

खारभाँहि आगैं नीलीखेतके समीप खरो पंथ रोकि दूदा १९१२  
रह्यो असो दोह परिगो ॥

आतहि निसामैं जानि हरित दुकूलवारी कौरो कठितापैं एक १  
कुत हाथ करिगो ॥

सो पै उर विद्व विप्र गिरत कंगह्यो सुनि मानी माँनी भोज-  
१९१२ तो बच्यो को रंक मरिगो ॥ ३१ ॥

भोज १९१२ की भुजा हु हनी प्राप्त बेधी एक १ भट इतर गये भ  
जि अचानक भे आनिकैं ॥

है तजि सुघायल कुमार दुग्घो खेतहीमैं दीपिकैं तैं दूदा १९१२  
सुत विप्र इत मानिकैं ॥

बुंदी भजिआयो इत एह सुनि बुंदीपति तत्थ लहि सिक्ख आइ  
उच्च स्वर तानिकैं ॥

हेलौ प्रियपुत्रको दयो तिहिं कुमर हेरि नीलीतैं सु निखरयो  
पिताही पहिचानिकैं ॥ ३२ ॥

देखत तरजि कह्यो भीरुसम क्यौतू दुग्घो भारुयो भोज १९१२  
अग्रजतैं दुरिवो भलाई ही ॥

सो सुनि सराहि विद्ववाँहु सिविकैं सुत लाजित सिविर ला-  
यो भाखि रिपु भाईही ॥

भजि उपचार कल्पे मध्यम २ कुमार भयो सादहु तथा सुनि प्रमाद

१ खाल (नाले) में नील के खेत के समीप २ दूरे वज्रोंवाला ३ वह काले रङ्ग  
वाला (दूदा) ४ भाले का ५ हृदय घेयन होने से ६ दुःख का वचन (हाय  
हाय) किया सो सुनकर जाना कि ७ मानवाला भोज तो बच गया और ८ कोई  
गरीब मर गया ॥ ३१ ॥ ९ भाले से एक वार ने भोज की भुजा को भी घेयन की १०  
भय ११ घड़े को छोड़कर १२ चिराग से १३ बुलाया १४ नील के भीतर से १५ १६  
कटे हुए बाहु से १७ पालखी में १८ डेरे में १९ इलाज से २० नैरोग्य



तपाँ पाईही ॥

कह्यो नृपतैं यो तैं जनायो बडो दूदा१९११क्यों न ताहि दैकैं  
दै तो याहि तो मो पटुताई ही ॥ ३३ ॥

चीनी हमहु व मुख्य१मध्यम२कों कियो कहत नबिनु बिसेस है  
सो रीति मनसों नई ॥

दूदा१९११हु दुबुद्धि मनतैं तो भोज१६१२कों गो मारि हमरे  
छिगाहि ठानि कानि हमरी हई ॥

पहिलैं परंतु मंतु भासैं पिता१ पुत्र२नमैं गोई रिस तातैं गई यह  
तो गिनी गई ॥

दूदा१९११हु बुलाइ इक१बेर तो बिसासि देनो भूपहि यों उपां-  
लंभि साहकै छमा भई ॥ ३४ ॥

बुंदीसहु जानि साह आसय यहै विदित दूदा१९११कों बुलौवै  
पुर बुंदी दल यों दयो ॥

इतके प्रमाद जो भई पै जानि जेठो१अब गिनिहै प्रथम१साह मं  
तुहु करयो गयो ॥

आवहु निसंक प्रीति पावहु कुमर इहाँ लावहु न संसै लाखि भा-  
वहु भलो लयो ॥

कीनोही अजानैं बिप्रपातकको प्रतीकार भ्रातक२को जातक  
को पै मन मनैं भयो ॥ ३५ ॥

पिताके निदेसपहिलैं इत बुंदी आइमारयो द्विज यातैं मृत आ-  
पुनकों मानतो ॥

उस भूल की १ लज्जा २ चतुराई थी ॥ ३३ ॥ हम ने भी ३ जाना कि मध्यम  
पुत्र को पादवी किया चाहते हो ४ अदब मिटाई ५ अपराध ६ क्रोध छिपाकर  
७ उहलना देकर बादशाह के क्षमा होगई ॥ ३४ ॥ बादशाह का = अभिप्राय  
जानकर ९ पत्र १० भूल ११ अपराध क्षमा किया १२ बेर बुद्धि १३ भाईके मन  
में बेर उत्पन्न हुआ था परंतु वह भी मिटगया है सो निःशंक हांकर यहां आ-  
जाना ॥ ३५ ॥

जानें बिनु कीनें को बनाइ प्रतिकार जथा दीनें और द्विजन  
असेस विधि दान तो ॥

तनय गनेसको बुलायो ग्रामदैवे तहाँ जोहु जड बुन्दीतें गयो  
भजि भै जानतो ॥

तातनै बुलायो अब लैसिरनिदेस ताको पुनि गोहजूर दूदा १९११  
प्रीति पहिचानतो ॥ ३६ ॥

तातके अनीकपास जातहि तुरंग तजि एकाकी असस्त्र करि  
बस्त्र बेढे करसौं ॥

प्रनम्यौ पिताको जाइ नाइ सिर पायनमें भूप सय छायो उर  
लायो नेह भरसौं ॥

पाइही खिंसाइ दूदा १९११ भोज १९१२ वहाँ बुलाइ पुनि उ-  
रहिं मिलाइ भाइ भेट्यो धाइ अरसौं ॥

आगसं छमाई पीछें लाइ नृप ओसरमें आदर दिवाइ जो मि-  
लायो अकबरसौं ॥ ३७ ॥

साह सनमान्यो दूदा १९११ जैठो भोज १९१२ हू सौं जानि  
भ्रातहु परस्पर वहाँ रिंगंध दुव २ ही भये ॥

साधि साह सेवन समी इक १ यौ सुर्जन १९०१ हु ठाम गयो  
कासी उभै २ कुमर इहाँ ठये ॥

कूरमनरेस भगवंत इतछोरयो काय मान व्है महीप दान प्रेतें  
विधिके दये ॥

उदयपुरी यौ रान उदय हु होत अस्त ता सुत प्रतापलाभ धर्म  
१ जस २ के लये ॥ ३८ ॥

विधिके प्रसाद आउवाके धरनाँतें बच्यो आढा दुरसा जो बे-

॥३६॥ पिता की १ सेना के २ घोड़ा छोड़कर ३ अकेला ४ वस्त्र से हाथ बांध-  
कर. राजा ने मस्तक पर ५ हाथ रक्खा ६ शीघ्रता से ७ अपराध दक्षमा कराके  
॥ ३७ ॥ ९ माहोंमाह (एक दूसरे से) १० स्नेह युक्त ११ एक वर्ष पर्यंत. मानसिंह  
ने आसुर का राजा होकर १२ प्रेतकर्म में दान दिया ॥३८॥ ब्रह्मा की १३ प्रसन्नता से

धि कंठ छुरिका अनी ॥

पडत, सभायैँ स्वरभंग किम साह पूछी भनी स्वाज काह्यो तोह  
को ह्यौ पहुँच्यो भनी ॥

उदय कबंध रोखि डिगहि बलायो उहाँ ताकी जवनेस तहाँ नि-  
दा रिसकैँ तनी ॥

पापी सो इतैं अवं परासु भयो जोधपुर धाम तस जेठो सूरसिंह  
सुत भो धनी ॥ ३९ ॥

दूहा १६११ भोज १९१२ दिल्ली रहे सेवन कुमार द्वैरही मानैं  
जानि सुद्धमन साहहु मँहरपैँ ॥

एतेमाँहिँ गुज्जरधरालों डर डारि इतैं साह भो जवन कोऊ सूर-  
ति सहरपैँ ॥

कोहु कहैं हो जो कुलवर्ग १ भैं कितेक कहैं ओरन २ भैं द-  
खिखनी पै दंस दै अँहरपैँ ॥

दिल्ली १ भू दवावन प्रपंचमैं परयो सो सुनि लीनी जय संघा  
साह साहस लहरपैँ ॥ ४० ॥

मेघहिँ दै लाज गाज भेरिन दराज मची फाबी फीत फीलैं  
पताका पंति फरकी ॥

१ बादशाह ने पूछा कि स्वरभंग क्यों है इसपर दुरसा आढाने कहा कि कुत्सेने काटा है बादशाह ने २ कहा कि यहाँ तक कैसे पहुँचा तब दुरसा आढाने क्रोध करके राओड उदयसिंह को समीप ही बलाया। तब बादशाह ने ३ क्रोध करके उस (उदयसिंह) की निन्दा फैलाई। वह पापी अब \* जोधपुर में ४ मरा ॥ ३९ ॥ ५ कृपा पर ६ गुजरात तक ७ अंधर पर दाँत देकर अर्थात् होठ चबाकर, जय करने की ८ प्र-  
तिज्ञा ॥ ४० ॥ ९ नगरों की मर्जना १० चडी ११ समूह १२ हाथियों पर

\* यहाँ आमेर के राजा भगवानदास, उदयपुर के महाराणा उदयसिंह और जोधपुर के राजा उदैसिंह का देहान्त एक ही समय पर होना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि उदयपुर के महाराणा उदयसिंह का देहान्त विक्रमी सम्वत् १६२८ में और आमेर के राजा भगवानदास का देहान्त १६४६ में और जोधपुर के राजा उदयसिंह का देहान्त सम्वत् १६५२ में होना इन तीनों राज्यों के इतिहासों में लिखा हुआ है।

\* अंबरमें । धावके फिराव हय लैलै आत । संवरमें नावके  
तिराव भूमि सरकी ॥

लाखन कटक मिलयो पाखन हिलोर लेत फैलत § फनी १ के  
फन२ कोल १ दह २ करकी ॥

सूरतिके लाह पर बाह लै सनाह सर्जी अैसे राह सेना चढी  
साह अकबर ३७११ की ॥ ४१ ॥

सुरजन १९०१ राखी नये लाभतैं अधिक सेना बुदीको बैरूथ  
लै कुमार जुग बरसो ॥

दूदा १९११ भोज१९१२ संगहि लये ए सुलतान द्वे २ ही संज  
सु चल्पो यों दिल्ली चापसन सर सो ॥

मगगके मिवासनको पहर करत पूगि झारि जब लोलनको  
गोलनको झरसो ॥

तीनों ३ दिस लीनों बेढि बाहिर छवीनों तोरि सूरतिमें तापी  
कोस भास दर हर सो ॥ ४२ ॥

झरसो १ हरसो २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

वासर बहु तोपन बन्यो, मृध जन मारनमूल ॥

बाँरि रह्यो सीतल १ विमल२, कछु तापी परकूल ॥ ४३ ॥

रहती बनि रन रंतिके, सो नदि आग्नि समान ॥

जनु कहती सूरति नजरि, परि पायन चहि प्रान ॥ ४४ ॥

\* आकाश में । दौड़ने के फिराव लेकर घोड़े फिर और । जल में नाव तिरै  
इस प्रकार भूमि डिगी § शेषनाम के ॥ ४१ ॥ १ सेना २ सज्जित होकर दिल्ली  
रूपी ३ धनुष से बाण के समान चला ४ मेवासों (चौर आदि के स्थानों) को  
सीधा करता हुआ वेग युक्त ५ चपल गोलों का झुड़ लगाकर ६ सूरत नगर  
में तापी नामक नदी के कोश में प्रकाश करके ७ भव मिटाया ॥ ४२ ॥ ८ बहुते  
दिन ९ मुह १० जल ११ पैले किनारे का ॥ ४३ ॥ १२ रात्रि के १३ अग्नि के  
समान होकर वह तापी नदी यह कहती थी कि सूरत शहर नजर है ॥ ४४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदराशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे सनिश्चयज्ञातसुर्जनद्विपञ्चाशत्प्रान्तप्राप्तिगणन १ बुन्दीप्रस्थितसावरोधवाराणासीप्राप्तसुर्जनस्य सैन्यसहितस्वामात्यप्रेषणेन रामदुर्ग-मांडाप्रान्तविजयीकरण २ आगरासंज्ञाप्राप्तिद्विकारणात्तद्वृद्धि कथनेन सहाकबरयवनेशगुणावर्णन ३ स्वायुजभोजार्थयवनेन्द्रदत्त पारितोषिकप्रथमप्राप्तिनिमित्तभोजवधोत्सुकदूदाकृतभोजभ्रमहेतुक-गणेशज्योतिर्विद्वनन ४ कनिष्ठसूनुपट्टपचिकीर्षुसुर्जनस्य यवेनन्द्रोपालम्भप्राप्तिहेतुकपट्टकुमारदूदाबुन्दीसन्मानयनतन्मन्तुक्षमापन ५ आढागोलदुरसाचारणप्राप्त्साहितयवनेन्द्रकृतोदयसिंहधिकारणा ६ आमेरराजभगवन्तदास-उदयपुरमहाराणादयसिंह-योधपुरेशोदयसिंहपरासुत्वसूचनानन्तरयवनेन्द्राकबरससैन्यसूरतपुरवेष्टनं नाम नवमो मयूखः ॥ आदितो द्विनवत्युत्तरशतंतमः ॥ १९१ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन को वावन परगनों के मिलने में निश्चयता पूर्वक जानेहुओं की गणना १ बुन्दी से जनाना सहित काशी गये हुए सुर्जन का अपने मन्त्री को सेना सहित भेजकर रामगढ़ और मांडा नामक परगनों को विजय करना २ आगरा नाम के प्रसिद्ध होने के कारण सहित आगरा नगर की वृद्धि के साथ अकबर बादशाह के गुण कथन ३ अपने लघुभाई भोज को बादशाही खिलत अपने से पहिले मिलने के कारण भोज को मारने की इच्छावाले दूदा को भोज के धोखे से गणेश जोशी को मारना ४ छोटे पुत्र को पाटवी बनाने की इच्छावाले सुर्जन का बादशाह से उपालम्भ पाने के कारण पाटवी पुत्र दूदा को बुन्दी से बुलाकर उसका अपराध क्षमा करना ५ आढा शाखा के चारण दुरसा का बादशाह से राजा उदयसिंह को धिक्कार दिलाना ६ आमेर के राजा भगवन्तदास, उदयपुर के महाराणा उदयसिंह और जोधपुर के राजा उदयसिंह के देहान्त की सूचना ७ गुजरात में सूरत नगर में शत्रु के प्रबल होने की सूचना पाने पर बादशाह अकबर का मेला सहित सूरत नगर को घेरने के वर्णन का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ वानवे १६२ मयूख हुए ॥

## ॥ दोहा ॥

जगि तोपन सूरति जरत, उछरत झरत अलात ॥  
 पंथ बरत १ अडन २ परत, जोध तारत रुकिजात ॥ १ ॥  
 जलमंतुन पुर डिग जब मु, छारयो आतप छिजि ॥  
 दिव परपकखी अब दहन, धामहु रहन न धिजिज ॥ २ ॥  
 जान्यो सूरति साह जब, परे दनिहे अब पेठि ॥  
 जब संगेयभय कडिजुख्यो, वय अतिरप हय बेठि ॥ ३ ॥  
 निमसेनासह निकलख्यो, साथे मन इन साह ॥  
 इनहु भई तोपन अटक, लैन रटक असिताह ॥ ४ ॥  
 वीर हाक वीरन वजी, धीरन अभिमुख धाव ॥  
 मिलि तीरन की रन मिले, दल चौरन असि दाव ॥ ५ ॥

## ॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

असैं सूरति साह चाह अपनी देखो नृया दुर्गतें ॥  
 केते चाँसर तोप जंगे करिकैं सो हाँ कव्यो सज्जोदी ॥  
 दिखोकेहु वल्लेख देखि दृढता ताकी सराही तहाँ ॥  
 किल्ला तो मरि दें परस्पर कह्यो लखी इहाँ लज्जोदी ॥ ६ ॥  
 वलैं होत लगीं बिलंबबहु सो पैं यों प्रसंसा पेंगे ॥  
 पशुमापैं जितनैं निरौड उतरके लोहा नखेंवें लगे ॥

१ जगि २ सूरति ३ जरत ४ उछरत ५ झरत ६ अलात ७ पंथ ८ बरत ९ अडन १० परत ११ जोध १२ तारत १३ रुकिजात १४ जलमंतुन १५ पुर १६ डिग १७ जब १८ मु १९ छारयो २० आतप २१ छिजि २२ दिव २३ परपकखी २४ अब २५ दहन २६ धामहु २७ रहन २८ न २९ धिजिज ३० जान्यो ३१ सूरति ३२ साह ३३ जब ३४ परे ३५ दनिहे ३६ अब ३७ पेठि ३८ जब ३९ संगेयभय ४० कडिजुख्यो ४१ वय ४२ अतिरप ४३ हय ४४ बेठि ४५ निमसेनासह ४६ निकलख्यो ४७ साथे ४८ मन ४९ इन ५० साह ५१ इनहु ५२ भई ५३ तोपन ५४ अटक ५५ लैन ५६ रटक ५७ असिताह ५८ वीर ५९ हाक ६० वीरन ६१ वजी ६२ धीरन ६३ अभिमुख ६४ धाव ६५ मिलि ६६ तीरन ६७ की ६८ रन ६९ मिले ७० दल ७१ चौरन ७२ असि ७३ दाव ७४ वलैं ७५ होत ७६ लगीं ७७ बिलंबबहु ७८ सो ७९ पैं ८० यों ८१ प्रसंसा ८२ पेंगे ८३ पशुमापैं ८४ जितनैं ८५ निरौड ८६ उतरके ८७ लोहा ८८ नखेंवें ८९ लगे ९०

ताजी बेग मिलाइ एहु तबतो मित्रत्व मानी मिले ॥  
 ओछे अंतर देत लेत उरभे जेजे समीपी जिले ॥ ७ ॥  
 फाटे बाजि गिरै १ भिदे गज कहों लैलै तँवारे फिरै २ ॥  
 खंडाधार खिराइ हड्डि विखरै ३ के लुत्थि बुत्थी किरै ४ ॥  
 पै पै ईस हसैं रु गान बिलसैं ५ त्यों ताल दै पब्बई ६ ॥  
 ज्याँ रीभे चउसडि ६ ४ बावन ५ २ भनैं यों ए १ रु यों ए २ जई ७ ॥ ८ ॥  
 मज्भैं नारदहू बजात महती धूमैं संगनैं घनैं ८ ॥  
 लूमैं रक्खस १ भूत २ डाकिनि लैटी बंटै स्व दाई बनैं ९ ॥  
 भूमैं सीस गिरैं न ज्याँ भटनके त्यों खेल संभू तनैं १० ॥  
 भूमैं साकिनि भुंड रक्त भगैरैं अच्छे पिवैं उफ्नैं ११ ॥ ९ ॥  
 पैठे कंक १ रु गिद्ध २ चिल्ह ३ पलभैं गोदादि मेदै गिलैं १२ ॥  
 पावैं यों पल दूर पूर पसरैं मंगैं जुही ज्याँ मिलैं १३ ॥  
 कंकाली डमरू वजाइ किलकैं कंकाल संचैं करैं १४ ॥  
 काली खप्पर आडि<sup>१२</sup> ईडि<sup>१३</sup> कलिहैं भूखी बँपासौं धरैं १५ ॥ १० ॥

मे तब तो दिल्लीवाले भी १ घोड़े उठाकर मित्रों के समान छाती भिड़ाकर  
 मिले और थोड़े अंतर से देते लेते समीप के दोनों तरफ उलभे ॥ ७ ॥ घोड़े  
 फटफट (कटकट) कर गिरते हैं और कहीं पर भिदे हुए हाथी २ ओम्बे लेकर  
 (लगकर) फिरते हैं तरवारों की धारें फिरकर हड्डियां विखरती हैं और कितने  
 ही लूथ बुत्थ होकर गिरते हैं जहाँ पैर पैर पर महादेव हँसते हैं और ३ पार्व-  
 ती ताल देकर गाने का सुख लेती है और रीभे हुए चौमठ जोगिनी और  
 बावन बैरव इधर इनको और उधर उनको विजयी बताते हैं ॥ ८ ॥ बीच  
 में नारद ४ महती नामक वीणा को बजाकर ५ मस्तक घुमाते हैं, डाकि-  
 नियों की ६ केशों की लटी से लटक कर राक्षस और भूत ७ दायभागी ब-  
 नकर घंट करते हैं और वीरों के मस्तक भूमि पर नहीं गिरने पावें इसतरह का  
 महादेव खेल फैलाते हैं, साकिनियां होकर भगडा करती हैं और उफना हुआ  
 अच्छा रक्त पीती हैं ॥ ९ ॥ मांस में कंक गिद्ध और चिल्हें घुसती हैं और ८  
 मज्जा आदि ९ मांस खाते हैं इस प्रकार मांस का समूह दूर तक फैला हुआ  
 पाते हैं जिसमें फैलकर जो मांगते हैं वही मिलता है १० किलकारें करती हुई  
 कालिका डमरू बजाकर ११ हड्डियों का संचय करती है और कालिका  
 खप्पर १२ मांडकर १३ स्तुति करके १४ मज्जा को धारण करती है ॥ १० ॥

के बानैत कटै १ अटै २ रु उलटै ३ फूट ४ रु फाली फटै ५ ॥  
 हत्थी १ घोरन २ तै किते असि हनै है व्यंग ६ छे भू ७ हटै ८ ॥  
 घोटै स्वास बिनासमै बिछुरिबे घाँघाँ घनै के घटै ९ ॥  
 रीझे देखत मारते १० मरते ११ श्लाघा सुपर्वा रटै १० ॥ ११ ॥  
 बैत्री है वहिकाइ प्रेत प्रतिभू घाँघाँ भिरावै घनै १२ ॥  
 ते तुष्टै भर मुंडमाला तिनकी बेहै कपाली बनै १२ ॥  
 हत्थी कृति प्रसारि अंसु हुलसे जे छडा मूली जनै १३ ॥  
 भृंगी १ नन्दि २ भुलाइ १४ भजतै १५ उमा भै पाइ लखे भनै १६ ॥ १६ ॥  
 मढ्यो प्रातहिसौ महां मृध मजाकुप्पी चमू द्वै २ कटी ॥  
 घोरै १ गै २ भर् ३ द्वै २ हि पति घटतै पैली २ अनीही घटी ॥  
 त्यों बेधी रु—क(?) छोरै तजिकै ठाँ अद्वा नाँ ठाहरे ॥  
 तोहू सूरति साह मंडि तुमुलै धाराहि पै पै धरे ॥ १३ ॥  
 जो दिल्लीदलकी हरोल हनिकै अगै बढ्यो यों जहाँ ॥  
 पैने सखन पाइ सूर प्रसभी तुष्टे दुहूँ रघाँ तहाँ ॥

कितने ही । बाणबिद्या जाननेवाले अथवा युद्ध का घाना बांधनेवाले २ फिरते  
 हैं और ३ छलांग मारनेवाले फटते हैं तरवारों के मारहुए हाथी घाँड़ जुदे  
 होकर भूमि को छारकर हटते हैं ४ स्वास बुझकर नाश के समय बहुत शरीर  
 बिछुटते हैं और मारते और मरते हुआँ को देखकर ६ देवता ५ प्रशंसा करते  
 हैं ॥ ११ ॥ ७ वत हाथ में रखनेवाले अर्थात् छड़ीदार होकर वहकाते हुए प्रेत  
 जामिन हो हो कर ठौर ठौर पर बहूतों को भिडाने हैं उन लूटे हुए (कटे हुए)  
 वीरों की महादेव युद्ध में मुंडमाला बनाते हैं और कन्धे पर ८ गजचर्म को  
 फैलाकर प्रसन्न होते हैं ११ भगते हुए ९ भुज्जि और १० नन्दि नामक गणों  
 का भूलकर पार्वती भय पाकर फिर मिल जाना कहनी है ॥ १२ ॥ प्रभात से ही  
 वीर दोनों पंक्ति के १४ घटते ही सूरत की सेना घटी त्यों(?) १५  
 छोडकर और अपने स्थान को तजकर वहाँ पर आधे भी नहीं ठहरे तोभी  
 सूरत के बादशाह ने १६ भयंकर युद्ध करके तरवारों की धार में पग पग आगे  
 दिया ॥ १३ ॥ दिल्ली की सेना की १७ हरोल (सेना के अग्रभाग) को मारकर  
 इसप्रकार जहाँ सूरत का बादशाह आगे बढ़ा तहाँ १८ तीखे शस्त्रों को पाकर



कैच्छी भोज १६१२ कुमारको हु कटिगो संवाध संग्राममें ॥  
 है पाइके खरो हरोल करिवेलगो त्वरा काममें ॥ १४ ॥  
 रहो जस्य कुमार खग पटकैं बहीन लग्गीरहैं ॥  
 अप्पैं वाह सिपाह रीझि इतके खासा चढेसो चहैं ॥  
 सोहू जानि बखानि पाणि चलते उच्छाह दै साहहू ॥  
 वाजी किर्खव नाम खास बखरयो आरोहिदै वाहहू ॥ १५ ॥  
 वाजी खास आरोहि भोज १९१२ बढिकैं ज्यों खग आरयो बली  
 चकलयो सूरति साह अग्रं चमू छै छै सु पच्छी चली ॥  
 सोहू सत्रु हगेल तुष्टत समै गें गाहि नारें गयो ॥  
 भाला छलिय मारि पारि अरिकों जै पुज्य ग्राही भयो ॥ १६ ॥  
 गौहैं १२ कैकि रु सीस पट्ट गिरतैं ताको लयो तेरिकैं ॥  
 जामैं इक १ अतुल्लय बज्र निकरयो भा इंदु जो जोरिकैं ॥  
 मानिकै पारदि महर्घ सर्व मनिमैं जो हो असंभू तथा ॥

दोनों ओर के हठवाले वीर लूटे (मरे) वहाँ २ भयंकर युद्ध में बुन्वी के कुमार भोज का १ घोड़ा कटगया तहाँ ३ पैदल होकर आगे खड़ा हुआ और युद्ध के कार्य में ४ शीघ्रता करने लगा ॥ १४ ॥ वह कुमार क्रोधित होकर जहाँ खज्र पटकता था तहाँ पाधी (चमड़ी) भी लगी नहीं रहती थी जिसकी सिपाह प्रसन्न होकर ५ प्रशंसा करते थे और इधरवाले उनको खासा घोड़े पर चढ़ाना चाहते थे और उसकी ६ प्रशंसा जानकर और ७ हाथ चलते देखकर बादशाह भी उत्साह देता था और अपनी सवारी का किर्ख नामक घोड़ा ८ चढ़कर ९ प्रहार करने को दिया ॥ १५ ॥ उस बलवान् ने खासा घोड़े पर चढ़कर आगे बढ़कर खज्र चलाया सो १० आगे चलनेवाले सुरत के बादशाह ने उस खज्र को चला और उसकी सेना ११ टपक टपक कर पीछी चली उस शत्रु की हरोल लूटते समय उसके हाथी को मारकर समीप गया और उस (सुरत के बादशाह) की छाती में भाला मारकर और शत्रु को गिराकर विजय को प्रथम लेनेवाला हुआ ॥ १६ ॥ १२ घोड़े को झपटाकर गया सो शाह के गिरते समय उसके सस्तक से शिरपंच तोड़लिया जिसमें एक १३ तुलना रहित हीरा निकला जो चन्द्रमा के समान १४ कान्तिवाला था १५ भायक आदि सब १६ महंगी मणियों में वह १७ असंभव हीरा था तोभी

तोहू ता सिरुपेचमें तरनिलों भास्यो सु हीरा १ जथा ॥१७॥

सो लैकैं सिरुपेच भोज १९१२ सुररघो भाला तज्यो सत्थही ॥

तीखे तोमर १ संगि २ तेग ३ मृतपैं पीछें चले तत्थही ॥

जाहीठाँ मुगलेस जाइ रिपु जो पिकरयो मर्यो भू परयो ॥

भाला फूटिख्यो कुमारकरकों जामाँहिँ सोभा भरयो ॥१८॥

कोनँ एह हन्योँ कह्यो बहु तहाँ झूठेहि हंताँ बनेँ ॥

याको मारक जास प्राँस सुहि योँ भाखे हु मो.मो भनै ॥

अकखी कुंत कढाइ देखि कर लौ दिल्लीस काको यहै ॥

नाना तोहु धनी बनेँ भर नये जो कोन जाको यहै ॥१९॥

काको यहै १ जाकोयहै २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दिल्लीसासक पृछि पासहि लख्यो आकुंत दूदा १९१२ हुको ॥

बुल्लयो दुर्जनसल्ल १९१२ कुंत यहतो मो भ्रातके बाहुको ॥

भू नाती कछवाह मानहु भनीभाला यहै भोज १९१२ को ॥

फूटो सूरतिसाह जाकरि अहो स्वामी इती फोजको ॥ २० ॥

दाहुको १ बाहुको २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भाला तावकैं है कि भोज १९१२ प्रति योँ दिल्लीस पृच्छा भई ॥

भाख्यो भोज १९१२ धनैँ धनीन घन भो जो क्योँ दजैँ मो जई ॥

मोकोँ सूरति १ तँ दई मुगल ६ योँ भाखी बली भोज १९१२ सौँ ॥

यातैं बुंदिय २ तोहि मैँ दिय अबैँ जान्योँ जई आजैँसौँ ॥२१॥

उस १ शिरपेच में २ सूर्य के समान वह हीरा दीला ३ वह हीरा लेकर भोज पीछा फिरा और वह भाला वहीं पर छोड़ा, उस मरेहुए बादशाह पर ४ तीखे भाले ५ बरखी और तरवारें पीछे चली ॥ १८ ॥ झूठे ही ६ मारनेवा ले बने ७ जिसका यह भाला है वही इसका मारनेवाला है सो यह सुनकर यह भाला 'मेरा है, मेरा है' ऐसा सभी कहने लगे ८ भाला निकलवाकर ९ अनेक वीर उस भाला के धनी बने ॥१९॥ १० यह भाला किसका है सो दूदा से पूछा ११ भूमि के सम्बन्ध से ॥ २० ॥ १२ तेरा है क्या? १३ दिल्लीश ने पूछा १४ इस भाले के बहुत स्वामी होगये हैं, तहां बादशाह ने कहा कि मुझ को सूरत शहर देने दिया है इसकारण तुझ को बुन्दी दी १५ पराक्रम से ॥ २१ ॥

## वैतालीयम् ॥

भाखत इम साह भोज १९१२तैं, हनि रिपु सूरति १ तैं दई हमैं ॥  
 किय दुष्कर मन्निमोजतैं, इम दिय बुंदियस्तोहि तुष्ट हैं ॥ २२ ॥  
 दुर्नय प्रभुराम २०३१४ देखिये, सुनत कुमार इतीहि भोज १९१२सैं ॥  
 हुलस्यो गिनि लाभ जो हिये, करत भयो हि सलाम राज्यकी ॥ २३ ॥  
 विरची नटि यों न विन्नती, बुन्दीतो हमरैहि हे बनी ॥  
 प्रभु रीझे सर्व भूपती, अप्पहिं देन कहा न ओर है ॥ २४ ॥  
 न इमहु बुल्लयो वरानसी, जनक अनंतर मोहि देहु जो ॥  
 बुंदिय इक शवित् १धी २वसी, लखि पारध कवड्ड रंकलों ॥ २५ ॥  
 बुंदिय इम देत वेगही, करतहि भोज १९१२सलाम राज्यकी ॥  
 मन्निम दूदा १९११गईमही, न अवहि पै उपदा निवेदई ॥ २६ ॥  
 यह इक न लेन आसैंहे, बदलैं रीझ वहारि बोधैंसैं ॥  
 इहिं सृगलूणा लग्यो यहै, दूदा १९११हू रिसकों दवातभो ॥ २७ ॥  
 ॥ सहै १यहै २ अन्त्यानुपासः १ ॥

इत सूरति ठानि अप्पनी, रच्छकरखि विसासके बली ॥  
 अब अकबर ३७१ मोरि कै अनी, पलट्यो दल दक्खिन माहि पदैंरो २८  
 चंद्रा अभिधान चौंसों, अहमदनैर जु राज्य अंगमें ॥  
 सुहि वेगम संपरायसों, विधवा प्रतिभट साहपैं बनी ॥ २९ ॥  
 कति गोला हेम शतारैरके, बहु मासन तस दुर्गतैं बहे ॥  
 क्रम अकबर ३७१ शीर बारकै, तोपनभार भुनै ओर तहाँ ॥ ३० ॥

१ कडिन २ रीझ ३ प्रसन्न होकर ॥ २२ ॥ ४ हे प्रभुराभखित उक्त जमीनियाके को देखा ५ प्रसन्न हुआ ॥ २३ ॥ २४ ॥ यह नहीं कहा कि पिता के पीछे का जी मुझे दो १ बुद्धि में ७ पराई ८ कौड़ी को रक्त देने उस प्रकार उगने बुद्धि को देना ॥ २५ ॥ ९ जीने ही १० परंतु नजराना नहीं किया है यही एक ॥ २६ ॥ ११ याता है १२ विचार से बुद्धि देने का यह रीझ बदल देवे १३ भूदे लाभ में लगकर ॥ २७ ॥ १४ स्त्रीधा ॥ २८ ॥ १५ दृष्टा से १६ अहमदनगर के राज्य को दबाए हुए थी १७ युद्ध में ॥ २९ ॥ नौना १८ बाँदी के गोले बलाए १९ वीरों को पाद; अथवा बाहर के वीर ॥ ३० ॥

जिम सूरति १ जंग भो जईर, तत्थरहु भोज १९१२ कुमार ठानि त्यों  
दुर्गहि अधिरोहिनी दई, गो चढि जो उतके गिराईकै ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

सत्थ सहिल्ली सत्तसत ७००, चहि लहि खग्गचलाक ॥

जो बेगम सम्मुह जुरी, तुटत गढ रहै तार्क ॥ ३२ ॥

सूरति १ सम अत्थरहु सबल, भट निज पिछित भोज १९१२ ॥

गढसिर चढि पहिलैं गयो, आँजि अतुल अति आँज ॥ ३३ ॥

बाहिर कढि इम बेगमहु, तुमुल आरि तलवारि ॥

जुरी सत्तसत ७०० सखिन जुत, परी तिय सु बहु पारि ॥ ३४ ॥

रन जवनी चंदा रच्यो, असो बहुरि न ओर ॥

सेना अकबर ३७१ साहकी, घनी हनी बनि घोर ॥ २५ ॥

करत कतल बाहिर कढी, सुनि गढ तुटत संह ॥

कथित सखिन सह जो कटी, हसत नरन रनहह ॥ ३६ ॥

अहमदनैरहु विजितयह, करि गढ भोज १९१२ कुमार ॥

इक सफरमें बस उभय २, किय अकबर ३७१ जसकार ॥ ३७ ॥

रीफि साह पुनि भोज १९१२ रन, अहमदपुर अपनाइ ॥

कहिय ईष्ट मंगहु कुमर, मनहु जुही मन भाइ ॥ ३८ ॥

षट्पात ॥

रीति लाखहु प्रभुराम २०३४ मन्नि बुंदिय संटन मन ॥

भू इतर न लिय भोज १९१२ सोहि दृढ किय साहस सन ॥

इम जंपिय जिम अचल आहि दिखिय तुम आलाय ॥

इम बुंदिय मम अखन निबहि भुगै कुल निर्भय १ ॥

हसि साह कहिय ईतरहु लहहु मंगिय तव पंच ५ हि कुमर ॥

१ निसरनी लगाकर ॥ ३१ ॥ सात सौ रसहेलियों को साथ लेकर ३६ ठ ४ देखकर ॥ ३२ ॥

५ भोज कर वयुद्ध में तुलना रहित ढवड़े प्रताप से ॥ ३३ ॥ ९ भयंकर ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ १०

शब्द ॥ ३६ ॥ ११ अहमदनगर ॥ ३७ ॥ १२ चच्छा होवे सो सांग ॥ ३८ ॥ १३ बुन्दी को बदल

कर १४ जैसे आप के घर में दिल्ली दृढ है तैसे बुन्दी मेरे दृढ रहै १५ और भी छो

भोजका अकबर से वांछित मांगना] षष्टराशि-दशममयूख (२३२१)

सुनि लेहु तेहु नरनाह सब विरुद रूप दिय जेहुं बर ॥ ३९ ॥  
 अप्पि कोल रनथंभ सत्त ७ पहिलैं किय सुर्जन १९१॥२ ॥  
 तिनमैं सप्रम ७ तुच्छ मन्नि पछिताइ रहिय मन ॥  
 गो१ सुरमूरति २ गेह ३ नसत ढिग कबहु निहारे ॥  
 करि प्रसन्न साहकहैं बहुरि ए ३ लैन बिचारे ॥  
 न मिल्यो तथापि अवसर नृपहिं रीझन खिन हेरतरहयो ॥  
 प्रवभोज १९१२ प्रथम त्रिक ३ लैन यह करन जोरि इहिं विधि कहयो ४०  
 देस ढिग १ रु देस ढिग २ हु न व्है यह त्रिक ३ कहुं नासन ॥  
 गो१ सुरमूरति २ गेह ३ लहैं हम लखत विनास न ॥  
 यह त्रिक ३ जब दिय अप्प बहुरि दुव २ तब मंगे बर ॥  
 बरखा लहि सिक्ख बिनु घुमँडि ऋतु छँवि जैहों घर १ ॥  
 चढि अप्प चलत हित यानं चढि सह चलिहैं बिनु सासनहु २ ॥  
 इम त्रिक ३ रु जुगल २ मिलि पंच ५ ए बरहि भोज १९१२  
 लहि कहिय बहु ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

त्रिक ३ जुग २ मिलि ए पंच ५ तहैं, मंगे इष्ट कुमार ॥  
 साह रीझि दै तेहि सब, दिय असि छह ६ उदार ॥ ४२ ॥  
 जास गदा अभिधान जग, कहत हु मुख्य कृपान ॥  
 छहो ६ अकबर ३ ७ १ रीझि छँम, दयो अधिक हित दान ॥ ४३ ॥  
 बुंदी नहि सँटी बुधहु, जातैं हानि जनात ॥

१ स्तुति रूप ॥ ३९ ॥ रणथंभ के गढ़ में सुरजन ने सात कौल किये  
 थे जिनमें अन्तिम कौल को तुच्छ मानकर पछिताया और मन में  
 यह माना कि गौर्व, २ देवताओं की मूर्ति और देवताओं के मन्दिरों  
 को नाश होते समाप्त जै कभी नहीं देखेंगे वे तीनों बातें बादशाह को प्रस-  
 न्न करके फिर कभी लेखेंगे परन्तु राजा को ३ समय नहीं मिला ॥ ४० ॥ ४  
 सेना के समीप ५ देवमूर्ति ६ ऋतु की शोभा देखकर ७ इच्छा पूर्वक सवारी  
 पर चढ़कर ८ बिना आज्ञा भी ॥ ४१ ॥ ९ खड्ग ॥ ४२ ॥ १० जिसका नाम 'गदा'  
 कहते हैं ११ समर्थ ॥ ४३ ॥ १२ बुंदी नहीं बदली इंसकारण उसकी बुद्धिमान्नी

जँहँ इक१त्रिक३जुग२सब जुरत६, असि तँहँ सप्तम७आत ॥४१॥  
 कुमरहिँ ए सब७ कति कहत, सूरतिही दिख साह ॥  
 हुव पीछैं बेगम हनन, रन सु भिन्न मत राह ॥ ४५ ॥  
 दूदा ११११२ तव जानिय दुमन, अब बुंदिय गत आहि ॥  
 सत्रु भयो यह साइहू, जानत हे प्रभु जाहि ॥ ४६ ॥  
 पै कैसी भवितव्यपर, संग रहयो यह सोधि ॥  
 अब दिलिय पहुँचाइ इहिँ, वनी निवेसहिँ बोधि ॥ ४७ ॥  
 गढ जित्यो अहमदनगर३, है रन भोज१११२ हरोल ॥  
 भोजधुरज१ विरची भली, तँहँ निजनाम अतोल् ॥ ४८ ॥  
 इमहिँ ख्यात कहियत अबहु, अहमदनैर सु अट्ट ॥  
 अकबर३७११ दिलिय पत इम, बैरिन करि दहबट्ट ॥ ४९ ॥  
 गदत किते अहमदनगर, सफर अंत्य लिय साह ॥  
 तो न कुमर१नृप२भोज१११२तँहँ, इम वहे मति अवगाँह ॥ ५० ॥  
 सूरति ही तव संभवत, रीझ लहन कुमरेस ॥  
 प्रचुर प्रमान मिलाइ पै, अखिखय हम दृढ एस ॥ ५१ ॥  
 जानी दूदा १११११ हू तजी, अहमदपुर भुव आस ॥  
 जित्यो कुमरहिँ भोज१११२जँहँ, गढ चढि करि पर ग्रस ॥ ५२ ॥  
 साहहिँ दिलिय पत सुनि, पहुँ सुजन ११०११ जँहँ पत ॥  
 तँहँ उर लायो भोज१११२तिम, दुत हित जिम सब दत्त ॥ ५३ ॥  
 दूदा१११११ हू चितिय दुमन, करै जनक अब कोन ॥

में हानि दीखती है १ सात की गणना आती ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ २ उदास होकर  
 ३ जिसको स्वामी जानने थे सो शत्रु होगया ॥ ४६ ॥ ४ आगे क्या होता  
 है ५ जैसी चनेगी तैसी निवेडेंगे ६ यह विचार के ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ७ प्रसि-  
 द्ध ८ धुरज ९ बरवाद ॥ ४९ ॥ १० अन्तिम सफर में लिया था ११ इसप्रकार  
 बुद्धि का थाह होना है ॥ ५० ॥ १२ तब सुरत के युद्ध में ही बुन्दी आदि रीझ  
 का मिलना सम्भव है १३ बहुत प्रमाणाँ से ॥ ५१ ॥ १४ शत्रुओं का नाश कर-  
 रके ॥ ५२ ॥ १५ गया हुआ सुनकर १६ देकर ॥ ५३ ॥

पै तिम इकखयो भोज १९१२प्रिय, दिथ आसा तजि दोरन ॥५४॥

सहसा सत्य स्वकीय सजि, रति चलयो चढि रुडि ॥

सरनि फतेपुर १सीकरी २, पति साहहिं दिथुंठि ॥ ५५ ॥

॥ मनोहरम् ॥

साहको तबेला सीकरी करा हो सो सकल लूटि आयो पुर बुं-

दी दूदा १९११अनखाइकैं ॥

सुनत सु सोर साह अकबर ३७११घोर सेना सजिय कितीक बुं

दी लैन दरसाइकैं ॥

मेरतिया नाम बलभद्र इक ११रुडर खूनी अकबर ३७११को भयो

जो धन खाइकैं ॥

सगपन स्वीय जानैं रामपुर कीनौ पर परनिसकैं न अब दिल्ली

डर पाइकैं ॥ ५६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदशौ बुन्दीशसुर्जनचरिते सुर्जनकनिष्ठसूनुभोजकृतयवनेन्द्रशत्रुसूरतपतिमारणातच्छिराख्यानार्घवज्जतत्करपतन १ एतत्समरप्रसन्नयवनेन्द्राकबरकृतभोजार्थबुन्दीप्रदानाज्ञोत्तरमहमदाबादविजयपरितुष्टयवनेन्द्रप्रसादेनभोजस्य स्वसमक्षगोदेवमूर्तिदेवमन्दिरविध्वंसनाभाववरप्रापण २ यवनेन्द्रदिल्लीयानानन्तरभोजबुन्दीप्राप्तिमुर्जनप्रसाददर्शनरुष्टदूदाकृतफत

अकबर और राजा सुर्जन १ दोनों से बुन्दी मिलने की आशा छोड़ दी ॥५४॥

२ अचानक अपने साथ को सभ्रकर ३ मार्ग. बादशाह को स्वामि समझने में

४ पड़ दी ॥ ५५ ॥५ अपना सम्बन्ध ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के लघुपुत्र भोज के हाथ से बादशाह के शत्रु और सूरत नगर के पति का माराजाना और उसके मस्तक का अमूल्य हीरा भोज के हाथ लगना ? इस युद्ध की प्रसन्नता में बादशाह अकबर का भोज को बुन्दी देने की आज्ञा दिये पीछे अहमदाबाद को विजय करने के कारण बादशाह को प्रसन्न करके गौ, देवमूर्ति और देव मन्दिर अपनी दृष्टि के आगे खिद्यत नहीं होने का भोज का भर पाना २ बादशाह के दिल्ली गये पीछे भोज

हपुरसीकरीस्थितयवनेन्द्रहयशालालुशटनोत्तरबुन्द्यांगमनं नाम दश-  
मो १० मयूखः ॥ आदितस्त्रिनवत्युत्तरशततमः ॥ १९३ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्रकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सूर \* मुरडि इम साहसूँ, लूटे हय जय लाह ॥

हाणि रच्छक दूदा १९११ हठी, आयो धरत उछाह ॥ १ ॥

बुंदी आइ सन्हालि वळै, सावधान करि सर्व ॥

दूदा १९११ मुँडि रहियो दुसह, पावण जस रणौ पर्व ॥ २ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

जिणसमय बलभद्र १ नाम मेड़तियां गठोड़ धाड़ापताँनै धुंधर कहावै।

अर जिणरा आतंककरि दूंदूरै मार्गभी सोदागर न होलै रके-  
ही देस निगंकुसँ वसण नपावै ॥

जिणराठोड़ कँवर दूदा १९११ नूँ अकबर ३७१ हूँ मुरडि प्रायो जा-  
णि जिकोही आपनूँ अवलँवरो देणहार विचारियो ॥

अर रामपुरे आपरो सगपण हुबो जिणरा विवाहणामें दसोररा  
फोजदारनूँ नीड़े जाणि केहीवार संकल्प पाछो पाड़ि तुरकाँरा पे-  
चमैं कैदहोणरो डर धारियो ॥ ३ ॥

मेड़तिये बुंदी आइ दूदा १९११ थो कहियो आपरो सहाय मिलै  
तो रामपुरे चंद्राउताँरे द्रंगँ विवाहणारै काज जाईजै ॥

अर आप न हालो तो कन्यानूँ तरुणी हुई जाणि चंद्राउताँ  
पुरोहितरो धरग्योँ दिवाइ मोनूँ बींदरो वेस कराइ साहसथी आणि-  
यो तोभी दिल्लीरा दून दसोर पूगा जाणि पाछोही पैलाईजै ॥

को बुन्दी मिलने में राव सुरजन की प्रसन्नता देखकर फतेपुर सीकरी में बाद-  
शाह की हयशाला को छुटकर दूदा के बुन्दी आने का दशगा १० मयूख समाप्त  
हुआ ॥ आदि से एकसौ तरानवें १९१ मयूख हुए ॥

\* बदल कर ॥ १ ॥ १ सेना २ विजय होरहा ३ बुद्ध के समय ॥ २ ॥ ४ भय से  
५ चले ६ निर्भय ७ आधार ८ समीप ९ विचार ॥ ३ ॥ १० नगर ११ मार्ग



दूदाका अकबर से विरुद्ध रहना] पठराशि-एकादशमयुक्त (२३२५)

दूदो १९११२ कँवर सरगाईसाधार सुणाताँही सहाइ देर तार  
हुवो जिकणा आपरा अनादररै आँटै अकबर ३७११ जिमड़ा पात  
साहथी तोड़ि तिणारो प्रतीकार दिखावणरैकाज केवल वीरभाव  
रो जस चाहियो ॥

अर घणाँ देसारा लूटणाहार धाराँरा अधीस पराईभूमिभ भो-  
हणाहार मेड़तिपा बलभद्र १ नूँ रामपुरै लेजाइ विवाहियो ॥ ४ ॥

जैरँ चंद्राउताँभी पहली ओराँरा बिनाहणाहार कुमार दूदा  
१९११२ नूँ बडा साहसरैसाथ एक १ पुत्री विवाहि पछै बँदिणी  
हुती जिका दूजी २ पुत्री राठोड़ बलभद्रनूँ विवाहि दीधी ॥

अर आवश्यक कृत्य वणिसाकियो जिको करि दसोरथी फोज  
चाली जाणि दो २ ही बराताँ प्रातही विदा कीधी ॥

दो २ ही जानैतो रामपुराथी आइ भाणापुर सुकाम दियो ॥

अर निसीथरैसमय दसोररै फोजदार दो२ ही बर आइ नेड़ावि  
या जिको सुणाताँही बलभद्र १ नूँ ऊहाँ उभय २ रैसाथ आगै च-  
लाइ कँवर दूदा १९११२ पाछै रहि मरणीक थियो ॥ ५ ॥

दोहा ॥

सउँच १ न्हाणा२ मुख साधि सब,राचे राजसराह ॥

क्रम वेठो संभ्रा करणा, दूदा १९११२ कँवर दुवाह ॥ ६ ॥

करि संभ्रा १ जप २ आदि क्रम, पूजि इष्ट गोपाल ३ ॥

स्व कराँ करि भोजन सदा, करी निवेदणा काळ ॥ ७ ॥

आप करै सोही असेणा, इष्ट भोग अवसेस ॥

इम पूँपी जुगर करि उठै, प्रभुरै कीधी पेसँ ॥ ८ ॥

१ शरण आये हुआँ का आधार २ बदले ३ बैर मिटाना ४ भागनेवाला ॥ ४ ॥

५ दुल्हन ६ जरूरी काम ७ बराते ८ आधी रात्रि के समय ९ समीप किया

१० दोनों दुल्हनों के साथ ११ काम आने (मारेजाने) को तयार हुआ ॥ ५ ॥

१२ सोच जाकर स्नान करने आदि ॥ ६ ॥ १३ अपने हाथ से भोजन पकाना

॥ ७ ॥ १४ भोजन १५ बाकी १६ रोटी १७ भेट घरी ॥ ८ ॥

## ॥ सचरणागदम् ॥

जतरैतो दसोररा चालिया प्राणांरी बाजीरा खेलहणाहार अक  
वर ३७१ रा वानैत काळरा किंकर अणाचींतिया पाहुणाँ साँक  
डैही आयपूगा ॥

जिकाँनूँदेखताँहीं पुलियार कायरारै कंप १ वीरारै वीररसरां  
सोगुणाँ जोस २ उगा ॥

दूदो १९११ प्रभुरो भोगावसेस भोजन करि इष्टदेवरो बटवो  
गळे बाँधि साँवळिया तुरंगरी पीठि आयो ॥

जतरै इणारा साथियाँ तुरकाँरो संपात नीठि रोकियो ॥

अर कँवरभी आरूढहोताँहीं त्रि३ भाँगो तोमर भुजादंडधी भ्र-  
माइ सत्रुवारै साम्हें आपरो बाह ओकियो ॥ ९ ॥

पैलाँमें पविर्षातरै प्रमाण-पूगताँही उठीराभी कायर चळविचळ थिया ॥

अर सूर हूँता तिके कँवर दूदो १६११ मँझमानी मिलाइ निहालकिया ॥

भालारी भचाकाँ चखाइ केही पटेताँनूँ पाडि कुमार आपरै-  
देसरी दिसा आँडे पग आवणाँनूँ मरतै मारतै प्रयाणाँ कीधो ॥

अर तुरंग साँवळियारा बेगहूँ पैलाँरा बाजियाँरा बेग थकाइ  
एकला १ फोजदारनूँ आपरै समीप आवणाँदीधो ॥ १० ॥

दो२ ही वीर साँकैडै मिलियाँ दावकरता १ बचता २ हडोती-  
के मार्ग वहियाआवे ॥

अर ओरभी दो २ ही तरफरा प्रवीर जुदाजुदा जुद्धकरता याँदो  
२ ही महावीरारै पाछें रहियाआवे ॥

आगैआवताँ एक खाल्ल बारह १२ हाथको चोडो १ घणों ऊँडो २

१ बाण चलानेवाले; अथवा बानाबंध २ घनराज के संवक ३ समीप ४ ओंठ  
से बाकी रही वस्तु ५ प्रहार ६ भाला चलाने समय उसके दो भाग आगे को  
और एक पीछे को रखकर धामने से उसको त्रिभागा कहते हैं ७ भाला ॥९॥  
८ वज्र प्रहार ९ महमानी १० पटा फैकनेवालों को ११ चला ॥१०॥ १२ समीप  
१३ विशेष वीर १४ नाला

कृदाका मेडतिया बलभद्रको सहायदेना] बठराखि-एकादशमयूख(२३२७)

आडै आयो जठै कुमार दूदो१९१।२तो सहजमैं साँवळियानैं भैपाइ  
खाळरै वार आइ भालो ऊवाइ साम्हों खडो रहियो ॥

जिको दुष्कर देखि पौँही रुकियेथकै जवन नाम पूछियो जेरैं  
कुमारभी आपरा सहाय देखारो सारोही उदंत अभिधान सहित  
कहियो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

सुर्जन१९१।२सुत१बुंदी सदन२, संज्ञा३दुरजगसात१९१।३ ॥

व्याहणहूँ बलभद्रनूँ४, हुवो सहायक दाल ॥ १२ ॥

सरणसहायक बिरुदसिर, पहलीही कुळपाँख ॥

अकबर३७।१हूँ मुड़ियो अबैं, तस्त कहूँ तुरकाँख ॥ १३ ॥

जिम थाँरो खूनीं जिको, किरैं बलभद्र कबंध ॥

अठै विवाहण आणियो, सरणों में बळसंध ॥ १४ ॥

भड़ म्हांरा पाछैं भिड़ै, जिकाँ बहोड़ो जाइ ॥

अच जै भड़ियो एक१भी, तो पड़ियो पँबि तौइ ॥ १५ ॥

ऊजड़ें दसपुर अंगैमूँ, बळें तिकाँरें बैर ॥

निज घर थे जावै नतो, खान विचारो खैर ॥ १६ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

या सुणतौही कुमाररा पाणिरपनूँ प्रमाणकरि पाछो जाइ फोज-  
दार आपरा वीराँनूँ बहोड़ि दसोर पूगो ॥

अर पाछैंमूँ आपरोसाथ आइमिळियांपछैं कवैरभी आगलासाथमैं  
आइ मेडतियानूँ अभयरोमहामह मनाइ अँकैरै उपमान ऊगो ॥

इणारीति बुंदीसरो बडोकुमार दूदो१९१।२सहाय देर मेडतिया  
बलभद्रनूँ विवाहण रामपुरै गयो जठै आपभी आपरा वीरपणारा

१ कृदाकर २ वृत्तान्त ३ नाम-सहित ॥ ११ ॥ ४ घर ॥ १२ ॥ ५ कुल  
के पराक्रम से ६ तुरकों के राज्य को कल्पित कहंगा ॥ १३ ॥ ७ निश्चय =  
बल की प्रतिज्ञा से ॥ १४ ॥ ८ पीछा फेरो १० बज ११ तहाँ ॥ १५ ॥ १२ शून्य  
१३ मदसोर को दमाऊंगा ॥ १६ ॥ १४ पराक्रम १५ सूर्य

लुभाया चंद्राउतनरेस दुर्गदासरा पुत्र रामपुरारा अधीस गजसिंहरी  
कन्याजसकुमरि १९१४ कुमराणीनूँ विवाहि बुंदी आयो ॥

अर राठोड़नूँ रभणीसहित केहीदिन राखि भरोसारा भडसाथ  
देर उगारै आगारै पुगायो ॥ १७ ॥

जिको सुणाताँही अकबर ३७११ रै जाणौँ बारूदरा गंजमें दमंग  
भडै जिखारीति क्रोधानळरो प्रकर्ष छायो ॥

तिको तबैलारी लूटरा घावपर बडा खूनीनूँ सहाय देर लूणा लगायो ॥

पातसाह सुर्जन १९०१ नरेसनूँ कहियो बुंदी छुडावणारै काज  
फोजमें थारोबी जावणौँ होइ तो ठीकहै ॥

जठै नरेस कहियो फोजरै अर भोज १९१२ रै साथ म्हारा जाव  
णमें तो पिता १ पुत्राँ २ रै दोरहीतरफ अपजसरो अनीकहै ॥ १८ ॥

जिणथी म्हारा भाई काका भीमरा १८८२ पुत्र सिंह १८६१  
नूँ भेजीजै तो सुजसरै साथ हुकम सधसी ॥

अर जुद्धमें जय हुवाँ दूदा १९११ जिसा दुष्टारै ऊपर हजरतरो अ-  
प्रमाण असह आतंक बधसी ॥

जिणथी भाईनूँ बधारो देर भोज १९१२ रै सहाय फोजरै साथ  
कीजै ॥

अर जुद्धरा जीतणहार टळिया वानैत भरोसारा होइ तिके ला  
र दीजै ॥ १९ ॥

जरै जवनेस सुर्जन १९०१ रै कहियाँ भीमाउत १६१२ हाडा  
सिंघदेवनूँ १८९११ सहस्राप १ सहरै साथ अढाईहजारी २५००  
रो मुनसव देर बुंदीरै ऊपर विदाकीधो ॥

अर जवनाँमें मालिक करि भोज १९१२ रो भीड़ नवाव मुहब्ब  
तखान २ साथ दीधो ॥

१ स्त्री सहित २ घर पहुँचाया ॥ १७ ॥ ३ ससुरा में ४ अग्नि ५ अधिकता ६ बुराई  
७ सेना ८ हसकारण से ९ भय ॥ १९ ॥ १० सहायक

लकड़खान १ रै ऊपर चलावणारा कारणा करि जिको नबाव  
मार्गहीमें कुठारखान २ कहायो ॥

इणारीति सिंघदेव १ मुहब्बतखानसहित मध्यम २ कुमार भो-  
ज १९१२रै सहाय बडाकँवर दूदा१९११नू मारणारैकाज बुंदीऊपर  
अकबर ३७।१रो अनीक आयो ॥ २० ॥

ग्राम बडधा १ कुमारती २ रै बीच सुकाम हुवो ॥

अर रात्रिरे आगमें तिकाँरै प्रमाद राखणारो कुकाम हुवो ॥

निसीथरै समय कुमारदूदै १९११ तिकाँमाथै जाइ नत्रीठा बाजी  
पटकिया ॥

अरदिल्लीरा बीराँनूँ कोरँडो लोह चखायो जिणआगै बडाबडा  
दुरँबाह बानैत न टकिया ॥ २१ ॥

नागराजरा भोग फेरणभरिया लटकिया ॥

अर तुरकारा हाडाँपर हाडाँ६१रा खारा खड्ड खटकिया ॥

चंडाँहासाँरा चीरिया जठीतठी बकतर१टोपाँ२रा टूक चटकिँया ॥

अर कायरारो प्राण केवल नाँडियाँमाँहँ अटकिया ॥ २२ ॥

जठै कुमार लकड़खान१चौडै खेत जाइ कुठारखान२भाँजियो ॥

अर आपणाँ अनुज भोज१६१२काका सिंहदेव१८९।१समेत  
अवसेस दिल्लीरो दल गाँजियो ॥

मुहब्बतखान२रै मरताँही दिल्लीरा दोइहजार२०००बीराँरो खेत  
पडियो जाणि कुमार भोज१९१२रो बचिबो न मानि तिकणनूँ ले  
र सिंहदेव१७९।१हाडापणाँनूँ फाँको दिखाइ नीचा नेत्र करि पाछो  
दिल्ली पूगो ॥

१ सेना ॥२०॥ रात्रि २ आने पर ३ गफ़लत ४ बहुत शीघ्रता पूर्वक; अथवा अ-  
त्यन्त दौड़कर ५ घोड़े डाले ६ निकेवल ७ यह वीर का विशेषण है ८ नहीं भागने  
की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाले; अथवा बाण विद्या को जाननेवाले ॥२१॥ ६ फण  
१० भाग से ११ खड्ड १२ यह तूटने के शब्द का अनुकरण है ॥ २२ ॥ १३ विजय  
किया, अथवा मारा

अर जठीतठी बडाकुमार लकडखान १९११रा पराक्रमरो सुज-  
स ऊगो ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

ले मुनसव पदवी पडेण, आयो सिंह १८९१अवीह ॥

भांजिकुठार १भजाडियो, सो १२२११रासीह ॥ २४ ॥

करि बल दूखों कोपियो, जिको दुसह जवनेस ॥

सुर्जन १९०१२ह कहियो सजे, अब मारो सुत एस ॥ २५ ॥

॥ सचरणागचम् ॥

अठी कुमार दूदे १९११ विजयरा धंव घुराइ बुंदी आई आप  
समैं भरोसा भागो जणाड कुमार रत्न १९२१ सहित अलुज भो-  
ज १९१२ री बडी कमलाणि बालरांति रायकुमरि १९११ बुंदी-  
हूँ दिल्लीनरसरे कनै भोजिदीधो ॥

तिको सुर्जन १९०१२ भी पुत्रमहित कासी भेजि धर्मरा धारणा  
में बडा कैवररी तारीफ कीधी ॥

अकबर ३७१ भी बडा साहसरैसाथ सुर्जन १९०१ नूँ सजाइ  
बुंदीमाथे विदाकीधो ॥

अर नवाव रणमस्तखान २ नूँ भोज १९१२ री लाज भळाइ  
तिकोभी लार दीधो ॥ २६ ॥

दोहा ॥

सुर्जन १९०१२ नृप रणमस्त २सह, भोज १९१२ कुमारक भीड ॥

भाभी अकबर ३७१ भेजिया, नामी प्रतिगट नीड ॥ २७ ॥

सचरणागचम् ॥

अकबर ३७१ कपटकरि आंखियो जे दूहो १९१२ आंगे समुभा  
यो चाकरीकरानूँ आवे तोना फेभी बुंदी १२ एवज तिकरानूँ बी

॥ २७ ॥ २ पहिली मरने जो २ जिनेर ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

जोरस्थान दीधोजावै ॥

अर नहीं तो हरामखोर इसु आर्यावर्तमें कठेही बचण न पावै ॥

इसडो हुकम सुणि नरेस सुर्जन नबाव रणमस्तखान २ कुमा  
र भोज १९१२ नूँ लेर बुंदी आया ॥

अर दूदा १९११ नूँ सौमरैसाथ आइमिलणामें अनेक लाभ ज-  
गाया ॥ २८ ॥

दोहा ॥

कालिह मिले दूदै १९११ कही, बळे करे रणबात ॥

पगे पडण निहचै पछै, तजि असि आऊँ तात ॥ २९ ॥

सचरणगद्यम् ॥

इसडो कहाइ दूजै २ हीदिन कुमार दुर्जनसाल १९११ आखेटरा  
रमणाहूँ परभारोही घोडाँरा चाकगँनूँ बरजाई दोडाँरा साधिया घो  
डाँरा पचास ५० ही छडौँ असवार साथ लेर पितारै पगेलागणनूँ  
दिल्लीरी फोजरैसमीप आयो ॥

अर पचास ५० ही घोडाँनूसूनो छोडि तिकारै हानै भाला ल-  
गाइ जनकरै आगैं प्रणामपूर्वक माथो नमायो ॥

नरेससुर्जन १९११ भी पुत्रो खाँधो आपलि हृदयहूँ लगाइ वि-  
स्वासियो ॥

जिको दोरही पिता १ पुत्राँ २ रो मिलाप सुणि अंतरमें एक  
जाणि तुरकारो तौम त्रासियो ॥ ३० ॥

नरेस १ भी दूदा १९११ रा आवणारी जगाइ रणमस्तखाँ २  
बुलायो तिकणभी आइ दूदो १९११ सादगीरैसाथ न पहिचाणि  
यो ॥

अर बैठौँ पछै नरेसरे कहियाँ च्यारिपाँच साथियाँरै बैठैँ बैठो

१ मिलापक साथ ॥ २२ ॥ २९ ॥ रसना कराकर धाड़ा डालने में सिलाप वृष घोड़ा  
को ४ अक्षय अथवा केवल ५ बिना रक्षक १ आसन के अगले भागपर ७ मन  
में ८ ससूह ॥ ३० ॥ १ नीचे

जाणियो ॥

जवनभी उग्रहूँ लगाइ कहियो जिण वीररायोडाँमें इसडो एको  
तिकणनूँ पाणिंग पाणुरैसाथ पातसाहरो प्रेरियो किसडो वानैत  
आसंगमें आणौं ॥

अर सामरैसाथ सत्कारहूँ मिलायोथको सीसरैसाँटै स्वामीरोही  
सासन प्रमाणौं ॥ ३१ ॥

जठे नरेस १ नवाव २ हूँ कहियो आपणौं आवताँ अकवर ३७  
१ रो आदेस इसडो हुयो सो बुंदी१रैएवज औरस्थान २ लेर चाक-  
रीकरणौं न मानैंतो दूदा १९११ नै पकडिआणौं ॥

अर नहीँतो भेजणौं उणरा सीसरो नजराणौं ॥

अव ए दूदा १९११ रा साथीभी पचास ५० ही दूदा १९११रै सा  
थहै जिणथी समस्तराही सीस बढि सँलीतो भरि दिल्ली पुगावो ॥

अर पुत्र १ रा मारणमें पिता २ रो अखंड अपजस उगावो ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

भणी जवन १ जदि भूप २ हूँ सूरकँवर करि साहि ॥

हाँलि मिलावो साहहूँ, चुगली मेटण चाहि ॥ ३३ ॥

अधिप कही जदि हालि अव, सुत तू म्हारैसाथ ॥

मिलि पाछी लै मह महँर, अकवर ३७११ सूं सँह साथ ॥ ३४ ॥

॥ पट्टपातू ॥

कवँर जरै जोडिकर प्रणामि कहियो नरेसप्रति ॥

प्रभुरो आयौ पत्र निडर आतो धारे नैति ॥

पणारण मस्त १ पटैत भोज २ भाई करि भेळा ॥

अण अवसरै इम आइ खोलिदीर्घा डर खेळा ॥

१ हाथ के पराक्रम के साथ २ भोजा छुआ ३ कानू में करार होता है ४ मस्तक के  
बढ़ता ॥ ३१ ॥ ५ सय के मस्तक काट कर ६ ऊँट का बोरा भरकर ॥ ३२ ॥ ७  
पलकर ॥ ३३ ॥ ८ कृपा स्थान सहित ॥ ३४ ॥ १० नम्रता धारण करके ११ बिना  
समय १२ क्रीड़ा ॥ ३५ ॥



जिहाहेतु कालिह रणएक जुडि पछैं लागि प्रभुरै पगाँ ॥

कैद है बालि सुजरो करूँ तार सुजस १ अपजस २ लगाँ ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

बदियो यदि रणमस्त बहु, मानि कवँर सो बैरा ॥

बिगा रण हालो दासं वणि, अप्पण पावण अँगाँ ॥ ३६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सो सुणि दुरजणसाल १९११ कोपि रणमस्त बकारे ॥

कहियो थाँ जिम कवण मान भाँजै छल मारे ॥

पहली भेजण पत्र हुकम करतो है हाजरि ॥

अब सो सुर्जन १९०१ आण प्रधेन पहली ईखूँ अरि ॥

है जेर बळे सह हालिहूँ कपट बिलंब न खिण १ करूँ ॥

नरनाह १ टाळिजै इस नहीं तोतो दळ नहो तरूँ ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

दूदो इम भाखे दुसह, आयो ऊठि अगार ॥

मग कहियो रणमस्त २ मिलि, प्रकटे निज मन प्यार ॥ ३८ ॥

दूदा १९११ सुणि माने अदल, सम्मद तो १ मो २ साखि ॥

मारैं नहँ मिळियाँ सुगलद, राज १ धरा २ धन ३ राखि ॥ ३९ ॥

कहियो सुणि दूद १९११ कवँर, ईळा न लेणी ओर ॥

लेहालो बंदीलगा, जाणूँ मालिक जोर ॥ ४० ॥

बिहसे तदि सुर्जन १९०१ बदी, बंदीही तव बाँहँ ॥

बाबर ३११ सुत बाँधै बळे, छत्रहेठ दे छाँहँ ॥ ४१ ॥

कर जोडे पाछी कवँर, कही जनक बळ कोडि ॥

एक १ बुलावण आवतो, दास धाँवतो दांडि ॥ ४२ ॥

१ बिना युद्ध किये. अपना २ घर पाने के लिये ॥ ३९ ॥ ३ कौन ४ सौगन  
५ युद्ध में ६ झुक कर ७ नाडा (लुच्छ जलाशय) रूपी ॥ ३७ ॥ ८ घर ॥ ३८ ॥  
९ इन्ताफ ॥ ३९ ॥ १० श्रुति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ११ कोड़ चल है तांभी १२ दौड़ता "यहाँ  
दौड़ने की अधिकता बताने के लिये एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग है" ॥ ४२ ॥

॥ षट्पात ॥

जैरँ कुमर हठ जाणि जनकआगँ इम अक्खी ॥

आप टळै दिस एक सकळ बळ आइ \* समक्खी ॥

किंकर दूदो १९११ काढि अनुज १९१२ बूंदी अवंधारो ॥

आजि भचक लै एक १ बळे डर मूअ विचारो ॥

जै डर न होइ जाणौ जनक प्रणैत काल्हि लागूँ पगाँ ॥

सो जै न होइ दीजै सहज सुत अपजस असगाँ १ सगाँ २ ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

आयो बूंदी भाखि इम, संधाँ लडण समाहि ॥

करणा बिजै दूदै १६११ कँवर, चुणिया भड अर्ड चाहि ॥ ४४ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

दूजै ३ दिन कँवरतो पहली सुरथपुर जाइ रक्तदंतारो पूजन कीधो ॥

अर पैलाँरै कटक जोभूरा तंडागरे उत्तरतट आइ मुकाम दीधो ॥

जठाहूँ दोइ हजार २००० असवाँरा सुरथपुर आइ कुमार बेढियो ॥

अर दूदै १९११ भी अंबारा अर्चनरै अनंतर आपरासाथियाँ समेत

साम्दै आइ घोर घमसाण कियो ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

पैला रण जिण छूटि पग, पुळियाँ डेराँ पाइ ॥

जैरँ कहाई जनकहूँ, दूदै १९११ सपथ दिवाइ ॥ ४६ ॥

सचरणगद्यम् ॥

विजयरात्रोभी रजपूत चाहै जिणसमय आइ सम १ विसम २

जुद्धकरै ॥

\* सन्ध्या १ धारण करो २ युद्ध में ३ प्रणाम करके ४ यदि नहीं होवे तो ५ बिना  
 सन्ध्यावालों में ६ सन्ध्यावालों में ॥ ४३ ॥ ७ प्रतिज्ञा ८ हठ करके ॥ ४४ ॥  
 ९ रक्तदन्ता नामक देवी का १० ताळाव ११ देवी का पूजन करने पीछे ॥ ४५ ॥  
 १२ भागे ॥ ४६ ॥

दूदाका अकबर की सेनाको भगाना षष्ठराशि-एकादशमयूख (१३३५)

अर जनकादिक गुरुजनानूँ टाळि तिकारैसाभैतो अनुगत  
भाव धरै ॥

जिणथी आपरो सिविरेँ ऊँचास्थलपर होइ तो कुपुत्रनूँ आदाब  
राखणरी सुद्धि रहै ॥

अर बाकीरा बीर दोर ही तरफ आपसमें असिवर चखाइ बानै-  
तपणारै विरुद्ध बहै ॥ ४७ ॥

इसडी कहाई तोभी नरेस सुर्जन १९०१२ आपरा डेरा जुदा न  
टाळिया ॥

अर एक१ ही घररो जुद्ध जाणि अठी १ उठी२ दोही २ तर्फरा  
सर्वही स्वकीय भाळिया ॥

जरै दूद१९११ कुमार जोभूरा सरोवररो उत्तरतट फुडाइ जळ  
काढियो ॥

अर बूडता बचता बीजा२ चतुरंगनूँ चळविचळ हुवो जाणि रति-  
वाह देर अचाणक आइ बाँढियो ॥ ४८ ॥

जिण घोरसमयमें सखारो प्रहारकरि व्याकुलहुवो नबावरणम-  
स्तखान१ तो कुमार भोज२ नूँ लेर एक गर्तमें तणारोसमूहदेठै द  
वि रहियो ॥

अर महीपभी आपरी माळानूँ मंचपरही मेलि एक दिसारो मा-  
ग गहियो ॥

बाजी साँवळियारा चरण डेरारो तणारो उळभिया जाणि कु-  
मार दूदा१९१२ रो चाबक बहियो ॥

जरै परबस भाँप लेताँ आँत तूटी जिणथी कवरै घोडैभी पर-  
लोक लहियो ॥ ४९ ॥

१ बडे लोकों को २ डेरा ३ खबर ४ घाना धारण करने के घर को धारण  
करै ॥ ४७ ॥ ५ सेना को ६ काटा ॥ ४८ ॥ ७ खड्गे में ॥ ४९ ॥

दोहा ॥

जठै भोज<sup>१</sup> रणमस्त<sup>२</sup> जुग<sup>२</sup>, बचिया गैर्त बिंचाळ ॥

पुल्लियो जिम सुतहूँ पिता, महीपाळ तजि माळें ॥ ५० ॥

ईखे हय मृत आपरो, दूदा १९११ कुमर दुबाह ॥

बाजी खास नवाबरो, लो चढियो जयलाह ॥ ५१ ॥

जनक<sup>१</sup> सिविर १ टाळे जिको, जवनसिविर<sup>२</sup> धन जोडि ॥

आयो पुर दूदो १९११ अडर, माझी परदळ मोडि ॥ ५२ ॥

गो दिल्लीदळ जैतगढ, मंडे समय मुकाम ॥

बीजे<sup>२</sup> दिन दूदै १९११ बळै, कीधा मिळण सुकाम ॥ ५३ ॥

सचरणागद्यम् ॥

इणरीति ग्राम वोरखंडीरा धमस्ताणमें दिल्लीरा दळनूँ भजाइ दूजै  
२दिन दूदो १९११ हाथवांधि जैतगढराडेरौ जाइ पितारा पगाँ प-  
डियो ॥

जिणरा वीरपणहूँ रीक्षियेथकै रणमस्तखानभी उरहूँ लगाइ  
हितरो संलाप घडियो ॥

नरेसहूँ नवाबर कहियो अब दूदो १९११ आइमिळियो जिण  
थो इणनूँ लेजाइ साहरा कदमाँ लगावाँ ॥

अर बुंदीरै अेवज कुमार भोज<sup>१</sup> १९११ बीजीरठाम दिवाइ दोर  
ही भाइयारै आपराभैं वधियो विरोध भगावाँ ॥ ५४ ॥

दोहा ॥

हाँलो धाम दिवाडिहाँ, अथवा इणनूँ ओर ॥

पण अब मेलौ सादपग, जाखो जय<sup>१</sup> नय<sup>२</sup> जोर ॥ ५५ ॥

जंपि सपथ रणमस्त जदि, बीच अलाह बताइ ॥

लाधो दूदो १९११ लारही, कटकाँ कूच कराइ ॥ ५६ ॥

१ खड़े के २ बीच में ३ भगा ४ माला छोडकर ॥ ५० ॥ ५ अपने घोड़े  
को सरा देखकर ॥ ५१ ॥ यवन के डेरे का धन ६ इकट्ठा करके ॥ ५२ ॥ ५३ ॥  
७ चार्तालाप ॥ ५४ ॥ ८ चलो ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

पातसाह अकवर ३७।१ पगे, जिको लगायो जाइ ॥

सोधे भूप १ नवाव २ सुभ, स्व धरम सपथ सुणाइ ॥ ५७ ॥

तोभी अकवर ३७।१ ताकिया, उखरा खून अमोघ ॥

करि मिळियो अंतर १ कपट २, ऊपर १ आदर २ ओघ ॥ ५८ ॥

नृप १ नवाव २ सकियो नथी, जिको साह छळ जाणि ॥

कँवर भिळायो हेत करि, पावन आण प्रमाणि ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पुर्यायणे पष्ठ ६ राशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे सुर्जनपट्टपकुमारदुर्जनशल्य (दूदा) सहायेन मेड़न्तिकवल भदरामपुरपरिखायनोत्तरं तलैव तत्परिखायन १ स्वानुसृतदशपुराधि कारिविजयपूर्वकोभयजन्यसहितबुन्दागमन २ एतदपराधश्रवणारुष्टयवनेन्द्रसैन्यसुर्जनलघुसूनुभोजबुन्दीप्रस्थापन ३ दुर्जनशल्यपराजितभोजप्रत्यागमनातिरुष्टयवनेन्द्राकवररखामस्तखांसहितरावसुर्जनबुन्दीप्रस्थापन ४ सरखामस्तखांसुर्जनपराजयोत्तरविनयसमागत कुमारदुर्जनशल्येन सह रावसुर्जनस्य यवनेन्द्रान्तिकगमन ५ दुर्जनशल्यकृतामोघमन्तुनिमित्तकान्तश्छलेऽपि बहिरादरदर्शनपूर्वकयवनेन्द्रमेखनवर्णनं नामैकादशोऽंश मयूखः ॥ आदितश्चतुर्नवत्यधि

अपने धर्म के १ सौजन सुनाकर ॥ ५७।२ खाती नहीं जावें ऐसे ३ मनु ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पुर्यायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के पाटवी पुत्र दुर्जनसाल (दूदा) का मेड़तिया बलभद्र को अपनी सहायता से रामपुरे परखा कर वहीं पर अपना भी विवाह करना १ अपना पीछा करनेवाले मन्दसोर के हाकिम को विजय करके दोनों बरातों सहित बुन्दी छाना २ इस अपराध के सुनने से क्रुपित होकर सुर्जन के लघु पुत्र भोज को सेना सहित बादशाह का बुन्दी पर भेजना ३ दुर्जनसाल से पराजित होकर भोज के पीछे आने से अत्यन्त कोपवाले बादशाह अकबर का रणमस्तखांसहित राव सुर्जन को बुन्दी भेजना ४ रणमस्तखांसहित पिता को जीतकर नम्रना पूर्वक आये हुए कुमार दूदा को साथ लेकर राव सुर्जन का बादशाह के समीप जाना ५ कुमार दूदा को अमोघ अपराधों के कारण मन में छल और ऊपर से आदर दिखाकर अकबर के झिलने के वर्णन का ग्यारह-

कशततमः ॥ १९४ ॥

प्रायोन्नजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इंदु राम नृप १६३१ साक इत, द्विज कवि तुलसीदास ॥

किय नूतनपुर कोसला, रामायन मतिरासं ॥ १ ॥

सदैव छोरि यह हरि सरन, भयो रामपद भक्त ॥

मधु१सित२नवमी३कुज३मिलत, सो तिहिँ रचन प्रसक्त ॥ २ ॥

प्रकट१ प्रीति२ अंतर १ कपट २, सद्धि मिलत इतसाह ॥

किन्न छलि रु दूदा १९१११ कुमार, राज्य मुदित कुछ राह ॥३॥

सिक्ख दर्ई नृप मुर्जन १९०११ हिँ, कासी यह करि कज ॥

अरु पठयो रनमस्त इत, सूबा लवपुर सज्ज ॥ ४ ॥

तस सहाय दूदा १९११२ हु तँहिँ, हित दिखाइ लाहोर ॥

संगहि पठयो साहनैँ, जानि पिहित छल जोर ॥ ५ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

असैँ कुमार दूदा १९११२ तो रणमस्तके संग करि पहिलेही  
पंजाबमें भेजिदीनों ॥

अरु पीछैँसौँ आमैरकेअधीस कूर्म मानसिंहकौँ काबलके सू-  
बापर बिदाकीनों ॥

सिंधुनदीकेपार दिल्लीको अमल रह्यो सो काबलकी सीमाक-  
रि तहिँको सूबा कहायो ॥

ताको प्रबंध कराइबेकौँ राजा मानसिंहकौँ सासनगहायो ॥६॥

॥ दोहा ॥

वां ११मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ चोरानवे १९४मयूख हुए ॥  
१ बुद्धि का समूह ॥ १ ॥ २ घर. चैत्र सुदि नवमी ३मङ्गलवार. रचने में ४ आ-  
सक्त हुआ ॥ २ ॥ ५ बादशाह अकबर ॥३॥ ६ लाहोर के सूबे पर ॥४॥ ७ गुप्त  
८ काबुल की सीमा के सम्बन्ध से उस सूबे का नाम काबुल का सूबा हुआ ॥६॥

कुम्भहिँ इम जावत कछो, साह कपट अनुसार ॥

दूदा १९११ हनि लाहोर दुतै, पोछै जावहु पार ॥ ७ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

अैभै साह१को सासककछवाहर सौं गुप्त भयो तथापि गणम-  
स्तखानके पुत्रनै यह दूदा१९११को मारिवेकी बात जानिलीनी ॥

अरु तबही आपुनै पितापति एक १ पत्रिका अैसीरीति लिखि  
के भेजिदीनी ॥

सो दूदा १९११ अपनै बाँहबचनसँ बिस्वास करिआयो ॥

अरु अब ताको कपट करि मारिवेको १ वा गहिभेजिवेको २  
पोछैसौं साहनै साळा मानसिंह पठायो ॥ ८ ॥

दोहा ॥

तासौं अब हे तात तनु, दूदा१९११ संगहि देहु १ ॥

कहि रु भेजहु पिहित कै २, अति अधर्म लखि एहु ॥ ९ ॥

सचरणागद्यम् ॥

या पत्रिकाके पढतही रनमस्तनै दूदा१९११ सौं समस्तही अ-  
भिप्राय खोलिदीनी ॥

अरु कुमारनैहू दूजी २ कुमरानी राष्ट्रकूटी उमाकुमारि १९१२  
संगही ताको एरुसके बेस बनाइ द्वैही पति १ पत्नी२न तीजे ३  
तुरंगी जोइसी जगन्नाथ ३ सहित प्रच्छन्ननिकसि आपनै देसको  
प्रयान कीनी ॥

साहनै राजामानको कावलके सूबापर भेज्यो तबही नवाब नो  
सेरखान१ को मध्यम२ कुमार भोज १९१२ को अमल कराइवे  
काज बुंदी पठायो ॥

अरु इतको कुमर १ कुमरानी २ जोइसी जगन्नाथ ३ इनको

द्वादशाह के कपट के १ साथ २ शीघ्र ३ सिन्धु नदी के पार ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥  
शरीर को ॥ ९ ॥ ९ घोड़े का सवार ६ ज्योतिषी ७ छाने

त्रिक ३ ही कद्दीगीति प्रच्छन्न कडि कासीकी समताके महातीर्थ  
कुरुक्षेत्र आयो ॥ १० ॥

तहाँ जोइसी जगन्नाथकों ग्राम खानखेडा १ दान दैकैं पीछें रा  
खि मिथुनर ही मथुरा आवतभयो ॥

तहाँ आपुनो सातक अहरनाम एक १ ग्रामके अधीस रहोड  
छत्रसिंहको कुनर मिल्यो ताके साथ दैकैं कुमरानी राइकूटीकूँ  
ताके पिउंदर पठावतभयो ॥

आप इकल १ असवार आभैर आइ उहाँसों आर बाजी बदलि  
लायो सोहूँ टूंकनगरके परिसरलों पहुँचत पंचमीपधाराके प्रदान  
करि थकिरह्यो ॥

तब टुंकके चालुकन बीस २० सार्दी संग दैकैं आपुनै ग्वासा  
हयपैं चढाइ भेज्यो तानै नंदनांग्रामलों आवत कितोक आपुनो  
परिकरहु सम्मुह लह्यो ॥ ११ ॥

दोहा ॥

नृपसुत आवत नंदनां, बुंदियभट विस्वस्त ॥

सम्मुह जाइ कुमारसन, मिले सैगोद समस्त ॥ १२ ॥

वानैधर तिनमैं बली, द्वैसत २० धीर दुवाह ॥

मिले तिनहि कुमारहु मिल्यो, रक्षिष भरोसागह ॥ १३ ॥

कुमरानीदिग सिबिरैकार, सुन्यो परयो नोसर ॥

तिदिं जितन पहिलें तक्ष्मो, हृदा ११११ विरचि नदेर ॥ १४ ॥

सबखणमचसू ॥

नंदनांमों चलाइ कुमार हृदा ११११ रतिवाहदेकैं अकबर ३०११

काशी की १ पराधी करनेवाले ॥ १० ॥ २ जोड़ा में ३ पीछर ४ प्रमीप की भूमि  
तक ५ आशिकन्दित, भागित, ६ १०, ७ दलित, ८ छुन ९ न पंच प्रहार की वा  
रा में प्रजितम भारा में (हृदा ११११) चबने के कारण देसनार १ परगह ॥ ११ ॥  
८ बनेसा के ९ आनन्द पूर्वक ॥ १२ ॥ १० आना को धारण करनेवाले धीर  
॥ १३ ॥ ११ डेरा ॥ १४ ॥



के अनीकपै अचानक आइपरयो ॥

अरु अनेक जवननके ओघ पारि नोसेरखानकों भजाइ पहि-  
लैं सत्रुनके सिबिर लूटि पीछैं पुरमें प्रवेशकरयो ॥

पितामही जयवती १८८१ के पपन परि असैं अकबर ३७११  
सौ तोरि आपुनैं साहसकरि बूंदीको राज्य सम्हारयो ॥

अरु तारागढके तरैं निजनामकरि नयेमहल १ तथा गीहड़गढ २  
से दुर्ग २ बनाइ अपुनौ आतंक प्रसारयो ॥ १५ ॥

कुमारदूदा १९११ के कृष्णावती १९२१ रामा १९२१ स्या-  
मा १९२३ भानुकुमरि १९२४ ए च्यारि ४ही कन्या भई तिनमें पहि-  
ली १ तो आमैरके राजा मान २ कौं परिनाई दूजी २ रामपुराके अ-  
धीस गजसिंहके कुमार चंद्राउत चंद्रसिंह २ कौं विवाहदई ॥

तीजी ३ अरु चोथी ४ के स्वसुरालय न जानैगये ॥

अरु असैं ही या बडे १ कुमार के चतुर्भुज १९२१ परसुराम  
१९२१ स्यामसिंह १९२३ ए तीन ३ ही पुत्र भये ॥ १६ ॥

इनमें पहिलो १ पुत्र चतुर्भुज १९२१ सोहि दूजे २ नाम करि  
अमरसिंह १९२१ कहायो ॥

पीछैं इनकेही बंसनैं दूदाउत २२१८ कहाइ हहृद ११नमें बावी-  
समौ २२ भेद पायो ॥

असैंही पीछैं रायमल्लके कुपुत्र रामचंद्र १९२१ के अनंतर राम-  
सिंह १९२२ बुद्धिचंद्र १९२३ दीपचंद्र १९२४ पृथ्वीसिंह १९२५ स्या-  
मसिंह १९२६ प्रद्युम्न ११२७ पद्मसिंह १९२८ भगवदास १९२९  
कल्याण १९२१० सोही भुवनांग १९२१० ए दस १०ही भये ति-  
नमें कुलधर पंच ५नके बंसके हहृद ११नमें तेवीसमौ २३ भेद रा-  
यमल्लोत २३१२९ कहाये ॥

अकबर की १ सेना पर अचानक २ समूह ३ दादी ४ नीचे ५ भय फैलाया  
॥ १५ ॥ १६ ॥

ए द्वैरही नयेभेद भावीबातके प्रसंगमें आये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कछु यह हम भावी कहिय, वर्तमान अब बत ॥

सोह भज्यो नोसैर सुनि, पूरे कोपहिं पत ॥ १८ ॥

दल दुवलख २००००० सहाय दै, भेज्यो बुंदिय भोज १९१२ ॥

सक रद नृप १६३२ लगगत समय, मची बहुरि रन मोज ॥ १९ ॥

जानिय दूदा १९११ कुमर जब, बुंदिय अब रहिबो न ॥

बहि हित जो धारै न चढै, करै राज्य तब कोन ॥ २० ॥

यह बिचारि रनझारि असि, दोहिन हथ दिखाइ ॥

कथित १६३२ साक दूदा १६११ कुमर, कडिगो भय न कहाइ ॥

निजनिज पिउहर नारि निज, दूदा १६११ कुमर उदार ॥

दिल्लीमंडल दोरिबे, सज्ज भयो गहि सार ॥ २२ ॥

कब्यो परसुधर १ कुमरकै, स्वीय पुरोहित सत्य ॥

मनतै गो हम्मीर १९०११२ मिलि, यह भ्राता रहि अत्य ॥ २३ ॥

अग्रज १ दोरत भोज २ इत, बुंदिय देस बिनास ॥

सुनि पुरतै अवरोध सब, पठयो सुर्जन १९०१२ पास ॥ २४ ॥

कठि रद नृप १६३२ सक इम कुमर, जिहिं दूदा १९६१ अति जोर ॥

बुंदिय १ जुत मंडिय बहुल, दिल्लीय २ मंडल दोर ॥ २५ ॥

कुमरभोज १६१२ इत स्वीय करि, बुंदिय विरचि प्रवेस ॥

नये सचिव तय ३ किय निपुन, सुनि सु बनिक जससेस ॥ २६ ॥

॥ सचरगागद्यम् ॥

पहिले सचिव खटोर बनिक नारायण परलोक पायो जानि भो-

ज १९१२ कुमार बुंदी बैठतही खड्गारा चालुक जोगीदास १ दहि-  
या दोलतसिंह २ इन दोउनको जकुट २ तो कर्म सचिव कीनो ॥

॥ १७ ॥ कोप में १ प्राप्त होकर ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ मारे जावें तो ॥ २० ॥ २१ ॥ ३ खड्ग  
लेकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ ४ जनाना ॥ २४ ॥ ५ दौड़ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ६ खैराडा का  
७ जोड़ा

के अनीकपैं अचानक आइपरयो ॥

अरु अनेक जवननके ओघ पारि नोसेरग्वानको भजाइ पहिलैं सत्रुनके सिबिर लूटि पीछैं पुरमें प्रवेसकरयो ॥

पितामही जयवती १८८।१ के पयन परि असैं अकबर सेनासौं तोरि आपुनैं साहसकरि बुंदीको राज्य सम्हारयो ॥

अरु तारागढके तैरैं निजनामकरि नयेमहल १ तथा गीहड़गढ़ से दुर्ग २ बनाइ अपुनो अतंक प्रसारयो ॥ १५ ॥

कुमारदूदा १९१।१ के कृष्णावती १९२।१ रामा १९२।२ स्यामा १९२।३ भानुकुमरि १९२।४ ए च्यारि ४ही कन्या भई तिनमें पहिली १ तो आमैरकेराजा मान २ को परिनाई दूजी २ रामपुराके अधीस गजसिंहके कुमार चंद्राउत चंद्रसिंह २ को विवाहदई ॥

तीजी ३ अरु चौथी ४ के स्वसुरालय न जानैगये ॥

अरु असैं ही या बडै कुमार के चतुर्भुज १९२।१ परसुराम १९२।२ स्यामसिंह १९२।३ ए तीन ३ ही पुत्र भये ॥ १६ ॥

इनमें पहिलो १ पुत्र चतुर्भुज १९२।१ सोहि दूजे २ नाम करि अमरसिंह १९२।१ कहायो ॥

पीछैं इनकेही वंसनैं दूदाउत २२।१८ कहाइ हहृद १२नमें बावीसमों २२ भेद पायो ॥

असैंही पीछैं रायमल्लके कुपुत्र रामचंद्र १९२।१ के अनंतर रामसिंह १९२।२ बुद्धिचंद्र १९२।३ दीपचंद्र १९२।४ पृथ्वीसिंह १९२।५ स्यामसिंह १९२।६ प्रद्युम्न ११२।७ पद्मसिंह १९२।८ भगवद्दास १९२।९ कल्पान १९२।१० सोही भुवनांग १९२।१० ए दस १०ही भये तिनमें कुलधर पंच ५नके वंसके हहृद १२नमें तेवीसमों २३ भेद रायमल्लोत २३।२९ कहाये ॥

अकबर की १ सेना पर अचानक २ समूह ३ दादी ४ नीचे ५ भय फैलाया ॥ १५ ॥ १६ ॥

ए द्वैरही नयेभेद भावीबातके प्रसंगमें आये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कछु यह हम भावी कहिय, बर्तमान अव वत्त ॥

सोह भज्यो नोसेर सुनि, पूरे कोपहि पत्त ॥ १८ ॥

दल दुवलकख २००००० सहाय दै, भेज्यो बुंदिय भोज १९१२॥

सक रद नृप १६३२ लगगत समय, मची बहुरि रन मोज ॥ १९ ॥

जानिय दूदा १९११२ कुमार जब, बुंदिय अव रहिबो न ॥

चहि हित जो धारै न चढै, करै राज्य तब कोन ॥ २० ॥

यह बिचारि रनभारि असि, दोहिन हत्थ दिखाइ ॥

कथित १६३२ साक दूदा १६११२ कुमार, कढिगो भय न कहाइ ॥

निजनिज पिउहर नारि निज, दूदा १६११२ कुमार उदार ॥

दिल्लिमंडल दोरिबे, सज्ज भयो गहि सौर ॥ २२ ॥

कब्यो परमुधर १ कुमारकै, स्वीय पुरोहित सत्थ ॥

मनतै गो हम्मीर १९०११२ मिलि, यह भ्राता रहि अत्थ ॥ २३ ॥

अग्रज १ दोरत भोज २ इत, बुंदिय देस विनास ॥

सुनि पुरतै अवरोध सब, पठयो सुर्जन १९०१२ पास ॥ २४ ॥

कढि रद नृप १६३२ सक इम कुमार, जिहि दूदा १९६१२ अति जोर ॥

बुंदिय १ जुत मंडिय बहुल, दिल्लिय २ मंडल दोरै ॥ २५ ॥

कुमारभोज १६११२ इत स्वीय करि, बुंदिय विरचि प्रवेस ॥

नये सचिव लय ३ किय निपुन, सुनि सु बनिक जससेस ॥ २६ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

पहिले सचिव खटोर बनिक नारायण परलोक पायो जानि भोज १९११२ कुमार बुंदी बैठतही खड्गंगा चालुक जोगीदास १ दहिया दोलतसिंह २ इन दोउरनको जकुट २ तो कर्म सचिव कीनी ॥

॥ १७ ॥ कोप में १ प्राप्त होकर ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ मारे जावें तो ॥ २० ॥ २१ ॥ ३ खत्र लेकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ ४ जनाना ॥ २४ ॥ ५ दौड़ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ६ खैराडा का जोड़ा

अरु सनाढ्यविप्र लछमन३को बरुथेस बनाइ चोरीके प्रबंधपर  
प्रेरयो ताहीनै पीछैं खानखवास३सो उपटंक रूपातिमैं लीनों ॥

इतको आमैरके अधीस मानसिंह कावलके सूबामैं अच्छीरी-  
ति अकबर३७१ को अमल जमाइ हजूर आयो ॥

अरु लैवपुरतैं आपुनैं स्वसुर कुमारदुर्जनसल्ल१९११को पहिलैं  
ही कढिजैबेको उदंत सुनायो ॥ २७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सेना नगर मऊ इत साजैं, रायमल्ल खिच्ची १३ नृप राजैं ॥

भट पिथल रठोर तास भो, सु वसु रौछवानगर जास भो ॥ २८ ॥

हयनिमित्त जिहिंसठबिरच्योवपसुं, मातुलनिज खिच्ची१३महराज सु।  
तापरचंदरपुकारयो सुततस, तब अकबर३७१पठये दल जुत तस २९  
जे दुवखेर कंबध सु जित्यो, बलि बिस्वास दुर्घाँ मन वित्यो ॥

रायमल्ल हुव पिथल रच्छक, धरीन भ्रात हन्यो तापर धर्क ॥ ३० ॥  
बलि यातैं दै संग कटक बहु, पठयो साह सु कुम्म मान पहु ॥

लखैरिय दरं निकसि भग लहि, चम्मलिपुनि लंघ्यो सत्वर चहि ३१  
जो दूदा१९११व गिन्यो न जमाई, धाँदि पटकि दल लूट धमाई ॥

जिहिं बहीर पीछैं सन धनजुत, दल नदि लंघत लुटिलई द्रुत ॥ ३२ ॥  
मान जाइ पिथल वह मारयो, नृप खिच्ची१३लै मऊ निकारयो ॥

संगहितास कव्यो सुरतान१८९१सु, बलि पछुवारा रनसु भयो वसु  
रायमल्ल लखिप्रतापरानहिं, गो सु उदैपुर उजिभैं गुमानहिं ॥

जुइक१सर्मा लरिजित्ति मऊ जिम, मान मुरघोकगिसाहअमलइम३४  
दूदा१९११कुमार असह हित दोरयो, बुंदियशदिल्लियमुलक विलांग्यो

१ सेनापति २ पदवी ३ प्रसिद्ध ४ लाहौर से ५ वृत्तान्त ॥ २७ ॥ घोड़े के  
कारण ६ मारा ॥ २९ ॥ ७ दोनों ओर ८ क्रोध ॥ ३० ॥ लाखैरी के ९ दरें से  
निकलकर १० शीघ्रता ॥ ३१ ॥ ११ धाड़ा १२ आधी नदी उतरने पर ॥ ३२ ॥  
१३ मारा गया ॥ ३३ ॥ १४ छोड़कर १५ गुमान (घमंड) का १६ एक वर्ष खड़ा  
॥ ३४ ॥ १७ मथा

मातुलकुलरठोर मिलाइ रु, इकसमय थाँनालग आइ रु ॥ ३५ ॥  
 कहिपठई बुंदिय \* जुज्झन कहँ, तापर दल भोज १९१२हु पठयोतँहँ  
 कटकमाँहि कल्यान १९२१२० मुख्य किय, भोज १९१२हु इम  
 सम्मुह तिहिँ भेजिय ॥ ३६ ॥

कुमर मारि दूदा १९१११२ कल्यान रहिँ, स्व हय कटक मन्थ्यो  
 अवसानहिँ ॥

जिम इततँ हम्मोर १६०११ भ्रात जब, तिहिँ दिय पिहित खास नि-  
 ज हय तव ॥ ३७ ॥

तिम निकस्यो दूदा १९११२ चढि तापर, भीर भये ते बहुत कटे भर  
 जीवित पुनि जुज्झन जय जानत, मुरिगो तव दूदा १९११२ भय मानत  
 दास १९०१२ भरत १९०१२ खज्जरीके ७३ दुव २, हडे ६१ एहु  
 कुमरसंगी हुव ॥

दूदा १९११२ अनुमत लखि तिन्ह दोरि रु, जुटिलयो धन देस बिलोरि रु॥  
 कुमरभोज १९११२ उच्छिन्न तेहु किय, द्विज तिन्ह पिठि खवासखान किय  
 जिहिँ लगि पिठि उभै रडम ताँगे, न बलि बसत कहँ सुनै निहारे २१४०१  
 खानखवास बिरचि जिहिँ खेटे, मैने हानि रु प्रजादुख मेटे ॥

पुर बगोद धारुव रखिची १३ पहु, लरि सु कुमर दूदा १९११२ दंड्यो लँहु ॥  
 धिंगरमल्ल २ पकरि खिची १३ धन, सुलँव लटे छ अयुत ६०००००  
 लिय तासन ॥

पकरि बहोरा चंप३भानपुर, अयुत १००००० दम्भ लै तज्यो सु आतुर ॥  
 सारंगपुर १ दसोर २ सिरोभ ३ हु, लुंठि सेरपुर ४ मालपुरा ५ लहु ॥  
 बलि सह डावरी ६ रु बंभोरी ७, लुटि पट्टनि ८ रु मऊ ९ बिलोरी ॥ ४३ ॥  
 बलि सुखेत १० रीछवा ११ बकानी १२, मुरि इतिमुख लुटे बहु मानी ॥

॥ ३५ ॥ \* युद्ध करन के लिये ॥ ३६ ॥ १ अन्त २ छाने ॥ ३७ ॥ ३ भट ॥ ३८ ॥  
 ४ सलाह ५ मथकर ॥ ३९ ॥ ६ उच्छेदन (नाश) ७ ताड़े (निकाले) ॥ ४० ॥ ८ युद्ध  
 ९ मैनों को मारकर १० शीघ्र ॥ ४१ ॥ ११ ताँगे के साथ हजार टके लिये १२ पी-  
 डित ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ १३ इत्यादि

इम दूदा १९११ दोरत भुव उत १ इत २, मृध सब करे बेद सर भू १५४ मित ।  
सत्तावन ५७ तिनमें दूठ दीसों, दूदा १९११ रन किन्न दिल्लीसों ॥  
रन पचास ५० सैमताक राजन, सैतालीस ४७ धाँटि पातिनसन ॥ ४५ ॥  
कलह १ इते १५४ दूदा १९११ कुमार करि, धकतिम अकबर ३७ १ हनन  
चित्त धरि ॥

पातसाह बीजापुरको पुनि, सो पत्रन भेयो अतिबल सुनि ॥ ४६ ॥  
क्यों न लेहु दिल्ली ताप्रति कहि, बुल्लयो ताहि सहाय अप्प ब्रहि ॥  
तिहि दूदा १९११ सु बुल्लायो तत्थहि, सुनत कुमार चलयो चरसत्थहि ।  
मालवमें देवग्रामनामक, हुती बसति पहुँच्यो सु तहाँतक ॥  
ताके जनन महादुष्टन तँहँ, करि अधर्म दिन्नो विप ताँकँहँ ॥ ४८ ॥  
इम बसु गुन खट ससि १६३८ सक अंतर, तजिग देह दूदा १९११ तँदनंतर  
भोज १९१२ कुमार सु सुनत तज्यो भय, जिततित स्वभुव जमाइ  
रह्यो जय ॥ ४९ ॥

बसि कासी सुर्जन १९०१ इत भूवर, पूरबमग निर्भय किय पढ़र ॥  
विप्र च्यारि ४ बुंदिय बसवाये, पहु तिन्ह नाम सुनहु इम पाये ॥ ५० ॥  
पूर १ भट्ट सहोदर प्यारा, उपाध्याय लोहार मेवारा ॥  
श्रीगौड़ जु गोविंद ३ जोईसिय, क्रम संगहि औदीच्य बेनु ४ किय ॥ ५१ ॥  
बुंदी ए चउ ४ भेजि बसाये, पुर कासी बहु जस नृप पाये ॥  
कनकतुला जुग २ अप्प दान किय, दूठदय रजततुला पंचक ५ दिय  
पुरटतुला इक १ ठानि प्रसूपँहँ, तिम बुध द्विजन दिवाई सो तँहँ ॥  
दुहिती निजकर इक १ दिवाई, इक १ हि पौत्ररतन १९२१ बढ आई ॥ ५३ ॥  
ए दुवर रजततुला हुव औँसँ, जानहु अब आलय क्रम जैसेँ ॥  
उपवन इक १ पुरढिग तँनवायो, बसन राजमंदिर श्वनवायो ॥ ५४ ॥

१ युद्ध ॥ ४४ ॥ २ वरावर के राजाओं से ३ धाड़ा पटकनेवालों से ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४  
दलकारे के साथ ही ॥ ४७ ॥ ५ जिस पीछे ॥ ४८ ॥ ६ भूपति ७ सीधा ॥ ५० ॥ ८ ज्यो-  
तियो ॥ ५१ ॥ ९ चांदीका तुलादान ॥ ५२ ॥ १० एक सोने की तुला माता से  
कराई ११ पुत्रा के हाथ से ॥ ५३ ॥ १२ बाग को फैलाया ॥ ५४ ॥

सुरमंदिर पुरविच चोरासिय=४, कुंड बीस २० करिकिय वर कासिय  
मग जगदीस अवाधि भय भेट्यो, भयद चौर काहु न जन भेट्यो । ५५ ।

॥ सचरणागद्यम् ॥

हड्ड ६१ नको बेद साम ३ यातैं राज्यमैं हस्त १३ नक्षत्रपर हो तो  
श्रावैनिका को महँ तो ॥

अरु प्रजामैं सदैव पूर्णिमा १५ के दिन रहतो ॥

नरैस सुर्जन १९०११ नैं यह उत्सव पूर्णिमा १५ के दिन हू राखि  
द्वै २ ही समय हर्षके मानैं ॥

अरु हाडा ६१ मान १८६११ के पुत्र हम्मीर १६०११ नैं अब शु-  
क्लवापीके सम्मुख है सो वापी १ अरु गैडेको वाग २ कहावै सो  
उपवन २ ए दोर ही स्थान बुंदीमैं बनाये जानैं ॥ ५६ ॥

इतकों आमैरको अधीस मानसिंह १ आपनैं पुत्र जगत्सिंह २  
सहित अकबर ३७११ नैं आर्यावर्तके ईसानको न के अंतर आ-  
सामदेसके विजयकों पठायो ॥

तानैं ब्रह्मपुत्र नदमैं नावनकों पेलिपेलि सत्रुनको दुर्ग पायो सो  
ही तोपनको ताप दै रु नैठायो ॥

याही समरमैं भोज १९११ कुमारको जामाता असो राजामानसि-  
ह १ को कुमार जगत्सिंह २ परलोक पावत भयो ॥

ताकै सोक करि द्वि २ गुन को पारुन कूर्मराजके बिक्रम करि  
परनसौ पलटि आसाम अकबर ३७११ के आवत भयो ॥ ५७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

यहहि देस आसाम, कामरूप अपनैं कहत ॥

करि रन दुँकर काम, जित्तिलयो नृपमान जो ॥ ५८ ॥

ब्रह्मपुत्र नदबीच, जाही रन नावन जुरत ॥

मानकुमार लिय मीच, जगतसिंह अभिधान जिहिं ॥ ५९ ॥

१ भय देनेवाला ॥ ५९॥ २ आवण मास का उत्सव ४ वाग ॥ ५६॥ ३ नष्ट किया  
५ क्रांति में लाल उपराक्रम से ८ शत्रुओं से ॥ ५७॥ ९ कदिना ॥ ५८॥ १० मृत्यु ॥ ५९॥



इम दूदा १९११ दोरत भुव उत १ इत २, मृध सब करे बेद सर भू १५४ मित ।  
सत्तावन ५७ तिनमें हठ दीसों, दूदा १९११ रन किन्ने दिल्लीसों ॥  
रन पचास ५० सैमताके राजन, सैतालीस ४७ धौटिपातिनसन ॥ ४५ ॥  
कलह १ इते १५४ दूदा १९११ कुमार करि, धकतिम अकवर ३७ १ हनन  
चित्त धरि ॥

पातसाह बीजापुरको पुनि, सो पत्रन भेद्यो अतिबल सुनि ॥ ४६ ॥  
क्यों न लेहु दिल्ली तापति कहि, बुल्लयो ताहि सहाय अप्प बहि ॥  
तिहि दूदा १९११ सु बुलायो तत्थहि, सुनत कुमार चलयो चरसत्थहि ।  
मालवमें देवग्रामनामक, हुती बसति पहुँच्यो सु तहाँतक ॥  
ताके जनन महादुष्टन तँहँ, करि अधर्म दित्राँ बिप ताँकँहँ ॥ ४८ ॥  
इम वसु गुन खट ससि १६३८ सक अंतर, तजिग देह दूदा १९११ तँदनंतर  
भोज १९१२ कुमार सु सुनत तज्यो भय, जिततित स्वभुव जमाइ  
रह्यो जय ॥ ४९ ॥

बसि कासी सुर्जन १९०१ इत भूवर, पूरवमग निर्भय किय पदर ॥  
बिष च्यारि ४ बुँदिय बसवाये, पहु तिन्ह नाम सुनहु इम पाये ॥ ५० ॥  
पूर १ भट्ट सट्टोदर प्यारा, उपाध्याय लोहार मेवारा ॥  
श्रीगोड़ जु गोविंद ३ जोईसिय, क्रम संगहि औदीच्य वेनु ४ किय ॥ ५१ ॥  
बुँदी ए चउ ४ भेजि बसाये, पुर कासी बहु जस नृप पाये ॥  
कनकतुला जुग अप्प दान किय, हठदय रजततुला पंचक ५ दिय  
पुरतुला इक १ ठानि प्रसूपँहँ, तिम बुध द्विजन दिवाई सो तँहँ ॥  
दुहिती निजकर इक १ दिवाई, इक १ हि पौत्र रतन १९२१ बढ आई ॥ ५३ ॥  
ए दुवर रजततुला हुब औमें, जानहु अब आलय क्रम जैसँ ॥  
उपवन इक १ पुरहिग तँनवायो, बमन राजमंदिर श्वनवायो ॥ ५४ ॥

१ युद्ध ॥ ४४ ॥ २ वरावर के राजाओं में ३ धाड़ा पटकनेवालों से ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४  
हलकार के साथ ही ॥ ४७ ॥ ५ जिम पीछे ॥ ४८ ॥ ६ भूपति ७ सीधा ॥ ५० ॥ = ज्यो-  
तिषी ॥ ५१ ॥ ८ चाँदी का तुजादान ॥ ५२ ॥ ९ एक सोने की तुजा माता से  
कराई ११ पुत्रों के हाथ से ॥ ५३ ॥ १२ बाग को कैलाश ॥ ५४ ॥

सुरमंदिर पुरविच चोरासिय ८४, कुंड बीस २० करिकिय बर कासिय  
मग जगदीस अवाधि भय भेट्यो, भयद चौर काहु न जन भेट्यो ॥ ५५ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

हहु ६१ नको वेद साम ३ पातैं राज्यमैं हस्त १३ नक्षत्रपर हो तो  
श्रावैनिका को महँ तो ॥

अरु प्रजामैं सदैव पूर्णिमा १५ केदिन रहतो ॥

नरैस सुर्जन १९०१ नैं यह उत्सव पूर्णिमा १५ केदिनहू राखि  
द्वै २ ही समय हर्षके मानैं ॥

अरु हाडा ६१ मान १८६१ केपुत्र हम्मीर १६०१ नैं अब शु-  
क्लवापीके सम्मुख हैं सो बापी १ अरु गैडेकोवाग २ कहावै सो  
उपवन २ ए दोर हीस्थान बुंदीमैं बनाये जानैं ॥ ५६ ॥

इतकाँ आमैरको अधीस मानसिंह १ आपनैं पुत्र जगतसिंह २  
सहित अकबर ३७१ नैं आर्यावर्तके ईसानकोन ८ के अंतर आ-  
सामदेसके विजयकाँ पठायो ॥

तानैं ब्रह्मपुत्रनदमैं नावनकाँ पेलिपेलि सत्रुनको दुर्ग पायो सो  
ही तोपनको ताप दें रु नैठायो ॥

याहीसमरमैं भोज १९१२ कुमारको जामाता असो राजामानसिं-  
ह १ को कुमार जगतसिंह २ परलोक पावत भयो ॥

ताके सोक करि द्वि २ गुन कोपारुन कूर्मराजके विक्रम करि  
परनसों पलटि आसाम अकबर ३७१ के आवत भयो ॥ ५७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

यहहि देस आसाम, कामरूप अपनैं कहत ॥

करि रन दुँकर काम, जित्तिलयो नृपमान जो ॥ ५८ ॥

ब्रह्मपुत्र नदवीच, जाही रन नावन जुरत ॥

मानकुमग लिय मीचैं, जगतसिंह अभिधान जिहिं ॥ ५९ ॥

१ भय देनेवाला ॥ २५॥ २ आवण आस का उत्सव ४ वाग ॥ ५६॥ ५ नष्ट  
६ कांध में लाल उपराक्रम से ८ शत्रुओं से ॥ ५७॥ ९ काठिन ॥ ५८॥ १० मृत्यु ॥ ५९॥

राजा मानका आसाम विजय करना] षष्ठराशि-द्वादशमयूख (२३४०)

सुभमति १९२१ व्याहो सोहि, कुमर भोज १९११ वारी कनी ॥

जास सुता हुव जोहि, दाँरा ४०१२ कँहँ पीछँ दई ॥ ६० ॥

सुत हुव जास सलेम ४११२, नत्ती साहजिहान ३९१२ को ॥

वाको नाना एम, मानकुमर यह यँहँ मरयो ॥ ६१ ॥

सुनि आमैर सतीसु, ज्वलन बैठि सुभमति १९२१ जरी ॥

गहि कुलतियन गती सु, स्वर्ग गई निज पतिसहित ॥ ६२ ॥

सैसव बय लहि श्रेय, तनय हुतो रघुनाथ तस ॥

जोहि रतन १९२१ जाँमेय, कुमर भोज १६१२ दौहित्र कहि ॥ ६३ ॥

सो सिसु कछु भय साहि, आयो भजि नाना अर्यन ॥

इम बुंदीपुर याहि, भोज १९१२ रतन १६२१ रक्खयो भलै ॥ ६४ ॥

अखिखय एह उदंत, तँनु अंतर भावी तथा ॥

उत कूरमसुत अंत, भयो तदपि बिजई भयो ॥ ६५ ॥

भिरतहि हनि १ रु भजाइ २, कामरूपके कौलंजन ॥

इम देस सु अपनाइ, मान रह्यो कछुदिन मुदित ॥ ६६ ॥

॥ षट्पात् ॥

कामाक्षा जँहँ कहत आहि देवी वर आलय ॥

वाकी प्रतिकृति अपर २ दिपँत कौलन दुर्गालय ॥

ते हारत खिन ताहि गेरि संपू ज्हदविच गय ॥

पहु मौनहिँ इम स्वपन दयो देविय तिहिँ सोदँय ॥

मोकहँ निकासि लैचलि महिप जुरिहँ बैलि १ अर्यन २ जथा ॥

सेवक कहाय अनुकूल सुभ तव निकैत रहिहौ तथा ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

१ जिसके पुत्री हुई सो २ दाराशाह को ॥ ६० ॥ शाहजहाँ का ३ पोता ॥ ६१ ॥

४ अग्नि में ॥ ६२ ॥ ५ बालक अवस्था ॥ ६३ ॥ रत्नसिंह का ७ भानजा ॥ ६४ ॥ नाना के

दया ॥ ६५ ॥ यह वृत्तान्त कहा सो ९ कछु छेटी से होनवाला है ॥ ६६ ॥ १० वाममार्ग-

वाले लोकों को ११ प्रसन्न ॥ ६७ ॥ उस देवी की १२ मूर्ति १३ शोभायमान, हारते १४

समय १५ मान को १६ दया पूर्वक १७ बलिदान, तुम्हारे १८ घर में

आनी तब कूरम अधिप, जलतैं उदैरि जोहि ॥

गिनहु विदित आभैरगढ, सल्लहादेविय सोहि ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वागणो पष्ठदशौ बुन्दीशसुर्जन  
चरित्रे रणमस्तखांमहितसुर्जनपट्टपकुमारदुर्जनशल्यलाहोरगम-  
नतच्छलघातवधसूचनांतगनिभृतनिःसरणबुन्द्यागमन १ दूदाकू-  
तस्वसेनापतिनवशंखापगजयपलायनअवशातिरुष्टाकबरलक्षद्वय  
सैन्यसहितभोजप्रेषणदूदानिःसागणोत्तगभोजार्थबुन्दीवितरण २ य-  
वनेन्द्राकबरसभैन्यकूर्ममानसिंहमऊप्रस्थापन ३ राष्ट्रकूटपृथ्वीसिं-  
हवधोत्तरखिचीनृपरायमल्लनिःसागकमऊग्राहककर्ममानसिंहयवने-  
न्द्रान्तिकप्रत्यागमन ४ कुमारदुर्जनशल्यकृतबुन्दीदिल्लीप्रमुखगएल्ल  
शठनरणगणानानन्तरविषप्रयोगतन्मरण ५ आभैरगभूपमानसिंहासा-  
मदेशविजयनवाममार्गीयदेवीमूर्तिममानयनमल्लहादेवीसंज्ञयाऽऽमेर-  
दुर्गतस्थापनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥ आदितः पञ्चनवत्युत्तरशत-  
तमः ॥ ११५ ॥

॥ १७ ॥ जल से ? निकाल कर ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वागण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के पादवी पुत्र दुर्जनसाल का रणमस्तखा के साथ लाहोर में जाकर अपने छल घात से मानसिंह की सूचना मिलने पर छाने निकल कर बुन्दी आना ? अपने सेनापति नोशंगमान के दूदा से पराजित होकर भागने की खबर से क्रोधित अकबर का आज के साथ दो लाख सेना देकर दूदा को निकाल कर बुन्दी का राज्य भोज को देना २ बादशाह अकबर का कछवाहा मानसिंह को सेना सहित मऊ की ओर भेजना ३ उस मानसिंह का पृथ्वीसिंह राठौड़ को मारकर और बीभी राजा रायमल्ल को निकालकर मऊ के दर पीछा बादशाह के पास जाना ४ कुमार दूदा के बुन्दी और दिल्ली आदि देश लूटने में युद्धों की गणना के अनन्तर विष देने का कारण दूदा की मृत्यु होना ५ आभैरग के राजा मानसिंह का आनाम देश को विजय नानवाम मार्गियों की देवी की मूर्ति को लाकर सल्लहा देवी के नाम से आभैरग मठ पर स्थापन करने का चारदशों मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदित्य पञ्चसौ पचात्रये १६५ मयूख हुए ॥

राणा विक्रमका भानु कविपरकोप करना षष्ठ्याशि-त्रयोदशमयुख (२३४२)

प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भगिनी मान भुवालकी, अकबर ३७१७याह्यो अग्न ॥

तकै तस कूरम तपो, मिलि संबंधिन भग्न ॥ १ ॥

द्रुम १ रु गज २ ग्रामा ३दि दिय, जिहि तब भरनाँ जोरि ॥

कूटहि किति कशइवे, कूटहि कविन छकोरि ६००००००० ॥ २ ॥

विप्र १ सूत २ बंदि ३न तबहि, गनिकामत अवगाहि ॥

अनर्यदान लै बंदि वह, अपिप्य अति जस याहि ॥ ३ ॥

हहु ६१नको कुलबारहठ, सुकवि धीर सामोर ॥

पुब्बहि बिनुसंतति परयो, अन्वय न रह्यो ओर ॥ ४ ॥

हम तुमरे हुव बारहठ, सीति सु अब प्रभु राम २०३४ ॥

सुनिये जिम सच्चे सुकवि, धूरि गिनहि धीर १ धाम २ ॥ ५ ॥

मृग मृगैया जव अग्न मृत, महिप रत्न १ रविमल्ल २ ॥

सीसोद १न हहु २न सहज, हुव बिरोधपन हल्ल ॥ ६ ॥

रत्न १ अनुज विक्रम २ रह्यो, तस गहिय चित्तोर ॥

निज कवि जिहिं प्रेरे निखिल, अग्रज कथन ओर ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

भूसुर १ चारन २ भट्ट ३ सवन विक्रम निदेस सुनि ॥

रान रतन काठ्य रचि चविय तस जस प्रकर्म चुनि ॥

मिहिरमल्ल १८८१ कहि मूढ कुजस वरनिय ताको किल ॥

प्रभु ममकुल परपुरुष रूपात कवि भानु १६४२ रहे खिल ॥

रच्य न निदेस किय गनको विक्रम हुव तिनपर विमन ॥

१ भूपति की २ लज्जा ॥ १ ॥ ३ रूपय ४ झूठी कीर्ति कराने के लिये ५ झूठे क-  
वियों को ॥ २ ॥ ६ चारण ७ देश्या के मत का ८ अनोति का दान ९ दिया  
॥ ३ ॥ १० वंश ॥ ४ ॥ ११ भूमि ॥ १२ हरियों की १३ जिकार में ॥ १४ ॥ १५ सब  
॥ ७ ॥ १४ ब्राह्मण. विक्रमादित्य की १५ आज्ञा सुनकर १६ कहा. रत्नसिंह का  
१७ विशेष यश किया १८ सूर्यमल्ल को १९ निश्चय २० कुछ भी आज्ञा नहीं  
मानी २१ उदास

संसर्द गये न तवतैं सु कवि मन्निजडहि तिहिं औचि मन ॥ ८ ॥

विमनं१ विमन२ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सासन उंटोलाव १ सह, इनके लौ सब इठै ॥

असन१ बसन२ हित ग्राम इक१, रक्खिय केवल रिठै ॥ ९ ॥

किय तथहि निर्वाह कवि, पै न गये जडपास ॥

वहै नृप बुल्ले उदय इठि, आये तबहु उदास ॥ १० ॥

पधराये जिन्ह उदयपुर, गदियैत भानुगनेस ॥

प्रचुर ताल१ मंदिर२ प्रमुख, प्रोजिक्तै रचिय प्रदेस ॥ ११ ॥

अक्खिय तिनप्रति नृप उदय, मुख्य कविन यह मंग ॥

चवहिं सत्य१ अनृत२ न चवहिं, लोभहि रंच न लग्ग ॥ १२ ॥

छिति गंत लेहुव हमहिं छूमि, अग्रज कृत अपराध ॥

अरु रजपूतन आचरन, बरनहु जिम अधर्माध ॥ १३ ॥

॥ पट्टपात ॥

नृपहिं भानु१६१२तब नटि रु निजहु सासन गत लिय नन ॥

रक्खिय इक्क१ हि रिठै अंतहु बरन्यौ न पुब्ब रन ॥

पीछैं तदनुज पुत्र सुकवि ईस्वर१९५॥१आख्यासह ॥

पहु अब रान प्रताप बहुरि बुल्ले अति आग्रह ॥

अरु कहिय कविन कुलरीति यह कहत तिमहि जिम हम करहिं ।

अव रन सु सत्य बरनहु अभय धरहु स्वीर्य करि गंत धरहिं ॥ १४ ॥

वनें जिम न तुम वदहु त्रास बाहुजै२ न अजै तब ॥

१ सभा में ॥ ८ ॥ २ इष्ट (उत्तम अथवा अनुकूल) ३ रीठ नामक ग्राम ॥ ९ ॥ ४ उदयसिंह ने ॥ १० ॥ ५ कहते हैं कि उनों ने भाणा गणेश को पधराये ६ बहुत ७ छोड़े हुए प्रान्त में ॥ ११ ॥ ८ मार्ग ॥ १२ ॥ ९ गईहुई भूमि को हम को १० चमा करके लो ११ पाप मिटानेवाला ॥ १३ ॥ पहिले के युद्ध को १२ सत्य नहीं कहा १३ नाम. गईहुई भूमि को १४ अपनी करके धारण करो ॥ १४ ॥ आगनेवाले १५ चत्रियों को डर नहीं है

सुर्जनका ईश्वर कविको बुलाना] षष्टराशि-त्रयोदशमयूख (२३५१)

तिनहुमाँहिँ हम भक्त करी चाहि सुनि इच्छैँ कव ॥  
इष्ट सपथ१मम सपथ२अप्प वरनहु कृत वत्तिहिँ ॥  
इम निहोरि नृप इमहिँ सुदित गत दैनलग्यो महि ॥  
सु लई न तदपि ईस्वर१९५१सुकवि पै निदेस करनौ परयो ॥  
जव रैन कुजस१रविमल्ल१८८१जस२करि कंवित्व ख्यापित  
करयो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

निरपराध कहि हड्ड६१नृप१, सत्यसंध प्रभु सूर ॥  
रानश्चकित जडपापरत, कल्यो कुहक सठ कूर ॥ १६ ॥  
पै रहियो न बिचारि पुनि, तजि रिद्धि१हु कवि तत्थ ॥  
जावन चित्यो जोधपुर, स्व कुलधर्म नय सत्थ ॥ १७ ॥  
महिप प्रतापहु सुद्धमन, सपथ१प्रनति२ अनुसार ॥  
लाहि साहस३रखन लग्यो, प्रकटि कृतवद प्यार ॥ १८ ॥  
पै न रहै ईस्वर१९५१सुपहु, राम३०३१४सुनहु कुलराति ॥  
कहिय अधम कहि स्वामिकैँहँ, आश्रित रहन अनीति ॥ १९ ॥  
इत बुंदीहु उदंत यह, कुमर भोज१९१२करि करु ॥  
पठई विज्रति जनकप्रति, पुर कासिय लिखि पत्र ॥ २० ॥  
तव सुर्जन१९०१यह सुनि त्वरित, पठयो इम प्रतिपत्र ॥  
तुम सुत सादर बुद्धि तिन्ह, तकि हित रक्खहु तत्र ॥ २१ ॥  
जो न रहहिँ तो कछु जुकति, इहाँ तिनहिँ लौ आहु ॥  
कित कवि जैहँ सत्य करि, निज कुल सुजस निवाहु ॥ २२ ॥

मस्त हाथी हैं तो १ अङ्कुश २ सत्य ३ प्रसन्न होकर गईहुई भूमि को देने लगा  
४ राणा रत्नसिंह का ५ सूर्यमल्ल का ६ प्रसिद्ध किया ॥ १५ ॥ ७ सत्य प्रतिज्ञा वा-  
ला ८ छली ॥ १६ ॥ ९ नीति के साथ ॥ १७ ॥ १० नज्जता ११ सत्य बोलनेवाले से  
प्यार करके ॥ १८ ॥ १२ हे राजा रामसिंह, जिस स्वामि को अधम कहा उसी  
के १३ आश्रित रहना अनीति जानकर ॥ १९ ॥ १४ सुनकर १५ पत्र लिखकर  
॥ २० ॥ १६ शीघ्र १७ पीछा पत्र भेजा ॥ २१ ॥ १८ कुछ युक्ति करके ॥ २२ ॥

॥ षट्पात ॥

इत ईस्वर १९५१ कवि उज्जिह निलय मेवार धरा निज ॥

चलिय जोधपुर चाहि वृत्ति कविता जस बैनिज ॥

सावर पहुँचे सुनत भोज १९१२ निजकर दल भेजिय ॥

दोला १ जोगियदास २ दभिक १ चालुक्य २ संगदिय ॥

ए सचिव जाइ सावर उभय २ पटु तिन्ह इत लायै प्रनमि ॥

प्रभु राम २०३१ ४ स्वकविकुल परपुरुष जब आये हितभाव जमि ॥ २३ ॥

नगर बरोदन निकट अचल दक्खिन २ दूर अंतर ॥

संक्रमि कुमरहु सुमुख भोज १९१२ प्रकट्यो हित निर्भर ॥

इम बुंदिय तिन्ह आनि जिम सु आकूत जनायो ॥

एह न भायो इनहिं भावकुमरहिं सु न भायो ॥

तव कहिय होइ कासी तुमहु जावहु कवि निज ईष्ट जित ॥

रंचक अनेहिं सम्मिलि रहैं १ अरु अलक्ष्य वहै तीर्थ २ इत ॥ २४ ॥

कासी गो यह कुमर निजहिं लौ संग मुदित तव ॥

अधिपहु तोरन अवधि आप सम्मुह लौगो अब ॥

सह गौरव समुझाइ वदिय वित्तत कछु बासैर ॥

करि तिम हमहिं कृतघ्न तुमहिं जेवो न उचिततर ॥

हमैं न होहिं जो अप्प हित बैलि कहूँ गमन विचारिये ॥

कछु काल सफल यह गेह करि इतहु नेह अवधारिये ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

विते हड्ड ६२ न वारहठ, संतति विनु सामोर ॥

जिम सगोल सिमु बुल्लि जिन, अंकस्यै न किय ओर ॥ २६ ॥

१ छोड़कर. यश का २ व्यापार करने को ३ सावर नामक ग्राम में ४ पत्र ५ दक्षिणा चरित्र ६ समस्कार करके ॥ २३ ॥ दक्षिण के पर्वत तक उदरा के भीतर ८ जाकर. अपना ९ अभिप्राय. जो इस कवि को नहीं १० रुचा सो कुमर को भी नहीं रुचा. अपनी ११ इच्छा हाँपे जहाँ. कुछ १२ समय ॥ २४ ॥ बाहिर के द्वार १३ तक १४ अप्पन सहित १५ दिन १६ फिर १७ धारण करा ॥ २५ ॥ १८ गाँव



सीसखोंका बुंदीका पोळपात होना] पट्टराशि-द्वयोदशमयूख (२३१३)

तातैं लैं कुलवृत्ति तुम, पय हम सयन पुजाइ ॥

होहु व हड्ड६१न वारहठ, प्रकटि कृपा हित पाइ ॥ २७ ॥

कवि मंत्री नृपके कहत, अति आग्रह करि एह ॥

हुव हड्ड६१न कुलवारहठ, गिनि बुंदिय निज'गेह ॥ २८ ॥

कुंकुम१ मुक्ता२ प्रमुखं करि, पूजि सु पहु कवि पाय ॥

थिर१जो दिय जो पुनि अथिर, राम२०३-४सुनहु नरनाथ ॥ २९ ॥

आत१ जात२ गौरव१ उभय२, मिलतहि अप्प महीप ॥

बलि हुव२ सासन वृत्तिमैं, दये दुलभ कुलदीप ॥ ३० ॥

सुत१रु सुता२ उद्वे१ समय२, बलि दोउ२न संबंध१४ ॥

पुनि दोउ२नके व्याहर१६ पर, सिद्ध वृत्ति करि संघ ॥ ३१ ॥

पुंसव१न१७ रु सीमंत२१८ पुनि, नियतहि अट्ट८ अनेह ॥

दई वृत्ति तिनमैं दयो, आढ्य ग्राम जुग२'एह ॥ ३२ ॥

वम्हनखेट१ स नाम बलि, भीमखेट२धनमूरि ॥

दंग मऊ१के ग्राम हुव२, पहु अप्पे हित पूरि ॥ ३३ ॥

निलय राजमंदिरनिकट, उचित हवेली१अपि ॥

छमैं कुटुंब सब लेखछदै२, थिर महींदि दिय थपि ॥ ३४ ॥

अधिपमरन कुमरहि उचित, दल२१३रु निमंत्रन१४दैन३ ॥

व्याह१मरन२मुख हेतु बलि, आवन नृप कवि अैन१४ ॥ ३५ ॥

नहीं रक्खा ॥ २६ ॥ हमारे १ हाथों से पैर पुजाकर ॥ २७ ॥ २ आदि-  
स्थिर करके दिये थे सो बुन्दी का देश जाने के कारण ३ अस्थिर होगये, अर्थात्  
हमारे वे ग्राम भी बुन्दी के परगने वारां मऊ के साथ ही जो उन प्रांतों में  
थे वे सप गये ॥ २९ ॥ ४ ताजीम ॥ ३० ॥ ५ जन्म के समय ६ प्रतिज्ञा  
करके ॥ ३१ ॥ ७ संस्कार विशेष जो गर्भाधान से दूसरे अथवा तीसरे मही-  
ने में किया जाता है ८ आगरणी जो पञ्चमासी के नाम से प्रसिद्ध है.  
इस आठ वसंत पर १०वन युक्त ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११ समर्थ १२ लिखावट के  
पत्र में अर्थात् परवाने में १३ महा शब्द स्थिर कर दिना अर्थात् पहिले महा-  
शब्द लिखकर पीछे कवि शब्द लिखने की रीति टढ़ की ॥ ३४ ॥ १५ ॥ १४ पत्र-  
कवि के १५वर पर ॥ ३५ ॥

पच्छिम३सूरजपारितै, चउ४हृदयन छिग चाहि ॥

स्व पुरहु इक१ \*हृदा१सहित, जु दिय हवेती३जाहि ॥३६॥

सब इतिमुख आदर१सहित, दै १ समुचित सब ३ देयर ॥

§ अच्छैत मुत्तिय३दै अलिक, पोलिपात्र किय प्रेय ॥ ३७ ॥

॥ पट्टपातु ॥

हुव२हि वृत्तिमाँहिँ दिय ग्राम चम्मलि पर२तट गत ॥

कहि सब सासनमुकुट मही दोउ२न निश्चलमत ॥

बम्दनखेट१रु भीमखेट२जिन्ह नाम विदित जग ॥

बलिनिज भुव क्रय वस्तु मुल नृप कर जिहिँ जिहिँ मग ॥

वीसम२०विभाग३ताको हु बलि देय नियत करि तिन्ह दयो ॥

हममैं प्रजाहु प्रेरत महिप उपदा करि कहु४अप्ययो ॥३८॥

॥ दोहा ॥

गढ वंवावद बस गयो, धर मेवार अधीन ॥

सामोरन सासन सबहि, हुव ते नृप सब हीन ॥ ३९ ॥

समर१८१।७दये इत संवसथ, मन कवि इच्छित मानि ॥

कच्छोला१दिक खट६कथित, जेहु लेहु इम जानि ॥ ४० ॥

कच्छोला१संगहि कथित, रोसुंदारहरिना३रु ॥

दोहुंदा४गिंडोलि५दिय, पंचक खेट६हु चारु ॥ ४१ ॥

तेहु टारि रक्खे निमहि, निज अभुक्त नरनाइ ॥

अप्ये सासन तेहि अव, रक्खी सासन राह ॥ ४२ ॥

पे तिन्ह तुच्छहि जानि पहु, गुरु अप्पिय खट६ग्राम ॥

पट्टनिपुर्के पगनै, करि सासन जसकाम ॥ ४३ ॥

॥ दुकान ॥ ३६ ॥ १ उचित ३ दान, मोतिनों के § अन्न १ लताट में लगाकर  
२प्रिय ॥३७॥ अपनी भूमि में देवी जानेवाली वस्तु के मूल्य पर बीसवां हिस्सा  
४ निश्चय. राजा की २ प्रेरणा से ३ नजराना ॥३८॥ ७ ग्राम ८ वाञ्छित ॥४०॥  
९ सुन्दर ॥ ४१ ॥ १० राजा ने अपने खाल से में नहीं मिलाकर अभुक्त रक्खे  
११ उदक में हाथ नहीं डालने की रीति रक्खी ॥ ४२ ॥ १२ बड़े ॥ ४३ ॥

भीसणोंका बुंदीका पोछपात होना] पठराशि-त्रयोदशमयुख (२३५१)

तँहँ लवान१ गोहट्टरतिम, देवीखेटदहु देत ॥

इम खटदँ कौटा४ अपर२, पर्पट५ बक्र६ उपेत ॥ ४४ ॥

ते हे पट्टनि१ तंत्र तव, अब लक्ष्मैरि३ अधीन ॥

जे ए अधिक छद्गाम जँहँ, पहु अप्पे बसुपीन ॥ ४५ ॥

सासबसु८ खट६ ग्राम२ सह, नियंता१ नियंत२ निदान ॥

ए चउदह१४ नृप अप्पिकँ, दिय नैभव बहु दान ॥ ४६ ॥

॥ षट्पातु ॥

दुव२ अलिपुंजित द्विरँद१ तुरगर चालीस४० त्वरंगति ॥

मय३ बसु ससि१८ मय भत्त भये मंरुचपल भानमति ॥

सिबिका४१ रथ५१२ सिरुपाव६१३ दुलभ अंतिम६६ क१ इक१ दिय

आयुंध ७१ अरु आभरन ८१२ सु रुचि सब खास समप्पिय ॥

तिम अयुत पंच५००००० रूपय११ वितरि कुंकुम१ मुत्ति२ न तिलक करि  
पूजितेन प्रनेमिभोज१९१२ हिं भनिय धर्म बिरुंद अभिलाखँ धरि ७४१

॥ दोहा ॥

हे सुत, अब बय टुद्ध इम, संधौ तुम इमसाहि ॥

क्रम मूढन बोधँहु स्वकुल, ए व बारहठ आहि ॥ ४८ ॥

पय निज खंध दिवाइ पहु, इम चढाइ इम अक्खि ॥

पहुँचाये डेरन प्रथित, राजा स्व बिरुद रक्खि ॥ ४९ ॥

निज सगोत्र१ असगोत्र२ नृप, पुनि कवि थान पठाइ ॥

प्रथित करायउ सबन पँहँ, उपदादिकँ१ अधिकाइ ॥ ५० ॥

सक ख वेद रस ससि१६४० समय, गहि इम वैभव१ ग्राम२ ॥

१ सहित ॥ ४४ ॥ पाटण के २ अधिकार में थे ३ धन से पुष्ट ॥ ४५ ॥ पहिले-  
वाले ४ निश्चय उदक और पीछेवाले ५ अनिश्चय (जागीर) ॥ ४६ ॥ ६ अमरों के  
समूहवाले (अस्त) ७ हाथी = शीघ्रगतिवाले ९ अस्त ऊंट १० मारवाड़ के उत्पन्न  
११ देकर १२ पूजन कियेहुओं को भोज ने श्री प्रणाम किया १३ यश की १४  
अभिलाषा धरकर ॥ ४७ ॥ १५ प्रतिज्ञा. अपने कुल के मुखों को १६ समझाओ  
॥ ४८ ॥ ४९ ॥ १७ नजराना आदि ॥ ५० ॥

हुव हम तुमकुल बारहठ, रसारमन प्रभु राम२०३।४ ॥ ५१ ॥

हायन दुव२तत्थहि रहिय, कवि१जुत भोज१९१।२ कुमार ॥

धराधीस यह छत्रधरि, हुव तत्थहि अघहार ॥ ५२ ॥

दुव२आश्रम नृप१६४२ सक तदनु, मिलत दोजि३सित१मंग१॥

सुर्जन१९०।१नृप अंतिमसमय, इस किय उचित उदगंग ॥ ५३ ॥

कथित घट्ट मणिकर्णिका, पहु गंगातट पत्त ॥

दै विधि देय रु तजिदयो, गंगोदक रहि गंत ॥ ५४ ॥

सुर्जन१९०।१नृपको जनुसमय, सर हय तिथि१५७५मित साक ॥

पहु हुव सिव नृप १६११साकपर, छकि बुंदिय जस छाक ॥ ५५ ॥

अब दुव आश्रम४२साक इस, दिय इहिं नृप तजि देह ॥

तनु हुत करि रानी त्रि३कहि, गय संगहि सुरगेह ॥ ५६ ॥

भोज१९१।२स्व माताप्रति अनिय, अबहि जरहु क्यों अप्प ॥

दूदा१९१।१सो टरिगो दुसह, दाहक तुमहिं सदप ॥ ५७ ॥

विरचहु सुतके राज्यविच, दै निदेस सब दान ॥

सहि व्रतादिकरबिहितें सब, स्वर्गभजहु अवसानें ॥ ५८ ॥

कनकवती१९०।२पच्छोकह्यो, सुत तैं न कहिय साहु ॥

जसुदा१९०।१न भज्यो सुतहि जिम, दुभर्गो जिहिं दूदा१९१।१हु ॥

सु तो जरैं पतिसंगही, मैं ब रहों सुत मोहि ॥

मो पहिलैं जो तू मरै, तो दुव२हत्या तोहि ॥ ६० ॥

यह लिखि दै सु लिखी न इहिं तीन३हि रानिन तत्थ ॥

तनु हुत किय गंगातटहि, स्वामीके बपुसत्थ ॥ ६१ ॥

ब्रह्मनालिविच तिहिं निदित, अब तस चौरा१आहि ॥

१ हे श्रुपति रामसिंह ॥ ५१ ॥ २ वर्ष ३ पाप को मिटानेवाला हुआ अर्थात् देहान्त होगया ॥ ५२ ॥ ४ आर्गशिर ५ उदग्र ॥ ५३ ॥ ६ गङ्गा के जल में ७ शरीर रखकर ॥ ५४ ॥ ८ जन्म ॥ ५५ ॥ शरीर ६ होमकर ॥ ५६ ॥ १० सदप (वर्मद सहित) ॥ ५७ ॥ ११ उचित १२ अन्त में ॥ ५८ ॥ १३ साधु (श्रेष्ठ) १४ दुर्भाग्य ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

कथित डिगहि मणि कर्णिका, जु पै जनावत जाहि ॥ ६२ ॥

न रच्यो सुर्जन १६० १ कछु निलय, बुंदीनगर बिलेस ॥

कासी सब बिस्वे कहे, अब अैसे स्मृत एस ॥ ६३ ॥

प्रेतकरम सब किय प्रथित, अप्पनविधि अनुरूप ॥

मगग १ विमल १ तेरसि १ ३ तदनु, ओज १ ६ १ २ कुमार हुव भूप ॥ ६४ ॥

कवि ईस्वर १ ६ ५ १ जुत दिवस कछु, रहि तैं हँ हड्ड १ नरेस ॥

आयो पुनि पुर आगरा, अकवर ३ ७ १ २ सेवन एस ॥ ६५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठराशौ बुन्दीशसुर्जन-  
चरित्रे आमेरनृपमानसिंहस्य स्वस्वसूयवनेन्द्राकवरपाणिपीडनजन्य  
लज्जानिवारणार्थब्राह्मणचारणभागधट्टकोटिद्रुम्भवितरण १ हड्ड-  
क्षलियद्वारहठसामोरगोत्रचारणधीरवंशविनशनानन्तरहड्डद्वारहठीभू-  
तमिश्रणगोत्रचारणेश्वरदासदेयवस्तुनियमन २, बाराणसीमध्यरात्रि  
सुर्जनपञ्चत्वानन्तरभोजभूपतीभवनं त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥ आ-  
दितः परणवत्युत्तरशततमः ॥ १९६ ॥

॥ प्रायोजनदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पतारान्न इत उदयपुर, अप्पन विधि अनुसार ॥

अजधरम धेरिय अखिल, अज धरि सांसक भार ॥ १ ॥

॥ ६२ ॥ ६३ ॥ १ अखिल २ अप्पन सहस्र ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

इतिश्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सु-  
र्जन के चरित्र में आमेर के राजा बाजसिंह का अपनी पंक्ति नन्देन्द्राक अक-  
वर को परखाने की लज्जा मिटाने के कारण ब्राह्मण, चारण और जाटों को  
छः करोड़ का दान देना १ हाडा क्षत्रियों के द्वारहठ सामान का चारण  
धीर का वंश नष्ट होने पर ईशरदास नामक मन्त्रकण्ठाला के चारण को हा-  
डों का द्वारहठ होकर लेज निर्वास कराना २ कासी में राय सुर्जन का देहान्त  
होने पर भोज के भूपति होने का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि-  
से एक सौ छिनमें १९६ मयूख समाप्त हुए ॥

३ महाराणा प्रतापसिंह सम्पूर्ण ४ आर्य लोको को धर्म में चलाए; अथवा आ-  
र्यों के सब धर्मों की प्रेरणा की ॥ १ ॥

\* दसपुरमुख पत्तनदुलभ, लिय दिखिय धर लुट्टि ॥  
 इत उत बहु गंजे अडर, † करवालन अरि कुट्टि ॥ २ ॥  
 कहिय पुव्व तिम कति कहत, यह हुव सब भुव ईस ॥  
 वदत किते हुव यह बिदित, अर्द्धी ‡ अवनि अधीस ॥ ३ ॥  
 चितोरहु कनि जवन चहि, जसगाँहक लिय जिति ॥  
 जिमतिम तपिमेवार जिहि, किय निज विक्रम किति ॥ ४ ॥  
 चेटक१नाटक२मुख प्रचुर, रान लये हयराज ॥  
 न दयो पै भ्रातन निजन, इक३हुँ अस्व४बर बाज ॥ ५ ॥  
 इम रुठो लाको अनुज, सँपि न लहि सगतेसर ॥  
 सेवन अकवर३७१निजेन सह, आयो दिखिय एस ॥ ६ ॥

॥ पट्पात् ॥

दिल्ली१अकवरदंग२उभय२अकवर३७१निवास इम ॥  
 कहूँ यह१कहूँ यह२कहिय तदपि समुझहु संभव तिम ॥  
 सगतसिंह२ सीसोद साह आतहि सनमान्यो ॥  
 पहु इत रान प्रताप१ प्रवल प्रतिभट पहिचान्यो ॥  
 सजि बरूथ बहुरिहु आखिल प्रस्थित हुव मेवारपर ॥  
 सीमा प्रवेस पावतसमय कहत चलयो असि रानकर ॥ ७ ॥  
 अडर रान इक१लहि अर्ब चेटक चढि आयो ॥  
 व्यवहित रहि कछुबर साहदल मिलित सुहायो  
 सरत जवहि निजसीम अंग्रि दुवर दिय अकवर३७१ईम ॥

\* मन्दसौर आदि नगर † खड्गों से ॥ २ ॥ आधी ‡ भूमि के स्वामि ॥ ३ ॥ १  
 पक्ष के ग्राहक ने, अपने २ पराक्रम से ॥ ४ ॥ ३ बहुत घोड़े ॥ ५ ॥ ४ घोड़ा नहीं  
 मिलने के कारण सगतसिंह रुठ गया ५ अपने सेवकों सहित ॥ ६ ॥ ६ आगरा  
 ७ कहीं पर दिल्ली और कहीं पर आगरा कहा है परन्तु जिस समय जहाँ पर  
 बादशाह होवे वहाँ उसी स्थान को जानना चाहिये, यहाँ स्थान चढ़ाने का  
 प्रयोजन बादशाह की समीपता से है ८ दश ९ सेना १० चले, कहते हैं कि राणा  
 के हाथ का ११ खड्ग चला ॥ ७ ॥ चेटक नामक १२ घोड़े पर चढ़कर १३ गुप्त  
 बादशाह अपनी सीमा में १४ चला तब १५ चरण, अकबर के १६ हाथी ने

तैंहँ भारिय तरवारि नृपति जमकी रसनानिभ ॥  
 कछवाह मान भज अगग कछु भैयद खानबहलोल भट ॥  
 हो तैंहँ प्रताप तस सिरशहरयो कटि पकखरशहयश्जुत प्रकट ॥८॥  
 बहूत बह बहलोल खग उततैंहु चलयो खैर ॥  
 इकशतिहिं चेटक अंग्रि अवनि कटि रू प्रकटयो अर ॥  
 सो नृप जानि सक्यो न कढत अतिवेग यहै करि ॥  
 त्रय३ पय चेटक तुरग धुरंग मारयो सु पटी धरि ॥  
 जिहिं पिठि बहुतलग्गे जवन जैंहँ पहुँचत दुवर जानिकै ॥  
 कर जोरि अरज सगतेसरकिय मन अग्रजशहित मानिकै ॥६॥  
 अग्रज जब लिय अस्व याहि तिनमैं दिय इकशन ॥  
 तब रिसाइ सगतेसरमंगि भूखन मार्तासन ॥  
 तैसोही इकश तुरग लोल सोदागरतैं लहि ॥  
 इम अकवर३७।१ पैंहँ आइ रखि कछु दाय गयो रहि ॥  
 अब जानि त्रि३पय हय अग्रजशहिं चहत बचावन ईमैं चविय ॥  
 जो होइ हुकममैं पूगि जिहिं जातहि हनि आऊँ जविय ॥१०॥  
 साह कहिय सगतेसर जाहु मारहु रानशहिं जव ॥  
 बाजि दपटि यह बीर त्वरित सज्जित पहुँच्यो तब ॥  
 उभय२जवन हे अगग तिनहिं हनि अगग बढ्यो तिम ॥  
 रानशहिं अखिय रहहु अनुग यह सगतसिंह२ इम ॥  
 पूगतहि जवन तिन्ह मारि पथ कछु अप्पैहि आयो कहन ॥  
 हय त्रि३पयछोरि चढि जवनहय ब्रजहु भ्रात पन निब्वहन ॥११॥

॥ दोहा ॥

यमराज की १ जिह्वा के सदृश २ भयंकर ॥ ८ ॥ ३ तीक्ष्ण ४ भूमि पर ५ शीघ्र  
 ६ बहलोलखाँ की मारकर ७ घोड़े की अत्यन्त दौड़ का नाम पटी है ॥ ८ ॥ ८  
 माता से भूषण माँग कर ९ चपल १० अपने कुछ दायभाग को छोड़कर ११ बड़े  
 भाई के घोड़े को तीन पैरोंवाला जानकर १२ बेगवाले को ॥ १० ॥ १३ सेवक  
 १४ आप को १५ यवन के घोड़े पर चढ़कर जाओ ॥ ११ ॥

असंभूत सम दत्त यह, बाढत मन न बिसास ॥

जे अकबर २७१२ बानैत जिय, पहुँचै इक १ न पास ॥ १२ ॥

है २ ही पहुँचत जानि हठ, तिन्हि हनै सगतेस ॥

पहुँचै यह याकोहि पुनि, अहुतसूचक एस ॥ १३ ॥

विश्व जन दुकगहु अवहु, मन कज्ज न गहिपाल ॥

तनुके कज्ज वनै न तिन, वनै सु विरवै बाल ॥ १४ ॥

पिहित साहजल भिखि पता, करिखै पुव्व कही सु ॥

अनुज २हि पहुँचै नहि इतर २, शीति अचिज्ज रही सु ॥ १५ ॥

पै धुरधर अक के लुपन, तब हुन रान अताप ॥

विपिर्नधर्म हित जो बस्यो, आपत्तिहु सहि आप ॥ १६ ॥

वीरपनहु याकोहि बलि, उघस्यो सब सिर एक ॥

हठि इह तैं संभव बहत, अहुत जसहु अनेक ॥ १७ ॥

॥ बट्पात ॥

इक १ आकृति कति कहत हुतै उभय २हि बंधुन हय ॥

पहुँचि अनुज २इन पास रान हय लिय सु लिशप्य रय ॥

चपला स्व हय अग्रज १ चढाई पठयो पन पालन ॥

आखिय साहहि आइ कटि जवनन करवालि ॥

१ यह बात असम्भव सी है ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ २ दुष्कर मन से राजाओं के ३ कार्य भय भी करते हैं परंतु शरीर के कार्य उन प्रकार नहीं बनते ॥ १४ ॥ ४ सुख १ अन्य नहीं पहुँचें वे यह आश्रय की सीमा है ॥ १५ ॥ ५ उन कलिकाल के राजाओं से धुर धर धारण करनेवाला अदाराणा प्रतापसिंह दुष्टा जिन्होंने मेमरी के कतारण ती दे मन में वारु किया ॥ १६ ॥ ७ ॥ ८ इनकारना उन कथा का रोना संभव मालूम होना है क्योंकि उन ९ दमेत अहुत बस है १० एक से स्वपाते ११ तीन पैरों से चढ़ने वाला १२ नहीं से ॥ १३ ॥



पुनि छेदि इच्छा मम हय पयहु दुरसह भय जय खिन दया ।  
 सो रान प्रबल हजरत सुनहु गंजि सवन बचि इक १ गयो ॥ १८ ॥  
 संक्रान्ति अकबर ३७ १ सुनत ३३ पत बल अतुल उदैपुर ॥  
 चित्तोरहि १ कति बगत धारय बहुविध जुझन धुर ॥  
 जिहिं बहुदिन लरि जिति १ पुहनि मेवार लई पुनि ॥  
 रक्खन धर्महि रान बसिय बन बलि चित्रन चुनि ॥  
 पठई कंहाइ दिखीस पहु सासन मम कछु अनुसरहु ॥  
 नहिं और नृपन सम तुम नृपति रहि दिखिय सेवन करहु ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

हनरे रक्खहु दाग १ हय २, नौचै चिन्ह १ निसान २ ॥  
 कहिहैं हमरे ३ महाहि करि, राज्य करहु पहु रान ॥ २० ॥  
 नैक न मन्नी रान बटि, सुनहु राम २० ३ ४ प्रभु सोहु ॥  
 पठई कहि रहिहैं स्वपथ, हम नासहि किन होहु ॥ २१ ॥  
 इत अकबर हठ अकुरयो, प्रतिभट उतसु प्रताप २ ॥  
 मन्ग्यौ नन दुवर्धा १ मिलन, आप मतहिं तजि आप ॥ २२ ॥  
 सुनु रानकै दस १ सुनै, पै तिहिं समय प्रवीर ॥  
 पट्ट कुमर अमरेस १ पट्ट, भये जनकै मत भीर ॥ २३ ॥

॥ पद्यात् ॥

उभय २ पिता १ सुत २ अतुल कछि नारि १ न संगहि करि ॥  
 सब भट ३ परिजन ३ सहित धर्म न तजन मन पन धरि ॥  
 गहन वसनदिस १ गिरिन रहिय चिरंलौ तैंह राना ॥

१ गयो १ कितने ही चित्तोड़ कहते हैं १ भूजि १ आश्चर्य काके २ मेरा कुछे एक भाग और हनरे राजाओं के मज्जा दिखी मैं रक्त सेवा मत करो ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ वृत्त में ३ खंडा युद्ध ४ दोनों औरवालों ने मिलना नहीं माना आपसे ५ आपे को छोड़कर; अथवा जल (पराक्रम) को छोड़कर ॥ २२ ॥ ६ पिता के मत का सहायक युद्ध ॥ २३ ॥ ७ तुलना रहित ८ सेवक ९ पद्या की दिशा (पद्यन) के पर्वतों में १० बहुत समय पर्यंत

भोगे दृढ सब भांति खुल्लि आपति खजानाँ  
 कंटकी तरुन आहति कलित तिहि अंतर तन १ पत्र २ तनि ॥  
 इम विविध कायमान १ रु उटजरबनवाये नृप बान्य बनि ॥ २४ ॥  
 तहँ अंतहपुर तिमहिं सखिख रानि १ न कुमरानि २ न ॥  
 अप्प १ कुमर २ कछु ओटरहे बाहिर छंद छानिन ॥  
 आहति बाहिर अखिल बीर १ अरु अनुग २ बसाये ॥  
 पिउहर निज पठई न लार ना १ रनि कतिलाये ॥  
 अवरोधं तेहुं अखिखय अधिप निज पुत्रिन सम हित नियत ॥  
 साहस अमोघ इहिं संकटहु जवन भृत्य न बजै जियत ॥ २५ ॥  
 रह्यो इत सु भुव रुंधि सबल छोरै हठ साह न ॥  
 अधिक अधिक दुख देत रोकि अन्नागम राहन ॥  
 दूजे २ तीजे ३ दिवस स्वजन जुहि अन्न प्रवेसहिं ॥  
 बंटी सबन इक १ बेर अप्प लै तब अवसेसहिं ॥  
 कोद्रव १ गेवंधु २ न मिलै कबहु साक १ फल २ न व्है तब असन ॥  
 कलिहको खिलहु विच डारि कछु रंधिलहहिं हेरहि रसन ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

पै जव व्है तब पतिं परि, विचजिम्महिं नृप बैठि ॥  
 निजनिज स्वामिन खिल अनुग, पावहिं अवसर पैठि ॥ २७ ॥  
 रीति सु तहँ पीडिन रहै, जहँ विपदा बढिजाइ ॥

१ कांटोंवाले वृक्षों के २ घेरा लगाकर अर्थात् कांटों की बाड़ करके ३ विदित-  
 उन के भीतर तृण और पत्र छोकर अनेक प्रकार के ४ तृणकुड्य (तृणों की  
 झोंपड़ियाँ) ५ पर्णकुटी (पानों की छाई हुई टपरियाँ) बनाकर वहाँ राजा देवनवासी  
 हुआ ॥ २४ ॥ ७ जनाना, बाहर की ८ टपरियों में ९ बाड़ के बाहर के १०  
 जनाने में ११ निश्चय ॥ २५ ॥ १२ भूमि को भर कर १३ अन्न आने के मार्गों  
 को रोककर १४ अपने लोकों में जिस अन्न की परीसगारी होती थी वह सब  
 को दिन में एक समय बाँटकर बाकी रहता सो १५ आप लेता १६ कोदों १७  
 गेहूँ १८ भोजन, कल का १९ बाकी रहा हुआ २० स्वाद नहीं देखते थे ॥ २६ ॥  
 २१ बाकी के सेवक ॥ २७ ॥

पै सहभोजन उदयपुर, होत अबहु यह हाइ ॥ २८ ॥

पतारान इम धर्मपर, संधां अबितथ साहि ॥

रोर दुखहु सहि सुरिरहो, निजजन सब निर्बाहि ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

जिहिं विपत्ति गर्भजुत रहतकोउक कुमरानिय ॥

बासर तीजे३ कबहु अन्न स्वजनन तँहँ आनिय ॥

हुव तस रुष्टी होहि अखिल बट अद्धी१ अद्धी१ ॥

गुरुपन कारन द्वि२ गुन लाभ ताकँहँ इक१ लद्धी ॥

आहार करत आतापिनी गगन भूपटि तिहिँलैगई ॥

अमरेसनारि करि त्राहि वह भयबिहाल क्रंदत भई ॥ ३० ॥

स्वसुर१ सुनत बट स्वीय अद्ध१ पूर्ण्य तिहिँ अप्पिय ॥

सो३ हि स्वबट सस्सूर हु दंडित मग रहि बधूहिं दिय ॥

इम ताके हुव इक्क१ जोहु न लगी खावन जँहँ ॥

सस्सूर१तह सह सपथ कठिन भो१जी स्वबधूकँहँ ॥

दुखको न सेस अन्नहु दुलभ सूर तदपि संगररसिक ॥

अरि जवनतिमिर भास्यो उदित अज्जंनूपन रवि गन इक्क१ ॥ ३१ ॥

१ साध भोजन ॥ २८ ॥ २ प्रतिज्ञा ३ संत्य ४ भयंकर दुःख सहन करके ॥ २९ ॥

उस ५ विपत्ति में ६ तीजे दिन ७ रोटी ८ सब का आधी आधी रोटी का पण्ड होता था ९ गर्भवती के वडपन के कारण उस कुमरानी को एक रोटी मिलती थी भोजन करते समय १० संवली (चील्ह) ने भूपट मारकर ११ अमर सिंह की छी १२ रौने लगी ॥ ३० ॥ १३ अपने बट की आधी १४ रोटी उस कुमरानी को दी १५ प्यार के मार्ग से बहू को दी १६ मांगन सहित १७ कठिनाई से भोजन कराया तो भी १८ युद्ध के रसिक थे सो १९ यवन रूपी अन्ये रे में २० आर्य राजाओं में एक महाराणा का ही सूर्य के समान उदय दाख-

\* यहाँ पर अब भी यह रीति होना लिखकर ग्रन्थकर्ता ने खेद प्रकाश किया है सो अपने सरदारों को पंक्ति में बिठाकर अपने समुख भोजन कराना तो राजाओं को शोभा दायक है परन्तु सरदारों के सेवक पंक्ति में आकर सरदारों की उन्मिष्ट पातले बिखा की रीति के अनुसार उठा ले जाते थे यह रीति अनुचित समझकर महाराणा स्वरूपसिंह ने तोड़ दी सो अब नहीं है ॥

## ॥ सौराष्ट्र दोहा ॥

स्व धर्म दृढ संवादि, वै सीसःहु को भूरद्विने ॥

अग्गहु लक्ष्मणआदि, रानहि बहु सुरेरहे ॥ ३२ ॥

याहीतैं जन अज्ज, अज्जनइन भाखैं इनहिं ॥

लुपत धर्म कुलःलज्जः, तकी इन इतरन न तिम ॥ ३३ ॥

जवन कहत लँधु जानि, अप्पन अज्जन हिंदु इम ॥

मति जड सुहि दृढ मानि, हिंदु हम अज्जहु कहत ॥ ३४ ॥

हिंदुस्थान कहंत, अज्जावत्तहिं अज्ज इम ॥

लज्ज न सुनि हु लहंत, मिच्छन हिंदुस्तानमित ॥ ३५ ॥

भाख्यो हिंदुन भानु, जनन इमहि रानन जनन ॥

सो जँहँ ज्वलित कसानुं, हुव प्रताप अरि करन हुव ॥ ३६ ॥

भोजःमानसे अप, सचिव खानखानादि सब ॥

रहे स्व र्व अनुरूप, करन संधि समुझाईकै ॥

## ॥ षट्पात् ॥

पठई कहि मानप्रति रान यह वत्त धर्मरंत ॥

दुहितौ जवन न वै रु तुमहु संबंध उतहि तंत ॥

अपने धर्म को दृढ ? कहकर अपना मस्तक देते हैं तिनके सुनि और  
२ धन क्या है ३ गढ़ लक्ष्मणसिंह आदि ॥ ३२ ॥ इसी कारण से ४ आर्य  
लोक इनको ५ आर्यविवाकर कहते हैं, ६ अन्य लोकों ने देखी ऐसे  
इन्होंने नहीं देखी अर्थात् अपने धर्म में दृढ रहे ॥ ३३ ॥ यवनलोक ७ छोटे  
जानकर हम ८ आर्यों को हिन्दुवा कहते हैं सो सुखों ने उसी बात को दृढ  
मानकर ९ आर्य भी कहने हैं कि हम हिन्दु हैं; जा आज भी हिंदु कहते हैं  
॥ ३४ ॥ इसी कारण आर्यलोक भी ॥ ३५ ॥ १० आर्योंवत् को हिन्दुस्थान कहते  
हैं सो यवनों के समान हिन्दुस्थान कहने में लज्जा नहीं पाते ॥ ३६ ॥ इसका  
रण लोकों ने महाराणा के ११ वंश को हिन्दुवासरज कहा सो वहाँ जलते  
हुए १२ अग्नि के समान शत्रुओं को १३ होम करनेवाला प्रतापसिंह हुआ  
॥ ३७ ॥ १४ अपने अपने १५ सहश १६ मिलाप ॥ ३७ ॥ १७ धर्म में रत महाराणा  
प्रतापसिंह ने कछवाहा मानसिंह को कहलाया १८ पुत्री १९ इसकारण से

अकबर ३७।१ जासिपे अग्न क्यो न नत हमहि करावहु ॥  
अब पै सगपन १ असन शंति पेलै भव पावहु ॥  
जो पुनि नदेहु लिखि देहु जब लवकुल पुत्रिन तव लहहु ॥  
हम स्वीय भटन देतहि हरखि रुचत नतो मिरजा रहहु ॥३८॥  
॥ दोहा ॥

करो जवन लवकुल कानी, कहिय अग तुम कुपि ॥  
बिरागो सु न करि बचन, लज्ज १ धरम २ कुल ३ लुपि ॥३९॥  
कनी दूर जवनी करन, कछवाहहु लौ कोहु ॥  
तनया लवकुल जा ततो, हमको तुम अघ होहु ॥ ४० ॥  
॥ पट्टपात् ॥

जब प्रताप असु जाइ कुम्भ व्याहहु तव मो कुल ॥  
तनया १ व्याहहि न तनु तनय २ व्याहहु अतीत ३ तुल ॥  
कहां रुठि तुम कियउ सिंह इत आनि फेर ४ सम ॥  
हथी समुझै हमहि तुल्य समुझै न अंध तिम ॥  
कंदेरा लिय सु बहु मिलि किमहु तिम जो सखै हुकम तस ॥  
तो हमहि धर्म तुमलो तजे बढहु सिंह १ कित सिंह २ वस ॥४१॥  
मुख जो रक्खहु मुख साह श्रुति गहि समुझावहु ॥  
देग १ सु हय २ न दिवाइ चिन्ह ३ ध्वज ४ निजहि चलावहु ॥  
उत उत्तर यह अपि भूप भोज २ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

१ पहिलोई, अकबर के आग हमको २ नज क्यो नही कराया ३ भोजन ४ हम  
जब के बंश से. हम अपने ५ उमराओं को ही प्रसन्नता ले पुत्रिये देने हैं १ मि-  
रजा यह पानेवाले यवन ही रहो ॥ ३८ ॥ ७ कन्याओं को ॥३९॥ कन्याओं को  
८ यवनी कराना तो दूर रहा परन्तु ९ कछवाहा भी कोई १० लव बंश की  
कन्या जो लेवे तो हमको ११ पाप होओ ॥ ४० ॥ प्रतापसिंह के १२ प्राण जावे  
यव १३ पराधरी को छोड़कर १४ गोदड़ के समान. किसी प्रकार यदुतों ने मि-  
लकर १५ सिंह के रहने का स्थान लेलिया १६ तुमारे समान ॥४१॥ बादशाह  
का १७ कान पकड़ कर १८ घोड़ों के दाग दिवाकर ध्वजा में बादशाही चिन्ह  
पलाओ

उतमैं न दैन दुहिता यहहु जो बलि दै सोहु जवन ॥  
दूदा १९१।१रु तुम १६१।२हु तैनया दई कहहु धर्म रक्खहि कवन । ४३।

॥ दोहा ॥

मन्नहु अप्पहु अबहि किम, रक्खत ए छलराह ॥  
कछवाहनके जिन करहु, बिनु लिपि पुत्रन व्याह ॥ ४३ ॥  
अंतर १ मिच्छन बंधुर इम, ए ठग उप्पर १ ओर २ ॥  
अज कवन धिजै इनहिं, चोरै दीसंत चोर ॥ ४४ ॥  
॥ षट्पात् ॥

इम कहाइ रान इत बस्यो गिरिदुर्ग दुर्गवन ॥  
जहँ सकैं न अरि जाइ जाइ दिन निहि निजहि जन ॥  
साक पलास १ पलास २ पलासनके उटजन पहु ॥  
रहैं जलन तहँ रंच विसैं भर जदपि लागैं बहु ॥  
वरखा अनेहैं तहँ कछु बिघन अमर उटज अच्युत उदक ॥  
कुमरानि १ सहित अनुताप किय जगिनिस कुमर १ न पाइ जग । ४५ ॥  
पिहित सुनत सब पास रजनि विचरै उठि रानहु ॥  
कुमर उटजहि कहत कथन परिगो वह कानहु ॥  
अमर दुखित उच्चरिय अहो हम सम न अभागे ॥  
वन यह सहत विपत्ति जलहि टारन निस जागे ॥  
थिर सुजन १६०।१ रनयंभ काल हम सुनिय सत्त ७ किय ॥

१ पुत्री नहीं देना २ फिर ३ पुत्री ॥ ४२ ॥ ४ बिना लिखावट कराए ॥ ४३ ॥  
भीतर से ये यवनों के ५ सम्बन्धी हैं ६ कौन आर्य इनका विश्वास करे ७ चौक  
(प्रसिद्ध) ही चौर दीखते हैं ॥ ४४ ॥ ८ पर्वतों के गढ़ में ९ दुर्गम होकर; अथवा  
दुर्गम वन में १० वृक्षों के पत्तों का शाक और मांस का भोजन, इसी प्रकार  
११ पत्तों की छाई हुई झोंपड़ियों में रहे, अधिक झड़ लगता है जब उनमें  
जल १२ प्रवेश होजाता है १३ समय, अमरसिंह की झोंपड़ी में पानी १४  
टपका १५ सन्ताप किया ॥ ४५ ॥ कुमर को १६ झोंपड़ी के समीप, अमरसिंह  
का यह १७ कहना महाराणा प्रतापसिंह ने सुनलिया

सब अधिप धन्य हमरे सगे महलान वितवत यह समय ॥  
 प्रवलाहिं बुलाइ पद करि प्रहृत न क्यों गहत नृप संधि नय ॥ १८६ ॥  
 छंदन निलय निज छन्न आइ सुतो सुनि नृप यह ॥  
 परिकर बुल्लि रु प्रात सवन प्रति भनिय सुनुसह ॥  
 तुमहिं संधि जो रुचन करहु तो है अनुमत किला ॥  
 इक मो सठ अपराध वसहु क्यों सब कारा विल ॥  
 यह सुनत भीतै विस्मित अखिल कहत भये यह अज किम ॥  
 प्रभुसंग दुख रु सुख परिजनन जानहु हमहिं स्वछाँहें जिम ॥ १८७ ॥  
 कहिय रान जलकनन कुमार अनुतापे रति किय ॥  
 छिजि मिलहु पीछाँहें जु अब किन गिनहु उचित जिय ॥  
 करन राज्य नमि कुमार बुरे बालि हमहिं बतावैं ॥  
 हम छत सादर मिलहु जिम न अरि अरुचि जतावैं ॥  
 तब नहीतै भीत अखिय अमर गति दरिद्र आर्क्य न गदत ॥  
 मिलिवाहि मन्त्रि किम प्रभु कहहु निज परपरदासहु नदत ॥ १८८ ॥

॥ दांदा ॥

कुमार लजानो इम कहि रु, रह्यो सदा तिहिं राह ॥  
 जुगन रिपुन नैन जिमहि, पेने तिमहि सिपाह ॥ १८९ ॥

॥ पट्टपात् ॥

अकवम् २७१ पाउतग्रंत गया तैंहें धरिच्छकगन ॥

अन्ध १ राजा यह समय जहाँ से २ विनाते हैं. राजा पन के पद का ३ नाश  
 करके राजा संधि को ४ नीति क्यों नहीं बटल करने ॥ १८६ ॥ अपने ५ पत्तों के  
 पर से ६ परगत को ७ पृथ मति ८ तुम को मिलान करना रुचता है तो. नि-  
 भूय की सुन रही ९ लजाना है तो १० कहलाने में पसन्द है ११ घर में बर्धन  
 पीका १२ यह आज गया सुखा १३ लक्ष्यों को १४ अपनी छाया के लजान  
 लान १५ लाने जाना ॥ १८७ ॥ राशि में कुत्तर ने १८ लजान दिया १९ पीका  
 २० फिर. भय मत और २१ लजान होकर. दरिद्र को नीति २२ पनपान नहीं  
 क्यों है २३ मर्त्यता करना है २४ जिमपरार विना और पुन दोनों आशुओं  
 को २५ मलनेपाते में तिसप्रकार उनके सिपाही भी जीव्य और में ॥ १८८ ॥

इम प्रताप असुं अवधि प्रथित निबस्यो स्वधर्मपन ॥  
 स्वकुल समप्पन सुजस धर्म अप्पन थप्पन धुर ॥  
 स्वांमि सुनहु जिहिं समय इक्क१हुव यहहिउदैपुर ॥  
 बिपदाह सहि रु अब्दन बंहुन बिहित बहि रु थिति चहि बिपिन ॥  
 बितयो स्व आयु तस देस१बसुरअनल गयो करि साह इन ॥५०॥

॥ दोहा ॥

आतहि दिल्ली साह इम, सब भूपन हुव सिक्ख ॥  
 पास रह्यो इक्क१मानपहुं, तहँ साल्लर्कपन तिक्ख ॥ ५१ ॥  
 पुर आमैर१रु जोधपुर२, आदि बहुत अवनोस ॥  
 तियनजुतहि जे जाइ तिन्ह, सिक्ख रुचै रुचि सीस ॥ ५२ ॥  
 रहै साह पुरवाहिर१हि, जेहु कतिक लेजाइ ॥  
 बुंदी१मुख लखि बाहुरै, पुर निज साह पुगाइ ॥ ५३ ॥  
 इम भोज१९१२हुहुव२अब्दकी, लाहि सिक्ख रु जसलाह ॥  
 पहीलै बुंदिय स्वीयपुर, आयो सबल१उछाह ॥ ५४ ॥  
 कुमर रत्न१९२१संबंध किय, इन दिवसन आमैर ॥  
 क्रूरमतै जु लिखाइ क्रम, वदहिं सु अगग बिबैरै ॥ ५५ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

जान्यौं बुंदिय जाइ, प्रतिमग सुरि रहि साहपहँ ॥  
 पुनि उत सिक्खहिं पाइ, कासी रहिहँ अब्व कछु ॥ ५६ ॥  
 इम हड्ड१नकुल ईस, पुर बुंदी आयो प्रथम ॥  
 सब निजकरि बखसीस, बिसवासे इतके बिबिध ॥ ५७ ॥  
 अप्पन वंचित अगग, जो गनेसद्विज जोइसी ॥

१ प्राण रहा तब तक २ प्रसिद्ध ३ हे स्वामिरामसिंह ४. बहुत वर्षों तक ५ उचित धर्म धारण करके; अथवा उचित मार्गमें चलकर ६ वन में ॥५०॥ ७ राजा मानसिंह ८ सालापन की बड़ाई से ॥ ५१ ॥ ९ राजा १० प्रसन्नता ॥५२॥ बुन्दी ११ आदि "यहां अजहत् स्वार्थ लच्छना से बुन्दी आदि का राजा जानना चाहिये" ॥५३॥५४॥ १२ बिना डेप से आगे कहेंगे ॥५५॥५६॥५७॥ १३ ठगाहुआ.



दूदा १९१।१ कुमर उदयग, मारघो निज खिन रोकि मग ॥ ५८ ॥

महादेव जिहि नाम, सो नृप बुद्धि गनेससुत ॥

दिय तिहि वसु उद्दाम, निबसथ सासन डिम्मली १ ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे उदयपुराधिपमहाराणाप्रतापसिंहयवनेन्द्राकवररणानन्तरविपत्समयगिरिनिवासस्वधर्मदृढरक्षणा १, आर्यकुलकमलदिवाकरख्यातिकारणप्रसिद्धीकरण २, बुन्दीभूपभोजामैरनृपमानसिंहसचिवखानखानादिसन्धिवचनानादरकधर्मदृढीभूतराणाकृतपरूपोपालम्भमाननृपलज्जितकीकरण ३, विविधापत्प्राप्तिहेतुकुमारामरसिंहदुःखितवचनश्रवणसमकालमहाराणाकुमारत्रपासादन ४, यावजीवमहाराणाप्रतापसिंहधर्ममार्गस्थितिसहितान्यार्यनृपार्थदिल्लीद्वारस्वरुद्रराज्यगमनाज्ञावर्णनं चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

आदितः सप्तनवत्युत्तरशततमः ॥ १९७ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रायमल्ल दायाद रज, इत करि ईस्वरदास ॥

? उदय ॥ ५८ ॥ २ ग्राम ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह का बादशाह अकबर से युद्ध करके विपत्ति के समय पर्वतों में निवास काके अपने धर्म को दृढ़ रखना ? हिन्दुवास्तव कहलाने का कारण प्रसिद्ध करना २ बुन्दी के राजा भोज, आमैर के राजा मानसिंह और सचिव खानखाना आदि के सन्धि के वचनों को नहीं मानकर धर्म से दृढ़ रहने के राणा का कठोर उपात्म्यों से राजा मान को लज्जित करना ३ अनेक आपत्तियों भोगने के कारण कुमर अमरसिंह के दुःख के वचन सुनकर महाराणा का कुजर को लज्जित करना ४ जीवन पर्यन्त महाराणा प्रतापसिंह के धर्म पथ में रहने के सहित अन्य आर्य राजाओं को दिल्ली से अपने अपने राज्यों की सीख मिलने के वर्णन का चौदहवां १४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ सत्तानव १९७ मयूख हुए ॥ रायमल्ल का ३ भाई युद्ध करके

पैठो नगर मऊ१सु पुनि, नृपपन तजन निरास ॥ १ ॥

रहत साहके रच्छकन, भिरि वह कट्टि१भजाइ ॥

भोखिची१३गतभूमिको, अधिप मऊ१अपनाइ ॥ २ ॥

॥ पटपात ॥

सुनि असहन यह साहं दयो बुंदिय भोज१९१२हिं दल ॥

नृप तव सीमा निकट भयो प्रतिभट खिची१३खल ॥

गहि१वाहनि१तिहिं गहहु हड्ड६१दिय तुमहिं मऊ१हम ॥

सत्र ग्रामनजुत सीम करहु निज करि निज विक्रम ॥

सुनि यह निदेस बुंदिय सुपहु सवल सज्जि हंक्रिय सजव ॥

मनरतमिलाय पत्तन मऊ१लिय गरदाइ लग्यो न लव ॥ ३ ॥

॥ पद्धतिका ॥

इम वेदि मऊ१पुर असह अप्प, दै तोप दुरदिन हरि अरिन दप्प ॥

हल्ला करि तीजे३दिनहि हड्ड६१, अंदर पहु पैठो तोरि अहु ॥ ४ ॥

वज्जिय तहैं खग्नन निसित बाढ, गज्जिय१भट२भज्जिय१चक्रित

गाढर ॥

भूपतिकोतिहिं रन भांगिनेय, जिहिं नाम कन्ह मन रन अजेय ॥ ५ ॥

सो पूरकुमारि१९११लघुतनैय सूर, पानिपैकारि मातुलअग्न पूर ॥

पीवत कबंध रन पगन प्रान, वह कन्ह खिग्यो खग्नन अमान ॥ ६ ॥

इक जाम मच्छो मृध तहैं दुरओर, घोटैक१नर२लोटेक असहघोर ॥

पैने१ आसि हड्ड६१न करि प्रतीत, भजिगो वहईस्वरदास भीत ॥ ७ ॥

पहु भोज१९११मऊ१सह बिजय२पाड, भंडे तस प्रातहु दिय झुकाइ

कै कथित मान जय अनै३द्वित्य, पहिलैं हन्यो जु रठोर पित्त्य ॥ ८ ॥

॥ १ ॥ २ ॥ ३ पत्र ४ जत्र ५ अथवा ६ मारकर ७ पराक्रम ८ क्षीय ९ क्षण भी

नहीं लगा ॥ ३ ॥ ७ दप = आह (रांक) ॥ ४ ॥ ९ तीक्ष्ण १० भानजा ॥ ५ ॥ ११

छोटा पुत्र १२ पराक्रम १३ अतीत ॥ ६ ॥ १४ युद्ध १५ घोटै १६ मारनेवाला

१७ तीक्ष्ण ॥ ७ ॥ १८ राजा मानसिंह ने आसि जय करके १९ पृथ्वीसिंह

को ॥ ८ ॥

नंदन तदीय जो भानुनाम, पैठो सु रीछवा पुनि प्रकाम ॥  
 वस है मऊ रहि खिखि १३ न प्रबंध, क्यों तब लहैं न तिन भट कबंध ॥१॥  
 यह बहुरि रीछवानैर आइ, निज जानि रह्यो तब सब नमाइ ॥  
 भूपति जब खिखी १३ गो सु भागि, तस भटहु भजे गृह स्वस्व त्यागि १०  
 छलि तब कबंध तस संग छोरि, बैठो सु रीछवा रूपि बहोरि ॥  
 इहि हेतु मऊ रसन चढि अधीस, संक्रमिय भानु रहोरसीस ॥११॥  
 विंध्यो पुर जातहि तोप वार, दुखहु हूत सही पुर भू दशर ॥  
 कढि जान असंभव लखि कबंध, सय जोरि परयो पय प्रहतसंध ॥१२॥  
 न हन्यो १ न गह्यो २ तब पटु नरेस, आन्यो गिनि निज भट संग एस ॥  
 तदपि न दयो सुजित पुरहि ताहि, बुध और पटा दियनय निवाहि ॥१३॥  
 बुंदीके अनुगत नय प्रबंध, कहियत तवतैं तस कुल कबंध ॥  
 अथ तिहि कुल स्वानुज माल एस, निवसथ गागरनी हेनरेस ॥१४॥  
 अहं कलुक मऊ पहु रहि अग्रस्त, सीमाके ग्रामहु लखि समस्त ॥  
 सब ठाम रक्खि परिचितैं सिपाह, बलि आयो बुंदिय नरननाह ॥१५॥  
 प्रभु राम २० ३१ ४ मऊ १ ग्रामन उपेत, तवतैंहि भई हह ६ १ न निकेत ॥  
 बुंदिय दुःखद सिखहि विताइ, जिम स्व कुलधर्म राज्यहि जमाइ १६  
 खइरारौ चालुक सचिव खास, अभिधा जिहि जोगीदास १ आस ॥  
 दोलतसिंह १ सु दहिया द्वितीय २, रक्खे स्वराज्य निबहन गरीय ॥१७॥  
 जगभाखत खानखवास ३ जाहि, सुहि द्विज सनाढ्य सलमन ३ सराहि  
 लखि चोरनजारनरोध लाह, सेनानी रक्ख्यो प्रिय सिपाह ॥ १८ ॥

१ वसका पुत्र २ विशेष कामना से ॥१॥ ३ अपने अपने घर छोड़कर ॥१०॥ ११॥

४ घेरा ५ दो घड़ी ६ प्रतिज्ञा छोड़कर हाथ जोड़ कर चरणों में गिरा ॥१२॥

७ विजय क्रिया द्वाया पुर ८ चतुर ॥ १३ ॥ ९ सेवक १० राठोड ११ आप

के छोटे भाई का साला है १२ गागरणी में रहता है ॥ १४ ॥ १३ कुछदिन १४

निर्भय १५ परिचय पाएहुए सिपाहों को ॥ १५ ॥ हांडों के १६ घर में ॥ १६ ॥

१७ लैराड़ा १८ नाम ॥ १७ ॥ १८ रोकने का लाभ २० सेनापति ॥१८॥

हनि बारह १२ खेटनन गिनि देय, मैं नै खल गंजे जिहिं अमेय ॥  
 नृपभोज १६ १२ करत कासी निवास, इहिं छतन खलन जिघ्र्यास ॥  
 रच्छक रचि बोरी श्लूट रगोध, मुख गव प्रजाहिं दिय द्विज स्त्रोध ॥  
 जिहिं त्राम अगग वय १ काल २ जाँई, मेनीन प्रजागौर रोगमाँहिं ॥ २० ॥  
 बुंदी बलप्रति तीजो ३ प्रवीर, सो द्विजहु इहाँ रक्खंयो सु धीर ॥  
 अधिकार कुमरपन जिनिहिं अप्प, दिय पुव्वहिं दुजनन दलन दूप्प २१  
 उन तीनन बुंदीबल उपेत, नृप रक्खि चलो दिल्ली निकेत ॥  
 मेना नव बावन १ २ प्रांत सत्थ, पहुँच्यो नृपतिहिं जुत इंदपत्थ ॥ २२ ॥  
 जिन दिग्गज असइ सब रिपु लजाइ, वसुधांतल डंका इक १ बजाइ ॥  
 इम राज्य अकंटक बिरचि ईस, सो अकबर ३ ७ १ प्रतपत सबन सीस ॥  
 निज सचिव खानखाना नवाब, आनिष जिहिं सतम स्वकुल आव ॥  
 नामे खान १ सम अदल न्याय, दांता हातम २ सम सकल दाया २ ४  
 परको विक्रम ३ सम हरन पीर, बानाँ धर रुस्तुम ४ उपम वीर ॥  
 भाखा खट ६ संस्कृत सुखन भोज ५, मंजुल पर दूजो २ जनु मनोज १ २ ५  
 अरवी १ मुख निज भाखा अगाध ७, बिरचै सब बादिन वचन बाध ८  
 रिक्तवार ९ काव्यकर १० गुनन रासि ११, पटुमैनि १२ गुनगाहक १३ ज-  
 स प्रकासि ॥ २६ ॥  
 धुरधारक कर्ण १४ कि स्वामिधर्म, सब दईत १५ सील साकै १६ सु-  
 कर्म १७ ॥

मैनों के बारह खेड़ों को मारकर (विध्वंसकरके) १ त्याज्य २ प्रमाण रहित. दुष्टों  
 का जीने की आशानही ३ हुई ॥ १९ ॥ मैनों की स्त्रियों को ५ जागरण में. वह लोकोक्ति  
 है कि 'जिसके भय से थपड़े हुए छोकरे ज्योते हैं'; अथवा जिसके बास से मैनों की  
 स्त्रियों की अवस्था और उनकी समय जागरण के रोग में ही बीतता है ॥ २० ॥  
 ६ दर्प ॥ २१ ॥ ७ इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) ॥ २२ ॥ ८ मंजुल पर ॥ २३ ॥ ९ क्रान्ति ॥ २४ ॥  
 १० नहीं भागने का चिन्ह धारण करनेवाला. संस्कृत ११ आदि १२ सुन्दरता  
 में १३ कायदेव ॥ २५ ॥ १४ शास्त्रार्थ करनेवालों के १५ चतुरलों का मणि ॥ २६ ॥  
 सय का १६ प्यारा १७ शकर के समान

जिहि छत खल कथन \* मूकजीह १८, सरल १९हि । अज १ अगगहु  
रहत सीहर ॥ २७ ॥

लौकिक पटु १९ सकरुन २० ॥ अजु २१ सलज्ज २२, सतपुरुखन संगति  
सतत सज्ज २३ ॥

निज स्वामि अशुद्धय तेहु २४ नेक २५, दढ पन २६ समदरसी २७ यहहि  
एक १ ॥ २८ ॥

इक बुध दरिद्र द्विज रिस उपेत, हुत होहु मिच्छ खय साप द्वेत ॥  
सुनि कहिय होहु पंचमि ५ समास, तब द्विज प्रसन्न हुव बचन तास २९  
पगघहि निज फैंकी रीझि पास, नहिं विफल उदारन रीझ नास ॥  
बहु छिद्र १ मलिन २ जनु कूट बीस २०, सुहि लौ नवाव बंधी स्वसीस ३०  
माँ १ वानी २ दुव २ इक १ धर मिलाइ, द्विज किय सु आढ्य बहु बसु दिलाइ  
इक धनिक नारि बय १ भदन २ अंध, सो कबहु लख्यो जावत सुसंध ३१  
तब लज्जहि जुबन मत्त तोरि, नवबय नवाव बुल्लयो निहोरि ॥  
तस पिहित जतन अनुकूल तत्थ, सो गो हु खानखाना समत्थ ॥ ३२ ॥

जिसके होते हुए दुष्ट लोक दुष्टता की कथा करने में \* गूंगे थे । बकरे के आगे  
सिंह भी सीधा रहता था । लौकिक के कामों में चतुर ॥ २७ ॥ § करुणा सहित  
॥ सीधा १ निरन्तर सत्पुरुषों की संगति करनेवाला २ प्रताप ३ निर्बल और  
सबल को समान देखने वाला ॥ २८ ॥ एक दरिद्री ४ पण्डित ब्राह्मण ने क्रोध  
सहित आप दिया कि यवनों का शीघ्र नाश होजावे यह सुनकर खानखाना  
ने कहा कि यहां पञ्चमी विभक्ति का ५ समास होवे (अर्थात् तुमने षष्ठी वि-  
भक्ती के समास से आप दिया है कि म्लेच्छों का नाश होवे यहां पंचमी वि-  
भक्ति का समास होवे अर्थात् "म्लेच्छों से नाश होवे" व्याकरण का कायदा है  
कि समास में विभक्ती का लोप होजाता है) ॥ २९ ॥ नवाव ने यह पगड़ी लेकर  
६ अपने मस्तक पर बांध ली ॥ ३० ॥ ७ लक्ष्मी और ८ सरस्वती को एक घर में  
मिलाकर उस ब्राह्मण को ९ धनवान् कर दिया १० एक धनवान् की स्त्री. अ-  
वस्था और ११ कामदेव से अन्ध थी उसने १२ उस अष्ट प्रतिज्ञावाले खानखाना  
को जाते देखा ॥ ३१ ॥ १३ जोवन में मस्त होने के कारण लज्जा को तोड़कर  
१४ छाने १५ उस व्यभिचार के अनुकूल ॥ ३२ ॥

बलि बुल्लयो बुल्लयो क्यों विकाल, बुल्ली वह तुम सम लहने वाला ।  
 आधानहि संसय कहिय आप, बलि है सुताहु बिथरै बिलाप ३३  
 है सुत हु मरै अल्पायु हाइ, खल है ४ तो प्रत्युत हृदय खाइ ॥  
 अरु व्यंग छेहु मुख देन ऐन, है मूढ ६ तोहु मनकाम है न ॥ ३४ ॥  
 हायन इतके मम तुल्लय होन, कायहु रहै न ८ तो लखहि कोन ॥  
 तातैं तू जननी १ मैं तनू २, सासन सिर बहिहौं कृत सुपूज ॥ ३५ ॥  
 सुत गेह पधारहु जो सुहात १, मैं वा मिलिजैहौं नित्य २ मात ॥  
 इम कहि लगात निज मुख उरो ३, भिटिगो ब्रीडैं करि तस मनो ४ ॥  
 सँध जोरि घनमि तबतैं सनेह, आर्जनम गिनी तिहिं भाइ एह ॥  
 अरु लोटि सीस करि तास अंक, आयो पहिले १ घर वह असंक ॥ ३७ ॥  
 स्मरै १ पारत २ जारत इहिं समान, प्रभु राम २० २१ ४ न जोगी मति प्रमान  
 इहिं १ तजिय विजैन तिय सेक आइ २, जोगी २ दृग मुंदि १ रु बनहु जाइ ३ ८  
 मोलविन १ द्विजन २ कहुं ओई नाहिं, अफिखय गुन निज निज महत आहिं  
 मध्यस्थ नवावहि द्विजन मंडि, खत लिख कराइ मत पगन खंडि ॥ ३९ ॥  
 यह लिपि नवाव किय कृष्ण अंत, मैं जानत इकसन इक महंत  
 वंसी विमृषितादिक बनाइ, दिय मुख्य हरि १ रु संस्कृत २ दिखाइ ॥ ४० ॥

१ सुभक्त को बिना सजय क्यों बुलाया. तुम्हारे सजान वाला २ लेने के लिये  
 अर्थात् तुम से सम्भोग करने में तुम्हारे सहज ही वाला होवेगा. खानखाना  
 ने कहा कि प्रथम तो ३ गर्भ रहने में ही सन्नेह है और जो गर्भ रहकर पुत्री  
 हुई तो अधिक बिलाप होवेगा ॥ ३३ ॥ पुत्र होकर ४ थोड़ी अपस्था में भरजावे  
 तो भी दुःख है, और दुष्ट होवे तो ५ उलटा हृदय खावेगा. घर में सुख देने में  
 ६ व्यंगवाला अर्थात् दुःख देनेवाला ॥ ३४ ॥ मैं जितने ७ वर्ष में हुआ हूँ उतने  
 ही वर्षों में मेरे समान होसक्ता है जब तक तू जीवित ही नहीं रही तो कौन  
 देखेगा इसकारण तू माता और मैं तेरा ८ पुत्र हूँ सो तेरी आज्ञा मस्तक पर  
 धारण करूंगा ॥ ३५ ॥ ९ स्तन के सुख लगाते ही १० उस लज्जा से. उसका ११  
 कामदेव भिटगया ॥ ३६ ॥ १२ हाथ जोड़कर १३ जन्म पर्यन्त ॥ ३७ ॥ १४ का-  
 मदेव को १५ ओक्तान्त में ॥ ३८ ॥ मोलवियों ने और ब्राह्मणों ने कुछ १६ आइ  
 मे अपने अपने गुणों को बड़े बताए जहाँ पण्डितों ने इस नवाव को मध्यस्थ  
 किया और मोलवियों के मत को खण्डन करके विजय पत्र लिखवा लिया  
 ॥ ३९ ॥ १७ अन्त में कृष्ण को मुख्य बताकर यह लेख किया १८ वंशी आदि  
 में भूषण युक्त करके विष्णु और संस्कृत को मुख्य दिखाया ॥ ४० ॥

छितितल वसंततिलका सु छंद, अजहुं बढात भक्तन अनंद ॥  
 सुरवानि१ जवनवानि२रुहुं२सीर३, बरनै बहु ईति१ सुख जिहिं प्रवीर ४१  
 इक कहिय अरि१न अपकार२अपि, थिर मित्रजन१न उपकार२थपि  
 बंधु१न सतकार२हि तिम बनाइ, प्रख्यात होत अधिकार पाइ ॥४२॥  
 ईहिं बिहसि कहिय तजि फल उमंग, सोहत उपकारहि सबन संग ॥  
 असो नवाव यह बुध बजीर, बहरामतनय हत अनय वीर ॥ ४३ ॥  
 सुनि बंदि गंगकृत काव्यसीस, त्रि३००००० रंहित दिय रूपय ल-  
 कखतीस २७००००० ॥

प्रभुजैसो अकबर३७१२पातसाह१, तैसोहि सचिव२किय दैव ताह ४४  
 इक सेख जवनमत निपुन आस, जग अबुलफजल३कुट नाम जास  
 अकबर३७१२सौ तीजो३रत्न एह, छर्म सर्व सोलविन मति अच्छह ४५  
 आईनअकबरी१ग्रंथ आदि, तिहिं रचिय जवनबानीं विगादि ॥  
 पुनि अज्जर्मके दफतर२प्रबंध३, बहु किय जवनानीं लेख बंध ॥४६॥

प्रबंध १ खबंध २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अरु टोडरमल्ल४हु पटु अलाभ्य, सु वनिक हुव जोयो४रत्न सभ्य ४७  
 जासहि सहाय तिहिं सेख३जात, विरची निजलिपि२मय अज्ज-वात ॥  
 छर्म कान्बकुब्ज बैच कुरन छिप्र, वीरबल१रत्न पंचम३सु विप्र ॥४८॥  
 इम रत्न अपूरव गानघौनै, ससुअहु नृप छहो ६ तानसैन६ ॥

१ भूतल-पर उम खानखाना का जगया हुआ वसंततिलका छंद २ आज भी  
 ३ संस्कृत ४ दोनों मिली हुई आका ५ इत्यादि ॥ ४१ ॥ किसी एक ने कहा कि  
 शत्रुओं को अपकार १ देकर मित्रों का उपकार करना चाहिए ७ विख्यात  
 ॥ ४२ ॥ ८ इस नवाब ने हँसकर कहा कि पीछा फल लेने की आशा छोड़कर  
 सब के साथ उपकार ही करना चाहिये ९ अन्याय को मिटानेवाला ॥ ४३ ॥  
 १० जाट ॥ ४४ ॥ ११ समर्थ कुंनल के समान ॥ ४५ ॥ १२ फार्सी भाषा में १३  
 विशेष कथन करनेवाला होकर; अथवा बाद रहित १४ आर्थों के दफतर ग्रंथ  
 १५ फारसी में लेख बंध किये ॥ ४६ ॥ १६ सज्जमाद ॥ ४७ ॥ जिस टोडरमल्ल  
 की सहायता से उस अबुलफजल ने अपनी १७ भाषा में आर्थों की बानीं  
 (कुषि वाग्विजय आदि का ग्रंथ)-रची १८ समर्थ १९ वचन की शीघ्र स्फुरण में  
 ॥ ४८ ॥ २० गान के स्थान में

इन साहसचिव खटवरत्न अथ, ए तिहिँ अनेह सुनियत समथ ४९  
रत्न नव९ कहत कति नृपतिराम २०३१४, न बिदित तँहँ तीन३न  
खिलन नाम ॥

इह चोथो४टोडरमल्ल४आहि, जन कति कायस्थहु कहत जाहि ॥५०॥  
तिम साह पुब्व बितये छतीस३६, अकबर३७११ सम तिनबिच न  
हुव ईस ॥

अरु श्रुति १ कुरान २ मत जुग २ हि एह, सिरधरहिँ तदपि इत १  
अति सनेह ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

बहुत न्याय इतरन बिसम, सुमति निवेरे साह १ ॥

उदधि खानखानाँ १ हु इम, थाहे दुगम अथाह ॥ ५२ ॥

मुलक किते जितन १ मथन २, मन्थ्योँ समुचित मान ॥

जिहिँ काबल १ आसाम २ जिम, थिर दब्बे बहु थान ॥ ५३ ॥

अज्जन बिच कूरम यहहि, गिन्योँ भरोसा गैल ॥

हुरम अनुजके बिदित हुव, फोजनवारे फैल ॥ ५४ ॥

भगिनी कति भगवंतकी, नृपति मानकी नाँहि ॥

व्पाह्यो अकबर३७११ जो बँदत, मति तँहँ द्वाँपरमाँहि ॥ ५५ ॥

वत्त रहहु तिम जिम बनी, आग्रहँ हमहिँ न अथ ॥

बिजुमूलहि जन जो बदत, सो न लिखहिँ हठ मथ ॥ ५६ ॥

अकबर ३७११ सो दिल्ली अयनँ, न इक १ भयो जवनेस ॥

सहित समर्थन प्रभु सुनहु, अगग किरँन बिच ऐस ॥ ५७ ॥

१ उस अकबर के समय में ॥ ४९ ॥ २ हे राजा रामसिंह ३ बाकी के तीन  
रत्नों के नाम प्रसिद्ध नहीं हैं ॥ ५० ॥ ४ अकबर से पहिले छतीस बादशाह  
वात गये ५ वेद ६ वेद में अधिक स्नेह था ॥ ५१ ॥ ७ उलटे ८ दुर्गम ॥ ५२ ॥ ९  
राजा मानसिंह को उचित माना ॥ ५३ ॥ १० आख्यों में, अरोसा के ११ साथ  
१२ कुरम का छोटा भाई ॥ ५४ ॥ १३ कहते हैं, अंधकर्ता कहते हैं कि हमारी  
मति में यहाँ १४ सन्देह है ॥ ५५ ॥ १५ हमको हठ नहीं है १६ निर्मूल कहानी  
को नहीं लिखते हैं ॥ ५६ ॥ दिल्ली के १७ घर में १८ अगले मयूख में उस का  
समर्थन करते हैं सो सुनो



श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशभोज  
चरित्रे भोजमऊप्रान्तप्राप्तिहेतुमऊविजयोत्तरदिल्लीगमन ५, यवने-  
न्दाकबरसचिवखानखानागुणावर्णनेन सहाकबरपरिषत्पट्टरत्नग-  
खान २, अकबरगुणावर्णनेन सह गुणासमर्थनप्रतिज्ञाकरणां पञ्च-  
दशा मयूखः ॥ १५ ॥

आदितोऽष्टनवत्युत्तरशततमः १९८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पातसाह अकबर ३७।१ प्रतिम, न भयो दिल्लीयनैर ॥

कितहु राम २०३।४ प्रभु स्वीय कवि, बंधैं प्रीति १ न बैर २ । १ ।

तथ्य न वहै कथितव्य तो, अप्पहिं ध्रुवें अवनिस ॥

कबहु सुकवि अनृत न कहत, सहत जदपि दुख सीस ॥ २ ॥

यह प्रभुसंगतिको असर, पायो निज रहि पास ॥

तथ्यहि प्रिय लगगत तिनहिं, अनृतकरि न असु आस ॥ ३ ॥

बैठे रजिया ५।१ हेम ३८।२ बिजु, तखतहु साह छतीस ३६ ॥

लखहु हुमायों ३६।१ अवधिलग, अकबर ३७।१ सम को ईस ॥ ४ ॥

॥ पद्धतिका ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में भोज के चरित्र में  
भोज को मऊ का प्रान्त मिलने के कारण मऊ विजय करके भोज का दिल्ली  
जाना १ बादशाह अकबर के सचिव खानखाना के गुण वर्णन के साथ अक-  
बर के सभासदों में छः रत्नों की गणना करना २ अकबर के गुण कथन के सा-  
थ गुणों के समर्थन की प्रतिज्ञा का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आ-  
दि से एक सौ अठानवे १९८ मयूख हुए ॥

१ सहज २ हे राजा रामसिंह आपका कवि (सूर्यमल्ल) किसीके साथ प्रीति  
और बैर नहीं रखता किंतु जो इतिहास सत्य होवे वही लिखता है ॥ १ ॥  
कहने की वार्ता ३ सत्य नहीं होवे तो हे राजा रामसिंह ४ निश्चय ही आप-  
का कवि ५ झूठ नहीं कहता ॥ २ ॥ झूठ बोलकर ६ प्राण की जाना करना भी  
अच्छा नहीं लगता ॥ ३ ॥ ७ रजिया बेगम और हेमू बनिया इन दोनों के बिना ॥ ४ ॥

सप्तम७कह्यो जु महमूद७साह, तेबीसम२३सय्यद खिजर२३ताह।  
 बिरलें हुव इतिमुख नय निजाहि, सुख दिय प्रजाहिं जिन धर्म साहि।  
 इकदसम११अलाउद्दीन११आदि, बढिगय कति निर्दय जुलूम बादि।  
 निर्लज्ज१प्रमत्त२हु कछु सनाम, रैमनी१मदिरा१रत सुनहु राम

२०३।४ ॥ ६ ॥

हुव चोथो४रुकनुद्दीन४।१हाइ, लज्जा तजितिय१मधुरहिय लगाइ।  
 अंतहपूर रहि जड जाँम अट्टन, रंचहुँ न सम्हारे रज्ज१रट्ट२ ॥७॥  
 रजिया५।१तस भगिनी तब रिसाइ, इहिं कीलिं रुवैठी तखत आइ ॥  
 सब निज मिलाइ लाहि साह सब्द, इहिं भोगी बिलिय च्यारि अब्दा८।  
 यह जानि पठंताको अधीस, सजिकैं दल आयो तास सीस ॥  
 अभिधानजास अलतूनियाँ१सु, मन इत दढाइ पहुँच्योमियाँसु ॥९॥

॥ नियाँसु१मियाँसु२ अन्धानुप्रासः १ ॥

रजिया५।१हु समुह जुरि रचिय सारि, गहिलिय तिय तँहँ तिहिंवल  
 विगारि ॥

तबही वनि प्रत्युत नारि तास, आई इत पतिजुत पट्टास ॥१०॥  
 ताकोद्वितीयश्वहराम१।२भ्रात, भगिनीसँ जवन हनि खिल भगात ॥  
 डरघर रजिया१कहँ कैद डारि, साह सुहुव पंचम५।२सब सम्हारि १।३  
 तस अग्रज रुकनुद्दीन४।१तत्थ, कारीं हि मरयो कासुकैं बिकैत्थ।  
 बलि इमहि नवम९सठ कैकुवाद९।१, पायो सुरापँ१कासुक२  
 प्रसाद ॥ १२ ॥

तिहिं इम प्रजाहु लाखि संक तोरि, बहु हुव प्रमत्त घर मय बोरि ।

१ इत्यादि. धर्म को २ पकड़कर ॥ ५ ॥ ३ स्त्री ॥ ४ ॥ ४ नय ५ जनाने में।  
 आठों प्रहर ७ कुछ भी ८ राज्य के सात अंग “स्वास्थ्यमात्मौ पुरंसाधुं कोजदशों  
 सुहृत्तथा ॥ सप्त प्रकृतयो खंताः सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते” इति वरदातन्त्रे ॥ १. रा.  
 (देश) ॥ ७ ॥ १० कैद करके ॥ ८ ॥ ११ नास ॥ ६ ॥ १२ उलटी उमीकी की  
 घनकर ॥ १० ॥ १३ बहिन के पति को ॥ ११ ॥ १४ कैद में ही १५ काभी १६ नहीं  
 कहने योग्य १७ मद्य पीने से १८ भूल अथवा आलस्य अथवा वाचलापन ॥ १२ ॥

मस्जिदनमेंहु छकि सद अमान, हुव रत प्रसक्त करि लास हान १३  
को निज १पर २परतहि दग कलत्र, मुख दिय लगाइ आसर्व अमत्र ।  
तेरहम १३ मुबारिक १३ १२तजि नरत्व १, बनितात्य भीरु समझयो  
बगत्वर ॥ १४ ॥

विस्त्र सु बनाइ पननारिबेस, सजिकै पट १ भूखन शंतिम असेस ॥  
जुग बंधि अभीरुन गेहजाइ, बनि ठनि नचि १ गावै रूहा १ बिहाइ १५  
पुंडित्व हाव १ भाव २ न प्रसारि, सुरै संगह लै राहमौरि ॥

अरु वैठै नगहि खास १ आम २, नार्सा १ सह रक्खै न पट २ नाम १६ ॥  
पटप सु अलाउद्दीन १ पुत्त, औसो हुव कुल गल जस अछुत्त ॥  
पंद्रह १५ ममुहुम्मद १५ १ पातसाह, रौंछो एनि तुगलक ३ जुलम-  
राह ॥ १७ ॥

बोरत्व १ सजैम २ र भक्ति ३ बार, यहदानी ४ पंडित ५ तदपि आसै ॥  
खल जिमहि तपियइहि अलिफखान १५ १, किन्नी यह अनुचित  
धरहु कान ॥ १८ ॥

सूबा गत जित्तन स्वापैतेय, लग्नयो सु प्रजासिर डारि लेय ॥  
अवनिपर बढायो कर इतोक, जो देसकै न कर्षुक जितोक १९  
जन तबहि गेह १ खल जान २ जारि, सब भजनलगे जिय धन  
सम्हारि ॥

अप्पहि तब हैहुत अस्ववैर, सहँसन जन मारे रमि सिकार ॥ २० ॥

१ मथुन में २ आसक्त ॥ १३ ॥ ३ स्त्री दृष्टि में आते ही ४ मद्य का ५ पात्र (प्याला) ६ स्त्रीपन को ७ ओष्ट सन्नका ॥ १४ ॥ ८ उस नकटे (नासिका विहीन) ने ९ गणिका का वेष १० अहीरों (गवारों) के घर जाकर ११ लज्जा छोड़कर ॥ १५ ॥ १२ नपुंसकपन के १३ बादशाहों के मार्ग को भिटाकर १४ काष्ठ के लम्बे के समान होकर; अथवा नासिका सहित होकर भी नाज मात्र को बख्त पास नहीं रखता अर्थात् नकटा अनुप्य तो लज्जा छोड़कर नग्न होजाता है परन्तु यह नासिका सहित होकर भी नग्न रहता था ॥ १६ ॥ जुलम के मार्ग में १७ रचा (रङ्गा) ॥ १७ ॥ वीरपन और १८ इन्द्रियों का रोकना १९ हुआ ॥ १८ ॥ १८ धन १९ पृथ्वी पर हासिल इतना बढ़ाया २० करसे (खेती करनेवाले) १९ ॥ शीघ्र २१ घोड़े पर बैठकर ॥ २० ॥

तिन्ह भजत गरीबन सोस तोरि, प्रति कपिसिर बंधे पोरिपोरि।  
 अैसेँ हि हुमायो ३११ काम अंध, विरच्यो इकतीसम ३१ पहु प्रबंध २१  
 वर १ जो नव निकास्यो मग हु व्याहि, तो भोगि प्रथम दिष बरनि  
 २ ताहि ॥

करुनाको जम जिम लावन लाइ, चूसी प्रजाहु कर अति चढाइ २२  
 समुझायो सो जड संग साइ ३२, इकरयो तव दुखखहु बस्तुवाह।  
 इम पहिले साहन अति अधस, किय तिनहि सुनहु इतरहु  
 कुकर्म ॥ २३ ॥

पहिलै अज्जन सुरगृह १ पराइ, लगवाये मस्जिद २ प्रसन्न लाइ १ ॥  
 किय द्विज १ हु जवन २ मुख थूकि थूकि २, कति जन बचेहु परि  
 पयन कूकि २ ॥ २४ ॥

जिजिया १ दि दंड तिनपर जुराइ, महसूल लये बहु २ नयँ सुराइ।  
 दधि १ दुग्ध २ दारु ३ तन ४ आदि दम्भ, कटकन दये न कहँ अटन  
 कम्स ५ ॥ २५ ॥

खिन रन केते संपन्न खेत, कटवाइ दये किल हयन हेत ६ ॥  
 सुंदरपन ह्वो तियन संग, तव हुव कलंक ७ रहि धर्म तंग ॥ २६ ॥  
 लग्गे जे दुहिता नृपन लैन, इतरन किस टारे गिनहु अैन ८ ॥  
 जिन कियहु रोधँ दुहिता १ दि जान, तोप २ न जुत लिय तिनह स-  
 वन प्रान ६ ॥ २७ ॥

१ कोट के कांगरे कांगरे पर ॥ २१ ॥ २ नवीन वर जा कोई विवाह करके मा-  
 र्ग में निकला ३ दुलहन ४ लेशमात्र ॥ २२ ॥ ५ अन्य भी ॥ २३ ॥ ६ आर्यों  
 के देव मन्दिर गिरवाकर ७ हठ करके ८ ब्राह्मणों के सुख में थूक थूककर ॥ २४ ॥  
 ९ आर्यों के तीर्थों पर एक प्रकार की लागत १० नीति मिटाकर ११ काट १२  
 काटनेवाले को १३ फिरने नहीं दिये ॥ २५ ॥ १४ युद्ध के समय में तो खेती  
 से भरे हुए खेत १५ निश्चय ही घोड़ों के लिये कटवा दिये ॥ २६ ॥ १६ जो रा-  
 जाओं से पुत्रियें लेने लगे वे अन्य के १७ घरों को कैसे छोड़ें १८ पुत्री देने को  
 रोका ॥ २७ ॥

भनजहु भय दैदै विष्टि<sup>१</sup> माँहिं, निखिलन गहि प्रेरे<sup>१०</sup> नाँहिं नाँहिं ।  
थाँती भित लेलै सिपह थट्ट, विनु भय चले न कहँ पथिक

वट्ट<sup>११</sup> ॥ २८ ॥

तोहू तिन धाँटिन पटाकि त्रास, वहु खिन लागि लुट्टे<sup>१२</sup> रहनि विसास  
लानत कलंक तिनके हु लग्ग, अकबर<sup>१३</sup> के तुल्य न कोहु

अग्ग ॥ २९ ॥

प्रभु एह सवन अपजस पखारि, जन सुखित करतहुव दुखहिं  
जारि ॥

सुनिये जिहिं विहरन कग्ग सम्म, मक मीर लखे जन विंढि कम्म ३०

बिरचत कुंकुम धँ तिन्ह विसासि, मानिक वसु करिदिय  
भासि<sup>३१</sup> मोसि ॥

पे जे लखे न आजू प्रसक्त, वे अवस रहे व्हे दुखखर्चक्त ॥३१॥

जिहिं नीति रीति राज्यहिं जसाइ<sup>३२</sup>, लिख प्रीतिरीति सब हृदय लाइ<sup>३३</sup>

हुव द्विजन कल्पतरु बुधैं यहै<sup>३४</sup>हि, कविलोक अबहु तस जस  
कहेहि ॥ ३२ ॥

लाखियेसु संजैभीपताहु लैन<sup>३५</sup>, बालि रविपूजन रत<sup>३६</sup> सवला येन<sup>३७</sup>

आदित्यवार दिन सीस अंत, हिसा न हौनदिय जिहिं<sup>३८</sup> मंदंत ॥३३॥

१ वेगार (बिना तनखा दिये बलात्कार कार्य कराने) में २ वहाँ नार्ही की ही नार्ही रही अर्थात् वेगार कराने का नाश भी न रहा ३ थरोहर (अध्वानत अर्थात् मौपाहुआ मन) ४ मार्ग चलनेवाले ॥ २८ ॥ ५ थाटा टालनेवालों ने ६ यह मयन भाषा का विकार पाची शब्द है ॥२९॥ खचके अपयज को ७ धोकर नमन करने के ८ स्नान में ९ वेगार के कार्य से भीरीं हो भी भय था अर्थात् कोई वेगार नहीं कर सकना था ॥ ३० ॥ केदार के १० स्नान रत्नोपाल अर्थात् केदार का तिलक करनेवाले (पुजारियों) को विन्यास देकर उनके हाथों का भजन कर दिया "सब रत्नों में जाणिक बहु सूख्य में द्योने जाणियों ने भक्त्या प्रीति जिता है" ११ प्रतापसाल १२ नालिक (वेना) समाना १३ नालिक १४ अंत आतक रहे अर्थात् कापडाक से दूध से १५ कृष्ण तुल्य आतक रहे ॥ ३१ ॥ १६ पण्डित ॥ ३२ ॥ १७ लीला लाल में ईश्वरों को नमनेवाला ॥३३॥

प्रतिग्रहदं जन्मदिन स्मृतिप्रधान, देतो स्वतुल्य भैर कनकदान १  
 इक १ बेर असन १ हिंसा विहेय ११, धरतो सु जवन इक नामधेय ॥ ३४ ॥  
 चहती प्रजाहु जिहिं इक स्ववेत, हुव बहु तस छात्रहि १२ समुक्तहेत  
 जिहिं राज्य कवहु कछु दुखखजोग, जान्यो न जनन १३ भरि  
 भौन भोग ॥ ३५ ॥

सुमन १ न विक्रय वासट्टि ६२ सेर १४, जवरसेर नवति चउ जुत ९४  
 न जेर १५ ॥

इहिं राज्यकरत इम न कछु ईति, प्रकृतिन कहूँ जानी आनि  
 प्रीति ॥ ३६ ॥

सीमा निज किय यह नियम साह, बिनु तरुन वहेन सिसु मि-  
 थुन २ व्याह १६ ॥

सूवा १७ सरकार १८ महाल १९ सुद, पटवारी २० कानूगो २१ प्रबुद्ध ३७  
 आईन थपि ऐसे अनेक, इहिं रखे सब कुलधर्म एक १ ॥

प्रस्थान जास इसतबल पास, ईम १ पंचसहस्र ५००० हय २ अयु-  
 त १०००० आस ॥ ३८ ॥

किंमखाव फरस १ प्रसरात कंति १०, परदे मखमलमय मुंत्ति २ पंति ३  
 पारि कोसनलग डेरन प्रसार, हुव मध्य सिबिर इम निज बिहार ३९ ॥  
जिजिया १ दिजानि कर सबन सीस, पहिले प्रवृत्त अटके इकीस २१ ॥

१ हरसाल २ आर्यों के धर्मशास्त्र को मुख्य मानकर अपने शरीर के ३ भार के  
 बराबर स्वर्ण देता था, एक समय भोजन करता और हिंसा बहुत ४ त्याज्य  
 थी. सुखलमानी एक ५ नाम ही धरता था ॥ ३४ ॥ ६ शिष्य ॥ ३५ ॥ ७ गेहू.  
 इससे ८ कम नहीं थे ९ कभी ईति (अतिवृष्टिनावृष्टि: शलभा वृषकाः शुकाः।  
 स्वचक्रं परचक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः) का अर्थ नहीं हुआ १० राज्य के अङ्गों  
 ने ॥ २६ ॥ बालकों के ११ जोड़े का विवाह नहीं होवे १२ बहुत चतुर ॥ ३७ ॥  
 १३ कानून १४ जिसकी हय शाला के पास पांच हजार १५ हाथी और दस  
 हजार घोड़ों का गमन होता था ॥ ३८ ॥ १६ जरी की विछावत १७ कान्ति  
 फैलाती थी १८ सोतियों की पड़कियाँ १९ फैलाव ॥ ३९ ॥ पहिले २० जारी  
 हुए जिजिया आदि कर रोकें.

अकबर का राजाओं की कन्या व्याहर्ण] पछराशि-पौडशमयूख (२३=३)

\*महमूद इते २१ अज्ज १ हि स्वमत्थ, सहते सब हिंदू २ रहन सत्थ ४०  
मन । सदय तिन्हें अकबर ३ ७ १ मिटाइ, बिस्वस्त करे सब भद्र भाइ ।  
अैसे उदंत समुचित अनेक, अकबर ३ ७ १ हि करे प्रभु राम  
२० ३ १ ४ एक ॥ ४१ ॥

पै अब बुरे हु जे किय प्रगल्भ, बिख्यात असह बिस्वास बल्भ ।  
तिन्ह देहु श्रवन जँह गुन १ इतेक, तउ दबि बहत अवगुन रकि-  
तेक ॥ ४२ ॥

कूरमनृप कन्या पुँव काल, व्याहो जु ताँत तब हो सु बाल ।  
पै अबहु ताहि न बुरी प्रमानि, तिम चाहिय प्रत्युत प्रसभतानि ४३  
जोधपुर सूर भूपति जनी सु, कुल रहोरन तारक कनी सु ॥  
सुत निज सलाम ३ ८ १ के अर्थ साह, व्याही १ करि अज्जन विधि  
विवाह ॥ ४४ ॥

मूरहु तस डोला आनि संग, मुगलेस सुतहिँ दिय छिति उमंग ।  
इतरहु बहुकुलजा सहठ अक्खि, रानी १ न होनदिय हुरम २ रक्खि ॥ ४५ ॥  
भट्टी १ सोढारदिक बहु भुवालँ, सबतहुन हुकम सु जदपि साल ॥  
जिहिँ करि प्रवृत्त मीनावजार, देखी नोरोजहु सबन दौर ३ ॥ ४६ ॥  
निजडारन बनिठनि निकसि नारि, सब जे रहि ठँहे कुल बिसारि ॥  
उमरा १ गरीब २ सबकीहि आइ, देती तिहिँ उपदा नति दिखाइ ॥ ४७ ॥  
अतिरूप जु होती ताहि अँप्प, बैसु दै रु बुलातो ४ जिम स्व बैप्प ॥

\* महमूद के मत की इक्कीस लागतें । आर्य लोक अपने मस्तक पर सहते थे  
॥ ४० ॥ । अकबर ने दया सहित उन लागतों को मिटा दी. कल्याण करने की  
रीति से सब को १ विश्वास युक्त किये २ वृत्तान्त ॥ ४१ ॥ ३ उस बुद्धिमान  
ने नहीं सहने योग्य बुरे कार्य किये वे विश्वास के बल्लभ अर्थात् मानने  
योग्य सुनो ॥ ४२ ॥ ४ पहिले समय में ६ पिता ने ७ उलटा हठ फैलाकर ॥ ४३ ॥  
८ सरसिंह की पुत्री ९ कन्या १० आर्यों की रीति से ॥ ४४ ॥ ११ राजाओं को  
नहीं विवाहने दी ॥ ४५ ॥ १२ राजा १३ सबकी स्त्रियों को देखी ॥ ४६ ॥ १४  
खड़े रहे १५ उमराव १६ नजर ॥ ४७ ॥ १७ आप १८ धन देकर १९ जिस प्रकार  
इसका पिता हुआया बुलाता था तिस प्रकार

करतो परंतु यह \*पिहितकर्म, किंति कहत धरयो नन जारधर्म ॥४८॥  
 सोनांवाजारहि इक मंडि, छवि लखि खुस होता कुमग छंडि ॥  
 सो पुनि निज गुरुजन मृति समीप, मुंडित करवातो सब महीप ॥४९॥  
 इतिमुख बुरेहु कछुकछु उदंत, सुनिये प्रभु तासहु वदत संत ॥  
 नोरोजरु डोलाखैरानीति, राजनलग प्रेरी असह रीति ॥ ५० ॥  
 पै करि प्रजाहि बहुविधि प्रसन्न, बसलग चही न दारिद ॥ विपन्न  
 जो राज्य इकैसासन जमाइ, प्रतप्यो समस्तसिर बाह पाइ ॥५१॥  
 सिरकसहु सुन्यो जिततित जुसाह, सुहि कियउ नम्रसुभटरु सिपाह  
 इहिंसमय सिरोहीवत एह, ससुझहु हुव अञ्जुचित हैत सनेह ॥५२॥  
 सुरतान करत जहँ राज्य सूर, पै वय किसोर सारल्यपूर ॥  
 चहुवान देवराधर्मचार, रक्खै रनशितैरनरनहि नकार ॥ ५३ ॥  
 तासहि सगोत्र भट बिजय तत्थ, सचिव सु हुव धनश्रवयश्मद समत्या ॥  
 सब प्रकृति गंजिभोगत असंक, अनैन स्वामि भय मत्तअंक ॥५४॥  
 कालिंदीनामक दंगकेर, स्वामी सु बिजय हुव सबन सेर ॥  
 मुखपरन केस तउ बल महान, मन्नै खिल सुभटन मसकमान ५५  
 संबंध स्वामि को निजसमेत, कहँ भिन्नगोत्र बाहुजैरनिकेत ॥  
 जिहँ किय बहिनीजुगसुनि सुरूप, भल व्यादन अप्पैरु अप्प भूपर  
 बलि लग्न गये परिनय विचारि, परिसर मिलान दिय समय पारि  
 अनुजौशन प्रभुसंबंध आनि, जेठीशन निज किय विजयजानि

\*छाने किंतिने ही कहते हैं कि इसने व्यभिचार नहीं किया ॥४८॥ अपने बड़े  
 लोकों के सरने पर सब राजा लोकों को बुझन कराता था ॥४९॥ इत्यादि ॥५०॥  
 ॥ आपदा (कष्ट) ॥ ५१ ॥ १ अनज २ स्नेह का नाश करनेवाली ॥ ५२ ॥ ३ बा-  
 लक ४ सीधा ५ दान में ॥ ५३ ॥ १ राज्य के सब अड़ों को दवाकर ७ मस्तप-  
 न के चिन्ह से ॥ ५४ ॥ उसके मुख पर बाल नहीं था तो भी बड़े बल से  
 ८ मच्छर के समान ॥ ५५ ॥ ९ क्षत्रिय के १० घर में किया ॥ ५६ ॥ ११ विवाह  
 के विचार से १२ आम के समीप की भूमि में शुकाम किया १३ छोटी बहिन  
 से राजा का और बड़ी से १४ विजयसिंह ने जानकर अपना सम्बन्ध किया  
 था ॥ ५७ ॥



उततैं हुव सचिवहिं विदित उक्त, जेठी१कुरूप लघु२रूपजुक्त ॥  
गदिपठै तव तिहिं स्वसुरगेह, हमरो लघुबहिनी२सौं सनेह ॥५८॥  
सुनि जान्यो तिन एहहि समर्थ, अनुजा२तव व्याही विजयअर्थ ॥  
जेठी१सुरतानहि सिचैय जोगि, पहिलैं तिन व्याहिय मुख्य पोरि ॥५९॥  
दिन चोथे४मिलतहि ऊँढ दाग, वरन्यो पति नृपप्रति छल विथार ॥  
चैल निज १ जुरयो प्रभु अप्प चैल २, मम भाग्य उदित सुभ  
कर्म मेल ॥ ६० ॥

पै प्रभु प्रधान कपटिन प्रधान, किय अति अधर्म सुहु धरहु कान  
जेठी १ मैं भगिनी विजय जैतथ, अनुजा २ मम ही प्रभु अप्प  
अर्थ ॥ ६१ ॥

पै सुनि सुरूप अनुजा प्रधान, हम सोहि बरी सठ दर्पवान ॥  
मैं अति प्रसन्न हुव इस महीप, पति पैत देवर९न बंस दीप ॥६२॥  
पै निज प्रमत्तपन असह पिक्खि, समुझहु नरेस नय अबहु सिक्खि  
अप्पहिं किंसोरवय जानि एह, समुझयोमैं प्रभुजिम प्रभु सनेह ॥६३॥  
प्रातैं तिहिं मंगी जैं १ सु अप्प, दे तुमहिं बरी अनुजा२सदप्प ॥  
अक्खहु अधीस १ को को अधीन२, लखि नय न होहु आ-  
लस्यलीन ॥ ६४ ॥

नृपतिन प्रभुताबिलु है न नाम, अटकी सुहि अप्पन विजय वामैं  
कुल जदपि बाहुजै१न वहे २ किंसोर, तोहू नृप न तजत नृ-  
पन तोरैं ॥ ६५ ॥

सचिव को १ मालूम हुआ कि २ कहला भेजा ॥ ५८ ॥ ३ वस्त्र  
जोड़ा अर्थात् गठ जोड़ा लगाकर ४ सुखें द्वार पर ॥ ५९ ॥ ५ दुलहन  
ने ६ वस्त्र ॥ ६० ॥ ७ आपका प्रधान कपटियों में प्रधान (मुख्य) है। विज-  
यसिंह है जहां अर्थात् झुझ बड़ी बहिन का सम्बन्ध विजयसिंह के साथ हु-  
आ था। मेरी छोटी बहिन आपके २लिये थी ॥ ६१ ॥ देवड़ा के पति के यहां  
१० पहुंची ॥६२॥ ११ अपने प्रसन्न पन से ॥६३॥ १२ घमण्ड सहित, हे स्वामि  
आपके अधीन कौन कौन है ॥६४॥ विजयसिंह ने १३बिछड़ होकर १४ क्षत्रियों  
के कुल में १५प्रताप ॥ ६५ ॥

अकखत मैं यहहु न अबहि अप्प, दलि याहि राज्य बिलासहु  
सदप्प ॥

पै अकखत यह रहि सब प्रजापै, प्रभु सक्ति धरहु नन बजहु  
पाप ॥ ६६ ॥

सुनि यह गहि अमरख संभरीक, पिक्खे समर्थ तस प्रत्यनीक  
इक आनमाँहिँ सुरतानईस, सो गिनतहुतो खिल भौर स्वसीसा ॥ ६७ ॥  
निज भटन कल्प यह सुनि निहारि, इक १ निम्मदेव बुल्लपो  
बिचारि ॥

याकौ हे बिधिकरि कर अलंब, सो नर्म करतहो सचिव संव ॥ ६८ ॥  
अँचन असि परिहै कबहु कम्म, अँचहुगे कैसेँ तव अँसम्म ॥  
नृप विजन बुल्लि वह निम्मदेव, अक्खिय प्रँगल्म हुव विजय  
एव ॥ ६९ ॥

मेरीहु कानि न करत प्रमान, मानत बली न कहु मोसमान ॥  
रक्खै जु राज्यमुद्रा मदीयँ, तिहिँ छिन्नि गंजि बल मद तदीयँ ॥ ७० ॥  
कै दुष्ट हनहु १ कै देहु कहि २, बैठारहु कारी ३ कै नँ बहि ॥  
चेताइ स्वभट संव मोरि चेत, पठयो इम निम्म सु बलउपेत ॥ ७१ ॥  
गरदाई विजय तिहिँ तबहि गेल, डारयो डर चटकनँ मनहु डैल  
जंपिय तू कहतो विजय जत्थ, असि कैसेँ गहिहँ लारन अत्थ ॥ ७२ ॥  
सुहि निम्म मैहु लघुकर सलज्ज, असि अँचन १ वाहन लखहु अज

मेरा १ कहना २ प्रजा के पति ॥ ६६ ॥ ३ चहुवाण ४ उसके शत्रुओं को  
आण के बिना बाकी का ५ आर अपने मस्तक पर जानता था ॥ ६७ ॥ अपने  
उभराओं के ६ समूह को ७ नीमदेव के हाथ छोटे थे ८ हँसी किया करता था ९  
वज्र के समान ॥ ६८ ॥ १० समानता रहित ११ राजा ने उस निम्मदेव को  
एकान्त में बुलाया १२ विजयसिंह धीठ होगया है ॥ ६९ ॥ राज्य की १३ मेरी  
द्वारा १४ उसके मद को ॥ ७० ॥ १५ कैद में १६ मारने के लिये १७ सेना  
सहित ॥ ७१ ॥ १८ घेरकर १९ चिड़ियों के समानों २० देला (दकल) डाला ॥ ७२ ॥

सुरतानभूप भाखत सकोप, अब बचहु अपि सुद्राश्रु ओपर । ७३ ।  
 दब्बो सु अचानक इम दिखाइ, जिम रन तदीय मद बिफल जाइ ।  
 सुद्रा लहि तासन स्व बला मंडि, छर्म निम्मश्अछम दिय बिज-  
 यरछंडि ॥ ७४ ॥

नृप देत गहनश्मारनरनिदेस, असुं देत तदपि मैं निम्म एस ।  
 सुलहु उपकारन बचहु भजि, सीमा हु न प्रविसहु बहुरि सज्जि ७५  
 लछु कर मम कहतो ते लखेहि, असुं दै भजात अब तोहि एहि ।  
 अरु कतिक रहे तब छिग अजान, भट तेहु सुरहु इत भूपमान ७६ ।  
 बिजयशहिं भजाइ इम खिल विसासि, रहि निम्मश्सचिव बी-  
 रत्वरसि ॥

सुरतानश्हुकम बहि सतत सीस, आजन्म गिन्यौं निम्मश्सु  
 अधीस ॥ ७७ ॥

पापी भजि तियजुत रानपास, बिजय सु हुव आश्रित लहि  
 विसास ॥

तब हो प्रतापश्वा अमरस्तथ्य, सहि बिपिर्नबास आपत्तिसत्थ ७८ ।  
 तिहिं रान अन्न बटि छंवि ताहि, स्व सरन गिनि रक्खयो प-  
 द समीहि ॥

बहुवेर पिछि बह डमरपात, अर्जुदभुव आयो मद अघात ७९ ॥  
 तबतबहि निम्म भिरि मद उतारि, पठयो सु बिजयश्ममोर्ध पारि ।  
 पै डरत सिराहीकी प्रजासु, आई छिग पुनिपुनि कुक्कि आसुं ८० ।

सुरतानश्बिजयश्लखिलखि समीप, अत दूर अजावन गिनि महीप ॥

छाप और सचिव पन की यह १ शोभा देकर बचो ॥ ७३ ॥ २ उलका ३ छाप ४ समर्थ  
 निम्नदेव ने उस असमर्थ बिजयसिंह को डाँड दिया ॥ ७४ ॥ ५ तुम्हारा ६ प्राण देता  
 हूँ ७ १ मेरे छोटे हाथ कहता था सो देखो । येही हाथ तुम्हको ७ प्राण देकर भगाते  
 हैं ॥ ७५ ॥ ८ वीरता का सबूत ९ निरन्तर ॥ ७६ ॥ १० तहाँ पर राखा प्रतापसिंह था  
 अथवा अधरसिंह था ११ वनवास ॥ ७८ ॥ १२ डहराकर १३ अपने पद को ग्रहण करके  
 अर्थात् शीपोंदिया को शरणाई साधार कहते हैं इस पद को ग्रहण करके १४  
 पाड़े डालकर १५ पद से तृप्त ॥ ७५ ॥ १६ निरर्थक करके १७ शीघ्र ॥ ८० ॥

पिक्खी यह रानहु सहि बिपत्ति, प्रेरत इम विजयहिं ज-  
दपि पैत्ति ॥ ८१ ॥

॥ बिपत्तिः पिपत्तिश्चान्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रेरहिं उपाय असो प्रमानि, जिम रान बिडारहिं अधमजानि ॥  
इम मंडि उपव्हर मंत्रआप, पठयो इक चारन रहि अपाप ॥ ८२ ॥  
कछु छल तिहिं विजय सु दिय कडाइ, पुनि पाइ इतहु वसु  
उतहु पाइ ॥

इत विजय गिनी ए भूपअंज, लाखे मांहिं मांहिं सगपन सलज्ज ॥ ८३ ॥  
सुरतान १ कानि तिम न मम संग, इम अखिल चहत कछु  
भय अमंग ॥

सबको गुरु पातैं सेइ साह, पुनि देहुं रन दहों लहि बल सि-  
पाह ॥ ८४ ॥

इम गिनि गो दिछिय विजय एह, सबरीति कछो अकबर ३७  
१ सनेह ॥

बुल्लयो कहि सीसोद १ न बिंसाह, रठोर २ कुम्म ३ बलि पाहि  
राह ॥ ८५ ॥

बिराह १ हिराह २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भिन्न कति १ कतिक अर्पहिं भुलाइ, निज पन दिखात छलि  
स्व सिर नाइ ॥

पै आइ करत ठगमत प्रनाम, बिदेखहु तिनको मन कपट बा-  
म ॥ ८६ ॥

लघु राज्य सिरौही अल्प लौह, सोहू न गिनत प्रभु तुमहिं साह ॥  
अब स्वामि मोहि भेजहु उदरंग, मद सारि कर्गे सुरतानमंग ॥ ८७ ॥

१ पैदल ॥ ८१ ॥ २ जिसकारण से ३ निकाल देवे ४ एकान्त में ॥ ८२ ॥ ५  
धन ६ आर्य-राजा हैं ७ परस्पर ॥ ८३ ॥ राजा को जाती सुरनांख की ८ कांछ  
है ऐसी मेरी नहीं है ॥ ८४ ॥ ९ छुलार्ज ॥ ८५ ॥ १० आप को भूलकर ११ देखो  
१२ विरुद्ध है ॥ ८६ ॥ १३ लाभ १४ उदग्र ॥ ८७ ॥

## ॥ दोहा ॥

दै कछु बल साहहिं विदित, भेजहु साह अभीत ॥

जो करि आऊँ बिजय जब, पिंखहु बिजय प्रतीत ॥ ८८ ॥

बुल्लि मीरबखसी तवहि, सासन इम दिय साह ॥

कहत बिजय जिमतिम करहु, रोकत लैछु नृप राह ॥ ८९ ॥

कछु दल इम इहिं अरज करि, दिय तस संग दुँरुह ॥

गढ सिरोहि बिजय सु गयो, जितनु प्रभु बल जूँह ॥ ९० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदराशौ बुन्दीशभोजचरित्रेऽकबरभूतपूर्वदिल्लीशपट्टविंशदावनेन्द्रदुर्गुणागणान् १ अकबरगुणवर्णनानन्तरतदुर्गुणाभणान् २ सीरोहीपरावदेवड़ासुरतांशास्वसचिवविजयसिंहानीतिनिमित्ततन्निष्कासनोत्तरनिम्नदेवप्रधानानामात्यकरणा ३ कियत्कालपर्यन्तलब्धोदयपुरमहाराणाश्रयदेवड़ाविजयसिंहयवनेन्द्राकबरान्तिकगमनेयवनेन्द्रचम्पूसहितविजयसिंहसीरोहीविजयार्थयानवर्णनं षोडशो मयूखः ॥ १६ ॥ आदितो नवनवत्युत्तरशततमः ॥ १९९ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

## ॥ दोहा ॥

१ सेना २ देखो विजयसिंह की प्रतीति ॥ ८८ ॥ ३ छोटे राजा भी मार्ग रोकते हैं ॥ ८९ ॥ ४ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी. सेना के समूह से ॥ ९० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के प्रपतिभोज के चरित्र में अकबर से पहिले हुए दिल्ली के इत्तीश बादशाहों के अवगुणों की गणना १ अकबर के गुण वर्णन करने के अनन्तर उसके कुछ अवगुणों का कथन २ सीरोही के राव देवड़ा सुरतांश का अपने मन्त्री विजयसिंह की अनीति के कारण उसको निकालकर निम्नदेव को प्रधान करना ३ कुछ समय पर्यन्त उदयपुर के महाराणा से आश्रय पाए हुए देवड़ा विजय का बादशाह अकबर के समीप जाकर बादशाही सेना के साथ विजयसिंह का सीरोही विजय करने को जाने के वर्णन का सौलहवां १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ निन्दानवे १९९ मयूख हुए ॥

बनि अकबर ३७१ बल करि प्रबल, विजय देवरा ९ वरि ॥  
 चढ्यो सिरोही लैन चहि, गहि सुरतान गहीर ॥ १ ॥  
 तीजो ३ रान प्रतापतैं, जु हुव अनुज जगमाल ३ ॥  
 हो अकबर ३७१ आश्रित बहहु, संग दिय सुरिपु साल ॥ २ ॥  
 समतसिंह १ अग्रज उपम, रानहिं यहहु टराइ ॥  
 गढ सिरोहि जगमाल गो, ढिग दिय सिबिर टराइ ॥ ३ ॥  
 महडू चारन नाम करि, जहूँ १ यह जगमाल २ ॥  
 रहत बाल मैत्री रचे, चिरतैं इक १ मन चाल ॥ ४ ॥  
 जगमाल १ सु कवि जहूँ २ जुत, विजयभीर इम वरि ॥

१ विजयसिंह देवड़ा २ जम्भीर ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ जाडा नामक ४ बहुत मि-  
 चता करके ॥ ४ ॥ ५ ॥ \* विजयसिंह की मलान ॥ ६ ॥

\* यह विजादेवड़ा के साथ जगमाल का जाना लिखा तो ठीक नहीं है क्योंकि सिरोही के राव सुर-  
 ताण और विजादेवड़ा में परस्पर विरोध होने के कारण बीकानेर के राजा रायसिंह के द्वारा सिरोही का  
 आधा राज्य बादशाह अकबर के खाटसे में हो गया था सो अकबर ने उदयपुर के महाराणा उदयसिंहके  
 छोटे पुत्र जगमाल को दे दिया था जिस पर अनल करने के लिये बादशाही सेना सहित जगमाल सिरोही  
 गया जिसके साथ विजादेवड़ा भी था क्योंकि जगमाल ने विजा की बेटी से विवाह किया था, स-  
 म्वत १६४० के कार्तिक सुदी ११ के दिन महाराज जगमाल और चारण जाडा महडू आदि वारता से  
 मोरगये सो सिरोही के इतिहास में विस्तार पूर्वक लिखा है और जगमाल का दिल्ली में अकबर के पास र-  
 हने का कारण यह था कि संवत् १६२८ में उदयपुर के महाराणा उदयसिंह का गोगुंदा नामक नगर में  
 देहांत हुआ तब पाटली कुमर प्रतापसिंह तो महाराणा के दाग में चले गये और उदयसिंह का छोटा पुत्र  
 जगमाल पीछे रहा. जगमाल की माता से महाराणा उदयसिंह अधिक प्रसन्न थे इसकारण अपनी माता की  
 सहायता से जगमाल मेवाड़ की गद्दी पर बैठ गया परंतु जब महाराणा का शरीर दग्ध करके युवराज प्रता-  
 पसिंह अपने उमरावों सहित पीछे गोगुंदा में आये उस समय मेवाड़ के उमरावों ने जगमाल को गद्दी से  
 उतारकर महाराणा प्रतापसिंह की गद्दी बिठा दिये इसकारण जगमाल वहां से आमेर के राजा मानसिंह के  
 पास चला गया और जाडा नामक महडू को जीविका का उपाय करने को दिल्ली भेजा जिसने अपनी यो-  
 ग्यता और कविता के बल से अकबर के वजीर खानखाना अब्दुररहीम को प्रसन्न करके जगमाल के नाम  
 मेवाड़ का परगना (जो जहाजपुर के नाम से प्रसिद्ध है) लिखवा दिया सो जब जगमाल को सिरोही का आ-  
 धा राज्य मिल गया तब जगमाल ने वह जहाजपुर का परगना चारण जाडा नामक महडू को दे दिया परंतु  
 जाडा ने जहाजपुर का परगना पीछा जगमाल को देकर उसमें से 'तरस्या' नामक एक ग्राम अपने अधि-  
 कार में रख लिया जो इस समय जाडा के वंशवालों के अधिकार में है ॥

सजिआयो सुरतानसिर, स्वामिधरम धरि सीर ॥ ५ ॥

इतरहु बहु गुरुश्लक्ष्मरआधिप, आये संग अमात ॥

ग्राम दतानी सीसगत, पटव्यो कटक प्रपात ॥ ६ ॥

अह्ना तिम दुरसा बहहु, छतना संगहि पत ॥

गरदावन चहि प्रात गढ, रति रहे अनुरत ॥ ७ ॥

॥ पदतिका ॥

सुरतान देवराएनृप सिरोहि, सज्जह उतहु सुनि असह सोहि ॥

अव्वपति आतहि दल अखर्व, सुभिरायो विजयहिं डुरित सर्व ॥ ८ ॥

करि तैं सठ पहिलैं वहं कुकर्म, अब लैन भुवहिं मंडिय अधर्म ॥

द्विषे जानि हमहिं सिंहरेन दिखाइ, लायो सुगालं शकल कोन लाइ ॥ ९ ॥

अैसे हि हैंन सिंहहु अनेक, इतकेहु सहहु अब एक शक ॥

विजयहु प्रतिउत्तर तजिविसास, पठयो इम नृप सुरतानपास ॥ १० ॥

तुम उदत न गिनत साहगोर, अिततित सुव उग्रन विथैरि जोर ॥

गिनते सदा जु साहन गनीम, सो रानभज्यो इत छोरि सीम ॥ ११ ॥

तुम दिय सहाय सब रीति ताहि, चकलहु फल ताको उचितचाहि ॥

सुरतान सुपहु इम सुनि आरांक, करि संज करन सज्जन ससंक ॥ १२ ॥

सुहि निम्म जु पिल्लयो विजयसीत, वहकरि समस्त निजबल

अधीस ॥

छिति ग्राम दतानी कोप छाड, पविगारै परयो इम रति आइ ॥ १३ ॥

पैने अव्वपति निज कृपान, दिखी दल घेरे जय निर्दान ॥

गजश्वाजिभटनं जिततित गिराइ, परदल फिगाइ दिय दिय पिराई

१ बहुत देवडाव ॥ १३ जो आउवा के परत में घायल होकर बचा था और जिसने

पादशाह अकबर के मुख से जाँधपुर के राजा उदयसिंह का निंदा करवाई थी

वह आढा शाखा का चारण दुरसा ॥ १३ के साथ ही पहुंचा अनुरक्त ॥ १४ ॥

१५ सज्जित हुआ ७ बड़ा. विजयसिंह का पपाय स्वरूप कराया ॥ १५ ॥ साथी

१० गीदड़ ॥ १० ॥ ११ अनेक १२ प्रताप १३ कैलाश १४ शत्रु ॥ १५ ॥ १६ ॥

१५ वज्रपात के समान ॥ १६ ॥ जय के १७ कारण १८ पीड़ित करके ॥ १८ ॥

बल भजत साहको भय प्रवादि, अट्टनृप परे जगमाल १ आदि।  
 बहु पारि सिरोहीके प्रवीर, धारन चढ्यो सु सीसोद धीर ॥ १५ ॥  
 इकओर परयो कवि जहुँ १ एह, दुरसारहु परयो कहु विकलदेहु।  
 इकओर परयो विजय ३ सु अधर्म, कति कहत भज्यो फलि पु-  
 ब्वकर्म ॥ १६ ॥

इम जत्रकुत्र करि परअनीक, सुरतान नृप सु जित्यो सैमीक ॥  
 खोजन पुनि निज १ पर २ सून्य खेत, अब्वूपति प्रविश्यो हित  
 उपेत ॥ १७ ॥

पहिलैं छँत विकल सु सुद्धि पाइ, अट्टा कवि दुरसा लिय उठाइ।  
 अहिफेन पाइ तिहिँ हित उपेत, नृप धरि नृजान पठयो निकेता १ ८।  
 निज १ पर ३ कितेक जीवत निहारि, सब लिय उठाइ बैरहु बिसारि ॥  
 सो जहु १ कविहु कछु आयुसेस, निरखत बिसासि दिग गो  
 नरेस ॥ १९ ॥

आहिफेन दैनलगो उठाइ, सो जहु १ नट्यो यह नय सुनाइ ॥  
 जगमाल २ सुहृद मम आहि जत्थ, तह लैन उचित लैचलहु  
 तत्थ ॥ २० ॥

इहिँ छलि नृजान धरि भेजि अैन, सीसोद २ लख्यो व्यसु म-  
 ध्य सैन ॥

बिनुस्वास मुच्छ भौहन फवाइ, बलि कोहु देवरा ९ तँर दवाइ २१  
 सुतो तस उपरै कर कटार, पायो मृत सुहु करि सत्रु पार ॥  
 सुरतान राजकुल अति सराहि, तत्र किय विधि समुचित द-  
 हन ताहि ॥ २२ ॥

१ ललकार (मारमार) का भयंकर शब्द करके; अथवा भयंकर कोलाहल करके ॥ १५ ॥ २ जाड़ा नामक बहुत शाखा का वारण ॥ १६ ॥ ३ युद्ध ॥ १७ ॥ ४ घावों से ५ असल १ पालखी में ॥ १८ ॥ १९ ॥ मेरा ७ मित्र जगमाल है तहाँ ॥ २० ॥ ८ घर ९ मराहुआ. किसी देवड़ा को १० नीचे दबाकर ॥ २१ ॥ ११ छाती पर ॥ २२ ॥



जहुँहु जगमालहिँ अनसुँ जानि, गल छेदि मरयो पुनि असह  
ग्लानि ॥

जगमाला१आदि तिहिँघोरजुद, पहुँ अहुँपरे इत१के प्रबुद्ध ॥२३॥  
सुरतान पितृव्यक समरसीह१, इत्यादि मरे उत२के अवीह ॥  
जगमाला१विजय२समरा३दि जा१रि१, सनुहु सब घायल इम स-  
म्हारि२ ॥ २४ ॥

दुरसा१इक१रक्षिष्य स्वीयैङ्ग, पठये खिल करि पटु साहसंग ।  
अह्नीं हु रह्यो तव गिनि सुअन, लखि उचित देवर९न अन्न लैन २५  
अव्वृपति तव तिहिँ नृपि अपि, थानक निज रक्षिष्य स्वी-  
य थपि ॥

तवतैहिँ देवर९न वृत्ति तास, कुल धरत राम२०३।४प्रभु जस  
प्रकास ॥ २६ ॥

कति कहत हारि यह सुनत क्रुद्ध, पठयो दल अकबर३७।१पु-  
नि प्रबुद्ध ॥

रानाँजिम कुल मग हठ रहंत, कढिगो सुरतानहु कति कहंत ॥२७॥  
इत जो बुंदीपति भोज१९१।२एह, गो सबन सासन साह गेह ।  
पै वत्त कतिकै अनुचित प्रमानि, जिहिँ नृप करी न कुल हेय  
जानि ॥ २८ ॥

जान्यो सुर्जन१९०।१छत१प्रनति जोरि, कूरमं कनीसु व्याहत२  
वहोरि ॥

पै हुव सछँज जवतै नृपाल, हम मानत तवतै अवर हाल ॥२९॥  
दिल्लीविच बहुरि हु थान देत, न लयो१जु पुव्व सुहि गिनि  
निकेत ॥

१ मराहृया जानकर २ राजा ३ बहुत चतुर ॥२३॥ ४ निर्भय ॥ २४ ॥ ५ अपने  
नगर में ६ आढा शाखा का चारण दुरसा ७ देवड़ा का ॥ २५ ॥ २६ ॥२७॥ ८  
त्याज्य ॥ २८ ॥ ९ नम्रता १० कछवाहे की कन्या ११ छत्र सहित (राजा) हुए  
पीछे ॥ २९ ॥

इक खिन गोधारैन गहत अैन, निरखे नृप मारकें अप्प नैन ॥३०॥  
 वरजे न रुके जे कछु विसास, ताँडित तब तिन्ह करि असह त्रास ॥  
 पुनि छोरे शनिनहु न किय पुकार, अकबर ३७१ गिनि अर्जन  
 हित उदार ॥ ३१ ॥

हो कुम्भ सुताको स्वसुर हाइ, इतकी सत्र जानतहों अथाइ ॥  
 क्रमि ढिग जिहिँ मान सु साह कान, दिय डारि वज्र आगम  
 निदान ॥ ३२ ॥

सुनि बहुत काल पुव्वहिँ सुँ साह, गंभीर सिँखु मन किन्न ग्राह ॥  
 सुर्जन १९०१ नृप पीछैँ अवधि सेस, न इतक काल पुच्छयो  
 नरेस ॥ ३३ ॥

संसदं कहूँ अक्खिय सहज साह, लखो तँ सूरति वज्र लाह ॥  
 नहि कबहु दिखायो हे नरेस, अवतो सु दिखावहु हुकय एस ॥३४॥  
 इम कहिय अधिप कर धरि कटार, वो पविको जानहु यह  
 अगार ॥

यामाँहिँ रहत हीरासु एक १, कबहुक लखिलेहँ खल कितेक ॥३५॥  
 सुनि एह गई कैरिगो सु साह, अक्खिय जग भोज १९१२ हिँ  
 वाहवाह ॥

मुगलेस सहन यह सुभ न जानि, जरिगो सु मान छमँ नृपहिँ  
 जानि ॥ ३६ ॥

१ गौओं को मारने के लिये मार्ग में पकड़ते हुए २ मारने वालों को देखे ॥३०॥  
 ३ ताड़ना करके ४ आय्यों के ॥ ३१ ॥ ५ कछुवाहा आनसिंह बुन्दी के राजा  
 भावसिंह की पुत्री का स्वसुर था तो भी खेद है कि १ पास जाकर, सूरत के  
 युद्ध में ७ हीरा हाथ लगा था जो कारण सन्निह बादशाह को बुनादिया ॥३३॥  
 ८ समुद्र स्त्री मन में ९ गगर स्त्री उस वार्ता को छिपादी ॥ ३३ ॥ १० समा  
 में ११ हीरे का लान ॥ ३४ ॥ १२ उस हीरे का यह घर है ॥३५॥ १३ चमा का  
 गया अर्थात् सुनी अगसुनी करगया, बादशाह को इस १४ सहनशीलता को  
 बुन्दीय को १५ समर्थ जानकर मानसिंह जलमया

खट अयुत ६०००० दम्भ जिहिँ अर्घ रूपात, देखन हु न दिय  
सो पैबि बैदात ॥

इहिँ मंतुँ साह नृप हनन आदि, करतो कितोकि प्रभुता प्रबा-  
दि ॥ ३७ ॥

सागर गभीर पै साहिय साह, बलि नृपहि गिन्यो निज जय  
निबाह ॥

ओरन असक्य तउ किय अनेक, ईनराम २०३।४ सुनहु तिन  
एकएक ॥ ३८ ॥

जननीहु साहकी मरिय जत्य, सब अँज नृपन बुल्लि रु समत्य  
इम अकिख्य तुमकुल रीति एह, व्है सुंडित गुरुजन मृति अ-  
नेह ॥ ३९ ॥

हम जननि मरन तिन क्यौँ न होहु, सब नृपन धरयो सिर हु-  
कम सोहु ॥

आमैर १ जोधपुर २ मुख अधीस, सब सुंडित हुव गिनि हुकम  
सीस ॥ ४० ॥

बुंदीस भोज १९१।२ तहँ प्रसभ बांधि, सुहु कथन न किय कुल  
धर्म संधि ॥

इम भोज १९१।२ साह परिखँद हु आइ, भास्यो तिन्ह संढेँ १  
न पुरुख २ भाइ ॥ ४१ ॥

मन्नत कति बैम्हनि साह माइ, मत भेद इहाँ संभव मनाइ ॥

जनम्यौँ यह ऊमरकोट जात, बरनी जु हुमायौँ ३१।१ समय  
बात ॥ ४२ ॥

उम हीरे का ? मूल्य साठ हजार प्रसिद्ध है. उस ३ उज्ज्वल २ हीरे के इस ४ अपराध पर ५ ललकार कर भोज को मारता तो उस की कथा प्रभुता थी. ॥ ३७ ॥ देहे राजा रामसिंह ॥ ३८ ॥ ७ आर्य्य राजाओं को बुलाकर बड़े लोकों के मरने के लक्षण सुनन कराते हैं ॥ १९ आदि ॥ ४० ॥ १० हठ करके ११ सभा में आकर १२ उन हीजड़ों में पुरुष की भाँति दीखा ॥ ४१ ॥ १३ बादशाह की उस माता को कितने ही ब्राह्मणी मानते हैं ॥ ४२ ॥

पै जवन<sup>१</sup> खिलन इम निज \*प्रबंध, सुनिये तब ख्याति अप्प-  
२न जु संघ ॥

भजिगो सु हुमायौ<sup>३११</sup> जबहि भीत, तब तजि अंतहपुर दुख  
प्रतीत ॥ ४३ ॥

सब हुरम भजी जिततित ससंक, इकके तँहँ उधरे भाग्य अंक ॥  
जिहिं गर्भ साह सो भजतजात, बंधूगढ पहुँची दुख बितात ॥ ४४ ॥  
तत्थहि हुब अकबर<sup>३७१</sup> तनय तास, उभय<sup>२</sup> हि तँहँ कछुबिधि  
विदित आस ॥

तब नृप बघेल लैजाइ ताहि, सादर सपुत्र रक्खी सराहि ॥ ४५ ॥  
पुनिदिल्ली अकबर<sup>३७१</sup> जैनक पाइ, बनिता जिततित सुनि  
लिय बुलाइ ॥

नृप तब बघेल धरि तिन्ह नृजान, पहुँच्यो हजूर सासन प्रमा-  
न ॥ ४६ ॥

बनिसोहि बघेलन उदय बीज, धी धारत अज्जन करत धोज ॥  
अगगहु कछु सूचित यह उदंत, मन्नहु प्रसंगकरि पुनि सुमंत ॥ ४७ ॥  
जवन<sup>२</sup>न निज ग्रंथन जत्थजत्थ, लिखिदिय अलीक अज<sup>२</sup>  
न अनत्थ ॥

रन प्रथम<sup>१</sup> सहाबुद्दीन हारि, पित्त<sup>१</sup> १७७१ हिं हनि दूजै<sup>२</sup> गो  
पधारि ॥ ४८ ॥

लैगो गहि ३ बहु जन यहहु लायै, इम कतिक कहाँ व्है दुख  
अमाप ॥

प्रेभुके चरित्र अवसर प्रसंग, सूचित सु दोहिं निज<sup>१</sup> पर<sup>२</sup> असंगा<sup>४९१</sup>

पंक्तों ने अपने \*ग्रन्थों (तवारीखों) में लिखा है । अप अपनी ख्याति में जो  
लिखा है सो सुनो. १ जनाना दुःख की प्रतीति से ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ २ प्रसिद्ध हुआ  
॥ ४५ ॥ अकबर के ३ पिता ने ४ स्त्रियों को ॥ ४६ ॥ बघेलों के उदय का ५ कारण  
हुआ ६ विश्वास ७ वृत्तान्त ८ बुद्धिमान् ॥ ४७ ॥ ६ मिथ्या १० पृथ्वीराज को  
॥ ४८ ॥ यह भी ११ कथन है १२ हे प्रभु रामसिंह आपके चरित्र में प्रसंग के

निज निलय वीरवल डक अनेह, साहहिं निमंत्रि बुल्लयो सनेह ॥  
परिजन १ नवावर नृप ३ मुख्य पास, डम गो सु वीरवलद्विज  
निवास ॥ ५० ॥

उतरत वसंतः ऋतु ग्रीष्मः आत, प्रसरत निदाघ असदन प्रपात ॥  
सब कुंकुमादि जल बहु सुगंध, बिरचि सु भरि कृत्रिम कुंड  
बंध ॥ ५१ ॥

किय अरज वीरवल उचितकाल, हजरत इहिं प्रविसहु करि  
निहाल ॥

पहिलें तैंहें अकबर ३७११ करि प्रवेस, बुल्ले भट १ सचिव २ अ-  
नुगर विसेस ॥ ५२ ॥

तब मान १ खानखानादि तत्थ, सब लग्गे प्रविसन हुकम सत्थ ॥  
प्रविस्पो न भोज १९१२ तैंहें हठ प्रमानि, ठहो अरि १ अहुन २  
सज्ज ठानि ॥ ५३ ॥

मुगले ६ सहु आग्रह जदपि मंडि, छम बुल्लयो तदपि न प्रस-  
म छंडि ॥

बुल्लयो प्रसन्न सब इस विचारि, ठहो मँरच्छक हृदय धारि ॥ ५४ ॥  
इक १ अकबर ३७११ अंतिक होहु अल्प, पटु वीर बहुत चहियत  
प्रकल्प ॥

जिन्ह करत सन्नुमन न बढिजाइ, है चोकी बहु भट उचित  
हाइ ॥ ५५ ॥

सो वीरवलहु करि सवन सखिखें, आग्रहजुत बुल्लयो विसेहु अखिख

अबसर पर गरमों के और आग्यों के तन भेद की सूचना की जावेगी ॥ ४९ ॥  
एक १ समग्र वीरवल आग्रह के २ घर पर ॥ ५० ॥ ३ पवन अर्थात् समग्र गर्मी  
पहिले तब केसर आदि सुगंधित जल भरकर ४ बनाए हुए कुण्ड में ॥ ५१ ॥  
॥ ५२ ॥ ५ मानसिंह कदवादा ६ तरवार डाल लेकर ॥ ५३ ॥ ७ समग्र अकबर  
ने कृपाया तो भी हठ नहीं छोड़कर चोला न रखा ॥ ५४ ॥ ८ समीप १०  
विशेष खानखाने पतुर पटुन पारिषे ॥ ५५ ॥ ११ सार्धा १२ इह १३ प्रवेश

मेरे घरही मम न अपमान, बुंदीस करहु लाखि सब विधान ॥५६॥  
तुम सब प्रमत्त इम अक्खि ताहि, सो भोज १९१२ खरो इक  
हठ समाहि ॥

इहिँ आगसँसाहु कोष आनि, पैबि १ मुच्छ २ न दैनहु दैठ  
प्रमानि ॥ ५७ ॥

पहिलै रिक्ताइ अकबर ३७ १ हिँ पूर, सुर्जन १६० १ लिय बावन ५२  
प्रांत सूर ॥

बुंदी १ समीप तिनमैं छबीस २६, बलि कासी ३ डिग एकोन  
बीस १९ ॥ ५८ ॥

॥ छबीस १ नबीस २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

ए पैतालीस ४५ हि लिय उतारि, सप्तक ७ जुत कासी दिय सम्हारि ॥  
तैंहुँ सुर्जन १९० १ लकखन व्यय प्रतानँ, नव थान १ दुर्ग २ सुरगृह ३  
निर्पान ४ ॥ ५९ ॥

माँडा १ कासी श्वरनात्रि ३ मुख्य, सब ठाम रचे निज धाम मुख्य ॥  
पच्छे नलये ते अब्द ८ प्रांत, भोज १९१ २ द्विकै रक्खे अनय प्रांत ॥ ६० ॥  
नृप मन्निय बुंदिय क्यौ न लैहु, उज्जैन न धर्म सुचिबंस एहु ॥  
रहिगो बल्ल अदो ३ तदपि राज, मुदितहि रह्यो सु तिहिँ खिन  
समाज ॥ ६१ ॥

जिहिँ पुनि कहूँ अवसर करन जोरि, विन्नति जवनेसहिँ किय  
बहोरि ॥

समुभक्त हम प्रभुकी छिति १३ असेस, दैहो सुहि रक्खहिँ जि-  
यन देस ॥ ६२ ॥

करो यह कहकर १ विधि ॥ ५६ ॥ २ इस अपराध से ३ हीरा और डाढ़ी मूँछ  
के लात नहीं देने के कारण अर्थात् बादशाह की माता के मरने के समय मराठन  
नहीं हुआ था सो हठ जानकर ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ४ लाखों रुपये खर्च करके ५  
मन्दिर ६ जलाशय ॥ ५६ ॥ ६० ॥ ७ धर्म नहीं छोड़ेंगे ८ अग्निवंश ॥ ६१ ॥ ९  
हाथ जोड़कर १० सब भूमि आप की ही समझते हैं ॥ ६२ ॥

जित लरन काम तित मरन जाँहि, निज स्वामि अनुगं हम  
नाँहि नौहि ॥

हनि धर्ममाँहि कहँ किमहु होइ, गति कर्म नाँहि रखै सु गोइ ६३  
प्रभुकोहि भरोसा तबहु पाइ, हम वजत अज लजन बिहाइ ॥  
न करहि बिलांब सिर दैन नैक, कुलधर्म मिटत कछु चित्त चैक ॥६४॥  
इहिं रक्खि हमहिं छिति दैहु तुच्छ, मति लेहु कुबिध इम नरन पुच्छ ॥  
जिजियाशदि तज्यो प्रभु दम जितोक, वाकोहु अनुग न गिनत इतोक ।  
कुल मग्न रक्खि जो लेहु काम, लघु असन १ वसन २ तो अतिललाम ।  
अकबर ३७१२हु अरज यह सुनि प्रसन्न, छितिपहिं ऋजुँ जान्यो न  
छलछन्न ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

लवपुरको दैवै लग्यो, इहिं सूबा अधिकार ॥

नृप अक्खिय कासी निलय, है आवत दुख द्वार ॥ ६७ ॥

हौं दुँकरम दुकरहु हुकम, सबनहौं प्रभु सज्ज ॥

सिर जो रक्खहु स्वामिसँय, किरँ को दुष्कर कज्ज ॥ ६८ ॥

अतिप्रसन्न साह सु अरज, मनि कहिय नृपमोर ॥

है कासी आवहु बहुरि, लघु जावहु लाहोर ॥ ६९ ॥

नृप गो तब कासीनगर, मंगि बिलांब छद्मास ॥

कुमर रैन १६१२मुख प्रकृति कुल, आनंदित सब आस ॥ ७० ॥

अकबर ३७१२ जौरति करन इन, आत अनय अजमेर ॥

दुव २ मिलैअन आमैर दिय, स्वसुरालय बल सेर ॥ ७१ ॥

१ सेवक रेनांही करने की नांही है अर्थात् कभी नांही नहीं करते ३ छिपा-  
कर नहीं रखेंगे ॥ ६३ ॥ चित्त पर ४ क्रोध होता है ॥६४॥ ६५ ॥ ५ सीधा  
॥ ६६ ॥ ६ लाहोर का सूबा ॥६७॥ ७ दुष्कर कार्य और दुष्कर आज्ञा को माय-  
ने में तैयार हूँ ८ हाथ ९ किल (निश्चय) कठिन कार्य कौनसा है ॥६८॥ १० रा-  
जाओं के सुकुट ॥ ६९ ॥७० ॥ ११ यह यावनी भाषा का देश वाची शब्द है  
१२ सुकाम ॥ ७१ ॥

सस्सू तँहँ मुगल्लेसकी, माननृपतिकी माइ ॥

दिय महिमानो दुवरहि दिन, मह बहु पुरहु मचाइ ॥ ७२ ॥

बुल्लयो वह अवरोध बंलि, जामाता निज जानि ॥

साहहु गो सस्सू सदन, उर आदर भर आनि ॥ ७३ ॥

नजरि१ निछावरि२ सदिनिज, बहुरि बंधूगन बुल्लि ॥

सुविधि कराई सवन सैन, भाग्य सराह न भुल्लि ॥ ७४ ॥

हड्डीहू दुवर तँहँ हुती, इक सुभमति१९२१ अभिधान ॥

जगतसिंह निज कुमार जिहि, मह करि व्याहो मान ॥ ७५ ॥

सु तो जरी जब मृत सुन्यौ, अर्पण पति आसाम ॥

भोज१६१२ सुता दुवरकुल भले, उज्जल किय अभिराम ॥ ७६ ॥

बुंदीही तस सुत बस्यो, नाम जास रघुनाथ ॥

भोज१९१२ सु रक्षयो प्रेष्ट भनि, सुता तनय हित साथ ॥ ७७ ॥

कृष्णावति१९२१ जेठी१ कँनी, दूजी२ तँहँ दूदा१९१२ हु ॥

माननृपहि व्याही कुमार, विधि१ मह२ सह करि व्याहुँ ॥ ७८ ॥

दाहु१ व्याहु२ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

सोही तब पै तिहिँ समय, अति प्रसभहु आई न ॥

गई लैन सस्सूहि गहि, हा कुबधू मतिहीन ॥ ७९ ॥

तबहि खाइ कपूर तिहिँ, पिहितँ छुरी लै पास ॥

कछु अंतर सन गमन किय, अनुचित जियन उदास ॥ ८० ॥

पठई सस्सू अगग पुनि, आई व्याकुल एह ॥

दिठिपरत साहहु दुखित, देखी कंपतदेह ॥ ८१ ॥

पग डारत इतउत परत, बुल्ले अकबर३७१२ विक्खिँ ॥

१ उत्सव ॥ ७२ ॥ २ जनाने में अपना ३ जमाई जानकर बुलाया ४ साल के घर में ॥ ७३ ॥ ५ पुत्र की बहुओं को बुलाकर ६ सब सविधि पूर्वक नजर न्यौछावर कराई ॥ ७४ ॥ ७ नाम ८ मानसिंह ने ॥ ७५ ॥ ९ अपने पति का १० सुन्दर ॥ ७६ ॥ ११ प्यारा कहकर ॥ ७७ ॥ १२ बड़ी कन्या १३ विवाह ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ १४ छाने ॥ ८० ॥ ८१ ॥ १५ देखकर



को आवत यह असु विकल, सासन निवहन सिदिख ॥८२॥

यह दूदा१९११की अंगजा, सुनि बुल्लयो उठि साह ॥

सस्सू जड तैं किय विरस, लेत सभा रस लाह ॥८३॥

जो हड्डी६१ यह तो सजव, जिम तिम गृह लै जहु ॥

खायो कछु इहि मरनकहु, सस्सू जदपि सुहाहु ॥८४॥

जाहु१ साहु२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

विरचावहु बैद्यन बिहित, आसु जियन उँपचार ॥

सस्सू गय ढिग यह सुनत, लाखी विकल ज्ही लार ॥८५॥

औषध दिय बैद्यन उदित, जिहि पच्छी लैजाइ ॥

छन्नै ढिग निकसत छुरी, हेतु कहयो करि हाइ ॥८६॥

मैयाकँहँ उर मारती, मुख लाखतो जो मिच्छ ॥

ताहु लाखी हड्डी६१हु तिहिँ, यातैं जियन अनिच्छ ॥८७॥

तुमरे सुतके अब तँलप, जैवो पैरभव जोग ॥

कहि इम पुरवाहिर कढी, भँवके परिहरि भोग ॥ ८८ ॥

पृथक ग्राम हड्डीपुरा, बाहिर रहिय वसाइ ॥

जब मृत भान सु तब जरिय, स्व कुलहि मुख्य लैसाहि ॥८९॥

यह भावी पै इम सु अब, अकबर३७११ है अजमेर ॥

दिल्लीपुर गो पुनि दुसह, बाँहुरि संभर्व बेर ॥ ९० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायण षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशभोज  
चरित्रे सीरोहीविजयार्थयुद्धशीर्षोद्विजगमालादिनरशारावसुरतागावि

१प्राण रक्षाज्ञा ॥८२॥ २ पुत्री ॥८३॥ ४ शीघ्र ॥८४॥ ५ उचित वशीघ्र ७ इलाज  
८ लज्जा सहित ॥ ८५ ॥ ९ कारण ॥ ८६ ॥ १० शय्या पर ११ दूसरे जन्म  
में १२ संसार के भोग छाड़कर ॥ ८८ ॥ १३ मित्र १४ मानसिंह मरा तब १५  
शोभायमान करके १६ यह बार्ता आगे होतवाली है १७ पीछा फिरकर १८  
सम्भव समय पर ॥८९॥९०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भो-  
ज के चरित्र में सीरोही को विजय करने के युद्ध में जगमाल शीरोदिया आ-

जयासादन १, यवनेन्द्राकबरबुन्दीशभोजकृतानेकापराधक्षमनभोज  
जस्वधर्मदृढीभवन २, अजमेरनगरपीरयात्रार्थप्रस्थितयवनेन्द्राकबर-  
स्वश्वशुरगृहामेरगमनादिकथावर्णनं सप्तदशो १७ मयूखः ॥

आदितो द्विशततमः ॥ २०० ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक छ वेद सोलह १६४६ समय, इत कासीनृप अैन ॥  
कुमर रत्न १९२१ के हुव कुमर, दुर्जय पर भय दैन ॥ १ ॥  
असित १ भाद्रपद ६ दोजि २ अह, जन्म तास लिय जानि ॥  
आव्हय गोपीनाथ १९३१ इहि, पायो गनित प्रमानि ॥ २ ॥  
अधिप मान दौहित्र यह, लीला १९२१ औरस मूर ॥  
सुनि जनम्यो बरख्यो सुपहु, पुरटमेह यह पूर ॥ ३ ॥  
कछु कासी १ चरनादि २ कछु, रहिय भोज १९१२ अधिराज ॥  
बुंदी जिम विलसिय बिभव, सुरपति प्रतिम समाज ॥ ४ ॥  
हुतो पुरोहित संगही, द्विज इक १ देवीदास ॥  
गैल इतर क्रोड न गयो, बुंदीही करि वास ॥ ५ ॥  
दिष्ट ज्वरी किय सोहु द्विज, यातैं नृप अनखाइ ॥  
पलटन और पुरोहितन, भोज १६११ चहिय हिय भाइ ॥ ६ ॥  
किय विन्नति तैंहें जोरि कर, व्यास चक्रधर विप्र ॥  
पुब पुरोहित गर्वपर, छोर न समुचित छिप्र ॥ ७ ॥

दि मारे जाकर राव सुरताण का विजयी होना १ बुन्दी के राव भोज के अपराधों को बादशाह अकबर का क्षमा करना और भोज का अपने धर्म में बदल रहना २ अजमेर में पीर की जारत करने को प्रयाण करनेवाले बादशाह अकबर का अपने स्वसुर गृह आमैर में जाने आदि कथाओं के वर्णन का सप्तहवां मयूख १७ समाप्त हुआ और आदि से दोस्तों २०० मयूख हुए ॥ काशी के १ स्थान में ॥ १ ॥ २ द्वितीया के दिन ३ नाम ॥ २ ॥ ४ स्वर्ण के मेह ॥ ३ ॥ ५ इन्द्र के ६ सदश ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ भाग्य ने ८ ज्वर युक्त किया १ ९ उचित १० शीघ्र ॥ ७ ॥

पैठवाल१द्विज तजि सुपहु, चोलंख्या२पुनि चाहि ॥  
करहु पुरोहित प्रीति करि, निज कुल रीति निबाहि ॥ ८ ॥

॥ मनोहरम् ॥

चोलंख्या धनेस्वर जो भूसुरसो भूपभोज१९११३,

करन पुरोहित बिचारयो जानि जबही ॥

देवीदास ज्वरकी दसाहुमैं दुसह दुख,

ताको तार्कि देसमैं पठायो पत्र तबही ॥

नाभा१सिवदास२दूदा३रामा४ओभा५केदार६,

रु परसा७स्वदेसतैं ए सात७आइ सबही ॥

द्वार रहि ठाढे दीन विन्नति करन लागे,

क्यों तजो हमैं यह करी न काहु कबही ॥ ६ ॥

॥ पद्धतिका ॥

नृप कहिय हाल कल्लोल नाम, जो रहत मत्त इमैं अष्ट८जाम ॥

इहिं पूजि पुरोहित रहहु अप्प, द्विज तजहु नतौ अब मोघ दप्प १०

नाभा तब पूज्यो वहहि नाग, भाख्यो न जाइ हम वृत्ति भाग ॥

इम नम्र विविधकर जोरि आखि, सुंडाधरि हडन सबन सखि ११

पूजनविधाइ किन्नौ प्रनाम, करिराज भयो सुभ द्विजन काम ॥

पहिलेहि विप्र इम रहत पोरि, रहिगो सु धनेस्वर मनहिं मोरि १२१

नाभाहित पुहवी कछु नरेस, बखसन जैं लग्गो हित बिसेस ॥

भाखिय तैं नाभा जिम स्वभंग्ग, एकासी=१बीघा अवनि अग १३१

पाई कुलपुरुखन विधि प्रमान, लाहि हेतु कछु सु गत हुव लवान ॥

सुहि मोहि देहु नृप धर्म सोधि, बारहठ सुकवि ईस्वर १९५१प्रबोधि

महिपति तब ईस्वर १६५१मन मनाइ, भुव सोहि दिवाई उचित भाइ

आखिय नृप कवि तुम लेहु ओर, जो पै न लई कवि सुमति जोर १५॥

॥ ८ ॥ १ देखकर ॥ ९ ॥ २ हाथी ३ झूठा घमंड ॥ १० ॥ ४ साक्षी ॥ ११ ॥ १२ ॥

५ अपने भाग (हिस्से) की ६ भूमि ॥ १३ ॥ ७ ग्राम का नाम ॥ १४ ॥ १५ ॥

लिखि सुतहिँ पत्र सुहि छिति लवान, दिय सर्व पूर्वगत द्विजन दान॥  
 द्विज नाम धनेस्वर१काँ स्व देस तिबसथ सु धोहरा२दिय नरेस ॥ १६ ॥  
 रहि दूदा३९१११डिग जिहिँ परसुराम४, किय अति विरोधमय विविध  
 काम ॥

तोहू व ग्राम गग्घोस२ताहि, सुर्जन१९०॥१ सुत अप्पिय गुन सराहि  
 चरनादि१रू कासी२मास च्पाणि४, संभरनरेस रहि सब सम्हारि ॥

रच्छक तँहँ रक्खिय कुमर रैन १९२॥१, अक्खिय सुत आनहु स-  
 वन अैन ॥ १८ ॥

पुर दिल्ली पुनि सासनप्रमान, आयो बुंदीपति बल अमान ॥  
 संसद बुलाइ तिहिँ कहिय साह, मचि डमर मिटत लाहोर लाह ॥ १९ ॥  
 निज बल सिख हीरासिंहनाल, नानक विनेष जगहित निकाम ॥  
 अनुमांत्रि नरन रचि धाटि एस, वपुरी प्रजाहिँ लुटत विसस ॥ २० ॥  
 तासौ बचाइ नृप जाइ तत्थ, सूबा सम्हारि विरचत समर्थ ॥  
 पुहवीस सु सुनि लाहोर पत्त, सूबापति तँहँ हुव चाहि स मत्त ॥ २१ ॥  
 जुतधर्म१नीति२राज्यहिँ जबाइ, पट्टु चर पठाइ सिख सुद्धि पाइ ॥  
 बेढ्यो हि जाइ खल हड्ड६१वीर, सुमिराइ बिलुटन पाप सोर ॥ २२ ॥  
 तरवारिभारि तिम रन रचाइ, मारयो सु धाटिधर जस मचाइ ॥  
 सूबा अभीत करि संभरीक, प्रतप्यो सम्हारि तस सब प्रतीक ॥ २३ ॥  
 बुंदीस स्व बल जिम सिख विपन्न, सुनि तिम उदंत अकवर ३७१  
 प्रसन्न ॥

मालपुर१टौक२टोडा३समेत, यह त्रिक३वहोरि दिय हित उपेत २४  
 इतकाँ बुंदेलन बल उफान, थानाँ बहु कटिय थानथान ॥

१ ग्राम ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ २ समा में ३ उपद्रव ॥ १९ ॥ नानक का ४ शिष्य  
 होकर. संसार के हित में ५ निकम्मा ६ अपनी सलाह में लेकर ॥ २० ॥ ७  
 समर्थ ॥ २१ ॥ ८ चतुर ९ हलकारा भेजकर १० लूट स्मरण कराके ॥ २२ ॥ ११  
 बस सूबा के सय अंगों को सम्हाल कर ॥ २३ ॥ १२ विपद् अस्त ॥ २४ ॥

प्रकटहि दुश्आबल ग लूट पारि, अति धन बहु निबसथ दिय  
उजारि ॥ २५ ॥

सूबा प्रयागको अप्पि साह, पठयो सिरीफखाँ बल प्रबाइ ॥  
तिहिं जात अरज किय हित बताइ, हहुद१नबस गढ चरनादि१  
हाइ ॥ २६ ॥

अधिकारी तैसे गढ उपेत, खल सब जुरि जितहिं बीर खेत ॥  
वह मोहि देहु तिनसौं उतारि, बलि लखहु प्रजा सुख सुभविचारि ।  
जाकेहिसंग फरमान तत्थ, अकबर३७११पठयो गढ दैन अत्थ ॥  
लाहोर तिमहि दूजो१लिखाइ, भेज्योसु भोज१९११प्रति उचित  
भाइ ॥ २८ ॥

नृप१बंघि वह रु कुमरहिं निदेस, पठयो लिखाइ गढ करहु पेस ॥  
पहुँच्या सु बिलौबि रु कुमरपास, सूबापति अग्गाहि गो सकास २९  
जिहिं गढ प्रयाग प्रभुता जमाइ, लैवे गढ पठयो दल१लिखाइ ॥  
सौंपै फरमान२हु ताहि सत्थ, सूबापति पठयो बल समत्थ ॥ ३० ॥  
इत रैन१९२१कुमारहु जिहिं अनेह, अधिबीर हुतो चरनादि१ह ॥  
गो तँह फरमान१ सु तिहिं गिन्यो न कहि हमहिं देत नृप हुकम२  
क्यौन ॥ ३१ ॥

पच्छोसु दूत पुनि गो प्रयाग, भाख्यो न देत गढ गिनि स्व भाग ॥  
सुनि यह सिरीफ लाहि अल्प सत्थ, समुक्तावन कुमरहिं गो स-  
मत्थ ॥ ३२ ॥

जिहिं रैन१९२१कुमर चरनादि जाइ, समुक्तायो छोरहु गढ सुनाइ  
नृपको हि कुमर मंग्यो निदेस, सूबापति बुल्लयो खाजि बिसेस ॥  
तू बैप हुकम क्यौ चहत ताँनि, सुगलेस बडे अप्पहिं प्रमानि ॥

१ ग्राम ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २ तहाँ ३ अर्थ (गढ देने के लिये) ॥ २८ ॥ गढ ४  
नजर करदा ५ दर से पहुँचा ६ समीप ७ पत्र ॥ ३० ॥ जिस ८ समय में ९ वीरों  
का पति ॥ ३१ ॥ १० अपने हिस्से का जानकर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११ पिता का हुक्म  
१२ खैच करके

कुमरहु यह सुनि खिजि हनि कटार, फारयो सिरीफ उर गर्व  
फारें ॥ ३४ ॥

महिपति भोजा १९१२ बुज रायमल्ल १९१३, सुत रामचंद्र १९१४  
तस स्व कुल सल्ल ॥

सिसु बैहि जनक सन जो रिसाइ, पति कछुदिन दूदा १९१४  
कुमर पांड ॥ ३५ ॥

पुनि रहि सिरीफखाँ स्वाभिपास, बहिकाइ करायो तस विनाम  
मरतहि सिरीफ मुहु राम १९१४ मूढ, अरि कुलको गो भजि  
तैंहें अंगूढ ॥ ३६ ॥

जुज्झे इत १८२ के कछुक जोध, बलि जवन भजे असहन विरोध  
पुनि भोज १९१२ हुकम गो कुमरपास, सुत देहु दुर्ग सासन  
विनास ॥ ३७ ॥

अंतर इतेक पहिलैंहि एह, इत हुव उदंत आंगस अछेह ॥  
सो असह सुनत अति छुद साह, चितयो हड्ड १९१४ नसिर हनन  
चाह ॥ ३८ ॥

ओरनसम अकबर ३७१ पै न आहि, गंभीर सिंधुमन नयवगाहि ॥  
सिवपुरिय १ परगनाँ सत्त ७ सत्थ, सब लिय उतारि अट्टहि समत्थ  
सुर्जन १९०१ के विरचे थान साह, लिय नहि कारीविच मि-  
निकुलाहि ॥

माँडा १ चरणादिक २ आदि माँहिँ, वाकेहु रचे लिय सर्व आँहिँ ॥ ४० ॥  
अधिकार दये लवपुर १ उषेत, मालपुर १ टोकस्टोडा ३ समेत ॥  
इतकेहु लये हैं अग्रसन्न, बुल्लयो नृप भोज १९१२ हिँ चदि  
विपन्न ॥ ४१ ॥

१ हृदय २ समूह ॥ ३१ ॥ ३ भोज का छोटा भाउ ४ अपने कुल का साल ॥ ३५ ॥  
५ प्रसिद्ध ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ६ अपराध ॥ ३८ ॥ ७ अकबर आग्य वादशाहों के लज्जन  
नहीं था ८ मन का गंभीर समुद्र ९ नीति का आद लेनेवाला ॥ ३९ ॥ १० लोटा-  
लान ॥ ४० ॥ ११ विपन्न ॥ ४१ ॥

पहु भोज १९१२ तबहि सासन पठाइ, बुंदी सब अपने लिय बुलाइ  
रनवाससहित तब कुमार रेन १९२१, आयो सब स्वीयेन स्वीय  
अने ॥ ४२ ॥

अहि बेद अष्टि १६४८ संवत अनेह, इस पत्तो बुंदिय रत्न १९२१ एह  
इत भोज १९१२ हु दिल्ली सजव आइ, जवनेसहिं सेयो नति  
जनाइ ॥ ४३ ॥

इहि कृत बहु रन जय चित्त आनि, जवनेस बुलायउ स्वीय जानि  
दिय नृपहिं उपाखंडहु दु २ पार, किय यह अति हेलैन तब  
कुमार ॥ ४४ ॥

तब कानि तज्यो नहिं तो मंत्रास, इनतो मै रेन १९२१ हिं हैन हास  
माग्यो सिरीफ जिहिं निबुदि भंतु, तस मै न रक्खतो कुलहु तंतु ४५  
सुर्जन १९०१ के तेरेसे सुकर्म, मै अटक्यो सुभिरत विविध मर्म ॥

इम होइ हात कछु दिन अतीत, पछोनरेस किय साइ प्रीत ॥ ४६ ॥

इहि समय नाम जाको अयाज, सु जवन तातारी रहित साज ॥

विगरयो विपत्ति आगम विसेस, इतकों तब आयो दुखितएस ॥ ४७ ॥

बनितो सगर्म संगहि विहाल, कन्या हुव ताकै प्रसवकाल ॥

तातार अज्ज भुव अंतराल, बन गहन प्रसूता हुव सुवाल ॥ ४८ ॥

हे भूख पुव्वहि सत्त्वहीन, दुखमै पुनि यह दुख दिष्ट दीन ॥

इम रूपवती कन्याहु उज्झि, बनमै रु चले मग अग्न बुझि ॥ ४९ ॥

तिम सिंघुसन कछुकछु दूर जाइ, सुरि सुरि तिम देखत वप्प १ माइ २

कन्या परी सु पढ़ति किनार, माताकों तह दिव मोह मार ॥ ५० ॥

बच्चा बच्चा कहि तवसु बाल, बिलपात गिरी भुव अति विहाल ॥

१ ज्ञाना २ सेवकों सहित अपने ३ घर में आया ॥ ४२ ॥ ४ खींच ५ मंत्रवा

दिनाकर ॥ ४३ ॥ १ ओलम्बर ७ कपराध ॥ ४४ ॥ ८ चढ़ दूती नहीं है ९ बिना

कपराध ॥ ४५ ॥ १० व्यतीत ॥ ४६ ॥ ११ बिना सामग्री १२ विपत्ति आने से

॥ ४७ ॥ १३ त्वा तातार और १४ आध्यात्म के १५ बीच में ॥ ४८ ॥ १६ परा-

क्रम हीन १७ होइकर ॥ ४९ ॥ १८ उस छोटेसु बालक से १९ वह कन्या मार्ग के

किनारे परपदी थी ॥ ५० ॥ २० बच्चा बच्चा कह कर विहाल होकर भूमि पर गिर पड़ी

तिहिं लाखि अयाज पच्छोहि जाई, लायो कनी सु उरतैं लगाइ ५१  
 कति कहत लाखो सिसु कहन काल, बपु बेडिरह्यो तस काल व्याल  
 वह गो भजि इहिं तनया उठाइ, अप्पी निज नारिहिं बहुरि आई ५२  
 तहँ मग मिलिं सोदागरन ताहि, बसुं कछुक दपों करुना निवाहि ॥  
 वाके बल लवपुरं तिनहु आई, बाँसर कछु कहे दुख बिताइ ॥ ५३ ॥  
 बनिता १२ सुता २ जुत सुनि सु बत्त, पुनि यह अयाज दिल्लीहि पत्त ॥  
 साहहु तिम पट्ट सुनि लाखि समाज, वह कियउ मीरबखसी अयाज  
 ताकै दुव २ सुत हुव जदपि तत्थ, सो प्रीत तदपि तनयाहि सत्थ ॥  
 अति रूप सुता वह लाखि अयाज, बिद्याहु स्वीय सिखई सबार्ज ॥ ५५ ॥  
 गुन १ रूप २ उभय २ लहि वहि गंरीय, बयं मध्य २ ३ लहत हुव बढि वंरीय  
 पहिलैहि फिरंगी पोर्तुगेज १, आये पुनि निज भुव अंगरेज २ ॥ ५६ ॥  
 अधिर्राज राम २ ० ३ ४ जिम यह उदंत, सब सुनहु सोहु क्रम अब  
 सुमंत ॥

अगँ यूरुपजन मग अजान, अजान भुव सोदागरन आन ॥ ५७ ॥  
 मग हेरि थके जिततित महीप, पथ उत्तर ४ १ पच्छिम ३ २ लाखि प्रतीप  
 बहु वरफ फसे जिनके जिहाज, सहँसन जन मरिगय तउ सलाज ५  
 उद्योगिन न तज्यो प्रसभ एह, आयेदक्खिन २ ३ दिस जिहि  
 समय १ २ सोदागर नाम २ संग, प्रभुराम २ ० ३ ४ सुनहु अब हुव प्रसंग १  
 मसंग १ प्रसंग २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

संवत जब गुन सर तिथि १ ५ ५ ३ समान, पावत तब नृप इह इहि ॥ १ ॥

१ कन्या को छाती से लगाकर लाया ॥ ५१ ॥ कितने ही कहते हैं  
 उसकी माता ने बच्चा बच्चा कहा उस समय उस लड़की को काले  
 ने घेर रक्खी थी ॥ ५२ ॥ ३ घन ४ लाहोर ५ दिन ॥ ५३ ॥ वह अयाज  
 ६ गया ७ समार में ॥ ५४ ॥ नशीबता से ॥ ५५ ॥ ९ भारी १० सुन्दर ॥ ५६  
 ११ हे राजा रायसिंह जिस प्रकार यह वृत्तान्त है सो सुनो १२ आगे  
 के लोग आर्यावर्त का मार्ग नहीं जानते थे १३ आर्यों की भूमि का ॥ ५७  
 १४ उलटे १५ हजारों मनुष्य ॥ ५८ ॥ तो भी उद्योगियों ने १६ हठ  
 छोड़ा ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥



पोर्तुगीजों का हिन्दुतानमें आना] पठराशि-अष्टादशमयुख (२४०९)

संग्रामशरान चित्तोर२सीस, इत बुंदी२नारायन१८७।१२अधीस॥६०॥

गढ जोधपुर३ सु जब गंगदेव, आमैर भूप भगवंत एव ॥

लोदी५जुसिकंदर२८।५दिष्टलाह, सो हो जब दिह्लिय५पातसाह॥६१॥

बलि ग्राम आगरा जिहिं विथारि, पुर किय बादलगढ नाम पारि ॥

घल्लिय तस अकवर३७।१अधिक घेर, बलि सुनहु सिकंदर२८दी  
हि वेर ॥ ६२ ॥

राना संग्रामाशदिक नरेस, वरनै जब तव हुव यह बिसेस ॥

पुर१ लिसवन२ जनपद२ पोर्तुगाल२, जब सज्जिय सोदागरन  
जाल ॥६३॥

॥ दोहा ॥

सासन लिसवन साहको, पोर्तुगेज जन पाइ ॥

आवन तव अज्जन अवनि, भये सज्ज हितभाइ ॥६४॥

॥ हरिगीतम् ॥

वास्कोडिगासा नाम तिन विच मुख्य सोदागर बन्यो,

॥

राजा१ प्रजा२ वरज्यो कह्यो बहु पोत फसि हिममै रहे,

वहुतै मरे१ कछु बाहुरे२ जन व्यग्रभाव बहे बहे ॥६५॥

पहुँचै न अज्जनखंड तू जिन जाहु जल मग पोततै,

जन बरफ१तै न बचै तथापि जथापि सागर स्रोततै ॥

वास्कोडिगासा१ बुल्लयो तजिकै उदीचि१।१ प्रतीचि ३।१त्यो,

जै हों व बलिजन२।३ पंथलै पहुँचै जिहाज सभद्र ज्यो ॥६६॥

तिनतो जथापि नश्योगिन्यो रहतो त जाये नश्यो तथा,

---

॥ ६३ ॥ लिसवन नामका बादशाह की ? आज्ञा लेकर २ आर्यावर्त में ॥६३॥  
३. जहाज वहाँ में फले ४ व्याकुल ॥ ६४ ॥ ५. लुट्ट के प्रवाद में ६ उत्तर ७ प-  
श्चिम को छोड़कर ८ अर्ध ९ कुशलता पूर्वक ॥ ६६ ॥

पृथु द्रव्य तीन३ जिहाज भरिलिय अफ्रिका मगकी प्रथा ॥  
 जा उत्तमासा १ केप अब गुडहोप २ नाम उभै भैजै,  
 तिहि अंतरीप गया यहै जन साहसी पन कपौ तजै ॥ ६७ ॥  
 बास्कोडिगामा १ केप अब गुडहोपतै मुरि वामकौ,  
 ध्रुव अदः जुत दस१० मांस करि पहुँच्यो सु अँजन धामकौ ॥  
 प्रभुराम २० ३१४ तँहँ सक अप्पनौ चउ पंच तिथि १५५४ मित पिदखयो,  
 भुव अप्पनी पहिलो १ फिरींगी १ एह तव प्रविसतभयो ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

मंदराज हाता २ महिष, अनल कोन २ दिस आहि ॥  
 अंग्रेजन परतंत्र अब, ताँतै नैऋत ५४ ताहि ॥ ६९ ॥  
 केरल भुव आयो कहत, जलनिधि तट पुर जत्थ ॥  
 कलीकोट जु नाम करि, तरिनै लगाई तत्थ ॥ ७० ॥

॥ युग्मम् ॥

पुर दिल्ली कोटहि प्रथम १; सब उतारि संभार ॥  
 लाभ अधिक ताँतै लह्यो, बेचि सु बस्तन बौर ॥ ७१ ॥  
 इहाँ फिरींगी पुव्व यह, प्रविश्यो इम मग पाइ ॥  
 लाभ बहुत धन लैगयो, लिसवन बिभैव लैसाइ ॥ ७२ ॥  
 पातसाह १ अरु सब प्रजा २, लखत ताहि हिय लाइ ॥  
 हुलैसि बधाई करतहुव, जिततित हरख जनाइ ॥ ७३ ॥  
 ताको इम जस १ जुत तवहि, सब गूरुप हुव सोर २ ॥

१ चडे खन मे. आफ्रिका के मार्ग की रीति ली ३ दोनों नामों को धारण करता है अर्थात् उस मार्ग के दोनों नाम से प्रसिद्ध है ४ साठवीं पुण्य अपनी प्रतिज्ञा को नहीं छोड़ते ॥ ६७ ॥ ५ आर्यावर्त में पहुँचा ॥ ६८ ॥ ६ अग्निकोण में है ॥ ६९ ॥ कहते हैं कि यह ७ केरल देश की श्रुति में आया था ८ संप्रदाय के किनारे के ९ जटान ॥ ७० ॥ १० खाजगी ११ समुद्र ॥ ७१ ॥ यहाँ सब दो पहिले यह फिरींगी १२ आया लिसवन नामक बादशाह के १३ वैभव को १४ शोभायमान करके ॥ ७२ ॥ १५ प्रसन्न होकर ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

आयो लखि जलमग्न यह, अब किन चल्लहु और ॥७४॥

पोर्तुगेज? आदिक प्रचुर, लघु तब यह पलोक ॥

धरि पोतन विक्रय धन, आनलगे इहि ओक ॥ ७५ ॥

पातैं सबनैं अति अधिक, लखे विक्रय लाह ॥

लखि सु कतिन पुर लंडनहु, चित बढी सुहि चाह ॥ ७६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणो पञ्चदशौ बुन्दीशभोजभू-  
पचरित्रेप्राप्तलाहोराधिकारभोजनानकपन्थिहीरासिंहमारणात्तत्पान्त  
तापनिवारणा १ कुमाररत्नसिंहकाशीचरणाद्रियवनेन्द्राधिपत्यार्थ-  
प्राप्ताज्ञप्रस्थितसिरीफलांपवनमारणा २ एतदपगधातृकाश्यादिभुयव  
नेन्द्राधिपत्याच्च कुमाररत्नसिंहस्य वाराणासीतो बुन्द्यागमनभोजस्य  
दिल्लीगमनोत्तरसप्रश्रयवनेन्द्रप्रसादापादन ३ तातारागच्छन्मूरजि-  
हांजनकायाजार्थावर्तागमनसमयाध्वान्तन्मूरजिहांप्रादुर्भवनलङ्कित-  
लाहोरदरिद्रदशापन्नायाजदिल्लीगमनानन्तरसेनापतिपदवितरणा ४  
आर्यावर्ताध्वान्वेषकयूरपजनानेकपोतहिमप्रासनाशोत्तरपोर्तुगीजेश-  
लिसवनाज्ञावर्तिवास्कोडिगामानामवशिज आर्यावर्तप्रथमागमन ५

१ बहुत २ शीघ्र ३ जाहाजों में ४ बचने का धन भरकर ५ इस स्थान में आने  
लगे ॥ ७१ ॥ ६ बचने का लाभ ॥ ७६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के श्रुपति भो-  
ज के चरित्र में भोज का लाहोर के सुबे पर जाकर नानक पन्थी हीरासिंह  
को मारकर उस सुबे का ताप मिटाना १ काशी और चरणाद्रि को खालसे  
करने की आज्ञा लेकर गये हुए सिरीफलां का कुमार रत्नसिंह का मारना २  
इस अपराध के कारण और काशी आदि के खालसा होजाने से कुमार रत्न-  
सिंह का सकुटुम्ब काशी से बुन्दी आना और भोज का दिल्ली जाकर नञ्जता  
पूर्वक बादशाह को प्रसन्न काना ३ मूरजिहां के पिता अयाज का तातार से  
आर्यावर्त में आने समय जहाँ में मूरजिहां का जन्म होकर दरिद्र दशा में  
लाहोर होकर दिल्ली आने पर मीरबखशी के पद पर नियत होना ४ यूरुप के  
लोकों के आर्यावर्त के मार्ग में डूबने में आनेक जहाज बर्क में फलकर नष्टहुए  
पीछे पोर्तुगेज के बादशाह लिसवन की आज्ञा से वास्कोडिगामा नामक लो-  
दागर का सब से प्रथम आर्यावर्त में आना ५ इसके अपूर्व लाभ को देखने

एतदपूर्वलाभदर्शनोत्तरयूरूपान्यवणिजांलगडननिवास्यांगलानांचार्या-  
वर्ताजिगमिषावर्द्धनमष्टादशो मयूखः ॥ १८ ॥ आदित एकोत्तरद्वि-  
शततमः ॥ २०१ ॥

॥ प्रायोत्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत नृप रान प्रताप मृत, सुनि अकबर ३७१२ कुछ सोचि ॥

सख पठाये सखधर, अब न काम आलोचि ॥ १ ॥

इम न भई तो डारि असि, बुल्लयो न अब बिधान ॥

मोहि सख अवधानमैं, रक्खतहो इक रान ॥ २ ॥

सुनि यह अमर प्रतापसुत, खैटक ४ दुवशुवशखग ॥

पठये अकबरसाहप्रति, इम कहि वचन उदग ॥ ३ ॥

रक्खहु अप्प प्रसन्न रहि, सख द्विगुन अबसाह ॥

पुत्रहुरानप्रतापकै, रक्खत निज कुल राह ॥ ४ ॥

पै पीछैं कति जन कहत, अति लोभी अमरेस ॥

हुकम साहको सद्धि हुव, उदयनैर प्रभु एस ॥ ५ ॥

सो भारीपै अब सुनहु, बर्गान खिन सक वत्त ॥

महि अजन अंग्रेज मिलि, आये जिमि अनुरत्त ॥ ६ ॥

॥ वेतालः ॥

दिल्ली सिकंदर २८१२ हो जहाँ बुंदी नरायनदास २८७१२ ॥

अवनी इलाँ मग लाखन जस तव पोर्तुगेज १२ न आस ॥

जवतैंहिँ यूरुप २ के धनैजन आनलगिय अत्थ ॥

सं यूरुप के अन्य सौदागर और लगडन के अंग्रेजों की आर्यावर्त में आने की  
चाहना बढ़ने का अठारहवां १८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ ए  
क २०१ मयूख हुए ॥

इन शस्त्रों से अब काम नहीं है यह ? विचार कर ॥ १ ॥ २ प्रवृत्त अधवा वि-  
धि अर्थात् अब शस्त्र रखने का काम नहीं है ३ शस्त्र रखने की सावधानता में  
॥ २ ॥ ४ ढाल ५ उदग्र (निरंकुश) ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ प्रीतियुक्त ॥ ६ ॥ ७ भू-  
मि और भूमि के मार्ग को देखने का यश पोर्तुगेजवालों को न हुआ ९ यहाँ

सबकेहि लाभ विसैस संचित भो जिहाजन सत्य ॥ ७ ॥

अंग्रेज२लोकहु चाहि तबसेन अज्जजनपद आन ॥

अब सज्जि च्यारि४जिहाज इन मिलि किन्न सीर प्रमान ॥

नर साहतो जब हो नही नहिं द्रंग लंडन लाह ॥

तिय नाम ऐलीजबथ१ही तैंहें साहजादिय साह ॥ ८ ॥

अब हे जैथा विकटोरिया तिनसी हुती प्रभुतत्य ॥

सासन तदीयें लिखाइ इम लिय बनिज सीरिन सत्य ॥

हमरे हि वस्तुनको उहाँ क्रय अब्द पंद्रह१५ होइ ॥

बानिज्यतो हम जाइ विरचहिं छुटैतैं न बिगोइ ॥ ९ ॥

॥ सामान्यलक्षणोनोल्लालोविशेषणाकर्पणोवा ॥

तब सासन ऐलीजबथ तिन्ह, अप्पि तिम रु पठये हि और ॥

कहि ईसट१इंडिया२कंपनी३, पुर्व१अज्जभुव२बनिक३पर ॥ १० ॥

सब सीरदार सोदागर१न, कहत उहाँजनकंपनी२ ॥

दिस पुर्व१ईसट२अरु इंडिया१, भुव अज्जन१जावत भनी ॥ ११ ॥

कति सीरदार बानिज्य कर, ऐलीजबथ निदेस इम ॥

अंग्रेज१ प्रथम आये इहाँ, जोहु समय सुनिये वैं जिम ॥ १२ ॥

इत दिल्लीपति यह अकबर३७११३हि, इतं बुंदी नृप भोज१९१३यहें

अमरेसै३ रान सीसोंद इन, सूर१जोधपुर इत सु बह ॥ १३ ॥

आमैर मौन५ छत बनिक्कै ए, चउ४ जिहाज भरि द्रव्य चैय ॥

अंग्रेज२प्रथम आये यहाँ, सक रस सर सोलह१६५६समय ॥ १४ ॥

॥ ७ ॥ १ तब से २ आर्य देश में आने लगे. उस समय ३ पुरुष बाइशाह नहीं

था ॥ ८ ॥ ४ जिसप्रकार इस समय विकटोरिया है तिसप्रकार उस समय ऐ-

लीजेबथ नामक खलका थी ५ उसकी आज्ञा ३ छल से ॥ ९ ॥ ७ कीज ८ आ-

र्यावर्त के पूर्वदिशा के व्यापार पर ॥ १० ॥ ९ हिस्तेदार व्यापारियों को बहाँ

कम्पनी कहते हैं १० पूर्वदिशा को ईस्ट, और आर्यावर्त को ११ इंडिया कहते

हैं ॥ ११ ॥ १२ अब ॥ १२ ॥ १३ शोचोदियों का मृत्यु राणा अमरसिंह १४ सूर-

सिंह ॥ १३ ॥ १५ मानसिंह १६ व्यापार करनेवाले १७ धनके १८ समूह से ॥ १४ ॥

प्रभुराम२०३।४ आइ इम निज पुहवि, साधुभाव सह रीतिसन ॥  
 बानिज्य करनलगे विविध, चितवत डढ अप्पन चलन ॥ १५ ॥  
 अकवर३७।१हु साह दिल्लीस इत, कंटक हत राज्यहि करत ॥  
 सासन तदीय भूपाल सब, धनतनरमन३बचन४न धरत ॥ १६ ॥  
 सक अठ पंच सोलह१६५८सु कवि, केसव बिप्र कवित्व करि ॥  
 श्रीरामचंद्रिका१ ग्रंथ सुभ, प्रारंभिय पद्वति पकरि ॥ १७ ॥

त्वकरि१ पकरि२ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

अप्पिय मुनसब अगग हड्ड१कहँ पंचहंजारी ५००० ॥

सत्तहजारी७०००सहित कुम्म२किय निज अधिकारी ॥

रीति इहाँ प्रभु राम२०३।४विविध जन विविध बतावत ॥

पै बहु बुधन प्रमान जथा निज सुकवि जतावत ॥

रूपय१तृतीय३अंस जु रहत वह मन्नहु इक१दाम अब ॥

तिन्हत्रिक३सु इक्क१रूपय तिमहिं तिनकरि हो व्यवहार तब ॥

१ हे प्रभु रामसिंह २ अपनी भूमि (आर्यावर्त) में ३ श्रेष्ठ भाव से ॥ १४ ॥  
 ४ उसकी आज्ञा ॥ १५ ॥ ५ केशव नामक ब्राह्मण कवि ने ६ कवियों का मार्ग  
 पकड़कर ॥ १७ ॥ ७ कछवाहे को हे प्रभु रामसिंह अनेक लोग ८ अनेक  
 बताते हैं परन्तु ९ बहुत विद्वानों के मत से आपका कवि कहता है एक रूपय  
 के तीसरे १० हिस्से को ११ एक दाम जानो इसीप्रकार १२ उन तीन \* दामों  
 का एक रूपया जानो जिससे सब व्यवहार होता था

\* यहाँ पर ग्रन्थकर्ता ने रूपये के तीसरे हिस्से को एक दाम रखा है परन्तु निश्चय नहीं होता कि  
 ग्रन्थकर्ता को यह प्रमाण कहाँ मिला है क्योंकि दाम का यह प्रमाण बहुत अधिक है, हमने चादशही के  
 रमानों में छोटे छोटे परगनों की आमदनी (रेंज) के क्रोड़ों दाम लिखे देखे हैं सो यदि उन दामों का प्रमा-  
 ण रूपये का तीसरा भाग समझा जाये तो उन परगनों की आमद किसी अवस्था में भी इतनी नहीं होस-  
 की, हमने जहाँ तक फारसी तवारीखों में इस प्रकरण की जाँच की तो दाम की तादाद एक रूपये के क-  
 तीसरे हिस्से की निश्चय हुई सो ही ठीक समझी जासکتی है, अर्थात् चाँदास दाम का एक रूपया होता  
 था इसका अधिक विवरण देखना होये तो तवारीख "गयासुल्लुगात" में देखो और मुन्सब के विषय  
 आइने अकबरी में लिखा है कि चादशह अकबर के समय में दश से लेकर दश हजार पर्यंत मुन्सब थे  
 नौ जात का बराबर सवार हो तो वह प्रथम श्रेणी का मुन्सब माना जाता है और जात से आगे

अयुत च्यारि४०००००दाम इम जु इक१बिस्ती२०मुनसब जँहँ ॥  
 दोइ२लकख२०००००मिलि दाम तिमहि इक१सहो१००को तँहँ  
 बीस२०लकख२०००००००दाम बलि हुतो पढ इक१हजारी१०००  
 पंच५हजारी५०००प्रथित कोटि१०००००००दामन अधिकारी ॥  
 मुनसब हि कहत सेना प्रेमिति१क्रम तिन दामन करि किते ॥  
 कति कहत हुते ईहिँ मान करि इन दामन पर हय२इते ॥१९॥

॥ दोहा ॥

सूबा अकबर३७।१ सीमके, बिदित सहबाईस२२ ॥  
 कहँ देस१न कहँ पुर२न करि, मन्नहु ख्याति महीस ॥ २० ॥  
 ॥ पद्धतिका ॥

तँहँ सूबा दिल्ली१प्रथम१जानि, पुनि सोहु लेहु दहली१प्रमानि ॥  
 सूबा द्वितीय२पुर आगरासु, जिम नाम अकबराबाद२जासु ॥२१॥  
 लाहोर३सु लवपुर३गेय गम्प, रावी तट वाम सु बसत रँम्प ॥  
 मुलतान४नाम बलि पुर४समेत, कसमीर५श्रीनगर५पुर निकेत  
 पैसोर६पिसावर६कहतकेहु, त्रय३बढ मिलि काबल७।१इक१  
 रु तेहु ॥

उत्तर४।७अफगा॥निस्तान१आस, जमँ ओर२।३बलूचीस्तान२जास  
 है चरम३।५खुरासान३सु हिरात३, दावल७इक१ए त्रय३मिलि

१प्रसिद्ध २ सेना के प्रमाण से ३ इस प्रमाण से इन दामों पर इतने घोड़े होते थे ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ उसी दिल्ली को दहली कहते हैं ॥ २१ ॥ ५ कहते हैं ६ सुन्दर ॥ २२ ॥ ७ दक्षिण दिशा ॥ २३ ॥ ८ पश्चिम

सवार हो तो वह दूसरी श्रेणी का मन्सब है और जात से आवे से भी कम सवार हों तो वह तीसरी श्रेणी का मन्सब है, इस प्रत्येक मन्सब के साथ घोड़े, हाथी, ऊट नियत थे और प्रत्येक मन्सब के साथ वेतन (तनखा) भी नियत था जिसमें विशेष कर परगने दिये जाते थे, इसका उक्त ग्रन्थकर्ता अबुलफजल ने एक नक्शा भी लिखा है परन्तु वह विस्तार के भय से यहाँ नहीं लिखा जासक्ता वादशाही समय में एक प्रकार के तोल का नाम भी दाम था और वर्तमान समय में एक पैसे के पचीसवें हिस्से को दाम कहते हैं अर्थात् पैसे के २५ दाम होते हैं परन्तु यह व्यवहार वाणिज्य में है वादशाही दाम तो एक रुपये के चालीस ही मानने चाहिये ॥

कहात ॥

पुर गजनी१सुहि जाबुल१पुरान, पुर काबुल२नूतन अब प्रधान॥२४॥  
 तारकोहिनाम मुलक सु७प्रतीत, बाला हिसार३१तहँ गढ बिगीत ॥  
 हे ता७सन नैर्कत४कंदहार८१, कादि रु८१२खंधार८१३हु तस  
 प्रकार ॥ २५ ॥

हँ८हिंसीम अमल किय बरुन ओर५३, दक्खिन३२दिस १८  
 इनसन सुनहु दोर ॥

सूबा अजमेर९१हु पुर२सनाम, गुजरात१०दसम१०पुनि सहँस  
 १०००ग्राम ॥ २६ ॥

अहमदआबादक१०१पुर२अधीन, जो मिलि सुरठ१गुज्जर२ज-  
 मीन१० ॥

मानत सुरठ११कति भिन्नमान, थप्पत बहु दु२हि गिनि दसम  
 १०थान ॥ २७ ॥

ठठो१११पुर१भक्खर२दुर्ग२ठानि, जो सिंधु१३गारहम११देस जानि  
 इत सूबा मालव१२पुर अवन्ति१२१, पुनिखानदेस१३मुख थान  
 पंति ॥ २८ ॥

बुरहानपुर१३१सु पुर प्रथम१बास, अब नव्य२धूलिया१३२द-  
 ग आस ॥

औरंगाबाद१४१हिं भिन्न अक्खि, सूचत कति तत्थ१३हि न-  
 गर सक्खि ॥ २९ ॥

सूबा बीजापुर१५१समन ओर२३, अरु भागनगर१६१बल द-  
 मन ओर११ ॥

॥ समनओर१दमनओर२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

पुर नाम हैदराबाद१६१पाइ, सुहि भागनगर१६१अब जग

१नवीन॥२४॥२कहते हैं ॥ २५ ॥ ३ पश्चिम दिशा ४कैलाव ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥  
 नवीन धूलिया नगर ५है ॥ २९ ॥ ६ दक्षिण दिशा में ७ अग्निकोण ॥ ३० ॥



सुहाइ ॥ ३० ॥

कर्णाट१७हु सूवा कति कहंत, सूचत पुर अरु अटि१७१तँहँ  
सुमंत ॥

थिरं खानदेस१३सन पुब्बथान, सूवा बरार१८जानहु सुजान ३१  
अचलपुर१८११ \*पुरांतन दंग अत्थ, जग ख्यात नागपुर१८१२  
नव्य जत्थ ॥

इत पुब्ब११२ इलाहाबाद१९१२आहि, सोही प्रयाग१९१२ अघँहर  
सदाहि ॥ ३२ ॥

जिहिँ उत्तरं११७ सूवा अवधि२०१२ जानि, पुर आदि१ अयोध्या  
२०१२सुहि प्रमानि ॥

नृप गिनहु बंगला २०१२ मध्य२नैर, सुहि फैजाबाद२०१२ हु रम्य  
सैर ॥ ३३ ॥

तँहँ पुर लखनेऊ२०१२अव तृतीय३, कहियत लखनउर २०१३  
प्राकृतीय ॥

सूवा बिहार२११२ पूरव११दिसा रु, चित गयपुर२११२ पाटलि  
पुत्र२११२ चारु ॥ ३४ ॥

तृतीय१कृतीय२ अन्त्यानुप्रास; ॥ १ ॥

दिस पुब्ब११२हि सूवा बंगदेस२२, बरनत जँहँ ढाका२२१२पुर विसेस  
उडीसह२२उत्कल२३ निज दु२ नाम, जो सूवा पूरव ११२ जल  
धिजाम ॥ ३५ ॥

गढ १ बारह अट्टी २३१२ जँहँ गिनात, पुर२ कटक २३१२ नाम  
तँहँ धाम पात ॥

इनमँ इक१कोउक गिनत अद्ध३, सूवा इम ए वाईस सद्ध२२३ ॥३६॥  
सीमाभुव अप्पन वंदि साह, वंधे इम जय करि नैय निवाह

१पुराणा १नवीन २ पाप मिटानेवाला ॥३२॥ ३३ ॥ ३ प्राकृत भाषा जाननेवाले  
४ समुद्र से उत्पन्न अर्थात् समुद्र के किनारे ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ५ नीति

इत पुव्व११जीति आसामअंत, दब्बे प्रदेस सब बल दुंरंत ॥ ३७ ॥  
 दक्खिन२३कर्णाटक३लग दवाइ, निज किय बहु भूपति पयन नाइ  
 इत कंदहार३कावल३उपेत, दब्बिय दिस पच्छिम३१५जोर देता३८।  
 उत्तर ४१७ हिमाद्रि४ लग स्वबस आनि, प्रतप्यो सु अखिल सिर  
 जित प्रमानि ॥

अरु सासन बाहिर लखत आप, पायो इक श्रानाँ वह प्रताप ॥ ३९ ॥  
 साहंस बल विनु दल खग साँहि, बाजी प्रानावाँधि गो निबाहि ॥  
 अब सुनहु राम२०।३४ प्रभु वृत्त एह, अकबर३७।१ सुत मोहित  
 जिम अछेह ॥ ४० ॥

नोरोजन सम सब नगरनारि, निजनिज घरबाहिर थितनिहारि ॥  
 स्व जनक सन छत्र जिहिँ सलेम३८।, प्रमदाँ वह पिकखी धारि प्रेम  
 भाखी अयाजतनया जु भूप, राची निज गुनश्वय२कांति३रूप ४ ॥  
 इहिँ पुव्व अनूठा पिकख एह, सबविधि धारतहुव दृढ सनेह ॥ ४२ ॥  
 पै तिहिँ अयाज यह सुद्धि पाइ, स्वीकार न किय अनुचित सुनोइ  
 अरु व्याहि सेर अफगानअर्थ, सबविधि सुदाँय दिय बसु समर्थ ॥ ४३ ॥  
 सो तकि मुखहि रहिगो सलेम ३८।१, न सक्यो सफली करि  
 प्रीति नेम ॥

वनिताहु सलेम३८।१हिँ प्रिय विचारि, ही रंत तदपि हुव एह हारि  
 इम पुनि नोरोज१हिके अनेहँ, अखिनकरि मिलतहि यह१रु एह१  
 प्रछेत्र दुवगहि कडि विजैनपत्त, निकटहि कहूँ निष्कुट रमन रंत

१ दूर है अन्त जिसका ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ हुक्म के बाहर एक राणा प्र-  
 तापसिंह ही पाया सो खड्ग लेकर ३ दाव ४ जीवन पर्यंत ५ वृत्तान्त ॥ ४० ॥  
 ६ स्त्री को ॥ ४१ ॥ ७ अविवाहिता (कुमारी) ॥ ४२ ॥ ८ दायजा ॥ ४३ ॥  
 अपनी प्रीति के नियम को ९ सफल नहीं कर सका १० वह स्त्री भी ११ प्री-  
 ति युक्त थी ॥ ४४ ॥ नोरोजों के १२ समय में १३ नेत्रों से मिलकर अर्थात्  
 आंख से आंख मिलते ही १४ कानों १५ अकालंत में गये १६ घर के समीप का  
 याग १७ रमण करने में आसक्त होकर ॥ ४५ ॥

धरि रच्छक अनुचर उचित धाम, कासुक जुगर्मिलिगय तँहँ प्रकामँ  
बनिताँ सब तब नोरोजश्वार, अति तंग पहिरि आती इज्जार ॥ ४६ ॥  
तस बंध स्वस्व पति जरत ताल, कुंची ढिग रक्खत गमनकाल ॥  
पट अंतरंगश्वहं विवस पाइं, बहिरंगरतिलक शलहंगा रक्वनाइ ॥ ४७ ॥  
आयी घरबाहिर तिमहि एह, निकसी अयाजतनया सनेह ॥  
पै अब सलेम ३८१२ सन रमन प्रीत, वह रीति करी तिहिँ इम  
अतीत ॥ ४८ ॥

निष्कुट तरु साखा लुंबि नारि, तालित इज्जार वह दिय उतारि  
लाहि इष्ट बहुरि वपु तिम लैफांइ, लुंबी सुहि साखा करन लाइ ॥ ४९ ॥  
जिम पुंब्ब तिमहि तिहिँ सुहि इज्जार, पहिराइ कुमर दिय करत प्यार ॥  
अैसे प्रबंध भोधहि अधीस, संसय है प्रत्युत तियन सीस ॥ ५० ॥  
उधराइ बस्त्र लै सदि इष्ट, दीसै न किमहु सीलोपदिष्ट ॥  
इम ताहिसु पिदितासक्ति आनि, चाहतरह्यो हि नैन न पहिचानि ॥ ५१ ॥  
पै जोर जनक अकबर ३७१२ मताप, अल्पहु न सक्यो करि किमहु  
आप ॥

इतरहु करि हत नय बहु उदंत, इहिँ जनक कुपाय उ जियन  
अंत ॥ ५२ ॥

पहु भोज २९१२ हु अकबर ३७१२ सिकख पाइ, बुंदीपुर होयन  
चउ ४ बिताइ ॥

१ काभी २ विशेष कामना से. सघ ३ स्त्रियें ४ पैजामा ॥ ४६ ॥ उनके पैजामों  
के नाडों में ५ अपने अपने पति ताले लगा देते थे ६ वह वस्त्र भीतर रखकर ७  
ऊपर ८ यवन वस्त्र विशेष जो गले से पैरों तक लहंगे के आकार रहता है  
॥ ४७ ॥ ९ उस रीति को दूर करी ॥ ४८ ॥ १० बांग के एक वृक्ष की शाखा से  
बंदक कर ११ ताला जुड़े हुए उस पैजामे को उतार दिया १२ शरीर को पतला  
करके १३ हाथों में उस शाखा को पकड़कर लटकी ॥ ४९ ॥ १४ जैसा पहिले  
था तैसा १५ वृथा १६ उल्टा ॥ ५० ॥ १७ उसके शील में उपदेश नहीं दीखे १८  
छाने आसक्ति लाकर १९ नीति को नहीं पहिचान कर ॥ ५१ ॥ और भी अनी-  
ति के बहुत २० वृत्तान्त किये. जीवन पर्यंत पिता को २१ क्रोधित किया ॥ ५२ ॥  
२२ वर्ष ॥ ५३ ॥

जे विविध कृत्य किय तहँ जनेस, अग्रिम मयूख कहिहँ असेस ५३  
 पुनिसिक्खअवधि गय \*इंद्रपत्थ, तनु छोरिय अकवर ३७।१तबहि तत्थ  
 प्रभुभाव अब्द इक १ घटि पचास ४९, भूमी जिहिं भोगी असह भास ॥  
 अब ससि रस सोलह १६६१सक अनेहँ, परलोक पत्त वपु उ-  
 जिष्क एह ॥

प्रभु सुनहु इहाँ मतभेद पाइ, दुव रीति लिखत संसयदिखाइ ॥५५॥  
 कति कहत तीन ३ अकवर ३७।१तनूज, पहिलो १ सलेम ३८।१तहँ  
 अजस पूज ॥

पररेज ३८।२ नाम दूजो २ प्रबीन, कछवाहि गर्भ जिहिं वास कीन ५६  
 तीजो ३ तनूज कहियत जुतास, अभिधाँ तस दानासाह ३८।३ आस  
 अब साह मरत आमैर ईस, सब पंच फोरि कछु लोभ सीस ॥५७॥  
 पररेज ३८।२ स्वसासुत धरन पट्ट, किय मंत्र स्व भुव बाढन कुबट्ट ॥  
 पररेज ३८।२ अनुज तब भोज १९।१।२ पेलि, थापिय सलेम ३८।१  
 पर मत उथेलि ॥ ५८ ॥

सुत इक १ सलेम ३८।१ हि कति कहंत, मग तजि पै इच्छत अ-  
 नय संत ॥

पुनि हे सलेम ३८।१ कै उभय शुत्त, जेठोतहँ खुसरो ३९।१ नीति  
 जुत्त ॥ ५९ ॥

ताकोहि नाम पररेज ३९।१ तत्थ, सिंसु अनुज खुरुम ३९।२ सुत  
 हो समत्थ ॥

\* इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) † स्वामिपन ॥ ५४ ॥ १ समय में २ शरीर छाँडकर ३  
 मन्देह ॥ ५५ ॥ ४ पुत्र ५ अपयश में प्रतिष्ठा पाया हुआ ६ आमैर के राजा  
 भगवानदास कछवाहा की पुत्री के गर्भ ॥ ५६ ॥ ७ नाम = हुआ ॥ ५७ ॥ ९  
 बहिन के पुत्र को १० कुमार्ग से उस छोटे \* पररेज को बुन्दी के राव भोज  
 ने ११ हठाकर ॥ ५८ ॥ १२ अनीति ॥ ५९ ॥ १३ बालक

\* अकवर के तीन पुत्रों में छोटे दो तो अकवर के समय में ही मर चुके थे, उसके देहान्त के समय  
 एक सखी ही बाकी या सो पिता के सिंहासन पर बैठा ॥

यातैं सल्लोम३८।१की लाखि अनीति, पररेज ३९।१ माँहिँ किय  
मानँ प्रीति ॥ ६० ॥

तातैं बैठारतहो सु ताहि, बहुवान भोज१९।१रतव धर्मचाहि ॥  
अक्खिय न जनकँ छत सुतरहिँ जानि, करिहैं सल्लाम हम  
स्वामि कानि ॥ ६१ ॥

पहु तबहि बघेलन करि सपीर, सब हुव बुंदीस१हुभोज१९।१सीर  
रामगढ१श्रीनगर३केहु राज, अरु दुवर नवाबरतीजो३अयाज३६२।  
इम जवन तीन३नृपतीन३अजँ, सह बल बुंदीपति ओर सज ॥  
इस न हुव मानँचितित अनीति, रक्खिय हड्ड६१नपति धर्मरीति ॥  
थिर गहिय थप्पो सुहि सल्लोम३८।१, पै हो यह अघकँर कुम-  
ग प्रेम ॥

जिहिँ हनन सेरअफगान जानि, पठये बहु घातक छल प्रमानि६४।  
यह जानि सोहु बचि खिन अनेक, कढिकढिगो मारक बं-  
चिँ क्रेक ॥

बचियो परंतु कबलग बनाइ, जँहँ लक्खन दलपति रुडि जाइ ६५।  
मारयो सु सेरअफगान मंद, छिन्नी तस जाया कामछंद ॥  
पुत्री अयाजकी जो सैपंक, निजगृह सल्लोम३८।१हारी निसंक ६६।  
धारि अप्प जहाँगीरा३८।१भिधान, दिय नूरमहलरतिहिँ ना-  
म दान ॥

इहिँ जनक अयाज१सु कियबजीर, साले२हु बडे अधिकार सीर  
इम हैसल्लोम३८।१दिल्ली अधीस, सठ रूहो जेठे१पुत्र सीस ॥

१ मानसिंह ने ॥ ६० ॥ २ पिता के होते हुए ॥ ६१ ॥ ३ आर्य ४ इस  
कारण मानसिंह की विचारी हुई अनीति नहीं हो सकी ॥ ६३ ॥ ५ पाप कर-  
के ६ कुमार्ग में प्रेम करनेवाला ७ छल के प्रमाण से अर्थात् छल करके ॥ ६४ ॥  
मारनेवालों को ८ ठग कर ९ लाखों सेना का पति क्रोधित हो जावे तब कब  
तक बचे ॥ ६५ ॥ १० काम के वश होकर उसकी स्त्री को छीन ली ११ कलंक यु-  
क्त ॥ ६६ ॥ १२ जहाँगीर नाम रखकर १३ दिया ॥ ६७ ॥ बड़े पुत्र पर १४ क्रोधित

बैठारतहे ईहिँ इम विचारि, दिन्नौ खुसरो ३९।१ वह कैद डारि ॥ ६८ ॥  
हत्थी शहयादि विहितोपहार१, सब नृपन निवेदे सबन सार ॥  
बलि किय उत्तरन २ वसु विसेस, इम सब सचिवादिन किन्न एस

॥ दोहा ॥

तदनंतर कछु दिवस तैंहँ, रहि हहु ६१ न अधिराज ॥

पुर बुंदिय लाहि सिक्ख पुनि, सो आयउ बल साज ॥ ७० ॥

गुन रस सोलह १६६३ सक लगत, पंचमि ५ मधु १ सित २ पाइ ॥

कुमर रत्न १६२१ के कुमरकै, भयो कुमर जस भाइ ॥ ७१ ॥

सत्रुसल्ल १९४१ तस नाम सुभ, भाख्यो भूपति भोज १९११ ॥

यह पैहँ सबतैं अधिक, अवनि १ धर्म २ जस ३ ओज ४ ॥ ७२ ॥

पाई भोज १९११ २हु जे प्रजा, परिनाई जिअ पुव्व ॥

सुनहु तिन्हहु स्वसुरन सहित, दिय जिनजिन दधि १ दुब्बर २ ॥ ७३ ॥

भूप व्याह पुव्वहु भनँ, अबहु प्रसूचन अत्य ॥

जथा अर्नूढ खवासि जन, सबै सुनहु क्रम सत्य ॥ ७४ ॥

कुलवर्द्धक १ अरु अल्पकुल २, पुत्रन हित माहिपाल ॥

दये थान जेजे उदित, सुनहु तेहु रिपुमाल ॥ ७५ ॥

नृप १ इतइत रानिन निंकर २, बहुरि खवासिन जात ३ ॥

कृत्य करे कछु दुष्करहुँ, उनविच जस अवदात ॥ ७६ ॥

सुरगृह १ सोर्ध २ निपान ३ सुभ, उपबैन ४ आदि अनेक ॥

सती तियनपतिसह गर्भन ५, विदितँ सुनहु सविवेक ॥ ७७ ॥

इतिथी वंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणो पष्ठदशांशो बुन्दीशभो-

दृष्ट्या ? इसको तखत बैठाते थे सो विचार ॥ ६८ ॥ २ उचित नजराना ३ न्याय-  
कावर ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ४ चैत्र सुदि ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ५ सन्तान ६ दूर्वा (विवाह के  
समय पर दही दोव देने की आख्या में रीति है) ॥ ७३ ॥ ७ विशेष सूचना ८  
विना विवाही ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ९ समूह १० समूह ११ कठिन कार्य १२ उज्जल  
॥ ७६ ॥ १३ मन्दिर १४ महल १५ जलाशय १६ बाग १७ प्रसिद्ध १८ विचार  
पूर्वक ॥ ७७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज

जचरित्रे उदयपुराधिपप्रतापसिंहवधत्यक्तायुधाकवरान्तिकराणाऽम  
रसिंहद्विगुणशस्त्रप्रेषणा १ प्राप्तलण्डनाधीशराइयेलीजबथाज्ञेङ्गले-  
ण्डदेशागतोण्डियाकम्पनीतिसंज्ञाधरवणिग्जनकृतसूचितशकसम-  
यार्यावर्तव्यापारप्रवर्तन २ दिल्लीशकालिकदम्माधिकारविवेचनपूर्वा-  
कवरसामयिकसार्द्धद्वाविंशतिप्रान्तपरिगणन ३ नवाहमहजहांगीरनू-  
रजहांप्रथमसमागमभणान ४ अकबरमरणानन्तरसुतमतभेददर्शनोत्त-  
रजहांगीरराज्यसमासादन ५ कृतशेरफगानवधजहांगीरतत्त्वानूरजहां  
पत्नीकरण ६ बुंदीशभोजप्रपौत्रशत्रुशाल्यप्रादुर्भवन ७ भोजस्त्रीसन्त-  
त्यादितत्कृतस्थानसूचनमेकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥

आदितो द्व्यधिकद्विशततमः ॥ २०२ ॥

प्रायोन्नजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भोज १६१२ नृपतिकै सुत भये, सप्त ७ प्रमित अति सूर ॥

सुता तीन ३ प्रकटी सुगुन, प्रगुन धर्म १ कुल २ पूर ॥ १ ॥

पुत्र चारि ४ रानिन प्रसव, तीन ३ तथा दुहितौ ॥

के चरित्र में उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह के मरने से शस्त्र त्यागनेवाले  
अकबर के समीप राणा अमरसिंह का द्विगुण शस्त्र भेजना १ लंडन की रानी  
एलीजबथ की आज्ञा लिखवाकर इंग्लिस्थान से आये हुए व्यापारियों  
का सूचना कियेहुए सम्बत् में ईस्ट इंडिया कम्पनी के नाम से आर्यावर्त में  
व्यापार खोलना २ बादशाही समय के दाम और मुनसबों के विवेचन के  
साथ अकबर के समय के सार्द्ध बाईस सुबों की गणना करना ३ नोरोजों के  
उत्सव में जहांगीर और नूरजहां के प्रथम समागम का कथन ४ बादशाह अ-  
कबर के शरीर छोड़ने पर उसके पुत्रों के मत भेद दिखाने पश्चात् जहांगीर  
का बादशाह होना ५ बादशाह जहांगीर का शेर अफगान को मारकर उस  
की स्त्री नूरजहां को घरमें डालना ६ बुन्दी के राजा भोज के प्रपौत्र शत्रुशा-  
ल का जन्म होना ७ भोज के सन्तान तथा रानियों आदि स्त्रियों के अथवा उ-  
नके बनाए हुए स्थानों की सूचना करने का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ  
और आदि से दोसौ दो २०२ मयूख हुए ॥

१ प्रमाण २ विशेष गुणवान् ॥ १ ॥ ३ रानियों के प्रसव से ४ पुत्रियां

तीन३खवासिनकै तनय, विदितभये बल बाहु ॥ २ ॥  
 रतन१९२१हृदयनारायन१९२१रु, दृढबल केसवदास१९२३ ॥  
 रानिन प्रसव मनोहर१९१४हु, यह चतुष्क४प्रभु आस ॥ ३ ॥  
 सुता बड़ी सुभमति१६२१ सुही, कहियत रत्नकुमारि१९२१ ॥  
 महितकुमारि१९२१रतिम भानुमति१९२३, सुद्ध द्विरकुल अनुसारि  
 इत बलू१रु संकर२ अतुल, बलि गोवर्द्धन३बीर ॥  
 तीन३खवासिनकै तनय, \*सनय भये जय सीर ॥ ५ ॥  
 जाया सप्तक७ भोज१९१२कै, बरनिय सुद्ध दुर्बंस ॥  
 तस खवासि चउ४हुव तिमहि, अधिक सतीपन अंस ॥ ६ ॥  
 पहिली१ फुल्ललता१ रु पुनि, रूपलता२ अभिराम ॥  
 बलि कर्पूरलता ३ विदित, दिव्यलता ४उद्दाम ॥ ७ ॥  
 जिन अपत्य जे जे जनिय, कहनभयो तिन्ह काल ॥  
 प्रथित नाम छप्पय गिनहु, प्रथित राम२०३१४ भूपाल ॥ ८ ॥  
 ॥ षट्पात ॥  
 बल्लन चालुकवंस राजकुमारि१९११ जु पटरानिय,  
 सुत रयन१९२१रु सुमति१९२१ सुता सु जाठर तस जानिय ॥  
 क्रम तीजी३ जसकुमारि१९१३ जनै रठोरिजुग२हि जिम ॥  
 हृदयनारायन१९२१बहुरि महितकुमारि१९२१ सु अपत्य इम ॥  
 रानीद्वितीय२जो कूरमिय जाहि जसोदा१९१३ भनत जग ॥  
 सुत केसव१९२३भानुमति१९२३सुता संतति तस उभय२हि सुभग ॥  
 ॥ दोहा ॥  
 आग्यवती१९१४चोथी४ भनिय, रामसुता रठोरि ॥  
 तनय मनोहर१९२४ प्रसव तस, जानहु इत क्रम जोरि ॥ १० ॥  
 फुल्ललता१सुत छवि फवत, बलू१कुमार इत बुद्ध ॥



रूपलता २ सुत संकर २ सु, रक्खन चोरन रुद्ध ॥ ११ ॥

गोवर्द्धन ३ तीजो ३ गंदित, सुत कर्पूरलता ३ सु ॥

जन्यौ महाभुज करन जय, अरि दुर्गन चढि आसु ॥ १२ ॥

॥ पद्धतिः ॥

रत्नेस १९२ कुमार हड्डन नरेस, उपयम नव व्याहो सुकुल एस  
सुत हृदय नरायन १९२ व्याह सत्त ७, पहु रैन १९२ बिवाहो अप्रमत्त  
अपने मन पीछे कुमार एह, स्व विवाह पंच ५ व्याहो सनेह ॥

व्याहो पुनि केसव १६२ पंच व्याह, नृपरैन १६२ ठानि मह हड्ड ६१ नाह  
त च उम ४ मनोहर १९२ संभरीक, उपयम दुव २ व्याहो रन अभीक  
आमैर कुमार जगतेस अर्थ, सुभमति १९२ सुता सु व्याहिय स-  
मर्थ ॥ १५ ॥

अनुजा तनुजा दुव २ मृत अनूढ, त्रिक ३ तुल्य बलू १ मुख त्रिक ३  
हु व्यूढ ॥

बलि सबन स्वसुरपुर १ नाम रत्न संस ३, अब सुनहु राम २० ३ ४ प्रभु  
कुल वतंस ॥ १६ ॥

नृप भोज १९१ पुब्ब दिल्ली निवास, कूरम निमंत्रि बुल्लयो स-  
कास ॥

तह मान कहिय मम इक १ सुता सु, सुत रत्न १६२ हिं व्याहहु १  
आदि १ आसु ॥ १७ ॥

नृप कहिय जाइ बुंदी निकेत, पुनि दूत पठेहौ हित उपेत ॥

संबध करन उपहार सत्य, तब अप्प पठावहु सुजन तत्थ ॥ १८ ॥

यह कहि तब बुंदी भोज १९१ आइ, पुच्छयो इम रान सु दल  
पठाइ ॥

१ रोकमेवाला २ कहते हैं ३ शीघ्र ॥ १२ ॥ ४ विवाह ५ सावधान ॥ १३ ॥ १४ ॥  
६ निर्भय ॥ १५ ॥ राजा की पुत्रियें जो सुभमति की ओछोटी बहिनें थीं बिना  
व्याही मर गई ६ विवाहे १० कुल के सुकुट ॥ १६ ॥ ११ समीप ॥ १७ ॥ बुंदी  
के १२ ध्यान में १३ सामग्री सहित ॥ १८ ॥ १४ पत्र

मम सुतहिँ सुता निज देत मान, रुचि अप्पन कैसी लिखहु रान॥  
पच्छी कहि पठई तब प्रताप, अगौँ सु ताहि दूदा १९१॥२० आप  
१९१॥२॥

आमैर मान १ जगतेस २ अत्थ, तब दिय हम पुच्छे क्यों न तत्थ २०  
हुव सु विधि जनकवस कहिय हड्ड ६१, अब अप्पहिँ पुच्छत न  
कहु अड्ड ॥

पुनि गन पत्र दिय इम पठाइ, लेहु ब तिन कपटिन यह लि  
खाइ ॥ २१ ॥

व्याहँ न सुता जवनन बहोरि, चुकैँ न बचन कहँ चित चोरि ॥  
क्रम १ लिखि दै सुहि तो कुमार, परिनावहु है जिम जस प्रसार २२  
पुनि यह हि कबंध २ न देहु पत्र, तिम भट्टी ३ सोढ ४ न लिखहु तत्र ॥  
सुहि नृप लिखाइ पठई सुबोध, रान सु प्रताप हठि करत रोध २३  
उनके अनुमत बिनु न हम ईस, हिंदुर वि बजत अब जे महीस ॥  
दुहिता तुम जवनन पुनि न दैन, भेजहु लिखि अकपट गिन-  
हु मै न ॥ २४ ॥

नहिँ तो सीसोद १ नके निकेत, हड्ड २ न मति है है व्याह हेत ॥  
अनखाइ सुनत यह महिप मान, किल चितिय डारन साह कान ॥  
पंचन तँहँ अखिय हे नृपाल, जाति सन चलत १ व्यवहार जाल ॥  
जातिसन रुकत २ तँहँ इतर जोर, अल्पहु चलि सकत न न्याय  
ओर ॥ २६ ॥

दै अकवर ३ ७ १ हड्ड ६१ न जो हुदंड, खिल भूप तोहु पलटै अखंड ॥  
सिलगावहु क्यों दै गिरिन सीस, अनुमत लिखि भेजहु पिहि-  
त ईस ॥ २७ ॥

भेजकर महाराणा से पूछा ? आपकी क्या रुचि है ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥  
२ कैलाच ॥ २२ ॥ ३ राकते हैं ॥ २३ ॥ ४ सलाह बिना ५ जो हिन्दुवासरज  
ब्रजते हैं ६ कपट रहित ॥ २४ ॥ ७ घर में ८ निश्चय ॥ २५ ॥ व्यवहार का ९  
समूह ॥ २६ ॥ १० बाकी के भूपति पर्वतों पर ११ अग्नि क्यों सिलगाने हो

अप्पन टरि को गति लहहिं अज्ज, किल परत जातिः सन जा-  
तिरुक्कज्ज ॥

सोढा१कबंध२भट्टी३असेस, इम जो लिखिदैहैं पिहित एस ॥२८॥  
अप्पहि टरि तोतो वजत अज्ज, करिहो कित व्याहन सिसुन कज्ज ।  
यह सुनत मान हगै दूर आनि, पठयो दलै सुहि लिखि सुहि  
प्रमानि ॥ २९ ॥

सु दिखाइ जोधपुर लेख सोहि, जिनसोंहु लिखायउ मत जितोहि  
पहु पत्र गंग रानहु स्व पत्र, तकि धर्म पठायउ तत्रतत्र ॥ ३० ॥  
इम सोढे१भट्टिन२नियम आनि, पुनि नृप सुत व्याहन लिय  
प्रमानि ॥

नृप मान सुता बहु गुनविधान, जिहिं नाम रामशीला१९२१२ सु  
जान ॥ ३१ ॥

सोरत्न१९२१ प्रथम कर तास साहि, बुंदीसकुमर आयो विवाहि ॥  
सीला१०२१२हु यहहि दुजे२ सनाम, रामकुमरि१९२१२ तीजै३ सु  
अमिराम ॥ ३२ ॥

श्रुत चोथै४राहिवदेवि१६१२सोहि, अभिधा चतुष्क४इम जास जोहि  
वरिकुमररत्न१९२१ पहिले१विवाह, बसुत्रातवितरिलाहिकितिलाह ॥  
पुरबुंदिय दंपति२ किय प्रवस, प्रनमैं पूज्यन पय सद्वि सेस ॥

तोमर नृसिंह तनया द्वितीय२, राजकुमरि१६२१२नाम जुगुनगरीय ॥  
सुहिसहजकुमरि१९२१२अभिधाँदुर्सार, व्याहा पुर पट्टनि जाइवीर  
तीज्जी३जु जांववति१९२१२नाम तास, भोजाउति चालुककुल सुभास  
दुहिता मिलाप्रकी सुगुन देह, आयो विवाहि तिहिं कुमर एह ॥

चोथो४कछवाही बहुरि चाहि, वरनाथ सुता आयो विवाहि ॥ ३६ ॥  
अभिधा अमानकुमरि१९२१२सु अमठ, बुंदीपुर आई कुमर वंयूढ ॥

गुप्त १ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २ दूरदर्शिता (दूरदेशी) करके ३ पत्र ॥ २६ ॥ ३० ॥ ३१ ॥  
॥ ३२ ॥ ४ नाम ५ धन का समूह देकर ॥ ३३ ॥ ६ गुण में भारी ॥ ३४ ॥ ७  
नाम ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ८ चतुर ९ व्याहकर ॥ ३७ ॥

पितृलक्ष्मीसद्वलदुर्नाम पात, सोलंखी तस तनुजा सुहात ॥ ३७ ॥  
 स्यामा १९२।५ लाडकुमरि १९२।५ नाम सीर, व्याही सु पंचमा ५ रत्न  
 १९२।१ वीर ॥

गोपाल स्वसा गंगा १९२।६ जुगोरि, बिबही सु कुमर छड़ी बहोरि ३८।  
 निजभट तो जुगियदास नाम, लघुतनया ताकी यह ललाम ॥  
 बुंदीपुरीहि हुव तस विवाह, रूपय व्यय बहु किय किति राह ३९।  
 स्यामा १९२।७ हि दहर मोहनसुता हु, वरिआनी सप्तम विरचि व्याहु  
 सीसोद भीमसुत अजबसीह, लाहि देवकुमरि २९२।८ तनया सु  
 लीह ॥ ४० ॥

व्याहतहुव रत्न १९२।१ हिं मह बिसेस, अष्टम विवाह वरि ताहि एस ॥  
 अचलेससुता नवमी ६ उदूढ, गदियत कुल १ नाम २ हु तस सगूढ ४१।  
 ॥ दोहा ॥

पतारानको अनुज पटु, सगतसिंह तस नाम ॥

तस बहु सुत अचलेस तैंह, लाहिय सुता जु ललाम ॥ ४२ ॥

अभिधाकरि रंभावति १९२।९ सु, नवमी ९ आनि निकेत ॥

रत्न १९२।१ कुमर बिलरूपो बिभव, हहु ६ १ न कुल जस हेत ४३।

॥ पादाकुलकम् ॥

नंदन दूजो हृदय नरायन १९२।२, व्याह सप्त ७ व्याहयो धरनीधन ॥

आदिनाम कमला १९२।१ चंद्राउति, निपुन कुंभतनया पावन नुति ॥

कुल सीसोद कृष्णाकन्याही, ब्रजकुमरी १९२।२ दूजै २ इहिं व्याही

कुल कबंध तीजी ३ अखैकुमरि १९२।३, बलि जिहिं अनुपम  
 सुता लई वरि ॥ ४५ ॥

गंगाउत दुल्लह सुत गायो, नाम भवानीसिंह जनायो ॥

तनुजा नाम जसोदा १९२।४ ताकी, भरचोथी ४ व्याहिय खनि भाकी ॥  
 रानाउति खुमान सुता रुचि, सो दोलतकुमरि १९२।५ पंचमी ५ सुचि  
 पुनि दलेल मज्झ जु निबडिपति, वाकी सुता छठी ६ रंभावति १९२।६  
 तिमचालुक वग्घ सुता सप्तमि ७, जदुकुमरि १९२।७ सुव्याही वषहित जमि

॥ ४८ ॥

बिंवही पंच ५ भोज १९१।२ पीछें वर, सुनहु तेहु आवी सब सैंभर ॥  
 जादव धनपालकी सुता जिम, अष्टम ८ मह वरि इंदुमती १९१।८ इम  
 कृष्ण गोम कन्या कमलावति १९२।९, गवमी ९ वरि सो पुर जस उन्नति  
 प्रामारी गनपति सुता प्रभुत, दसमी १० अभिजनकुमरि १९२।१०  
 वरीदुत ॥ ५० ॥

चिर ग्यारही ११ सुजानकुमरि १९२।११ चहि, लौनकरन रङ्गोर  
 सुता लाहि ॥

बल्लभोत धनराज सुता बलि, अमृतकुमरि १९२।१२ बारही १२  
 कलिअलि ॥ ५१ ॥

इम पहिलैं १ अरु जनक अनंतर २, बारह २२ हृदय नरायन १९२।२  
 वरि वरं ॥

अप्रजहुव अंतिम चउ ४ इनमैं, तोकं जनिय सोलह १६ खिल ८ तिनमैं ५२  
 अठ ८ नमैं तेरह १३ हुव अंगज, सुता तीन ३ प्रकटी तस संगज ॥

जनतभई जो जो तिय जिहिं जिहिं, तुमप्रसु सुनहु जथाक्रमति हिंति हिं ५३  
 ॥ हरिगीतसू ॥

तैंहैं जैत्रसिंह १९३।१ बडो १ सुत रु जसवंत १९३।१ पंचम ५ जानिये,  
 चौथी ४ जसोदा १९२।४ द्वे २ हि सोदर ए जने पहिचानिये ॥

दूजो २ प्रिया ब्रजकुमरि १९२।२ सुत बलराम १९३।२ दूजो २ देखिये,

१ खान २ कान्ति की ॥ ४६ ॥ ३ पवित्र ४ मध्य ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ५ हे चट्टवाण ॥ ४९ ॥  
 ६ विशेष स्तुति योग्य ॥ ५० ॥ अमृत कुमरी रूपी ७ कली का भ्रमर ॥ ५१ ॥  
 ८ बिना सन्तान ९ बालक ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

तीजी३ बड़ी१ कमला१९३१ तनै लघु विजयराम१९३३ सु लेखिये  
 क्रय बालकृष्ण१९३४ चतुर्थ४ सुत शृंगारकुमरि१९३१ बड़ी जनी  
 जिम रहऊरि अखैकुमरि१९३३ तीजी३हु एह द्वयी जनी ॥  
 तँहँ छहद केसव१९३६ सोहि कृष्ण१९३६ दु२ नाम सप्तम७चंद  
 १९३७ त्यों ॥

पंचमी५ दोलतकुमरि१९२५ पतनी उभय२ जनिय अतंद्र त्यों ॥५५॥  
 कन्या अमानकुमारि१९३१२ जो इनकीहि सो अनुजा कही ॥  
 लहि दिष्ट तिम रंभावती१९२६ छठी६हु पुत्र द्वयी२ लही ॥  
 इहिं गर्भ दोलतसिंह१९३८ अष्टम८ पुत्र नवम९ प्रयाग१९३९ भो ॥  
 भनिये ब सत्तमि७ चालुकी जदुकुमरि१९२१ सुत जुग२ भाग भो५६  
 तस दहम१० मान१९३१० अमान१९३११ एगारहम११ द्वै२ हुव ए  
 तथा ॥

जहोनि अष्टमि८ इंदुमति१९३८ त्रितयी३ जनी सुनिये जथा ॥  
 सुत बारहम१२ अमरस१९३१२ अक्खय११३१२ अंतरहम१३ तीजी३  
 सुता ॥

जिहिं नाम अमृतकुमरि१९३३ यह हुव सोलही१६ सब संजुता५७  
 जसवंत१९३५ पंचम५ पुत्र जुत तनुजात अंतिम१११२१३ तीन३ही ॥  
 लहि दिष्टवल इन च्यारि४ आतन ऊँठ अग्रजता लही ॥  
 नव९ के चले कुल जो भिँदा लहि अग्र करन सनामहे ॥  
 रु अनूठ१ ऊठ२ सुता त्रयी३ न लिखी तहाँ उपराम है ॥५८॥

॥ पादाकुलकम् ॥

बदत किते जेठो१ बलराम १९३२ हिं, किते विजयराम१९३२  
 हिं चहि कामहिं ॥

बडो जैत्र१९३१ तस कुल हुव विधिवस, अब दुर्विधम भजत

१ दो सन्तान २ आलसो ॥५५॥ ३ छोटी बहिन ४ भाग्य ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५ विवाह  
 करके ६ विना सन्तान ७ भेद ८ निवृत्ति है अर्थात् इन तीनों के विवाह कहाँ  
 हुए सो हमने नहीं जाना ॥ ५८ ॥ ९ दरिद्री ॥ ५९ ॥

थान अस ॥५९॥

केसवदास१९२।३ तृतीय३ कुमार सु, व्याह पंच५ व्याहो नृप दैवसु  
रूपकुमरि१९२।१ पहिली१ कुमरानी, जो कूरम खेमसुता जानी ६०

रसु१ वसु२ अन्त्यानुप्रासः ॥

रानाउति दूजी२ राजकुमरि१९२।२, बर खंडारि उदयदुहिता बरि  
सुता प्रताप की जु सीसोदनि, तीजी३ रामकुमरि१९२।३ बरि ज-  
स तनि ॥६१॥

रूपकुमरि१९२।४ चोथी४ रहोरिय, पित्थलकी पुत्री गुनगोरिय ॥

मह पंचम५ गोरि किसोर कुमारि१९२।५ सत्तलसुता बरी हित  
अनुसरि ॥६२॥

अप्रज यहहि पंचमी५ इनमैं, चतुर पंच५ सुत हुव च्यारि४ नमैं ॥

जेठो रूपनरायन१९३।१ जानहु, पहिली१ सुत सहि कर्ण १९३।१  
प्रमानहु ॥६३॥

मुंदरदास१९३।२ स्याम१९३।३ तीजे३ सह, तनय जकुट२ दूजी२  
कै हुव तह ॥

अजबसिंह१९३।४ चोथी४ तीजी३ तिम, तरनिमल्ल१९३।५ पंचम५  
चोथी४ इम ॥६४॥

पहिली१ चउ४ न जनैं ए पंच५ हि, इक्क१ हु न हुव सुता कि अलंचहि ॥  
पंच५ सुत नमैं चउ४ मृत अप्रज, बडे कर्ण १९३।१ कोहि चलयो कुल  
ब्रज ॥६५॥

बढन१ घटन२ सबकै हि नियति वस, तँहैं बुध व्हे जु न मोद१  
सोकर तस ॥

क्रम दुवर व्याह मनोहर१९२।४ के किय, तँहैं प्रभुराम२०३।४ सुन

१ धन देकरा ३०। यशस्विस्तार कर १९१।२ उत्सव १९२।३ १४ जोड़ा प्रसूर्यमल्ला ६४।६  
मानों निषेध चाहकर अर्थात् अब वस है ऐसा चाहकर ७ समूह ६५।८ भाग्य-  
श ९, चतुर होता है उसको न तो धर्म होता है और न शोक होता है ॥६६॥

हु जिम जे किय ॥६६॥

सीसोदनि प्रथम सिंहसुता, जो गंगा १९२।१ \* अभिधान गुन जुता ॥  
जहव रामसुता स्याना १९२।२ जिम, यह दूजी रकुमरानी तस इम ६७  
सबल सिंह १९२।१ गोपाल सिंह १९३।२ सुव, गिरि दुव २ एहि मनोह-  
र १९२।४ कै हुव ॥

जानिय सु न प्रसव जास जनिय, भेद नाम अग्रिम मंकिरन भनिय ६८  
तीन ३ बलू १ मुख ॥ भुजिष्या तनय, सजकुल व्याहे तेहु नृप सनय  
जिहिं जिहिं रानी संतति जोजो, सूचित किय पहिले कर्म सोसो ॥

॥ दोहा ॥

पुत्रन दिय जेजे पटा १, किय सहति जे कृत्य २ ॥

सुनहु राम २०३।४ प्रभु तेहु सब; संतति क्रम अनुसृत्य ॥ ७० ॥

हृदयनरायन १९१।२ कुमर हित, दै कोटा १ वरदंग ॥

जिम दूजी २ आवाँ जुतहि, सुप्रहु दये हितसंग ॥ ७१ ॥

कति चोमाँ दिय केसव १९२ हिं, कहत बडोद १ कितेक ॥

जंपत कति अप्पिय जुग २ हिं, इम संसेहु अनेक ॥ ७२ ॥

बंमोरी १ अरु डावगी २, अप्पि मनोहर १९२।४ अंत्य ॥

तिमाहिं बलू १ आदिक त्रिक ३ हिं, समुचित दिय हित सत्य ॥

॥ पटपात ॥

रानी जेठो १ राजकुमरि १९१।१ बापी इक १ कीनी ॥

बुंदीपुर बड विदित चतुर लोकन इम चीनी ॥

पहिले १ कटले पास द्वार पच्छिम ३ सैन दक्खिन २ ॥

जुपे बल्लनोति जस सरसवाढत कवि सक्खिन ॥

\* नाम ॥ ६० ॥ १ स्वर्ग रूप अथवा शेर के समान ॥ अगले मयूख में ॥ ६८ ॥

॥ पासवान के पुत्र १ नाति पूर्वक २ कम से ॥ ६९ ॥ ३ त्रियों के साथ ४ ह

रामसिंह २ अनुसार ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ३ संदेह ॥ ७२ ॥ ४ अर्थ ८ इयित ॥ ७३ ॥

५ भावही १० पद्विचानी ११ से



प्रभुगृह१निर्पान२उपवन३पुनि सु रतन१९२१राज्यकरतहु रचहि  
द्वारावतीहु इक१ हरिसदन भंडत भह भावी सचहि ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

भोज १९११२ भुजियाँ जो भनिय, फुल्ललता१ गुन फार ॥

तिहि लघु ओझू तालको, किय सु बहा कासार ॥ ७५ ॥

बहु सहँसन करि दम्भ व्यय, नियत फुल्लसर १ नाम ॥

जिहि सक नव सर अष्टि १६५९ जहँ, रचिय ताल अभिराम ॥ ७६ ॥

पुनि सहँसन उच्छव पगहु, दम्भन खरचि उदार ॥

तस अप्पन१ जुत भोज १९११२ को, किय करि जग उपकार ॥ ७७ ॥

विरच्यो उपवन १ भोज १९११२ बुध, नवलकखा१ तस नाम ॥

अब जहँ १ ताल२ रु पुर्व१ इत, रामवाग१ अभिराम ॥ ७८ ॥

महलन बिच बहल महल १, फुल्लमहल २ छवि फीत ॥

तिनके तर गजसाल ३ तिम, पहुँ विरचे जस प्रीत ॥ ७९ ॥

संभरनूप तीजो ३ सचिव, कायस्थहु इक कीन ॥

अभिधाकरि जयमल्ल ३ बह, अविर्त हुकम अधीन ॥ ८० ॥

बालचंद नामक बुधहि, जाँमितनय हुव जास ॥

बालचंदपाँडा१ विदित, अबहु तंदंकित आस ॥ ८१ ॥

तिम पहिले गहिलोतनी, अर्जुन १८८११ पतनी अत्य ॥

ताल १ रच्यो जो जयवतिय १८८११ श्रीहरिमंदिर सत्य ॥ ८२ ॥

ताँल काम पर नियत तब, किय भावव कायस्थ ॥

अबहु तंदंकित घट्टे इक १, तारागढ दिस तत्य ॥ ८३ ॥

१ मंदिर २ जलाशय ३ योग ४ दारकामे ५ उत्सव ६ अगले समय में होनेवाला ॥ ७४ ॥

७ पासवान ८ बुनो की समूह ९ बड़ा तलाव बनाना ॥ ७५ ॥ १० रूपये ११ निश्चय १२

सुन्दर ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ १३ चतुर १४ पूर्व दिशा में ॥ ७८ ॥ १५ राजाने ॥ ७९ ॥

१६ नाम १७ निरन्तर ॥ ८० ॥ १८ भावना १९ मुहल्ला २० उसके नाम से जाना जाता २१ है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ २२ तालाब के कामपर २३ घाट ॥ ८३ ॥

समय न है सुमिरन सब न, जो सेसंडु रहिजाइ ॥  
 सुमिरि सु माधव घट्ट १ सम; अगै कहियत आइ ॥ ८४ ॥  
 सक बसु नभ सोलह १६०८ समय, पंचमिप्रमाघ प्रकास ॥  
 भव तह भूपति भोज १९१२ को, अतुल अोजको आस ॥ ८५ ॥  
 नयन वेद नृप १६४२ सक नियत, मिलि सित तेरासि १३ मग्ग ॥  
 जनक पट्ट बैठो सु जहँ, खँटि बिरुद गहि खग्ग ॥ ८६ ॥  
 समय वेद रस अष्टि १६६४ सक, सुक चउत्थिय ४ स्वेत ॥  
 उज्झो वपु नृप भोज १९१२ अब, आपति उचित उपैत ॥ ८७ ॥  
 है जु चूलियारामहद, तासौं दक्खिन ३२ तत्थ ॥  
 कुमार रत्न १९२१ तस दाह किय, सतीन अष्टक ८ तत्थ ॥ ८८ ॥  
 रानी दूजी२ कूरमी१, निपुन जसोदा १९१२ नाम ॥  
 काँबधी २ जो जसकुमारि १९१३ वह तीजो ३ अभिराम ॥ ८९ ॥  
 भाग्यवती १९१४ चौथी४ अनिय, रानी सुहि रद्वोरि३ ॥  
 पुनिलालकुमारि १९१५ पंचमी, जहँ भल्ली ४ हित जोरि ॥ ९० ॥  
 इन चउ ४ रानिन कुल उभय२, सोभित करि बिहसंत ॥  
 धव वपु कुशाप स्व अंधकरि, अग्नि न्दान किय अंत ॥ ९१ ॥  
 चवी जु भल्ली पंचमी, ५ तुलसीवाट तदीय ॥  
 सु अब रंगमंडप सविध, पूजित समुक्ति पदीय ॥ ९२ ॥  
 आदि१ रु छट्ठी६ अन्तिमा७, रानी तीन३ जरी न ॥  
 जरी भुजिया चउ४हि जिम, हुती जदपि कुलहीन ॥ ९३ ॥  
 ॥ मनोहरम् ॥

फुल्ललता १ रूपलता २ ललितकपूरलता ३,

१ स्मरण नहीं होता है वह २ चाकी रहजाता है ॥ ८४ ॥ माघ ३ सुदि ४ जन्म ५  
 घर ॥ ८५ ॥ ६ यश उपार्जन करके ॥ ८६ ॥ ७ ज्येष्ठ सुदि ८ चौथ ९ भाग्य ॥ ८७ ॥  
 १० आठ सतियों सहित ॥ ८८ ॥ ११ राठोड़ी ॥ ८९ ॥ ९० ॥ १२ पति के १३  
 मृतक शरीर को गोदी में धरकर १४ अग्नि स्नान किया ॥ ९१ ॥ १५ उसकी  
 १६ चरण चौकी को पूजते हैं ॥ ९२ ॥ १७ पासवानें ॥ ९३ ॥

दिव्यलता४ च्यारि४ हु भुजिष्या जरी जानिये ॥

दाह जँहँ कीनौ तिहिँ ठाम पीछै राजा रैन१२१२,

बाग जो बनायो छारबाग सु बखानिये ॥

दूजी२ तीजी३ जे भनी भुजिष्या तिनके हु तैनै,

संकर १ रु गोवर्दन ३ प्रथित प्रमानिये ॥

रत्न १९२१ नरनाहको चरित्र अब अँहँ तहाँ,

उनकी पूरी रजपूती पहिचानिये ॥ ९४ ॥

॥ दोहा ॥

अष्ट८ सतिन जुत अधिपको, कुमर सद्भि मृतकर्म ॥

रवि१२ दिन संजम१नियम२रहि, भोजिँ द्विजन दिय भर्म ॥९५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदशौ बुन्दीशभोज-  
चरित्रे भोजसंततिपाणिपीडनतत्सन्तानवर्णन १ भोजतद्राज्ञीतत्पा  
श्ववर्तिनीनिर्मापितस्थानवर्णन २ भोजपरासूभवनतदष्टसहधर्मिणी  
सहगमनं विंशतितमो मयूखः ॥ २० ॥

आदितस्यधिकद्विशततमः ॥ २०३ ॥

१ रत्नासिंह ने २ पुत्र ३ विदित ॥ ९४ ॥ ४ भोजन कराके ५ स्वर्ण दिया ॥९५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज  
के चरित्र में भोज के सन्तानों का विवाह और उनके सन्तानों का वर्णन १  
भोज के और भोज की रानियों तथा पाशवानों के बनाए हुए स्थानों का वर्णन २  
भोज का देहान्त और उसके साथ आठ सतियां होने का बीसमां २०  
मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ तीन २०३ मयूख हुए ॥

प्रायोत्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा-वरस ऊन चालीस ३९ बय, असित आदि १ आषाढ ॥

हहृ६१न पति तँहँ रत्न१९२१ हुव, पाइ पट्ट गुन गाढ ॥ १ ॥

हृदयनरायन१९२२ कुल हुव जु, हिरदाउत्तर१९२० कहाइ ॥

चउबीसम २४ भेद सु चलयो, इम हहृ६१न विच आइ ॥ २ ॥

केसव भोजपउत्त५२१कहि, केसवदास१९२३ कुलीन ॥

उदित पर्चीसम २५ भेद यह, हुव हहृ६१न अधर्मान ॥ ३ ॥

सूनु मनोहर१९२४को सबल१९३१, जहाँगीर३८११छिगजाइ ॥

रक्खि लोभ आश्रितरह्यो, पटा उचित कछुपाइ ॥ ४ ॥

तापीछैं लुपिगो सु तिम, जनन मनोहर१९२४ जात ॥

न चली संतति दुहुँशन के१९३१, प्रतिशोधक विधि पात ॥५॥

न तो छवीसम २६ भेद नृप, हहृ६१न यह होतोहि ॥

पै अब माधव१९३२ बंस पर, जँहँ अंकहु जोर६हि ॥ ६ ॥

बैजनाथ सिवतँ विदित, अनल दिसरू छिग आहि ॥

बाग मनोहर१९२४ को अबहु, तुम प्रभु जानहु ताहि ॥ ७ ॥

रायमल्ल१९१३ सुत राम१९२१जिहि, पहिलैं दूदा१९११ पास ॥

कछु दिन कछे सिसु कुमर, अंतर जनक उदास ॥ ८ ॥

बारह१२ हायन अब्द वय, इम दूदा१९११ छिग एस ॥

बाहिर रहि खल इक१ वरस, दोरयो बुंदिय देस ॥ ९ ॥

मुव दूदा१९११ तव रहि कुमति, सिरीफखाँ छिग सोहि ॥

तस पंचन वनि मुख्य तँहँ, दुष्ट बढ्यो कुलबोहि ॥ १० ॥

गो लैवे चरनादिगढ, सोहु सिरीफ प्रसंग ॥

वहु अवाच्यं बदि जवन जव, अरि१ हुव प्रत्युत अंग ॥ ११ ॥

१ कृष्णपंच ॥ १ ॥ २ ॥ २ भोजपोते ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३ वंश ४ रोकनेवाला प्रहारा  
ही पाया जाता है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ अग्निकोण में ॥ ७ ॥ ८ ॥ बारह ९ वर्ष पर्यंत  
७ बारह वर्ष की अवस्था से दूदा के पास रहकर ॥ ९ ॥ दूदा ८ मरा तब  
॥ १० ॥ शरीफखाँ के ९ संबंध से १० खोटे वचन ११ उलटा ॥ ११ ॥

वेतालः॥खिजिरैन१९२॥कुमरसिरीफखान सु मिलत तिम लियमारि  
 रन भीरु गो भजि रामचंद्र१९२॥हु आर्य बारि उतारि ॥  
 किय रीस बुंदिय सीस अकबर३७॥१ईस सुनि यह काम ॥  
 मृत जो नबाब तदीय मनुजन धीर दिय धन१ धामर॥१२॥  
 पठयो प्रयाग सिरीफसुत इहिँ बहुरि मृबा अप्पि,  
 रहि तास पासहु रामचंद्र१९२॥ थक्यो न रिपुपन थप्पि ॥  
 पुरकासिकाश्चरनादि२ सुख तजि रत्न१९२॥ बुंदिय पत्त,  
 अपनाइबे लिय रामचंद्र१९२॥११॥ सिरीफसुत२अनुमत्त॥१३॥  
 पुनि राजमंदिरकी विभूति सु लुछिलाइ प्रयाग,  
 दुव२ बेर बुंदिय देस दोरि दयो स्वयंसहिँ दाग ॥  
 अब रत्न१९२॥ भूप हन्योँ यहै बलि आत तीजी३ बेर ॥  
 कछु काल पुब्यहि रायमल्ल१९१॥३हु बास किय दिवकोर१४  
 संगोद्ध१ सहित पलहायथा२ पुर यो तदीय उतारि,  
 मग सुद्धि रक्खि रु रामचंद्र१९२॥ लायो सु दोरत मारि ॥  
 कति ताहि भोज१९१॥२ हन्योँ कहँ नृप हेरु अब रत्नेस,  
 बलि बुद्धिचंद्र१९२॥३ तदीय भूत सु बुल्लयो सविसैस॥१५॥  
 सुत रायमल्ल१९१॥३ पितृव्यको तीजो३ यहै सनमानि,  
 हय१ हथि२ दैरु कक्षो करी खल रामचंद्र१९२॥१हि हानि ॥  
 जिहिँ बुद्धिचंद्र१९२॥३हि वहाँ दयो पुरसारथल१ हित जोरि,  
 बलि जाइ कैँ शताके हि कुल घर आइहैं२सु बहोरि॥१६॥  
 दस१० रायमल्ल१९१॥३ तनूँज लिनविच पंचपकुल धरँ दिष्ट,  
 उनमँ बडो वह रामचंद्र१९२॥१ बज्यो दिवान अनिष्ट ॥  
 मुरि सत्रु भो कुलकोहि रत्न१९२॥१ सुतो लायो तिन मारि,

१रत्नसिंह ने २सुख विगाडकर ३स्वामि ४ उसके लोनों को ॥१२॥ ५ आदि ॥१५॥  
 ६ स्वर्ग गया ॥ १४॥ ७ उसके ८ खेवर रखकर ॥१५॥ ९ काके का ॥१५॥ १० पु-  
 त्र ११ कुल को धारण करनेवाले १२ बुन्दी के भूपति का अनिष्ट ॥

तस रामसिंह१९२।२ द्वितीय२ भ्रातहु टेक निर्गुन टारि॥१७॥  
 बुध तास भ्रात तृतीय३ विक्खि सु बुद्धिचंद्र१९२।३ विसासि,  
 पट्टा दयो लिखि सारथल१ पुर रैन१९२।१ नृप गुनरासि ॥  
 इम अप्प भूपति व्है इहाँ सत्र राज्य स्वीयै सम्हारि,  
 वलि नैर दिल्लिय पत्त सद्धन साह चित्त बिचारि ॥१८॥  
 जिहिं स्वीय नाम सलेमगढ१ किय जो सलेम३८।१ सजोर,  
 अब बज्जि साह जहाँनगीर३८।१ सु प्रबल न गिनत ओर ॥  
 पतनी अयाजसुता करी घर डारि जो अति प्रेम,  
 सो हरम नूरजहाँ१ कहाइ बढी बिमोहि सलेम३८।१ ॥१९॥  
 चउ४ अब्द तो पति तास सेर हन्यो सु ज्ही दिय चाहि, ॥  
 न सक्यो सु मिलि रहि दूर दुक्खित नारि संक निवाहि ॥  
 इक१ कालपरतहि दिडि हरम सु संक तस तजि एह ॥  
 उरसो लगाइ रहयो अचानक दोरि नेह अछेह ॥ २० ॥  
 अति नम्रता करि पाय चुंबि प्रसन्न तिहिं करि आप ॥  
 लिय भर्तु माफ कराइ दुव२दिस मंडि हिन संलाप ॥  
 सर तर्क सोलह १६६५ मानि सक इम होइ तस बस साह ॥  
 बाजीगरी जलु सिक्ख बंडरकै तहुंक्ति निवाह ॥ २१ ॥  
 किन्नो वजीर१ अयाज१तास पिता मुसाहब काम ॥  
 अरु भ्रात आसिफखान२को किय वंडनार्यकै२ आर्य ॥  
 अनुजात तास द्वितीय२।३को दिय ओर कलु अधिकार३ ॥  
 भेज्यो महौबतखान४ दे सूवा सम्हारन भार४ ॥ २२ ॥  
 औसो वजीर भयो कूँती यह साह स्वसुर अयाज१ ॥

१।७। १देखकर २ अपने राज्य को ३ फिर धनगर ॥ १८॥ ५ अयाज की पुत्री नूरजहाँ  
 ६ विशेष मोहित करके ॥ १९ ॥ ७ लज्जा अर्थात् उसके पति शेरखा को मा-  
 रा था इस लज्जा से चार वर्ष पर्यंत नूरजहाँ से नहीं मिल सका ॥ २०॥ ८ अ-  
 पराध१ स्नेह के वचन बोलकर १० प्रमाणवाले संवत् में ११ मानों १२ उसके कथन  
 का निर्वाह करके ॥ २१॥ १३ सेनापति १४ सब सेना का १५ छोटा भाई २२ १६ पण्डित

जिहि न्याय अदल जमाइलिय जस रक्षित अपजस लाज ॥  
 जगमें प्रनर्तन अदल\*बीजहु गिनत सु जहाँगीर३८।१ ॥  
 पे नूरमहल<sup>१</sup>हि तास सूचत न्याय लंघन पीर ॥ २३ ॥  
 यहतो अयाज महा धुरंधुरकी अदालति<sup>†</sup>आहि ॥  
 मृगराज<sup>१</sup>सौ अजर बादमंडिय न्यायमग जिहि माहि ॥  
 अवरोध नूरजहाँ<sup>१</sup> गैरें लागि साह<sup>२</sup> हुव जमु अस्त ॥  
 तोहू अयाज जमाइ राज्य करे सब रिपु त्रस्त ॥ २४ ॥  
 सुमरयो प्रजाहु न साह सब बिधि याहि जानि सहाय ॥  
 रहिबे दयो दुख काहुकै न संमंप्पि समुचित राय ॥  
 नहि साह<sup>१</sup> नूरजहाँ<sup>२</sup> बिना कवहू सकयो रहि नैक ॥  
 चुगली गिनी हितकी भनी तउ धानि तापर चैक ॥ २५ ॥  
 नृप सूर जोधपुरेसकी तनयाहु नारि निकेत ॥  
 चिर तास बास अलंघि कहूँ अवकास उत दिय चेत ॥  
 जब नूरमहल<sup>१</sup>अगम्य<sup>०</sup>है रज आदि कारन जानि ॥  
 तोहू सकै न सु और<sup>२</sup>सौ मिलि ख्यात प्रभुपन तानि ॥ २६ ॥  
 प्रच्छन्न तासन द्वै<sup>२</sup> घरी कहूँ क्योंहु अवसर पाइ ॥  
 जबहू सु संकित लंघि मासन और तिय ढिग जाइ ॥  
 इम तकि ओसर साह गो रठोरि<sup>२</sup>केहु अगार ॥  
 मन भीत तोहु टिकयो मुहूर्तहि मन्नि असहन भार ॥ २७ ॥  
 गहि काच भोजन भिन्न ताविच पेयें समुचित गेरि ॥  
 हसि नम्र मूचि भई सु हाजरि काक्षयति मुख हेरि ॥

इन्साफ का\* कारण ॥ २३ ॥ †है ? जनाने में २ मानों ॥ २४ ॥ ३ स्मरण नहीं  
 किया उचित धन देकर ५ किसीने हित की बात कही वह भी चुगली (पिशुनता)  
 जानकर ६ क्रोधित हुआ ॥ २५ ॥ ७ छुराछिह की मवहुत समय तक ८ रजस्वला  
 आदि कारणों से गमन करने योग्य नहीं रहै तब ॥ २६ ॥ १० कामदेव को ॥ २७ ॥  
 ११ पात्र १२ पीने का उचित पदार्थ डालकर १३ कटाक्षवाला मुख देखकर

सख हास\*नकहिँ दै कहयो किम पात्र भिन्न असुख ॥  
 विहसी सु बुल्लिय रावरे प्रिय भिन्न पालहि बुद्ध ॥ २८ ॥  
 सुनि रुठि आयउ साहसो रु गँदै किते पुनि गोन ॥  
 भो रत्त नूतन नारिप्रति जिम बाल धारिय भोन ॥  
 दिन१ रत्ति२ की नहि सुखि दिखिय यों सखेम ३८११ अचेत ॥  
 सिखवैं जु नूरजिहाँ१ सुही विरचैं सु भीसमवैत ॥ २९ ॥  
 बैठै सभाहु अयाज प्रेरित क्योंहु जो कछु वेर ॥  
 कर तोहुँ पिठि लग्योरहैं पटछन्न वा तियकर ॥  
 जब द्वैरहि अंग रहै जुरे तबही परैं जक ताहि ॥  
 यह रीति साह गही चही हु न नीति नैक उमाहि ॥ ३० ॥  
 इत भ्रात संकर२ को चमूपति रक्खि बुँदिय अत्थ ॥  
 संवोधि पट्ट कुमार गोपियनाथ१९३१को हित सत्थ ॥  
 इम रत्न१९२१ भूपति साह सेवन पँत दिखिय अप्प ॥  
 देखी सु साह दसा असाहुँ प्रभुत्व खोइ कुदप्य ॥ ३१ ॥  
 जबही सभा अवकास भो तब तत्थ हाजरि जाइ ॥  
 उँपदा १ निछावरि २ कै रहयो निजठाँ खरो नृप आइ ॥  
 कुसलत्व पूछि रु साह अक्खिय आत क्यों चित किन्न ॥  
 नृप किन्न विन्नति देस दुष्टन रोध अंतर दिन्न ॥ ३२ ॥  
 कछु अब्द भूष रहयो तहाँ इम ताहि सखन कज ॥  
 अवनीस अज्ज गये सबे तिम को रहैं सुरि अज्ज ॥

\* नासिका में खल डालकर १ हे चतुर आपको भिन्न पात्र ही  
 प्यारा है ॥ २८ ॥ कितने ही २ कहते हैं कि फिर कभी नहीं गया  
 ३ आसक्त ४ जिसप्रकार आय के घर में बालक रहै तिसप्रकार ५  
 डर के साथ वही कार्य करता था ॥ २९ ॥ ६ अयाज की प्रेरणा से ७  
 तो भी पीठ पर नूरजहाँ का हाथ लगा रहता था ८ चैन ॥ ३० ॥ ९ सेनापति  
 १० गया ११ आप १२ बादशाह की बुरी दशा देखी १३ प्रभुता गुमाकर १४  
 कुदप्य ॥ ३१ ॥ १५ नजर १६ देरी क्यों का ॥ ३२ ॥ १७ आर्य १८ आज वससे सुख



इत साहके स्वसुरत्न मोदित जोधपुरपति एह ॥

नृप सूर देह बिहातभो गिन तोहु जीवन नेह ॥ ३३ ॥

कांबंधि गह्वि तास लैं गजसिंह पट्ट कुमार ॥

आयो सु पै तैंह साह सेवन एह निज अनुसार ॥

इहिं रत्न१ को गजसिंह२ को गज खास इक१ इक१ अप्पि ॥

मन्थ्यो स्वसालेक तोहु निज इक१ है विसेस समप्पि ॥ ३४ ॥

अंग्रेज २ अकबर३७१ बेर छप्पन अष्टि१६५६ संवत आइ ॥

करते भये क्रय१ बिक्रय२ दिक जे स्वसत्य जमाइ ॥

अबलो सबै लखते भये पट्ट अज्ज मिच्छरन अन्न ॥

बिपरीत त्यों चलते लखे दुव२ काय१ मानसर२ बैन३ ॥ ३५ ॥

अब आइ दिखिय अह रस खट इहु१६६८ संवत एहि ॥

उपदा निवेदि अनेक अहुत साह मन सु विसेहि ॥

निज बुद्धितैं कलके रचे घटिका१दि जंत्र अनेक ॥

के दूर देखन जंत्र दर्पन२ तुपक३ क्रीडन४ केक ॥ ३६ ॥

नाना प्रकार दुकूल५ दर्पन भाजना६दि निवेदि ॥

भरि भेट नूरजिहाँ१ नवावर२ नृपा३दि सब मन भेदि ॥

करि त्यों वजीर ४ हु को प्रसन्न निकसि अप्पन काम ॥

धन मुँल्ल दै लिखवाइ लिय कछु नैर सूरति१ धाम ॥ ३७ ॥

खाडी तैंदुत्तर पास घोघा २ वंदर रु खंभात ३ ॥

विरचे अहमदाबाद४ जुत चउ४ ठाम कोठिन बाँते ॥

सौराष्ट्र१तैं तापी२ नदी लग कोन नैर्गत४ सीन ॥

कर कौन रहै ? स्वसुरपन से ? सूरसिंह ? जीने से स्नेह जानता दुंधा तो भी ॥ ३३ ॥ ४ राठोड़ों की गादी ५ साला ६ घोड़ा अधिक दिया ॥ ३४ ॥ अकबर के ७ समय में ८ मोल लेना ९ बेचना १० अपनी सत्यता जमाकर ११ आर्य और यवनों के १२ घर देखे १३ मज और वचन से ॥ ३५ ॥ १४ नजर १५ उन्होंने वादशाह के मन में प्रवेश किया १६ घड़ी आदि १७ दूरबीन ॥ ३६ ॥ १८ बख्ख १९ काच के पात्र २० मूल्य (कीमत) देकर ॥ ३७ ॥ २१ उसको उत्तर दिशा में २२ समूह

निज बासकौं इन पुब्ब यौं चउ४ ठाम डारिय नीम ॥ ३८ ॥  
 सोदागरी पट्ट पुत्र१ मित्र२ कलात्र३ संगि४न अत्थ ॥  
 अंग्रेज ए रहिवे लगे घर मंडि तब सैन अत्थ ॥  
 उपंदा अनेक प्रकार ओरहु अंज्ज१मिच्छ२न अप्पि ॥  
 मन१वैन२धर्म३ अधर्म४ लौं सबके लये सब मप्पि ॥ ३९ ॥  
 बानिज्जके व्यवहारतैं बसु संचि लक्खन जांत ॥  
 लाखि जेयें लंडनलौं रहे इतको उदंतें लिखात ॥  
 पहिलैं हि अकंबर३७११ के अनंतर भौन१ इत खिन्न पाइ ॥  
 भेज्यो अयाज बजीर दक्खिन ३२ सेसैं जित्तन भाइ ॥ ४० ॥  
 सुत जगतसिंह मरयो जु तस सुत मुख्य जु महासीह३ ॥  
 वह स्वीय नैत्तिय संगलै तैंहें मान गो जय ईहें ॥  
 आसेर१गढ गत जित्ति जिहिं बुरहानपुर२ अपनाइ ॥  
 जहैं मंजरा१ तापी१ धुंनी मिलि जात तैंहें पुनि आइ ॥ ४१ ॥  
 जिम सप्तपुटं गिरिको प्रदेश१ रु धूलिकारगत जित्ति ॥  
 किय वाह वाह कहाइ यौं कछवाह अप्पन कित्ति ॥  
 जबही मुहुम्मद १५११ नाम तुगलक ३ पंद्रहम १५ जवनेस ॥  
 दिल्ली उजारि लग्यो बसावन देवगढ २ सह देस ॥ ४२ ॥  
 अरु देवगढ १ अभिधान दिय आबाद दोलत आदि२ ॥  
 बसिवे लग्यो तिहिं राजधानिय रक्खि जो हठ वादि ॥  
 सैंकको चउदहमौं१४ संतक१००जो होत पूरन जत्थ ॥  
 तुगलक३मुहुम्मद साह१५११वहाँ बसिवो विचारिय तत्थ ॥ ४३ ॥

॥ ३८ ॥ १ स्त्री २ साथी ३ तब से ४ यहाँ रहने लगे ५ नजराना ६  
 आर्य ७ यवनों को देकर ८ माप लिये ॥ ३९ ॥ ९ धन इकट्ठा करके  
 १० समूह ११ जीतने योग्य देखकर १२ वृत्तान्त १३ पीछे १४ मानसिंह को  
 १५ समय पाकर १६ बाकी के देश को ॥ ४० ॥ १७ अपने पोते को १८ विजय  
 की इच्छा से १९ तापी नदी ॥ ४१ ॥ २० सप्तपुड़ा पर्वत २१ कीर्ति ॥ ४२ ॥  
 देवगढ का २२ नाम दोलताबाद दिया २३ विक्रम के शक का ॥ ४३ ॥

बसि पै सकयो न गयो सु दिल्लिय लौ प्रजाहिं बहोरि ॥  
 कर प्राज्य भार प्रजा तंदोय सहे महा दुख कोरि ॥  
 वह देवगढ अपनाइबै प्रठयो सु मान पैउत्त ॥  
 जिहिं दुर्ग पत्तन जुद्ध मै न भयो यहै जय जुत्त ॥ ४४ ॥  
 अन्नादि आगम रोकि तिहिं चिरं बेढि न रह्यो एह ॥  
 हठ जुद्धमैं तैं मान नत्तिय स्वर्ग गो तजि देह ॥  
 सुनि काम आयउ स्वीय नत्तिय मान तैं अति सोचि ॥  
 असुंहीन तुल्य भयो तर्थापि सु साह दित आलोचि ॥ ४५ ॥  
 जितं जोश नभो तिहिं त्योंहि तजि जितं थान २ आन जमाइ ॥  
 अरही मरयो तिहिंसोक आकुल मान १ निज पुर आई ॥  
 नैती तनै जयसिंह ४ तब आभैर हुव नरनाह ॥  
 जुज्झारसिंह ३१२ पितृव्य जिहिं वैठो अलाय दुबाह ॥ ४६ ॥  
 ताकोहि बंस अलाय १ ईसरदारदि दंगन तत्थ ॥  
 सु वजै दुर्नामन मानसिंहोत १ राजाउत २ सत्थ ॥  
 जुज्झार ३१२ को यह बंस जु महासिंह ३११ को अनुजात ॥  
 भो भोज १९१२ को दोहित्र सो रघुनाथ ३३ तस लघुभ्रात ॥  
 इनको भतीज सु भूपद्वै जयसिंह ४११ पुर आभैर ॥  
 निज साह सेवन एह आयउ सोहु दिल्लिय नैर ॥  
 गजसिंहसौ पहिलै गजाशदिक २ तत्थ अप्पिय ताहि ॥  
 यह वत्त आदि १ तंदंत २ हड्ड ६११ कबंध २ आगम आदि ॥ ४८ ॥

१ हासिल के बहुत भार से २ उसकी प्रजा ने ३ मानसिंह ने अपने पोते को भेजा  
 ॥ ४४ ॥ ४ आना ५ बहुत समय तक घेरा देकर ६ मानसिंह का पोता ७ भरे  
 हुए के समान होगया ८ तो भी ९ दित विचारकर ॥ ४५ ॥ १० विजय नहीं  
 हुआ उसको उसी प्रकार छोड़कर और ११ विजय किये हुए स्थान में आण  
 जमाकर १२ शीघ्र ही १३ पोता का पुत्र १४ काका १५ वार ॥ ४६ ॥ १६ छो-  
 टा भाई ॥ ४७ ॥ १७ यह वार्ता पहिले की है १८ जिसपीछे १९ आना हुआ ॥ ४८ ॥

अंग्रेज २ कोठिन बांधियो इनसौहु उत्तर एह ॥  
 अब साह लघु सुत खुरम ३९।२ विरचित अनैय सुनहु अछेह ॥  
 खुसरो ३९।२ जु अग्रज कैदहो खल ताहि कछु बिधि खंडि ॥  
 मन बप्प गहिय लैन चाहि विरोध तसिन मंडि ॥ ४९ ॥  
 जगतेस २ पुत्र रुमान १ नत्तिय काम आयउ जत्थ ॥  
 तजि नैर दिखिय भजिगो सु सहाय पावन तत्थ ॥  
 मिलि बप्प वैरिनसौ छली तिनकोहु बंट मनाइ ॥  
 लग्गो सु दिखिय देस दब्बन जोर तोर जनाइ ॥ ५० ॥  
 पठयो महोवतखान तापर साह वै दल पूर ॥  
 करि जुद्ध जातहि खुरम ३९।२ को सु भजाइ आयउ सूर ॥  
 जनके कहंत बजीर प्रेरित साह गो तिहिं जुद्ध ॥  
 वरनै किते सु नवाब गो तिहिं त्यों लखो जय बुद्ध ॥ ५१ ॥  
 बीजापुरादि अपार्च्य मिच्छन लै सहाय बहोरि ॥  
 दिल्लीस देस लग्यो सु लुटन नर्मदा लग दोरि ॥  
 इम होत दिस दिस विक्ख निग्रह गर्व गोरहु आनि ॥  
 बदलेहि बारियदुर्ग बलि जवनेस अलसहिं जानि ॥ ५२ ॥  
 खिच्ची १३ हु ईस्वरदास सो लाहि छिद्र जो गहि खग्न ॥  
 इतको मऊ १ पुर पैठि गो पुनि लै स्वबीरन अग्न ॥  
 इम रत्न १९।१सौ तब साह अक्खिय गोरवारिय गंजि ॥  
 भिरि हड्ड १ जातहि लै मऊ १ इत दर्प खिच्ची १३ न भंजि ॥ ५३ ॥  
 मम बीर जात कुपुत्र पै तुम जाहु पुनि तिनसाहिं ॥

अंग्रेजों का दक्षिण में कोठियें बांधकर रहने की वार्ता इससे भी ? पीछे की है. खुरम की रची हुई २ अनीति को सुना ३ भास्कर ॥ ४९ ॥ ४ तहां ५ पिता के शत्रुओं से मिलकर ६ हिस्सा ॥ ५० ॥ कितने ही लोक कहते हैं कि बजीर की उपेक्षा से बादशाह ही उस युद्ध में गया था ॥ ५१ ॥ ८ दक्षिण के यवनों से ९ गौड़ क्षत्रिय भी घमंड लाकर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

नृप बंधि? आनहु मारि? कै तिहिँ छोरियो सुभ नाहिँ ॥  
 इम सिक्ख लौ नृप आइ बुंदिय सजि अद? अनीक ॥  
 पठयो सु बारिय दुर्गपै वह पुजि बाहु प्रतीक ॥ ५४ ॥  
 तँहँ पुत्र कर्ण कबंध को जिहिँ नाम अविदित? ताहि ॥  
 जिम गोर जुगियदासको लघुपुत्र सुंदर? जाहि ॥  
 करिकै चमूर्पति पिछयो दल गोर? जितन कज्ज ॥  
 रठोर? गोर? उभै? गये बानि सुख्य दव्यन रज्ज ॥ ५५ ॥  
 जयभो न ह्यौ तँहँ होत संसर्य घोर? गोर? जुरे? कि ॥  
 मन क्यौहु गोर? कबंध? कै इत माँहि माँहि गुरे? कि ॥  
 प्रतिमल्ल गोर बलिष्ठ बारिय त्यों सहेन परे? कि ॥  
 कछु छद्मसौं जुरिकै अचानक ए अधीर करे? कि ॥ ५६ ॥  
 विधि कोहु होहु परंतु बुंदिय चकै आस्य विगारि ॥  
 मुरिकै भज्योहि चमूप जुग? जुत भीरु गति मति मारि ॥  
 इत गोर गजिय दुर्ग बारिय रक्खि अप्पन आन ॥  
 सुनि हारि सो इत दुर्षना हुव रत्न? १९२? तँ सुलतान ॥ ५७ ॥  
 इत आत भजि अनीकिनी पहु रत्न? १९२? त्यों अनखाई ॥  
 रठोर? गोर? उभै? दये निज देसतँ निकराइ ॥  
 रठोर कर्ण? प्रसन्नभो निज पुत्र कहुन रैन? १९२? ॥  
 न परंतु जुगियदास? भो रिस आनि स्वसुरहु नैन ॥ ५८ ॥  
 चढिगो मऊ? पुर लैन भूपहु सजि दुद्धर चकै ॥  
 वह कहि खिखिय? अप्पनो करि देस हड्ड? न अकै ॥

आधी? सेना सज्जित करके? अड्डों सहित जुज पूजकर ॥ ५४ ॥ जिमका नाम? नहीँ  
 मालूम है ४ सेनापति करके ५ भेजा ६ गौडों को ७ राज्य ॥ ५५ ॥ ८ सन्देश? गौड  
 और राठोडों के मन परस्पर जुड़े १० शत्रु ११ छल से युद्ध करके ॥ ५६ ॥ १२ बु-  
 न्दी की सेना १३ छल विगाड़ कर १४ उदास ॥ ५७ ॥ १५ सेना १६ राजा रत्नसिंह  
 ने क्रोध करके ॥ ५८ ॥ १७ चक्र (सेना) १८ हाडों का क्षय

थित नैर बुंदिय भ्रात संकर२\*दंडनायक थप्पि ॥  
 स्व कुमार गोपियनाथ१९३१कोँ तिम राज्य भार समप्पि ॥५१॥  
 जवनेसके दलमें मिल्यो नृप रत्न१६२१ हू हुत जाइ ॥  
 उततैं सु दिल्लिय+वाहिनी नृपतैं मिली मग आइ ॥  
 गजसिंह१ भूप कबंध त्यों जयसिंह२ क्रूरम गज्जि,  
 सह त्यों महावतखान३ मिच्छ अजीमवेग४हु सज्जि ॥६०॥  
 इत्यादि साह प्रबीर मिलतहि रत्न१९२१तैं हित आनि,  
 मन इक्क१ ठानि चले सबै गहिलौन खुरुम३९१२हिँ मानि ॥  
 इत नैर बुंदिय उप्फन्यों सठ गँब्ब१ जुब्बन२ साथ ॥  
 नरनाह रत्न१९२१ कुमार पट्टप नाम गोपियनाथ१९३१॥६१॥  
 दस इक्क१ व्याह दयो विबाहि जु भूप रत्न१९२१ उदार,  
 परदार संग रच्यो तथापि सु मार भत्त अपार ॥  
 चंदेरनी इक्क ब्रह्मनी अति रूप सोभित चाहि,  
 तरुनत्वं दर्प कुमार बुँल्लि भँजैं तिरोहित ताहि ॥ ६२ ॥  
 इक्क१ दै२ अनेहँ दुरै कुकर्म तथा न संतैत एह,  
 गिनि धर्महीन कुमारकी निंदा बढी प्रतिगेह ॥  
 जब रत्न१६२१ बुंदिय नैर आयउ तत्थ तेहु द्विजाँत,  
 मिलि सर्व पुच्छत यों भये पुर इक्क चोर न भात ॥ ६३ ॥  
 ताको बँ हाइ करैं कहा हम रत्न१९२१याँ सुनि तत्थ ॥  
 सुतकोँ न जानि कह्यौ करो तुम जो बनेँ सु समत्थ ॥  
 जानैं स्व पुत्रहि चोर तो कारीधरैं हुत जाहि,  
 औसो यहै नृप जास सर्व प्रजा स्वसंतति आहि ॥ ६४ ॥

\*सेनापति ५१। †सेना १ साथ ॥१०॥ १ यदाशगर्व (घमंड) ४ जोवन के साथ ५ राजा  
 रत्नसिंह का ॥ ६१ ॥ ६ पराई स्त्री ७ तो भी ८ अपार कामदेव से भरत होकर  
 ९ ब्राह्मणी १० तरुणपन के ११ घमंड में १२ बुलाकर १३ सेवन करैं १४ गुह  
 ॥ ६२ ॥ १५ समय १६ निरन्तर नहीं छिपता १७ ब्राह्मणों ने मिलके पूछा कि  
 ॥ ६३ ॥ १८ अब १९ शीघ्र कैद करदेता सब प्रजा २० अपने सन्तान के सदृश है

सुनि गुप्त चोर पुकार सो दैन अखिख समुचित दैन,  
गय सादके दलसंग दकिखन २॥३॥ खेह ठंकत गैन ॥  
बुंदीस पट्ट कुमारसों अवसान जो हुव वत्त,  
सुनिये वै हे प्रभुराम २००१४ सूचन ठाम सोहु समत्य ॥६५॥

॥ दोहा ॥

गोपीनाथ १९३११ कुमार गुन, इतर सु जस अवदात ॥  
लंपटपन १हि कलंक २लागि, विदित मूढपन वात ॥ ६६ ॥  
क्रम उपयम आदिक कथन, अखिलहि तास उदंत ॥  
आयो अवसर सुनहु अव, समुक्ति जथातथ संत ॥६७॥  
गोपीनाथ १९३११ प्रसंग गत, सब ज्ञात १ रु संतान २ ॥  
नियंत इहाँ कहियत नतो, संभव रत्न १९२११ वसान ॥६८॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वखण्डो पष्ठदशो बुन्दीशरत्नसिं-  
हचरित्रे बुन्दीदेशधावकरामचन्द्रवधोत्तररत्नसिंहदिल्लीगमन १ नूर-  
जहांवशवर्तिजहांगीरास्तप्रायीभवननूरजहांजनकप्रधानामात्यायाज  
प्रशंसासादन २ जोधपुरेश्वरशूरसिंहमरखोत्तरपट्टपुलंगजसिंहसिंहास  
नाक्रमण ३ विविधवस्तुनिवेदनप्रसन्नजहांगीरक्रीतसूरतिनगर १ घो-  
धावनन्दरखंभात २ अहमदाबाद ३ प्रदेशाङ्गलपण्यगृहनिर्माणनिवसन ४

॥ ६४ ॥ उचित १ दण्ड देना कहकर २ आक्राधा को ३ अन्त में जो चार्ता हुई  
सो ४ अब हे प्रभु रामसिंह ५ सूचना करने के स्थान पर सब सुनो ॥ ६५ ॥  
६ उज्ज्वल ॥ ६६ ॥ ७ विवाह ८ उसका वृत्तान्त ९ हे सन्त (श्रेष्ठ) ॥ ६७ ॥  
१० निश्चय ११ रत्नसिंह के अन्त पर कहना सम्भव था ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वखण्ड के छठे राशि में बुन्दी के प्रपति रत्न-  
सिंह के चरित्र में बुन्दी के देश में दौड़नेवाले रामचन्द्र को मारकर रत्नसिंह  
का दिल्ली जाना १ नूरजहां के पक्ष में होकर जहांगीर का अस्तमाय होना  
और नूरजहां के पिता चर्खार अयाज का प्रशंसा पाना २ जोधपुर के राजा  
शूरसिंह के देहान्त होने पर उसके पादवी पुत्र राजसिंह का मर्दी बंदना ३ अ-  
नेक पदार्थ भेट करने से बादशाह जहांगीर को प्रसन्न करने का प्रयत्न देकर सूर-  
ति नगर, घोधावनन्दर, खंभात और अहमदाबाद में बंगेजों का कोठियां ब-

अमात्यप्रेषितकूर्ममानसिंहाशेरदुर्गखुरहानपुरादिप्रदेशविजयप्रशंसा-  
पात्रीभवन ५ स्वपौत्रमहासिंहमरणभृतप्रायामेरागतमानसिंहमरणो-  
त्तरतत्पौत्रजयसिंहभूपतीभवन ६ जहांगीरात्मजखुरमपितृप्रतीपदि-  
ल्लीनिष्क्रमणानन्तरपठानमोहोपतत्वां पराजयन ७ बारीदुर्गगौड़प्राती-  
प्यहेतुयवनेन्द्रादेशबुन्दीशरत्नसिंहनिजनेमःसैन्यबारीदुर्गप्रस्थापनत-  
त्पराजयप्रत्यावर्तन ८ विजितभऊपुरशवरत्नसिंहखिखिनिष्कासनान-  
न्तरस्वपुत्रगोपीनाथायत्तीकृतबुन्दीदुर्गखुरमप्रस्थितबलसंमिलन ९ र-  
त्नसिंहपट्टपुत्रगोपीनाथदुर्गचरणविवहणतत्सहोदरसंततिशंसनसंधा-  
नमेकविंशो मयूखः ॥ २१ ॥ आदितश्चतुरक्षरद्विशततमः ॥ २०४ ॥  
प्रायोजजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम मयूखहि राय २०१४ प्रभु, बरने रत्न १९२११ विवाह ॥

संतति क्रम तस अब सुनहु, एकसैं निज कुल राह ॥ १ ॥

कुसर च्यारि ४ नृप रत्न १९२११ कै, खट ६ हु कतिन मत ख्यात ॥

प्रकटिय दुवर कन्या निणन, अब क्रम निश्चय आत ॥ २ ॥

नाकर रहना ९ वजीर के भेजेहुए कछवाहा जानसिए का आशेरगढ बुरहान-  
पुर आदि प्रदेशों को जीतकर प्रशंसा प्राप्त करना ५ अपने पोते महासिंह के  
मरने से मरण प्राय होकर आनेर में आयेहुए गानसिंह के मरने पर पोता के  
पुत्र जयसिंह का राजा होना ६ जहांगीर के पुत्र खुरम का पिता से विरुद्ध  
होकर दिल्ली से थामे पीछे पठान मोहोपतत्वां से पराजित होना ७ बारीगढ़  
के गौड़ों की विरुद्धता के कारण बादशाह की आज्ञा से बुन्दी के राव रत्न-  
सिंह का आधी सेना को बारीगढ़ पर भेजने के अनन्तर उस सेना का परा-  
जित होकर पीछा आना ८ राव रत्नसिंह का भऊपुर से खीचियों को निका-  
लकर उसके बिने पीछे बुन्दी को अपने पुत्र गोपीनाथ के आधीन करके खुर-  
म पर भेजी हुई बादशाही सेना के जामिल होना ९ रत्नसिंह के पोटवी पुत्र  
गोपीनाथ के दुष्टाचरण के साथ उसके विवाह और उसके आताओं के स-  
न्तान के कथन की प्रविज्ञा का इकीसवां २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि  
से दो सौ चार २०४ मयूख हुए ॥

१ सन्तान का ॥ १ ॥ २ कितनोंक के मत से ॥ २ ॥



गोपिनाथ १९३।१ माधव १९३।२ गंदित, नाम हरि१९३।३रू जग-  
नाथ१९३।४ ॥

बदनकुमरि१९३।१हरिकुमरि१९३।२बलि, सुता उभय२गुन साथ ॥३॥  
बदनकुमरि१९३।१अनुजहिबदत, मनकतिअखय१९३।५सुजान१९६  
बालहि मृत इम नहि विदित, दोउ२न गिनत निंदान ॥ ४॥  
नव ६ रानिन विच जिन जनित, ए छ६ कि अष्ट ८ अपत्य ॥  
सु पै राम २०१।४ प्रभु क्रम सुनहु, मिथ्यापन अवमत्य ॥ ५ ॥

॥ पद्धतिः ॥

पहिलो १ तैंहैं गोपीनाथ १९३।६ पूत, सीला १९२।१ कछवाही  
जो प्रसूत ॥

तीजो३ जांववती१९२।३ कै तनूज, पटु दूजो२ माधव १९३।२  
प्राप्तपूज ॥ ६ ॥

या३कैहि चउम४जगनाथ१९३।४एह, सोदर दुव२आता ते सनेह॥  
जिम चौथो४ रानी प्रसव जात, हरिसिंह१९३।३कुमर तीजो ३  
सुहात ॥ ७ ॥

जेठी१सुता बदनकुमरि१९३।१जोहि, है दूजो२रानी जनित सोहि ॥  
यह गिरिपुर राउल पुंज अंत्य, स्वकनी नृप व्याहिय रीति सत्य ॥  
जामाहिं पुंजसनें पुत्र जात, गिरिधर तस नामहु कवि गिनात ॥

सो दूजो२ तोमरिंकी प्रसूति, यह बदनकुमरि १९३।१ पहिली१  
सैकति ॥ ९ ॥

तिम रानाउति रंभावती१९२।९जु, मंभर कलत्र नवमी९सतीजु॥

धुव तास प्रसवहुव अवधि धारि, कन्या यह दूजो २ हरिकु-

मारि१९३।२ ॥ १० ॥

१ कहने हैं २ पुनि ॥ ३ ॥ २ छोटे भाई ३ कितने पापुष्य १ कारण ॥ ४ ॥ ५ सन्तान  
७ मिथ्यापन का अपमान करके अर्थीय कल सत्य सुनो ॥ ६ ॥ = पूजने योग्य  
॥ ६ ॥ ७ ॥ १ दुंगरपुर के राउल पुता के १० वर्ष ११ अपनी पुत्री को ॥ ८ ॥  
१२ पुत्र राउल से १२ सौति (सौत) ॥ ९ ॥ चहुवाण की १४ स्त्री ॥ १० ॥

याकों हम भाखत मृत\*अनूढ, बहु बीकानैरैप कर्ण व्यूढ ॥  
 सोतो न बनत तैंहैं? सूरसीह १, इत सत्रुसल्ल १९४।१ बुंदिय २  
 अबीह ॥ ११ ॥

जिम दिल्लीरपति साहेजिहान ३९।२, समकालहुते ए३हे सुजान ॥  
 वह सूरसिंह? सुत कर्ण २ आहि, सो भावसिंह १९५।१ उंपकृत  
 सदाहि ॥ १२ ॥

सुत चउ४ तस अनुपम ३।१ पद्मसीह ३।२, इम केहरि ३।३ मोहन  
 रन अबीह ॥

सो मोहन ३।४ मृगरन कहूँ रिसाइ, इक मिच्छ हन्यो भदजोह आइ १३  
 सो मिच्छ हन्यो जिहिँ पद्मसीह ३।२, नानाँ न रत्न १९२।१ तस  
 अघ निरीह ॥

नृप चंद्राउत्तहु रत्न १नाम, रामपुर भयो इक भूप राम २०।१४।१४।  
 वह तस कनीजै जो पद्म ३।१ आस, सो हमहु न जानत ख्याति तास  
 बुंदीस रत्न १९३।१ चउ ४ सुत विवाह, सुनिये बैराम २०।१।४  
 प्रभु सह सराह ॥ १५ ॥

पट्टप जो गोपीनाथ १९३।१ पुत्त, व्याह्यो एकादस ११जस बहुत्त ॥  
 कुमरानीतैं अंवा कुमारि १९३।१, पहिली १रानाउति हित प्रसारि १६।  
 जगमाल रान तनयासु जाहि, बर उदयनैर आयो विवाहि ॥  
 सुहि दीपकुमारि १९३।१ कहियत सुधाम, नृप ताको दूजो २ यहहु  
 नाम ॥ १७ ॥

\*विना विवाही मरी? वधूतलोक बीकानेर के राजा कर्णसिंह को २परनाई कहते हैं  
 ३ उस समय वहाँ सूरसिंह था अनिर्भय ॥ ११ ॥ १ एक समय में थे ६६ आ ७ उपकारी  
 ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ८ रत्नसिंह उसका नाना नहीं होत क्ता २ पाप की इच्छा नहीं रखने  
 वाला १० हे राजा रामसिंह ॥ १४ ॥ ११ कन्या का पुत्र (दोहिता) १२ हुआ  
 ११ अथ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ महाराजा उदयसिंह के देहान्त होने पर महाराजा  
 प्रतापसिंह का छोटा भाई जगमाल उदयपुर की गद्दी पर बैठ गया था जिस  
 को मेवाड़ के उमरावों ने गद्दी से उतार कर प्रतापसिंह को राणा प्रताप

सालहर अधिप पितृल सुताहु, व्याही मदनावति १६३।२ समह व्याहु ॥  
 चालुककुल संभव सुभ प्रचार, दूजी२ कुमरानी यह उदार ॥१८॥  
 चंद्राउति तीजी३ उचित चाहि, अभिधान बदनकुमरी १९३।३ उमाहि ॥  
 कन्या जु चंद सीसोदकेर, व्याहयो सु रामपुर लग्न बेर ॥१९॥  
 बलिभद्र जाहि चालुक बघेल, मेदिनि राजहु सुहि नाम मेल ॥  
 कन्या तदीय जु सदाकुमारि १९३।४, ध्रुव लालमति १९३।४ सु अभि-  
 धा दुरधारि ॥२०॥

बंधूगढ चौथी४ हित निवाहि, बुन्दीस कुमर लायो विवाहि ॥  
 कुल तोमर साईदासकेर, सुतिका जु रामकुमरी १९३।५ सुबैर ॥२१॥  
 सुहि पट्टिमदेवी १९३।५ नाम साहु, बिबही पट्टनि पंचम५ विवाहु ॥  
 गोपालदास सोपुरं जु गोर, जसकर्ण सोहि जुग२ नाम जोर ॥२२॥  
 कहियत मदनावति १९३।६ तस कनीसु, बर आनी छट्टी६ बरि बनीसु ॥  
 जिस सप्तम७ बीकानैर जाइ, पट्ट रायसिंह दुहिताहु पाइ ॥ २३ ॥  
 अभिधान राजकुमारि १९३।७ सु अगूढ, बैरनी घर आनी लग्न व्यूढ ॥  
 चिमनकुमारि १९३।८ अष्टम८ व्याह चाहि, स्व सुता दिय तोमर सब  
 ल साहि ॥२४॥

पट्टनि दुर तोमरिन व्याह पात, गुग्गेरु दोउ२न कति गिनात ॥  
 सेखाउत कूरम भीमसीह, इम बुल्लि मनोहरपुर अबीह ॥२५॥  
 अप्पन सुतासु तिहिं सह उछाह, व्याही नाथकुमारि १९३।९ नवम९  
 व्याह ॥  
 महँ सहँसमल्ल कूरम कनीसु, बिबही कमला १९३।१० दसमी १० बनी  
 सु ॥२६॥

इसकारण जगनाल को यहां राखा लिखा है ॥ १७ ॥ १ उत्साह सहित २ ज-  
 न्म ॥ १८ ॥ ३ नाम ॥ १९ ॥ ४ दो नामवाली ॥ २० ॥ ५ अष्ट समय में ॥ २१ ॥  
 ६ साधु (अष्ट) ७ बिबाही ॥ २२ ॥ ८ दुलहन को ९ लग्न पर विवाह क-  
 रके ॥ २४ ॥ २५ ॥ १० उत्सव से ॥ २६ ॥ २७ ॥

कछवाह कन्ह तनुजा कुलीन, करगहि मह एगारहम११ कीन ॥  
वर अंतिम गोपीनाथ१९३१ व्याह, आनी सदाकुमारि१९३११सद  
उछाह ॥ २७ ॥

षट्पात्

पहिली१ तीजी३ पितर गिनहु सीसोद१वंस गत ॥  
दूजी२ चोथी४ दुहुँ२न महिष चालुक२ अन्वय मत ॥  
पंचमि५ अष्टमि८ सुपहु जथा तोमर३ कुल जाई ॥  
रमनि गोरि६१४रहोरि५७ पृथक इक१ इक१ कुल पाई ॥  
कछवाह६ वंस अंतिम त्रिक३रु अंत्य ११ नरुकी गिनहु इत ॥  
दसमी१०रु यहहि एकादसी११दोउ२न पिउहर नन विदित ॥२८॥  
॥ दोहा ॥

अधिप रत्न१९२१२ सुत ज्येष्ठ १ इम, वरि एकादस११ व्याह ॥  
सुत तेरह१३ अरु इक१ सुता, लाहे कुमार अर्य लाह ॥ २९ ॥  
॥ षट्पात् ॥

प्रथम१सनुसल्ल१९४१पुनि इंद्रसल्ल १९४१२ सु द्वितीय२ इम ॥  
बैरिसल्ल१९४१३वल विदित तंदनु हुव राजसिंह१९४१४ तिम ॥  
मुहुकम१९४१५ पंचम५ कुमार उदय१९४१६छट्टो६ रन अद्रुत ॥  
सूरसिंह१९४१७ सप्तम७ रु स्यामसिंह१९४१८ सु अष्टम सुत ॥  
क्रमनवम९महासिंह१९४१९सु कुमारदसम१०केसरी १९४११०दुजनंदम  
जिम कनकसिंह१९४१११नगराज१९४११२जहँरामसिंह १९४११३  
तहँ तेरहम१३ ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

क्रम सन ए हुव कुमारके, सुत तेरह१३ अति सूर ॥  
सदाकुमारि१९४११हुव इक१सुता, पट्टपन निजनिज पुर ॥ ३१ ॥

१ पिता २ वंश ३ भिन्न ४ प्रासिद्ध नहीं है ॥ २८ ॥ ५ अच्छे भाग्य के लाभ से ॥ २९ ॥ ६ जिसपीछे ७ दुष्टों को दण्ड देनेवाला ॥ ३० ॥ ८ चतुरपन ॥ ३१ ॥

## ॥ पादाकुलकम् ॥

सत्रुसल्ल१९४१पट्टप पहिलो१सुत, चौथो४राजसिंह१९४१४रन अच्युत  
कुलचाँलुक दूजी२कुमरानी, मदनावती१९३१२जने दुव२मानी॥३२॥  
इंद्रसल्ल१९४१२दूजो२बल आकरं, पंचम५मुहुकमसिंह१९४१५धर्म पर  
तीजी३बदनकुमरि१९३१३चंद्राउति, सोदर ए दुव२जनै बहन श्रुति ३३  
वैरिसल्ल१९४१३तीजो३सोभित बल, उदयसिंह१९४१६छट्टो६जसउज्जल  
लालमती१९३१४चौथी४बाघेलिय, अवसर दुव२हि तनय जनि एलिय  
मूरसिंह१९४१७नामकसप्तम७सुत, जानहुदसम१०केसरी१९४११०संजुत  
छट्टो६मदनावती१९३१६गोरि छेम, दुव२सगर्भ ए जनै अरिदम ॥ ३५ ॥

अष्टम८ स्यामसिंह१९४१८ बिधि अनुसरि, कन्या तस अनुजा  
सदाकुमरि१९४११ ॥

रामकुमरि १९३१५ तोमरि कुमरानिय, जुग२सुत१ सुता२ जने  
ए जानिय ॥ ३६ ॥

जु नवम ९ महासिंह १९४१९ तस जननी, नाथकुमरि १९३१९  
नवमी९जस जननी ॥

तसजननी जस जननी२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

एगारहम११ सु कनकसिंह१९४१११इम, जैं नगराज१९४११२  
बारहम१२क्रमजिम ॥ ३७ ॥

राजकुमरि१९३१७सत्तमी७स्व औरस, जुग२रडोरि जनै एअति जस ।

कछवाही कमला १९३११० दसमी१० क्रम, रामसिंह १९४११३  
इक१ तास तेरहम१३ ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

आदि१अष्टमी८अंतिमा११, त्रिक३कुमरानिन तत्य ॥

१ सोलंखी ॥ ३२ ॥ २बल की खान ३ वेद को धारण करनेवाले ॥ ३३ ॥ ३४ ॥  
४ समर्थ ५ शत्रुओं को दण्ड देनेवाले ॥ ३५ ॥ ६ छोटी बहिन ॥ ३६ ॥ ७ यश  
की ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

रहिय अहो संतति रहित, स्वस्व विफल विधि सत्थ ॥ ३९ ॥  
 आदि त्रिक ३ रु पंचम ५ नवम ९, पंच ५ सुतन कुल पात ॥  
 चौथे ४ को कछु दूर चलि, बलि खिल सबदन बिलात ॥ ४० ॥  
 कहियत गोपीनाथ १९३१ को, जो माधव १९३२ अनुजात ॥  
 परिनायो वह रत्न १९२१ पहु, व्याह नवक ९ विरूपात ॥ ४१ ॥  
 ॥ पादाकुलकम् ॥

तोमर कुल डुंगरकी तनुजा, गढ गुग्गैर अमरकी अनुजा ॥  
 केसरकुमारि १९३१ नाम जिहि कहिलिय, परन्यो कुमर माधव  
 १९३२ सु पहिलिय १ ॥ ४२ ॥  
 कुल कबंध अभिधा स्याम कुमरि १९३२, बर दूजी २ लिय  
 उदय सुता वरि ॥

अरु सीसोद स्याम दुहिता इम, तीजी ३ सबलकुमरि १९३३  
 व्याहो तिम ॥ ४३ ॥

तस सगोत्र संग्रामसुता तैंहँ, करगहि चौथी ४ राजवती १९३४ कैहँ ॥  
 जिम चालुक भगवंत जु जाई, पंचम ५ व्याह चंद्रवति १९३५ पाई ४४  
 इम प्रताप तनया रानाउत, भाग्यवती १९३६ छट्ठी ६ वरि भावति ॥  
 कल्याण कबंध कनी क्रमकरि, विहित सप्तमी ७ चंद्रवती १९३७ वरि  
 गोर जसराज दुहिता करगहि, राजवती १९३८ अष्टमि ८ सोपुर लाहि  
 अखय कबंध सुता जु बरअली, किय निज रायकुमरि १९३९  
 नवम ९ कली ॥ ४६ ॥

क्रम पंचमि ५ सप्तमि ७ कुमरानिय, जथा नवमि ९ अप्रज ३ त्रय ३ जानिय ॥  
 हुवसंततिखिल छ ६ कैचउहह १४, सप्त ७ कुमरसत्त ७ हिकन्यासह १४७  
 जैंहँ मुकंद १९४१ मोहन १९४२ सुत जानहु, पुनि कन्ह १९४३ रु  
 जुजभार १९४४ प्रमानहु ॥

१ आश्चर्य है ॥ ३६ ॥ २ पाता है ३ वाकी ॥ ४० ॥ ४ छोटा भाई ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥  
 ५ स्तुति योग्य क्रांतिवाली ६ कन्या ॥ ४५ ॥ ७ श्रेष्ठ सखियोंवाली ॥ ४६ ॥  
 ८ बिना सन्तान ॥ ४७ ॥

सुत किसोर १९४१५ पंचम ५ छठो ६ सुत, जु हमतसिंह १९४१६ हठो  
१९४१६ दुर नाम जुत ॥४८॥

सुत संग्रामसिंह १९४१७ तँह सप्तम ७, कन्या सप्त ७ सु सुनहु जथा क्रम  
जे हरिकुमरि १९४१२ महाकुमरि १९४१२ हु जिम, रु कुसलकुमरि  
१९४१३ स्वरूपकुमरि १९४१४ इम ॥४९॥

अनुपमकुमरि १९४१५ पंचमी ५ इकखहु, पुनि छठो १ सु सत्यभामा  
१९४१६ पहुँ ॥

कनी सप्तमी ७ हुवदीपकुमरि १९४१७, सबकी प्रसू सुनहु क्रम अ-  
नुसरि ॥ ५० ॥

जेठो १ जनिय कुमार जेठो १ जँहँ, तस अनुजा जेठो १ कुमरी तँहँ ॥

सुत दूजो २ दूजो २ पंचमि ५ सह, त्रिक ३ यह जन्पौ वधू दूजो २ तहा ५१ ॥

सुत तीजो ३ चोथो ४ छठो ६ सुता, जनि अष्टमी ८ हुव त्रितीक जुता  
तँह पंचम ५ सप्तम ७ तीजो ३ तिम, यह त्रिक ३ जनि सप्रज चोथो  
४ इम ॥ ५२ ॥

छम ६ कुमार रु सप्तमी ७ कनी छम, कुमरानी तीजो ३ प्रसूति क्रम ॥

जनि छठो ६ सु कनी चोथो ४ जँनि, बहू छ ६ इम सप्रजा गई बनि ५३

पहिले पंच ५ तनय हुव सप्रज, अंतिम सिसुहि मरे दुव २ अंज ॥

जयसिंहा १ दि बुद्धि व्याहहिँ जिम, यह कति सुता मरी कतिसिसु  
इम ॥ ५४ ॥

सो तीजो ३ हरिसिंह १९३१३ रत्न १९३१२ सुत, व्याह अष्ट ८ व्याहो  
जस संजुत ॥

उदय भन्यौ जु जोधपुर अधिपति, तस लघु सुत दलपतिकी सं-  
तति ॥ ५५ ॥

॥४८॥ ४९ ॥ १ देवो २ प्रभु ३ माता ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ४ तीन बालकों सहित ३  
बालक ॥ ५२ ॥ ५ समर्थ ७ माता = सन्तान सहित ९ बिना सन्तान ॥ ५३ ॥  
॥ ५५ ॥

कन्या बड़ी नाम इंद्रकुमरि १९३१; व्याह प्रथम १ हरिसिंह १९३३  
लई बरि ॥

याहीकी अनुजा बसुधावर सत्रुसल्ल १९४१ व्याहहिं बय अनुसर ५६  
जिहिं सुत भावसिंह १९५१ हैं हैं जिम, अग्रज १ स्वसा बरी तस हरि  
१९३३ इम ॥

खंडेलापुर लहि सेखाउत, रांयसल्ल प्रंतप्यो बढि राउत ॥५७॥  
पटकि त्रास निर्वाण ८ कहि पहु, बलि कलिं सम्मुह भये बढि बहु  
अग्रज १ लवन करनके अगैं, बढिबो चहि कररी गहि बगैं ॥५८॥  
कहुं यह अनुज २ साहको जयकरि, अधिक पाइ मनसुब हनि तस  
अरि ॥

निर्वाण १ न पुनि जित्ति वह नगर, खंडेला लिय आरि खग  
खर ॥ ५९ ॥

कतिक कहत पोपां कुंभारिय, पत्तन यह लैन ठब पारिय ॥  
मिलि निर्वाण ८ कहि प्रद्व मिस, यह पैठाइ दयो राकाइस ॥६०॥  
कुमर सत्त ७ तसगिरिधरा १ दि क्रम, परसुराम ५ तिनमें हुव पंचम ५  
तस हुवनाम अग्रमति १९३२ तनया, सु हरि १९३३ बरी दूजे २ म-  
ह सनया ॥६१॥

कच्चर सुता नरूकी गहि कर, बरि तीजी ३ नरबद कुमरी १९३४  
बर ॥

कुंपाउत रठोर उदयकी, कनी चित्रमति १९३४ चोथी ४ संय की ६२  
पंचम ५ महु सडूल सुता पिय, वदनकुमरि १९३५ गंगाउति व्याहिया  
जदव सहसपाल दुहिता जिम, ऊंढा छठी ६ महाकुमरि १९३६  
इम ॥६३॥

१ भूपति ॥ ५६ ॥ २ बहिन ॥ ५७ ॥ ३ युद्ध में ॥ ५८ ॥ ४ तीक्ष्ण ॥ ५९ ॥ ५ नगर वंशभागे  
के मिय से ७ आश्विन सुदि पूर्णिमा को ॥ ६० ॥ ८ नीति सहित ॥ ६१ ॥ ९  
हाथ, अर्थात् कर ग्रहण (विवाह) किया ॥ ६२ ॥ १० विवाही ॥ ६३ ॥



सुर्जन चालुक तनया वय सैन, सुंजानकुमरि १९३७ वरी मह  
सप्तम ७ ॥

मेरतिया जगमाल सुता नह, अष्टम ८ वरी उमेदकुमरि १९३८  
अह ॥ ६४ ॥

इनमें इन्द्रकुमरि १९३१२ पहिली १ इम, तीजी ३ चोथी ४ पंचमी ५ हु  
तिन ॥

न लही संतति इन चउ ४ नारिन, चले प्रसव ग्यारह ११ खिल  
च्यारि ४ न ॥ ६५ ॥

तिनके तनय अठ ८ तनया त्रय ३, भये जथाक्रम सुनहु बीतभय ॥  
बडो १ कुमार सुजानसिंह १९४१ जु बलि, अनुजहुं विजय १९४२  
अभय १९४३ रनसुम अलि ॥ ६६ ॥

चोथो ४ अजबसिंह १९४४ अरु पंचम ५, छम राजसिंह १९४५ रु  
जयसिंह १९४६ छम ६ ॥

परसुराम १९४७ सप्तम ७ अष्टम ८ पुनि, सवन अनुज समरेस  
१९४८ लेहु सुनि ॥ ६७ ॥

कनी अनंदकुमरि १९४१ महजकुमरि १९४२, इंद्रकुमरि १९४३  
ग्यारह ११ ए क्रमकरि ॥

प्रथम चतुर्थ ४ सुतसुता पहिलिय १, गर्भ स्वीय दूजी २ त्रिक ३ गंहिलिय  
दूजो २ तीजो ३ रु कनी दूजी २, प्रसव तत्र य ३ हि सप्तमि ७ पूजी ॥

छडी ६ जनित कुमर पंचम ५ छम ६, अंतिम कुमर सप्तम ७ रु अष्टमा ६ ९।  
तीजी ३ सुता अष्टमी ८ औरस, तोकै त्रय ३ हि अंतिम यह हुव तस ॥

कोहू कनी विवाही कोहू, सिसुहि मरी विदित न क्रम सोहू १७०।  
सुत तृतीय ३ पंचम ५ अरु सप्तम, सह अष्टम ८ अप्रज मृत चउ ४ सम ॥

चउ ४ सुत खिल तिनके वंस चले, बलि जगनाथ १९३४ व्या-  
१ समान अवस्थावाली ॥ ६४ ॥ २ चाकी ॥ ६५ ॥ ३ छोटा आई ४ बुद्ध रूपी

पुष्प का भ्रमर ॥ ६६ ॥ ५ समर्थ ॥ ६७ ॥ ६ ग्रहण किया ॥ ६८ ॥ ७  
८ किस कन्या को किससे विवाही

ह भनत भलो ॥ ७१ ॥

कुमरानी पहिली १ दीपकुमरि १९३१, कुल कबंधजगनाथ स्वसुरकरि  
परनी कुमर जाइ जुगगापुर, व्याह सुनहु दूजो २ जसबंधुर ॥ ७२ ॥  
छठो ६ स्वसुर रत्न १९२१ नृपको छम, जोगादास गोर दत्त संजम ॥  
बुंदी पटा लहि रु भर बज्जै, लज्ज गयैहु नैकहु न लज्जै ॥ ७३ ॥  
जाकै सुत गोपाल १ सु जिहो, कहियत सुंदरदास २ कनिहो २ ॥  
पठयो जो बारीगढ उप्पर, भातन सन आयो भजि जो भर ॥ ७४ ॥  
कुपि जु रत्न १९२१ देस सन कह्यो, नैरहि जास स्वसुर हिय बह्यो  
हुतो स्वसालक जदपि कन्ह हर, सुपहु तदपि बुल्लयो न सु सुंदर ॥ ७५ ॥  
कानी तदीय गोरि अमरकुमरि १९३२, बर जगनाथ १९३४  
लाई दूजो २ बरि ॥

परसुराम सेखाउत पुत्रिय, केसर कुमरि १९३१ प्रिया तीजो ३ क्रिया ॥ ७६ ॥  
॥ दोहा ॥

सुंदर चालुककी सुता, इम गौरी १९३४ अभिधान ॥  
आनी बर जगनाथ १९३४ यह, बरि चोथो ४ सविधान ॥ ७७ ॥  
मार्गंधलोकन मूढता, यह जानी अधिराज ॥  
पतिनैके प्रपिता १ पिता २, लिखत बदलि बिबुलाज ॥ ७८ ॥  
यातै स्वसुरन नाम यैह, जेजे न मिलै जत्य ॥  
तियन पितामह नाम ते, तुम प्रभु जानहु तत्य ॥ ७९ ॥  
लगि खोजन सु कैविहु लयो, जैहँ जैहँ निश्चय जानि ॥  
दिननौ क्रम तैहँ तैहँ बदलि, अभिधाँ स्वसुरन आनि ॥ ८० ॥  
कुमरानि १ न रानिन कहै, जनकन नाम जितेक ॥

॥ ७० ॥ ७१ ॥ १ यश में उच्च ॥ ७२ ॥ २ समर्थ ३ चलायमान इन्द्रियोंवाला अर्थात् व्यभिचारी ॥ ७३ ॥ ४ ज्येष्ठ ५ कनिष्ठ ६ भड़. यह शब्द यहां वक्रोक्ति में कहा गया है ॥ ७४ ॥ ७ से ८ अपना साला ९ कन्ह का पौता ॥ ७५ ॥ १० उस की पुत्री ॥ ७६ ॥ ११ नाम ॥ ७७ ॥ १२ बड़वा भाटों की मुखता १३ हे स्वासि १४ स्त्रियों के ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ १५ अन्यकर्ता कवि सूर्यमल्ल ने १६ नाम ॥ ८० ॥ ८१ ॥

स्वसुर पिताके १ वे स्वसुर २, कहूँ कहूँ तिन विच केक ॥८१॥  
 सुत चोथो जगनाथ १९३।४ सो, व्याहो इम चउ ४ व्याह ॥  
 इनमें जेठी १ अप्रजा, लिय त्रिक ३ सुत त्रिक लाह ॥८२॥  
 कुमार बडो १ तँहँ केसरी १९४।१, मध्यम २ के जुग २ नाम ॥  
 जु फतैसिंह १९४।२ जु जैत्र जिम, कुल तानक जस कामा ८३।  
 जगतसिंह १९४।३ तीजा ३ तनुज, अप्रज प्रथम १ रु एह ३ ॥  
 मध्यम कोहि कुल प्रसरि महि, लाहि रहिगो विधिलेह ८४।  
 गोपीनाथ १९३।१ प्रसंग गहि, अनुजन केहु अपत्य १ ॥  
 पति २ न स्वसुर ३ न नाम पुनि, सह कुल ४ अखिखय सत्या ८५।  
 अनुजन व्याह १ अपत्य २ ए, अव १ रु रत्न १९२।१ अवसान २।  
 किते भूत १ आवी २ किते, मन्त्रहु संभव मान ॥ ८६ ॥  
 अधिप जडपि सबतैं अधिक, निज सुत गोपीनाथ १९३।१ ॥  
 परिनामउ तेरह १३ प्रिया, सबय सबय १ वल २ साथ ८७।  
 तदपि सु लंपट पर तियन, बिलसे पिहित बिलास ॥  
 तात रत्न १९२।१ सम डरत तिस, प्रकट न बुलै पास ॥८८॥  
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायणो षष्ठदशौ बुन्दीशरत्नसिं-  
 हचरित्रे रत्नसिंहसूनुपाणिपीडनतत्सन्ततिवर्णनं द्वाविंशो मयूखः ॥२२॥  
 आदितः पञ्चोत्तरद्विशततमः ॥ २०५ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

॥ ८१ ॥ १ कुल को फैलानेवाला ॥ ८३ ॥ २ ब्रह्मा के लेख से ॥ ८४ ॥ ३ सन्तान ॥ ८५ ॥ ४ छोटे भाइयों के ५ रत्नसिंह के अन्त पर ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥  
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्न-  
 सिंह के चरित्र में रत्नसिंह के पुत्रों के विवाह और उनकी सन्तानों के वर्ण-  
 न का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पांच २०५ मयू-  
 ख हुए ॥

अमर रान पुव्वहि इतसु, अनसु उदैपुर आस ॥  
 करनसिंह १ पट्टप १ कुमर, तब गदिय लिय तास ॥ १ ॥  
 अउर सरैनपालक अनुज, भ्रात करन १ को भीम ॥  
 कहि हैं अवसर ताहुको, सरनदेन रनसीम ॥ २ ॥  
 इत दिल्ली दल जाइ अर, घोर पटकि रनघात ॥  
 खुरुम ३९।२ भजायो बहुरि खल, सह सहाय सकुचात ॥ ३ ॥  
 पहु तीन ३हि बुरहानपुर, जवहि रक्खि जवनेस ॥  
 दिल्लीय बुल्लयो जवनदल, समुझि विजय साविसेस ॥ ४ ॥  
 तब कूरम १ रठोर २ तिम, हड्ड ६२।३ रहिय आसिहत्य ॥  
 पहु तीन ३हि बुरहानपुर, पतन डिग रनपत्य ॥ ५ ॥

बेतालः ॥

बलसह महावत खान १ त्योंहि अजीमबेग २ बुलाइ,  
 भूपाल तीन ३हि साह ए रक्खे तहाँ जयभाइ ॥  
 कछुकाल तत्य सवै रहे जय ठानि दिल्लीय कज्ज,  
 सब देस दक्खिनसो रसो सुनि सत्रु ते हुव सज्ज ॥ ६ ॥  
 इक १ को स्वमापति १ खुरुम ३९।२ वह इक १ को स्वसासुत आहि  
 तिम भीर दक्खिन बीर यों समुझ्यो बलिष्ठहु ताहि ॥  
 किय मंत्र कुंम्म १ कबंध २ तब पछोहि करन प्रयान,  
 बुंदीस सुनि बरजे उहाँ इन व्याज चितिय आन ॥ ७ ॥  
 दिन इक १ कुम्म १ कद्यो अहो किम जाइ वारिय दुग्ग,  
 भटरावरे सहदी भजे अब गौडकै हुव उग्ग ॥

१ प्राण रहित २ हुआ ॥ १ ॥ ३ चरण आये हुए की पालना करनेवाला राणा  
 कर्णसिंह का ४ छोटा आई भीमसिंह ॥ २ ॥ ५ शीघ्र ॥ ३ ॥ ६ तीनों राजा  
 यों को ॥ ४ ॥ ७ खड्ग हाथ में लेकर ८ नगर के समीप ९ युद्ध में अग्रज ॥ ५ ॥  
 १० सेना सहित ॥ ६ ॥ खुरुम उक्त दोनों राजाओं में एक के ११ बहिन का प-  
 ति और दूसरे का १२ भानजा है १३ कछवाहा १४ राठोड़ १५ छल ॥ ७ ॥ १६ इम

निज देस लौकिक काकवाचक शब्दलै कटुनर्म ॥  
 सुनि यों कह्यौ गजसिंहक्यौ भयमैं बनें जय कर्म ॥ ८ ॥  
 सिसु वंचि हहुन संध संधत जे सबै उडिजात ॥  
 बनि क्यौ परैं तिनतैं उहाँ जय प्रानसंसय बात ॥  
 चहुवानइअखिय चक्रमैं किय मुख्य गौडकबंध ॥  
 सठ भीरु तेहि भजे अचानक प्रानलै हतसंध ॥ ९ ॥  
 नेता करैं जु भलीशुबरीसु गिनै अधीनहु न्याय ॥  
 करि संग कातरको प्रवीरहु के बजैं प्रियकाय ॥  
 हमतो गिनै भय जत्थहै दुँडिताहु मिच्छन दैन ॥  
 द्विय छत्रधारिश्न भै<sup>१२</sup> जु काक<sup>२</sup>नकैहु ता रिसहै न ॥ १० ॥  
 तुमशरे पितामहकी स्वसां प्ररिकैं लजे हम र्यौहु ॥  
 इन<sup>२</sup>के स्वसांपतिको कह्यो न वन्यौ बँ दुर्मन यौहु ॥  
 पहिलैं मरे गिनि जे लरैं भट तेहु दै पयपिडि ॥  
 इह हेतु है कहु ज्यौ पतैं<sup>१</sup>जयमल्ल<sup>२</sup>मिलन ईडि ॥ ११ ॥  
 परभुनि भाइ सुवाइ पुत्रिन लाइ मिच्छन पास ॥  
 हमसौहु बैभवमैं बडैं भय हौं गिनौं न सुहास ॥  
 गजैं बली अरि देवगढ तुमशरो इहाँ हनि तार्त ॥  
 इन<sup>२</sup>कोपितामह स्वां वज्यौ भय हौं न संसैद आत ॥ १२ ॥  
 रस<sup>१</sup>मैं गिन्यौ बिरसत्व<sup>२</sup>यों कटुनर्म होत रिसाइ ॥  
 भरि बैारिकोहु समुह हौं धरि यों कह्यो अघभाइ ॥  
 हम नीर हड्ड<sup>१</sup>न वैचुके अवतो न संगपन व्हैहि ॥

१ काकुभाषा (वक्तोक्ति) में २ कटुई मसकरी की ॥ ८ ॥ ३ ठगकर ४ समुह ५  
 जेना में ६ प्रतिज्ञा छोडकर ७ आज्ञा करनेवाला (स्वामि) ८ कायर का ९ कायर  
 बजते हैं १० पुत्रिये ११ राजाओं को १२ भय ॥ १० ॥ दादा की १२ बहिन १४  
 अथ १५ उदास १६ चित्तोड़ का किल्लादार राउत पत्ता १७ इष्टि (इच्छा)  
 ॥ ११ ॥ १८ पिता १९ कव्वाहाहे का २० हवान २१ सभा में ॥ १२ ॥ २२ खोदी  
 हसी होने से २३ पानी का तासला (समुद्र नाम डिवे का है परन्तु यहां पा-

वदि यौं खिजे उठि बेग जे दिली चले चाडि व्हैरहि ॥ १३ ॥

बुंदीस चाहिय जाइ तिन समुझाइ रक्खन बत्त ॥

रिस कैं कह्यो तैंहें बंधुश्रीरत्न अप्प क्यौं अनुरत्त ॥

बजैं दुर्हथन तालि व्हौं उनकोहि वारि उतारि ॥

तुमको चढाइ गये उभैरजिहैं दये पहु तारि ॥ १४ ॥

॥ उतारि१हुतारि२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

जैहो निहोरि मनाइये गिनिबे ततो हत जोर ॥

इम मन्निहैं डारि भीरु हहु६१सहाय इच्छत ओर ॥

नृप अप्प द्वैरहि दये चमूपति देसतैंहु निकारि ॥

निज सालकैत्व गिन्यौं न यौं बहु क्यौं चढ्यो कुलवारि ॥ १५ ॥

सुनि बंधुश्रीरत्नकी यहै न गयो निहोरन सोहु ॥

दिली गये अनखाइ कुम्म१कबधरभूपति दोरहु ॥

तैरजे बजीर अयाज ते बरजे लये न बुलाइ ॥

उलंघि साह निदेस द्वैरहिहो कहाँ इत आइ ॥ १६ ॥

बुल्ले उभैरनहि रत्न१९२११कौं हमरै बनी हितवत्त ॥

तिन्ह बुल्लिकै१हमको पठावहु तेहि कैरबहु तत्त ॥

सबमाँहिं मुख्य पठाइ ओरहि देहु कैरतस संग ॥

भनि यौं सिटेहु जथा तथा दुवर व्हौं रहे मन भंग ॥ १७ ॥

अवधानतैं नृपरत्न१९२११हु इत साह सीम सम्हारि ॥

रुपि अद्रि भैत७ पुरे समीप रह्यो सु इच्छत रारि ॥

इत नैर बुंदिय रत्न१९२११ को जु कुमार पट्टप आइ ॥

व्यापाम विद्या सो बहै सिमुकालतैंहि समाहि ॥ १८ ॥

नी के सम्बन्ध से तासला लिखागया है) भरकर ॥ १३ ॥ १ आप अनुरक्त क्यौं होते हो २ उनका तेज उतारकर ३ राजा ने निकाल दिधे ॥ १४ ॥ ४ सालापन ५ नीर (तेज) ॥ १५ ॥ ६ क्रोध करके ७ धमकाए ८ बादशाह की आज्ञा को उल्लंघन करके ॥ १६ ॥ ९ तहां वही वद्वत है ॥ १७ ॥ १० सावधानता से ११ सतपुड़ा पर्वत (पिन्ध्याचल) के समीप १२ कसरत ॥ १८ ॥

रत्नसिंहके कुमारके बलका वर्णन] षष्ठराशि-त्रयोविंशत्युख (२४१३)

जब आई जुबन उप्फन्योँ याकेहु बाहुन जोर ॥  
 याकोँ सहै सु न वहाँ मिल्यो प्रतिमल्लं मल्लहु ओर ॥  
 करि अट्ट ८ निर्जट नालिकेर सरीर साखन संधि ॥  
 बलवान सो ततकाल भंजत एकता बलबंधि ॥ १९ ॥  
 दुवर साख साखिन चीरि बाहुन मध्य ग्राव दिवाइ ॥  
 जिहिके तजे करि स्वीय अंकित पै पिवाइ जिवाइ ॥  
 बर व्याह अष्टम ८ व्याहिबे तिय तोमरी १९३ ८ जु द्वितीय २ ॥  
 गय नैरपट्टनि प्रानगर्वित सक्ति सूचित स्वीय ॥ २० ॥  
 मग अंधुपै कहूँ चर्ममय नव ९ मुट्टि मित जलमाप ॥  
 वाकोँ सटेक छुराइ बैलन अँचिगो भरि आप ॥  
 पति कूपके बरज्योहु प्रत्युत हृद गो हंठि हृद ६१ ॥  
 प्रासंग छोरन नाँ बन्धोँ पुनि आई अप्पहि अहुँ ॥ २१ ॥  
 प्रासंग पायन हिँडै दै तब संपिजावत पार ॥  
 कछुरीति जोर पश्यो भयो सु नृजान बाह्य कुमार ॥  
 व्याहो तँथाविधही बन्धोँ पटुँ आई गेह बहोरि ॥  
 तिम मारि मुट्टि बली दई कटि के जरंत १२न तोरि ॥ २२ ॥  
 कंठारैवारदिक हिंस्र केहि हनै प्रहारि कटार ॥  
 बहती खुँरी बिच किन्न के हतबेग बाजि ३न बार ॥  
 जिनके सुन्योँ बल दैप तेहु कुमार बुल्लि रु जिति ॥

१ आठ नालिघरों की जटा दूर करके २ कंठ, कुहँनी आदि शरीर की शाखाओं की सन्धि में रखकर ॥ १९ ॥ ३ धृत्तों की दो शाखा को चीरकर उनके बीच में ४ पत्थर दिवाकर ५ अपने नाम से जानेजावें ऐसे ६ पानी सींचकर ७ अपने पराक्रम की सूचना करता हुआ ॥ २० ॥ ८ मार्ग के कुएँ पर चमड़े का ९ नौ मूँठ के नाप को (चड़स के नाप की पूर्ण अवधि जवमूँठ की होती है) १० चड़स ११ पानी भरकर १२ उलटा १३ जूड़ा (बैल जूनने का काष्ठ) १४ आडा आकर ॥ २१ ॥ १५ जूड़े को पैरों के नीचे दबाकर १६ पालखी आदि में चलने योग्य होगया १७ उसी हालत में व्याहा १८ नैरोग्य १९ महिलाओं (भैसों) की कमर तोड़ डाली ॥ २२ ॥ २० सिंह आदि २१ हिंसा करनेवाले २२ घोड़े को पूर्ण दौड़ में २३ घमंड

किय अद्वितीय बली भली चहुँ और अप्पन किति ॥ २३ ॥  
 गुन और वीर १ बदान्य २ तादिक जे लये बलगरव ॥  
 स्मरनै दबाइ दये अनर्गल आत जुबन सब ॥  
 याके जथापि करे महीपति इक्कदस ११ उपर्याम ॥  
 न तज्यो तथापि कुमार अप्पन पारदारिक नाम ॥ २४ ॥  
 जिहि पुत्र तेरह १३ त्यों सुता इक १ यों चउदह १४ जात ॥  
 प्रछन्न तोहु नई नई परनारि संगति पात ॥  
 गुडवान जिति नरेस सुर्जन १९०१२ बाहुरयो जब गैल ॥  
 बहु ब्राह्म्य चेदिपुरी लखे द्विज बित्रई भरि बैल ॥ २५ ॥  
 सबही मिलै जिनके परिक्रम देसदेसन सुंदि ॥  
 बलि क्रैय १ क्रैय २ महाघे देसहुमै मिलै सुख बुदि ॥  
 उनमै हि सौ नृप विप्रबंधु कितेक बुंदिय आनि ॥  
 कर अद्व १ रक्खि दये वसाइ बिसेस बानिज कानि ॥ २६ ॥  
 चरनाद्रितैं आनै तथा इनको कितेक चवंत,  
 हे पंचगौडन माँहि पै किय लोभ बानिज हंत ॥  
 अब मूढ एहु कहैं वसे हय बंग १७९१ देव १८०१२ अनेई,  
 इमहोहु पै न प्रमान सूचत अत्थ संसय एह ॥ २७ ॥  
 इक १ विप्रबंधु बंधू हुती तिनमाँहि सुन्दर अंग,  
 सम रूप १ जुबन २ द्वै २ परस्पर उज्झलो तस संग ॥  
 लखि विप्रबंधु बंधू वहै चंदेरी अतिलाग,  
 राच्यो तहाँ सबतैं बिसेस कुमारको अनुराग ॥ २८ ॥  
 मिलिजात दोउ २ नैन १ त्यों मन २ हू मिले रतिमाँहि,  
 अतिप्रान त्योंहि भजैं कुमारहु छन्न नृप भय आँहि ॥

॥ २३ ॥ १ दातार १ कामदेव ने ३ आड रहित ४ विवाह ५ पर स्त्री का ॥ २४ ॥  
 ६ संस्कार हीन ७ चन्देरी में ८ वनजारे ॥ २५ ॥ १ जिनके फिरने से देशदेशों  
 की १० खबर मिले ११ विक्रे के की वस्तु १२ मोल लाने में १३ बड़ सुल्य की १४  
 अधम ब्राह्मणों की १५ व्यापार करनेवालों की ॥ २६ ॥ १६ कहते हैं १७ समय  
 ॥ २७ ॥ अधम ब्राह्मणों की १८ स्त्री १९ प्रीति ॥ २८ ॥ २० प्रीति में २१ बड़ा



सिंहकेकुमारकाब्राह्मणीसेआसक्तहोनाषष्ठराशि-त्रयोविंशमयूख(२४३५)

नृप रत्न१९२॥१ छुंदिय आत विपन लौलयो सु\*निदेस,  
चाहोसुही करि चोरको द्विज चैन रखवहु देस ॥ २९ ॥  
सु लयो निदेस कुमारहु सुनि आयुके अवसान,  
हठ तोहु दुर्व्यसनी तज्यो नन होत निज जस हानि ॥  
संकेत राँति बलिष्ठता मझमत्तता जुत सोइ,  
हुँलस्यो बिसैं जब गेह तासहु रिक्त बंधुन होइ ॥३०॥  
जो सर्व चेदिपुंरी द्विजातिन मझिकैं तन मान,  
मृगराज एननमैं मनो बिलसैं बसैं बलवान ॥  
तक्केहि दाव धनैं द्विजातिन मोघ जे हव मानि,  
जिन जो तथापि तज्यो न उद्यम रत्न१९२॥१ सासन जानि ॥३१॥  
बहुबेर छन्नरहे निसा सब बाग१ वारि२न बैँडि,  
मन पै चल्यो न रुके सबे बहुबैलज्योँ इक भेँडि ॥  
अति सावधान कुमार गो तिनसाँहिँसों कडि एह,  
न तज्यो परंतु कृतांत प्राधुन जाँ द्विजाँ सन नेह ॥३२॥  
परकामिनी१ व्यसनी जु है व्यसनी सु व्है मधुपान२,  
इम द्वैरहि दोष लगे कुमारहि गेरिबे छल आँन ॥  
अतिपान मत्त कुमार सो सुनि गो तँदीय अगार,  
बिटै१ चेटै२ दूत३ बिदूषका४दिन सिकख दै तँहिँ वार ॥३३॥

बलवान\*आज्ञा ॥ २६ ॥ १ अन्त में २ रात्रि में ३ प्रसन्न होकर प्रवेश कर  
ता ४ घर खाली होता तब ॥ ३०॥ ५ चन्देरी के ब्राह्मणों को तृण समान जा-  
नकर ६ हरिणों में सिंह के समान ७ ब्राह्मणी ने बहुत दाव देले परन्तु निष्फ-  
ल हुए ॥ ३१ ॥ ८ घेर कर ९ जेदी (बीच के अपनी कक्षा पर घूमनेवाले) बैल  
के साथ बाहिरवाले वृषभ फिरै इसप्रकार फिरै १० यमराज का ११ पाधुना  
१२ उस १३ ब्राह्मणी से ॥ ३२ ॥ १४ मद्य पीने का व्यसनी होकर ॥ ३३ ॥ १५  
अत्यन्त मद्य पीने से प्रसन्न होकर १६ उस ब्राह्मणी के घर गया १७ सम्पूर्ण का-  
म कला में निपुण सखा को विद कहते हैं और १८ नायक नायिका को सङ्केत कि-  
येहुए स्थान में मिलानेवाले चतुर सखा को चेद कहते हैं और १९ परस्पर नायक  
नायिका के सन्देह पट्ट्यानेवाले का नाम दूत है और २० कौतुक से नायक ना-  
यिका के प्रसन्न करने में समर्थ सखा का नाम विदूषक है ॥

पुनि पानकैं घर सुन्य सो गिनि है बिसेस प्रमत्त ॥  
 इक१ही रह्यो सब रति बिलसन बम्हनी अनुरत्त ॥ ३४ ॥  
 निद्रा निसीर्थसमैं फिरी अतिपानतैं बढिन्याय ॥  
 अब गेहस्वामिनकोँ फुरयो वह छद्मघात उपाय ॥  
 लहि सुद्धि सोवनकी तिरोहित आइकैं तिन लार ॥  
 कछु रीति पैठि दयेहि मंचक बंधि दार१ कुमार२ ॥ ३५ ॥  
 कछु हे सहायक छन्न बाहिर ते गये भजि कूर ॥  
 संहसा सु जगगतही उठयो सहमंच१ बंधन२ सूर ॥  
 लहिहू सके न कुमारके कर१ पै२ विबंधन होन ॥  
 मचकाइ अंग न तोरि मंच सक्यो खरोरहि सो न ॥ ३६ ॥  
 इहिँ छिद्रपै गतनिद्रपै करि गेहस्वामिन वार ॥  
 किय लार दार१ कुमार२ दोउ२न पार सौर कटार ॥  
 भुजजुँद्ध मल्ल१न जितिकैं जिहिँ सिंह२ केँ दिय भंजि ॥  
 गति दाव कोहु फुर्योन यौँ सु लयो भिखारिन गंजि ॥ ३७ ॥  
 गजमार१ बीर२ रु सिद्धसस्त्र३ अभै४ बली५ दृढगंत६ ॥  
 परनारि संगहनैं सुनैं भरैं यौँ अनेक प्रमत्त ॥  
 अति दुर्दसा करि मारि दोउ२न गेरि चत्वर आइ ॥  
 जन सर्व वा घरके जुरे भजिकैं दुरे कहूँ जाइ ॥ ३८ ॥  
 कति यौँ कहंत हन्यौँ यहै संकेत बेलैं कुमार ॥  
 कैसैहु होहु मरयो सु बढैहि चोरके अनुकार ॥

१ फिर मद्य पाकर २ रात्रि ३ ब्राह्मणी से ॥ ३४ ॥ ४ आधी रात्रि में ५ छलघात का उपाय  
 गुप्त ७ माँचे पर ८ स्त्री और कुमार को बांध दिये ॥ ३५ ॥ ९ अचानक १० मंच  
 सहित ११ हाथ पैर दोनों नहीं बंध सके १२ बल पूर्वक ॥ ३६ ॥ १३ जागृत हु-  
 ए पर १४ घर के स्वामियों ने १५ छेदकर, अथवा तरवार और कटारी पार कर  
 दिये १६ बाहु युद्ध में १७ कितने ही सिंहाँ को १८ कोई दाव स्मरण नहीं हु-  
 आ ॥ ३७ ॥ १९ हाथियों को मारनेवाला २० शस्त्रों को सिद्ध किये हुए २१ द-  
 द शरीर २२ बीरों को २३ चौक में आकर डाला ॥ ३८ ॥ २४ सङ्केत किये हुए बाण  
 में मारा २५ बन्धा हुआ २६ चौर के सदृश मरा ॥

कुमार के मारे जाने पर सतियां होना] षष्टराशि-त्रयोविंशमयूख (२४१७)

पहिचानि ताकँहँ द्रंग दूत१न पौरलोक२न प्रात ॥

किय राजद्वार पुकारघलत छति१मत्थ२न घात ॥ ३९ ॥

नृप पुत्र माधवसिंह१९३।२ज्यौ हरिसिंह१९३।३ज्यौ जगनाथ१९३ ॥४॥

दहिया१रु गोर२प्रधानद्वै२सेनेस संकर३साथ ॥

क्रम अब्द नव९इक१मासवय पटु सनुसल्ल१९४।१कुमार ॥

लहि पौर१बर्गन जुत जोध२अमात्य३बर्गहु लार ॥ ४० ॥

महिपाल रत्न१९२।१दह्यो पिता जिहिँ छारउपवन मज्झ ॥

इन जाइ तत्थ दह्यो कुमारहिँ सादि संजम्भ१असज्भ२ ॥

सीसोदनी जु प्रतिव्रता पहिली१बधू व्रत सत्थ ॥

अंबा१९३।१मरी सु कुमारसौँ दिनदोइ२पुव्वहि अत्थ ॥ ४१ ॥

इहिँ स्वामि भोजनके अनंतरँ सर्वदा लिय अन्न ॥

पतिदुक्ख१ जो विर्मना२रही पतिके प्रसाद१प्रसन्न ॥

किय एकदाँ ज्वर आत लंघन एकबीस२१ कुमार ॥

अंबा१९३।१मतीहु करे इते२१तव अप्पव्रत अनुसार ॥ ४२ ॥

हत्थो जगम्मनितैँ कुमार यहै परयो कहँ दिहँ ॥

अंबा१९३।१परी चढि अँट्टैँ सुनि एह अप्प अनिष्ट ॥

धुर कुंचिका डुलि थान कोहु खुल्यो न तालैँक धार ॥

पटक्यो कुमार कपाटपैँ तन्न अँसँ फेट प्रहार ॥ ४३ ॥

तोरायो किंवार गडे त्रि३ कंटक दाहिनैँ भुज तास ॥

अंबा१९३।१हु बाहु सही छुरी लय३ स्वामि दुक्ख उदास ॥

हुव सांत द्वै३दिन कांतसौँ पहिलैँ वधू यह हाइ ॥

१ पुर के लोगों ने ॥ ३९ ॥ २ पुर के लोगों के समूह सहित ३ सचिव ॥ ४० ॥  
४ छार थाग में ५ अमल्य ६ यहाँ ॥ ४१ ॥ ७ पीछे ८ उदास ९ प्रसन्नता में १०  
एक समय ॥ ४२ ॥ ११ हाथी का नाम है १२ देखकर १३ छत पर चढ़कर गिरी  
१४ अनिष्ट १५ एक समय कुंची गुमकर १६ ताला नहीं खुला देखकर १७ कन्धे  
की टक्कर लगाई ॥ ४३ ॥ उस किंवाड़ के तीन कांटे दाहिने भुज में घुसगये १८  
अम्बा नामक कुमरायी १९ पति से दो दिन पहिले मर गई ॥ ४४ ॥

जरती नती सब अगगठै परती चितापर जाइ ॥ ४४ ॥  
 दूजी१॥१० चौथी४॥२पंचमी५॥३छठी६॥४सप्तमी७॥५आठ ॥  
 लागि प्रीतिबस नवमी९॥६तथा एकादसी११॥७ पतिलार ॥  
 ए॥सप्त७कुमरानी जरी इनमें जु चौथी४ \* आदि ॥  
 ज्वर१॥ रेकरआदि असाध्य ठहै चिरतैं इसी गढ़ जाहि ॥४५॥  
 क्रम रीति सत्र जब लगये छ६ बंधू समेत कुमार ॥  
 सस्मून रक्षिय रीकि यह तब घोर गढ़ अनुसार ॥  
 चहिकै भई मृततुल्य सो दृग१फेरिश्वास१चढाइ२ ॥  
 छला तास जानि सके न स्त्री जन सोक दुस्सह जाइ ॥ ४६ ॥  
 मृत जानि पीछैं सुकलीं सु सुनाइ सवरथ माँहि ॥  
 निज विप्र लौहिगये निचोला लकी सके लखि नाँहि ॥  
 पतनीं छ६जुत कुमार१९३॥१चिति धरि अग्निदेत प्रजारि ॥  
 सबनै गई यह जानि सुचिय देहु चितिपर डारि ॥ ४७ ॥  
 बुली यहै पटको न यो करि न्हान१आदि बिजान१ ॥  
 सुंगार२ ठाइ उमा३ पुजाइ चढाइ देहु सु जन ॥  
 तब द्विजन जीवत जानि तिहिं कथितंदि कृत्य कराइ ॥  
 पीछैं चढाइ चिता दई पय बंदि विस्मय पाइ ॥ ४८ ॥  
 उपयामै१क्रम चौथी४ बंधू सहगोनै दूजी२ एह ॥  
 पीछैंगई इम सप्तमी७ पुनि सद्धि स्वाधि सनेह ॥  
 पति१तांत२ वंस पुजाइ पै चहि रोगग्रस्त चिता सु ॥  
 सहगोन अहुत सद्धि बाघेली४१२७ बढी इम आसु ॥ ४९ ॥

\* है ॥ दस्त १ बहुत समय ने २ रांग ॥ ४५ ॥ ३ छः स्त्रियों सहित ४ मरने के  
 समान हो गई ॥ ४६ ॥ ५ छुरदे के रथ (सनेधी, तिरकटी) में सुलाकर ६ चक्र से  
 लकी हुई ७ मरी हुई जानकर ॥ ४७ ॥ ८ स्नान आदि ९ देवी का पूजन कराकर  
 १० कहेछुए कार्य कराकर ॥ ४८ ॥ ११ विवाह के क्रम से यह चौथी थी और १२  
 सती (पतिव्रता) के क्रम से यह दूजी थी अर्थात् प्रथम नश्वर पर अम्बा नामक  
 कुमरानी और दूसरे नश्वर पर यह थी १३ पिता के १४ शीघ्र ॥ ४९ ॥

तासु१ आसु२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इक१ स्वामि सोति छ६ संग लै कुमरानि गदकस एह,  
वसती भई दिव जाइ बाढत अप्प किंति अछेह ॥

जन के कहैं वह बम्हनीहु दईसु तथहि जारि,  
कति यों कहैं किय भिन्न दग्ध सु मंतुके अनुकारि ॥ ५० ॥

खट वेद सोलह१६४६ साक गोपियनाथ१९३१ उर्द्धव रुपात,  
दसइक११ कुमरानी उंदूह प्रजा चउहह१४ पात ॥

अब होत अब्द पचीस२५ मित बय दिष्टिके अनुसार,  
ससि बाजि अष्टि१६७१ समे सतीजन लै गये स्वरंगार ॥ ५१ ॥

अपकिंतिको मरिवा१ तथा तीरुखपमै२ सुहु आस,  
हाकार१ हुव इस नैरखुंदिय२ दुर्जनालाय१ हास२ ॥

विट१ चेटका२दि कुमारकोहु भज्यो सहायक ब्रात,  
इक१ सौविर्दल रु दूतिका कितहु गये अकुलात ॥ ५२ ॥

किय सत्रुसल्ल१९४१ कुनार निजकर तातको मृत कर्म,  
विधि उक्त सदि दपेसु विप्रन भूमि१ गो२ पटै३ भर्म४ ॥

ख तुरंग लोचन राम३२७० दिन बयमैहु अंहति१ खगग२ ॥  
एतो सम्हारि उमै२ लग्यो बढिबे अजस उर्दंग ॥ ५३ ॥

अवसोहि सत्रह१७ अंबदलो गहि रत्न१९२१ हड्ड६१ अधीस,  
मरिहै बढ्यो लखि धर्मभारहि सृनुके सुत सीस ॥

परख्यो पितामह ज्यो बढ्यो सुतपुत्र बाढन प्रीति,  
निरख्यो तऊ तिहि अग्न१ धर्म२ रु विष्टि११ दै नृपनीति ॥ ५४ ॥

१ रोग से दुर्बल २ स्वर्ग में ३ क्षति ४ दिनने ही लोग कहने हैं कि ५ उस ब्राह्मणी को भी यही जला दी ६ अपराध के लक्ष्य ॥ ५० ॥ ७ सन्वत् में = जन्म ८ विवाहकर १० सन्तान ११ भाग्य के १२ स्वर्ग ॥ ५१ ॥ १३ अपकीर्ति का १४ तरुण अवस्था में १५ लुप्ता १६ शत्रुओं के घर में रुनी हुई १७ मसूह १८ एक नाजर ॥ ५२ ॥ १९ वस्त्र २० स्वर्ग २१ तीन हजार दो सौ सत्तर दिन की अवस्था में २२ दान २३ निरन्तर २४ बढ़ा ॥ ५३ ॥ २५ वर्ष पचन्त २६ पोना के मतक पर २७ पुत्र का पुत्र २८ धर्म को आगे और राजाओं की नीति को पीछे रखकर

॥ दोहा ॥

सक भू दय सोलह १६७१समा, बित जँहँ रत्न १९११कुमार ॥

गोपीनाथ १९३१हु स्वर्गगय, सती सप्त ७ अनुसार ॥ ५५ ॥

उज्जल १ पंचमि ५ राधर अह, प्रथित पितामह पास ॥

विदित दाह छारोपवन, अह्नको इम आस ॥ ५६ ॥

॥ पट्टपात् ॥

सुपहु रत्न १९२१ यह सुनत पत्र इम स्वपुर पठाघउ ॥

जानतहे सब जँदपि मोहि क्यों नहिँ समुझायउ ॥

करि सुतकोँ द्रुत कैद इतहु आतो तँदनंतर ॥

तो अपजस होतो न नैन नीचे करते नर ॥

पुर विप्र भजे बुलवाइ पुनि रहनदेहु कर माफ रचि ॥

इन सम निदेस लहि किंय अखिल विधि लिपिसँन नन रहतवचि ॥

॥ दोहा ॥

दै सहाय जे हुव दुजन, सुतहिँ विगारन सूर ॥

तिन्ह देसहु बुलहु न तुम, देहु रहन अब दूर ॥ ५८ ॥

आतहि नृपको पत्र यह, वानिजविप्र विसासि ॥

बुलि बसाये दंगँ बैलि, नीचन सबन निकासि ॥ ५९ ॥

भोज १९११भुजिष्या जठर भव, भट संकर २११ नृप आत ॥

सेनापति जिहिँ देस सुख, दिन्नोँ जस अवदाँत ॥ ६० ॥

॥ पट्टपात् ॥

बुंदिय सुलक प्रबंध कियउ सेनापति संकर २११ ॥

चोरी जिहिँ घर चोर रचि रु कहुँ बैसु १ बिस्तर ॥

१ सञ्चत में २ सात सतियों के साथ ३ वैशाख ४ दिन ५ विदित ६ छार बाग में ७ हुआ ॥ ५६ ॥ ८ तो भी ९ शीघ्र १० जिस ११ ब्रह्मा के लेख से ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १२ व्यापार करनेवाले ब्राह्मणों को १३ नगर में १४ फिर ॥ ५९ ॥ १५ पासवान के १६ उदर से जन्म १७ उज्जल ॥ ६० ॥  
१= धन

भोज के पासवाभिचे संकरका करना] पट्टराशि-त्रयोविंशत्युत्तर (२४७१)

स्वामि कहैं ताहि सम धरैं तस घर नृपको धन ॥

पुनि चोरन प्रकटाइ प्रबल बहुगुन लौ आप्नन ॥

देसहिं असेस हुव सुख उदय भित्त तस्कर बहुल ॥

कोऊ रुक्यो न ताको कलहै किय संकर २१ उच्छिन्न कुल ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

अति सुख बुंदिय देस अब, न जुरै अररै निकेत ॥

जोलौ यह संकर २१ जियत, हुव तोलौ सब हेत ॥ ६२ ॥

॥ पट्टपात् ॥

नदि बनास तट निकट अधम चालुक नाथाउत ॥

उत्थरनाँ अभिधान बसत निर्बसथ भय विद्वुत ॥

नाम सिंह नाँच नर चोर चोरन हित चाहत ॥

मैना १ भिल्ल २ न मित्र ग्रंथ देसन अवगाँहत ॥

पत्तन अलोद चोरो प्रचुर होतहि दे रूपय हरखि ॥

प्रकटाइ चोर संकर २१ प्रबल किय प्रयान सुच्छन करैखि ॥ ६३ ॥

स्वामी चोरन सिंह पुब्ब ताकँई सुनि प्रस्थित ॥

अड्डो मगविच आइ डुरयो पब्बर्यै दुर्ग स्थित ॥

अतिद्विग संकर २१ आत गूढ आरिय तुपकन गन ॥

इक १ गुटिका लागि अलिक परयो दड्ड ६१ सु अचेतन ॥

भोज १ ९१ २ सुत अनसुततकाल भो नाथाउत आइ सु निकट ॥

सिर तास कटि लौगो सँदन बुंदिय धर आन्यौ विकट ॥ ६४ ॥

प्रस्थित १ गस्थित २ अन्यानुप्रासः ॥

१ घर का स्वामि कहै उतना २ उत्तके पास राजा का धन घर देता ३ प्रवेश करते हुए ४ बहुत चोर रुक गये ५ युद्ध में दकुल का नाश कर दिया ॥ ६१ ॥ ७ घर के किवाड़ नहीं जुड़े ॥ ६२ ॥ ८ नाप्रसंग १० भय से भागकर ११ चोरों को एकट्ठे करके देश का पाह लेता १२ बहुत १३ सूँढ़े लँचकर ॥ ६३ ॥ चोरों का स्वामि सिंह नामक उस शंकर को पहिले १४ गया तुआ सुनकर १५ पर्वतों के दुर्ग में छिपकर आडा बैठा १६ ललाट पर १७ मृतक १८ अपने घर १९ धन २० बिना मस्तक नयंकर ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

हाहारव सब देस हुव, सुनि संकर २१२ अवसान ॥  
 जारयो धर बिनु सिर ज्वलन, दिधि उदक बलवान ॥  
 संकर २१२ आत निपार्त सुनि, सुपहु रत्न १९२१२ किय सोक ॥  
 पठयो छद लिखि भटन प्रति, उपालंभ निजओर्क ॥६६॥  
 तिम दक्षिखन गढ तोअरनि, सुरि न गिनत सुगलेस ॥  
 जानि प्रथम तँहँ साध्य जय, चढन चहँ उत एस ॥६७॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वांशयत्ने षष्ठदशशौ बुन्दीन्द  
 रत्नसिंहचरित्रे उदयपुरमहाराणाऽमरसिंहपञ्चत्वानन्तरकर्णसिंह-  
 पट्टसमासादन १, बुरहानपुरसोधपुरामेराधीशकृतकटुनर्मरत्नसिंहवि-  
 रोधोक्तनृपद्वयदिल्लीगमन २, बुन्दीशरत्नसिंहपट्टकुमारगोपीनाथव-  
 लप्रशंसापुरःसरव्यभिचारनिमित्तप्राप्तदुर्मरणात्तत्सहधर्मिणीसप्तक-  
 सहितदहन ३, रावरत्नसिंहभुजिष्यात्मजभ्रातृशंकरचौराधिपसिंहक-  
 रमरणं त्रयोविंशो मयूखः ॥२३॥

आदितः पडुत्तरदिशततमो मयूखः ॥२०६॥

॥ प्रायो ब्रजदशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वारीगढ निजदल विजय, नभयो इम नरनाह ॥

१ अन्तर् २ अग्नि में ३ भाग्य ॥१५॥ ४ भाई शंकर का सरना सुनकर ५ पत्र ६ उमराओं  
 के नाम ७ ओलम्हा ८ अपने घर में ॥ १६ ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वांश के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्न-  
 सिंह के चरित्र में उदयपुर के महाराणा अमरसिंह के देहान्त होने पर कर्ण-  
 सिंह का पाट बैठना १ बुरहानपुर में कड़वी हसी करने के कारण जोधपुर  
 और आमेर के राजाओं से रत्नसिंह का विरोध होकर उक्त दोनों राजाओं  
 का दिल्ली जाना २ बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के पाटवा कुमर गोपीनाथ के ब-  
 ल की प्रशंसा के अनन्तर व्यभिचार के दुराचार के कारण उसका दुर्दशा से  
 मारा जाकर सात सतियों के साथ दग्ध होना ३ राव रत्न के पाशवाक्य  
 भाई शंकर का चौरों के पति सिंह के हाथ से मारे जाने का तर्क  
 २३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ छः २०६ मयूख हुए ॥



रत्नसिंहकातिष्मरनी गढपर चढना । पछराशि-चतुर्विंशत्युत्तर (२४७३)

कछु भुव दिल्ली बस करन, सजे अंडर सिपाह ॥१॥  
रहत निकट गढ तिष्मरनि, जयहु साध्य तँहँ जानि ॥  
इककसमय चढिगो अधिप, तिहिँउप्पर बलतानि ॥२॥

षट्पात्

गढ जातहि गरदाई महिप तोपन रन मंडिय ॥  
गोलन गजब गिराइ खोम१ कपिसिर२ सिर खंडिय ॥  
कलह बीर उतकेहु रूपे अंदर रावन रुख ॥  
सहज ठानि गढ सिथल मिले निकटहि बढि सम्मुख ॥  
नृप बीर चढत अधिरोहिनिन उभय२ तुष्टिगय भैर अतुल॥  
तीजी३हुती न बुंदीस तब बुल्लयो निज गज वपु विपुला६।  
॥ दोहा ॥

घटा सिरोमनि सघनघन१, रन अट्ठाँलक रूप ॥  
सबन तुंग प्राकार सन, भैरयो सो गज भूप ॥४॥

॥ षट्पात् ॥

जानिपरत इत जोर बान१ बंदूक२ प्रहरि बहु॥  
समिटि लरत अरि सूर प्रहत करि दूर दये पहुँ ॥  
वारैन सन कछु वैन उद्य रहिगो तिहिँ इकखत ॥  
भूत भुजिष्या प्रभव हेरि निजजय विलंब हत ॥  
सहि छैत अनेक गोवर्धन३ सु गहि नट गति गज पिष्टि गय॥  
गिनि चढत समिटि पुनि सत्रुगन मंडिय तँहँ भर हेतिमय॥५॥  
बाहिर सन बंदूक१ वान२ बाँना३दिक बुडत ॥

॥ १ ॥ १ सेना फैलाकर ॥ २ ॥ २ धरकर, चोम (घुरजें) और ३ कोट के कंगरे  
४ नीसरनियों पर चढ़े सो दोनों नीसरनियें अतोले ५ भार से तूटगई ६ बड़े  
शरीरवाले अपने हाथी को मंगवाया ॥ ३ ॥ युद्ध की ७ घुरज के रूप ८ जंघे  
कोट से ९ भिड़ाना ॥ ४ ॥ १० प्रहार करके ११ एकत्रित होकर १२ मारकर  
१३ राजा ने १४ हाथी से १५कोट कुछ ऊंचा रह गया सो देखकर १६सवा-  
न से १७उत्तम भाई १८बाव १९सालों का भड़क लगाया ॥ ५ ॥ २०धनुष के वा-

बहु मृत घायल बनत अधर दुरिबे तिन उड्डत ॥  
 गोवर्धन३ बलगाढ भात भट अँचिअँचि डँभ ॥  
 अँस लै रु उप्परहि निखिल प्रेरे मारुति निभ ॥  
 उर बाम भिन्न गुटिका१ असह बिद्ध त्रि३सर उर मज्झ बलि ॥  
 इक१ सहि स्वसीस असहन उपल किय गोवर्धन चिलकलि ॥६॥  
 ॥ दोहा ॥

भाताके सब प्रेष्ट भट, इम चढाइ निजँअँस ॥  
 गोवर्धन३ पहुँचाइ गढ, दये स्वसाहस दँस ॥ ७ ॥  
 तिन दुरि बैठे हिड्डँ तिन्ह, गहि असि कट्टि गिराइ ॥  
 रच्यो अमल गढ तिम्मरनि, फँवि जय आन फिराइ ॥८॥  
 ॥ षट्पात् ॥

रतन१९२११ जिति तिम्मरनि दई दिल्लीस दुहाई ॥  
 बारिय मँतुँ विसारि साह मन सु सुनि सुहाई ॥  
 जु इत भुँजिष्याजात भात गोवर्धन३ भूपहु ॥  
 किल्लापति तँहँ किन्न विरचि घायन उपाय बहु ॥  
 बढतो न आयु मारव्यबस ताही रँतिँ स्वकाँय तजि ॥

नृप भोज१९११२ तनय गोवर्धन३ सु भो जँससेस स्वरोक भजि ॥९॥  
 ॥ दोहा ॥

सबल१९३३ मनोहर१९३४ अनुजसुत, तिँहिँ गढपति करि तथ्य ॥  
 पहु आयउ बुरहानपुर, सीम सिविर जससत्थ ॥ १० ॥  
 नैकैँ१ अग२तिम दक्खिनि३न, रह्यो सु रोधक रतन१९२१२ ॥

ए और वारुद के भरेहुए वाण १ नीचे २ हाथी पर ३ अपने कन्धे पर लेकर  
 ४ सबको ५ हनुमान के ६ सदृश ७ पत्थर ८ युद्ध में आश्रय किया ॥ ५ ॥ ६  
 भाई के श्रेष्ठ वीरों को १० अपने कन्धे पर ११ अपने साहस रूपी १२ कवच  
 से ॥ ७ ॥ १३ नीचे ॥ ८ ॥ वारीगढ विजय नहीं हुआ उस १४ अपराध को  
 १५ पासवानिया भाई १६ उनी राजा को १७ अपना शरीर छोड़कर १८ की-  
 तिथेष हुआ अर्थात् मरकर देवताओं के स्थान (स्वर्ग) को गया ॥ ९ ॥ १० ॥  
 १९ नीति करके और पर्वतों से ॥ ११ ॥

कछु इत प्रविसन खुरुम २९।२कों, जोलों न फुरयो जतन ॥११॥

पुर मऊ सु लाहि छिद्र पुनि, इत लिय खिचि १३न आइ ॥

हड्डवती हाकार १ हुव, परतट धाटिन पाइ ॥ १२ ॥

दै तब दिल्ली अरज दैल, चाहिय सिद्धख बहुवान ॥

अखिखय अब रोयक इहाँ, पठवहु अपर प्रधान ॥ १३ ॥

पुब्बहि इत सु अयाज पट्ट, सरयो स्वसुर तब मीर ॥

सालक निज किय तास सुत, आसिफखान बजीर ॥ १४ ॥

जामाताको जिहिं जियत, प्रकटायो न प्रमाद ॥

जिहाँगीर ३८।१ वारो बज्यो, अँदल जास आबाद ॥ १५ ॥

॥ पट्टपात ॥

आदिल मरत अयाज मच्छो हँरव भुवमंडल ॥

जनकहिं रोयत न जन जिते रोये दग भरि जल ॥

पितामरन खिनपाइ हुरम दिल्लीसकी जु हुव ॥

अप्प हुकम अब एह भयदै लागी प्रेरन भुव ॥

अधिकार आदि बहुतन बदलि दासन निजन समप्प दिय ॥

करि रहिय स्ववस पति अरु कतिक कहत बजीरहु और किय ॥१६॥

हुरम चलावत हुकन देस दिसदिसन उपद्रव ॥

ढँमर १ डकैती २ डौह ३ जुलम ४ सब मचिग बडे जब ॥

अधिय रतन १९२।१ लिपि अरज एह पहुँची जिहिं अवसर ॥

हुरम सु चहतहुतीहि अपर हाकिम पठयो और ॥

बुंदीस जुलि गढपति सबल १९३।१ रचि खाली सह तिमरनि १ ॥

हँदजुत सु देस दै हाकिमहिं तब हंकिय हड्ड ६।१ नंतरनि ॥ १७ ॥

१ चामल नदी के पैले किनारे २ धाड़ायतियों को ॥ १२ ॥ ३ पत्र ४ शत्रुओं को रोकनेवालों को ५ अन्य ॥ १३ ॥ ६ बादशाह ने ७ अपने साले ॥ १४ ॥ ८ जमाई को ९ भूल १० न्याय ॥ १५ ॥ ११ न्याय करनेवाला १२ हाहाकार शब्द १३ पिता को नहीं रोवे जितने १४ सख्य १५ अचंकर ॥ १६ ॥ १६ उपद्रव १७ द्वेष १८ लिखी हुई अर्जी १९ अन्य २० क्षात्र २१ सीमा सहित २२ हाडों का स्पर्श ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

अब्द छ सत्त बिताइ इम, रहि दक्खिन पहु रत्न १९२।१ ॥  
 जिति अधिक इक १ दुर्ग जैहँ, सब किय रुद्ध \* सपत्न ॥ १८ ॥  
 पुनि बुलाइ हाकिम अपर, अपि सु तिहि अधिकार ॥  
 आयो दिखिय अप्प इम, पायो सुजस अपार ॥ १९ ॥

॥ युग्मम् ॥

रन जय १ किय लिय तिमसरनि २, अरि कोउ न दिय आन ३ ॥  
 आसिफ सिखयो साह इम, मिलयो बहावत मान ॥ १० ॥  
 इक १ हथी हय खास इक १, पविन जटित इक १ पैद ॥  
 साह दये मिलतहि सभा, बहु सराहि कुल भट ॥ २१ ॥  
 कतिक मास तैहँ वास करि, सदन सिद्ध लहि सूर ॥  
 आयउ बुंदिय रत्न १९३।१ इम; प्रसंगायउ जस पूर ॥ २२ ॥  
 कुमार अरिहु कर माफ करि, बिसवासे सब विप्र ॥  
 परतट खिचि १३ न हनन पर, छिति प बढ्यो सजि छिप्र ॥ २३ ॥

॥ हनुमत्फातः ॥

इत देस दक्खिन ३।२ एह, दुरि अब्द बहु प्रिय देह ॥  
 अब रत्न १९३।१ के इत आत, भो खुलन ३।२ केहु प्रभात ॥ २४ ॥  
 बीजापुग १ दिक वीर, सह भागपुनर करि सीर ॥  
 पुनि हाँ जु हाकिम पत्त, मन वाहि गिनि लून मत्त ॥ २५ ॥  
 आवाद १ दोलत आदि, गढगंज सब संपादि ॥  
 अतिभार परत अनेहँ, अवलंब गिनि गढ एह ॥ २६ ॥  
 बुरदानपुर दे वाम १, करि सज्जद लो जय काम ॥  
 मरहठ भटहु मिलाइ, पथ सूनु अवसर पाइ ॥ २७ ॥

\* अथ ॥ २८ ॥ १ अन्य ॥ १९ ॥ १ अलिकत्ता का भिनायाहुता ॥ २० ॥ २ दिगों का जहा  
 दूया १ निरोग २ मार्ग ॥ २१ ॥ २२ ॥ कुमार के राजपुत्रों का ५ हासिल माफ करके  
 ६ चामल के पैले किनारे ७ बीघ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

महि बंट लोभ उमंग, अब लौ सहायक संग ॥  
 इस खुरम३९।२ बनि बलवान, प्रभु दर्प किय प्रस्थान॥२८॥  
 सुनि सोर यह इत साह, चतुरंग सजि जय चाह ॥  
 पहिलैं अटक नदि पार, प्रतिमास पाइ मुकार ॥२९॥  
 खड्गी महावतखान, पठयो सु जंग प्रधान ॥  
 तिहिं सिंधुनदि परतीर, सूबा सम्हारि सधीर ॥३०॥  
 दुख दूरिकरि तिहिं देस, इस देत हुन सुख एस ॥  
 जोलों न वड़े भरें जल्य, तोलों धनों इक १ तल्य ॥३१॥  
 जैवं साह आन जमाइ, सु रह्यो अनिष्ट समाइ ॥  
 सुत आत सुनि अब सीम, भट संगदै बहु भीम ॥३२॥  
 सुतरोध कज्ज सधीर, पठयो अजीम प्रवीर ॥  
 रठोर १ कूरमशराज, बुल्ले उभैर आतिबाज ॥ ३३ ॥  
 कछु हेतु तिन लहि कज्ज, सेनाहि निजनिज सज्ज ॥  
 पठई चमूपति पास, उनको न आगम आस ॥३४॥  
 जब किन्न अरज अजीम, सुत सत्रु प्रविसेत सीम ॥  
 रहितल्य नृप रतनेस १९२।१, दिय जो न प्रविसन देस ॥३५॥  
 आयो सु अब निज औन, भुव सून्य अरि गिनि भै न ॥  
 लहि सर्व दाखिन ३।२ लार, अब आत चैक उदार ॥ ३६ ॥  
 प्रभुको जु हाकिम पास, जान्यो न कछु भय जास ॥  
 यातैं सु बुंदिय ईस, अब संगदेहु अधीस ॥ ३७ ॥  
 जिम खुरम ३६।२ गहि हंम जंग, आनै प्रकीर्ति अंग ॥  
 मुगलैदस तब करमान, पठयो सु लेखप्रधान ॥ ३८ ॥  
 नृपरत्न १९२।१ तोकैं न्याय, सब बहत लैन सहाय ॥

१ घमंड ॥२८॥ २ सेना ३ मास मास प्रति ॥२९॥ ३०॥ ४ लार ॥३१॥ अनिष्ट ५  
 मिटाकर ६ भयंकर ॥ ३२ ॥ ७ पुत्र को रोकने के कार्य ८ बहुत शीघ्र बुलाए  
 ॥ ३३ ॥ ९ कारण १० सेनापति के पास ११ उनका आना नहीं हुआ ॥ ३४ ॥  
 ॥ ३५ ॥ १२ अपने घर १३ सेना ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १४ कैद करके ॥ ३८ ॥

लाखि मुज्झ गदिय लज्ज, करनो व धुव यह कज्ज ॥ ३९ ॥

इततैं अजीम उपेत, बलैं आत मम समवेत ॥

तस संग जावहु तत्थ, सुत खुरुम ३९।२ इनहु १ समत्थ ॥ ४० ॥

कै बांधि भेजहु २ कूर, गहि बंग गंजि गरूर ॥

अरि तस सहायक और, जिनपैंहु डारहु जोर ॥ ४१ ॥

इतकों मऊ १ सिर एह, अधिराज चढत अनेहैं ॥

मुगले ६ सको फरमान, पहुँच्यो सु प्रीति प्रधान ॥ ४२ ॥

वह इक्खि बांधिविचार, किय चित्त कृत्य प्रकार ॥

लिपि हुकम यह इत १ लब्ध, इत २ भूमि जावत अद्द १।२।३।४

इहिहेतुं निज १ पर २ अज्ज, करतव्य उभय रहि कज्ज ॥

सजिस्वीय चैक्र असेस, करि मुख्य तैंहें कुमरेस ॥ ४४ ॥

कैलि खुरुम ३९।२ सदन कज्ज, लाखि उचित भुजधरि लज्ज ॥

जो अष्टि १६ सँम वय जुत्त, पट्ट सत्रुसल्ल १९४।१ पँउत्त ॥ ४५ ॥

फरमान मितैं सजिभोज, इत १ मुक्कल्यो अतिओज ॥

जैंहें गोर जुगियदास १, अधिराज स्वसुर जु आस ॥ ४६ ॥

जिहिं रक्खि बलपति जंग, सुहु दिन्न सुतसुतैं संग ॥

तब रत्न १६२।१ अक्खिय ताहि अब परख गोरन आहि ॥ ४७ ॥

अब स्वसुर इहिं बैय आइ, जिन देहु बंस लजाइ ॥

सुत स्वीयें सुंदरदास, पहिलैंहु लै जिय पास ॥ ४८ ॥

गुडवानसन भजिगोहि, जिनकरहु जैन कहु जोहि ॥

वनि पग्घ १ सुच्छ २ बिहीन, दल ईस न बजहु जु दीन ॥ ४९ ॥

यह सुनत मन्नि अनिष्ट, मन गोर किय अँघमिष्ट ॥

१ अघ २ निश्चय ॥ ३९ ॥ अजीम ३ सहित ४ सेना ५ साथ ६ समर्थ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ सः  
मय ॥ ४२ ॥ ८ कार्य ९ मिला ॥ ४३ ॥ १० कारण ११ करने योग्य १२ सेना  
॥ ४४ ॥ १३ युद्ध में १४ सौलह वर्ष १५ पोता ॥ ४५ ॥ १६ फरमान के माफिक ॥ ४६ ॥  
१७ पोता के साथ दिया ॥ ४७ ॥ १८ इस अवस्था में आकर १९ तुम्हारा पुत्र ॥ ४८ ॥  
२० पिता ॥ ४९ ॥ २१ बुरा मानकर २२ पाप से मन सीठा किया

जो प्रकट१ प्रीति जनाइ, लघुवैर \*अंतर२ लाइ ॥ ५० ॥  
 कह्यौ जु सांख्यक कूर, तवतैहि स्वसुरहु सूर ॥  
 सो मुख्य सुतसुत संग, भो चहत प्रत्युत भंग ॥ ५१ ॥  
 लहि सर्व निजबल लार, कनि सत्रुसल्ल१९४१२ कुमार ॥  
 मिलि साहदल सन मग्ग, इक१ ठे वढे सब अग्ग ॥ ५२ ॥  
 सजि अल्प खिलबल संग, इत भूप जंग अभंग ॥  
 तनुजनु तृतीय३ द्वितीय२, हरिसिंह१९३१३ माधव१९३१२ हीया५३।  
 लाखि रहन स्वजनक लार, पहु संग लै नदि पार ॥  
 गय जयन खिचि१३न गज्जि, सब ठाम साधक सज्जि ॥ ५४ ॥  
 मग सत्रुभट दुव२ मारि, पैर पास त्रास प्रसारि ॥  
 घेर्यो मऊ१ बलघोर, जिततित दयो अतिजोर ॥ ५५ ॥  
 जिम सून्य पगघर जानि, मन चोर लै निजमानि ॥  
 जबही धनी मिलिजाइ, कैसैं सु लव१हु टिकाइ ॥ ५६ ॥  
 पवि रूप गोलन पात, दव कल्प कल्प दिखात ॥  
 पछिताइ खिचि१३न पंच, रहि नाँ सके रूपि रंच ॥ ५७ ॥  
 परिवेढ मध्य परंतु, मग क्यों लहैं करि मंतु ॥  
 इम भूप समुह आइ, खैर अग्ग खग्ग चखाइ ॥ ५८ ॥  
 खिरि मुख्य सत्रह१७ खेत, सत उभय२०० भट समवेत ॥  
 नृप अनुज केसव१९२१३ नाम, कलि मुख्य आयउ कामा५९।  
 सत१०० भट परे तस संग, इतकेहु जुजिभ अभंग ॥  
 बुंदीस अनुजनु बहुर, हृदयादि नामक१९२१२ हड्ड ॥ ६० ॥  
 सुहु सत्रुसल्ल१९४१२ सहाय, उत सुककलयो जय आय ॥

\*मन में ॥ ५० ॥ सांख्यक को निकाला उलटा नाश चाहता है ॥ ५१ ॥ अपने  
 सेना ॥ चलकर ॥ ५२ ॥ १ बाकी छोड़ी सी सेना के साथ २ पुत्र ॥ ५३ ॥ १  
 अपने पिता के साथ ४ जीतने को ॥ ५४ ॥ ५ शत्रु के पास ॥ ५५ ॥ दक्षिण मा-  
 थ भी नहीं दिक्ता ॥ ५६ ॥ ७ बल रूप ॥ ५७ ॥ ८ घर में पड़कर ९ अपराध  
 करके १० तीक्ष्ण ॥ ५८ ॥ ११ साथ १२ जुड़ में ॥ ५९ ॥ १३ छोटे भाई ॥ ६० ॥

तनुजात छद्म सु तास, दलि सत्रु केसवदास १९३६ ॥६१॥  
 सब अगग अति जव सिक्खि, दुरि दैवत अरि नृप इक्खि ॥  
 पहुँच्यो सु खिच्चिय १३ पास, दिय रोकि ईस्वरदास ॥ ६२ ॥  
 हनि छत्ति अरि डिग होत, पटक्यो सु तोमर प्रोत ॥  
 कति कहत तस यह तोल, सहिगो सु भजि संगोत्र ॥६३॥  
 बहु वदत हनि अरि बिद्व, आयो सु जय जस इदं ॥  
 पुर यौ मऊ १ जयपाइ, सब देस दुक्ख नसाइ ॥६४॥  
 सरिता अडोरिय सीम, भट थप्पि अप्पन भीम ॥  
 अनुजनु मनोहर १९२१४ अक्खि, रञ्जक मऊ १ पुर रक्खि ॥६५॥  
 उत फेरि बुंदिय आन, दित अहुँ रहिय दिवान ॥  
 सुगलेदस दलैं इत भत्त, प्रति खुरुम ३९१२ सम्मुह पतैं ॥६६॥  
 रिपु चक्रैं तहैं निपराई, हनिवैहि हहुँ ६१ न हाइ ॥  
 गहि स्वामिद्रोहहिं गोर, चहि छन्न निकसन चोर ॥ ६७ ॥  
 वैदि पुत्र कहन बैर, खल वंछि परबल खैरैं ॥  
 पुर खुरुम ३९१२सन डव पाइ, लक्खैरि १ पिहितैं लिखाइ ॥६८॥  
 कैलि गोरैं जित्ति कुमार, दब्बी जु देव १८०१२ उदार ॥  
 पुनि जोहि गोहन पैलि, दम्भीर १८३१२लिय कुलहेलि ॥ ६९ ॥  
 लक्खैरि सोहि लिखाइ, पलट्यो सु यह खिनपाई ॥  
 दल देस पुव पठाइ, मिसु १ नारि २ निस निकसाइ ॥ ७० ॥

१ पुत्र ॥ ६१ ॥ २ वेग ३ शत्रु को भाग कर छिपता हुआ देखकर ॥ ६२ ॥ ४  
 आला ५ प्रवेश किया; अथवा भाले में पोंकर गिरा दिया ६ यह भाला सहन  
 करके ७ गोत्र सहित ॥ ६३ ॥ ८ कल है ९ चेषन करके १० यह हुए यश के  
 साथ आया ॥ ६४ ॥ ११ नदी १२ छोटे आई १३ रञ्जक ॥ ६५ ॥ १४ यह बुन्दी  
 के राजा का उपपद है १५ सेना १६ प्राप्त हुआ ॥ ६६ ॥ १७ सेना को १८  
 जीप लेकर ॥ ६७ ॥ इसके पुत्र को बुन्दी के देश से निकाल दिया था इस बैर  
 को १९ कनकर २० शत्रु की सेना को २१ क्षुब्धता २२ खाने लिखाकर ॥ ६८ ॥ २३ पु-  
 त्र ने २४ गौड़ों को जीतकर २५ कुल का धर्म ॥ ६९ ॥ २६ समय पाकर ॥ ७० ॥



संकेत निस खिन सोह, भूपाल बलपति भोहु ॥

पुत्रादि निज सजि पास, हुत छन्न जोगियदास ॥ ७१ ॥

जवनेस सुतके जोर, गो बदलि स्वसुरहु गोर ॥

सो ताहि निस चलि मूल, घृत स्वामिदोहिन मूल ॥ ७२ ॥

गोपाल तस सुत गोर, अब खुरुम ३९११गिनि जन ओर ॥

मिलि पुच्छि परदल मर्म, करिबे जनक मृत कर्म ॥ ७३ ॥

बहु अप्पि ताहि बिसास, पठयो स्वनारिन पास ॥

सब खुरुम ३९१२तिय १सिसु २संत, हे देवगढ इम हंत ॥ ७४ ॥

आवादंदोलत आदि, गोपाल १गय छल छादि ॥

तब अर्जुन सुंदर २ तास, पहुँचयो स्व अग्रज १ पास ॥ ७५ ॥

भजि अब मिल्यो हिय भिन्न, दुदुकाँरि ज्येष्ठ १ सु दिन्न ॥

पै स्वामिदोहहिँ पाइ, हुव गोर अरि इम हाइ ॥ ७६ ॥

॥ चतुर्धर्मिः कलापकम् ॥

छँम तास सुत इनछोर, इंक १ जो रह्यो नृप १ ओर ॥

स्व कुटुंब निकसत सूर, पलट्यो न लाहि जस पूर ॥ ७७ ॥

जानै मऊ १ पुर जाइ, सब घृत्त दिन्न सुनाइ ॥

उततैहु सुनि सु उदंत, महिपाल किय इम मंत ॥ ७८ ॥

पठयो करोलिय पल, तुम भेजि कह्य बल तत्र ॥

जासात स्वीय सुता १९४१ जु, निर्वाहि तास नेता जु ॥ ७९ ॥

इहिँ पिहित कहुन आहु, जँदु लौ करोलिय जाहु ॥

१ सेनापति २ योद्धा ॥ ७१ ॥ ३ शाहजादे के बल से ४ उसी राजा में शूल का रोग होकर मरा ॥ ७२ ॥ ५ यात्रा को सेना को ६ पिता का मृतकार्य करने के लिये ॥ ७३ ॥ ७ अपनी स्त्रियों के पाल सेजा ८ अष्ट ९ खेद है ॥ ७४ ॥ १० दो-लतावाद ११ छोटा भाई १२ अपने बड़े भाई के पास गया ॥ ७५ ॥ १३ धिक्कार देकर निकाल दिया ॥ ७६ ॥ १४ समय १५ राजा की ओर रहा ॥ ७७ ॥ १६ वृत्तान्त १७ वह वृत्तान्त सुनकर ॥ ७८ ॥ १८ समय ॥ ७९ ॥ १९ जाने २० ई-आदय

\*दल इतहु निज+दल दिन्न, कुबिरोध गौडन किन्न ॥ ८० ॥

इक? दुष्ट मग अनुसारि, टरिजात बहु मन टारि ॥

‡कलि स्वामिदोह कुमाइ, हुव गौड अरिन सहाइ ॥ ८१ ॥

ताकि बेर §छुद्रहि तत्थ, माति घातदै सिसु मत्थ ॥

इहिँहेतु जदुभट आइ, जो लो कुमारहिँ जाइ ॥ ८२ ॥

सिसु कहितो तिन्ह सत्थ, तुमदेहु जावन तत्थ ॥

बलो सर्व अप्पि विसास, पटुरीति रखहु पास ॥ ८३ ॥

इतहु मऊ? निज आँहिँ, भँ आत अब तुम माँहिँ ॥

हृदयादि१९२१ स्वानुज हत्थ, तिम पत्र पहुँचत तत्थ ॥ ८४ ॥

पुनि आत जदुभट पास, किय सन्नुसल्ल१९४१ निकास ॥

कहि निठि वह गुरु कानि, मन पिहित लजित मानि ॥ ८५ ॥

इम कुमर तिनजुत एह, गो स्वसुर जँदुनृप गेह ॥

जिम प्रकट व्याजँ जनाइ, सृगर्या गयो सु मनाइ ॥ ८६ ॥

सजि सावधान स्व सत्थ, जंपी अजीमहिँ जत्थ ॥

सुरि गौड़ बदलत मात्र, मन मलिन करत कुपात्र ॥ ८७ ॥

इत खुरुम३९१२ बल अधिकात, प्रांतिदिवस बढतहि पात ॥

इहिँहेतु चलि कछु अगग, सुरिहिँ ब लाहि, जय मगग ॥ ८८ ॥

तुम भीर बाहकँ तेग, बल सेस बुल्लहु बेग ॥

नृप अनुज कथन निदानँ, मन मन्नि मिच्छ प्रमान ॥ ८९ ॥

सुहि पत्रदै निज सीरँ, भट बहुरि बुल्लिया भीरँ ॥

जंपी जु नृप अनुजाँत, सुहि मिच्छ मन्नि सुहात ॥ ९० ॥

सुरि किन्न कछुकछु मान, पथ अगग अगग प्रयान ॥

\* पत्र † अपनी सेना में ॥ ८० ॥ ‡ युद्ध में ॥ ८१ ॥ § तुच्छ १ घादवाँ के ॥ ८२ ॥ २ सेना ३ देकर ॥ ८३ ॥ ४ है ॥ ८४ ॥ मन में ५ द्विपीष्टई लज्जा मानकर बड़े लोगों की कानि से कठिनाई से निकलकर गया ॥ ८५ ॥ ६ करो- ली गया ७ छल ८ शिकार ॥ ८७ ॥ ९ कष्टी ॥ ८७ ॥ १० प्रतिदिन ॥ ८८ ॥ ११ खन्न चलानेवाले १२ कारण ॥ ८९ ॥ १३ शामिल १४ सहाय १५ छोटे भाईने ॥ ९० ॥

उत खुरुम३९।२ चक्र उदार, लखि भजत लङ्गिम लार॥९१॥

भरि घट वो दल सैल, गहि पिडि दवत गेल ॥

इम सेरपुर लग आत, लुंदीस चिंति सु१ बात॥९२॥

लकखैरि पत्तन लुद्ध, मुरि गौड अरिहुव सुंद ॥

अब सोहि केसव१९३।६ अत्य, सनमानि दिय गजरसत्था॥९३॥

खिच्ची१३स जिहिं हनि खेत, किय किति बल समवेत ॥

अनुजात२ सुत छबद एह, नृप पूजि भुज अति नेह ॥९४॥

सुहि कृष्ण१९३।६ केसव१९३।६ सोहि, ईभराज खास अरोहि ॥

लकखैरि१।६ तिहिं लार, बहु दत्त बैभवर वार ॥९५॥

जिम भात केसव१९२।३जाम, सुहि कर्ण१९३।१रूप१६३।१सनाम

इहिं बुल्लि सहगज१ इह, नृप ग्रामदिय अर निह ॥९६॥

करि ताहि इत कंटकेस, दिय सिक्ख रक्खनदेस ॥

तिम राम१८१।४रत्तिय लुल्लि, बलवंत१९१।१भातहु बुल्लि ॥९७॥

इन्ह संगकरि बल एस, दुव२रक्खि रच्छक देस ॥

असवार१पति२हु अल्प, करि संग नृप चहि कल्प ॥९८॥

भाता१भतीज२सु भाड, खिल लार लहि अनखौड ॥

चल्लपो खुरुम३९।२सिर चंड, खल करन खगगन खंड ॥९९॥

इत सेरपुर तिहिं आत, पहुँच्यो सु होतहि प्रात ॥

अनुजार्त१निज रु अजीम२, सुनि पत्त सम्भुह सीम ॥१००॥

मिलि स्वीय भट सिरमोर, आनंद सब सबओर ॥

पहुँ जाइ सिबिरे पईछ, दल द्वैरहि दुर्मन दिछ ॥१०१॥

१ सेना ॥ ९१ ॥ पर्वतों के घाटे में सेना २ खली ॥ ९२ ॥ लावैरी नगर का ३ लोभी ४ मूर्ख ॥ ९३ ॥ ९ सेना के साथ कीर्ति का ॥ ९४ ॥ ६ बड़े खासा हाथी पर सवार होकर ७ बैभव का समूह दिया ॥ ९५ ॥ = हाथी सहित ९ इष्ट ॥ ९६ ॥ १० सेनापति ॥ ९७ ॥ ११ सेना १२ पैदल १३ प्रलय करने को ॥ ९८ ॥ १४ बाकी १५ क्रोध करके ॥ ९९ ॥ १६ छोटा भाई ॥ १०० ॥ १७ मनु १८ डेरों में १९ प्रवेश हुआ २० उदास २१ देखा ॥ १०१ ॥

इहि अंतराय वजीर, बहु लौ सहायक वीर ॥

खल दमन आसफखान, पहुँचयोहि सर्व प्रधान ॥ १०२ ॥

मिलि नृपश्रीजीमशसमोद, करि सज्ज बल चहुँधकोद ॥

रहि रति प्रातहि रंग, जयआस चाहिय जंग ॥ १०३ ॥

॥ दोहा ॥

नियराये खुरुम३९।२हु निखिल, उततैं सत्वर आत ॥

होडल पल्वल जुद्ध हुव, पंचमधदिवस प्रभात ॥ १०४ ॥

॥ पट्टपात् ॥

उत्तर१दक्खिन२उभय२कटक उत्तर१दक्खिन२क्रम ॥

जुज्झे तोपन जामशदुमह जयकाम अरिदम ॥

बलि उत्तर१ दल बांजि तैरल पटके विच तिकये ॥

मंगी फोजन मुलक१ विजय२न मिले कहूँ विदखे ॥

अवमर्द मचत बलि घोर असि चलत धार नर१ बाजि२ चैय ॥

उत्तर१ अनीकमैय नाहमैय गैय दक्खिन२ पय छुट्टिगय ॥ १०५ ॥

॥ दोहा ॥

जुग२ मरहठ रु त्रय३ जवन, परत मुख्य भट पंचध ॥

सब भजे उत खुरुम३९।२ सह, रूपिसके न रहि रंच ॥ १०६ ॥

बहु ठामन सन मंगि बैल, किन्न खुरुम३९।२एकज ॥

इक मनसो किम अकुँरैं, तैंत मत बन रत तज ॥ १०७ ॥

शत्रु को १ दण्ड देने का ॥ १०२ ॥ २ चारों दिशा ॥ १०३ ॥ ३ नक्षीप लिगे ४ क्षीघ्र. सेना  
रूपी १ छोटे तालाब में १ नाव रूपी चढ़ कुछ हुया अर्थात् क्षीघ्र चलने पार निकल  
लगये "हौडः नौकाविशेषे, इति शब्दार्थनितानालिः" दिल्ली की और खुरुम की  
दोनों सेनाएं क्रम पूर्वक उत्तर और दक्षिण दिशा में गईं = एक प्रहर १ शत्रु-  
ओं को दण्ड देनेवाले १ चौदशाही सेना के घोड़े ११ खड्ग. बांजी हुई फौज  
में विजय और मुलक मिलते नहीं नहीं १२ दूजे १३ कुछ १४ समूह. पादशाही  
१५ सेना रूपी १६ नृमपति (सिंह) से दक्षिण रूपी १७ हाथी के पैर छूट गये  
अर्थात् दक्षिण की सेना भगी ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १८ सेना १९ खड़े रहें २० तारां  
अथवा तिनके ॥ १०७ ॥

आसफखान १ रु रैनर इत, खरे जिति रनखेत ॥

कतिदिन तहँ तकि अवधि कछु, बसे सुजस समवेत ॥२०८॥

सुरि मजेहु न दूर मग, लांघत हुव, कछु लाज्ज ॥

ठहराये जय लोभ ठगि, सकल होन पुनि सज्ज ॥२०९॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वांशयणो षष्ठदराशौ बुन्दीन्द्र  
रत्नसिंहचरित्रे रत्नसिंहतिस्मरनिविजयन १, जहांगीरश्वसुरायाज  
मरणाद्वेलुकोप्रद्वसमयनूरजहांशासनानुसाराधिकारिपरिवर्तनबुर-  
हानपुराधिकारस्थरत्नसिंहदिल्लीगमनपुरःसरबुन्द्यागमन२, खुरमप्र-  
तिरोधार्जीमविनयानुसाररत्नसिंहार्जीमान्तिकगमनार्थयवनेन्द्राज्ञा-  
वितरण३, खुरमप्रतिरोधकस्वपौत्रशत्रुशल्यप्रेषणानन्तररत्नसिंहम-  
ऊविजयन४, स्वपौत्रसंगतसेनापतीकृतस्वश्वसुरगोडयोगिदासप्रतीप-  
भवनश्रवणखुरमप्रतिरोधार्थरत्नसिंहगमन ५, रत्नसिंहासफखानकृ-  
तसमरखुरमपलायनं नाम चतुर्विंशो मयूखः ॥२४॥

आदितः सप्तोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥२०७॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

१ रत्नसिंह २ यश के साथ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वांश के छठे राशि में बुन्दी के भूगति रत्न-  
सिंह के चरित्र में रत्नसिंह का तिस्मरनि को विजय करना १ दिल्ली के बाद-  
शाह जहांगीर के श्वसुर अयाज के मरने के कारण देश में उपद्रव होकर नूर-  
जहां की आज्ञानुसार अधिकारियों की बदली होने के कारण रत्नसिंह का  
बुरहानपुर के सूबे से दिल्ली होकर बुन्दी आना २ खुरम को रोकने के कारण  
अर्जीम के विनय के अनुसार रत्नसिंह को अर्जीम के समीप जाने की बाद-  
शाह का आज्ञा देना ३ अपने पौत्र शत्रुशल्य को खुरम को रोकने के लिये  
भेजे पीछे रत्नसिंह का मऊ विजय करना ४ अपने पौत्र के साथ सेनापतिक-  
रके भेजे हुए अपने श्वसुर गोड योगिदास के पलायन की खबर सुनकर रत्न-  
सिंह का खुरम को रोकने के लिये जाना ५ रत्नसिंह और असफखान से यु-  
द्ध करके खुरम के भागने के वर्णन का चौबीसवां २४ मयूख समाप्त हुआ औ-  
र आदि से दो सौ सात २०७ मयूख हुए ॥

थकत इत रय ठहरि थिर, दक्खिन १।२ दल लखि दाव ॥  
 दिन कलु कहूँक मिलान दिय, भ्रम हँरत जय भाव ॥ १ ॥  
 इतहु देवगढको असह, जब पहुँच्यो अति जोर ॥  
 पग्यो त्रास बुरहानपुर, सूवा, जिततित रौर ॥ २ ॥  
 हाकिम जो पठ्यो हुरम, देस १ काल २ तिहिँ देखि ॥  
 दल सहाय इच्छक दयो, लघु वजीर प्रति लेखि ॥ ३ ॥  
 आसफखान १हु बंघि वह, मंडि रतन १९।२ १।२सन मंल ॥  
 अलप सत्य पत्त उभय २, तव दिल्ली नैय तंत्र ॥ ४ ॥  
 जव करि कुम्भ १ कबंध २ जुग २, उपाल १ बंध बुलवाइ ॥  
 कहिय मिलहु निजनिज कटर्क, जँहँ अजीम तँहँ जाइ ॥ ५ ॥  
 रहिय रतन १९२।२ बुरहानपुर, तोलों न सुन्यो त्रास ॥  
 यातँ सुहि सूवा इनहि, मिलिहँ दलन भिवांस ॥ ६ ॥  
 सूवापति सतकार सब, दुँदर नृपहिँ दिवाइ ॥  
 पठ्यो पुनि बुरहानपुर, साह हुकम दरसाइ ॥ ७ ॥  
 सहँस उभय २००० दल दिन सहित, महिप अनुज इत मंगि ॥  
 कलाह अजीम सहायकिय, रोकन रिपु रन रंगि ॥ ८ ॥

॥ पट्टपात् ॥

जवहि रतन १९२।१ नृप सजैव सजि हंकि य सूवा सिर ॥  
 उभय २ मास गृह आइ थप्पि प्रकृतिन प्रबंध थिर ॥  
 बुद्धि करन १९३।१ बलवंत १९१।१ भुजन तिन्ह अपि राज्य भँर ॥  
 प्रभू प्रमुख पय प्रनामि मऊ १ चेनाइ मनोहर १९२।४ ॥  
 निज अनुज हृदय नारायण १९२।२ हिँ कै थित २००० हयन जुतरहन कहि  
 १ वेग धकने से २ मुकाम ॥ १ ॥ २ ॥ सेना से सहाय की ३ इच्छा करनेवाला  
 ॥ १ ॥ ४ प्राप्त हुए ५ नीति के आधीन रहकर ॥ ४ ॥ १ वेग (शीघ्रता) करके  
 ओलम्भा देकर ८ सेना में ॥ ५ ॥ १ नाश करने को १० लुटेरों के घरों को ॥ ३ ॥  
 ११ वर्षणा में नहीं आवे ऐसा ॥ ७ ॥ ८ ॥ १२ शीघ्रता से १३ राज्य के प्रधान पुरुष  
 १४ भार १५ माता १६ आदि के १७ ऊपर कहे हुए ॥

रत्नसिंहका बुरहानपुरमें सजना ] षष्ठराशि-पञ्चविंशमयुख (२४=७)

प्रस्थान करत बुरहानपुर\*स्वबल और बुल्लिय सबहि ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

स्वसुरालय सन पुनि सता १९४१, कुमार बुल्लि ततकाल ॥

सब सासक रक्खि सु सदन, प्रस्थित हुव भूपाल ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्रज १ दल लखि अनुज २ हुकम परिमित २००० रक्खे हय ॥

केसव १९३१ दतस छम ६ कुमार भनिय जनकहि तँह निर्भय ॥

न रहहु वहहु निदेस आत कूरम १ कबंध २ अब ॥

पिसुनन सन वचि पाय सोधि मग धरहु बोधि सब ॥

द्वारकादास १ नामक बिदित सेखाउत कूरम सहित ॥

केसव १९३१ इतीक कहि लाहि कटक आनि मिलिय दबवत अहित

॥ दोहा ॥

पुतना सह बुरहानपुर, पत्तो पहु जैसपीन ॥

कुर्म द्वारकादास १ कहँ, कटकईस तँह कीन ॥ १२ ॥

भेजि रायमल्लोत २३१९ भट, बुद्धिचंद्र १९२३ वर बंधु ॥

रक्खयो गढपति तिमरनि, अरिगन गेरन अंधु ॥ १३ ॥

माधव १९३२ हरि १९३३ केसव १९३६ मुख, सुनु १ भतीजन सत्थ

सूबा सीम सम्हारि सब, तप्यो निरंकुस तत्थ ॥ १४ ॥

सासक करि हम्मीर १९०१ सुत, पूराउत्त १७१२ प्रताप १९१२ ॥

पठयो पत्तन अलचपुर, सुनि उत डैमर सत्ताप ॥ १५ ॥

कहत किते आसेर यह १९११, रक्खयो गढ अनुरूप ॥

रहिय अप्प बुरहानपुर, भू नैव दबवत भूप ॥ १६ ॥

\*अपनी सेना ॥ ९ ॥ सासरे से शत्रुशाल को आज्ञा करनेवाला घर में ३ गमन किया ॥ १० ॥ ४ पञ्च हुकम माफिक आज्ञा धारण करो ७ युगलों से ८ खको समझ कर ६ शत्रुओं को दयाता हुआ ॥ ११ ॥ १० मेना सहित ११ पुष्ट यश से १२ कछवाहा १३ सेनापति ॥ १२ ॥ १४ छुर में ॥ १३ ॥ १५ आदि ॥ १४ ॥ १६ उपद्रव ॥ ११ ॥ १७ नवीन भूमि दवाले के लिये ॥ १५ ॥

जंपहिं कति आसेर जब, उत द्यो अरिनि अधीन ॥

रक्खि तहां तिय १ सिसुर खुरुम ३९१२, कलह उपक्रम कीन ॥१७॥

पै दक्खिन १ बुरहानपुर २, उत्तर १ गढ आसेर २ ॥

परिविच तापी १ सस ७ पुट २, फलमैं भासत फेर ॥१८॥

तत्थहु ठहै संभव तदपि, अंतर दिल्लिय आन ॥

दक्खिन १ उत्तर २ अरि दु २ दिस, तिम न जन श्रुति तान ॥१९॥

॥ पट्पातु ॥

हाकिम पंठयो हुरम ताहि प्रतिमग्ग भेजि तिम ॥

इत अवहित हुव अप्प १ हेत्ति २ तुरकान १ महा हिम २ ॥

आसिफखान बजीर अक्खि सत्वर पहुँचन इत ॥

अटकन खुरुम ३९१२ हिं उक्त महिप पठये बल सम्मित ॥

रठोर १ साहदल मुख २ रहत चलात कुम्स १ चंदोला २ चढि ॥

अक्खिय सु चिंति जयसिंह १ अब पलाटन यह यह मंत्रपढि ॥२०॥

सुनहु साह १ सह सचिव २ अद्युत दुव २०००० दल मम आश्रित

सादी पंचहि सहस ५००० अधिप गजसिंह २ तंत्र इत ॥

निर्धत मोहि नासोर १ थट ईसाहिं अब थप्पहु ॥

मिर्त रठोरन महित सहित चंदोला २ समप्पहु ॥

जय गिनहु जुद्ध बहु चक्रवस हजरत इम बदलाहु हमहिं

करि सुहि कबंध दुर्मनं किय सु सूरसुतहु टरि संक्रमहि ॥२१॥

१ कहते हैं युद्ध करने का विचार पूर्वक २ आरम्भ किया ॥ १७ ॥ ३ तापी नदी ४

सतपुड़ा पहाड़ बीच में पड़ता है इसकारण इसके होने में फरक दीखता है ॥ १८ ॥

५ ऐसी दन्तकथा नहीं है ॥ १९ ॥ ६ पीछा ७ सावधान ८ सूर्य ९ तुरकान

रूपी वरफ का १० शीघ्र ११ राठोड़ यादगाही सेना की हरोल में रहते हैं और

कलवाहे १२ चन्दोल में (पीछे) रहते हैं १३ इस रीति को ॥ २० ॥ १४ सवार १५

आधीन १६ निश्चय १७ आगे (हरोल में) सेनापति करके १८ राठोड़ थोड़े पूज्य हैं

जिनको १९ अधिक सेना के आधीन २० उदास २१ खुरसिंह का पुत्र सेना से

दलकर २२ चला ॥ २१ ॥



दोहा

साह पठाये सुत समुख, रहि तब मत अनुरूप ॥

अगग१ पिठि२ क्रम तजि\*अपन, भिन्नचले दुव२ भूप ॥२२॥

षट्पात

रानअमर सुरतान करन१ अक्खिख पदिले क्रम ॥

भ्रात अनुज तस भीम२ दुसह सूचिय परबल दम ॥

साह पटा लहि सोहु होहु कै१ तब तँहँ हाजरि ॥

कै२ पठयो होहु कहँ सरनि कै३ होहु तित्थ सरि ॥

कै४ पिक्खि बंस अनुकूल क्रम होहु भीर निर्वल हटत ॥

पै अप्पि सरन खुरुम३९॥२हिं प्रथित करहिं कित्ति काटत१कटत

इम इक१ आहव अंत सरन यह रक्खि साहसुत ॥

जातहि कासी जुरहिं सुरहिं अभिमुख धारन धुत ॥

मरहिं कबंधन माँहि कुम्म१ हड्डन विहुत करि ॥

इहिं मयूख सुहि अधिक होहि प्रभु सुनहु रामहरि२०१४ ॥

जौहो हजूर तोतो१ जबहि पठयो वहहु स्व पुत्र पर ॥

हो दूर तोशु अवसर हरखि भयो सरन सिर मरन भर ॥२४॥

दोहा

होहु कितहि यह भीमहरि, पै कुलधर्म प्रसंग ॥

रक्खि सरन खुरुम३९॥२हिं खिरघो, अप्पन तिलतिल अंग ॥२५॥

वह उदंत अहँ अवहि, इक्क१ समरके अंत ॥

मिले अजीमहि इत उभय२, कुम्म१ कबंध२ कुंकंत॥२६॥

आगे पीछे चलने का स्थान छोड़कर ॥ २२ ॥ उदयपुर के राणा कर्णसिंह का छोटा भाई भीमसिंह २ यशु की सेना का दख देनेवाला ३ मार्ग में ४ अश्वत्थ तीर्थ करने गया होवेगा ५ खुरम को शरण देकर ६ कीर्ति प्रसिद्ध करेगा ॥ २३ ॥ ७ सन्मुख दरवाजों में जाकर सरेगा ८ कछवाहों और हाडों को १० भगाकर ११ हे रावसिंह १२ जो बादशाह के हजूर में था तो ॥ २४ ॥ १३ भीमसिंह ॥ २५ ॥ १४ वृत्तान्त १५ एक युद्ध होने के पीछे १६ भूपति ॥ २६ ॥

पठये दल दोउरन प्रथम, जिन्हजिन्ह सिबिरन जाइ ॥

भूप मिले निजनिज भटन, सुनि१ पुनि कुसल सुनाइ ॥ २७ ॥

सीसोद३हु जो संग हो, तो अजीम मिलि ताहि ॥

निवसायो अप्पन निकट, सिबिर प्रबंध सराहि ॥ २८ ॥

महिपरत्न१९२१ अनुजहु मिलिय हृदपनरायन१९२१ २६६१ ॥

नृप अवंति सूवा अनुंग, विविध मिले बल बड्ड ॥ २९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कुसरहु खुरुम ३९१२ खलन बहिकायो, उततैं साजि दक्खिन

३१२ बल आयो ॥

आजि मच्यो संहसा दुहुँ२ औरन, हुव संकुल जिम सिंधुहिलोरना३०

उत्तर पवन चलयो तिहिँ अवसर, अरयो प्रथम लोलन गोलन अर ॥

गिरनलगेनर१गंध२हय३मय४गन, फिरनलगे भेलन भुव अहि फन

किरन लगे छल१चमर२केतन, खिरनलगे मनि१कनि२कि३खेतन

धिरनलगे कातर चितत घर, चिरन लगे गिरि चमकि चराचर ॥ ३२ ॥

तिरनलगे नभ१उदधि२गिद्धतिम, उभय२चक्र तँहँ भिरनलगे इम ॥

कछु अनेहँ कैलकल तोपन करि, बल बल बहुरि बडे जँव विस्तारि ३३

१ डेरों में जाकर ॥ २७ ॥ २ निवास कराया ३ लज्जन के ४ सूबाके सेवक ५

बड़े बल से दोनों ओर ७ अचानक ८ युद्ध हुआ सो समुद्रों के हिलोलों के स-

मान = भर गया ॥ ३० ॥ ९ चपल गोलों का झुड़ लगा जिससे १० हाथी, घोड़े

११ ऊँटों का समूह गिरने लगा, पृथ्वी को भेलनेमें १२ शेषनाग फण फिरानेलागे

“यहाँ अहि शब्द सामान्य सर्प का वाचक है परन्तु पृथ्वी को भेलने के योग

से शेषनाग का ग्रहण है” ॥ ३१ ॥ छत्र चमर और १४ ध्वजा १३ गिरने लगे

और युद्ध में मणियों बिखरने लगीं सो १५ मानों खेतों में १६ दाँवियों (धान्य

की मंजरी) बिखरती हैं १७ कायर लोग चिन्ता के घर में धिरने लगे चर और

अचर चोंक कर चीर होकर गिरने लगे ॥ ३२ ॥ इसप्रकार आकाश रूपी १८

समुद्र को ग्रीध तिरने लगे इसप्रकार दोनों १९ सेना भिड़ने लगीं १९ कुछ

समय तोपों का २१ कोलाहल करके फिर दोनों सेना ने २२ शीघ्रता करके बल

(पराक्रम) फैलाया ॥ ३३ ॥

कुंतन सरसन असिइन संकुलि कौलि, बत्थन कहँ पाइक जुरत बलि ॥  
 इत१ के उतर२ उत१ के पैठे इत२, मिलत भित्र चिरतैं बिछुरे मित ॥ ३४ ॥  
 मचकि कपाल कढनलगि मंज्जा, लचकि गिरत सुनिरत भटलज्जा  
 अंत्रनजाल किरत कढि अगँ, लंघि तंदपि समुखहि पगलगँ ॥ ३५ ॥  
 उडत सीस१ रुँडे२ हि बहु उडत, बिहसि कि कीर१ दसंगुल२ बुडत ॥  
 उत्तर१ अनिल इतसु अबु कूलहि, सम्मुद दिस२ खटकयो हिय सूलाहि  
 हेति१ १ हत्थ२ इत१ कहि सफल हुव, मज्जी उत२ अवतो जियत२हु मुँव ॥  
 रन धन उडत मिच्छ१ भरहठे२, निजजिय पिर्धं दक्षिण दल नडे ॥ ३७ ॥  
 रतन१ फेट बीजापुर२ रंज्यो, डमहि अजीम१ भागपुर२ मंज्यो ॥  
 अतिबल मुरत द्वे२ हि दल अँसैं, प्रतिहँत खिलहु कोन धर पैसैं ॥ ३८ ॥  
 जिन्हँ बल खुरम३ ॥ ३६ ॥ खन्धों सजि जोधँक, मगमग सुरेबिमुख गति बोधँक  
 मंगी धारि समग्र सुरकानी, मनहु लखयो न खुरम१ १ २ कित भारी  
 स्ववली मुरत जान्यों न राहलेंव, हुलसि कुँस्म बलाबिच जुजझतहुव  
 अति भँर परत पिहँ बल इकरयो, समुकि सु सून्य प्रदँवहि सिक्खयो

१ आलों से २ तीरों से ३ तरवारों से ४ उस युद्ध को ५ भरकर कितने ही ६ पैदल बाहु युद्ध करने लगे, बहुत समय के बिछुड़े हुए ७ भित्र के समान मिलने लगे ॥ ३४ ॥ वीर आदि के समूहों के लूटने से ८ शूद्र (अस्थिसार) निकलता है और नखकर गिरते हुए वीर लज्जा का स्मरण करते हैं आँतों का समूह निकल कर आगे ९ गिरता है १० तोभी उसको लंघकर वीरों के पैर सम्मुख ही उठने लगते हैं ॥ ३५ ॥ मस्तक गिरते हैं और बहुत से ११ बिना मस्तकवाले धड़ हैं सो मानों कीर हसकर १२ खरबूजों की वृष्टि करता है उत्तर की दिशा का १३ पवन दिल्ली की सेना के अबुकूल होकर खुरम की सेना के हृदय का शूल होकर चुभा ॥ ३३ ॥ १४ शस्त्रों के हाथ १५ जीते ही शून्य हुए १६ अपने जीव को प्यारा जाननेवाली दक्षिण की सेना भागी ॥ ३७ ॥ १७ नाश होने से बाकी रहे जिन्हों ने जाना कि अब किस घर में सुखेंगे ॥ ३८ ॥ सज कर १८ बोझ बना था १९ बिना विचार भागे २० वह मांगी हुई धाड़ ॥ ३९ ॥ २२ खुरम ने अपनी २१ सेना को भगी हुई नहीं जानी इस कारण प्रसन्न होकर २३ कछवाहों की सेना में युद्ध करता रहा जब अत्यन्त २४ भार पड़ा तब २५ पीठ की सेना को देखी उस स्थान को शून्य देखकर वह भी २६ भागा ॥ ४० ॥

हो ढिग<sup>१</sup>कै कछुदर<sup>२</sup> पंताहर, संकट भीम सहायक संगर ॥  
 होहु कितहि पै तास सरन-हुव, स्वसत नसत नैसि त्रसत साहसुव<sup>३</sup>  
 लखत सरन खुरुम<sup>३</sup>१२ सु हियलायो, साह पटा सु न अधि-  
 क सुहायो ॥

तस दल अगैं भजि सु भीरु तिम, अप्पन मरन लई कासीइम  
 किते कहत सूवा प्रयाग को, भीमतंत्रहो खुरुम<sup>३</sup>१२ भागको ॥  
 सो तैं जाइ भयो सरनागत, बाँहगहिय तिहिं होहु कितहु बंत<sup>४</sup>  
 ताहि उबारि मरन निश्चय तकि, थान पहुँचि मुररयो सु मनौ थकि ॥  
 धीर कतिक दै संग धीरधुर, पठयो खुरुम<sup>३</sup>१२ निकासि उदयपुर<sup>४</sup>  
 करै न रान रक्खयो-हु मास कति, भजिजैहैं दक्खिन तस्कर भाति ॥  
 इत इहिं कहि भीम रन अंकुरि, मरन खेतं मिलतहि पच्छोमुरि<sup>४</sup>  
 पिठिलगे पहुँचत दिल्ली दल, परयो सिंह तिनपर ग्रंहरि प्रैतल ॥

पिक्खहु चाहि मरे सु रौम<sup>२</sup>०३।४ पहु, बहैं समुख न गिनैं अ-  
 ल्प<sup>१</sup> रु बहु<sup>२</sup> ॥४६॥

जावत सरन मरन कासी जब, सगताउत्त मान<sup>१</sup> यह सुनि सब ॥  
 धूलिमित्रं भीम<sup>२</sup>हि गति धारयो, बुँध तिहिं संगहि मरन बिचारयो ॥  
 उज्झिं सबन दे जल सेवारहिं, बंटन वेग भात सन भारहिं ॥

१ महाराणा प्रतापसिंह का पौत्र समीप था अथवा दूर था परन्तु वह शी-  
 पोदिया भीमसिंह उस युद्ध के संकट में खुरम का सहायक हुआ ४वां दशाह  
 का पुत्र (खुरम) ३ भाग कर उसकी कारण से हुआ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ५ भीमसिंह  
 के आधीन था ६ यह वार्ता कैसे ही होओ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ७ महाराणा करण-  
 सिंह ने खुरम को कितने ही महीनों तक उदयपुर में अपने पास रक्खा - चो-  
 र की भांति भाग गया ९ भीमसिंह युद्ध में खड़ा होकर मरने योग्य १० का-  
 शी का क्षेत्र मिलत ही पीछा फिरा ॥ ४५ ॥ ११ हातल का प्रहार करके वह  
 सिंह दिल्ली की सेना पर गिरा १२ हे प्रभु रामसिंह देखो जो मरना बिचार लेता  
 है वह शत्रु के सम्मुख ही बढता है १३ थोड़ा और बहुत नहीं देखता ॥ ४६ ॥  
 १४ बालमित्र १५ उस चतुर मानसिंह ने ॥ ४७ ॥ १६ सब को छोड़ कर

\* विक्रमी सम्वत् १६७१ में महाराणा अमरसिंह के साथ बादशाह जहांगीर की सन्धि हुई तब यह

जा दिन भीम जुख्यो दिल्ली दल, पहुँचत तादिन तिहिँ नलगी  
पल ॥४८॥

प्रधाने उपक्रम मिलत महापटु, कछु कहि भिन्न मरन हितकी पटु  
सजि तिम मान १ भयो अग्रेसर, गोकुलदास २ सहित सजि  
संगर ॥ ४९ ॥

कासी मरन मोरि सब कँछी, सुरे चार भट दँक जिम मँछी ।  
साह कटक भज्जत जानत सठ, हरखत पिछि लग्यो जितन  
हठ ॥ ५० ॥

तससिर मुरि सीसोद परयो तब, भरन हार मनेँ सु सहै सब ॥  
बढिगो प्रतिवत्त जलधि बिलोरत, मुरत १ न सुन्योँ सुन्योँ पर  
मोरतर ॥ ५१ ॥

अमि प्रसख्यो सीसोदन असो, कहँ सुकवि मारी गद कैसो ॥  
दिस पूरव सन प्रविसि साह दल, किजोँ भरन मारि अरि क-  
लकल ॥ ५२ ॥

बह्यो भीम अमि प्रलय भीम विधि, नदख्यो मगलयो कासी निधि  
सु मुरि पंचपक्रोसी विच सम्मुह, सजुन दैन लग्यो दुल्लहसुहा ॥५३॥

१ जिस दिन ॥४८॥ २ युद्ध के विचार पूर्वक ३ आरम्भ होते ही वर ४ अत्यन्त  
चतुर ५ अग्रणी हुआ ६ धोड़े ७ जल में जिनप्रकार मँछी पीछी फिरै तिन  
प्रकार पीछे फिरै ॥५०॥ ८ सेना प्रति हल्लमुह को मथना हुआ १० शत्रुओं को मो-  
ड़ता हुआ ॥५१॥ ११ महामारी (मरी) रोग के समान तरवार चलार्ड १२ कोलाहल  
२३ भीमसिंह का १ शत्रु १४ अचंकर प्रलय की विधि में चला १५ दुर्लभ सुख ॥५३॥

जादा गुरम ने भीमसिंह को अपने साथ लेजाकर बादशाह से भीमसिंह को राजा के लिताव के साथ वटा  
दरजा दिलवाया तभी से भीमसिंह बादशाही सेवा में रहता था इसकेलिये ऐसा प्रसिद्ध है कि साहजाद सु-  
रम की माता भीमसिंह के राखी बान्धती थी इसकेलिये भीमसिंह सुरम को मानजा कहता था इसीकारण  
से भीमसिंह बादशाही सेवा से निकलकर अपने मानजे सुरम का सहायक हुआ, इन युद्ध का उलान्त ब-  
हुतसी तनारियों के हथेली से बीरबिनोदनामक मेवाड़ के इतिहास में लिखा है जिसमें जोधपुर जयपुर आ-  
दि को मगाकर सहजादे पनेज के समीप बादशाही सेना में भीमसिंह का माराजाना लिखा है, यह युद्ध वि-  
जयी संवत् १६८१ में काशी के समीप हुआ था ॥

उभय२ गोकुल१ रु मान२ पास इम, जय रन रमत चक्ररच्छक२  
जिम ॥

परत बज्रगति सरन मरनपन, कूरम१ हड्ड२ जवन३ किय कैनकन५४  
टिकत कबंध१ खरो इकदिस टरिं, कालि वह लखत मत्त आसव  
करि ॥

सैय रँपमय चल्लत सीसोदन, गँय१ हँय२ नर३ न भरन लग्गे गन५५  
कहुँक रुंड लौ मुंड स्वीयंकर, है हियदिहि१ पहुँचि पूजै हर ॥

भूत दूतबनि बहुन भिरावत, खूवन अतिभट सिरन शिखावता५६  
परत भार लखि जियनपराधन, नँहो हड्ड६१ सु हृदयनरायन ॥

कुल कलंक कानि न कछु किन्नी; लौ प्रियपान दिसा इकलिनी५७  
अग्रज भयहु न कछु मन आन्यौ, प्रिय१ जिय अग्रिय१ नँक प्रमान्यौ

इत सीसोद भीम कइत अरि, कूरम१ हड्ड२ जवन३ कनकनकगि५८  
संकट पुर्व भजत जान्यौ सुहि, सम्मुह मुरत काल मान्यौ सुहि

इक चितोर करन निज उज्ज्वल, बाहुरि भिरत बरन पिकरुयो बल  
कोउक रह्यो अछुत भीमकँर, सब हुव जत्रकुत्र अग्रेसर ॥

समर खरो जयपाइ अमर सुर्व, दुजन अदिह हैति१ जजर हुव ६०  
छिज्जत कूरम१ जवन२ लोह छकि, छिति लोटत कति भजत मोहछकि

विजय निरसन घुराइ भीम बँलि, असह खेत ठहो जसउज्जलि ६१

१ अर्जुन और २ श्रीकृष्ण के समान; अथवा श्रीकृष्ण की रक्षा से अर्जुन युद्ध करे इसप्रकार युद्ध किया. कछवाहे और हाडों को ३ तितर वितर करदिये ॥ ५४ ॥ जोधपुर का राजा राठोड़ गजसिंह दलकर एक ओर खड़ा रहकर ४ युद्ध देवता रहा था ५ मध्य में मस्त होकर ६ हाथ ७ वेग सहित ८ हाथी ॥ ५५ ॥ ९ अपने हाथ से अपना ही मस्तक लेकर १० हृदय की दृष्टि से ॥ ५६ ॥ ११ जीने में तत्पर होकर १२ भागा १३ शंका ॥ ५७ ॥ १४ जीव को प्यारा और १५ नाक को अप्रिय माना ॥ ५८ ॥ १६ बेरा लगने से १७ पहिले ॥ ५९ ॥ १८ भीमसिंह के हाथ से कोई ही कहीं अछूता (घाव रहित) रहा १९ राणा अमरसिंह का पुत्र शत्रुओं से नहीं देखा जासके ऐसा; अथवा उस युद्ध में शत्रुओं को खड़ा नहीं देखार २० शस्त्रों से ॥ ६० ॥ २१ नगारे २२ फिर ॥ ६१ ॥

लोहछकि १ मोहछकि २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रतिभट और टिकत नहिँपाये, दिसइकशखरे कबंध दिखाये ॥

इमहि भीम गजसिंहहिँ अकिखय, रन जयविरचि खेत मह रकिखय  
बंब तुम न जयमूचि बजावहु, यहहिँ दर्प तो सम्मुह आवहु ॥

भाखी सुनि गजसिंह मुज्झ भट, अप्रतिहत न रुकहिँ वट१उव्वट२  
तुम करिविजय खेत रक्खयो तिम, उँचिन करन अवजाहु सिबिरि इम  
बजत बंब न रुकैँ मारिक बल, फोरि देहु तब रुकैँ सर्वन फल ६४  
क्यों बबेहु अब मरन कुमावहु, जय१ जस२रकिख सिबिर निज जावहु  
मानी भीम यह न तब मानी, रडोरन सन रारि रचानी ॥ ६५ ॥

ए१वंपु भिन्न२हुते वेशअक्षतै२, हुव तिलतिल सीसोद हेति<sup>३</sup> हत ॥  
सिरतस द्वारधरयो हसि संकर, बस्यो त्रिदिव दुलाही अच्छरिवर ६६  
मुख अगैँ सु भरयो भट मान१हु, उँवरयो सु गोकुल२छतवैनहु  
जयलच्छी सीसोद१लही जो, बहुरि जित्ति रडोर२वही जो ॥ ६७ ॥

भीम अगंग मान१हु तिलतिल भो, खँगन खिन्न गोकुल२सु खिलभो  
रानाउत१सगताउत२जुग रन, परे प्रवीर निवाहि मित्रपन ॥ ६८ ॥  
भीम१ मान२ इम स्वर्ग वसे भैर, गोकुल बच्यो आयुबल गँवर ॥  
पहिलैँ दल साहको दल्यो पारि, अब गजसिंह लयो जय उदरि ६९  
जु सुनि साह छंद हुकम भेजिजिम, उँपालंभ बुंदीसहिँ दिय इम ॥  
स्वीय अनुज न भजैँ जो सत्यैर, तो न सुरैँ ममदल रनैँचवर ॥ ७० ॥

१ शत्रु २ राठोड़ ॥ ६२ ॥ ३ नगारा ४ जय की सूचना करनेवाला ५ बमंड है तो ६ अभंग-अनवाले; अथवा रोकने से नहीं रुकनेवाले मेरे वीर नहीं रुकेंगे ॥ ६७ ॥ ७ उचित कार्य (घावों का इलाज) करने के लिये ८ डेरों में ९ मेरी सेना में १० कान फोड़ डालो ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ११ शरीर से घायल १२ घावर-हित १३ शस्त्रों से कटकर ॥ ६६ ॥ १४ मानसिंह भी भीमसिंह के मुख आगे गिरा १५ बचा १६ घायल होकर १७ जो जयलक्ष्मी शीघ्रोंद भीमसिंह ने ली थी वह १८ राठोड़ ने धारण की ॥ ६७ ॥ १९ मर्जों से क्षीण होकर २० बाकी रहा ॥ ६८ ॥ २१ वीर २२ गमन क्षीण आयु के थल से ॥ ६९ ॥ २३ पत्र २४ ओलम्हा २५ तुम्हारा भाई २६ शीघ्र २७ बुद्ध क्षेत्र से ॥ ७० ॥

जो गजसिंह वीर न लहैं जय, मचैं कुजस अप्पन रीढामय ॥  
जोध हृदयनारायन १९२।२ जैसे, अब कहूँ काम न भेजहु ऐसे ७१  
दल पठयो तिहिँ सुनि नृप बुंदिय, कुलहि कलंकित अहो अनुज  
किय ॥

मोतैं अब सु मिलैं न मंदमति, करहु रुख कोटा १ रु ग्रामकति ७२  
कुमरसता १९४।१हु हुकम लोपैं किम, तास रक्खि दुन्नी १ आवां २  
तिम ॥

ग्रामक १ सह छिन्न्यो कोटा २ गृह, रह्यो दुरि सु दुन्नी लोजितरंढ ७३  
केसव १९३।६कुमर हुतो पहुपासहि, याको सुत हुव किमहु उदासहि  
सु करि मंत्र निज नाम आतसन, सुरे दुहुँ २ न खट्टन बिसेस मन ७४  
॥ दोहा ॥

स्याम १९४।८ जु गोपीनाथ १९३।१ सुत १,

सुत केसव १९३।६ को स्याम १९४।१ ॥

पहुँचि महावत खान पहुँ, रहे लोभ अविराम ॥ ७५ ॥

अटक पार दुव २ पतैं इम, आता कुल मगभुलि ॥

अनुचित सुनि नृप रत्न १९२।१ यह, खिज्यो दुर्दिस रिसखुलि ७६।

एह महावतखान इत, रन वीरन रिश्वार ॥

पंचसहस्र ५०० राउत प्रकर, लहैं छाहसँम लार ॥ ७७ ॥

जँथ किसोरहि बंधु जुग २, वयमैं तिथि १५ तिथि १५ वर्ष ॥

रीझि महावत रक्खये, पिकरये लरत प्रकर ॥ ७८ ॥

खान अमानत नियत खलु, इत सूना अजमेर ॥

रजपूतहि ताको रुचत, सगरसगर लखिमेर ॥ ७९ ॥

१ पीठ देने से ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ २ हठ ॥ ७३ ॥ ३ राजा के पास ४ किसी कार-  
ण से ५ सम्पादन करने को ॥ ७४ ॥ ६ विश्राम रहित लोग से ॥ ७५ ॥ ७ ग-  
ये ॥ ७६ ॥ ८ वीरों को ९ परगह १० छाया के समान साथ रखता है ॥ ७७ ॥  
११ जहाँ १२ पन्द्रह पन्द्रह वर्ष की अवस्था में १३ विक्षोभता ॥ ७८ ॥ १४ युद्ध  
में सिंह के समान स्मरण करके और इसी प्रकार देखके; अथवा सगरसिंह ना-



संभर बंधु दयाल १९०१ सुत, जई अखैराजोत १९१५ ॥

जाइरह्यो भूपति १९१२ जहाँ, सुनि कुल अपजस स्रोत ॥ ८० ॥

सबल १९३१ मनोहर १९२४ अनुज सुत, बहु इत्यादि बहोरि ॥

रत्न १९२१ अनुज रंही करि रहे, जिततित श्रितही जोरि ॥ ८१ ॥

हड्डे ६१ भजत तो हमहु, भजहिं इस सबभाखि ॥

बिनु हुकमहु जुज्जन बडे, बस विरुद रुचि राखि ॥ ८२ ॥

इति श्रीविंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वांशयुगे षष्ठराशौ बु-  
न्दीन्दरत्नसिंहचरिते शत्रुभीतिवारणार्थपवनेन्द्रजहाँगीररत्नसिंहबु-  
रहानपुरप्रेषण १ यवनेन्द्राल्लानुसारराष्ट्रकूटीयसेनाग्रगामिताधिका-  
रकूर्मप्राप्तिनिमित्तकभूपद्वयाग्राज्यपिताक्रमत्यजन २, समरपला-  
यितशरणागतखुरमरत्नकशैर्पोद्दभीमसिंहहड्डकूर्मयवनेशसैन्यविज-  
यानन्तरयोधपुराधीशगजसिंहप्रधनतनुत्यजन ३; रत्नसिंहसोदरहद-  
यनारायणारण्यपलायनयवनेन्द्ररत्नसिंहोपालम्भप्रदानं पञ्चविंशो  
मयूखः ॥ २५ ॥

आदितोऽष्टोत्तरद्विशततमः ॥ २०८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

मक चहुवाण को युद्ध में सिंह के सजान देखकर; अथवा युद्ध प्रति वीरता दे-  
खकर ॥ ७९ ॥ १ चहुवाण का ॥ ८० ॥ २ लज्जा करके जहाँ तहाँ ३ आश्रय ही  
है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

श्रीविंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वांशयुगे के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्न-  
सिंह के चरित्र में बुरहानपुर के खे. में शत्रुओं का भय होने के कारण बाद-  
शाह जहाँगीर का रत्नसिंह को बुरहानपुर भेजना ? राठोड़ों का हरोल में  
चलने का अधिकार बादशाह की आज्ञा से कजवाहों को मिलजाने के कारण  
दोनों राजाओं का हरोल और चन्दोल का क्रम छोड़कर चलना २ युद्ध से भा-  
गेहुए खुरम को शरण रखकर शीषोदिया भीमसिंह का हाडा, कखवाहा और  
र बादशाही सेना को भगाकर जोधपुर के राजा गजसिंह के युद्ध में माराजा-  
ना ३ रत्नसिंह के भाई हदयनारायण के युद्ध से भागजाने के कारण बाद-  
शाह का रत्नसिंह को उपालम्भ देने का पचीसवाँ २५ मयूख समाप्त हुआ और  
र आदि से दस सौ आठ २०८ मयूख हुए ॥

॥ दोहा ॥

इत जयसिंह<sup>१</sup> अजीम<sup>२</sup> इन्ह, समुर्पालब्धन साह<sup>३</sup> ॥  
 लो हरोल<sup>४</sup> अधिकार लहु, रखे निज कुल राह<sup>५</sup> ॥१॥  
 बिहित पटा<sup>६</sup> गज<sup>७</sup> बाजि<sup>८</sup> बसुं<sup>९</sup> ४, आयुध<sup>१०</sup> भूसन<sup>११</sup> अपि ॥  
 गजसिंह सु अतिबल गिन्यौ, थानहरोल<sup>१२</sup> हि थपि ॥२॥  
 तबहि साह इक<sup>१३</sup> पातुरिहु, निपुन अनार<sup>१४</sup> ७ नाम ॥  
 हुलासि दई गजसिंह हित, कसर्वटी रसकास ॥ ३ ॥  
 प्रभनै कति सुहि खुरुम<sup>१५</sup> ३९१२ पुनि, जब हुव साहजिहान<sup>१६</sup> ३९१॥  
 तब अप्पी पातुरि तिमहु, द्वापर<sup>१७</sup> फुरत निदान ॥ ४ ॥  
 पै तस बस गजसिंह पहु, अब भावी बस एस ॥  
 जेठे<sup>१८</sup> कुंमरहिं टारि जड़, दैहें लघु<sup>१९</sup> हित देस ॥ ५ ॥

॥ उद्धरः ॥

रन इत खुरुम<sup>२०</sup> ३९१२ बिदेव बहि, कछुदिन करन सरन हु कछि ॥  
 छलबल खल उदैपुर छोरि, दक्खिन<sup>२१</sup> ३१२गो हठी पुनि दोरि ॥६॥  
 इम आबादहोलत आदि<sup>२२</sup>, बनित<sup>२३</sup> सुत<sup>२४</sup> न मिलि जयवादि ॥  
 बीजापुर<sup>२५</sup> हिं जाइ बहोरि, जय बंट भागनगर<sup>२६</sup> हिं जोरि ॥ ७ ॥  
 नवनव बजत साह<sup>२७</sup> नबाब सबमिलि लखल<sup>२८</sup> १००००० फोज हिसाब ॥  
 फैज<sup>२९</sup> रु अमर चय<sup>३०</sup> फैवि फुलि, दढमत आकबत<sup>३१</sup> अबदुलि<sup>३२</sup> ४८॥  
 दरियाखान<sup>३३</sup> ५ कुतब<sup>३४</sup> उदार, लिय तिम खाँ गुमान<sup>३५</sup> ७हु लार ॥  
 अतैतकी मुहम्मद आदि<sup>३६</sup>, सब मिलि मंत्र इक<sup>३७</sup> मत सादि ॥९॥

१ बादशाह ने आलम्मा देकर २ आगे चलने का अधिकार देकर ३ शीघ्र ॥ ४ ॥  
 ४ धन ॥ १ ॥ ५ वेश्या ६ चतुर ७ प्रसन्न होकर ८ कामरस की कसौटी ॥ ३ ॥  
 ९ कितने ही कहते हैं १० खुरम शाहजहाँ का नाम धारण करके बादशाह हु  
 आ तब ११ दी १२ सन्देह होता है ॥ ४ ॥ १३ बड़े कुमर को छोड़कर छोटे  
 को मारवाड़ का देश देवेगा ॥ ५ ॥ १४ आगकर १५ उदयपुर में राणा कर्णसि-  
 ह के शरण में ॥ ६ ॥ १६ दोलताबाद १७ स्त्री १८ जय कहकर १९ विजय  
 बंट से; अथवा विजय के मार्ग से ॥ ७ ॥ २० नवीन नवीन २१ फूलकर ॥ ८ ॥  
 २२ तकी शब्द है अन्त में और मुहम्मद है आदि में जिसके ऐसा अर्थात्

मरहठे१हु केहु मिलाइ, प्रतिभट देस बट सबपाइ ॥

खुरम३९१२हिं ठानि दुल्लह खेत, सबनिज जंन्य बल समुपेत१०

मिलि तिन बिजैन किय इम मंत्र, तव हुव हारि निजविधितंत्र

जुरि बुग्दानपुर१ अब जीति, परखहु पुंब्ब सबन प्रतीति ॥११॥

लहि आसेर२ पुनि अवलंब, करि बस सीम सत्रु कंदंब ॥

जिम जिम अग्न प्रबिसहिं जाइ, परभुव लाभ तिमतिम पाइ१२

इम अब दबिब मालव अंत, क्रम करि होहु सब छितिकंत ॥

यह मत मनिन खुरम३९१२उपेत, हंकि य दक्खिनी जय हेत १३

इक१बल द्वै२अनी बनवाइ, भेजिय प्रकट पथ इक भाइ ॥

स खुरम३९१२मुख्य असेसैं, जुरि दूजी२अनी जवनेस ॥ १४ ॥

उत्तर४१७ओर पिहितैं सुर आइ, प्रबिसनैं सप्त०पुट गिरि१ भाइ ॥

लहि इहिं बास दोनिनैं लीन, दलउत अद३भेरि सु दीन ॥ १५ ॥

सो पहिली१अनी बनि सेर, घुमड़त वित्थरी घनघेर ॥

उतरसन नैर ढिग तिहिं आइ, किय रन घोरं पन प्रकटाइ ॥१६॥

इम बुरहानपुर रिपु आत, सुनितिन्ह रतन१९२१इत१हुलसौत ॥

दलसंह खुलि दक्खिन द्वार, कठि नृप कल्पमव अलुकार ॥१७॥

स्व तुरग हंकि तोपन सीस, प्रहरिय वज्र असि पुहवीसैं ॥

हहु६१न फैर दुव२दुव२होत, कनकन किन्न तोपन तोतैं ॥ १८ ॥

बढि रन अने रैन१६२१२यख्यैं, जिततित दबिब परदल जूथ ॥

भारिय खग्नइम यह ओकि, रिपु बहु संहरे रन रोकि ॥ १९ ॥

हम्मद तकी ये सब के नाथ हैं ॥ ९ ॥ १ जान (वरात) २ सेना सहित ॥ १० ॥

३ एकान्त में सलाह को ४ विधि के वश से ५ प्रथम ॥ ११ ॥ ६ आधार ७ स-

मूह ॥ १२ ॥ ८ भूपति ९ सहित ॥ १३ ॥ १० सब ॥ १४ ॥ ११ गुप्त १२ सतपुड़ा

में प्रवेश किया १३ जोहों (खोदों अथवा खरलों) में ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७-प्रसन्न

होकर १८ सेना सहित १९ प्रलय के शिव के १७ सदृश ॥ १७ ॥ १८ वज्ररूपी

खड्ग का प्रहार किया १९ भूपति ने २० तोपों के फरेब को बिखेर दिया; अथ-

वा भालों से तोपों को बिखेर दी ॥ १८ ॥ २१ युद्ध के स्थान में २२ रतनसिंह

की सेना २१ शत्रु के समूह को ॥ १९ ॥

सिर१धर२हथ३पंथ४भुज५संघ, जिततित जानुं६कटि७उर८जंघ९  
 अविरेत१०भरंत सुभटन अंग, रन हुब द्वैश्या इकरंग ॥ २० ॥  
 सिखये सत्रु लखि अत्रसान, प्रतिमंग वेग बंडि प्रयान ॥  
 लोभित हड्डि६१पिठि लगाइ, परभट लैचले स्मृतिपाइ ॥ २१ ॥  
 अरि सब पिक्खि भूप इतेहि, जानत हैं जितेहि जितेहि ॥  
 दब्बत पिठि पहुँचत दूर, सजि इतकी अनी२अब सूर ॥ २२ ॥  
 पर्वत सप्त७पुट थितिपाइ, उत्तर४१७ओर सन तिन आइ ॥  
 करि अधिरोहिनिन सग कोट, चक्खिखय नैक काहु न चोट ॥ २३ ॥  
 पुर बिच यौ अचानक पैठि, बैरिन रोकि रच्छक बैठि ॥  
 चढि अधिरोहिनीन चलाइ, अंतरदुर्ग हू लियआइ ॥ २४ ॥  
 रच्छक रक्खिखगो रतनेस१९२१२, आये काम तेहु असेस ॥  
 पै इक१अट्ट तोपहि पाइ, भट कछु उव्वरे रन भाइ ॥ २५ ॥  
 दलपति द्वारकादिकदास१, कूरम पाइ तँहँ अवकास ॥  
 तिम वह भरि यहीसन तोप, क्रिय रन तास बल अतिकोप ॥ २६ ॥  
 इक न चढिसक्यो तिहिँ अट्ट, बढिबढि समुह हुब ब्रह्मवट्ट ॥  
 कछु हरपाल१८२१२ लाल१८४१२कुलीन, तिम भट निम्न१८५१३  
 बंसिय तीन३ ॥ २७ ॥  
 चालुक बल्लनोतहु च्यारि४, सेसहु केके टेक सन्हारि ॥  
 वह करि इक१अट्ट अजेय, लखि इक१तोप बल जसलेय ॥ २८ ॥  
 दल इन द्वारकादिकदास, प्रेरित ए रहे भट पास ॥  
 अरिजन नाँ दये ढिग आन, परिजन अल्प कल्प प्रमान ॥ २९ ॥

१ समूह २ बुद्धने ३ निरन्तर ४ एकसा ॥ २० ॥ ५ अन्त में ६ उलट मार्ग में  
 ॥ २१ ॥ २२ ॥ ७ निसरनिषों से कोट पर मार्ग करके ॥ २३ ॥ ८ भीतर का भाग  
 (जीवरत्ना) लेलिया ॥ २४ ॥ ९ रत्नसिंह रच्छक रत्न गहर था १० सब ११ कु-  
 रज पर ॥ २५ ॥ १२ द्वारकादास १३ यहाँ से ही तोप लेकर ॥ २६ ॥ १४ धिक्क  
 स (घरवाद) ॥ २७ ॥ १५ कितनेक हठ करके १६ नहीं जीतने में आये ऐसी एक  
 वुरज करके ॥ २८ ॥ १७ सेवक १८ प्रलय ॥ २९ ॥

करम यों इन्हैं हलकारि, थंभिय बुरज सुरज बिथारि ॥  
 बचि वह खोमै इकशजिम बाहु, खिल सब जित्ति जीवरखाहु ॥ ३० ॥  
 इम बुरहानपुर तिन आइ, जब लिय सिंह थोह जमाइ ॥  
 प्रभु जैहँ अद्भुत कोस प्रदेस, अरिदल करत बिहुत एस ॥ ३१ ॥  
 तँहँ सुनि सुद्धि लिय पुर तास, हुव तिम सोकशकछु कछु हास ॥  
 खगपति ज्यो मुरघो धरि खीज, तकि सब पुत्रशत्रातभर्ताज ॥ ३२ ॥  
 सब भटशब्धुस्वस्थसम्हारि, विकलँशन ज्यो परेहि बिसारि ॥  
 प्रतिमग आइ हुत महिपाल, दक्खिनशरद्वार जरि दल जाल ॥ ३३ ॥  
 पँर अधिरोहिनीहु न पास, किम अब कोट कति अवकास ॥  
 नाग जवानभ्रातसमान, धारत धूप कर बलधाम ॥ ३४ ॥  
 हथिय सोहि गोपूर हुल्लि, बहुविधि डाकँदारन बुल्लि ॥  
 दरबँर तास फेट दिवाइ, अररन तोरि इम पथ पाइ ॥ ३५ ॥  
 आसँव मत्त सुहि हुवअग्ग, मदकँल खग्गकरि कियमग्ग ॥  
 भिदिगय लंब अररन भल्ल, हुव तउ तास अतिबल हल्ल ॥ ३६ ॥  
 बारन रचित अध्वँ प्रविष्ट, अधिपति माँहिलिय बल्ल इष्ट ॥  
 भिरितँहँ इक गदाधरँ भक्त, श्रीहरि भक्ति गान प्रसक्त ॥ ३७ ॥  
 गोपूर दिगहि रहत जु गैल; चहि तब मिलन पाटलँचैल ॥  
 सत्वरँ आइ भूप समीप, आखिय जाहु हुत अर्वनीप ॥ ३८ ॥

१ उत्तम रजोगुण को फैलाकर २ बुरज ॥ ३० ॥ ३ भगता था ॥ ३१ ॥ ४ ख-  
 बर ५ गरुड के समान ॥ ३२ ॥ ६ घाव रहित (नलोहे) ७ घायलों को ८ छोड़  
 कर ९ शीघ्र ॥ ३३ ॥ १० परन्तु नीसरनी पास नहीं थी ११ जवानभाई नाम  
 के हाथी १२ सीधा खड्ग (खांडा) खंड में लियेहुए था ॥ ३४ ॥ १३ नगर के द्वा-  
 र पर बड़ाकर १४ छोटे घावों से क्रोध दिलानेवाले (साँदमार) को बुलाकर  
 १५ दड़बड़ (दौड़ाकर) फेट दिलाई १६ किवाड़ों को ॥ ३५ ॥ १७ मदमत्त १८  
 उस मदोन्मत्त हाथी ने तरवार से मार्ग करदिया १९ किवाड़ों के लंबे भागों  
 से ॥ ३६ ॥ हाथी के रचेहुए २० मार्ग से प्रवेश करके २१ सेना को २२ श्रीकृ-  
 ण का भक्त मिला ॥ ३७ ॥ २३ नगर के द्वार के समीप ही रहता था २४ भ-  
 गवां वस्त्र मिलना चाहकर २५ शीघ्र २६ हे राजा शीघ्र जाओ ॥ ३८ ॥

इम सुहिँ स्वप्न दिय हरि अज्ज, करि अरि कदन\*सबहु कज्ज ॥  
 सब भट१बंधुश्रो गिनों बँ हमैहु, जिम सविसेस आन जमैहु ॥२१॥  
 सह जब सोहु सुनि नरनाह, विच पुर पिछि पदर बाह ॥  
 जुज्झत जात ब्रात बजार, कालि किय कल्प खिन भ्रमंकार ॥४०॥  
 कइकइ सज्ज बढि उतकैहु, आवत दलत तावत एहु ॥  
 गोखन जाल नारिन ग्राम, पिक्खत कंभि दुग्ग प्रकाम ॥४१॥  
 हुव बहु रंगरेजन हट्ट, महि मनु फुट्टि जावक मट्ट ॥  
 रहि मग तूँल१ पट२ सिँत रासि, भ्रम दिय इक्क लोहितं भासि ॥४२॥  
 परिपरि अंत्र मालिन पत्त, तनियत सोचि समधिकं तत्त ॥  
 पुहपन ओर रंग पिधौइ, उफनिय रंग रत्तहि आइ ॥४३॥  
 इम मग अन्न राँसि अनेक, इतउत लहत पल पन एक ॥  
 करिकरि चिँत बहु मनिकार, विक्खत लाल सब मनि बार ॥४४॥  
 धुपि पुर इक्क१ सोनितं धार, सुहि किय रक्तवस्त्र सिंगार ॥  
 कुदत लोहच्छकि हय केक, उलटत लंघि अट्ट अनेक ॥४५॥  
 जवन१हु चक्खि हड्ड२न जोर, घन रन मन्नि अंतंक घोर ॥  
 इन१ इम ते२ लयेहि अँहोरि, जिम दिय घायँ घायन जोरि ॥४६॥  
 जवन१न चले लै मृप जोध२, कलंरवै१ सेन२ हुव गतिकोध ॥

शत्रुओं का नाश करके कार्य \* साधन करो १ अब ॥ ३९ ॥ २ बेग सहित १  
 सीधे घोड़े बढाए ४ समूह ५ युद्ध ६ प्रलय का सन्देह कर रहे वाला ॥ ४० ॥ ७  
 इनको तपाते हैं अथवा तब तक ये उनको मार डालते हैं ८ समूह ॥ ४१ ॥ ९ मा-  
 नों अलगा (लालरङ्ग) के भाँटे फूटते हैं १० मार्ग में रुई और वस्त्र ११ स्वेत रङ्ग  
 के समूहवाले थे १२ सो लाल रङ्ग के शोभा देने लगे ॥ ४२ ॥ मालिनियों की  
 छावों में आते पड़ पड़ कर १३ अधिक प्रकाश फैलाते हैं १४ पुष्पों का अन्य  
 रंग ढककर १५ एक लाल रंग ही बढा ॥ ४३ ॥ १६ समूह (ढेर) अर्थात् अन्न की  
 राशियों पर मांस गिर गिर कर वे राशियाँ मांस की बनती हैं १७ आश्चर्य  
 सब रंग की मणियों के समूह को लालरङ्ग मय (माणक) ही १८ देखते हैं ॥ ४४ ॥  
 १९ रक्त की धार से ॥ ४५ ॥ २० काल के सजान भयंकर २१ रोकलिये २२ घा-  
 व से घाव जोड़ दिये ॥ ४६ ॥ २३ कोलाहल

दुहुँरदिस होत खंड दुबाह, लिय अब मध्यगढ ढिग लाह ॥४७॥

माधव १९३।२ हरि १९३।३ नरिंद कुमार,

केसव १९३।६ अनुज२सुत जयकार ॥

चलि पहुँ अगग खगग चलात, दलि बहु सुलभ विजय दिखात ॥४८॥

प्रविसन दुर्ग द्वार न पाइ; पर कंति बाहुरेहु पलाई ॥

अद्वत तिन्ह गयेहु मरे स, पदत कुँगाप द्वार प्रदेस ॥४९॥

इम सुत लेत नृपमुख वाह, रुकतहि जटित अरर न राह ॥

लखि अधिरोहिनी गढ लग्न, अनुगन अप्पि बाजिन बग्न ॥५०॥

केसव १९३।३ उमैरहि कुमार, हुव सब अगग पहुँचनहार ॥

प्रेरत वाह देत नृपाल, कुमारन पिढि हुव ततकाल ॥५१॥

वीरहु बहु सगोत्र १ विगोत्र, प्रहरत तुपक १ तीर २ रु तोल ३ ॥

चढिचढि ठामठाम चलाइ, छितिदिय मिच्छ लुत्थिन छाइ ॥५२॥

मचि तँह तुमुल प्रहरन मार, हुव अवमद खँप अनुहार ॥

कटि उर १ जत्रु २ कंठ ३ कपाल ४, कटि ५ कर ६ अंस ७ पय ८ तिहिकाल

भुव हुव पूर नरपल भीर, धुव हुव दूर परबल धीर ॥

इकदिस १ खुरुम १ हठ अनुबादि, उतहि तकी मुहम्मद आदि ५४

मिलि अबदुल १ सहित गुमान २, इकदिस २ अँकुरे पगि पान ॥

इकदिस ३ सेस अरि अवेनीस, इकदिस ४ कुम्मनृप दलईस ॥५५॥

इकदिस सँथसह चढि अँप, दलि किय दक्षिनिन हत दँप ॥

१ वीरों के डकड़े ॥ ४७ ॥ २ राजा के कुमार ३ जय करनेवाले ४ राजा के आगे

॥ ४८ ॥ परंतु ५ कितने ही ६ भागकर ७ उन बुरजों के पास गये जो ही मरे

५ मुरदों से द्वार के प्रदेश को पाटते हैं ॥ ४९ ॥ ९ किवाड़ जुड़ने से १० निस-

रणी ११ सेवकों को घोड़ों की बागें सौंपकर ॥५०॥ ११ ॥ १२ भाल १३ म्लेच्छों

की लोथों से ॥ ५१ ॥ १४ अयंकर १५ शस्त्रों को १६ युद्ध १७ प्रलय के समान

१८ कत्था और काँख की सन्धि को जनु कहते हैं (कण्ठ के नीचे का भाग

जिसका लोक में हाँसली की दड़ी कहते हैं) १९ कमर २० कत्था ॥ ५२ ॥ २१

मनुष्यों के मांस से ॥ ५३ ॥ २२ खड़ेहुए २३ पराक्रम में प्राप्त होकर २४ बाकी

के २५ राजा २६ कछवाहों का राजा ॥५५॥ २७ साथ सहित २८ आप (रत्नसिंह) २९ दर्प

तैंहँ हरिसिंह १९३।३ दै त्रयतीर, बेधिय खुरुम ३१।२ अतिवल वीर  
 पकारिय साहसुत पुनि पूगि, अरि १ तम २ मध्यहरि १ रवि २ ऊगि ॥  
 बंधिय तसहि पगध बिछोरि, संगहि केसव १९३।६हु दुत दोरि ॥५७॥  
 अंबुधि १ बैरिसल्ल २ बिसिं उब्वं, पर जु तकीमुहुम्मद पुब्व २ ॥  
 लघु खरसख धाय लगाइ, जो गहि जेरकिय इहिं जाइ ॥५८॥  
 अधिपति थप्पि कुमर २ न अंस, दुव २ अरि करि बिबंधन १ दंस  
 इम खुरुम १ रु मुहुम्मद आदि २, ब्यायुध करि उभै २ हि बिबादि  
 इन कहँ रहन सनिये म अखिख, रच्छक दिसत २०० सुभटन रक्खि  
 किले खिले गंजि १ दलि २ इतके रु, महिपति अगग रुपि जिम मेर  
 असि अबदुल्ल १ सहित गुमान, पहुँ लिय छिन्न दोउ २ न प्रान ॥  
 तिम मरहठ दुव २ हनि तत्थ, संतुव १ रामधन २ सैंहसत्थ ॥६१॥  
 दिसदुव २ जिति किय दैंहबट, थप्पिय तत्थ निज भट थैं ॥  
 इम गहि द्वै २ रु चउ ४ हनि एस, हंकत हुत सकुचिय सेस ॥६२॥  
 सहवल पंत इत १ नृप सज्ज, क्रूरम वीर उत २ कृतकैज्ज ॥  
 दुव २ दिससौहि अब गरदाई, अरि गन मध्य खिल लिय आइ  
 दोहा—कथितं स्वभट इक १ अट्टकरि, अजित हुते इक ओर ॥  
 इक १ नौली करि ते अबहु, रहे रचत रन रोरें ॥६४॥  
 जीवरखा खिले त्रिदिस जिन्ह, जित्यो प्रविसि सजोर ॥  
 पहुँ सेनानी कुम्भ पटु, असह टिक्यो इक १ ओर ॥६५॥

॥ ५९ ॥ शत्रुओं रूपी १ अन्धेरे में हरिसिंह रूपी सूर्य उदय होकर २ शीघ्र  
 ॥ ५७ ॥ ३ समुद्र में ४ प्रवेश किया ५ चढ़वाग्नि के समान ६ प्रथम मुहम्मद  
 और पर (अन्त) में तकी अर्थात् मुहम्मदतकी ७ तीक्ष्ण शस्त्रों से छोटे घाव  
 लगाकर ॥ ५८ ॥ ८ कन्धा धापकर ९ दोनों शत्रुओं के बंधन और १० कवच  
 काटदिये ११ बिना शस्त्र शस्त्र करके दोनों को बर्जित किये ॥ ५९ ॥ १२ निय-  
 म सहित रहना कहकर १३ निश्चय १४ वाकी के ॥ ६० ॥ १५ साथ सहित  
 ॥ ६१ ॥ १६ विध्वंस १७ समूह ॥ ६२ ॥ १८ कृतकार्य १९ घेरकर ॥ ६३ ॥ २०  
 कहेहुए २१ एक वुरज पर २२ एक तोप से २३ भयंकर ॥ ६४ ॥ २४ सब २५  
 बुंदी के राजा का सेनापति २६ चतुर कछवाहा ॥ ६५ ॥



तत्थ न होती तोप तो, देते रहन न दुष्ट ॥

पै हुव करि तस बल प्रधन, ए अल्पहि जस पुष्ट ॥६६॥

पहुँच्यो इत जित्तत सुपहुँ, जुगर दिस अमल जमाइ ॥

देखि स्वबस तीजी३ दिस रु, अब चौथी४ लिय आइ ॥६७॥

तीजी३दिस-पहुँसेनपति, दुसह द्वारकादास ॥

बुरज रक्खि यह तोपबल, अधिपहि दिय उछास ॥६८॥

इत१ सेनानी कुम्म अरु, इत२सहबल अधिराज ॥

खिल अराति लै बिच निखिल, बढिदब्बे अतिबाज ॥६९॥

॥ षट्पात् ॥

भागनगर भूमीस१ सहित बीजापुर साँसक२ ॥

जहँ इत्यादिक जवन निरखि हड्ड६१न निज नाँसक ॥

खिल असु दरियाखान१ आकबत२ कुतबखान३ इम ॥

फैजबखस४ बिनुफैज अमर चय५ दिगत तमाँ इम ॥

ए मुख्य मिच्छ पंच५हि असुर्न दक्खिनपति समुक्त दुलभा ॥

भुजभुज दुकूल फेरतभये नेजन बढ प्रसारि नभ ॥७०॥

मदनावतारः ॥

पिक्खि यह भूप निज१ रोकि पैर२ पुच्छये ॥

देहु जियदान तिनएहि उत्तर दये ॥

कहिय नृप प्रान इक१ लै२ रु सव१ दै२ कढहु,

बहुरि जिन सज्जि इत काल कोप न बढहु ॥७१॥

१ युद्ध में ॥ ६६ ॥ २ अष्ट राजा ३ अधिकार ॥ ६७ ॥ ४ राजा का सेनापति  
५ प्रसन्नता ॥ ६८ ॥ ६ सेनापति फैलवाहा ७ सेना सहित ८ स्वामि (रत्नसि-  
ह) ९ याकी के १० सब राष्ट्रों को बीच में लेकर ११ शीघ्रता से दयाये ॥ ६६ ॥  
१२ भूपति १३ हाकिम १४ हाडों को अपने नाश करनेवाले देखकर १५ याकी  
के प्राण सहित १६ बिना जय १७ लोभ छोडकर १८ प्राणों को १९ प्रत्येक म-  
नुष्यों ने अपने अपने हाथी में चढ़ लेकर फेरा "युद्ध में चन्द्र जंचा करके दि-  
खाना आश्रित होने का चिन्ह है" २० भावों से चन्द्र बान्धकर आकाश में  
फैलाये ॥ ७० ॥ अपने लोकों को रोककर २१ राष्ट्रों से पूछा ॥ ७१ ॥

इज्जत<sup>१</sup> रु प्रान<sup>२</sup> जुग<sup>२</sup> देहु तिन उच्चरिय,  
कौल पुनि सुनहु तुम<sup>१</sup>सो बं हम<sup>२</sup> जो करिय ॥

प्रधान दिल्लीस दल काम जँहँ जँहँ परै,  
लाखत टरिजाँहिं हम नाँहिं हड्ड<sup>६</sup>न लरै ॥७२॥

रावरे पीतछवि केतु जित जित रहै,  
सोहि दिस छोरि मुरिजात सखहु सहै ॥

तुम<sup>१</sup> रु हम<sup>२</sup> बीच है रब<sup>१</sup> कुराँ<sup>२</sup> पंज<sup>५</sup> तन<sup>३</sup>,  
पुस्तदँरपुस्त लिखिदेहु यह नेकपन ॥७३॥

द्वारपथ पिहितं नृप कहिं तब ते दये,  
सस्त्र<sup>१</sup> पट<sup>२</sup> प्रान<sup>३</sup> सह सर्व गेहन गये ॥

जोहु सविसेस प्रभुराँम<sup>२०१४</sup> सुनिलेहु जिम,  
अपकैवि सँभ्र रविमँल<sup>१७४</sup> छवि काव्य इम ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

अद<sup>३</sup> अटक इम अरिनको, पुरबाहिर तिम पेलि ॥

दंग प्रबिसि दलै<sup>३</sup> दलै<sup>३</sup> दल्यो, खगग दुरोदँर खेलि ॥ ७५ ॥

प्रातहि जित्यो रनप्रथम<sup>१</sup>, कति भजाइ<sup>१</sup> कति कटि<sup>२</sup> ॥

पुनि पायो संध्या समय, दूजो<sup>२</sup>जय अरि दँद्वि ॥ ७६ ॥

जीवरखा प्रबिसैत जबहि, भीमँ मचत रन भीर ॥

तकीमुहुम्मद आदि<sup>१</sup>तिम, पकर्यो खुरुम<sup>२</sup> प्रवीर ॥ ७७ ॥

दुव<sup>२</sup>मिच्छ रु मरहड दुव<sup>२</sup>, खंडखंडै करि खेत ॥

जवन पंच<sup>५</sup>कहोजियत, इज्जत<sup>१</sup>काल<sup>२</sup>उपेत ॥ ७८ ॥

१ नियम २ अज्ञ ३ युद्ध में ॥ ७२ ॥ ४ पीले रंग की ५ ध्वजा "बुन्दीवालों की ध्वजा पीले रंग की है ६ यह यावनी भाषा का ईश्वर वाची शब्द है" ७ कुरान ८ पक्षा (हाथ से वचन देना) ९ पीढी दर पीढी के लिये ॥ ७३ ॥ १० छाने ११ हे स्वामि रामसिंह १२ आपके कवि १३ सभासद १४ सूर्यमल्ल का काव्य सुनो ॥ ७४ ॥ १५ आधी १६ सेना से १७ खड्गों का जूवा (हारजीत) ॥ ७५ ॥ १८ दबाकर ॥ ७६ ॥ १९ प्रवेश करते ही २० भयंकर ॥ ७७ ॥ २१ टुकड़े टुकड़े ॥ ७८ ॥

कुम्भ द्वारकादासकरि, सेनानी तिन्हसंग ॥

इम छन्नै कहै अखिल, जिम सन्नै भयजंग ॥ ७९ ॥

अरि चउसत ४०० खिला उब्बरे, तिन पंचपन जुत तत्थ ॥

निकसे पिहित निसीधमै, सैननशनिधति २ वलसत्थ ॥ ८० ॥

जीवरखाकी रुद्ध जैव, खिरकी पिहित खुलाइ ॥

कहै कुम्भ सहाय करि, भासन निजन खुलाइ ॥ ८१ ॥

सतचउ ४०० पंचक ५ मुख्य सह, सेखाउत्त स्वसंग ॥

लैगो कछुविधि कोटलग, पुरजन टारि प्रसंग ॥ ८२ ॥

स्वसंग १ प्रसंग २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दुव २ निथेनी दै दु २ दिस, चाढे तिन सबन चढाइ ॥

गहिरै तिभिर उतारि गृह, पठये दुरन पढाइ ॥ ८३ ॥

इतिथी वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वांश पट्टद्वाराशौ बुन्दीशर-  
त्नसिंहचरित्रे शैर्षोद्दिभामसिंहप्रधनहननयवनेन्द्रयोधपुराधीशगजार्जु-  
नसेनाग्रगामिताधिकारप्रत्यर्पण १, उदयपुरराणाकर्णसिंहशरणांकि-  
यत्कालोपितखुरमदक्षिणजनपदगमन २, बुरहानपुरसमरविजयि-  
रावरत्नसिंहखुरमवन्दीकरण ३, बुरहानपुरगुप्तनिष्कासितपञ्चय-  
वनरत्नसिंहजीवदानवितरणं पट्टिंशो मयूखः ॥ २६ ॥

॥ ७९ ॥ १ आधी रात्रि में २ शरण आने और ३ नियम कर लेने के बल से; अ-  
थवा भाग्य के बल से ॥ ८० ॥ वन्ध खिड़की को ४ शीघ्र खुलाकर ५ जाने  
॥ ८१ ॥ १ नेमर के लोकों का मिलना बचाकर ॥ ८२ ॥ बहुत ७ अन्धेरे घर  
में उगारकर ८ छिपना सिखाकर भेजो ॥ ८३ ॥

आवशभास्कर महाचम्पू के पूर्वांश के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्न-  
सिंह के अग्रिम में युद्ध में शैर्षोद्दिभा भीमसिंह को मारने के कारण बादशाह  
का जोधपुर के राजा नजमसिंह को दरबार में चलने का अधिकार पीछा देना  
१ खुरम का उदयपुर के राणा कर्णसिंह के शरण में कुछ दिन रुककर दक्षिण  
में जाना २ बुरहानपुर के युद्ध में विजय करके राव रत्नसिंह को खुरम को  
फँद करना ३ राव रत्नसिंह का पाँच यवनों को जीवदान देकर बुरहानपुर से  
जाने निहालकर जीवदान देने का छठवाँस वाँ २६ मयूख समाप्त हुआ और आ

आदितो नवोत्तरद्विशततमः ॥ २०९ ॥

प्रायोन्नजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कूरम इम बाहुरि कह्यो, जतन अमोघे जनेसँ ॥

दिय तिनलखि जु करार दैल, अच्छै रक्खहु एस ॥ १ ॥

जीवरखाके जित्ततहि, रतन१९२१ चिंति दुख रंच ॥

पहिले१खेत सम्हारि पर, पठये भट सतपंच ५०० ॥ २ ॥

॥ मदनावतारः ॥

अँरर खुलवाइ खिनपाइ तिन जाइ उत,

दीपिका संग सह रंग वह हेरि दुत ॥

छित्वर१रु मान२मुख तान४९ मित भानछँत१ ॥

गंग१सुरतान२मुख द्वै रु सत२०२प्रानंगत२ ॥ ३ ॥

कुर्णप रंखवार तँहँ जामिकैन सज्जकरि,

ध्यान१ छँत२वान सब उक्त नरजान धरि ॥

सूर अँरि घायलहु रच्छकन सोँपिसव,

अप्पनै लौ रु इम पँत पुर तेहु अब ॥ ४ ॥

बैद्य मत उचित उपकार सबको बन्यौ,

भूरि पुर घायलन सोहि साधन भन्यौ ॥

तिमहि बिसवासि खुरुम१मुहुम्मदतकी२,

होन तिन्ह स्वस्थपँन हानि नैकहु नकी ॥ ५ ॥

द्वारकादास१कँहँ द्रंग करउर२दयो,

दि से दो सौ २०९ नव मयूख हुए ॥

१ खाली नहीं जावे ऐसा २ हे राजा ३ पत्र ॥ १ ॥ ४ विजय करते ही ॥ २ ॥

५ किवाड़ ६ समय पाकर ७ चिरागों के साथ ८ युद्ध भूमि को ९ आदि १० चेत सहित ॥ ३ ॥ ११ मुरदों के रखवाले १२ पहरायतों को १३ चेतवाले १४ घायलों को १५ पालखियों में धर कर १६ शत्रु के घायलों को भी १७ पुर में गया ॥ ४ ॥

१८ हलाज १९ बहृत २० नैरोग्य होने में ॥ ५ ॥ २१ नगर.

पुत्र हरिसिंह<sup>१</sup>दित कापरनि<sup>२</sup> अप्पयो ॥  
 मैत्रि सुत माधव<sup>३</sup>हिं दंग कोटा<sup>४</sup>सु दिय,  
 केसव<sup>५</sup>हिं हाँहु खट<sup>६</sup>ग्राम<sup>७</sup> वखसीस क्रिय ॥ ६ ॥  
 भूखन<sup>८</sup>रु सख<sup>९</sup>गज<sup>१०</sup>ग्राम<sup>११</sup>हय<sup>१२</sup>रीभ भरि,  
 कृत्य निजनिज उचित अप्पि सब तुष्टकरि ॥  
 होत इम वित्ति जुग<sup>१३</sup>जाम<sup>१४</sup> निस प्रातहुव,  
 भोजि जन दे<sup>१५</sup>हि सुधवाइ पुनि रंग<sup>१६</sup>हुव ॥ ७ ॥  
 भक्त गदिका<sup>१७</sup>धर जु नैर प्रविसत अनी ॥  
 वैरिगन जीति सुद्विरीति निहचैवनी ॥  
 गायक<sup>१८</sup> सु भक्त गिनि बुद्धि सनमानि बहु ॥  
 दास जगदीसको पास रक्खयो सु पहु ॥ ८ ॥  
 देस<sup>१९</sup> निज दंग ताको<sup>२०</sup> वरोदा<sup>२१</sup> दया,  
 लख<sup>२२</sup>१००००० सुदा वितरि स्वीच तैतिमें लायो ॥  
 सोहु सकुटुंब बुंदीहि तव संके<sup>२३</sup>म्पों,  
 जास इम बास तवतें वरोदा<sup>२४</sup> जस्यो ॥ ९ ॥  
 सुनि सु सासन सैता<sup>२५</sup>११ कुमर अभिमर्त कर्यो ॥  
 दंग बुन्दीहु तिम बुद्धि वह आदर्यो ॥  
 पाइ जय रत्न<sup>२६</sup>११ इत लें सु बुरहानपुर ॥  
 पकरि जवनेस सुत किति बाढी प्रंचुर ॥ १० ॥  
 किन्न उल्लाघ वह औरर तेंजक कैगी,  
 आंग गत भल्ल भयव्याधि तस उर्यो ॥  
 निसलि क्रिय म्बन्ध लखन<sup>२७</sup> ११ सुतगननकी<sup>२८</sup> ॥

१ मन्मान कतके ॥ ३ ॥ अर्पने अर्पने २ कावे के वनिन हो ३ पहर ४ सुत भू-  
 नि को ॥ ७ ॥ ५ श्रीकृष्ण के भात में गगत में प्रवेश करने समय काही भी ३  
 इस गानेवाले को ॥ ८ ॥ ७ अर्पने देश में लाय दिये ८ देवर राजासे शक्ति  
 में दिया १० चला ॥ ९ ॥ ११ दायमान १२ प्रसीध १३ जादू दिया १४ व-  
 हुत ॥ १० ॥ १५ वैरोन्ध किया १६ किया १७ सोइनेवाले १८ अर्पण को

नाम काराहिधरि कोहु बाधा नकी ॥ ११ ॥  
 रच्छकन मुख्य तँहँ कुमुर हरि१९३।३ रक्खयो,  
 दुक्ख न लँहँ दुव२हि अधिप इम अक्खयो ॥  
 एहु हुव स्वस्थ तव भिन्न रक्खे उभय२,  
 बीर हरि१ इत रु उत थप्पि रच्छक विजय२ ॥ १२ ॥  
 पत्रदिय साह ईहिँ राह रनलाहप्रति,  
 वाह जयलाह सुनि चाह मिलिवेहि अति ॥  
 आहु आहूत करि तंत्र निर्भय उतँ,  
 त्यौँ बै भेजहु मुम्मदतकी१सह सुतै२ ॥ १३ ॥  
 यह छँद१रु संग तिन्ह लैन सय्यद उभय२ ॥  
 मुक्कलिय सुद्धि सब बुद्धि हित बुद्धिमय,  
 आइ तिन अप्पि फरमान यह उच्चरिय ॥  
 कीलितन देहु जे रुद्ध काराँ करिय ॥ १४ ॥  
 रैन१९२।१सुनि बैन सुख औनँ तिन्ह रक्खये,  
 तव मुहुम्मद१ तर्कापै निर्गडँ नक्खये ॥  
 खुरुम२ पेलँव लख्यो आइ नरनाह इत,  
 हेतु पुच्छत कह्यो विजँन कछु सुनन हित ॥ १५ ॥  
 सबन करि दूर तव खुरुम३९।२पुच्छयो सु पहु,  
 लेतँहग लेत परिपाय बुल्लयो सु लँहु ॥  
 हरि१९३।३कुमर दास जिम मोहि रक्खैँ हहा,  
 कैदविच कैद बाबा कहाँ मै कहा ॥ १६ ॥  
 व्यजनँ१दुरवात२ भरवात१ हुक्का२ वनँ,

१ नाम मात्र को कैद में रखकर २ पीड़ा नहीं की ॥ ११ ॥ १२ ॥ ३ रत्नसिंह को  
 ४ बुलाने से ५ अथ ६ पुत्र सहित ॥ १३ ॥ ७ पत्र ८ खबर लेने को भेजे, उन  
 ९ कैदियों को १० जेलखाने में कैद किये हैं ॥ १४ ॥ सुख के ११ घर में १२ बे  
 डियाँ १३ दुर्बल १४ दुर्बल होने का कारण पूछने पर खुरुम ने कहा कि एकान्त  
 सुनो ॥ १५ ॥ १५ नेत्र मिलते ही १६ शीघ्र ॥ १६ ॥ १७ पड़ा करवाता है-

हाँ कैरौं जो न नासों टिपोरे हनैं ॥  
 पूपैली सद्य खैबो न अवसर परहु,  
 कोहु अटकैं न तिहि सर्व बदली करहु ॥ १७ ॥  
 मै कहिय तीन३ तव तीर भुज बिद्ध मम,  
 सेस गढ़ लेस कछु यौ न छूम पुढ्य सम ॥  
 तोहु दग निरिस करि मोहि तरजैं तथा,  
 सोहु नहि कोहु सुनि जोहु बरजैं जथा ॥ १८ ॥  
 अरजइक१ एह दूजी२ बं सुनिघे अहो ॥  
 मोहि भेजोहु मति कूटं व्याधित कहो ॥  
 रावरे सरन मम प्रान बावा रह्यो ॥  
 सोहि उत जात बचिहै न परिहै सहयो ॥ १९ ॥  
 सद्य सुनि भूप दिय सीस सय१ सहसरन३ ॥  
 रंजतमय स्वल्प भर रक्खि बेरी चरन ॥  
 बांधि उपनाह भुज१ पाय२ वपु३ घाय विधि ॥  
 व्याज ज्वर१ बोधि१ नृप अप्पि तिहिं प्रान निधि ॥ २० ॥  
 रेचन३हु दै रु असमर्थ तिम रक्खयो ॥  
 अप्प सुत माधव१९३१हि रहन तैंह अक्खयो ॥  
 पास तस ओर भट वृद्ध थप्पे प्रथित ॥  
 सूचि सुत१ सुभट२सव करहु याको कैथित ॥ २१ ॥  
 कुमर हरिसिंह१९३१खिजि सत्यजुत दूरकिय ॥  
 कानिसैन सय्यद२न बुलिल हित पूर किय ॥

१ हाँ नहीं कहें तो २ नासिका पर ३ रोटी ४ गरम उसको कोई  
 नहीं ५ रोकता है ॥ १७ ॥ ६ रोग ७ समर्थ = पहिले के समान ॥ १८ ॥ ९ अथ  
 १० झूठा रोगी बताओ ॥ १९ ॥ ११ दया सहित राजा ने मस्तक पर १२ हाथ  
 दिया १३ शरण के साथ १४ बाँदी की १५ थोड़े भारवाली चेडी १६ पट्टी  
 (घाव का उपचार) ज्वर का १७ मिष्ट १८ समझाकर राजा ने उसको प्राण  
 लपी धन दिया १९ जुलाव देकर २० प्रसिद्ध २१ कहना ॥ २१ ॥ २२ अदब से

जंपि अबही मुहुम्मदतकी<sup>१</sup> जाइहै,  
 खुरुम<sup>२</sup> गंदखिन्न उल्लौघ हुत आइहै ॥ २२ ॥  
 सुनि सु जवनन कहिय हमहु इकखैं सही ॥  
 मनि गद भूढ करि लैहिं तुमरी कही ॥  
 जोहु दिखवाइ रखवाइ तिन्ह भाई जिम ॥  
 तीन<sup>३</sup> अहै मान महमान दुवर रक्खि तिम ॥ २३ ॥  
 तूणा लै आहुं कहि साह नहि हद तकी ॥  
 तवहि तिन संग पठयो मुहुम्मदतकी ॥  
 कहि बेरी तदनुं खुरुम<sup>३</sup> १२ निर्वंधकिय ॥  
 कुमर माधव<sup>१</sup> १३ तिम सु बिगत दुख गंध किय ॥ २४ ॥  
 तात सांसर्न सनहु अधिक आदर तनै ॥  
 बैठिबे तास अब खासगद्दी<sup>१</sup> वनै ॥  
 सयन पल्लयंक<sup>२</sup> छुरकर्म<sup>३</sup> भूखन<sup>४</sup> बसन ॥  
 समय अनुसार ह्वै सैद्य अभिमत असन<sup>६</sup> ॥ २५ ॥  
 हे<sup>१०</sup> तिविनु ओर सब इष्ट संपन्न व्है ॥  
 विविध खिलिवत्तै छर्म भूप भय छन्न व्है ॥  
 मोहि<sup>१०</sup> इम साहसुत चित्त माधव<sup>१</sup> १३ कुमर ॥  
 स्वामि पन सद्धि तस काम हुव अघसर ॥ २६ ॥  
 बढन कोटा विभव बीज तबको बंधो ॥  
 अक्खिहैं काल आगामि सुहु उगयो ॥

१ कहा २ रोग से दुर्बल है सो ३ आराम होने पर शीघ्र आवेगा ॥ २२ ॥ ४ भा-  
 र्द के समान रखकर; अथवा जिस प्रकार उनको रक्षा तिस प्रकार रख कर  
 ५ दिन ॥ २३ ॥ ६ शीघ्र ७ जिस पीछे ॥ २४ ॥ पिता की ८ आज्ञा से भी ९  
 पर्यङ्क (शय्या) १० हजामत बनवाना ११ तुरत का पका हुआ १२ इच्छानुसार  
 भोजन ॥ २५ ॥ १३ शस्त्र बिना १४ प्राप्त १५ हसी खेल १६ समर्थ १७  
 मोहित करके ॥ २६ ॥ १८ कोटा के बढने का बीज उस समय बोपा गया जि-  
 सका जगना २० आगे के समय में २१ कहें



कैद पुरलोक जानै खुरम३९।२ है करयो ॥  
 पै न सुख१ दुख२ को बोध जान्यो परयो ॥२७॥  
 साह उत कुपि मंग्यो खुरम३९।२ सय्यदन ॥  
 कहियतिन है सु गंदग्रस्त जैसे कदन ॥  
 पुनिहु फरमान बुरहानपुर दै रु पहु,  
 बुल्लयो खुरम३९।२ जुत हुत उपालंभि बहु ॥ २८ ॥  
 बट्टमैं जो न भरिजाइ औसो वनै,  
 तबहि लौ आहु न बिलंब मिसकरि तनै ॥  
 वंचि दल साहमत ताससुतसौं बदिय,  
 देखि तुहि अर्थ काराहुं रहिवे न दिय ॥ २९ ॥  
 साहसुत तबहु करजोरि मंग्यो सरन,  
 चाहि इक पान नहिजान बंदे चरन ॥  
 उचित सब बुल्लि तब रैन१९२।१ किय भंत्र इम,  
 कहहु कुलधर्म सह साध्यविधि है व किम ॥ ३० ॥  
 विहित जो लौ खुरम३९।२ संग जैवो वनै,  
 है कुपित साह तो चाहि निहचै हनै१ ॥  
 सरनगत दे जु निज धर्मसौं अपसरै२,  
 पुत्रहु न साहकै और जान्यो परै३ ॥ ३१ ॥  
 एह जो काल लहि पट्ट लहिहै१ अहो,  
 क्यों न तो स्वीय आसान बहिहै२ कहो ॥  
 भजि जैहैहु हैहै ततो भीरको३,  
 सत्रु सब टारि मरहहु इहिं सीरको ॥ ३२ ॥

॥ २७ ॥ १ रोगी २ मरने योग्य ३ उरहना देकर ॥ २८ ॥ ४ मार्ग में ५ यहां  
 ६ कैद में भी ॥ २९ ॥ ७ प्राण की चाहना करदे नहीं जाने के लिये चरणों  
 में नमस्कार किया ॥ ३० ॥ अपने धर्म से बचलायमान होवें तो भी ॥ ३१ ॥  
 १० समय पाकर ११ अपना उपकार क्यों नहीं १२ धारण करेगा ॥ ३२ ॥

तोहु अैं तवहु विक्खिलैं हैं बली,  
 जानपावैं न सब सौंहि यह उज्जली ॥  
 भ्रात१ काका२ रु सुत३ गोत्र४ असगोत्र५ भट,  
 कहतहुव घोरंगद व्याजैं यह अप्रकट ॥ ३३ ॥  
 अप्पनैं साहभट जैहु विस्वस्त अति,  
 ते न कहिहैं रु लहिहैं न लखि सेस तति ॥  
 भाखि अतथाहु कुलधर्म१ धरिवो भन्यो,  
 बहुरि तस पिठिलगि अर्थ२ अैंवो वन्यो ॥ ३४ ॥  
 काम३ तसपिठि विधि एह सम्मत करहु,  
 देरकरि जाहु तब विधन डारैं डरहु ॥  
 आसु कामांधं इम साह मरिवो इतहु,  
 करहु प्रस्थान पहु खुरुम३९१२ न डिगैं कितहु ॥ ३५ ॥  
 रत्न१९११ सुहि मन्नि बलैं अैंध३ तैंहैं रक्खयो,  
 बुल्लि बलि वीर विस्वस्त इम अैंक्खयो ॥  
 बुद्धिचंद्र१९३३ रु पता१९११ एहु आये बली,  
 भूप प्रस्थान खिन रीति सूचैं भली ॥ ३६ ॥  
 सुनहु माधव१९३२१रु हरि२९३३२ पुत्र केसव१९३६३सदित  
 द्वारकादास ४ सेनेस अर्दन अहित ॥  
 सूर सहगोल १ असगोत्र २ इत्यादिसब,  
 सो गुनो मोहुसन आनि अवधान अव ॥ ३७ ॥  
 आन जिनदेहु बुरदानपुर सीम अरि,  
 सर्व सुवाहि रक्खहु सुखी मारि मरि ॥

१ भयंकर रोग २ इम छल को प्रसिद्ध नहीं करके ॥ ३३ ॥ ३ विश्वासवाले  
 बाकी की ४ पंक्ति ५ झुठ बोलकर भी कुल धर्म धारण करना कहा ॥ ३४ ॥  
 शीघ्र ७ काम में अन्ध हैं इसकारण ॥ ३५ ॥ ८ सेना ९ कहा राजा के चलने  
 के १० समय ॥ ३६ ॥ अत्रुथों को ११ दण्ड देनेवाले १२ मुक्त से १३ सावधान  
 नी ॥ ३७ ॥ १४ मत आने दो

जान जिनदेहु यह खुरम<sup>३९</sup>१० कढि प्रानजिम ॥

एहि दुव<sup>२</sup> चत्त सबवत्त सुभहोन इम ॥३८॥

सोहि समुझाइ नरनाह तव संक्रमिय ॥

कज्ज यह सद्धि जवनेससन भेट किय ॥

क्यों न आन्यों खुरम<sup>३९</sup>१२ साह पुच्छिय कहो ॥

अरजकिय रैन<sup>१९</sup>२१२ भरतो सु भगमें अहो ॥३९॥

छिप्रै वह अप्प सुनि होहि बपुछोरिहै ॥

बैद्य बिधिठ्याधि उपचार सब बोरि है ॥

खान आसफ कहिय आय जैहैं खुरम ॥

वहै रहिय हाल वह सीतहत जातिमुम ॥ ४० ॥

जित्ति दुव जुद्ध हुव रत्न आगम जहाँ ॥

त्यों उपालम्भ को क्योंहु संभव तहाँ ॥

तोहु अरि मुकरव गहि गाढ जय तानिकै ॥

आन निज रक्खि अब छुवत पय आनिकै ॥ ४१ ॥

साह प्रभु चाह विचि ताह नरनाहसों ॥

वहै कि सिर वाह जुत लाह खिन लाहसों ॥

कुम्म रठोर मुख भूप तंत्र न किते ॥

आन नृप रैन के दैन चरनहु किते ॥ ४२ ॥

साह हसि मंदै कहि वाह इह गाहै सुनि ॥

प्रीति वह किन्न बखसीस तह रीति पुनि ॥

द्विरद तहँ कोहमुख जंग नामक दयो ॥

अरुव दिलियार ईरान असि अप्पियो ॥ ४३ ॥

मंजु सिरपेच तिम पंचि जुग बैजमय ॥

१ मतजाने दो ॥ ३८ ॥ २ चला ॥ ३९ ॥ ३शीघ्र ४ आप ५ मरेगा ६ रोग ७ ह-  
लाज. सरदी का माराहुआ दचमेली का पुष्प होवै जैसा ९ ओलम्भा देने का  
१० आदि ११ आधीन नहीं है १२ मुस्करा कर १३ इस जगह १४ हीरों की  
जड़ी हुई

आमलकनाम मुकुतान कुंडल उभय ॥

बेरु लिय हार बलि ज्योति गुन फारें जुरि ॥

बेरु लिय इक १ भनि मुहि खंजर ८ बहुरि ॥ ४४ ॥

खास पोसाक ९ फोलादमय चर्म १० खर ॥

तार नकार तिम रूपदरसन ११ खर ॥

परगना सत्त ७ दिय टुंक १ टोडा २ प्रमुख ॥

रामपुर ३ मालपुर ४ च्यारि ४ दिस बाम १ खर ॥ ४५ ॥

चेचत ५ १ रु जीरपुर ६ १ खर आबाद ७ ३ चहि ॥

दीन ए तीन ३ सुपीन दक्खिन २ दिसहि ॥

अप्प कर थप्पि नृप अंस इम उच्चरिय ॥

काहुनै रैन १९२ १ तव अँनै जय नाँकरिय ॥ ४६ ॥

सुज्जन १९० १ १ हु पुब्बं गुडवान १ जित्त्यो समर ॥

गंजि सूरति १ लयो भोज १९१ १ २ अहमदनगर ॥

तोहु नन तेहु आरुढ हुव तो तुँला ॥

सत्रुगहि जित्ति लिय रारि जुगर संकुल ॥ ४७ ॥

साह सालक सचिव त्योहि जस साहयो ॥

बिरुद निज अज्ज बुंदीस निबहिँयो ॥

भोज १९१ १ २ सुज्जन १९० १ १ सँनहु कित्ति पाई भली ॥

बीर को साहके काम असो बली ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

१ मोतियों के २ कर्णभूषण ३ शरीर पर पहिना युक्तों का ४ सख्ख. ये ऊपर कह  
हुए और एक ५ मखियों की जड़ी हुई सूठवाला खंजर ये दोनों लिये ॥ ४० ॥  
६ ढाल ७ उत्तम ८ चाँदी का नगारा जो रूप के ९ देखने में १० अत्युत्तम ११ आ-  
दि १२ बुन्दी से बाई ओर ॥ ४१ ॥ १३ वन से पुष्ट. अपने हाथ से राजा का  
१४ कन्धा थापकर कहा १५ तेरा घर ४२ ॥ १६ पहिले १७ तेरे बराबर वे भी  
नहीं हुए १८ सङ्कुलित (अवकाश रहित युद्ध करके) ॥ ४३ ॥ १९ साला अ-  
र्थात् नूरजहाँ का भाई सचिव था उसने भी यश किया २० ग्रहण किया २१  
नियाहा २२ से भी २३ कीर्ति ॥ ४४ ॥

रत्नसिंहको सिंधुपार जानेका कहना] षष्ठराशि-सप्तविंशमयूख (१५१७)

सिक्ख नृपहिँ इमदिय सिबिर, साह बिरचि बखसीस ॥

सब सभाहु सूचिय सुजस, अहो पराक्रम ईस ॥ ४९ ॥

सिवप्रसाद कुंभी कियउ, भूप जवनपति भेट ॥

सम्मुह नन रन रहिसकै, फोज अरिन जिहिँ फेट ॥ ५० ॥

संभर इम आयो गसिबिर, संसद पाइ सराह ॥

जय उँदरि लायो सु जिम, बसुमति आदिवराह ॥ ५१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिंधु सरितपरै पुहवि हुतौ इत खानमहावत ॥

रजपूतन रिझवार कलह जयकार कहावत ॥

तासौं इकगढ तत्थ जेर न भयो बहु जुझत ॥

कैलावीस<sup>१</sup> कहूँ कथित सु पै अपरै<sup>२</sup> हि कहूँ सुझत ॥

तैंह गोपीनाथ<sup>१९३</sup> केसव<sup>१९३</sup> दनय दुव<sup>२</sup>हि स्याम<sup>१९४</sup>

<sup>१९४</sup> बुल्ले विदित ॥

पछै न जाइ जे रत्न<sup>१९२</sup> पहु सहतौं सवहु बुल्लि इत ॥ ५२ ॥

सुनत महावत सोहि दयो अरजीदल दिल्लिय ॥

इत अफगानन असह प्रचुरै जितातित बलै पिछ्लिय ॥

दुगम लैन यह दुर्ग प्रथित बुंदीस पठावहु ॥

हम जुंग<sup>२</sup> जोर हजूर ओर अँवानिहु अपनावहु ॥

आसफ बजीर अरजी सु अरै पहुँचि निवेदिय साहप्राति ॥

अरु कहिय रत्न<sup>१९२</sup> भेजहु उहाँ गढ जय यहहि अमोघगति ५३

॥ गीतिः ॥

१ डेरों में २ आश्चर्य युक्त ॥ ४९ ॥ ३ हाथी ४ बादशाह के ॥ ५० ॥ ५ च-  
हुवाण ६ सभा में ७ निकालकर ८ पृथ्वी को ९ आदि बराह अवतार  
लावे थे इसप्रकार ॥ ५१ ॥ १० सिन्धुनदी की ११ पार की भूमि में १२ युद्ध में  
१३ कहीं-उसका नाम कलवीस कहते हैं १४ कहीं दूसरा ही नाम दीखता है  
१५ साथ ॥ ५२ ॥ १६ पत्र १७ बहुत १८ सेना १९ भेजी २० प्रसिद्ध २१ दोनों के बल से  
२२ भूमि २३ शीघ्र ॥ ५३ ॥

जंपिय साह नृपहिं जिम, सिंधुधुनी पार जाइ संभर वै ॥  
 तुम १ महावत २ मिलि तिम, इक १ दुर्गम दुर्ग जिति आहु इहाँ ॥ ५४ ॥  
 भूपं कहिय वसुं व्ययभो १, अंबदनमें मैं प्रवास रहि आयो २ ॥  
 जिम रावरो विजय भो ३, दोही पकरे ४ न सीम उतदब्बे ५ ॥ ५५ ॥  
 तदपि पठावहु जिततित जैहों रु निदेसवस परिहु जैहों ॥  
 इक १ पै सिंधु उतरि इत, जैबो हमरै सु जियत मरि जैबो ५६  
 सत्त ७ किय कोल सुज्जन १९० १, अकबर ३७ १ तिनमें येहु  
 लिखि अण्पी ॥

जपैं जु कोहु सुज्जन, सोहि न प्रभुके विधेय साहससो ॥ ५७ ॥  
 यहहि वजीर १ हिं अकखो, पट्टे आसफखान मन्त्रिलिनी पै ॥  
 समुझाइ लेख सैदखी, कही दुहु २ न तोहु साह जाहु कही ॥ ५८ ॥  
 तव निजधर्महि तैकिय, न जावन १ रु मंडि रन २ नृपतो ॥  
 प्रत्युत यह फल पक्षिय, सदाहि तन १ मन २ धन ३ सन सेवनको ५९  
 बुल्लि सचिव केसव बलि, जो मथुरादास बनिक तैनुजन्मा ॥  
 कहिय रचहिं बुंदी कैलि, सजि तू संभारि जाइ पुर सबही ॥ ६० ॥  
 सुतसुत वीर सता १९४ १ कौं, स्वसुरालय कहूँ पठाइ कछु मिससौं ॥  
 तैकन देहु न ताकौं, मेरो सैकुटुंब भावि रन मरिबो ॥ ६१ ॥

सताकौं १ नताकौं २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

बलि सुज्जपोलि बाहिर, बरयो नगर तास बैरन जु बनायो ॥

जामैं कछु खिले जाहिर, पूरन वह करहु बैग सह पैरिखा ॥ ६२ ॥

१ अटक नदी के पार २ हे चहुबाण ॥ ५४ ॥ ३ धन खरच हुआ ४ वर्षों में ५ परदेश ॥ ५५ ॥ ६ तो भी ७ आज्ञा के आधीन ८ परन्तु ९ अटक नदी पार कर जाना ॥ ५६ ॥ १० कर्तव्य अथवा उचित ॥ ५७ ॥ ११ चतुर १२ साजी ॥ ५८ ॥ १३ देखा १४ उल्टा ॥ ५९ ॥ १५ पुत्र १६ युद्ध १७ सामग्री ॥ ६० ॥ १८ पुत्र के पुत्र वीर शत्रुशाल को १९ सासरे २० देखने अत दो २१ कुटुम्ब सहित २२ आगे होनेवाले युद्ध में ॥ ६१ ॥ २३ खरजपोल २४ कोट २५ बाकी २६ खाई सहित ॥ ६२ ॥

रत्नसिंह को पीछा बुरहानपुर भेजना ] पठराखि-सप्तविंशमधूख (२५।६)

कलिं वत्त विदित न करहु, बिलौबि कछुकाल आत मैं बुंदी ॥  
तब केसव बँतुरतरहु, कंज्ज कथित देस आइ सब किन्नौ ॥ ६३ ॥  
इत भूप महावतको, आह्वान बिचारि पत्र पठयो यौ ॥  
मित्र तुमहुं हम मतको, निश्चय जानत बुलात सु न नीकी ॥ ६४ ॥  
बर मरन १ आइबेर सौं, सोहैं तिहिं सुनि प्रसन्नहोहु सखे ॥  
बहुरि पछिताइबेसौं, पलपल मति छिज्जिछिज्जि दुख पैहो ॥ ६५ ॥  
पहुं पुनि स्याम १९४।८।१९४।१ उभय २ प्रति, कुपुत्रकहि पत्र  
कोप लिपि पठयो ॥

मृत तुम जियतहु दुर्मति, लंघि अटक त्योंहि मोहि करन लगे ॥ ६६ ॥  
अब बुंदीहु न अहो, कुटुंब १ संबंधि २ जाति ३ दूरकरे ॥  
ब्रौत्यहि आयु बितैहो, गौहिले कुलधर्म पुच्छि क्यौंनगये ॥ ६७ ॥  
तबद्वैरही पछिताये, निर्धमहु सुमिर्यो सु बंचि दलैं नृपको ॥  
ग्रंथि किं बनिक ठगाये, कहतभये हैंद नबावप्रति कुलकी ॥ ६८ ॥  
सुमिरि महावत सोही, दिल्ली विन्नसिंपत्र दिष दूजो २ ॥  
जबहो दुर्गम जोही, सोगढ अब सुगम भूपहिं न भैजो ॥ ६९ ॥  
तब साहस साह तज्यो, कछुदिन दे सिक्ख गेहकी नृपको ॥  
सुनि अरिगन बहुरि सजो, पठयो रैन १९२।१ बुरहानपुर पच्छो ॥ ७० ॥  
आतखिन साह अक्खिय, पहुँ जातहि हनहु अब खुरुम ३९।२ पापी  
पुनिहु जथा पैरपदिखय, न करैं हल्ला रु भीतपन निबहैं ॥ ७१ ॥

१ युद्ध की वार्ता प्रसिद्ध मत करना २ कुछ चिलम्ब करके ३ बहुत जतुर ४  
कहेहुए कार्य ॥ ६३ ॥ ५ महावतखन को ६ बुलाना ७ हमारे मत का अर्थात् एक  
सलाहवाले ॥ ६४ ॥ ८ हे मित्र ॥ ६५ ॥ ९ राजा १० अटक नदी को लांघक-  
र मुक्त को भी तुम्हारे सन्मान करनेलगे ॥ ६६ ॥ ११ संस्कारहीन होकर १२  
हे पागल ॥ ६७ ॥ १३ अटक नदी उतरने का सुर्जन का किया हुआ नियम १४  
स्मरण किया १५ पत्र १६ आनों गांठ का ठगाया हुआ बनिया होये तैसे ललित  
होगये १७ मर्यादा ॥ ६८ ॥ १८ अर्जी ॥ ६९ ॥ १९ हठ ॥ ७० ॥ २० आते समय ११ हे  
राजा २२ शत्रु २३ कायरपन ॥ ७१ ॥

विजेन बजीरहु बुल्लयो, इक १ सुंत यह कहिदेहु तुम पातैं ॥  
 भरि कोप साह बुल्लयो, भैगिनी भाखैं सुही हुकम सदै ॥ ७२ ॥  
 यह सुनि बुंदी आयो, समुचित सद्धि रु प्रसू पयन प्रनम्यो ॥  
 पुर बरन अखिल १ पायो, तारागढ सर्व संचय २ तथाही ॥ ७३ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यगो षष्ठ ६ राशौ बु-  
 न्दीशरत्नसिंहचरित्रे बन्दिखुरमदत्तदुःखकुमारहरिसिंहनिवारक-  
 रत्नसिंहकुमारमाधवसिंहरक्षककरणा १, गदव्याजस्वशरगारक्षितप-  
 वनेन्द्रयाचितखुरमाप्रदात्तरत्नसिंहतदसुरक्षणा २, कुमारमाधवसिंह  
 कृतबन्दिखुरमसुखवितरणा भाविकोटावृद्धिबीजवपनप्रख्यापन ३, प-  
 वनेन्द्रपुनःपुनर्याचितगुड्मिषाप्रदत्तखुरमरत्नाथबुरहानपुरस्थापितने-  
 मसैन्यरत्नसिंहदिल्लीगमन ४, बुरहानपुरविजयिरत्नसिंहयवनेन्द्रपारि-  
 तोषिकपट १ पट २ समासादन ५, ज्ञातकरतोयापरप्रान्तविजयार्या  
 ज्ञाऽस्वीकाराऽप्रसन्नत्वविमृष्टतदुल्लङ्घनधर्महानरत्नसिंहसमरांगणानि-  
 धननिश्चयन ६, सूचितकरतोयोल्लङ्घनधर्महानिरत्नसिंहस्वसुहृन्महा

१ एकान्त में २ बादशाह के यह एक ही पुत्र इस है कारण ३  
 मेरी वहिन (नूरजहां) ॥ ७२ ॥ ४ उचित ५ माता के चरणों में नमस्कार  
 किया ६ शहरपनाह सम्पूर्ण पाया ॥ ७३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वाध्याय के छठे राशि में बुन्दी के सूपति रत्न-  
 सिंह के चरित्र में कैद में खुरम को दुःख देने के कारण कुमार हरिसिंह को  
 दूर करके रत्नसिंह का कुमार माधवसिंह को रक्षक नियत करना १ रोग के  
 भिष से अपनी शरण में रखेहुए खुरम को बादशाह के मांगने पर भी नहीं  
 देकर रत्नसिंह का खुरम के प्राण बचाना २ कुमार माधवसिंह का कैदी खुर-  
 म को सुख देने के कारण आगे आनेवाले समय में कोटा की वृद्धि का बीज  
 बोने की सूचना करना ३ खुरम को बादशाह के बारम्बार मांगने पर भी रोग के भि-  
 ष से नहीं देकर आधी सेना उसके यज्ञ के लिये बुरहानपुर में रखकर रत्नसिंह का  
 दिल्ली जाना ४ बुरहानपुर की जीत के कारण रत्नसिंह का बादशाह से लि-  
 लत और परगने पाना ५ अटक नदी के पार के प्रान्त विजय करने को जाने  
 की आज्ञा नहीं मानने के कारण बादशाह की अप्रसन्नता देखकर और अट-  
 क नदी के उल्लंघन करने में धर्म की हानि जानकर रत्नसिंह का युद्ध करके



वतखानान्तिकपत्रप्रेषणानन्तरदर्शितदुर्जयस्थलविजयमहावतखान  
यवनेन्द्रान्तिकरत्नसिंहाप्रेषणविजयप्रार्थनापत्रनिवेदन ७, महावतखा  
नप्रार्थनापत्रपठनत्यक्तकरतोषापरप्रान्तरत्नसिंहप्रस्थापनहठयवनेन्द्र  
जहांगीरखुरमघातशिक्षाप्रदानपुरःसरखुरहानपुरप्रतिप्रस्थापन ८, बु  
रहानपुरगमनान्तरसमयरत्नसिंहबुन्द्यागमनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥

आदितो दशोत्तरद्विशततयः ॥ २१० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

आयत जो प्रभु राम २०१४ यह, पुरबुंदिय प्राकार ॥

तिम सु बनायो रत्न १९२१ तव, दृढ अट्ठक चउ४ द्वार ॥ १ ॥

खिल दुव२दिस रहि खातिका, सो दुव२दिस हुव सिद्ध ॥

अर्घ्य रचित प्रासाद इत, इकखे वैभव ईद ॥ २ ॥

दक्खिनदिस बुंदी बढी, अदि त्रि३दिस ढिग आत ॥

कहत ताहि जुंन्नी किम सु, जान्यो हेतु न जात ॥ ३ ॥

ब्रध्नपोलि १ भैरवबल २, अंतर जुंन्नी आहि ॥

सोहु बढाई नृप समर १८१७, समय उक्त नैयसाहि ॥ ४ ॥

तासहु मध्यप्रदेस तिम, गिनियत मैनेन ग्राम ॥

भारे जाने का मत दृढ करना ६ रत्नसिंह का अपने मित्र महावतखां को अ-  
ट्ठक नदी उल्लंघन करने से धर्म हानि होने का पत्र भेजने पर महावतखां का  
दुर्जय स्थल को जय करलेना दिग्वाकर रत्नसिंह को नहीं भेजने के विषय में  
बादशाह की सेवा में निवेदन पत्र भेजना ७ महावतखां की अरजी पढ़ने से  
रत्नसिंह को अट्ठक पार भेजने का हठ छोड़कर बादशाह जहांगीर का खुर-  
म को मारडालने की शिक्षा देने के साथ पीछा बुरहानपुर भेजना ८ बुरहानपुर  
जाते समय रत्नसिंह का बुन्दी आने का सत्साईसवां २७ मयूख समाप्त हुआ  
और आदि से दो सौ २१० दश मयूख हुए ॥

१ बडा २ हे प्रभु रामसिंह ३ कोट ४ बुरजें ॥ १ ॥ ५ बाकी ६ खाई ७ तैयार ८  
आपका रचाहुआ महल ९ बडा ॥ २ ॥ १० जूनी बुन्दी कहते हैं ११ इसका-  
कारण नहीं जाना ॥ ३ ॥ १२ खुरजपोल १३ भैरव दरवाजा के बीच में, जूनी  
बुन्दी १४ है १५ नीति ग्रहण करके ॥ ५ ॥ १६ मैनों का प्राचीन ग्राम

नृप सु पुरानी१ खिल नई२, रघी स्वकुल अभिराम ॥ ५ ॥  
 आयो पहिलै१ याहितै, मुखपथान यह१ मानि ॥  
 पट्टनि१ करउर२ आदिपुर, कियअधान इहिँ कानि ॥ ६ ॥  
 बुंदी वेष्टित अब बरन, अधिप रैन१९२१२ कृत एह ॥  
 बहुरि बढे बाहिर बसे, उपपुर भावि अनेह ॥ ७ ॥  
 निजपुर बुंदी रैन१९२१२ नृप, इम दिछी सैन आइ ॥  
 सज्ज लाखे उपहार सब, जिततित बिहित जमाइ ॥ ८ ॥  
 स्वकृत द्रंग प्राकार सिर१, तारागढ सिर२ तोप ॥  
 सामग्री कोसैन सकल, इक्खी धारत ओप ॥ ९ ॥  
 केसव सचिव सराहकरि, अरु तस थप्पलि अस ॥  
 सिक्ख प्रमित निबस्यो सदन, इम हड्डन अवतंस ॥ १० ॥  
 सता१९४१अमुखें सुतकेसुतहुँ, न कहे सबहि निहारि ॥  
 उँपालांभि कछु लाइ उर, रक्खे गिनि नन रारि ॥ ११ ॥  
 भो तैति बाहिर अनुज भजि, हृदयनरायन१९२१२ हड्ड ॥  
 सिटयोरहत दुन्नी सु तो, अंखिँरपा लहि अहु ॥ १२ ॥  
 तब बुल्लयो अति वीर तस, जेठो अंगजै जेत१९३१२ ॥  
 अनुजै थान वह आदरयो, बली अतुल वानैत ॥ १३ ॥  
 पुरबुंदिय रक्खे प्रथम, वीर करन१९३१२बलवंत१९२१२ ॥  
 अब सु जैत१९३१२ तीजोइहाँ, रक्खनै मुलक रहंत ॥ १४ ॥  
 रैन१९२१ सुपहु निजराज्यको, भुज तीनइन धरिभार ॥

१ हे राजा वह पुरानी बुन्दी है २वाकी नई है ३ सुन्दर ॥ ५ ॥ ४ इसकी शंका से  
 ॥ ६ ॥ ५ घेरे हुए ६ कोट ७ आगे आनेवाले समय में ॥ ७ ॥ ८ से ९ सामग्री  
 १० उचित ॥ ८ ॥ ११ अपने बनाए हुए १२ नगर के १३ कोट पर १४ खजाना में १५  
 शोभा ॥ ९ ॥ १६ कन्धा १७ सीख के माफिक १८ घर में निवास किया १९ मु-  
 कुट ॥ १० ॥ शत्रुशाल २० आदि २१ पोते के नहीं निकालने से २२ ओलम्हा  
 दकर ॥ ११ ॥ २३ पंक्ति बाहिर २४ लजा ॥ १२ ॥ २५ पुत्र २६ छोटे भाई के स्थान  
 में २७ युद्ध से नहीं भगने की प्रातज्ञा का चिन्ह रखनेवाला ॥ १३ ॥ २८ देश की  
 रक्षा करने को ॥ १४ ॥

\*सासकरखयो सवनसिर, कुमर सतां १९४। १ जयकार १ १५।  
इंद्रसल्ल १९४। २ ताको अनुज, बुंदिय थपि बलेसैं ॥  
बैरिसल्ल १९४। ३ दंग वलि, पठयो दबन प्रदेस ॥ १६ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

पलटयोन जो रनछोर १ गोर सु दुंकरनैर पठाइकैं ॥  
महराज १ चालुक मालपुर २ पठयो जथोचित पाइकैं ॥  
टोडा १ पुरी अधिकार अप्पि बनि क टोडरमल्ल २ कौं ॥  
दिय रामपुर १ अधिकार तिम कछवाह दुर्जनसल्ल २ कौं ॥ १७ ॥  
रघु १ भूत्य चेत २ रक्खि सेसन १ सेसर भार समप्पिकैं ॥  
धिर देस रक्खन वीर हे तिन्ह त्यों समस्तन थपिकैं ॥  
बुरहानपुर इत बुकल्यो स्व निदेस पत्रहु वेगही ॥  
निज दंडनायक द्वारकादिकदास कूरमतैं कही ॥ १८ ॥  
माधव १ ९३। १ कुमार भतीज केसव १ ९३। ६। २ अन्यतर १ मिलावाइकैं ॥  
प्रच्छन्न खुरम ३ ९। २ हिं कछिदेहु निसीयें ओसर पाइकैं ॥  
जानैं न कोहु स्वकी भोजन १ अरु दंगजन २ न सुनैं जथा ॥  
रचि त्यों प्रबंध निकासि रक्खहु साह संतति सर्वथा ॥ १९ ॥  
लकखैर अप्पन रक्खि १ सुत हरिसिंह १ ९३। ३ पै हितलाइकैं २ ॥  
आसान बुंदियके वच्यो ३ इम लेख लेहु लिखाइकैं ॥  
बुरहानपुर यह पत्र निखत द्वारकादिकदास १ जो ॥  
नृप पुत्र माधव १ ९३। २। २ तैं मिल्यो नृप इष्ट अक्खि निकास जो २०  
मिलि निरसलाक उमै २ कछो तिहिं साह सासन मारियो १ ॥

\* आज्ञा देनेवाला (बुकलत करनेवाला) १ आज्ञाशाख २ जय करनेवाला ॥ १५ ॥ ३  
सेनापति ४ नैखवाजगर ॥ १६ ॥ ५ बनियां ॥ १७ ॥ ६ नाम विशेष ७ सेनापति  
८ द्वारकादास ॥ १८ ॥ ९ दोनों में निर्धारित सलाह मिलाकर १० आधी  
रात्री को ११ समय पाकर १२ अपने खेवक भी नहीं जानसकें १३ मगर के लोग  
१४ बादशाह की सन्तान को ॥ १९ ॥ १५ देखते ही ॥ २० ॥ १६ एकान्त में मि-  
लकर १७ बादशाह की आज्ञा इसको मारने की है

नृपकै अभीष्ट तऊ तुम्हैं कछुरीति गुप्त निकारिबो॥  
 हमरो कहयो सुभ मन्नि जो हरिसिंह १९३।३ तैं रिस सहरो १॥  
 आसान हहु ६१ नैं उब्वरयो कर अप्प लेख यहै करो २॥ २१॥  
 लखैरि हहु ६१ नकी पुरी नहिं गौड़ भोसन सो लहैं ३॥  
 रतनेस १९२।१ अब लिय देस इहिं लिपि तेहु दत्त बने रहैं ४॥  
 तब तुम निकास लहो १ तथा हमतैहु तुष्ट नरेसहै २॥  
 बलि पट्ट पाइ हमैं बढावहु तो कृपा सु बिसेसहै ॥ २२॥  
 अर्वासीसप्रति तब लेखसुहि करि अंत वत्त लिखी यहै ॥  
 कछु भार नाहि मदीय चित्तहु मंगिबो इक तोकहैं ॥  
 अति नभू माधव १९३।२ मोहि मालिक सर्वथागिनि आदरयो ॥  
 काराहुमैं मम चैन जिहिं मन १ वैन २ कायं ३ नतैं करयो ॥ २३॥  
 मैहि भाग चाहि बिसेस दे सब सुखके सनमानिहो ॥  
 आसान एह द्वितीय २ बाबा ज्यान मोसिर आनिहो ॥  
 इम खुरुम ३९।२ निज लिपि पत्र अप्पिय द्वारकादिकदासकों ॥  
 विचदै कुरां १ रँब २ सौहैं ३ कैं विरच्यो बिसेसबिसासकों ॥ २४॥  
 कछु व्याधिके मिस सुख माधव १९३।२ आदि दूर सबै करे ॥  
 समुझाइ रँछक अन्य सँसुचित धीमनाइ तहाँ धरे ॥  
 जिनकों बिसासि निसीथें सँसमत कुँम्म १ माधव २ जाइकैं ॥  
 सो खुरुम २९।२ कहि दयो विमँग लिली सबै सुमिराँइकैं २५॥  
 गिनि जन्म नव सुत साहको सु वहोरि बीजापुर गयो ॥  
 इत तास रँछक वर्गकों खिजि व्याज बंधन अप्पयो ॥

१ मिटाओ २ आप ॥ २१ ॥ ३ मुक्त से ४ लेख ५ दान ६ प्रसन्न ॥ २२ ॥ ७ राजा के प्रति-मेरे कैद में भी १० शरीर से नत्र होकर ॥ २३ ॥ ११ भूमि का भाग १२ सब में सुख्य करके सन्मान करोगे १३ कुरान १४ ईश्वर के १५ सौजन्य ॥ २४ ॥ १६ रोग के मित से १७ पहरायतों को १८ उचित १९ समझाकर २० आधी रात्रि २१ सलाह २२ कछवाहा द्वारकादास और कुमार माधवसिंह २३ बिना २४ स्मरण कराकर ॥ २५ ॥ पहरायतों को क्रोध करके २६ झूठी कैद में किये

यादशाहकाखुरमकोनिकालनेकीखबरसंगाना]पठराशि-अष्टाविंशमयूख(२५२६)

मनमें मनाइ\*चमूप कूरम लोक+ख्यापन मोघही ॥  
 सबसांसना किय कैदकी तिन त्यों प्रसन्न सु पैसही ॥ २६ ॥  
 अरजी लिखी नृपकों इतैं कहि छन्न गो सुत साहको ॥  
 लिपि सोहि दिल्लिय भेजि जाहिर मोद संहारि लाहको ॥  
 तब दै सता१६४१भुजभार रच्छक राज्यके सनमानि त्यों ॥  
 जिन्हरखिख बुंदिय अप्प हंकि य गंम्य दक्खिन३२जानि त्यों ॥ २७ ॥  
 ततकाल जातहि ख्यातिमें दुव२कुम्म१माधव३र्तर्जये ॥  
 वसुं दंड दै१वसुंधा उतारि२ रु पास आगम वर्जये३ ॥  
 बिसवासि अंतर१है२हि बाहिर२दिहि३कै३ दयो बली ॥  
 भुव पुव्व जामिक कैद हे तिनकीहु ख्यात लई भली ॥ २८ ॥  
 नहि मंतुं केसव१९३६पै निहारि सु दंडनायक निर्मयो ॥  
 भजिगो स्वयंगर्ज सो इतैं सुनि साह अमरखमें भयो ॥  
 बलि वेहि<sup>१</sup> सय्यद२मुक्कले अतथां१तथारमु विचारिबे ॥  
 पुनि भूप ते महमान रक्खिय मंतुं निश्चय पारिबे ॥ २९ ॥  
 वसुंहीन जामिक१कुम्म२माधव३कैद तोहु न विस्वसे ॥  
 बहु दै प्रजाहित छन्न लोभ रु ह्वां उमै२चिरैंलो बसे ॥  
 बहुकालमें तिनको मिल्यो कछु भेद यों दुव२वातको ॥  
 पैहु तो प्रसन्न प्रजाकह्यो लरतोरह्यो यह प्रातको ॥ ३० ॥  
 इहिं कुम्म राति अरौति पंचक५मुख्य कहिदयो१ अहो ॥

\* सेनापति † प्रसिद्ध १ आज्ञा ॥ २६ ॥ २ लिखावट ४ लाभ का मोद ३ मिटाकर ५ जाने योग्य ॥ २७ ॥ ६ तुरन्त ७ प्रसिद्धि में (लोगों को दिखाने के लिये) ८ धमकाए ९ धन का १० भूमि ११ पास आना वन्ध किया १२ नजर कैद १३ पहरायत ॥ २८ ॥ १४ अपराध १५ सेनापति बनाया १६ अपना पुत्र भाग गया सो सुनकर १७ क्रोध में १८ फिर १९ वे दोनों शय्यद जो खुरम को लेने के लिये पहिले जेजे गये थे२०झूठ और सत्य विचारने के लिये२१अपराध निश्चय करने को ॥ २९ ॥ २२ धनहीन २३ पहरायत २४ विश्वास नहीं कि या२५बहुत समय पर्यंत रहे २६ राजा तो ॥ ३० ॥ द्वारकादास कछवाहे ने पांचों २७ शब्दों को

निकसाइ खुरुम२९।२दयो तथा अब२पै इहाँ नृपतो न हो ॥  
 इक कुम्म१अक्खिय काहु काहु मिल्यो कुमार२हु उच्चरयो ॥  
 परं द्वै२हिबेर चंमूपको परं कट्ठिबो निहचैपरयो ॥ ३१ ॥  
 उनतैहु अक्खिय साह आवत सुद्धिलौ सब ओरतै ॥  
 जो होइ कहनहार तो तिहिं बंधिआनहु जोरतै ॥  
 सैपंच५००साँदि१रु अट्ठसै८००पादाति२दोउ२न संगहे ॥  
 गहि वास बाहिर१पुनि पदाति बिसे जथा क्रम दंगहे ॥ ३२ ॥  
 तिन्ह सज्जि सय्यद रंति कूरमपै क्रमे संहसा तथा ॥  
 जिहिं क्यौहुँ जानिलई सु सज्जहि स्वल्प सत्थ मिल्यो जथा ॥  
 तरवारि भारि भिरे अचानक लोक विस्मयमै तँच्यो ॥  
 महि रुंड१ मुंड२न पट्टि त्यों अवमर्द इक्क१घरी मच्यो ॥ ३३ ॥  
 पहु सो इतै सुनि द्वार रुद्धकराइ निजभट पिल्लये ॥  
 हरिसिंह१९३।३ केसव१९३।६ संग व्है सबठाम कूरम ठिल्लये ॥  
 पुरद्वारप्रति सत.पंच५०० पंच५०० सिपाह सज्ज पठाइकै ॥  
 अरु द्वार अंतर दुर्गके सु खरो रहयो हुत आइकै ॥ ३४ ॥  
 औबे लग्यो स्व कुमार माधव१९३।२ सो न आनदयो इतै ॥  
 भैर कुम्म१ सय्यद२ यों भिरे तँहँ लुत्थ बत्थ जितैतितै ॥  
 पहुँचै न जोलगि हरि१६३।३रुकेसव१९३।६ मिच्छतोलगि प्राँनमै ॥  
 कछवाहकों लागि लाह लौलिय संकरै घमसाँनमै ॥  
 जँहँ स्वल्प सत्थहु द्वारकादिकदास दुस्सह जुँज्भयो ॥  
 विनुँमत्थ भारत खगग लिखि गिरिजा१ गिरीस२हिं बुज्भयो ॥

१इसी प्रकार१किसी किसी ने२परन्तु४सेनापति५शत्रुओं को निकालना ॥ ३१ ॥  
 ६ खयर ७ सवार ८ घुसे ९ नगर में ॥ ३२ ॥ १० रात्रि में ११ कछवाहा द्वार-  
 कादास पर चले १२ अचानक १३ किसी प्रकार १४ तपा १५ युद्ध ॥ ३३ ॥ १६  
 द्वार बन्ध कराकर १७ भेजे ॥ ३४ ॥ १८ भट (वीर) १९ चल में २० युद्ध में  
 ॥ ३५ ॥ २१ द्वारकादास २२ लड़ा २३ विना मस्तक लड़ता देखकर २४ पा-  
 र्वती ने शिव से पूछा

कछवाह बंसहि \*चारु भट दुवरभेद ॥ सेख १ ॥ नरु २ कुली ॥  
 तहँ आदि १ ॥ ईस कहयो यहै जिहिं रुंड कर ॥ असि यों तुली ॥ ३६ ॥  
 जवनीन हत्थ यनीन कंकन हीन कीन चमूप ज्यों ॥  
 रिपु गंत रंत खैं द्रवैं हरियार होरिय रूपज्यों ॥  
 जस रक्खि बिनुसिर द्वारकादिकदास १ कछुखिन जुद्यो ॥  
 तरवारि झारि घनैन पारि सु रारि तिलतिल तुद्यो ॥ ३७ ॥  
 ताको भतीजहु मान २ खंड बिहंड श्वेतपरयो तथा ॥  
 परि संग बीर छतीस ३६ ओरहु उब्बरे जसकी प्रथा ॥  
 पहुँचै न दैरहि कुमार जोलग संगलै भट पानके ॥  
 कछवाह तोलग दैरहि है सहस्रस्थ गोचर कानके ॥ ३८ ॥  
 सुनि एह भूपहु वृद्ध बै भट रक्खि दै सत २०० संगमैं ॥  
 बलि अप्प जीवरखा बिस्यो जरि द्वार वा कलजंगमैं ॥  
 सब सेस सूरहु मुकले हरि १ केसवारि सहायपैं ॥  
 धूमसान घोर मच्यो लख्यो तिन घाय लगत घायपैं ॥ ३९ ॥  
 दलि कुम्भ १ अंतरदुर्गदिस गँहिलैन माधवर वे मुरे ॥  
 इतन बढे पहिले कढे भट पति पहुँचत अँकुरे ॥  
 चढि अँट अंतरदुर्गके नरनाहँ वाह कहँ चढँ ॥  
 श्रुति अक्खि होत समीप सँदन चंद्रहास बहँ सहँ ॥  
 कहि कोहि नेजैन बद्ध ह्वँ रनमाहताब उदैकरी ॥

कछवाहों में \* सुन्दर दो भेद हैं एक † सेखाउत ‡ दूसरा नरु का जिनमें  
 § शिव ने कहा कि यह सेखाउत है ॥ खड्ग ॥ ३६ ॥ १ सेनापति ने २ गात  
 (शरीर) ३ रक्त ४ फाग ५ कुछ समय ॥ ३७ ॥ ६ प्रसिद्धि से ७ पराक्रम के ८  
 साथ सहित कर्ण गोचर हुआ अर्थात् उसका नाम काका से जानने योग्य रहा  
 और शरीर से मारा गया ॥ ३८ ॥ ९ वृद्ध आवस्थावाले १० जीवरखा में घुसा  
 ११ बाकी के १२ युद्ध ॥ ३९ ॥ १३ जीवरखा की ओर १४ माधवसिंह को पकड़ने  
 के लिये १५ पैदल १६ खड़े हुए १७ बुरज १८ भीतर के गढ़ (जीवरखा) की १९  
 राजा २० कानों में २१ शब्द २२ खड्ग ॥ ४० ॥ २३ बाँसों पर बांधकर

इम दुर्गशपिक्खि प्रकास द्रंगरहु हो सु जिततित उग्घरी ॥  
 गढतैं नरेस निदेस निक्खसि वीर जे पहिलैं गये ॥  
 लघु पहुँचि तिन अरिकुम्भकट्टि कुमारखँधौं सुरते लये ॥११॥  
 मिलि दृढदृष्टिच्छरन जुद्धमें पुनि जुद्ध यौं सहसाँ मच्यो ॥  
 बुरहानपुर तिहिँ रँत्ति पुरजन धामधाम बिस्यो बच्यो ॥  
 चहुँओर वेग बढावती दुहुँओर तेग भलीचली ॥  
 बरवीर धीर सदाजई जिम छीरँनीरमिले वली ॥ ४२ ॥  
 वहि खग टोपतनुत्रवाँहुलबह्वि अल्लारिलौं वजैं ॥  
 भिदिजात लाघव तंति सँव्वन पंति पैठन भौ भजैं ॥  
 पयपिडिँकारनैलकीलसँक्खिथकटीरपतुँदकटे परैं ॥  
 उरकंठहत्थकफोनि१०भुज११तिमअंस१२मरतक१३उत्तरै१४  
 पीछे सहाय चलयो सु सत्थ मिल्यो इते विच पानसौं ॥  
 इम ए१जुर सब इक्कवहै मन वे२सुरे तव मानसौं ॥  
 सामंत१८कुलभव केसव१८९।२।१६हरिसिंह१९३।३।२ केसव  
 १९३।६।३ संगही ॥  
 बलभद्र४चालुक वैल्लनोत इतेनकी बढिकैं बही ॥ ४४ ॥  
 कौलि संहरे सतपंच५०० अरि सततीन३०० भीतभये कडे ॥  
 चहि हँर सूर उभैहि सय्यद खँग धारनपैं चडे ॥  
 सतपंच५०० सौँदिन संधैं बाहिर हो सु रत्ति रह्यो सज्यो ॥  
 सो प्रात स्वामिनकों हँनै सुनि भोनै पढैंति लो भज्यो ॥४५॥

१ राजा की आज्ञा से २ शीघ्र ३ कुमार माधवीसिंह की ओर ॥४१॥ ४ अन्धानक  
 ५ उस रात्रि में ६ पुर के लोक ७ बर बर में बाग करके बच ८ चीर (द्रुम)  
 ॥ ४२ ॥ ९ कवच १० दस्ताना ११ शीघ्र १२ साधन में १३ क्रांति धारण करती  
 है १४ पीछी १५ नली की हड्डी १६ जंघा, कमर और १७ पैर १८ कुहनी १९  
 कम्बा ॥ ४३ ॥ २० पराक्रम से २१ कुलवाला २२ बालगोत्र ॥ ४४ ॥ २३ युद्ध में  
 २४ यापनी भाषा का अप्सरा बानी शब्द है २५ खत्र २६ सवारों का २७ समूह  
 २८ आने स्वामियों को मारे हुए सुनकर २९ घर का ३० मार्ग किया ॥ ४५ ॥



राजा के सुभदों का सैयदों से युद्ध] पष्ठराशि-अष्टाविंशमयूख (२५२९)

सततीन३०० रिपु निस इक१ जौम रहंत हड्ड६१न संहरे ॥  
प्रतिकूल विग्रहभूल त्यों सतदोइ२०० घायनसों परे ॥  
इतके इते२००हि मरे प्रवीर इते२००हि घायल उबरे ॥  
खिल खेत दुर्जय भूपके सुत१ बंधुर बीर३ रहे खरे ॥ ४६ ॥  
बहु दीपिका मह सोधि रंग उठाइ घायल बाहुरे ॥  
जिन्ह भूप लौ गढमैं बहोरि कपाट तोरनके जुरे ॥  
पुनि प्रात खिन उतकेहु घायल इकठाम पठाइकैं ॥  
उपचार सासनतैं करयो सबकै हकीमन आइकैं ॥ ४७ ॥  
बलि तथ साह सिपाहहे तिन्ह द्वार प्रातहि बुल्लये ॥  
भाखी सुनौ सब मोधि सद्यद क्यौ मरे भ्रम भुल्लये ॥  
आन्योंन ज्यौंफरमान१ त्यों हमसों न आसय उच्चरयो२  
किम माँहिमाँहि विरोध नाहक मारि कूरमकाँ करयो ॥ ४८ ॥  
भनते निजासँध मोहि तो तिन्ह संग ताकैंहैं भेजतो ॥  
रनमैं मरे सठ रक्खि क्यौ तनमैंहि आवनको मँतो ॥  
पठये सुनैं हम सुदिलैं सुतो लही सब पुच्छये ॥  
अधिकार लौ खाजि मैहु आतहि दिठिकैंद उभै२ दये ॥ ४९ ॥  
निहचैं बिनाँ न बिसेस है दैमनै जथातथ जानिकैं ॥  
आकृत स्वीय जनावते स रु मोहि नैंकहु आनिकैं ॥  
उन्हसंग तो कछवाह१ माधव२ द्वैरहि मैं करतो अहो ॥  
कछु होइ जो तुमसों कही तिम मोहि तो समहू कहो ॥ ५० ॥  
सबकाँहि मालिक सौँहैंहे नहि काँनि रक्खहु न्यायमैं ॥  
अपराध अप्पन उँहै सु सूचहु काजसिद्धि उपायमैं ॥

१ एक प्रहर रात बाकी रहते २ बाकी ॥ ४६ ॥ ३ चिरागों के प्रकाश से ४ युद्ध  
आगि को ५ बाहर के द्वार के ६ प्रभात समय ७ इलाज ८ आज्ञा से ॥ ४७ ॥  
९ फिर १० निरर्थक ११ कछवाहे द्वारकादास को ॥ ४८ ॥ १२ अपना आशय  
१३ उस द्वारकादास को १४ विचार १५ खबर ॥ ४९ ॥ १६ दुष्ट १७ चेष्टा  
(इसारा) अथवा अभिप्राय ॥ ५० ॥ १८ सौगन १९ भय अथवा अहं

सुनि यों अचानक पैठि पतन कुम्भको उन संहार्यो ॥  
 इतकोहु सत्थ सहायदै तिहिं यों मर्यो<sup>१</sup> कछु उब्बरयो ॥५१॥  
 पहिचानि सय्यद<sup>२</sup> खेत खोजत सोकमैं सबही परे ॥  
 मन होत संसय मोहि पै<sup>३</sup> न जनाइ यों सठ क्योंमरे ॥  
 अति अंधकार<sup>४</sup> हु रँति मैं बलि जुद्ध<sup>५</sup> यों न लखेउमै<sup>६</sup> ॥  
 समुझे न अप्पन साह सासन लाइ कुम्भ हन्यो सुभै ॥५२॥  
 रुचि मोरि याहि समैं सबै जन साहसों बिमनारहै ॥  
 कहिहैं सु अग्रिम अंसु पै इतको उदंत इहाँ कहैं ॥  
 सुनि साहके सबही सिपाहन भूप आंगस नाँ भन्यो ॥  
 तिम जिति जुग<sup>७</sup> रन<sup>८</sup> सत्रु पकरन<sup>९</sup> आदितस जसही तन्यो ॥५३॥  
 कहि अप्पसों न दई<sup>१०</sup> तथा हमसों कही न<sup>११</sup> यहै कही ॥  
 लागि गूढ साधन दंभ मूढन जोकरी गति सोलही ॥  
 प्रतिकूल केक बके प्रेमा तिनको बिसासहु त्यो तज्यो ॥  
 सब सेस मुकालि स्वस्वथान बिधान प्रेतनको सज्यो ॥५४॥  
 कछवाह<sup>१२</sup> आदि जराइ<sup>१३</sup> सय्यद<sup>१४</sup> आदि मिच्छ गडाइकै<sup>१५</sup> ॥  
 पैरिपांथे घायल जे हुते घर ते दये पहुँचाइकै ॥  
 सामंत<sup>१६</sup> १७<sup>१७</sup> नतिरियँ केसव<sup>१८</sup> १८<sup>१८</sup> रु बलभद्र<sup>१९</sup> मातुल बंसजो  
 पहुँ रीभि दोउ<sup>२०</sup> नको दये गज<sup>२१</sup> गाव<sup>२२</sup> रुपात प्रसंस जो ॥५५॥  
 दँल<sup>२३</sup> साहपुत्र निकासिबे लिखि पुँव बुंदियैत दयो ॥  
 स्व तनूज माधव<sup>२४</sup> २५<sup>२५</sup> पास हो लखि देसकाल सु पै लयो ॥  
 तिहिं भजि जावत साहको सुत दैगयो लिखि सो<sup>२६</sup> तथा ॥

१ पुर में ॥५१॥ २ सन्देह ३ परन्तु ४ रात्रि में ५ इसकारण ६ सन्देह में अथवा वह भय है ॥५२॥ ७ उदास ८ अगले मयूख में ९ वृत्तान्त १० अपराध ११ फैलाया ॥५३॥ १२ जिनको इस बात का यथार्थ ज्ञान था वे प्रतिकूल बोले उनका १३ विश्वास १४ अपने अपने घर १५ स्तुतक कार्य ॥५४॥ १६ शत्रुओं के १७ पोता १८ मामा का १९ राजा ने ॥५५॥ २० पत्र २१ पहिले २२ वह पत्र अपने पुत्र माधवसिंह के पास था सो

रत्नसिंह पर बादशाहका कोप करना] षष्ठराशि-अष्टाविंशमयूख (२५३१)

\*अतिगूढ रक्षिष्य पास अप्पन जो न रूपाति परैं जथा ॥५६॥

दिल्लीहु यों अरजी लिखी हमकों स्वसासन नाँ दयो ॥

भिरि रैति कुम्हहिँ मारि सय्यद द्वंद्व २ नष्ट इहाँ भयो ॥

सुनि साह १ कुप्पिय तौहुसों बढि सो न नूरजिहाँ २ सही ॥

दुव २ अप्पनैँ पठये दले गिनि टेक एक यहै गही ॥ ५७ ॥

अब खुरुम ३ ९ २ कहुनहार मारक मारि रैन १ ९ २ १ न उब्वरैं ॥

कंलि चंड भेजहु दंड हजरत जो निदेस यहैकरैं ॥

बुंदी उतारि १ रु मारि हहु ६ १ न २ रैन १ ९ २ १ लावहिँ बंधिकैं ३

सुन होइ तो तिहिँ ॥ मारि आवहिँ ४ आन अप्पन संधिकैं ५ ५ ८

बलि व्है प्रसन्न हजूरसों सुनि सोहि ॥ मो मिलिबो बनैं ॥

बाहिकाइ जिमजिम देत बेगम भाव तिमतिम सो भनैं ॥

सब पै मुरे मन यासमैं सचिवादि हे निजसाहसों ॥

जिनकों न बेगम स्वीय जानत वेहु तै न उछाहसों ॥ ५९ ॥

इतसों महावतखान १ आइ प्रबँधसों तँहँ उत्तरयो ॥

यह साह फंद गिरयो न प्रेत्युत तौहि गेरनकों अरयो ॥

सूबा अमानतखाँ १ रहैं अजमेरकेर सम्हारिकै ॥

तजि ओरकों बिसवास त्यों धियँ ताहि अप्पन धारिकै ॥ ६० ॥

कहि बेग बेगम साहसों फरमान तापर मुकल्यो ॥

सहसा निरसा छलि स्वीय सय्यद द्वंद्व २ हहु ६ १ न ज्यों दल्यो ॥

तिम तू बली सकुटुंब रैन १ ९ २ १ हि मारिकै १ गहिकै २ तथा ॥

पुर १ देस २ छिन्नि असेस रक्खहु सेस सौसनकी प्रथा ॥

\*प्रसिद्ध नहीं होवे इसप्रकार रक्खा ॥ ५६ ॥ १ आपने आज्ञा नहीं दीररात्रि के समय में ३ दोनों नाश हुए ४ उन सय्यदों पर ही क्रोध किया ५ मारे ६ नूरजहाँ ने हठ किया ॥ ५७ ॥ ७ मारनेवालों को मारकर ८ रत्नसिंह ९ युद्ध में १० सेना ११ उन रत्नसिंह को ॥ ५८ ॥ १२ आपका मुँह से मिलना तभी होवेगा १३ वजीर आदि के मन बादशाह से मुड़े हुए थे १४ अपना नहीं जानता था ॥ ५९ ॥ १५ उलटा १६ बादशाह की १७ बुद्धि में ॥ ६० ॥ १८ रात्रि में १९ सब २० याकी २१ आज्ञा की प्रसिद्धि ॥ ६१ ॥

द्रुत जित्ति हड्डवती स्वबाहुन आहु जाहु न देरसों ॥  
 सुनि यौ अमानतखान सजि रु उप्परयो अजमेरसों ॥  
 रजपूत पास बिसेस रक्खहिँ जो महावतखान ज्यों ॥  
 पहिलैं चढयो वह लैन बुंदिय बैन हैन प्रमान ज्यों ॥ ६२ ॥  
 पुरपर्णावाट समीप आइ सु दै मिलान निसा परयो ॥  
 करि प्रात अग्र अनीन प्रस्थित मध्य गोन स्वयं करयो ॥  
 हठमैं बढयो सु चढयो करी तबही अमानत हंकयो ॥  
 भटबर्ग को दुहुँ २ और पंतिन बंधि कै मुजरा भयो ॥ ६३ ॥  
 इहिँ पास अक्खयराज १८९१२ नत्ति य हो जु भूपति १९२१ सोइतैं ॥  
 करि सिक्ख अग बढयो कह्यो तब मिच्छ जावत तू कितैं ॥  
 सुनि यौ दयालु १९०१२ तनै कह्यो अब स्वामि मारन सिक्खिहैं ॥  
 बुंदीसु हड्ड ६१२ की प्रसू तस लज्ज जावत बिक्खिहैं ॥ ६४ ॥  
 तुम जो चढो सजि ओरठाँ हम है हरोल भरै तहाँ ॥  
 रजपूत यौ सब नाँरहैं जननीहि स्वीय भिलैं जहाँ ॥  
 सीसोद १ कूरम २ रड्डर ३ प्रामार ४ जहव ५ संभरी ६ ॥  
 प्रतिहार ७ चालुक ८ गौड़ ९ मुख सबकैहि रीति यहै परी ॥ ६५ ॥  
 सब वंस संगहि रावरेजुहि सत्यहै सु करो सही ॥  
 क्रमतैं अमानत पुच्छये सबनैहि सत्य यहै कही ॥  
 पच्छी वहीर' मुराइ तब अजमेर गो ततकालपै ॥  
 प्रति साह सोहि लिखी लगैं नन बुंदि सम्मुह हालपै ॥ ६६ ॥  
 इत ए महावत कैदतैं कडि साह १ बेगम २ उब्बरे ॥  
 पर तोहु तास प्रबंधमाँहि स्वतंत्रता तजिकैं परे ॥  
 सुनि यौ अमानत पत्रकलु कहि नाँ सकयो सु सबै सही ॥

१ अपनी भुजा से २ चला ॥ ६१ ॥ ३ पानडवा नामक पुर ४ सुकाम ५ ग  
 दहाधी पर ॥ ६३ ॥ ७ पोता ८ दयालदास के पुत्र ने ९ माता १० देखेंगे ॥ ६४  
 ॥ ६५ ॥ ११ आगे जानेवाली मार बरदारी को पीछे फेर कर १२  
 ॥ ६६ ॥ १३ महावतखाँ की

राजा का दुर्भिक्ष में दान देना] षष्ठराशि-अष्टाविंशमयूख (२५३३)

अकुलाइ साह बिहस्त भो असि गंधनोल १ जथा अहीर ॥ ६७ ॥

इत पंत बुंदिय बीर भूपति १९१ १ सत्रुसल १९४ १ सु आदरयो ॥

पर राह राधक वाह दै कछु लाह अहंतिमें करयो ॥

प्रपितामही मत ग्राम पंचक ५ जाहि दैन लाग्यो जहा ॥

करि नाहि ते न लये कछो मम बंदगीहु इती कहा ॥ ६८ ॥

नवताड़ १ मालहरा २ रु तारज ३ अल्प एहि दये नहैं ॥

रु रहैं जितैंतित तोहु संकट जानि हाजरि ह्यौ रहैं ॥

बदि एह भूपति १९१ १ तुष्टं वहै नवताड़ जाइ रहयो बली ॥

कछु अब्द वहाँ करिवासं कीगति खास दिस दिस सुकली ॥ ६९ ॥

नवताड़ वाग १ रु र्मापिका २ जिहिं द्वेहि नूतन निर्मये ॥

भौवी दुकालहु रंक जासैन प्रानवान बचे भये ॥

पहु रत्न १९२ १ को चउ ४ अब्दपै अवसान हाथन आइहै ॥

करि अहु सोलह १६८८ साँक सुहि दुर्भिक्ष घोर कहाइहै ॥ ७० ॥

पंद्रह १५ मनासन मान बनिकन नीवि धान्य गड्यो परयो ॥

सुहि स्वीय ग्राम विचारि भूपति १९१ १ दानवीर संसुद्धयो ॥

द्विज १ आदि रंकन बुल्लिकै वह धान्य वंदि सबैदयो ॥

लिखवाइ दम्भन ग्रामपंचक ५ धान्य रैवामिनहू लयो ॥ ७१ ॥

नवताड़ १ सुख इत पंच निर्वसथ अग्न सुर्जन १९० १ अप्पये ॥

उस महावतखां के प्रबन्ध में १ व्याकुल जिसप्रकार २ छुछुंदर को ३ सर्प पकड़ कर होवै तिसप्रकार “इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध है कि सर्प छुछुंदरी (गन्धमुखी) को पकड़कर छोड़ने से अन्धा होजाता है और खाने से मरजाता है” ॥ ६७ ॥ ४ पहुंचकर ५ शत्रुओं के मार्ग को रोकने में ६ प्रशंसा करके ७ दान ८ पड़दा-दी की सलाह से ॥ ६८ ॥ ९ ग्राम का नाम है १० प्रसन्न होकर ॥ ६९ ॥ ११ बा-चड़ी १२ नवीन बनाए १३ आनेवाले दुर्भिक्ष में १४ जिससे १५ जीकर १६ अन्त का १७ वर्ष १८ सम्वत् ॥ ७० ॥ १९ तोल विशेष “बारह मन की एक मांणी और सौ मांणी का एक गणाला होता है” २० दिना न्याज का वनिये का मूल धन २१ निकाला २२ रूपयों में २३ धान्य के स्वामियों ने ॥ ७१ ॥ २४ आदि २५ ग्राम

थिति\*दम्भ पूरनहोनतों तैं धान्यवानिज थप्पये ॥  
 वरज्योहु रत्न१९२१ प्रसू कह्यो तुम कर्ण१ विक्रम२नौवनौ ॥  
 भाखीहै भूपति१९११ दानवीरन नाम अप्पहुँ यों भनौ ॥ ७२ ॥  
 भावी उदंत यहै तथा अब वर्तमान सुनौ भयो ॥  
 गिरिकैं महावतखान फंद सु साह१ ज्यों पकस्यो गयो ॥  
 छोर्योहु बेगम२ जुत ज्यों निजजोर निर्भय व्है छमो ॥  
 सबवत्त सो सुनिहोँ वै अग्रिम अंसु ओसर संक्रमो ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

जबहि महावतखान जिम, आयो दिखिय एह ॥

बंधिसाह जिम अप्प बचि, अर्जिय सुँजस अछेह ॥ ७४ ॥

कारनसह अग्रिस किंरन, रीति सु पै प्रभुराम२०११४ ॥

स्त्रीय सुकवि सूचित सुनहु, ध्वस्त जवन पति धाम ॥ ७५ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यशो पष्ठ ६ राशो बु-  
 न्दीशरत्नसिंहचरिते बुन्दीप्राकारखातिकादिनिर्मितिकथन १, द-  
 त्तबुरहानपुगगजनपूर्वरानानीस्वसूनुपत्ररत्नसिंहवन्दिखुरमप्रदावण  
 २, ज्ञातवन्दिस्वसुतप्रपत्न्यायनप्रकुपितयवनेन्द्रजहांगीरप्रस्थापितस-  
 व्यदजकुटबुन्दीसेनापतिद्वारकादासवधोत्तरतन्मरण ३, एतदपराध-

\* रूपये । व्यापार १ रत्नसिंह की माता ने २ आप भी उनका नाम  
 लेती हो ॥ ७२ ॥ ३ यह वृत्तान्त आगे होनेवाला है ४ समर्थ ५ अर्थ ६  
 अगले मयूख में ७ समय पर चली हुई वार्ता को ॥ ७३ ॥ ८ यश सम्पादन कि-  
 या ॥ ७४ ॥ ९ अगले मयूख में १० विध्वंस ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वाध्याय के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्न-  
 सिंह के चरित्र में बुन्दी के शहर पनाह और खाई आदि के बनने का कथन ।  
 राजा का बुरहानपुर जाने से प्रथम सेनापति और अपने पुत्र के नाम पर्वानि-  
 त्यकर खुरम को कैद में भगाना २ अपने पुत्र के कैद में भागजाने की, मगर  
 से प्रकुपित बादशाह जहांगीर के भेजे हुए दो शय्यदों का बुन्दी के सेनापति  
 द्वारकादास को मारकर माराजाना ३ इन अपराध से निर्दोष होने की रत्न-  
 सिंह की अरजी पढ़ने से कोप को छोड़नेवाले बादशाह को फिर प्रकुपित कर

॥ जहाँगीरकानूरजहाँकेकहेभुजबचलना ॥ पष्टराशि एकोनत्रिशमयूख (१५३१)

निर्दोषीभावविषयरत्नसिंहप्रार्थनापत्रपठनापनीतकौपयवनेन्द्रपुनरु-  
द्धतप्रकोपनिमित्तनूरजहाँकृतससैन्याजमेराधिकृतबुन्दीप्रस्थापन ४,  
स्वजननीराजधानीनिर्लज्जताऽनिरीक्षकहृदयसिंहात्मजप्रबुद्धाधि-  
कृताखानतखानाजमेरप्रतिगमन ५, महावतखानकृतयवनेन्द्रजहाँ-  
गीरनूरजहाँजकुटबन्दीकरण ६, एतद्वन्दीकरणसकारणवर्णनप्र-  
तिज्ञानमष्टाविंशो मयूखः ॥ २८ ॥

आदित एकादशोत्तरद्विशततमः ॥ २११ ॥

प्रायोद्भजदेशीयप्राकृताभिधितभाषा ॥

॥ बैतालीयम् ॥

जब मृत्यु भयो अर्थाजको, तस तनया तब स्वामि तोरसों ॥

लंगर दढ तोरि लाजको, बेगम हाकिम सर्वपैं बनी ॥ १ ॥

अपने बस सर्वदा वहै, गिनि जवनेस जिहानगीर ३८१कों ॥

राख्यो निज तंत्र जो रहै, अप्पैं ताकैहँ काम ओरको ॥ २ ॥

सुभट १ सचिव २ केहि संहरे १, साकिनि जिहिं भरि कान साहके ॥

कति दंडे २ कैद कौ करे ३, कछिदये सरवस्व लौ किते ४ ॥ ३ ॥

निज सासन सद्धि जे नये, उनकों इस अधिकार अप्पये ॥

दोही जिम संकैर दये, सेसहु देस असेस संकये ॥ ४ ॥

॥ अधिरुचिरा ॥

नाथो खुरुम ३९। २ तबहि रिसकरि निजपतिहिं मनाइ यहहि दठ प्रीत

दुरम दुव रहि सद्यद भैजतहुव पुत्रहिं इनन बुलाइ प्रतीत ॥

के नूरजहाँ का अजमेर के हाकिम को सेना सहित बुन्दी पर भेजना ४ अपनी  
माता रूपी राजधानी की निर्लज्जता नहीं देखनेवाले हाडा दयालदास के पुत्र  
के समझाने से ख्वादार अमानतखान का पीछा अजमेर जाना ५ महावत-  
खान का बादशाह जहाँगीर और नूरजहाँ को कैद करना ६ इस कैद करने  
के कारण सहित वर्णन करने की प्रतिज्ञा का अठाईसवाँ २८ मयूख समाप्त हु-  
आ और आदि से दो सौ ग्यारह २११ मयूख हुए ॥

१ पुत्री ॥ १ ॥ २ अपने वश में रचाहुआ ॥ २ ॥ ३ प्राण लेनेवाला ॥ ३ ॥ ४

नष्ट हुए ५ दिये ६ कठिनाई में ॥ ४ ॥ ७ नहीं आया

सुनि अपनैँ पठये दत सय्यद रैन १९२। १ सिरहु यह अब अतिरुष्ट।  
 सासनमें न रहत सुहि साक्षत पाक्षत निजेन विरचि बसु पुष्टा ॥  
 याहीनैँ निज आत जु आसफ करि दूर सु किय और बजीर ॥  
 ओरहु किय पुव्वहु कति आखहि सचिवपन न किय आसफ सीर  
 आसफ विहित ततो जहँ अकिखय सचिव अपर कृत गिनहु  
 सुसर्व ॥

पै इम नूरजिहान प्रसभपर प्रकट कियउ निज सासन पर्व ॥६॥  
 जिहि हेतुहि बुरहानपुरहु सब साह भटन हुव सय्यद संग ॥  
 इच्छेहि नन हुरमहि जिततित अब भनहि करहु हरि डाकिनि  
 भंगे ॥

याहीनैँ सु महावत गढ वह लौ न सकयो तापर हठ लागि ॥  
 ताकीं तरफ पिसुनपनैँ तनि तनि आनिय साह हृदय रिस आगि ॥१॥  
 हुरम पठाइ अपर तहँ हाकैम हँकारयो सु महावत हाइ ॥  
 हुकम विवमैँ दिल्ली हुव हाजरि एहहु सार्धु तवाहि दुत आइ ॥  
 राज्य असेसैँ लाखो विपरीतहि जैँथ न आसिफखान बजीर ॥  
 साह हुकुम प्राननलग साधक विमन सुन्धो बुंदी नृपवीर ॥८॥  
 पठयो तैँदपि महावत खिनपर देखन साह हृदय निजदास ॥  
 ताड़ितकरि जवनेस कुपित तिहिं बांधि तवाहि कैरा दिय बास ॥  
 सो सुनि असह महावत संकित हठि बुल्लयोहु गयो न हजूर ॥  
 प्रैयुत वह जवनेसहिं पकरन देखन लागि जतन डिग १ दूर ॥  
 सय्यद मरन प्रथम इहिं संकैमि करि नैँय लाखि स्वामी प्रैतिकूल ॥

अपने भोजन सय्यदों को नष्ट सुनकरों को भिन्न गाँजा मे १ अपने लोकों का  
 रथन ले ॥५॥ ३ अचिंत ४ तडा ५ अन्य देह पर ७ अपने आला करने के समय में ॥१॥  
 ८ हठी ९ अरुण ले १० नदी वाहने ११ इन धाकनी का नाक धरें १२ सुगंध  
 करके ॥ ७ ॥ १२ महावतों को गदा में निकाल दिया १३ प्रथम के साथी  
 १४ अष्ट १५ जीत १६ सय्यदों १७ जहाँ १८ दहास ॥ ८ ॥ १९ तो ही २० समय पर  
 २१ अक्षयान में रक्षा २२ उद्योग ॥ ९ ॥ २३ चतुर् २४ नीति २५ विद्व



जहाँगीर के भंजियों का बखेड़ा] षष्ठांश-एकोनविंशमयुग (२५३७)

जवनेसहि१ पकरयो कहूँ जावत महिला२ वहहु सकल दुख मूल॥  
कोऊ किमहु सके न कहूँ कहि असौ बिरचि प्रबंध उदार॥  
कहि पुरतें जावत कहूँ क्रीड़न कोपन दुव२हि गहे अघकारा१०।  
बाहुज पंचहजार५००० हुकमवस बिकिख तदपि कुल हड्ड६१  
बिसास ॥

उभय२हि स्याम१९४।८ १९४।१ बुलाइ रु उभय२हि पति१ प-  
तनी२ रकिखय तिन्हपास ॥

दै अति लास तरजि इन दोउ२न तिन्ह दोउ२न भूखन लिय तोरि ॥  
हड्ड६१न सिविर धरे साह१हुगम२जिम जन रंक अनादर जोरि ॥११॥  
अप्प वचन करि जतिन महावत तजिदिय साह१बहुरि पछिताइ ॥  
बिन्नतिकरि साहहु हाहा बदि छमसनं दुरम२हु लिय सु छुराइ ॥  
बलि कछु समय महावतके बस न लागत दाव रहिय जवनेस ॥  
दिय तब खान अमानत वह बलें प्रतिभग करि अजमेर प्रवेस ॥१२॥  
इम किय लेख तखत तुमरो अब हड्ड६१न लिय हजगत प्रभुहोइ ॥  
बुंदी१लैन बहत तुम ए बलि दिछी२लैन कहत मिलि दोइ ॥  
मित्र विदितें जग रैन१नहावत२जुरि जुग२ ठहैदै बहुरि अजेय ॥  
सब बाहुज बदलो मंग सोसनं स्व कैंटक इत पठवहु चेहि श्रेय ॥१३॥  
दिय जब मुररि अमानत यह देख तब हुव साह महावत तंत्र ॥  
जातें कछु न सक्यो करि जतनहु अन निजंगोइ हुगमकृत मंत्र ॥  
करत परंतु जिते स्वामि१कैंथित केसव२कैन जितक सहाय ॥  
दावलागत जवनेस बदलि द्रुत किय अतिकोप वचन१मन२काय३  
भरन चकित भजि तबहि महावत बैसु अधिकार समृद्धि विहाइ ॥

१ स्त्री (नूरजहाँ) २ खेलने को ३ पापी ॥१०॥ ४ क्षत्रिय ५ देखकर ६ इन दोनों  
हाडाओं ने ७ उन जहाँगीर और नूरजहाँ के ८ डेरों में ॥११॥ ९ आपके वचन  
का १० उल्लेख से ११ पत्र ॥१२॥ १२ स्वामी होकर १३ प्रसिद्ध १४ रत्नसिंह  
१५ क्षत्रिय १६ शुभ से १७ अपनी सेना ॥१३॥ १८ पत्र १९ महावतों के आ-  
धीन में २० छिपाई २१ छुरम की सलाह का २२ कहेहुए ॥ १४ ॥ २३ धन २४  
आहवा

स्वजनन सहित सु पै भय संकित इतउत जियन फिरयो अकुलाइ  
आसकखान ११हुरमको अग्रज जत्थे हुतों वह पुब्ब बजीर ॥  
तस अवलंब महावतरटिकि तैंहं धारनप्रान धरयो कछु धीर ॥१५॥  
दिपि इत साह स्वतंत्र स्वदंपति २इज्जत लुट्टन बैर उधारि ॥

स्याम १९४८ जु गोपीनाथ १९३१२ कुमार सुत मिस कछु लिय  
सु दगावल मारि ॥

स्याम १९४१ सु सुनि कैसव १९३६ सुत भजि सठ आयो दुरि  
लकखैरि अगार ॥

नृप परखन पठये जवनेसहु चैवि बुरहानपुरहि इम चौर ॥१६॥  
हम दंपति २भूखन लुटकहुव कैसव २९३सुत यह स्याम १९४१  
कुपुत्र ॥

यातैं रत्न १९२१ हनउ उत आतहि अध निज धोवहु अत्र १ अमुत्र  
तास जनैक कैसव १९३६ पुच्छयो तव निज बलनौयक रत्न १९३१  
नरेस ॥

अकिखय स्याम १९४१ करिय वह अनुचित आयउ हुकुम ल  
खहु अब एस ॥ १७ ॥

कैसव १९३६ कहिय सुत सु इक १ दलि कैलि अप्पन सब  
प्रभु होहि अमंतु ॥

मत बिनु लांघि अटक पुब्बहि मृत तिहिं को अधम गिनै कुलतंतु ॥  
जित तित दुग्हु तजै न जियत जिहिं साह अतुल आगंस अनुसार  
क्यो न हनहिं अप्पन तिहिं सु कहहु भूपति टरत स्वसिरै सबभार  
नृप सुनि तदपि लिखी सुत निकसि रु जाहुदजीर १ महावत २ जत्थ ॥

१ नूरजहां का बडा भाई २ जहां ॥ १५ ॥ ३ जोड़ा सहित ४ लाखेरी के स्थान  
में ५ परीचा करने को ६ कहकर ७ हलकारे को ॥ १६ ॥ ८ हम स्त्री पुरुषों को  
९ लूटनेवाला इस लोक और १० परलोक के पाप ११ पिता १२ सेनापति ॥ १७ ॥  
१३ युद्ध में मारकर १४ अपराध रहित १५ अटक नदी लांघकर पहिले ही मरे  
हुए के समान है १६ अपराध के अनुसार १७ अपने अस्तक का ॥ १८ ॥ १८ तो भी

खुरमका बादशाह होना ] . पट्टराशि-एकौनत्रिंशमयूख (२२३६)

बलि दिप\*छदन+सता१९४११ प्रति बुंदिय स्याम१९४११हिं  
हनहु हुतहि सजि सत्य ॥

निज बस बनत कहहु दुरि निकसन जानि न हनहु अचानक जाइ ॥

जैत१९३११ करन१९३११ बलवंत १९३११ अनुज १९४१२ जुत  
जबहि सता१९४११ चढिगो सु जनाइ ॥१९॥

तदपि सु स्याम१९४११ निडर न भज्यो तैंहैं खगगन खंड भयो  
भिरि खेत ॥

इम नृपस्तन१९२११ अमंतु समुक्ति इत साह१मुंदित हुव हुरुम२समेत ।

पै जवनेस अमित लोलुपपन कहु गैद प्रकटि मरयो तिहिकाल ॥

संवत वेद उरग अष्टि२६८४समय समुक्ते सबहि टरयो हिय साल २०

बीजापुर पंचन तव विन्रति दै रु खुरम३९१२ बुल्लयो निजदेस ॥

भूपहु स्व लिपिछंदन तैंहैं भेजिय आवहु सैजव समय हुव एस ॥

दरकुंचन खुरम३९१२हु सुनि दिल्लिय आइ तखत बैठो तव एह ॥

साहजिहांन३९१२स्वनामलहिरुसबनृप१रुनवाव२बुल्लाइसनेह ॥२१॥

उपदा१ गहि करवाइ निछावरि२ विहित विसासि चहे सब वीर ॥

पट्टुं करि खानमहावत१ बलपति आसफखान१ कियो सु वजीर ॥

बीजापुर सन पुनि सुत१वेगम२स्वीय कुटुंब सु बुल्लि समस्त ॥

अप्पन आन फिराइ तप्यो इम धीसख मंल सठन करि ध्वस्त ॥२२॥

अस दारा४०११रु सुजा४०१२ओरंग४०३ मुरादवखस४०१२ सह

चउ४हि कुमार ॥

तीन३किंमोर चतुर्थ४पृथुर्के तिम सबहि मुदित बैभव अनुसार ॥

समुक्तेन सैरनि पितामहकी सुनि सज्जित सत्त७हि प्रकृति सम्हारि

अकबरपुर सु बहुरि चढि आयउ बटि खिन तत्थहु रहन विचारि२३

\* पत्र १ शत्रुशाल को लिखा ॥ १६ ॥ १ निरपराधी २ प्रसन्न हुआ ३ रोग  
॥ २० ॥ ४ पत्र ५ शीघ्र ॥ २१ ॥ ६ नजराना ७ चतुर ८ सेनापति ९ मन्त्री १० नाश  
॥ २२ ॥ ११ युवा अवस्थावाले १२ बालक १३ मार्ग १४ अपने दादा अकबर का १५  
राज्य के प्रधान अंग १६ आगरा ॥ २३ ॥

आसफखान सचिव प्रति अक्खिय आये नृप आहूत असेस ॥  
 हड्डवतीस तथा पति हड्ड६१न राजा आत न क्यो रतनेस १९३१ ॥  
 सचिव कहिय सीमा थित संभर बिरचि अभय आह्वान बहोरि ॥  
 पातहि द्रुत अहे सुहि किय पुनि जब नृप हुव प्रस्थित बल जोरि १४  
 चवि माधव १९३१२ हरिसिंह १९३१३ रहन बुप द्वै २. हि तनय  
 पठये निजदेस ॥

सचिव बनिक केसव १ सोमानी उत प्रतिनिधि किय अर्पनि असेस  
 अनुज तनय केसव १९३१६ जुत अप्पन सब संभवं समुचित बलसंग  
 पहु रैन १९३११हु पहुँच्यो अकबर इम अवहित निजअंग १ रुउपअंग २  
 मिठापुगहि रह्यो दिन दस १०मित हड्ड६१अधिष्ठ न गयो सु हजूर ॥  
 हुव संसंघ लिखवाइ छेदन हम कीलि तज्यो सु नवहे किम क्रूर ॥  
 अक्खिय साह सु सुनिप्रति आसफ अवकिम छिगहु रमाज न आत  
 आसफ गंग वकीलाहि अक्खिय बदवरुंत न किम नृपहि बुलात २६  
 तापँह कहत बनी तब संत्वर गोवध बहु लाखित तिहिँ गेल ॥  
 होते कोल सत्त ७तउ नाँ हम वधहिँ खर लाखते गो १ बेल २ ॥  
 सुनि सुहि साह अरज आसफसन नृप गोचर दिय बधिक निवारि ॥  
 गंगहिँ रीझ वखासि तब नृप गय साह समार्ज प्रैनति अनुसारि १७  
 कहिय तहाँ नृप प्रति अनुकूलहि पै करि १ हैरि २ संगिय प्रतिकूल  
 कूरमँसंतति १ पुच्छि जथाक्रम माधव १९३१२ कुमार २ चहिय सुख मूल  
 अवहि करी १ हाजरि नृप अक्खिय मनवसँ कितहु हैरी २ उनमत्त ॥  
 सेखाउत १ सिसु माधव २ मुरिरहि गखिय सु लाखन विभव लाहिरत

१ बुलाये हुप १ हाडोती का पति ३ निमन्त्रण (बुलावा) ॥ २४ ॥ ४ कहकर ५ पुत्रों को  
 ६ स्थानापन्न (कायम मुकास) ७ साथ खुलि पर ८ आगरे में ९ साथधान ॥ २५ ॥  
 १० सन्देह ११ पत्र १२ कैद करके छोड़ा था १३ खया में १४ हक मनगीव (भाग्यही-  
 न) ॥ २६ ॥ १५ शीघ्र १६ राजा के देवते हुए १७ गौश्यों को शारनेवालों को  
 रोक दिये १८ सभा में १९ विशेष नज़रता के साथ ॥ २७ ॥ २० परन्तु २१ हरिसिं-  
 ह को विरुद्ध होकर आंगा २२ कछवाहा द्वारकादाल की सन्तान २३ स्वतंत्र हो-  
 कर २४ हरिसिंह उन्मत्त होकर न मालूम कहाँ रहता है ॥ २८ ॥

रत्नसिंह पर खुरमका कृपा करना] पट्टराशि-एकोनत्रिंशमयूख (२५४१)

अप्पहि दिय सासन पहिलैं इम दाँय अधिक माधव १९३।२  
कैहँ देहु ॥

कोटा मुख्य परगनाँ नवक९हिं इम लहि लाखन रखो तिन्ह एहु॥  
अधिपहु किय उपदा१उत्तारन२साह अरज३सु सुनि अकिखय साह॥  
इभ अबलाहु१ बुलाहु२ सुत उभय२ गत नन गिनियत रीझ  
१ गुनाह२ ॥ २९ ॥

वारन लाहु बदिय अनुंगन बलि बार न लाहु जवहि बुंदीस ॥  
पीलुं तब सु आन्यों इभपालन श्रुति तौलन चालन धुतंसीस ॥  
साह कहिय उपदा गज १ सांठि१० रु रक्खहु देहु हमहिं यह २  
रेन१९२।१ ॥

सुहि नृप करत भनिय पुनि सिंसुमस वारन सत्तरि७० लंघन बैन३०  
द्विरंद जंकयो सु रहत खिल दुबरदिन लंघन अट्टरु सट्टि६८ लगाइ  
सूचिय साह परयो अब सिंधुर जान्यों वैल भोजहु अब जाइ ॥  
किय नृप अरज समय रन सम करि इभ यह लाखहु खरो प्रभु अजै ॥  
तोपन फेर बनत सुँहिविधि तब सु इभ लग्यो घुम्नन उठि  
सज्जि ॥ ३१ ॥

असो गज लिय साह परखि इम बलि कहुँ संसंद समय विसेस ॥  
कुमर मुराद४०।४ जनक दहीकच अचत पकरि हुकम किय एस ॥

आपने पहिले १ आज्ञा दी थी २ दायभाग (धन्ड) ३ नजराना ४ न्यौछावर ५  
हाथी को और उन दोनों पुत्रों को बुलायो क्योंकि हम गयेहुए समय की प्र-  
सन्नता और अपराधों को नहीं गिनते ॥ २९ ॥ ६ हाथी को लाओ ७ सेवकों  
को कहा ८ देरी मत करो ९ हाथी १० महावतों ने ११ ताड़ वृक्ष के पत्तों के  
समान कानों को हिलाता हुआ १२ सस्तक हिलाता (धुनता) हुआ १३ नज-  
राना करना तो रहने दो और उसके १४ एवज में यह हाथी हम को देदो  
१५ बालक के समान कहा १६ हाथी के १७ निराहार रहने के वचन ॥ ३० ॥  
१८ वह हाथी पड़ाहुआ है और लंघन में दो दिन चाकी हैं १९ हाथी को २०  
भोजन कराओ २१ आज २२ उसी प्रकार २३ वह हाथी घूमने लगगया ॥३१॥  
२४ सभा के २५ पिता की डाढी के मोल

स्वजनक मंतु कबहु न करहु सिसुरोधक लाखहु डिगहि यह  
रैन १९२।१ ॥

सिखयो मोहि१ सिखेहैं तोहि२ सु आनत दंडि कुपुलन अंत।३१  
सहजहि साह कहिय यह सुतसन भय मन तदपि लहिय कहु  
भूप ॥

मित्र स्वकीय बजीर१ महावत२ रहिय इस सु निर्भय अनुरूप ॥  
महिप बहोरि कहिय तिन मित्रन अतिवय अब जननी सम अहि ॥  
द्वारावति करिहै हरि दरसन जांत मग न अटकै कहूँ जाहि ॥३३॥  
सुल्कहु दै न सु अैन बिसम१ समरपाइ मुरहिँ रनछोर प्रसाद ॥  
यह सासन सूत्रा अधिकारिन देहु लिखाइ अहमदाबाद ॥  
सुहिकरि अरज जवनप्रति सचिवन महिपहिँ लिखित दयोफरमान  
अकबरपुर बहुदिन रहि नृप इस संबविधि तुष्ट कियउ सुलतान ॥  
सु पुनि बजीर१ चमूपति२सम्मत पहु बुंदिय आयउ खिन पाइ ॥  
वासवसैल १९४।२।१ सता१९४।२।२ बलवंत १९१।२।३ रु जैत्र  
१९३।१।४कनक १९३।१।५प्रनमिष्य मग जाइ ॥

प्राबिसि नरेस समुख निज पत्तन परि सिर प्रनत प्रंसू मुख पाय ॥  
थप्पन निजकुलभव बैभव थिर अप्पन अखिल निरखि वषय ॥  
आप२ ॥ ३५ ॥

सिख प्रेमित रहि तहँ दस १० आमने वय खिल तनु लखि  
विरधि विभाग ॥

१ अपने पिता का २ अपराध ३ रोकनेवाला "जहाँगीर की आज्ञा से शाहजहाँ  
को कैद किया था इसकारण रत्नसिंह को रोकनेवाला कहा है" ४ घर में ५  
५ पुत्र से ६ अपने मित्र ७ अपने स्वरूप के अनुसार ८ अत्यन्त बृद्ध ९ मी  
माता है ॥ ३३ ॥ १० कर (राहदारी) ११ मार्ग में जाने और आने का १२ प्रस  
न्नता १३ आगरा में १४ प्रसन्न ॥ ३४ ॥ १५ समय पाकर १६ इन्द्रशाल १७  
शाल १८ नमस्कार किया १९ माता २० आदि के चरित्रों में नमस्कार कि  
२१ अपने कुलवालों के २२ सब २३ खरच ॥ ३५ ॥ २४ सीख के माफिक  
दस महीने २५ शरीर की बाकी अवस्था देखकर

राजा का माधवदास को कोटा आदि देना]षट्पराशि-एकोनविंशमयूख (२५४३)

नृप दिय तत्थ मही सुत१\*नति२न रक्खि अधिक माधव  
१९३।२ दिसा राग ॥

साह हुकम माधव१९३।२ हित समुक्ति सु बिभव दियउ तिहि  
सबन विसेस ॥

पुव्वहि दिय कोटा१रनैजयपर पुनि वसुमय अव अठ्ठप्रदेस ॥३६॥

खर्जूरी १ पुरंडकखेटक २ केथोनि ३ रु आवा ४ कनवास ५ ॥

मधुकरणद्विदिग्घोद७रहल८मिलि अष्टक८यह ग्रामक सह आस

चपल गैइंद१हैइंद२ रु चामर३ससन४बसन५भूखन६धन७ सत्थ ॥

कोटासहित परगना क्रमकरि इम नव९दिय सुतमाधव१९३।२अत्थ ॥

जाँववती १९२।३ माधव १९३।२ जननी जब पाइ स्वसुत दिग  
रहन प्रसंग ॥

नानत१आदि वीरतट निर्वसथ पंच५लिखित लिप पट्ट स्वसंग ॥

प्रसंग१स्वसंग२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

रैन१९२।१मरन पीछे यह रानी पुरकोटाहि रही सुतपास ॥

पुत्रहि के सचिवन लैछे पुनि याके ग्राम तबहि उत आस ॥ ३८ ॥

माधव १९३।२ सुत पीछे सु प्रसू मृत गिरि दुव हय सासि १७२७  
सक सुतगेह ॥

कोटा बंस तबतै लाहि कारन अवलग निर्वसथ पंचक५एह ॥

सत्त७हि पुव्व कहे माधव सुत२६।२२तिनमें पंचक५ हे कुल तीन ॥

हइन भेद छवीस तीनहुव माधानी कुल पंच प्रमान ॥ ३९ ॥

रीभू मिली हरि१९३।३ को कापरनि१ रु पिप्पलदा२ अव दि-

\* पोता को १ प्रीति २ पहिले २ बुद्ध विजय करने पर ३ धन सहित

॥ ३६ ॥ ४ पुरण्डखेडा ५ हाथी ६ चाँड़ा ७ चन्द्राचिन्ह (ओरछल) ८ अर्थ ॥३७॥

९ अपने पुत्र के साथ १० नावता नावक ग्राम आदि ११ चामल नदी के इस  
किनारे १२ ग्राम १३ लोहे (दासिल लिया) १४ कोटा के राज्य में हैं ॥ ३८ ॥

१५ माता १६ पुत्र के घर में १७ कोटा के आधीन ये पाँचों १८ ग्राम १९ कुल  
को फैलानेवाले ॥ ३९ ॥

य महिपाल ॥

सारसला २ रु मऊ १ हृद सतक ७।९ साह अधिक नगिनै जिम साल ॥

निवसथ नव ९हि हरि १९३।३हि ए दिय नृप ते बलि भिन्नहि

भिन्नवताइ ॥

इक १ कापरनि परगनाँ जुत वह प्रथम दई सु रही खिन पाइ ॥४०॥

अठ्ठ ८ कहे पहिलै हरि १९३।३ अंगज चउ ४कुलधर तिनके कु-

ल च्यारि ४ ॥

हरिके २७।२३ बजि सु भिदा हुव हड्ड ६१न सत्ताबीसम २७ क्रम

अनुसारि ॥

दिय नृप कछु बालूहेरा १दिक जगनाथ १९३।४हिँ मितवट जैड जानि ॥

त्रय ३मुत केसव १९४।१आदि कहे तस तँहँ मध्यम २सुरहो कुल

तानि ४१ ॥

जैत्र १९४।२ तथा फतमल्ल १९४।२ विदित जुग २ जस अभिधा

तस कुल जसजुत ॥

हड्ड ६१न कुल अठ्ठाबीसम २८हुव प्रथित भिदा जगनाथपउत्तर २८।२४,

इम पुत्र १न बसुधा बट अपिपय बलि दिय नत्ति २न व्याहि विभाग ॥

अग्रिम किरन सुपै कहिहँ अब रक्खहु खिलहिँ सुनन अंजुराग ४२

बासवसल्ल १९४।२।२ सता १९४।१।२ वलवंत १९१।१।३ रु जैत्र

१९३।१।४ करन १९३।१।५ केसव १९३।६ प्रति जल्य ॥

स्याम १९४।१ हन्यो सु सुमिरि सकुचे सब मिलतहिँ नाइ त्रिपा

करि मत्थ ॥

सब उरलाइ कहिय हसि केसव १९३।६मन्नहु मोहि न स्याम १९४।१

समान ॥

१ किर ॥ ४० ॥ २ पुत्र ३ भेद ४ अल्प वन्द ५ मूर्ख जानकर ६ वंश को बढ़ाने वाला ॥ ४१ ॥ ७ नाम ८ प्रसिद्ध भेद ९ पौत्रों को १० अगले मयूख में ११ प्रीति ॥ ४२ ॥ १२ जहाँ १३ लज्जा करके मस्तक नमाया



रत्नसिंह की आताका द्वारकायात्रा करना ]षष्ठराशि-एकोनविंशमयूख (२५४५)

उभयश्मरे सु टरघो दुख अप्पन हे खल\* ब्रात्य विरचि पथ हान ॥४३॥  
नृप तिम बांटे मही सुत१ नत्ति२न रहि दस१०मास+स्वपत्तन  
रैन१९२१॥

बुरहानपुर१ गमन सासन बलि अप्पिय साह लाखहु जित अैन ॥  
जननी पयन प्रनमि अप्पिय जब मग सह सुख जावन फरमान ॥  
संगकियउभटसेर१६२१पता१६११सुत+द्वारावतिदेखनधरिध्यान ४४  
रक्खि स्वपुर पंच ५ हि ते रच्छक लौंसिसु भाव १९५१सता  
१९४१सुत लार ॥

पहु बुरहानपुरहि तब पहुँचिय पथ पृतना परि प्रथित प्रसार ॥  
इत नृप माइ गई द्वारावति मिति रस बसु सोलह१६८६सक माँहि  
जे जनपद जन संग भये जिन्ह निजनिज बसु खरचन दिय नाँहि ॥४५॥  
द्वारावति पहिले प्रभुमंदिर प्रारंभिय सुर्जन १६०१ छितिपाल ॥  
वह पूरन करवाइ यहै अब क्रमि तहँ पत्त प्रतिष्ठितकाल ॥  
लक्ख इक १ रु तेतीस ३३ सईस १३३००० लग लहि अवसर  
दम्भन व्यय लाइ ॥

आदि त्रिलोक तदनु सुंदर१यह रक्खिय नाम प्रभुहि पधराइ ॥४६॥  
इम रनछोर परसि मुरिआवत सो मग मरिग पता १९११सुत  
सेर १९२१॥

बुद्धिय चंद्र१९२१पता१९११हुमरे बलि इत दक्खिन बनि जम आहेर  
सारथल१रु हिंडोलिय२तिन्ह सुत जेठे दुव२हि धनीहुव जत्य ॥  
आई पुर नृप रैन१९२१प्रैस इत अर्जित१पुण्य२वितैरि१बहु अर्थ२  
जे रनथंभ लोही प्रतिमा जुग२इक१खिला रहिय सु पै अभिराम ॥

\* संस्कार हीन ॥ ४३ ॥ † अपने नगर में ‡ द्वारका ॥ ४४ ॥ १ श-  
मुशाल के पुत्र भावसिंह को साथ लिया. २ सेना ३ प्रसिद्ध ४ देश के मनुष्य  
५ धन ॥ ४५ ॥ ६ चलकर ७ गई ८ प्रतिष्ठा होने के समय ९ जिसपीछे ॥ ४६ ॥  
१० यमराज रूपी शिकारी बना ११ माता १२ सम्पादन १३ दान १४ यहां ॥ ४७ ॥  
१५ मूर्तियां १६ बाकी

रचि मंदिर २ वाराँ पधराई श्री कल्याण स राजसतनाम ॥  
 प्रभु मूगति कोउक पधराई रचि मंदिर ३ गोपालपुराहु ॥  
 खटपुर निकट अबहु वह पिखवहु जब पहु सिंह हनन उतजाहु ॥  
 बापी इक १ पुव्वहि वनवाई रैन १९२। १ प्रसू बुंदियपुर रम्य ॥  
 विरचिय तिमहि मऊ ग्रामनू बिच गोपाना दूजी २ जलगम्य ॥  
 केसव १९२। ३ पुरचोमाँ उपवन १ किय नृपमाता इक १ रुचिर नवीन ॥  
 मंदिर त्रय ३ बापी द्वय २ मंजुल करि इक १ बेल सु जस जग कीन ॥ ४९ ॥  
 तिय १ सुत २ साह बुलाये इत तब गो संगहि गोपाल सु गोर ॥  
 लखैरी न दई चिति सु लिपि अण्णिय थान अधिक तिहिँ ओर ॥  
 संभर सुत बुल्लयो हरिसिंह १९३। ३ सु पठयो नहि भयजानि नृपाल ॥  
 तातैं नव्य परगनाँ सत्त ७ हि करि रिस साह लये ततकाल ॥ ५० ॥  
 रायहरि १ हु बुल्लि सु रानाउत भीमतनय उँपकृत नन भुल्लि ॥  
 द्रंग द्रये समुचित टोडा १ दिक् ताहि वडे नृप आदर तुल्लि ॥  
 सत्त ७ हि सचिव हुकम यह सुनतहि बुंदीपुर लिय नृपहु बुलाइ ॥  
 इक गोर सु रनछोर १ कठयो वह खट ६ दिन लरि करि अरि बहु खाइ  
 साहजिहान ३ ९ १ खिजत पुनि यह सुनि आसफ १ सहित महा वतँ २ आनि  
 कहिय इतरै हेलनै नृपसिर किम मन हजरत ग्रथुँत लिय मानि ॥  
 भेज्यो न हरि १ ३ ९ ३ जवनपति भाखत उन अखिय मूढ सु उनमत्त  
 जनै कहुकोँ न कुपुल गिनै जहँ बढहु कितीक गिनै खिल वत्त ॥ ५२ ॥  
 ज्यान १ रु माल २ बडप्पन ३ भू ४ जुत सो सब गिनत हजूर सहाय ॥  
 वहुरि विहितै उपकार विचारहु निरखहु जुलम हुँरमकृत न्याय ॥  
 इम नृपतैं रिस टारि दईउत तदपि परगनाँ सत्त ७ उतारि ॥

१ हे प्रभु रामसिंह ॥ ४८ ॥ २ रत्नसिंह की माता ने १ जाग ॥ ४९ ॥ ४ लि-  
 खावट ५ नवीन ॥ ५० ॥ ६ रायसिंह को ७ सीसोदिया भीमसिंह के पुत्र का  
 उपकार नहीं मूलकर ८ उचित ९ जोधपुर जयपुर आदि बड़े राजाओं के समान  
 आदर करके ॥ ५१ ॥ १० महावतल्ला ११ और १२ अपराध १३ बलदा १४  
 पिता को भी ॥ ५२ ॥ १५ उचित अथवा कियेष्ट १६ नरजहां का कियाहुआ

दिय टोडादि चउ४हि \*सीसोदहिं टोंक† प्रमुख‡ कतिमत कति टारि  
 §पुरउजिम्ह रु इत रान उदमपुर लिय तिनदिनन करन परलोक ॥  
 तब जगतैस तनय जेठो तस इन हुय लहि गहिय निज ओकै ॥  
 इतनूपरैन १९२।१ बिभनतउ अवहितै हायन दुव २३ किखन ३।२ रहि हहु ६१  
 तिम्मरनि १२ आसेर १ अयनि तिम वीर अपर थप्पिय बयवहु ॥ ५४ ॥  
 दिछी सीम बढावत तय ३ दिस आंटे अति बल खट्टिय जसं अप्प ॥  
 दब्बिय कछु पूरव १ तिम दकिखन २ दलि पच्छिम ३ सहावधि दप्प ॥  
 लौ अरिगाम १ इत १ सु वरदा १ लग इत २३ क १ टारि दोलत आबाद ॥  
 सह इलपुर २ रोजा २ रु असाई २ संक्रमि किय गोदा २ जय साद ॥ ५५ ॥  
 पुंजर तट धूलिक १ नासिक पुर २ यंबक ३ दुर्ग अवधि तनि त्रास ॥  
 पूरव १ गति गोदा १ तट तट पुनि सूरि नंदेरि रह्यो दुव २ मास ॥  
 वसुधा इम तापी १ गोदा २ बिच इक दोलत आबाद १ हिं उजिम्ह ॥  
 कहूँ दब्बिय १ कहूँ जित्ति मै नति किय २ जितंति कंमित अमित  
 बल जुजिम्ह ॥ ५६ ॥

सुलिखि करार कहे जवनन सनरैन १९२।१ तबहु समुचित हितर किख  
 हतमद किय पच्छिम १ मरहहु २ रु सैसै दुर्दिस १ सैस २ हु जय सकिख  
 किय नंदेरि सनहु चढि निकटहि कालीवाइ बहोरि मुकाम ॥  
 तत्थ हु रहिय धुंनी गोदा तट धैरनीधव तानित पट धाम ॥ ५७ ॥  
 विकिखे दुकाल परयो तिहिं बच्छर अंतिके अर्थन जनन दिय अन्न

\* शशिषोदिया रायसिंह को † टोंक आदि ‡ कितनों ही के मत से  
 तो टोंक आदि दिये और कितनों ही के मत से टोंक को छोड़कर ॥ ५१ ॥  
 § शरीर छोड़कर "यहां पुर शब्द शरीर वाचक है" ? कर्णसिंह २ राजा ३ अ-  
 पने घर में ४ लदास ५ सावधान ६ वर्ष ७ दक्षिण में रहा ८ बृद्ध अवस्थावाले  
 ने ॥ ५४ ॥ ९ फिरकर १० यश संपादन किया ११ पर्वत का नाम है १२ जय  
 का घर; अथवा जय का शब्द किया ॥ ५५ ॥ १३ गोदावरी नदी के किनारे कि-  
 नारे १४ तापी नदी और गोदावरी के बीच में १५ दोलताबाद को छोड़कर १६  
 नज़र १७ फिरकर ॥ ५६ ॥ १८ उचित १९ बाक़ी का २० गोदावरी नदी २१ भूपति  
 २२ डेरें तानकर ॥ ५७ ॥ २३ देखकर २४ वर्ष में २५ समीप के २६ निर्धन लोगों को

केसव सचिव बलहु बैसु चय करि सब रक्खिय सवरीति प्रसन्न  
तैंहें ज्वर हुव नृपकै एकंतर आयु अवधि बनि विधि बलवान् ॥  
अगहनसितदसमी १० वपु उज्ज्वल तीजे श्वौर तृतीयक तान ५८

॥ वैतालीयम् ॥

सक सर दुव तर्क भू १६२५ समा, ऋतु पाउस ३ हुव जन्म रैन १९२१ को  
पुनि चउ खट अष्टि १६६४ की प्रसा, ग्रीष्म २ में नृपता तथा गही ५९  
गंज अहि रस भू १६८८ समा गये, अब हेमंत ५ सरीर उज्ज्वल ॥  
वर्ष त्रिंशुत सठि बै भये, इस गोदातट स्वर्ग जो यहै ॥ ६० ॥  
क्रम व्याहनके जथा कही, रानी नव ९ नरनाह रैन १६२१ कै ॥  
रानी दुव २ जीवती रही, तब तिनमें दूजी १९२१ रूतीसरी १९२१ ॥ ६१ ॥  
सीला १९२१ दिक सेस ७ सुंदरी, महिपतिसें पहिलैं सबै मरी ॥  
जैहें दूजी २ संगही जरी, रानी राजकुमारि १९२१ तोमरी ॥ ६२ ॥  
ऊँढा बुंदी हुती उभै २, जिनमें दूजी २ तोमरी १९२१ जरी ॥  
चित्त मरन जास नाँ चुभै, जो तीजी ३ किम चालुकी १९२१ जरी ॥ ६३ ॥  
माधव १९३१ जगनाथ १९३१ माइ सो, कोटा जाइ रही तनूजकै ॥  
जगनाथ १९३१ हु संग जाइ सो, अंग्रजके ढिगही रह्यो उहाँ ॥ ६४ ॥  
सुतकोसुत सत्रुसल्ल १९४१ सो, सबबुंदी मृतकर्म सद्धिकैं ॥  
मानी रन रंगमल्ल सो, भूपतिभो दानी दधीचसो ॥ ६५ ॥

॥ गीतिः ॥

नव ९ ठान अघैर किय नव, सिर तिनके रत्न दोलत २ समज्या ॥  
रत्न निवास ३ उपरिभव, ताके सिर रत्नमहल ४ विरचिय त्यों ॥ ६६ ॥  
नारीकुंजर ४ नामक, अब सोही रत्नमहल ४ विदित इहाँ ॥  
अरु तससिर अभिरामक, जु रत्नमन्दिर ५ दसगुलक जानौं ॥ ६७ ॥

१ धन के समूह से सेना को २ शरीर छोड़ा ३ मंगलवार ४ तीसरे प्रहर ॥ ६८ ॥  
५ प्रमाण ॥ ६९ ॥ ६ सम्बत् ७ शरीर छोड़ा ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ८ विवाहिता  
॥ ६३ ॥ ९ पुत्र के १० बड़े भाई के साथ ॥ ७४ ॥ ११ पोता ॥ ७५ ॥ १२ नीचे  
१३ सभा ॥ ७६ ॥ १४ सुन्दर १५ खरबूजे के आकार

अंतदपुरं जुर सवती, ताकेसिर रत्नमंडप ६ रच्यो त्यों ॥

चारु रतन १९२१ जस चवती, खट ६ महलन तिय है इहाँ रुपाती १६८१

सवती १ चवती २ अन्त्यानुपासः ॥

राजतं विहितं मनोरम, परिखा १ प्राकार २ है २ हि निजपुरकै ॥

छार १ रतन २ मुख देऊँ, उँपवन जुग २ थान रतन १ ९२१ रचित इते १६९१

इतिथी वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यगो पट्ट ६ राशो वुन्दीश-  
रत्नसिंहचरित्रे महावतखाननिष्कासनार्थनूरजहां जहांपितामराधिकारि  
गमनानन्तरदिल्ल्यागतजहावतखाननूरजहां जहांगीरवन्दीकरणा, र-  
क्षितात्ममहावतखाननूरजहां जहांगीरकारागाननिःसागणा, कारागा-  
रखालंकारादानहट्टोपर्यप्रसन्नयवनेन्द्रसेनाप्रस्थापनरूपामसिंहवधा-  
नन्तररत्नसिंहोपरिप्रसन्नताप्रकटन, जहांगीरमरणा नन्तरवीजापुर-  
दिल्ल्यागतधृतशाहजहांनामधेयशुभदिल्लीन्दीभवन, दत्तमहावतखां  
सेनानीत्वासफखांमन्त्रित्वाधिकागंदिल्लीसमाहृतसकलभुभुजंगानंत  
रावसरत्नसिंहसनाकारणा, यवनेन्द्रयाचितहरिसिंहमाधवांसिंहकुमार

द्वयदत्तसमयातिक्रमणोत्तरलोखितस्वप्नसुधारकायात्मानुकूलज्ञापत्र-  
रत्नसिंहबुन्दयागमन, विभक्तस्वपुत्रपौत्रभूभागद्वारकाप्रस्थापितस्व-  
मातृकसमाक्रान्तदक्षिणाराष्ट्रयवनेन्द्रराज्यविस्तारण, स्मृतभीमसिं-  
हसेवयवनेन्द्रशाहजहांशैर्षोद्वारायसिंहटोडाराज्यप्रदानपुरःसरमहाम-  
हाराजसमत्वापादन, उदयपुरमहाराणाकर्णसिंहमरणोत्तरराणाजग-  
तसिंहपट्टप्रापण, दक्षिणदेशयवनेन्द्रराज्यविस्तारकबुन्दीशरावरत्न  
सिंहकालीवापीनामस्थलतनुत्यजन, रत्नसिंहसमयनिर्मितस्थानग-  
णानमेकोनत्रिंशो मयूखः ॥ २९ ॥

आदितो द्वादशोत्तरशततमः ॥ २१२ ॥

बुन्दीशरत्नसिंहसमकालीनाधिकारपूर्वायणे पट्टो राशिः ॥

इति श्रीमदखिलमहीभून्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलि-  
न्दमुखरितचरणचिन्हिताऽऽरातिचूड बुन्दीपूर्विल्लासिनीविलासि-चाहु-  
वाण-चूडामणि-भारतीभागधेयहृष्टोपटंकिसहाराजाधिराज-रावराजे-

देकर अपनी माता का द्वारका की यात्रा के अनुकूल फरमान लिखवाकर र-  
त्नसिंह का बुन्दी आना ६ रत्नसिंह का अपने पुत्र और पौत्रों का वन्द देकर  
माता को द्वारका भेजने के पीछे दक्षिण में जाकर बादशाह के राज्य का  
विस्तार करना ७ भीमसिंह की सेवा का स्मरण करके बादशाह शाहजहां  
का शीषोदिया रायसिंह का टोडा का राज्य देकर बड़े राजाओं के समान ब-  
नाना ८ उदयपुर के महाराणा कर्णसिंह के शरीर छोड़ने पर राणा जगतसिं-  
ह का पाठ बैठना ९ दक्षिण और पश्चिम दिशा में बादशाह के राज्य बढ़ाने-  
वाले बुन्दी के राव रत्नसिंह का कालीवाई नामक स्थान पर शरीर छोड़ना १०  
रत्नसिंह के समय में बननेवाले स्थानों की गणना का उन्तीसवां मयूख स-  
माप्त हुआ और आदि से दो सौ बारह २१२ मयूख हुआ ॥

श्रीमान् सत्र राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प सम्बन्धी मकरन्द  
(गुणरस) रूप मद्य से मस्त हुए भयों से शब्दावमान चरण से चिन्ह युक्त  
किंच हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुन्दीपुरी रूपी श्री के विलासि, चहुवाणों  
के शिरोमणि, मरस्वती है दाघभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवा-  
ले (पूर्ण विद्वान्) हाडा पदवीवाले महाराजाधिराज महारावराजेंद्र श्रीरा-

न्दश्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगिरादिषड्भाषावेशमुभ्रूभुजङ्गका-  
 षपाऽक्षपारकर्णधारवीरमूर्ति-चक्रि-चरणारविन्दचञ्चरीकचारुचम-  
 त्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजमिश्रणासुकविसूर्यमल्ल  
 विहितवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वाश्रयसो रावरत्नसिंहः १९२।१ चरित्र-  
 समयसमानाऽधिकरणाकोदन्तवर्णनं पटौ राशिस्समाप्तः ॥ ६ ॥

॥ समाप्तमिदं पूर्वायणम् ॥

इतिश्री नीतिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपराय  
 ण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदावारहठ-चारणकुलावतंस-शाहपुराप्र-  
 तोलीपात्र-सुयोग्यपितुरऽवनाडसिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याशृङ्गारनाम  
 जनन्याः प्राप्तप्रसव-पालन-वात्ताशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितेराऽऽज्ञाकारि  
 भिराऽऽत्मजैः केसरीसिंह-किशोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽ  
 धिना कवि-कोविदनिजमातुलंकविराजश्यामलदासाऽऽप्तकाव्यशि-  
 क्षेणा, सन्तोषाऽऽदिसहृणसपन्न-विद्वच्छिरोमणि-परमवैष्णव-रामानु  
 जमम्पदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽढ्यगुरोराऽऽसादितसंस्कृ-

मासेन्देवकी आज्ञा से, संस्कृत आदि छः भाषा, रूपी गणिकाओं के पति का-  
 व्यरूपी समुद्र के कैवर्त्त (लेखक) वीरमूर्ति विष्णुभगवान् के चरणारविन्द के  
 अमर मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले चारण गण के सूर्य चण्डीदान के पुत्र मि-  
 श्रण (मीशण) जात्या के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचेहुए वंशभास्कर महाचंपू के  
 पूर्वायणमें चण्डीके श्रुपति रत्नसिंहके समय के समान है अधिकार जिसका ऐसे  
 वृत्तांत के वर्णनका छठा राशि समाप्त होकर इस ग्रन्थ का पूर्वायण समाप्त हुआ ॥

श्रीभुव नीतिपुण-बुद्धिविशारद-वज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण  
 धर्ममूर्ति वीर उदार सोदा वारहठ जात्या के चारण कुल के सुकुट शाहपुरा  
 के पालनपति सुयोग्य पिता ओनाटसिंह के पुत्र ने, पंडिता सखारवाई नाम  
 माना से पाया है जन्म पालन और बालपन का शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा  
 पाये हुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंह से भिद्यगडे  
 है जानेवाले समय में जानेवाली मन की चिन्ता जिस है, पंडित कवि अपने  
 माना कविराज श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, संतोष आदि  
 गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परम वैष्णव रामानुज मम्पदायि श्रीम-  
 दाचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, पूर्ववश में

तविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणात्त-शाहपुराधिपराजाधिराजो-  
पटङ्गिनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-रघुवंशीय-गुहि-  
लोत्त-मेदपाटदेशमऽधिपोदयपुराऽधीश-सज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न-महा-  
राणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारि-महाराणाफतैसिंहवर्म, भा-  
नुवंशभूपणा-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप-जोधपुरेश-राजराजेश्व-  
रमहाराजयशवंतसिंहवर्मभ्यो लब्धाऽतीवदान-मान-स्वर्णरचितपाद-  
भूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथातदुत्तराधिकारितत्तुल्येप्रीतिपुरुःसरप्रति-  
पालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलपि-  
तुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्तैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवा-  
सिना कविवरद्वारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां  
पष्ठो राशिः, तत्र ग्रन्थस्येदं पूर्वायणं समाप्तिमगमत् ॥

पैदा हुए रघुवंशीय राणात्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाह-  
रसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशीय गुहिल रा-  
जा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गु-  
णों को समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठने  
वाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के सुकु-  
ट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराज जसवंत-  
सिंह वर्मा से पाया है दान बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण  
आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक पा-  
लना करनेवाले मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिल गया है  
पढ़ी हुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मि-  
त्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे श्रेष्ठ कविवा-  
रहठ कृष्णसिंह की रची हुई उदधिमन्थनी नाम टीका में छठा राशि समाप्त  
हुआ और इस ग्रंथ का पूर्वायण भी समाप्त हुआ ॥



॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ शत्रुशाल्यः १९४।१ चरित्रप्रारंभ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ औपच्छंदसिकम् ॥

\*सूचितं सक १६८८ रत्न १९२।१ संभरी सो,  
कालीबाइ विहातभो तनूँकों ॥

संगहि हो भावकेसरी १९५।१ सो, करतभयो सिसु वै परेतकज्जै ॥१॥  
चित करि गोदातटी चिताकों, सुभट सनाभि १ सगोत्र २ आदि संगी ॥  
तब सब बिधि सद्धि दाहि ताकों, अठ्ठ ८ सैमा बयही लही बडाई १  
सूनु सता १९४।१ कों तहाँ प्रसंसी,  
लखि भाव १६५।१ हिं नृप संग लैगयो हो ॥

बालवयहु अस्थिपाल बंसी, सबन खुरंधरभावमैं सराह्यो ॥३॥  
सोमानी तत्थ संभरीको, केसवदास अमात्य मंत्रकर्ता ॥

नृपको सब प्रेतकर्म नीको, भाऊ १९५।१ करकरवाइ भैंद्र भास्यो ४  
सक वसु अहि अष्टि १६८८ अब्द सोहू,  
भौ अतिमिर्त दुकाल खानि भैंको ॥

तँह केसव मंत्रि मुख्य तोहू, दलं निजभाँहि सुकालही दिखायो ॥५॥  
॥ दोहा ॥

बालक हाँयन अठ्ठ ८ बय, भाऊ १९५।१ कुभर अभंग ॥

सता १९४।१ तनय सद्धयो सुमति, सकलकृत्य बिधिसंग ॥६॥

\* कहे हुए संवत् में चहुवाण रत्नसिंह ने कालीबाब नामक स्थान पर शरीर छोड़ा ? भावसिंह साथ था जिसने बालक अवस्था में ही २ प्रेत कार्य किया ॥१॥ बुद्धि पूर्वक गोदावरी नदी के किनारे पर चिंता करके ३ सपिंड भाई ४ वर्ष ॥ २ ॥ ५ शत्रुशाल को पुत्र प्रशंसावाला वहाँ था ॥ ३ ॥ ६ मंगल ॥ ४ ॥ सौलह सौ अठ्ठासी के प्रमाणवाले ७ संवत् में ८ अत्यंत दुर्भिन्न हुआ ६ भय की खानि १० अपनी सेना में ॥ ५ ॥ ११ वर्ष ॥ ६ ॥

## ॥ पटपात ॥

सब सिसुहृत्थ सधाइ सचिव केसव सोमानिय ॥  
 भाव१९५१ कुम्भर\*निजभोन जबहि पठयो जो मानिय ॥  
 सब बल भटन बिसासि लाखन न दयो दुकाल लैव ॥  
 अधिक बंटी वैसु१ अन्न२ सुदित रखे सब भानव ॥  
 इहि नाम अपर२ लहि हेतु यह दलथंभन हुव जगविदित ॥  
 नृपसौंहु अधिक सूबा निखिल जिहि सम्हारि लिय पुब्वजित  
 पुनि दिहिय लिखि पत्र अरज पठई केसव यह ॥  
 अधिप. रैन१९२१ गृह अधिप सता१९४१ अब रहिय सुतासह ॥  
 हमहिं सिक्ख जो होइ जाइ बुन्दी लिवाइ जिहिं ॥  
 हजरत आइ हजूर चरन चुबै अवसर इहिं ॥  
 सुनि साह गिनि सु पँटुतम सचिव अवहित समुक्ति प्रबंध उत  
 दिय देस सिक्ख बुंदिय दलहिं जब वह आयउ सबनजुत ॥८॥  
 आतहि केसव एह सचिव बुन्दियपुर बलसह ॥  
 सरल सता१९४१ अवनीस मिल्यो हिय लाइ अमित मंह ॥  
 सुमति कहिय तब सचिव हृदय१९२१ बाबा हकारहुं ॥  
 त्रैपा अधिक अव. तदपि विहित सँदन मन्नहु बह ॥  
 सुनि सोहि हृदयनारायन१९३१हु जानि न निहिय जात जन ॥  
 पठई कहाइ क्यों हठ परहु नैकम मन सुत नैकसन ॥९॥  
 नृपजननी इत निपत सुनत सुत मरन असह सहि ॥

\* अपने घर (बुंदी) १ लेशमात्र २ धन ३ मनुष्य ४ कारण पाकर उस अमात्य  
 का दूसरा नाम ५ सब ॥ ७ ॥ १ सो उस सहित अर्थात् उस शत्रुशाल सहित  
 हमको सीख होवे तो ७ अत्यन्त चतुर ८ सावधान ॥ ८ ॥ ९ सेना सहित १०  
 उत्सव से ११ बाबा हृदयनारायन को बुलाओ १२ लज्जा १३ उचित १४ सा-  
 धन करने के लिये १५ निर्लज्ज १६ नासिका, भीमसिंह श्रीपोदिया से युद्ध में  
 भागजाने के कारण हृदयनारायन को नकदा की पदवी मिली थी १७ पुत्र को  
 नासिका से अर्थात् पुत्र नासिका युक्त है और मैं नासिका हीन हूँ ॥ ९ ॥

असन रहित चउ४ अँद रँच पय करि जीवत रहि ॥  
 मरिहैं भावी समय सु तो दुव नव सौलह१६९२ सक ॥  
 पै तस खिल दुवर पुत्र अबहि पाहुन किय अंतक ॥  
 सूच्योजु हृदयनारायन१९२।२सु बुन्दी नायउ लज्जवस ॥  
 वपु तजतभयो छिप्रहु बहुरि तिमहि मनोहर१९२।३अनुज तस ॥ १० ॥  
 मऊनगर तव महिप सचिवबानिज केसव सुत१ ॥  
 केसव१९२।३सुत तिम करन१९३।१दुवरहि हाकिम पठये हुँत ॥  
 वीर अखिल बलि बुल्लि सता१९४।१ सूचिय यह सासन ॥  
 रैसा विभजि प्रभु रैन१९२।१ सबन अप्पिय प्रभुतासन ॥  
 सबही सम्हारि निजनिज सदन आवहु स्वत्व जमाइ सब ॥  
 दिछियप्रयान वनिहैं द्रुतहि करिहो कज विलंबि कब ॥ ११ ॥  
 विभजि रैन१९२।१नृप जवहि दायभागिन वसुधा दिय ॥  
 निज नैतो तव नवएहि बंट पहिले क्रम व्याहिय ॥  
 संता१९४।१व्याह हुव सत्तइंद्रसल्ला१९४।२दि अनुज इम ॥  
 महासिंह१९४।१लग समहैं तरुन व्याहे संभव तिम ॥  
 विरचहि विवाह भावी बहुरि म्याम१९४।८रहित अँदहि सहज  
 सबकेहि भूत१ भावी२ सुनहु बढियत व्याह१अपत्य२वैज ॥ १२ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

भिच्छुक वधिक जोधपुर भो उदय भूप,

१ भोजन किये बिना २ वर्ष ३ थोड़े से दूब से ४ आगे आनेवाले समय में ५  
 याकी के दोनों पुत्रों को ६ चमारों जने पाहुने किये अर्थात् मरगये ७ नहीं  
 आया ८ क्षीत्र ही ९ उसी प्रकार उसका छोटा भाई मनोहरदास मरा ॥ १० ॥  
 १० क्षीत्र ११ क्षुमि के दंड करके १२ घर में अपना अपना अधिकार जमा कर आ-  
 यो ॥ ११ ॥ १३ विभागकरके १४ दायभाग पानेवाले भाइयों (रत्नसिंह के पुत्रों)  
 को १५ गते १६ उत्तमव सद्धि १७ पहिले हुए और आगे होंगें सो कहते हैं सो  
 पुत्रों १८ संस्तान का चलना अर्थात् बढ़ना ॥ १२ ॥ १९ भिच्छुक लोगों को मार  
 नवाला

जाको सुत तीजो३ नृप दलपति नाम जास ॥  
 जाको बंस मालवमें पावत प्रभुत्व भई,  
 तनया कनिष्ठा स्यामकुमरि१९४११ सनामा तास ॥  
 भावसिंह१९५११ जेठो१ जनि पीछें जो सपुत्रा भई,  
 आनी सता१९४११ मानी कुमरानी यह जेठी१ आस ॥  
 छत्री यह ताहीकी बनाई छबिछाजैं भूप,  
 जामैं रवि राजें रूप बारह१२ विभा विभास ॥ १३ ॥  
 दुर्गदुहिता जो प्रेमकुमरि१९४१२ सनाम दूजी२,  
 चंद्राउंति व्याही जाइ रामपुर सत्रुशाल१९४१२ ॥  
 भाऊ१९५११ सौं कनिष्ठ सुत दूजो२ भामि१९५१२ ताकै भयो ॥  
 द्वैरही पति पहिलैं मरी ए जरी द्वैरही बाल ॥  
 तेजसुत सिंहकी सुता सो तीजो३ सीसोदनी ॥  
 व्याहो राजकुमरि१९४१३ पतापगढ लग्नकाल ॥  
 कर्मवती१९५११ नाम एक१ कन्या भई ताकै पीछें,  
 व्याहो जसवंत जाहि जोधपुरको नृपाल ॥ १४ ॥  
 चोथी४ नित्यकुमरि१९४१४ नरुकी चंद्रभालुसुता,  
 व्याही जो कँकोर ताकै तीजो३ तनै भगवंत१९५१३ ॥  
 सूरजकुमरि१९४१५ सुभकुमरि१९४१५ दुर्नाम सो पै,  
 सोलंखिनी पंचमी५ विवाहो कुमरानी कंत ॥  
 नाहरखाँ नैनपुरवारैकोँ स्वकन्या यह,  
 दुर्गापुर आइकैं सता१९४१२ कोँ दई बिलसंत ॥  
 अद्वितीय याहीको पतिव्रत जगत जान्योँ,  
 याहीपै सता१९४१२ की कृपा निवही अवधिअंत ॥ १५ ॥  
 आनंदकुमरि१९४१६ नाम छही६ कुमरानी असेँ,

१ मालवा देश में राज्य करता है २ दुईश्वारह स्तुति हैं ३ कान्ति का विशेष प्रकार ॥ १३ ॥ ४ दुर्गदास की पुत्री व छोटा ॥ १४ ॥ ५ ककोड़ ६ प्रिय अधवा पति २ नैणवा १० मृत्यु पर्यन्त ॥ १५ ॥

तुलसीबहादुरकी कन्या सो करोली जाइ ॥

व्याहो सत्रुसाल १९४१ ताके प्रकटे अपर्य पंच५,

कमनकुमारि १९५२ जेठी १ कन्या तिनमें गिनाइ ॥

रानजगतेसके कुमार जेठे राजसिंह,

पीछें यह कन्याहू विवाही बिधि लग्न पाइ ॥

तीन ३ सुत द्वै २ सुता सता १९४१ नैं ए कुमारपन,

पाये तोके पंच५हि जे भूत १ अबभावी भाइ ॥ १६ ॥

वाही जादवी ६ कै सुत कन्यासो अनुज च्यारि ४,

भारत १९४१ स भूपति १९५५ रु भूपालक १६५६ नाम तीन ३।

चोथो ४ ईश्वरीहरि १९५७ कनी पुनि समर जेठी १,

पंच५ही प्रजा ए छठी ६ पतनी प्रसव लीन ॥

रानी जा कमाउत चालुक्य हरिकर्णसुता,

नाम हरकुमारि १९४७ विवाहि दुलही नवीन ॥

आनी सप्तमी ७ यह सता १९४१ नैं कुमरानी जाकै,

कन्या तीन ३ जानी भई मध्या २ तिनमें बचीन ॥ १७ ॥

तीन ३ नैं जेठी १ रामकुमारि १९५३ कनी सो पीछें,

बंधूगढ बाघेले अनोपकाँ दई विवाहि ॥

कल्याणादिकुमारि १९५४ मरी सिसु वय द्वितीय २,

तीजी ३ गंगा १९५५ पीछें रानाँ जयसिंहकाँ विवाहि ॥

जाके पुत्र रानाँ अमरेस भो उदंत जाको,

भूप बुधसिंह १९४१ के चरित्रमैं उदित आहि ॥

सात ७ कुमरानी ए कुमार सता १९४१ आनी आनि,

है व नव ९ रानी सुनिलैहु पै प्रसंगसाहि ॥ १८ ॥

दिल्लीहोइ आतहि विवाही जगतेसरान,

अप्प अनुजा जो चंद्रकुमारि १९४८ तदीयनाभ ॥

ईडरग्रधीस पुंज कर्मध्वजपुत्री फूल,  
कुमरि१९४।९ विवाही रानी नवमी९सु गुनग्राम ॥  
कल्याणादिकुमरि१९४।१० कबंध रामकन्या दसमी१०,  
विवाही भयो गोठराही उपयाम ॥

कन्याएक तामैं लाडकुमरि१९५।६ भई सो मरी,  
सिसुहि संता१९४।१२ के एहि तेरह१३ प्रजा ललाम ॥ १९ ॥  
राजकुमरि१९४।११ सौ फूलकुमरि१९४।११ दुर्नामवारी,  
एगारही११ रानी व्याही मल्लनासी रठ्ठारि ॥

लहोरी ईडरेची व्याही बारही१२ बहोरि जांको,  
लच्छी१९४।१२ नाम रानी नारायनकी सुता सो सूरि ॥

तेरही१३ प्रमारि रानी केसवसुता सो राम,  
कुमरि१९४।१३ सनाम व्याही कामना कविन पूरि ॥

विठ्ठलकेभात सिररामकीसुता त्यों गोरि,  
व्याही पन्नकुमरि१९४।१४ चउदही१४ दे भर्म भूरि ॥ २० ॥

पंदही१५ विवाही रयासकुमरि१९४।१५ सनाम मेघ,  
चुंडाउतपुती पुर बेद्यम सुता१९४।१५ पधारि ॥

सहजकुमारि१९४।१६ सदाकुमरि१९४।१६ दुर्नाम कली,  
नीवरी१६ गंगराट२ सोलह१६ विवाही नारि ॥

मानकीसुता सौ एही सोलह१६ सता१९४।१६ वरी,  
भूत१ सप्त७ भावी२ नव३ लीजिये श्रवन धारि ॥

तेरह१३ अपत्य भये तिनमें प्रथम पंच५,

भूत१ अष्ट८ भावी पट्ट लैनसमे बीच पारि ॥ २१ ॥

भाऊ१९५।१ भीमसिंह१९५।२ भगवंतसिंह१९५।३ भारत१९५।४ र्यो,  
भूपति१९५।५ भूपाल१९५।६ ईश्वरीहरि१९५।७ तनय सात ॥

१ पुंजा नामक राठोड़ का पुत्री २ गुणों का समूह ३ पुर का नाम है ४ विवाह  
५ सन्तान ६ सुन्दर ॥ १६ ॥ ७ छोटी ८ बहुत स्वर्ण देकर ॥ २० ॥ ९ पुर का नाम  
है ॥ २१ ॥ २२ ॥

तीन३हि कनिष्ठ मरे बालहि रु जेठे च्यारि४,  
 सप्रज भये पै रह्यो भीम१९५।२हीको कुल ख्याता॥  
 कन्या च्यारि४ कथित बिवाही सिसु द्वै२ ही मरी,  
 चौथी४ अरु छट्ठी६ बहुतासौं इहाँ भावी बात ॥  
 भ्राता अष्ट८इंद्रसल्ल१९४।२ आदिक सता१९४।१के व्याहे,  
 भूत१ भावी२ ते अब प्रजासहित भाखेजात ॥२२॥  
 दूजे२ निजनाती इंद्रसाल१९४।२हिं रतन१९२।१दये,  
 मुख्य अनघोरा१ टीपरी२ त्यों कैर्कशेद२ यान ॥  
 याके भूत१ भावी२ सब व्याह दस१० जानौ पुत्र,  
 बारह१२ कनी चउ४ भये पुनि समैप्रमान ॥  
 सीसोदनी जेठी१ कुमरानी नगराजसुता,  
 नाम रूपकुमरि१९४।१ बिवाही सो सहविधान ॥  
 भानकुमरि१९५।१ त्यों चंद्रकुमरि१९५।२ सुता द्वै२ ताकै,  
 सबनसौं जेठी सूचियत हे सुजान ॥२३॥  
 दूजी२ तिम चालुक कमाउत कनक कनी,  
 नाम हरिकुमरि१९४।२ बिवाही इंद्रसाल१९४।२ वीर ॥  
 तीन३ सुत जेठो१ गजसिंह१९५।१ रु अमान१९५।६ छट्ठी६,  
 अष्टम८ गुमान१९५।८ ए भये तस गुनगहीर ॥  
 बेनीदासपुत्री उनियाराकी नरुकी दीप  
 कुमरि१९४।३ सु तीजी३ जाकै नवमौ९ करन धीर ॥  
 नाथाउति चौथी४ कृष्णकुमरि१९४।४ दयालुसुता,  
 दूजो२ कृष्ण१९५।२ तीजो३ रनछोर१९५।३ सुत जाके सीर।२४।  
 रङ्गरुं जुन्याकी कल्यानरायपुत्री,  
 पंचमी५ सो स्यामकुमरि१९४।५ बहोरिवरी इंद्रसाल१९४।२ ॥

द्वै२ही सुत ताकै पुरुषोत्तम१६५।४ चतुर्थ४,  
 अनंदसिंह१९५।५ पंचम ए प्रकटे प्रसूतिकाल ॥  
 सेखाउति छट्ठी६ इंद्रकुमारि१९४।६ बिहारीसुता,  
 सप्तम७कुसलसिंह१९५।७इक१हि तदीय बाल ॥  
 राजाउति सप्तमी७किसोरकुमरी१९४।७ त्यों पुत्र,  
 बारहम१२रामसिंह१९५।१२इक१हि लिखायो भाल ॥ २५ ॥  
 सुरतकुमारि१९४।८ नाम त्योंही निधिपालसुता,  
 जादवी बिबाह्यो व्याह अष्टम८ करोलीदंग ॥  
 जादव बहादुर सुता जसकुमारि१९४।९ व्याह,  
 नव९ बिबाह्यो सर मथुरा अतिउमंग ॥  
 द्वै२सुत रु द्वै२ सुता अपत्य चउ४ ताकै भये,  
 नाहर१९५।१०दसम१०एगारहम११पहार१९५।११ संग ॥  
 आनंदकुमारि१९५।३तीजी३चोथी४जमुना१९५।४त्यों भये,  
 ए चउ४अपत्य ताकै भाखे नाँहि क्रमभंग ॥ २६ ॥  
 नाम रुक्मकुमारि१९४।१०बिबाह्यो जो दसम१०व्याह,  
 राजाउति सोह देवकरन सुता सुजान ॥  
 इंद्रसाल१९४।२ए दस१० बिबाह्यो तियमाँहिँ बधू,  
 अप्रज उभै२रु भई अष्ट८ हि प्रसूतिमान ॥  
 सोलह१६अपत्यनमै आदि१।२अंत१५।१६द्वै२द्वै२कनी,  
 केती१ऊठ२केति१न अनूढपन छोरयो प्रान ॥  
 दूजो२कृष्ण१९५।२चोथो४पुरुषोत्तम१९५।४नवम९कर्ण१९५।९,  
 नाहर१९५।१०दसम१०चघारि४ अप्रज सुतन थान ॥ २७ ॥  
 सेस गजसिंह१९५।१ रनछोर१६५।३ रु अनंदसिंह१९५।५ ॥  
 छट्ठी६ अमानसिंह१९५।६सु सप्तम७ कुसल१९५।७नाम ॥  
 अष्टम८ गुमान१९५।८एगारहम११ पहारसिंह१९५।११,



सबसौ अनुज रह्यो बारहमे १२ पुत्र राम १५ १२ ॥  
 चाले इन अष्टन के अन्वय बहुरि भावी,  
 संकुचन १ बर्द्धन २ वनेँ सो विधि तल काम ॥  
 बाजे इन्ह वंसी इंद्रसाल उत्त २९ १५ हड्ड ६१ नमै,  
 एकऊन तीसम २९ भिंदा सो लखिये ललाम ॥ २८ ॥  
 पीछै इंद्रसाल १९ ४२ रह्यो भीर दथी ग्राम ठाम,  
 इंद्रगढ द्रंग निजनामसौ नयो बसाइ ॥  
 याको लघु नाती अमरेश १९ ६१ २ भयो भावी जानै,  
 गोरै गंजि कीनो गढ खातोली अमल जाइ ॥  
 इंद्रगढ १ खातोली २ उभै २ ही मुख्यथान यातै,  
 इंद्रसाल १९ ४२ अन्वयमै सबसौ जुदे जनाइ ॥  
 तीजे ३ निजनाती बैरीसाल १९ ४१ ३ हिं अधिप रैन १६ २ १,  
 बलवनि १ अंबथनि २ मुख्य दिय भू बटाइ ॥ २९ ॥  
 याके भूत १ भावी २ नव ६ व्याह तिनमाँहिं बधू,  
 तीन ३ भई सप्रज छ ६ अप्रज निधति जोर ॥  
 जेठा १ तँहँ केसरकुमारि १९ ४१ १ बलभद्रसुता,  
 भोजाउति चालुकीवरी दुलह बांधि मोरै ॥  
 दूजी २ सारदूलसुता चालुकी दयालुकुमारि १६ ४ २,  
 भो गोविंद १९ ५ १ जेठा १ सुत जाके तनु आयु दोर ॥  
 चंद्राउति तीजी ३ चित्रकुमारि १९ ४ ३ अचलसुता,  
 रड्डारि चोथो ४ हरकुमारि १९ ४ ४ सुनौ ब ओर ॥ ३० ॥  
 पंचम ५ विबाह अचलेससुता सीसोदनी सो,  
 अनोपकुमारि १९ ४ ५ सनाम बरी बैरीसाल १६ ४ ३ ॥  
 जाके चंद्रकुमारि १९ ५ १ सुता सहित दूजो २ सुत,

मानी कुलतानी भयो नामकोरि जो गोपाल १९५१ ॥

छट्ठी ६ स्यामकुमरि १९४१ नरुकी जैतकन्या बरी,  
सीसोदनी सत्यभामा १९४१ सप्तमी ७ विहित काल ॥

उदलजा अष्टमी ८ मघाकुमरि १९४१ चंडाउति,  
नवमी ९ प्रमारी बीरकुमरि १९४१ मराली चाल ॥ ३१ ॥

राघवसुता सो जाके तनया मघाकुमरि १९५१,  
व्याह नव ९ तोहू तैं तीन ३ कै प्रजा ए च्यारि ४ ॥

जेठो १ सुत द्वै २ सुता तऊ त्रय ३ सिमहि मरे,  
सो गोपालसिंह १९५१ रह्यो एक १ ही कुलप्रसारि ॥

बैरीसाल उत्त ३० १२६ ताके कुलके कहाये भयो,  
हड्ड १ नमैं भेद यह तीस ३० प्रमान धारि ॥

स्वामीद्रोह पापकरि विपदाविगारी ऐसी,  
राजसिंह १९४१ संतति सुनौ अब लुपनहारि ॥ ३२ ॥

पाटव प्रगल्भ जानि सोदर सता १९४१ को याहि,  
रैन १९२१ भूप बखस्यो हरीगढ विदित धाम ॥

व्याहयो पंच ५ व्याह यह तिनमैं सदाकुमरि १९४१ दूजो २,  
कूरमीकै भो सुत त्रय ३ सुनौ व नाम ॥

जेठो १ बिष्णुसिंह १९५१ मधुसिंह १९५१ दूजो २ तीजो ३ पत्ता १९५३,  
अप्रज मरयो सु ३ द्वै २ हि जेठे रहे कुलकाम ॥

पुत्र बिष्णुसिंह १९५१ कै भो पापी बलभद्र १९६१ अनिरुद्ध १९६१,  
के समै जो हाइ स्वामीसौ सुरयो हराम ॥ ३३ ॥

पुत्र मधुसिंह १९५१ कै भो अनुपमसिंह १९६१ जोही,  
खैबरके खेत पश्यो भूप बुधसिंह १९७१ भीर ॥

ताकै नाती तीन ३ हि बखामैं प्रभुसंग रहे,

१ कुल का विस्तार करनेवाली २ उदयसिंह की पुत्री ३ हंस के समान गति वाली ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ४ चतुर ५ बुद्धिमान् ६ विना संतान मरा ॥ ३३ ॥ ७ अफगानिस्तान में प्रवेश करने के हिमालय पर्वत के घाटे के युद्ध में ८ आपत्ति में

दोल १९७।१ सुत नाहिर १९८।१ उमेद १९८।२ खुसाल १९८।३ वीर ॥

मध्यम उमेद १९८।२ यह भूपति उमेद १९८।५ संग,

बुन्दी पहिले रन रह्यो त्यों लही गोलापीर ॥

इनको रह्यो न वंस संख्यामैं लयो न पातैं,

कहिहु दिखायो कछु कलना समास सीर ॥३४॥

पंचम ५ पैउत मुहुकम १९४।५ को मदिप रैन १९२।१,

दुगांपुरी दीनी जो बै जाहिर दुधारी दंग ॥

सोहु गिनि अल्प लोभी सेइकैं सुजा ४०।३ को आयो,

ताहि तब दीनों सता १९४।१ करउर ताकि तंग ॥

याके भूत १ भावी २ सप्त ७ ज्याह पै जनी चउ ४ में,

वारह १२ अपत्य सुत अठ ८ चउ ४ कन्या संग ॥

पुत्री दुव २ व्याही त्यों मरी दुव २ अनूठ ताही,

पुत्र ८ नमैं प्रसरे छदके कुल ह जितजंग ॥३५॥

प्रथम विवाह व्याहयो मुहुकम १९४।५ सिंह सुता,

पूर्णमति १९४।१ नाम उनियारेकी नरूकी जाहि ॥

जोरावर १९५।१ जेठो १ सुत पंचम ५ कनकसिंह १९५।५,

छढो ६ सगतेस १९५।६ इन तीन ३ न प्रसू सो आहि ॥

नाथाउत चालुक दयालुदासपुत्री नाम,

कल्याणादिकुमरि १९४।२ लई सो वर दूजी २ व्याहि ॥

सप्तम ७ तनूज जगमोहन १९५।७ रु कन्या दोइ,

प्रकटी त्रयी ३ यह तदीय गर्भ अवगाहि ॥३६॥

इंद्रसाल १९४।२ साली नाथकुमरि १९४।३ सनाम वरी,

तीजे ३ व्याह चालुक कमाउत कनकगेह ॥

चौथे ४ व्याह अंगजा कबंधज अनंदवारी,

१ एक प्रकार की पेट की पीड़ा ॥ ३४ ॥ २ पोता ३ अब ४ युद्ध जीतनेवाले यह रामसिंह का विशेषण है ॥ ३५ ॥ ५ इन तीनों की माता है ६ पुत्र ७ व्याह लेकर ॥ ३६ ॥

कर्मवति१९४।४ नाम परन्यौ तिय नियतनेह ॥

गोवर्द्धन कूरमकनी त्यों व्याह पंचम५ राजाउति,

व्याहयो फूलकुमरि१९४।५ सुलग्न लेह ॥

तनय गरीब१९५।२ दूजो२ तीजो३ जसवंत१९५।३ कृष्णा१९५।८,

अष्टम८ रु तीजी३ सुता च्यारि४ नकी माता एह ॥३७॥

पट्टिमादिदेवी१९४।६ नाम रानाउति छट्ठी६ बरी,

तनय कल्यान१९५।४ चोथो४ चोथी४ सत्यभामा१९५।४ तासा

सप्तमी७ बिवाही लाडकुमरि१९४।७ कबंधकन्या,

एह७ अरु तीजी३ चोथी४ ए त्रय३ अतोक आस ॥

कन्या लाडकुमरि१९५।१ निधाना१९५।२ गतनामा १९५।३ तीजी३,

पुत्रनमैं द्वै२ अतोक कृष्णा१९५।८ रु गरीबदास१९५।२ ॥

बंस खट्ठके जे बजे मुहुकमसिंहउत्त३१।२७,

भेद इकंतीसम३१ सो हड्ड६१ नमैं धारैं भांस ॥३८॥

रैन१९२।१ नृप छट्ठी६ स्वीय नाती जो उदयसिंह१९४।६,

ताकहैं विवाहिदयो गोहट्टक१ आदि थान ॥

संतति भई न तास सोही लै निदान ताके,

व्याहहु कहे न जानि व्यर्थ बनतो बितान ॥

नाती सूर१९४।७ सप्तम७ को लोहि हित नगर दीनों,

दीनों स्याम१९४।८ अष्टम८ को थानथान जलदान ॥

सूर१९४।७ के सुता इक१ सो बिंझोली बिवाही रहे,

असुत उभै२ ही यों न भाखे इन्ह व्याह मान ॥३९॥

नवम९ पउत्त महासिंह१९४।९ हिं पितामहनैं,

जजाउर दीनों हरपालपोते५।१ पच्छे पारि ॥

व्याहयो भूत१ भावी२ व्याह अष्टम८ यहैहु तहाँ,

१ निश्चय ही स्नेह करके ॥ ३७ ॥ २ विना बालक हुई अर्थात् इसके सन्तान न  
हो दुआ ३ क्रान्ति ॥ ३८ ॥ ४ पोता ५ कारण ६ विस्तार ॥ ३९ ॥

सम्पू१६३।९ कुल१ नाम२ नाथकुमारि१६४।१ सु जेठो१ नारि ॥  
 चंद्राउति दूजी२ व्याहो बदनकुमारि१६४।२ जामैं,  
 तीजो३ सुत लालसिंह१९५।३ जनम्यो रनजितारि ॥  
 भोजाउत उदय चुलुक्यसुता तीजी३ जिहिं,  
 बदनकुमारि१९४।३ तोक पंच५ जनै गर्भ धारि ॥४०॥  
 जेठो१ मान१९५।१ चौथो४ जय१९५।४ द्वै२ सुत त्रि३ कन्या तैंहैं,  
 मान१ कृष्ण२ अजब३ कुमारि१९५।१-१९५।२-१९५।३ क्र-  
 मतैं ए नाम ॥

रठ्ठरी१९४।४ चौथी४ गोरि पंचमी५ महाकुमारि१९४।५,  
 हठीसिंह१९५।५ पंचम५ तनै जिहिं जठर जामैं ॥  
 छठी६ नाथकुमारि१९४।६ नरुकी जाकै चौथी४ सुता,  
 अन्वयकुमारि१९५।४ असैं संप्तम७हूँ उपयाम ॥  
 कुंपाउति नाम रूपकुमारि१९४।७ बरी सो सुता,  
 स्यामवारी जानै प्रजा जुगन्हि लही ललाम ॥४१॥  
 क्रमतैं द्वितीय२ सुत ताकै भौ कनकसिंह१९५।२,  
 पंचमी५ सुता सो ब्रजकुमारि१९५।५ बखानीजात ॥  
 अष्टमी८ अचलसुता कुंपाउतिही बरी सु,  
 अखयकुमारि१९४।८ जरिहै जो पति के निपात ॥  
 एह८ अरु जेठो१ चौथी४ अप्रज बधू ए तीन३,  
 पंचकै प्रजा दस१० सुता५ सुत५ सम गिनात ॥  
 मानकुमरी१९५।१ मुख सुता त्रय३ वदत व्याही कहत,  
 कितेक व्याही पंच५हि बिदित बात ॥४२॥  
 कनक१९५।२ द्वितीय२ लालसिंह१९५।३ सु तृतीय३ सुत,  
 अप्रज उमैरही ए सता१९४।१के संग आयै काम ॥

मान १९५१ जयसिंह १९५१४ हठीसिंह १९५५ इन तीन इनके  
वंस जे बढे ते महासिंह उत्त ३२१२८ धरै नाम ॥

बत्तीसम ३२ भेद प्रकटानों एह हड्ड ६१ नमै,  
पैतीस ३५ हि हड्ड ६२ नके हेलि अधिप राम २०३१४ ॥  
केसरी १९४१२० कनक १९४१२१ नगराज १९४१२२ रामसिंह  
१९४१२३ च्यारि ४,

गोपीनाथ १९३१२ तनय मरे सिसु बिधिहि बाम ॥ ४३ ॥

पट्टिमादिदेवी १९३१५ राजकुमरि १९३१५ दुर्नामवारी,

पंचमी ५ जो व्याही प्रिया पट्टनि नगर जाइ ॥

ताही कुमरानी तोमरीमै सुत स्याम १९४१८,

तनया सदाकुमरि १९४१२ नाम पाइ ॥

प्रकटभई सो बयपातहि पितामहनै,

रान जगतेसकौ प्रथासौ दई परिनाइ ॥

असै गोपीनाथ १९३१२ के तनूज १ तनूजा २ ए दस १०,

व्याहे रैन १९२१२ सत्तन ७ कौ बंढहु दये बटाइ ॥ ४४ ॥

रैन १९२१२ जब बुंदीसुत तीन इन विभाग दये,

असै तबही दै सत्त ७ नत्तिन विभाग एस ॥

पीछै जाइ दक्खिन जई है जुग २ अब्दपीछै,

कालीवाइ ग्रामपरयो गोदाके तटीप्रदेस ॥

उचित काइ अड्डहायन बै भाऊ १९५१ हाथ,

केसव सचिव न दिखायो हौं दुकाललेस ॥

साह सिक्ख पाइ दलथंभन कहाइ पीछै,

बुंदी आइ कीनों सज्ज संक्रम सता १९४१२ नरेस ॥ ४५ ॥

बुंदी दल आउतही हाकिम अपर जात,

दक्खिनके मिच्छ १ मरहठ २ पुनि पैनै होइ ॥

खुरमसे ३९।२ खेठा यत अबहि बनें ए ताके,  
 थान मेरुमाला विच लोदीखाँ जिहाँन १ फोड़ ॥  
 दिल्लीपति लोदी ५ बहलोल २७ पहिलैं भों ताको,  
 इब्राहीम २९ नाती हन्यौ बाबर ३० प्रमादी जोड़ ॥  
 विक्रमके साक ससि अठ सर भू १५८१ मै लई,  
 मुगलन दिल्ली खरे खगगन खलन खोड़ ॥ ४६ ॥  
 राज्य करि पीढी तीन ३ तबके निरंत भये,  
 दिल्लीतैं पठान अफगान लोदी सत्वहीन ॥  
 ओरओर छाये मुगलन ६ के प्रताप आगैं,  
 खिनखिन खीन भूति दिनदिन भाँसे दीन ॥  
 नीतिअंध खुरम ३९।२ पितासौं प्रतिकूल भयो,  
 होत साह सोही राह सोहीगहि अध्व तीन ॥  
 लोदीखाँ जिहाँन १ सुत च्यारि ४ न सहित सज्यो,  
 दक्खिन सहायसौं पंताकिनी प्रकर घीन ॥ ४७ ॥  
 जवन कढे जे नृप रैन १९३।१ तैं करार करि,  
 तेहू ततकाल बल बुंदीकौं गयो बिचारि ॥  
 लोभ लागि के भये सहायक पठान संग,  
 के रहे निकेत मूलमंत्र दै रचन शरि ॥  
 ओरहु अनेक मरहठ मुख तैसी ताकि,  
 पुँब उंपकार अपनैको मन जोर पारि ॥  
 ठाँठाँ लूटि दावन लगे यौं मुगलस थानाँ,  
 धोरीखाँ जिहाँन अफगानकौं निमित्त धारि ॥ ४८ ॥  
 च्यारि ४ हि अनी करि पठानके सुतहु च्यारि ४,

१ युद्ध करनेवाला २ मेरु माला यह पृथ्वी का विशेषण है ३ जिहाँनखाँ लोदी  
 ॥ ४६ ॥ ४ नियुक्त ५ पराक्रम हीन ६ क्षण क्षण में विभूति का नाश होकर ७  
 दीखे ८ विरुद्ध ९ मार्ग १० सेना और परगह ११ पुष्ट ॥ ४७ ॥ १२ कितने ही  
 घर में रहे १३ आदि १४ पहला उपकार देखकर १५ ठाम ठाम (जगह जगह)  
 १६ कारण ॥ ४८ ॥

जनकनिदेस १ दक्खिनीन उपदेस २ जोर ॥  
 स्वामि होनलागे बुरहानपुर १ सूवा सीम,  
 वारिधिमें बाँड़वलों अटिअटि ओरओर ॥  
 भिन्नभिन्न भ्राता जे मचाइ भय मग्गमग्ग,  
 अग्गअग्ग अवाधि अवंतीरलों रचाइ रोरे ॥  
 डमर १ डकेती २ में पुरोगति परतभये,  
 कीलित करतभये दक्खिनदिसाकी कोर ॥ ४९ ॥  
 समय जिहानगीर ३ ८ १ केहुसों बिसेस बढि,  
 दावा करि दिल्लीपै यों दक्खिनीन डारयो दोह ॥  
 आसफ १ अमात्य दंडनाथक महावत २ से,  
 सुनिसुनि साहजहाँ ३ ९ २ सहित मिलामें मोह ॥  
 केही प्रतिमल्ल भट भेजे सुर सज्जकरि,  
 लोहँचाखिंचाखि ५ सुरे पै न फल दीनों लोह ॥  
 बुंदीपति सो सुनि सता १ ९ ४ १ हु इत सेना सजि,  
 तार्विन बिचारयो दिल्लीजावन जुराइ जोह ॥ ५० ॥  
 केसव १ अमात्य भ्राता इंद्रसाल १ ९ ४ २ बैरीसाल १ ९ ४ ३,  
 काका जिम जैत १ ९ ३ १ सवला १ ९ ३ १ दिक् लौ संग एस ॥  
 राजसिंह १ ९ ४ ४ सुहुकम १ ९ ४ ५ उदय १ ९ ४ ६ रू मूर १ ९ ४ ७ आदि,  
 देस निज भ्राता राखे अनुज बली बिसेस ॥  
 भाभव १ ९ ३ २ बुलायो जो न आयो कहुव्याज करि,  
 भिन्नपन भायो सो बिहँयो तव संभरेस ॥  
 सवल सुहायो रजोगुन छक छायो औसैं,

१ समुद्र २ बड़वाग्नि के सदृश ३ भय, उपद्रव और डकैती में अग्रणी हो-  
 कर दक्षिण दिशा को रोकी ॥ ४९ ॥ ४ फैलाव वा द्रोह ५ सेनापति ६ मुका-  
 बिला करनेवाले ७ शत्रुओं के शस्त्र चख चख कर पीछे मुड़े परन्तु इनके शस्त्रों  
 ने फल नहीं दिया ८ उस समय ९ घोड़ा इकट्ठे करके ॥ ५० ॥ १० रक्षा करने  
 वाले ११ मिस करके १२ छोड़ा अर्थात् बुंदी के राजा ने उसका त्याग किया



आयो आप दिल्ली सता १९४१ बुंदीपुरी बंसुधेस ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

इम पैतो दिल्लिय असह, सता १९४१ बहुप्रद १ सूर २ ॥

सहि उचित मिलि साहसन, पायो आदर पूर ॥ ५२ ॥

द्विरद जहाँगीर ३८१ हि दयो, पहिलै स्तन १९२१ नृपाल ॥

सिवप्रसाद दिय साह सुहि, हथी हड्ड ६१ हि हाल ॥ ५३ ॥

अर्बादिक इतरहु उचित, नृपहि अपि जवनेस ॥

सादर तँ रक्खिय सता १९४१, बसु जल बादर बेस ॥ ५४ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशाल्यचरिते अवाप्ताराज्यशत्रुशाल्यस्य दक्षिणदेशाद्बुन्द्या  
गमन १, ससहोदरशत्रुशाल्यपाणिपीडनपुरःसरसन्ततिकथन २,  
प्राप्तबुन्दीराज्यदिल्लीगतशत्रुशाल्यस्य यवनेशपारितोषिकप्रापणं प्रथ-  
मो मयूखः ॥ १ ॥

आदितस्त्रयोदशोत्तरदिशततमो मयूखः ॥ २१३ ॥

प्रायोन्नजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पुन्बहि अष्टम ८ रैन १९२१ पहु, सता १९४१ कुमर संबंध ॥

कियउ उदैपुर प्रीति करि, समकुल ख्यापितसंध ॥ १ ॥

बुन्दीसन दिल्ली बहुरि, चढत सता १९४१ नृप चाहि ॥

तबहि कहाई रान तुम, बहिनी जाहु बिवाहि ॥ २ ॥

१ भूपति ॥ ५१ ॥ २ प्राप्त हुआ ३ दानी ॥ ५२ ॥ ४ हाथी ॥ ५ घोड़ा आ-  
दि ६ धन रूपी जल से ७ बादल (मेघ) से विशेष होकर ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल का राजा होकर दक्षिण से बुन्दी आना। श-  
त्रुशाल और शत्रुशाल के भाइयों के विवाह और सन्तान आदि का कथन २  
बुन्दी का राज्य पाकर दिल्ली गये हुए शत्रुशाल का बादशाह से खिलत पाने  
का प्रथम मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१३ मयूख हुए ॥

८ प्रभु रत्नसिंह ने ९ प्रसिद्ध प्रतिज्ञावाले ॥ १ ॥ २ ॥

भोजि स्वजन बुंदी भनंत, त्वरा रान जगतेस ॥

कहिय सता१९४११ दिल्ली क्रमन, आगत पहिलैं एस ॥ ३ ॥

तातैं मिलि जवनेस तक, समय विधेय सधाइ ॥

व्याहन अेहों तुम बहिनि, अर पछो मैं आइ ॥ ४ ॥

पत्तो इम कहि बहइ६१ पहु, दिल्लीनामक द्रंग ॥

लंचा१ दै बखसीस२ लिय, सब संमुचित हित संग ॥ ५ ॥

दुईस दक्खिन देसकी, पत्ती तबहु पुकार ॥

लोदीखानं जिहान लँघु, हुकम चलावनहार ॥ ६ ॥

साह कहिय तब संभरहिं, जाहु सता१९४११ बरजोर ॥

जैनपद दक्खिन करहु जय, इहिं खिन मुख्य न ओर ॥ ७ ॥

सासन यह केसव१सचिव, जैत१९३११ पितृव्यक जानि ॥

संसकै करि आसफ सचिव, आरजकराई आनि ॥ ८ ॥

॥ राजसवतिका ॥

जुरि दलथंभैन१ जैत१२दुहुँ२न जब आसफखान प्रबोधि वजीर ॥

इम अवसर विव्रति करवाई संगहि ठानि महावत सीर ॥

नत्तीको संबंध रत्न१९२११ नृप उदयनगर पुव्वाहि कृत आस ॥

काल होत चिर रान त्वरा किय जानहु निकट लग्न अवजास

यातैं भूप व्याहि हुँत आवहिं सब निदेस सद्बहि धरि सीस ॥

दुव२हिं अप्प इम सिक्ख दिवावहु मास कलुक गृह जान महीस ॥

आसफ१सचिव चमूप महावत २ जंषिये इम दोउ२न तब जाइ ॥

हजरत सिक्ख सता१९४११कहैं व्याहन पहिलैं देहु लग्न डिग पाइ१०

१ शीघ्रता २ शत्रुशाल ने कहा कि दिल्ली का जाना पहिले आगया है इसका  
रण ॥ ३ ॥ ३ पर्यन्त; अथवा देखकर ४ उचित ५ शीघ्र ॥ ४ ॥ ६ नजराना ७  
उचिन ॥ ४ ॥ ८ शीघ्र ॥ ११ चहुवाण को १० देश ११ इस समय ॥ ७ ॥ १२ आसफका  
से मिल कर; अथवा वाकफ करके ॥ ८ ॥ १३ केशवदास सोमानी का उपपद  
है १४ समय पर १५ महावतवां का सामिल करके आरज कराई कि रत्नसिंह  
ने पोते का १६ है १७ शीघ्रतर ॥ २ ॥ १८ शीघ्र १९ कहा २० शत्रुशाल को ॥ १० ॥

लोदियोंसे बुद्धको शत्रुशाल का सजना]सप्तमराशि-द्वितीयमयूख (२५७?)

हैं किन और लग्न इहिं\*हायन साह कहिय आनहु तिन्ह सुद्धि ॥  
विन्नति किय गणकन इहिं बच्छर व्याहन लग्न चतुष्टय ४ बुद्धि ॥  
अकिखय साह सु सुनि द्रुतआइ रु विरचहु दूजे २ लग्न विवाह ॥  
खानजिहांन जित्ति पहिलैं खल नृपहिं विधेय निदेस निवाह ॥ ११ ॥  
तोपन बिनु सब लूट लहहु तुम तनहु नवै जस पुहवि प्रतान ॥  
आतहिबेर सिक्ख हम अप्पाहिं व्याह भूप सद्धहु सविधान ॥  
केसवं १ जैत २ हुकम सो स्वीकरि नृपहिं निवेदि चित्त दिय नीति ॥  
सुनि यह सुनुसल्ल १९४ १ पहु सज्जिय बल निज वीर १ बारन २ रु बीति  
बुल्लि मऊ सन करन १९३ १ पितृव्यक भोज १९१ २ तनय केसव  
१९२ ३ सुत भीर ॥

बुल्लिय तिम हरिसिंह १९३ १ पितृव्यक बुंदीसन इतरहु ए वीर ॥  
बुद्धिचंद्र १९२ ३ सुत कृष्ण १९३ १ समरबुध तिम दयालु १९० १ सुत  
भूपति १९१ १ तत्थ ॥

पर दयालु १९२ १ बलवंत १९१ १ तनै पुनि सुर्जन १९० १ अनुज राम  
१८९ ३ कुल सत्थ ॥ १३ ॥

सुर्जन १८८ १ अनुज भीम १८८ २ कुलउद्भव सूर सनाभि हठी  
१९२ १ रन संत ॥

पूरन १८८ ३ हर हम्मीर १९१ १ वंस पुनि जो सुत स्याम १९३ १ पिता  
जसवंत १९२ १ ॥

भजनेरी पति सारन १८६ १ कुलभव केसव १८९ २ सुत पित्थल  
१९० १ जयकाज ॥

एह सगोत्र १ संपिंड २ सेस इम रन इतिमुख बुल्लो रनराज ॥ १४ ॥  
विदित गोरे रनछोर १ आदि बलि बुंदीसन असगोत्र बुलाइ ॥

\* इस वर्ष में १ ज्योतिषियों ने १ इस वर्ष में चार लग्न हैं ॥ ११ ॥ १ कैलाश  
२ नवीन ३ हाथी ४ घोड़े ॥ १२ ॥ ५ काका ६ अन्य भी ७ बुद्ध में चतुर ८ दू-  
सरा दयालसिंह ॥ १३ ॥ ९ इत्यादि ॥ १४ ॥ १० गोद

रक्खे ईतर देस सुख रक्खउ भट रच्छक समुचित हित भाइ ॥  
 नृपउच्छाह बढावत बैल निज साहहु स्वबल अयुत १०००० दिय संग  
 प्रथित सज्जि इन सबन चल्पो पहु उफनत दक्खिन बिजय उमंग १५  
 आसपास गढगढन त्रास अति पथ संगत भूपन हिय पारि ॥  
 सरिता लंघिनर्मदा सत्वर रचिय सता १९४।१ लोदिन प्रति रारि ॥  
 खानजिहान सुनत सुत खगगन सम्मुह जुरयो सबन सह सज्जि ॥  
 दारुन कलह मच्यो तँहँ दुव २ दिस बँव १ पटह २ काहल ३ बल  
 सज्जि ॥ १६ ॥

डोलि अवनि डुंगर डगमगिय भागिय भँग १ सम्राहितभाव ॥  
 लचि आलुकै तालुकै भर लगिय चंडी २ चित्तहु जगिय चँव ॥  
 नच्चहिँ कलहबिसारद नारद ३ सहती तल्लिन कोनै मिलाइ ॥  
 लखहिँ प्रेत ४ डाकिनि ५ वेताल ६ रु जोगिनि ७ वीर ८ जातु ९ गन जाइ १०  
 वनि कुरूप १ पररूप २ बहूरद ३ थनमुख ४ न्हस्व ५ दिग्घ ६ कूस ७ थूल ८ ॥  
 बहु गावहिँ १ कति बाघ बजावहिँ २ कति लावहिँ ३ तंडव अनुकूल ॥  
 अयुततीन ३०००० दल पिकिख सता १९४।१ इत टक्करदेन गाहिय  
 रन टेक ॥

उत पुण्या १ बीजापुर २ आदिक अँज १ रु जवनरूपे वनि एका १८।  
 जे उत संग लगे वनि जनैय रु वर वह खानजिहान बनाइ,  
 तनय चतुष्क ४ समेत सुपै तँहँ इच्छत हुव दुलही भुव आइ ॥

१ अन्य २ उचित ३ बाँदशाह ने भी अपनी सेना को ४ प्रसिद्ध ॥ १५ ॥ २ मार्ग में आये ह-  
 ए राजाओं के ६ शीघ्र ७ नकारा ८ डाल ९ बाघ विशेष ॥ १६ ॥ १० शिव के  
 ११ समाधिभाव १२ शेषनाग झुककर उसके १३ मस्तक पर १४ बरसाह १५ नखी  
 (मजराफ) अर्थात् नारद ने सहती नामक बीणा के तारों से नखी मिलाकर  
 नाच किया १६ बाघन वीर १७ राजस ॥ १७ ॥ १८ कुरूप से लेकर थूल पर्य-  
 त वेताल आदि के नाम हैं १९ आर्य ॥ १८ ॥ उस खानजिहान को दुलहा  
 बनाकर उधरवाले २० जानेवाले (बराती) होकर साथ लगे वह चार पुत्रों  
 सहित भूमि को दुलहिन बनाकर चाहने लगा परंतु उस समय यह दुलहिन

लोदियों से हाडोंका युद्ध] सप्तमराशि-द्वितीयमयूख (२५७३)

पै दुलही सु चहत अप्पन पति जब दिल्लीपति साह जिहान२९१२,  
भय धरि चित्त सता१९४१से भूपन इक्खे नहि महि उपपति  
आन ॥ १९ ॥

वर करि जार तदपि दुल्लह बनि इम जुट्यो लोदी अफगान,  
संग लये बलवान सहायक दक्खिनक सब बिजयनिदान ॥  
जुग२दिस तोपन जुजिक्त पहर जुग२बलि बाजिन कररी गहि बग्ग  
पहुँच्यो अरिन अनीक सता१९४१ पहु अप्प तथापि सबन स-  
न अग्ग ॥ २० ॥

प्रहरन सर१ तोमर२ असि३ पट्टिसं४ संख्य असंख्य चले दुव२सेन  
इक१ मुहूर्त अवमर्द मच्यो इम वेश न बढे इत तिम उत ए२न ॥  
जे बीजापुर आदि जवन जब कढत रतन१२९११मन विरचि करार  
पीवले लखि बुन्दीस पताकन वे हुव भिन्न बचन अनुसार ॥ २१ ॥  
कहिपठई नृपतैं हयहंकहु जिन संकहु हमकोँ अरि जानि ॥  
खलन गंजि खर खग्ग चलावहु हमदिस बढिआवहु नहि आनि ॥

अयुत१०००० साहबल निजबल द्विअयुत२०००० हंकि तवहि  
भटतीसहेजार३००००,  
प्रबिस्पोमूर सता१९४१ पैर टूतना भीम पटकि लोदिन सिर  
भार ॥ २२ ॥

चले नचत संगहि डाकिनि१ चय बलि के ताल देत बेताल२,  
जोगिनि३ गात वजात बीर४ जैहँ भनत वाह दुर्गा१ \*ससिभाल२  
चंद्रहास हड्ड६१न कर चल्लिय वैरिन उरसल्लिय प्रतिवीर,

शाहजहां को ही पति चाहती थी क्योंकि शत्रुशाल जैसे राजाओं का भय  
करने अन्य उपपति को नहीं देखती थी ॥ १६ ॥ १ कारण ॥ २० ॥ २ कटारी  
३ उम युद्ध में ४ दो घड़ी तक भयंकर युद्ध हुआ ५ पीले रंग की ध्वजाओं को  
देखकर रत्नसिंह से तिये हुए पहिले नियम के अनुसार जुदे होगये ॥ १ ॥  
६ शत्रुओं की ७ सेना में ॥ २२ ॥ ८ समूह ९ शिव के दा.पाख (अकस्मान्  
आकाश में दीखनेवाले भूत विशेष) १० शिव

बड़े त्रयहि रनछोर१ गोरबलि नृपति२ रु हरि३ काका नासीर३३  
कटक अद३ लखि सिथिल प्रसभ करि बल दल३ खिल उत  
केहु बडाइ

खानजिहानकेहु सुत चउ४ खिजि अग्ग५ भये जुज्झन अकुलाइ ॥  
जवन कोलवाहिर हैं तिन जुत हनुमत्त१ स्याम प्रमुख मरहठ,  
वहै सहाय लोदिनसह हंकिम अतिबल दिगिभ धुजावत अट्ट८ ॥ २१ ॥  
जहँ प्रभुराम२० ३१४ उभय२ दिसतैं जुरि मच्यो असह अनुपम  
अवमर्द ॥

इततैं जिम दक्खिन अपनावहिँ क्रमि उतरतैं जिम देन कपर्द ॥  
मिल तन सूरन दुद१ सिंता२ मित प्रहरिय प्रहरन प्रचुर प्रहार,  
समर जुरे जे कृतित सिवादिक विलसे निजनिज उचित बहारा३५  
संकर१ सघन सूरसिर संवत साधक हुव चंडी२ हु सहाय,  
महती सारिन भुल्लि पिसुन३ मुनि केवल विहसि अकुलावत काप  
प्रेत१ दास डाकिनि५ दासी पुनि दासनप्रति बेताल६ दुराइ ॥  
जोगिनि७ वीर८ जातु९ कँएन पल जहँ जो जिहिँ इष्ट देत सु  
हि जाइ ॥ २६ ॥

कौंड१ कुंत१ कासू३ करवाँलक४ कटार५ रु खंजर६ छुरिका७दि ॥  
बाहन१ साँदि२ निंसाँदि३ न वाहत बहु जाँदिन वादि१ न प्रतिवादि२  
कहत दुरदिस भरहर कर कंडूँ उतरन अह निठिन किय अज ॥

१ गोह २ अग्रणी (स्व से आगे) ॥ २३ ॥ ३ दिशा के हाथियों को ॥ २४ ॥ ४  
शिव को ५ दुग्ध में शकर मिला तिस प्रकार मिलकर बहुत शस्त्रों का प्रहार  
किया ॥ २५ ॥ महादेव अपने हाथी से ६ महती नामक वीणा के बंद को मू-  
लकर ७ नारदमुनि (नारद का स्वभाव दधर दधर चुगली करने का होने के  
कारण उसको यहाँ 'पिशुन मुनि' लिखा है) ८ मस्तक २ मांस ॥ २६ ॥ ९  
वाणा ११ भाला १२ बरछा १३ खट्वा १४ घोड़ों के सवार १५ हाथियों के सवार  
१६ उस दिन कहते हैं कि दिन के उतरने पर भार को ढरनेवाला (संघा) काया  
और हाथ से शरीर को १७ खुजली मिटाने का कार्य आर्यों ने कठिनाई से  
किया ॥ २७ ॥

तिमहि मिलत मिन्नन मित तकिंतकि सकिसकि जयसदन गन  
सज ॥ २७ ॥

काति बपुंहेति बिंसत हिय विकसित चिन्हित जिम रामानुजचक्र ।  
जड़जन दुसह दुकाल परै जिम तकि उपधान्य पूषिकाशतक्र ॥  
जहँजहँ घात पात निज जानत मिलि भौहन चुंवत उठि मुच्छ ॥  
अप्पहि धन्य भान्नि लखि अच्छरि तक्रत जिन्ह जिय प्रिय तिन्ह  
तुच्छ ॥ २८ ॥

कहुँपर हेतिछिन्नि निज सिर कर गहि लंचांकहि जजंत गिरीस  
सिर निज कहुँ तिलतिल लखि सूचत सैन करि न अक्खय मम  
सीस ॥

जिततित रुंडै१कटत बहु जवन२न मुंडै३कटत मरहइ२न मानि ॥  
सब भर धरि लोदीसुत निजसिर अगँ चउ४हि बढे धकँ३ आनि ॥  
जंतमाँहिँ मिलिजात इच्छुँ जिम तिम अवमर्द घोर हुव तत्थ ॥  
इम दिल्ली१दक्खिन२जुरि असइन सद्धतहुव निज१पर२असुँ सत्थ ।  
जहँ हरि१वीर मुख्य अरिसुत जुगे२मारि अधिक भूपहिँ दिय मोद  
हुव२असिघाय काय सहि दोउ२न बिहसि सहज मन गिनिय बि-  
नोद ॥ ३० ॥

तीजो३सुत नरनाह सता२जहँ असि हनि किय उँपवीत उतार ॥  
कोसू तिम रनछोर३ बीरकिय पटु चौथे४लोदी सुत पार ॥

१ शरीर में शस्त्र २ घुसकर ३ जिसप्रकार रामानुज संप्रदाय वालों के तप सु-  
द्रा में सुदर्शन चक्र का चिन्ह होता है तिसप्रकार चिन्ह युक्त होते हैं ४ जैसे  
मुख लोग असह दुर्भिक्ष पड़ने पर सावां मलीचा आदि अड़क धान्य की ५  
रोटी और ६ छाछ को देखते हैं तैसे वीर लोगों ने शत्रुओं को देखे ७ अ-  
प्सरा ॥ २८ ॥ कहीं पर ८ शस्त्र से कटेहुए अपने मस्तक को हाथ में लेकर  
९ नजराना करके १० शिव की पूजा करते हैं ११ इसारा करके कहता है कि  
मेरा मस्तक अच्छय नहीं है १२ बिना मस्तक का धड़ १३ क्रोध करके ॥ २९ ॥  
१४ इच्छु (गन्ना) १५ प्राण १६ खड़ के घाव ॥ ३० ॥ १७ जनेऊ के आकार शरीर  
को काटकर १८ वल्ली

करन १६१० सूरहठ स्याम २ कहैं हठीसिंह १ मास्यो हनुमंत २,  
 पूराउत २८। १४ जसवंत १ कियो पटु अमन २ कगीम ३ जवन जुग २ अंत ॥  
 अरि बलबीर परत ए अठ ८ हि जियन भज्यो सिटि खानजिहान ॥  
 सोहि भजत डरि सत्रु भजे सब अतिबल पिठि लगे चहुवान ॥  
 सिबिरहु लौ न सके अरि सत्वर छिपत भये जिततित हठ छेरि ॥  
 लुटि सवन सिविरन बैभव लिय हड्ड ६१ न पति लहि विजय बहो-  
 रि ॥ ३२ ॥

तीन ३ प्रहार लगे नृप १९४। ११ के तनु तोमैर इक १ इक १ असि  
 इक १ तीर ॥  
 पंच घाय हरिसिंह १९३। ३२ लहिय पर पंसुलि गत असि दुवर  
 दिय पीर ॥  
 करन १९३। २३ लहे चउ ४ घाय सुसह कछु पंच ५ गोर रनछोर ४  
 प्रहार ॥

हठीसिंह १९२। १५ दुवर छत लहि हड्ड ६१ नवंसहिं विसद चटायउ  
 दार ॥ ३३ ॥

बुद्धिचंद्र १६२। ३ सुनकृष्ण १६३। १६ लह्यो बपु इक १ असि घाय  
 असह अतिअंस ॥

तनय मनोहर १९२। ४ को जु सबल १९३। १७ तस दुवर सर जंघु  
 लगे भिदि दंस ॥

भजनेरी पुरपति पितथल १९०। १८ भुज इक १ लग्यो असि बाहु  
 ल बहि ॥

जसवंत १९२। १९ जु हिंडोलीपति जस कंठ वेधि इक १ सर गय  
 कहि ॥ ३४ ॥

॥ ३१ ॥ १ डेरा भी शीघ्र नहीं लेसके ॥ ३२ ॥ २ भाला ३ घाय ४ नीर (उज्ज्वलता)  
 ॥ ३३ ॥ ५ कन्धे पर ६ शरीर और कन्धे की संधि (हसली की हड्डी) पर ७ क-  
 चक कटकर ८ दस्ताना कटकर ॥ ३४ ॥



पंच लहे छत जैत्र १९३।१।१० पितृव्यक तोमर असह लग्यो इक १  
तत्थ ॥

अनुज इंद्र १९४।१।११ अरि १९४।३।१२ सल्लदुहु २न इस सहिय ए-  
क १ दुव २ छत क्रमसत्थ ॥

सूर सचिव केसव १२ सोमानी अट्ट ८ प्रहार लहे निज अंग ॥  
इतिमुख हुव चउसत ४०० घायल इस भट कहियत अब जै असु-  
भंग ॥ ३५ ॥

परयो दयालु १९०।१ तनय वह भूपति १९१।१ अर्जुन १८८।१ अ-  
क्खयराज १८९।२ पउत्त १६।१२ ॥

सेखाउत्त कुम्भ बहु संहारि जोध अमान २ परयो जसजुत्त ॥

भीर ३ परयो जहवकुलभासक अरिसासक नृप सालक एह ॥

भीम ४ हिनाम कबंध घनै भट गेरि अराति गये सुरगह ॥ ३६ ॥

रामसिंह ५ सीसोद महारन बसु हुव खंडनखंड बिखंड ॥

गोहिल स्याम ६ संखुला गिरिधर ७ दहिया मान ८ चंड परदंड ॥

बीर जवन सुबहान ९ बहादुर १० परे नूर ११ सहतीन ३ पठान ॥

सब इतिमुख बुन्दीस सहायक दिसत रु सडि २६० अरे जयदान ३७

परत छतन उतके सत पंच ५ रु मरत तिसत ३०० अष्टक ८ मुख्यादि

खानजिहान भज्यो जिय लै खल सभय पराजयकल संपादि ॥

गयो दुरि सु लोदी कोलागढ जिततित ईतर सहायक जूह ॥

सवन सिबिर लुटे पहु संभर देखिदेखि द्रुत पहुँचि दुरूह ॥ ३८ ॥

रैन १९२।१ भूप बुरहानदंग रन मंडि कोल कहे जे मिच्छ ॥

उन्हि टारि लुटे वसु इतरन बसुपर रहियन लोभ अनिच्छ ॥

सिबिरसेस सेवन लुटे सब लहै बुन्दीस चखावत तेग ॥

गहिय लूट सत्रह जुतसत ११७ गज बाजी सरदग दुव २२५ वरवेग ३९

मंजुल तोप त्रिसठि६३ अयोधय जोर जबर सत्तारि७० जंबूर ॥  
 सब सिबिरन इतिमुख सामग्री सबहि गहिय बुन्दीपति सूर ॥  
 गिनि लोदी प्रविश्यो कीलागढ द्रुत सुहु जाइ लयो गरदाइ ॥  
 त्रय३ दिन१ रत्ति२ सतत दै तोपन लोपनगढ लगिगय हठजाइ ॥४०॥  
 नद्यो डरि कछु खिल तीजी३ निस जानि प्रलय खिन खानजिहान ॥  
 नृपसह भट पहुँचत निश्चेनिनै सक्यो न रहि जिम असु अवसान ॥  
 उपहारहु कछु लै न सक्यो यह हेति१ द्रविन२ मुख गढहि विहाइ  
 संधि चोर जग्गत जिम स्वामी इम कढिगो जिमतिम अकुलाइ४१  
 विजय निसान आकाइ सता१९४१ बुध कीलागढहु स्ववस इम  
 किन्न ॥

कढि न सके कति सत्रु सहायक लसि हसि लोहु लाइ उर लित्र  
 पर तिहिँ दुर्ग न रक्खे ते पर बल न गहै जहँ तत्थ बसाइ ॥  
 निज सुभटन मिलि हठन निहोरत प्रत्यागमन कियउ खिन  
 पाइ ॥ ४२ ॥

अयुत१०००० साहदल बिच जो उत्तम मरत१ बचत जान्यो महि-  
 पाल ॥

कीलागढ दुर्गाधिप तिहिँ करि सेन अयुत१०००० तहँ धरि अ-  
 रिसाल ॥

इम अरिसाल१९४१ प्रथम१ जय उद्वरि हनि बहु अरि गय  
 साहहजूर ॥

मिलत अंस थप्पलि मुगलसहु सो सराहि लायो उर सूर ॥४३॥  
 जंपिय नृप लोदी सुत जेठे२ हरि१३३ काका जो प्रथम हनै ना ॥  
 तो जवनेस गिनहु निहचै तुम विजय रावरो कबहु बनै न ॥

१ लोहे की २ निरन्तर ॥ ३१ ॥ ३ निसरनियों से ४ प्राण के अन्त में ५ शत्रु  
 और धन आदि ॥ ४१ ॥ ६ शोभायमान होकर ७ परन्तु वन शत्रुओं को उस  
 गढ में नहीं रक्खे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

खुशमका हरिसिंहको लाखका पट्टादेना] सप्तमराशि-द्वितीयमयूख(२५७२)

बड़े दुवर्हि लोदीसुत बहूत छोटे२ हने मैं१ रुस्नेछोर२,  
खानजिहान भज्यो रन तजि खल इहिं जय१हेतु हरी१९३३  
हि न ओर ॥ ४४ ॥

तखतनसीन हुकम बस बत्ती प्रभु इन्ह सहज इतर निरपेक्ष,  
स्वामी दृढ परखहु दै सासन अब न होहु तब गहन अवेक्ष ॥  
तिम नृपसंग साहभट हे तिन सुहि जयबीज कह्यो हरिसीह१९३ ॥  
नृपतिन सह यह बहुरि निवेदिय यह जस लिय काकाहि अंबीह ॥  
इहिं जय रीझ जोहि प्रभुके उर हरि१९३३ कहँ बखसहु सो-  
हि हजूर,

असहन जदपि साहदिय हो यह पहु संकोच तदपि परिपूर ॥  
स्वस्थ भयोहरि१९३३ जब घायनसन संसद बुद्धि तबहि तिहिं साह,  
दम्म लक्ष१००००० मित आय पटा दिय लिखि गुग्गैर १ मुख्य  
पुर लाह ॥ ४६ ॥

दम्म त्रिलक्ष३००००० पटा कति मित दिय पै पत्तन गुग्गैर १ प्रधान ॥  
सह गज १ अप्पि हजारी १००० सुन सुबरमन्निय खास सभासद मान ॥  
अरु बुरहानपुर सु किय आगस माफ कराइ सुपै महिपाल ॥  
उपदा १ भिन्न भिन्न उत्तारन रहरि १९३३ पँहँ तसहु सधाये हाल ॥ ४७ ॥  
विजपरीझ सुहि समुझि साह बलि बिनु लूटन दिय नृपहिं बिसेस ॥  
तदपि निवारि लूटमैं तोपन पीलु १ तुरंग २ मुख सब किय पेस ॥  
सिंधुर सकल इकसत सबह ११० प्रथित सँति सत द्वै रु पचास २२५ ॥  
आयत मुख्य पटा लय अष्टक बर जंबूर पचास रु बीस ७० ॥ ४८ ॥  
भनियत तीन ३ रजतमय भेरी १ अरु त्रिलक्ष३००००० मुद्रा कहु अग

१ इस जय का कारण हरिसिंह ही है ॥ ४४ ॥ २ इच्छा रहित ३ वस्तु का दे-  
खना अर्थात् परीक्षा ४ निर्भय ५ सभा में बुलाया ६ रुपये ७ आमद अर्थात्  
लाख रुपये सालाना आमदनी का पट्टा दिया = लाभ ॥ ४६ ॥ ८ अपराध १०  
नजराना ११ न्योछावर ॥ ४७ ॥ १२ हाथी १३ प्रसिद्ध १४ घोड़े १५ बड़े फैलाववाले  
आठ डेरे ॥ ४८ ॥ १६ चांदी के १७ नज़ारे (नोवत)

असि<sup>१</sup>बंदूक<sup>२</sup>आदि बहु आयुध<sup>३</sup>अंकं चमर<sup>४</sup>ध्वज<sup>५</sup>छत्र<sup>६</sup>उदगा<sup>७</sup> ॥  
 इत्यादिक नृपकै सब आये अरिसिविरन लुंठित उपहार ॥  
 नालीजंत्र त्रिसष्टि<sup>८</sup>३दये नन साह लये सासन अनुसार ॥ ४९ ॥  
 आसफ<sup>९</sup>सहित महावत<sup>१०</sup>अक्खिख नृपहिं जदपि इम बहुत निहोरि ॥  
 हरि<sup>११</sup>९३३कैहँ रीभ दिवावहु कपो हठि जोकिनलेहुतुमहिंसवजोरि  
 तदपि नरेस न लुब्धं भयो तँहँ देसहु काका अर्थ दिवाइ ॥  
 बलि करि सिक्ख समागतं बुंदिय पहिलेँ इम दक्खिन जयपाइ ॥  
 पुनि तँहँ सचिव रानके प्राघुन व्याहन चढन त्वरा करि वेहि ॥  
 पुर बुंदिय आये तिनतै पहु जुत हित मिलि प्रभुद्वित किय जेहि ॥  
 व्याहन चढन सचिव केसव बुध किय आरंभ अनेक प्रकार ॥  
 उचितन उचित निमंत्रन अप्पि रु बुल्ले सब सहस्रद्वयवहार ॥ ५१ ॥  
 हड्डवती सत्ता<sup>१२</sup>९४१दुल्लह हुव अर्चि गनेस<sup>१३</sup>भातृगन<sup>१४</sup>आदि ॥  
 मंगल वस्तु<sup>१५</sup>सकंकन<sup>१६</sup>मिथित सयं बंधिष जयजस संपादि ॥  
 उफनंतछकमनसिज द्युति आकृति भूप जई गमु<sup>१७</sup>हंय<sup>१८</sup>मंय<sup>१९</sup>भीर ॥  
 सब असगोत्र<sup>२०</sup>सगोत्र<sup>२१</sup>सनाभि<sup>२२</sup>न बीरन सजि जथाक्रम वीर ॥ ५२ ॥

॥

॥

भूपति<sup>२३</sup>९२१आदिकटे रन जे भट सुत तिनकेसवविधि सनमानि  
 बलि अप्पन जयकार प्रवीरन आदर अधिक जथाक्रम आनि ॥ ५३ ॥  
 सबय<sup>२४</sup>जिते भूखन<sup>२५</sup>प्रहरन<sup>२६</sup>सम कुंकुम वसन<sup>२७</sup>दुल्लह अनुकैर ॥  
 जन्य<sup>२८</sup>बने नृपसंग चले जुरि अन्य घने बयवृद्ध उदार ॥  
 गज<sup>२९</sup>बांसंत<sup>३०</sup>सकट<sup>३१</sup>श्वेसंग<sup>३२</sup>गन संभूर्त करि लक्खन धन संग ॥

१राज्य चिन्ह<sup>३३</sup>उदग्र<sup>३४</sup>तोपे ॥ ४९ ॥ ४लोभी नहीं हुआ<sup>३५</sup>आया ॥ ५० ॥ ५पाहुने  
 प्रसन्न किये ८ उत्सव सहित ॥ ५१ ॥ ९कंकण डोरड़ा से मिलीहुई १०हाथ के  
 बांधा ११कामदेव की सी क्रान्ति १२ऊट ॥ ५२ ॥ १३अपने समान अवस्थावालों  
 को भूषण, शस्त्र, केसरिया वस्त्र दुल्लह के १४सदृश दिये १५वराती १६ऊट १७  
 खचर १८भरकर

• शत्रुशाल का व्याहनेको उदयपुर जाना] सप्तमराशि-द्वितीयमयूख (२५८?)

बुंदीपति किय कुंच विवाहन चढि मारीच लसत चतुरंग ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

अनुज१पितृव्यक२बंधु३इम, गुन.सगुत्त१ असगुत्त२ ॥

संग चले सामंत सब, अर्जन सुजस अछुत्त ॥ ५५ ॥

रक्खन जैनपद कति रहे, स्वामिकथन अनुसार ॥

गढगढ भय डारत गये, बट्ट बरातिन बार ॥ ५६ ॥

सद्धि उचित बुंदीहि सब, रुचि कोटा अनुरत्त ॥

माधव१९३१२काका कछुक मिस, पच्छो गेहहि पत्त ॥ ५७ ॥

पहुंच्यो. पहु इत, उदयपुर, वरसत धन धन बिंदु ॥

अर्थिन करत प्रसन्न इम, उत्पलंगन जिम इंदु ॥ ५८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे शत्रुशल्यस्योदयपुरपाणिग्रहणात्पूर्वं यवने-  
शाज्ञया दक्षिणदेशमासाद्य समरे लोदीखानजहाननामानं विजित्य  
यवनेन्द्रजयसंपादन१, राजादिबुन्दीवीराणां क्षतमरणासादनानन्तरं  
शत्रुसामग्रीलुण्ठनभणन २, एतद्विजयाच्छत्रुशल्यस्य स्वपितृव्यहरि-  
सिंहार्थं यवनेन्द्राल्लक्षायमितदेशदांपन३, दिल्लीदङ्गादबुन्द्यागतशत्रु-  
शल्यस्य करग्रहणार्थमुदयपुरगमनवर्णनं द्वितीयो मयूखः ॥ २ ॥

१ मुख्य हाथी पर सवार होकर सेना सहित शोभायमान हुआ ॥५४॥ अछुता  
यश २ संपादन करने को चले ॥५५॥ ३ देश की रक्षा करने के लिये ४ समूह  
॥ ५६ ॥ ५ गया ॥ १७ ॥ ६ रात्रिविकासि कमलों को चन्द्रमा प्रसन्न करता है  
तिसप्रकार धन रूपी बिन्दु से पाचकों को प्रसन्न करता हुआ उदयपुर पहुँचा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल का उदयपुर विवाह करने के पूर्व बादशाह  
की आज्ञानुसार दक्षिण देश में जाकर लोदीखानजहान से युद्ध करके बाद-  
शाह का विजय करना १ राजा आदि बुन्दी के वीरों के घायल होने और मा-  
रेजाने के अनन्तर शत्रु की सामग्री लूटने का कथन २ इस विजय के कारण  
शत्रुशाल का अपने काका हरिसिंह को बादशाह से लाख रुपये का पट्टा दि-  
लाना ३ दिल्ली से पीछे बुन्दी आकर शत्रुशाल का विवाह करने के अर्थ उद-

आदितश्चतुर्दशोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥ २१४

॥ प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उतरतजाइ बरात इम, सखिय समुचित सँव ॥

पहुँचन तोरन लग्नपर, आरंभिय अनवँव ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदीअधिप बरात पत्त जिहिँ लग्न उदैपुर ॥

वाहीदिन दुव२ ओर धरनिपति धरि दुल्लह धुर ॥

आये तिनप्रति एह सता १९४१७ पठई कहि सत्तम ॥

गज १वा हय२चढि गमन करहिँ तोरन कैसे क्रम ॥

दंभीन तवहि तिन दुल्लहन चढि बाजिन चलिहँ चविय ॥

अप्पहि गइंद छन्न न अवनि जोग्य हयहि इहिँ खिन जविय ॥

सता १९४११ यहहि गिनि सत्य क्रमन हय सज्ज कराये ॥

उतके दुल्लह उच्च इभन छल करि चढि आये ॥

जान्यौ छल नृप जदपि बाँह तजि न गज बइठो ॥

पहुँचत मुख्य प्रतोलिँ दुल्लह हय थित इक१ दिठो ॥

हरिदासनाम कवि बारहँठ बचन बान दिय तहँ विदित ॥

मपुर जाने के वर्णन का दूसरा मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१४ मयूख हुए ॥

१ उचित कार्य २ तुरन्त ३ पाप रहित अर्थात् पुण्य कार्यों का आरंभ किया ॥ १ ॥ जिस लग्न पर बुंदी का राजा विवाह करने को गया उसी लग्न पर अन्य दो राजा विवाहने को आये उनसे ४ अत्यन्त पूज्य राजा शत्रुशाल ने कहलाया कि तोरण पर हाथी वा घोड़ों पर सवार होकर ५ किस रीति से चलेंगे १ घोड़ों पर चढ़कर चलना कहा ७ अपने हाथी पृथ्वी में खिपे हुए नहीं हैं इसकारण इस समय ८ वेगवान् घोड़ों पर चढ़कर चलना ही उचित है ॥ २ ॥ ९ ऊँचे हाथियों पर १० घोड़े को छोड़कर हाथी पर नहीं चढ़ा ११ द्वार (तोरण पोळ) १२ संदायच शाखा के हरिदास नामक चारण ने (सामान्य रीति से चारण मात्र को पारहठ कहते हैं इसी कारण हरिदास संदायच

गज उचित द्वार हय चढि गमन दहदह ६१ न समन प्रसाद हित ॥ ३ ॥  
 सोहु असह सहि सुपहु कृत्य संहिय तुरंग करि ॥  
 वर सब उत्तरि बहुरि बरे निजनिज ओसर वरि ॥  
 ठाम जथोचित ठानि स्वसुर प्रासाद रीति सब ॥  
 अप्प अप्प पटअयन अय ३हि वर ऊढ गये तब ॥  
 नृप दिय निदेस बुंदियनगर अप्पन १ अरु बंधुन २ अखिल ॥  
 इम सेस जिते भेजहु इहाँ कम इम दम्म दुलकख २००००० किल ॥ ४ ॥  
 पुर इम हुकम पठाइ बिहित करि नित्य जथाविधि ॥  
 दब्बनचहि खिल दुलह निखिल खुल्लिय अलका निधि ॥  
 जिते रान जगतेस सुकवि पटुपन सनमानिय ॥  
 भूसित इक १ इक १ भेजि दये तिन्ह घर गज १ दानिय ॥  
 पोसाक २ खास भूखन ३ प्रगुन अरु संगहि मुद्रा अयुत १०००० ॥  
 हे विदित जिते तिन्ह हित हुलासि जब पठये अति मानजुत ॥ ५ ॥  
 द्वार द्विंद नृप दैन गहत किल कृपन कदार्थ ॥  
 दियेउ रति हरिदास उपालंभ जु सनर्म वह ॥  
 तसगृह खास तुरंग १ सता १९४ १ पठयो भूखनसम ॥  
 ओरन सन दल ३ अग्य सिचय २ भूखन ३ दूखन सम ॥  
 मुद्रा हजारपंच ५००० हि प्रमित भेजि तदनु ओरन भवन ॥  
 समुचित पठाइ बुंदिय सुपहु किति लियसु बंटहि कवन ॥ ६ ॥  
 किय संभर संतकार इमसु लिय सबन सुआदर ॥  
 दुखित इक १ हरिदास बंडे लूम सु करिहै वर ॥

को बारहठ लिला है) ॥ ३ ॥ अपने अपने १ डेरों में २ विवाहे हुए ॥ ४ ॥ ३  
 उचित ४ सम्पूर्ण ५ कुवेर की पुरी की ६ समृद्धि ॥ ५ ॥ ७ द्वार का हाथी,  
 अर्थात् तोरण का हाथी देने के कारण निश्चय ही कृपण राजा ८ किसी लाभ में आ-  
 ग्रह करते हैं इसी कारण हँसी पूर्वक ९ ओलम्मा दिया १० आधा आदर और  
 वस्त्र ११ जिस पीछे ॥ ६ ॥ शबुशाल को दिये हुए घोड़े को १३ पूछ १२ काट  
 कर

बहुरि तास गल बंधि भिन्न मिट्टीमय भाजन ॥  
 दलअंतर तारिदिय संपट १ दम्मा २दि समाजन ॥  
 सुनि नृप लिवाय जे देय सब देखि उचित ओरन दये ॥  
 खिल त्याग लेय सुनि कवि निखिल भागधेय मोदित भये ॥७॥  
 बदिय भूप मम बाजि दयो तजि जिहि करि दुर्दस ॥  
 सो आवहि ममसीम ततो मुख असित ठानि तंस ॥  
 चक्रीवान चढाइ बुरीगति खलहि विडारौ ॥  
 अंकहि तो अवकास मूढ रंकहि जो मारौ ॥  
 हमरै न द्विद कछु दैनहो हय दिन्नो इम ताहि हम ॥  
 कटुबैन कुटिल तिम रंति कहि किन्न अबहु यह नीचक्रम ॥८॥  
 उपालंभ सुनि एह दयो रानहु हरिदासहि ॥  
 सढायचहु सिटाइ पुनि न जिम स्वमद प्रकासहि ॥  
 बुंदीपतिदिग बुल्लि स्वीय कविजन इत सादर ॥  
 अखिखय बढि सबअग्न बित्त बरसहु बनि बादर ॥  
 दम्मन जितेक पुब्बहु दये बहुरि न दिय जिमकोहुबढि ॥  
 इहिरीति त्याग बंटहु असह पुनिपुनि मंगहु लेहु पढि ॥ ९ ॥  
 गर्जआरूढन गर्व बिगारि जिम न सुख बतावहि ॥  
 बहुरि विवाहक बरन सकल अप्पन सुमिरावहि ॥  
 बिरचहु ऐसी वत्त हुव जु अत्र १ न अन्यत्र २ हु ॥  
 रोम सुनत उभरहि सिटहि आधुनिकन संत्रहु ॥  
 साँवल १६६।२नगेस १६७।१मिश्रन स्वकवि बंदी दोलतराम १बलि

उसके गले में मिट्टी का फूटा पात्र (गर्ग) बांधकर सेना में चर और रूपये आदि सामग्री सहित ताड़ दिया २ सय ३ अपना अपना बंट लेकर ॥७॥ ४ काला मुख करके गर्ध पर चढाकर उस दुष्ट को निकाटंगा ५ अवकाश हुआ तो उसको बिन्दुयुक्त (कलंकित) करके उस मूर्ख को ७ रात्रि में ॥ = ॥ ८ अलंभा ॥ ९ ॥ ९ हाथी पर चढकर तोरण बांधनेवाले दुलहों का गर्व मिटाकर सुख नहीं बतासके जैसे १० इस समय के ११ यज्ञ अथवा उत्सव दान ॥ १० ॥



सुनि प्रभुनिदेस इहिं मुख सबन किय प्रारंभन दान कलि ॥ १० ॥  
 इम \*ग्रंथति आरंभ भयो सबतैं बढि भासत ॥  
 मिलि कवि चारनमुख्य प्रकट जस अधिक प्रकासत ॥  
 \*कछु मेवारेकविहु गंठि अंतर छल साग्रह ॥  
 बलजें आइ इम सबन अरज भूपहिं पठई यह ॥  
 कविमात्र सिरहि उपकार किय सगताउत गोकुल सुमति ॥  
 तसहस्र त्याग बंटहु ततो अल्पहु लौ व्यय है न अति ॥ ११ ॥  
 सता१९४१ अरज सुहि सुनत अनखि पठयो यह उत्तर ॥  
 होहु विगारनहार त्याग जेजे बंदान्यतर ॥  
 तेते छत्र १ रु तुम २हु मुख्य गोकुल ३सम्मत मिलि ॥  
 कोरि विघ्न किन करहु गरुव वितरन जै हैं मिलि ॥  
 हमरे न गजहु हरिदासहित हय मम दुर्दस तबहि हुव ॥  
 कै रान चहि रु इम जस करत धन जामिनंघर रक्खि धुवा ॥ १२ ॥  
 सिक्ख कविन यह सूचि दई संभर दिन दुल्लह ॥  
 स्वसुरालय गय समय महामहं मचत महामहं ॥  
 सयनमहल सोपान चढ्यो बावन ५२ अनुक्रम चहि ॥  
 दिय तहैं बावन ५२ द्विरद रसिक गजकेतु तुलौ रहि ॥  
 नारीन निक्कर वादन १ नटन २ जहैं हे गान ३ जितेक जुरि ॥  
 ते बंदिदये इभ सब तिनहिं बहुल निर्दक १ दम्भ २हु बहुरि ॥ १३ ॥  
 न लाखि होत निर्वाह थान जिनजिन गज थप्पिय ॥

\*दान १ आग्रह सहित द्वार पर आकर ॥ ११ ॥ २ अधिक दानी होवे सो हमारे त्याग को विगाड़ो ४ कोड़ ५ बड़ा दान ६ बुरी दशा, धन का ७ प्रतिभू (जमानत देनेवाला), घर में ८ निश्चय ही रखकर ॥ १२ ॥ ९ बड़ा उत्सव होकर व-ह १० बड़ा तेजस्वी सनम पर स्वसुर के घर पर गया ११ शयन करने के म-हल की सीढ़ियों १२ कर्ण की बराबरी करके १३ स्त्रियों का समूह वाय बजा-ने और नाचनेवाला और गातेवाला जितना वहां था उसको १४ बहुत मोह-र और बहुत रूपों के साथ हाथी बांट दिये ॥ १३ ॥

मंगियं जिनजिन मुल्ल अधिक तिन्हतिन्ह प्रभु अप्पिय ॥  
 दुरे महल खिल दुलह सिटत प्रातहि श्रद्धासम ॥  
 रान बसहि धरि रिथं तित्थं बनि तित्थ कृपनतम ॥  
 बुंदीस सुजस दब्बे विमन रंच दिनन पाये रहन ॥  
 इहिं बीच लिखे पहुँचे अखिल सेस द्विरद सब देससन ॥१४॥  
 बीकापुर १ इक्क १ वर पर २ सु भट्टी जैसलपुर २ ॥  
 कतिक ख्यात इम करत धरत कति इतर नाम धुर ॥  
 वर इक्क १ हु कति वदत वरनं त्रिक ३ कतिक बतावत ॥  
 किमहु होहु अत कोहु जोहु मति मग्ग न जावत ॥  
 गृह निज परंतु जे सब गये दुर्मनपन धारत दुलह ॥  
 संभरअधीस रहि इक्क १ सता १९४ १ मंडिय अतुलित दानमह १५ ॥  
 बुंदीपति चिर बहुरि उदयपत्तन रहि इक्कल १ ॥  
 अखिल त्याग उपहार बंधि तँहँ निचय वित्तवल ॥  
 इमभूरति नवअष्टि १६९ दये मैगल दिन दुल्लह ॥  
 इक गुन सर ५३१ मित इभन मुल्ल अप्पिय उद्वह मह ॥  
 अप्पिय मतंग सतसत्त ७०० इम सहँस इक्क १००० बाजी सु गत ॥

बाकी के दोनों दुलहे अपनी श्रद्धा सहित लज्जित होकर ? छिपगये सो वे  
 अत्यन्त कृपण दुलहे राणा के रेखिय (धन) को धारण करके अर्थात् महाराणा के  
 दिये हुए धन को लेकर वसे और रेदीखने में स्त्री के रज के समान होगये; अ-  
 थवा स्त्री की रजयुक्त योनि के समान अदर्शनीय (नहीं देखने योग्य) होगये "यहाँ  
 एक तीर्थ शब्द स्त्री का रज वाचक और दूसरा तीर्थ शब्द दर्शन वाचक तथा  
 योनिवाचक है, जिसमें शब्दार्थचिंतामणि का प्रमाण है यथा "तीर्थम्-नारीरज-  
 सि । दर्शने । योनौ" इसके उपरान्त सामान्य खेल का नाम भी तीर्थ है जि-  
 ससे यह अर्थ भी होसक्ता है कि उस खेल में वे नारीरज के समान अदर्शनी-  
 य होगये एक दुलहा बीकानेर का और दूसरा दुलहा जैसलमेर का भादी था-  
 ४ कितने ही अन्य नाम कहते हैं और कितने ही लोग एक वर और कितने  
 ही तीन वर कहते हैं सो किसी प्रकार होओ और कोई बात सत्य हो परंतु  
 ५ उदास ॥ १५ ॥ १ धन के समूह के बल से ७ मूर्तिमान् हाथी ८ विवाह के

शत्रुशालका बहुत स्याग देना] सप्तमराशि-तृतीयमयूख (२५८७)

मुत्तीन द्विसत २०० कुंडल जमल २ स्वर्णकैटक जुग २ पंचसत ५००  
पंचसहस्र ५०० सिरुपाव करभ आदिक औरहु कति ॥

इम बितैरन उपहार रक्खि इतरन बितरन रति ॥

खिल रूपय त्रयलक्ष ३००००० अखिल खटलक्ष ६०००००  
जुरे इम ॥

किय निहाल जाचकन जलेंद चातक १ केकिरेन जिम ॥

बंटतहि छोरि सचिवन बहुरि आयउ बुद्धिय अपन इत ॥

उत स्वापतेय बिंदुन उभलि मेघ सचिव बरखे अमित ॥ ७॥

उदयनैर आश्रइन पीलु इक १ दियउ ग्राम १ प्रति ॥

हुव जैं पावनहार अधिक तैं अधिक अधिक अति ॥

सिंधुर मोतीसर १ न मिले खट नृप जसजामिन ॥

लहे उभय २ राउल २ न बिद इक १ मित दम्मा मि ३ न ॥

वारहठ १ बिप्र बंदी ३ बहुल हेलोसह गजबंध हुव ॥

इम कहत लोक पावत अबहु भैम १ रजत २ तिहिदंग भुवा १ ८॥

अज १ न भये तिन्ह अपन भये तिन्ह अपन गजरन भर ॥

लघु मंगन दुबै लग बंधि अंगन लिय गैवर ॥

जाचक जाचकजनहु धनी हस्थिन हुव धामन ॥

भरे द्रविन जिनभोन कोन कहि कहि धनकामन ॥

जन रान अन्न जीवत जिते अरुखहि दुल्लह इक १ यह ॥

उत्सव में हाथियों की कीमत की ? मोतियों के जोड़े २ स्वर्ण के कड़ों के जोड़े ॥ १६ ॥ ३ जूट ४ इसप्रकार दान की सासप्री रखकर दूसरों की दान में प्रीति नहीं रखली अर्थात् इतना दान देने की अन्धा किसी में नहीं रही ५ मयूरों को ७ धन की ॥ १७ ॥ ८ उदयपुर के आश्रित चारणों को प्रति ग्राम एक एक हाथी दिया ९ मोतीसरो (चारणों के याचक विशेषों) को छः हाथी मिले १० ढोलियों को हाथी मिला चारण, ब्राह्मण, आदि ११ खेल से ही गजबंध होगये १२ स्वर्ण १३ चांदी उस नगर की भूमि में अब भी पाते हैं ॥ १८ ॥ जिनके घरों में कभी बकरा भी नहीं रहा तिनके घरों में हाथियों के समूह होगये १४ छोटे याचक ढोली पर्यन्त १५ हाथी १६ धन से

जान्यौ सता १९४१ हि दातार जिहि महविच गृहगृह किन्न मह १६  
 नृप सचिवन तँहँ नियत त्याग बंटिय छमासदतक ॥  
 इतबुंदियपहु अप्प भूति बिलसिय जसभासक ॥  
 इक्क १ हि गहि गल आँट दम्म सहजहि छलकख ६००००० दिय ॥  
 सो किम व्यय संकुचहिँ प्रचुर कौतुक १ हंगाम २ प्रिय ॥  
 जगतेसरानबाहिनीहु जिम चंद्रकुमरि १९४१ रानी चतुर ॥  
 निज रमन इष्ट सादिय नियत पायउ सुजस कुटुंब १ पुर २ ॥ ३० ॥  
 पट्ट लहि रु यह प्रथम १ बरी अष्टम ६ रानी बर ॥  
 व्याही नवमी ९ बहुरि उक्त रानी गढ ईडर ॥  
 स्यामलनामक सहर इक्क जँहँ तँहँ सिवालाय ॥  
 परंपरा तँहँ पिक्खि हड्ड १ सततीन ३०० दये हय ॥  
 तिम नृप बिसेस त्यागहु वितरि बुन्दीपुर आयउ विदित ॥  
 खिल सत्त ७ इमहि बरिहै निखिल जिम अवसर तिम सत्रुजित १  
 पातुरि इत जोधपुर अधिप गजसिंह पुब्ब वह ॥  
 नाम अनाराँ नारि साहसन लहिय रीभसह ॥  
 बस तस इम सुकबंधसदा रक्खहिँ सिर सासन ॥  
 जननि स्वसुत जसवंत तथ पठयो लघुतासन ॥  
 अक्खिय पदत्र तस तिहिँ उठत अगग धरहु कहि दास इत ॥  
 जो मंगि कहै तो जोधपुर तू लघुसुत मंगहु त्वरित ॥ २२ ॥  
 नम्र जाइ तस निलय जननि प्रेरित जसवंतहु ॥  
 पातुरिअगग पदत्र लहत खिन जाइ धरे लहु ॥  
 मतिमति कहि तिहिँ कुमर अधिक लालित लायो उर ॥

१ उस उत्सव में घर घर में उत्सव कर दिया ॥ १९ ॥ २ उत्सव प्रिय ॥ २० ॥ ३ ॥  
 माताने अपने पुत्र यशवंतसिंह को वहाँ शीघ्र भेजा और कहा कि वह गणिका उठे  
 तब ३ जूतियाँ हाथ में लेकर उसके आगे रख देना और कहना कि मैं आपका  
 दास हूँ उस समय वह कहै कि मांग, तो तू लघु पुत्र है सो शीघ्र ही जोधपुर  
 मांगना ॥ २२ ॥ ४ घर ५ उस समय शीघ्र उसके आगे जूतियाँ जाकर घरी  
 ६ लाइ करके

जोधपुरके राजा जसवंतसिंहका राजा होना] सप्तमंशितृतीयमयूख (२५८९)

मंगि कहत लिय मंगि प्रसू सिखयो सु जोधपुर ॥

पातुरि सुवत्त गजसिंह प्रति सूचि कहिय मम एह सुत ॥  
लिखवाइदेहु कहि साह लग जोधपुरहि इहि पट जुत ॥२३॥

अंगज जेठो१ अमर वीर बिनु मंतु बिचारत ॥

पातुरि सासन प्रबल धुवहिं करियो इत धारत ॥

रहोरन अधिराज रंच प्रतिपति झूठ रहि ॥

दुख्यो कलि१ कंदर्प२ चित्त रत पटु अभीष्ट चाहि ॥

बुल्लयो स्वपुत्र जसवंत बुध पटु कनिष्ठहु पाइहै ॥

हमरे अभाव एहहि हुलास चामर१ छत्र२ चलाईहै ॥२४॥

प्रमदासन इस प्रमद दै रु पत्तो जब दिखिय ॥

हजरतकेहु हजूर करन जोरि सु विज्रति किय ॥

अंगज जेठो१ अमर लहहु नागोर अप्प लिपि ॥

जोधपुरहिं जसवंतदेस जुत पाइ रहहु दिपि ॥

ओरहु बिसेस कति हेतु इह मिलत मनि सुलतान सुहि ॥

प्रतिलोम पिक्खि अंगज१ अनुज२ जुग२ ठाँ करिदिय लेख जुहि २५

कछुहु वीरमनि कुमार अमर जनकहिं नन अक्खिय ॥

साहलिपिहु धरि सीस रहत नागोरहि गक्खिय ॥

इम पट्टप जसवंत जनक सम्मत हुव अनुजहु ॥

बडीसुता संबंध प्रच्छे वह वरिय सता१९४१२ पट्ट ॥

क्रम जो तृतीयशरानी कहिय सिंह सुता सीसोदनिय ॥

कर्मवति१९५१२ तास जेठो१ कनी करग्राहेन तहँ नियत किय ॥२६॥

नृपपतनी नाम करि कथित तीजीशराजकुमरि१९४१३ ॥

१ माता के सीसने अनुनार ॥ २३ ॥ बडा पुत्र अमरसिंह बिना अपराध था ता  
भी २ निश्चय ही शराठाडों का राजा उसकी प्रवृत्ति में; अथवा उस अमरसिंह  
के बडप्पन में शुरू रहकर ४ कालदेव के युद्ध में दबकर ५ छोटा ही पावेगा  
॥ २४ ॥ ६ बादशाह की हजूर में हाथ जोड़कर अर्ज की ७ आपके लेख से ८  
प्रकाशित होकर ९ उलटापन ॥ २५ ॥ १० पिता की सलाह से छोटा होगया  
११ पीछे १२ विवाह १३ निश्चय ॥ २६ ॥

तनया पहिली शतास बिंद जसवंत लई बरि ॥

बदत किते किय व्याह महिपपन लहि कबंधमनि ॥

कुमरपनहि कंति कहत बरी दुलही सु दुलह बनि ॥

सक बिदित तत्थ निश्चय सहित कहिय तत्थ लिपि प्रकट करि  
खिल जे उदंत बिचबिच अखिल भासि निकट भवदिन्न भरि ॥२७॥

पुब्बा १ पर २ नहि नियत बिदित जान्यो जिन्ह बत्तन ॥

तिन्ह संभव होइ तिम मिलत समुझहु श्रोता मन ॥

बरसन अंतर बत्त जदपि हम जोरिदई जहँ ॥

लेहु सुनत अनुलोम शतजहु प्रतिलोम २ भाव तहँ ॥

कहुँ कथन सिंह अवलोक १ क्रम भेक फाल २ क्रम कहुँ भनि

॥ २८ ॥

उदयनैर सन आत सिक्ख दै नृप प्रबोधसह ॥

निज काका हरि १ ६ ३ ३ नाम अरहि दिल्लो पठयो वह ॥

तिम सिखयो मद तजहु भजहु जवनेस नछ भति ॥

इम न रहहु उनमत्त गहहु प्रमुपास दासगति ॥

गुगौर रहैं जिम स्वीयगृह जिम न लहैं खिन पिंमुनजन ॥

जल १ दुब्द २ मिलत इक १ होइ जिम मिलि तिम सबहु सरव मन ॥२९॥

पहिलै बुरहानपुर रोप जिहँ भुज बेधे रन ॥

बलि पकरयो भरि बत्थ बंधि तस पैगध निबंधन ॥

१ दुलह ॥ २७ ॥ इन बातों में पहिले कौन हुई और पीछे कौन हुई यह क्रम नहीं जाना  
सो जहां जिसका सम्भव होवे तहां तैसा आनामन समझ लेवें इन बातों में  
वर्षों का अन्तर है तो भी हमने जोड़ दी है परंतु वहां २ पाहली पहिले और पिक-  
ली पीछे कही गई है जिसमें ३ उलटा क्रम नहीं है इन में कहीं कहीं तो सिंहावलोक-  
न (सिंह अपने सारे हुए भक्ष्य को आगे चलते समय पीछा फिरकर देखा  
है) क्रम से और कहीं कहीं भेक फाल (मैं इक क्राई छलांग छोटी और कांई  
मोटी भरता है) के क्रम से कही है ॥ २८ ॥ १ शीघ्र २ नज्रता की रीति में  
३ समय ७ जुगल ॥ २९ ॥ ८ बाण से शाहजहां के भुज को बेधा था और उ-  
सी शाहजहां की ९ पगड़ी के १० बंधन से बांधा था

हरिसिंहका शिकार में सिंहको मारना। सप्तमराशि-तृतीयमयूख(१५९१)

दिय कैद हु भय दुसह प्रैत किंकर विधि प्रेरिय ॥  
सौहि खुरुम३९।२अब साह हुं व रु ओगुन१गुन२हेरिय ॥  
होते न होतु लोदिन हनन पाते किम गुगुर पुर ॥  
न बढे प्रवीरपनसौहि नर प्रभु देखत सेवन प्रचुर ॥ ३० ॥  
इम प्रबोधि हरि १९३।३एह भूप दिल्लियपुरभोजिय ॥  
जिहि उदत तैं जाइ कछु न सिच्छा सुभिरन किय ॥  
इक समय आखेट हन्यो असिकारि मइह हरि१९३।३ ॥  
सु असि दिखावन साह कहिय मन रीक दैनकरि ॥  
कहि सु कृपान गहि सुष्टि कर दिय तदय करि साहदिस ॥  
सुगलेस हरि१९३।३सु मदभक्तमन रखयो तबहु पचाइ रिस।३१।  
दिल्लिय गय बुंदीस जवन पति तबहु भेजि जन ॥  
सो माधव१९३।२बल सहित क्रीतिकहि बुल्लयो कोसन ॥  
बल धरि सु फरमान अरज माधव१९३।२पठई यह ॥  
प्रभुके अंतुल प्रसाद लखो बेभव नै दुर्लह ॥  
पुहवी प्रधान नवपरगना१नियम धाम कोटानगर ॥  
गज३बाजि४चमर५गढ६कोस७गन विविध मिले सब वस्तुवर।३२।  
बुंदीसन कहि सहित अनुग बंधिय नव आलय ॥  
पातैं करियन उचित चैय उपहार सबै चैय ॥  
परिगं१सुभट२प्रधान३थान नूतन इम थप्पहि ॥  
आदर१वसु२अधिकार३सवन अधिकार समप्पहि ॥  
करि देस अभय धरि रच्छकन सीमा स्ववस जमाइ सब ॥  
सदनहिं सन्हारि चुवन चरन अैहो पासहिं दास अब ॥ ३३ ॥

॥ अष्टपात् ॥

१ नव करके २ चाकर की रीति से प्रेरणा की ३ बहुत चाकरी देखते हैं॥३०॥  
४ शिक्षा ५ शिकार में हरिसिंह ने खड्ग से सिंह को मारा ॥ ३१ ॥ ६ आपकी  
अधिक प्रसन्नता से ॥ ३२ ॥ ७ सेवक ने नवीन घर बनाया है ८ संग्राह्य सा-  
मग्री का ९ संचय करके १० परगह सहित ॥ ३३ ॥

नृपकाका अधिनम्र अरज माधव१९३।२ पठाइ सह ॥  
 अवलग निवसि अंगार स्वीय जन धरि सन्धारि सह ॥  
 उदयनैर विधि ऊढ अधिपबुंदी जब आयउ ॥  
 माधव१९३।२ दै फरमान बहुरि तब साह बुलायउ ॥  
 संगहि तस रैन१९२।१ सुव सज्जि निज सर्व गर्वगति ॥  
 पहुँच्यो दिल्लिय मनत सिक्ख भंगी न सता१९४।१ प्रति ॥  
 सुनतहि तदीय आगम सभा हजरत बुल्लयो हितसहित ॥  
 सेवन स्वकीय पहिलो सुमिरि उर लायो कर ऐँचि इत३४  
 ॥ पट्पात ॥

उपालंभ कहु अप्पि पास चिर करि आगमपर ॥  
 दियउ खास दीवान सतत अप्पन छिग ओसर ॥  
 सक दुव नव नृप१६९२ समय आत नृप रैन१९२।१ प्रसू इत ॥  
 दिय बुंदिय तजि देह हेरि जिहिं जियत सर्वहित ॥  
 नृप सन्नुसल१६४।१ विधि करि नियत प्रेतकरम साखिय प्रयित  
 दिय द्विजन पुरट१ गो२ छिति३ प्रमुख करि अमेय व्यय  
 श्रुतिकथित ॥ ३५ ॥

वल्लनोति अन्नविनु रतन१९२।१ पीछें चउ४ समरहि ॥  
 अलप दुग्ध आहार ब्रत सु तापस हुँकर बहि ॥  
 अँवद त्रि वसु ८३ लाँहि आयु सद्धि सब विधि सबकै सिव  
 इमसक उक्त अनेह देह परिहरि पँती दिव ॥

महिपाल भरत प्रपितामही धरि संजैम१ अँवधान२ धुव ॥  
 महिदेव१ जाति२ पुरजन३ प्रमुख भोजि अखिल किय कित्तभुव।३६।

१ अत्यन्त नम्रता से २ घर पर रहकर ३ विधि पूर्वक विवाह करके ४ रत्न-  
 सिंह का पुत्र ॥ ३४ ॥ ५ समय (अवज्ञाश) ६ विदित ७ स्वर्ण ८ वेद के कथ-  
 नानुसार अप्रमाण खर्च करके ॥ ३५ ॥ ९ बाल्योति १० कठिन ११ वर्ष १२  
 कल्याण १३ कहे छुप समय में शरीर छोड़कर १४ स्वर्ग में १५ गई १६ इन्द्रियों  
 को रोककर १७ सावधान हुआ १८ ब्राह्मणों और अपनी जातिवाले पुर के  
 लोगों सहित सबको भोजन कराके



छल महल १ पुनि छिति प रचन बुंदिय आरंभिय ॥

केसवमंदिर १ \* कसन पुरी पट्टनि प्रारंभिय ॥

पृथुल १ तुंग २ प्रासाद उभय २ अद्भुत अपुब्ब इम ॥

वनतभये अतिवेग लगेलकखन जिनमें जिम ॥

नृपरचित थान ईतगहु निखिल पुनि सूचहि अवसानपर ॥

सब वत्तमैहि संनसौ सता १ ९४ १ बधिय धुरंधर कित्तिबर १३७ ॥

माधव १ ९३ १ २ दिखिय सुदित सहित जगनाथ २ ९३ ४ सहोदर

अनुज तास दिन इकक १ साह पुच्छयो लहि ओसर ॥

जंपहु रे जंगनाथ १ ९३ ४ दुहुँ २ न माता इकक १ कि दुव २ ॥

हो यह इक १ हंगहीन समुक्ति सुहि प्रवरैन १ ९२ १ सुव ॥

अखिय हजूर मम अंखि इक १ गदैविसफोटैक फुटिगय ॥

पुनि साह अखि फुटिय श्रुतिहु सुन पूछयो पुनि कहुँ समय ३८

इत लोदी अफगान समर भरिपरत चउठहि सुत ॥

कीलागढ तजि चकित जियहि लैगो साध्वसै जुत ॥

जिहिँ अवसर अव जानि जोर पकरयो पुनि जुटन ॥

बल अर्धज्ञ बल बांधि लग्यो दिखिय धर लुटन ॥

गयपैठि बहुरि कीलागढहु जंपत इमहु कितेक जन ॥

बहि सुतन बैर बालन चढ्यो पैँडपैँड मंडत प्रधान ॥ ३९ ॥

दखियन जन इम दुखित पुनिहु दिखिय पुकारिय ॥

बललोदी अव बहत दैमिजु हड्ड ६ २ न दुखकारिय ॥

उनहिँ पठावहु अवहु साह निजकज्ज सुधारन ॥

वेहि चहतैन अंडरै मरन १ अलसन अरि मारन ॥

॥ ३९ ॥ \* सुंदर १ बड़ा २ ऊँचा-३ महल ४ और भी ५ सब ६ बाहुशाल के अन्त समय पर कहेंगे ॥ ३७ ॥ ७ सगा आई ८ समय पाकर ९ कहा १० एक नेत्र से काला था १२ माना (चंचक) के ११ रोग से ॥ ३८ ॥ १३ भय सहित १४ बहुत सेना से बल बांधकर ॥ ३९ ॥ १५ देड देकर १६ धिक्कार देकर निकाला १७ निर्भय

सुनि साह बुल्लि माधव१९३१ सुमति\*अंसन थप्पि सराहिअर॥  
 दै ताहि रीअ१ सह स्वीयदल२पिल्लयो खानजिहानपर॥४०॥  
 स्वीय जनक दिय सत्त७ रीअि रैन१९२१हिं जयकारन ॥  
 तवहि परगनां तेहु बहुरि छिन्नत किय बार न ॥  
 सुत हरि१९३३ बुल्लयो साह सां न पठयो जिम संभर॥  
 आगसं सिर धरि एह धनी बनि छिन्निलई धर ॥  
 तामांहिं तीन३दक्खिनतरफ कहे परगनां नाय क्रम ॥  
 जीरपुर१खैर आबाद२जहैं तीजो३चैचत३आढ्यंतम ॥ ४१ ॥  
 ए तय३माधव१९३१अर्थ प्रथित चोथो४खलजीपुर४ ॥  
 चउहि अप्पि हित चाहि आनि विरुद्वर्न उछाह उर ॥  
 बखसि खास गज१बाजि२कटक अयुत१००००हि सहायकरि ॥  
 मनहु राम हनुमान इम सु पठयो दट्टन अरि ॥  
 बुंदीस सता१९४१ तैसैं विजय लूटहु विनुतोपन लहैं ॥  
 जातहि इतोक माधव१९३१ जहाँ कृपा दुरदिस अंतर कहैं ॥४२॥  
 रैन १९२१ सुतहु रनरसिक सजि अप्पन वैरूथ सब ॥  
 साह अयुत१००००दल सहित तानि मुच्छन हंक्रिय तब ॥  
 बीजापुरढिग१बदत कति रु तासों उत्तर१कति ॥  
 कति रेवा परकूल२तुली सूचन फोजन तति ॥  
 कछुकाल तोप संग्राम करि निडर रंच देरहु न क्रिय ॥  
 तिहिं खिन उठाइ माधव१९३१तुरग कररी बग्नन बीच क्रिय ॥४३॥  
 नक्रिय१चक्रिय२अन्त्यानुप्रासः॥ १ ॥  
 उडत तरत्तर१ अमित सीस जिततित असि संक्रम ॥  
 मुंमन गिनहु निज समय मुमन चटकत२गुलाबसम ॥

\* कथा थापकर १ शीघ्र २ भेजा ॥ ४० ॥ १ अपराध २ अत्यन्त धनवान् ॥४१॥  
 ॥ ३ प्रसिद्ध ४ उत्साह वर्धिनी स्तुति से ५ सेना ॥ ४२ ॥ ६ सेना सजकर ७  
 सन्मुख होकर लुड़ी ८ पंक्ति ९ घोड़े की वाग को करछी करना दौड़ाने  
 का सूचक है ॥ ४३ ॥ १० खड्ग चलने से ११ श्रेष्ठ मनवालों के मन

माधवसिंहका दक्षिण विजय करना] सप्तमेराशि-तृतीयमयूख (२५९५)

कर१पय२ पल्लव१किरन तरुन लोहित किंसलय२तति ॥

गुटिका१अलिङ्गन गुंजि कुंसुम१लोचन२विकसे कति ॥

गज१छिन्नभिन्न१मानहु गिरि२न सुम किंसुम२चल वात सह ॥

केतन१रसाल२पिक१यंट२करि किय माधव१९३१२माधव कलह ॥

आयो उलटत उदधि इक्षु वीरहु अरि अहुन ॥

जो खल खानजिहान हन्यो निर्दय बढि दहु६१न ॥

परि दुश्मोर भट प्रचुर लुत्थिपर लुत्थि बिलगिय ॥

पलरासिन लहि पंति भूख पिसितासिन भागिय ॥

दुस्सह भजाइ दक्षिणदलन बलन विजै बहि चलन चहि ॥

पहुँच्यो हजूर माधव१६३१२प्रथित लोदीसिर१सह किंति१लहि१४५॥

सुनसुव दिय सुगलेस दहु६१कैहँ तीनहजारी ३००० ॥

इभ१दय२भूखन३अपि किन्न अधिक सु अधिकारी ॥

सेवन हरि१९३१३मद्वयो न रौचि उनमत्त भाव रस ॥

गढ तस ले गुग्गेर बखति किन्नौ माधव१९३१२वस ॥

रंचक सिटाइ आदररहित दहुवती पुनि आइ हरि१९३१३ ॥

बुंदीस उपातांभित वस्यो कापरनि सु निजवास करि ॥ ४६ ॥

दिल्लोपुर बहुदिवस रह्यो माधव सेवन रत ॥

प्रतिदिन अधिक प्रसन्न साह रक्षिय नतिसंगत ॥

सुता विवाहन सिक्ख पाइ कोटा आयउ पुनि ॥

जयसिंहहिं जामात चहि रु लुल्लयो उपदा चुनि ॥

अपने उस समय में गुलाब के पुष्प फूलने के समान फूले २ कलियों की पं-  
क्त के समान १ रक्त में हाथ, पैर और अंगुलियों गिरती हैं २ वन्दुक की गो-  
लियां रूपी ४ अनारों का समूह ५ पुष्पों रूपी नेत्र फूले, कटे हुए हाथी हैं सो ही  
पवन से लटायमान ६ केमला (ढाक के फूल) हैं ७ ध्वजा रूपी आम और ८ बंटा  
रूपी कायल करके माधवसिंह ने ९ उस युद्ध को वसंत ऋतु के समान कर-  
दिया ॥ ४४ ॥ १० मांस के समूह को लेकर ११ मांसभोजियों की भूख भागी  
॥ ४५ ॥ १२ पागलपन में रंगा हुआ रहा ॥ ४६ ॥ १३ सेवा में प्रीति करके

बनि दुलह कुम्भ पत्तो तबहि मंडि बिविध अनुरूप मह ॥  
 दिन्नी विवाहि तनया त्रिदित सहि समय विधि प्रीति सह ॥ ४७ ॥  
 प्रभु कविकुल परपुरुष मान १६७१ अभिधान सुद्धमति ॥  
 महमानी तह मंडि असन चउ४ विध भावित अति ॥  
 निखिल बरात निमंत्रि सहित जाचकर जन संघन ॥  
 सह भट ३ माधव १९३१ सहित सकल भाजे पटुतासन ॥  
 तिनसौहि वृत्ति माधव १९३१ तदनु लगि प्रसभा रिस करि लई ॥  
 अरु सौहि दई महियारियन भूष सुनहु यह जिम भई ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

बुदी पहिलैं बारहठ, सूचिय कवि सामोर ॥  
 संतति तिन्ह हुव नष्ट सब, जब उदक विधि जोर ॥ ४९ ॥  
 तबहि उदैपुरबास तजि, जात जोधपुर जानि ॥  
 नृपको लहि सम्मत निपुन, कुमरहु करि गुरु कानि ॥ ५० ॥  
 सावरतैं बुल्ले सुकवि, क्रमि सम्मुह हुव कोस ॥  
 ईस्वर १६५१ बुन्दी आनिकैं, तिम रदखे निज तोस ॥ ५१ ॥  
 कुमर भोज १९११ सह बुल्लि कवि, पुनि कासी खिन पाइ ॥  
 अधिपवृत्ति दिय ईस्वर १६५१ हिं, सुर्जन १९०१ उचित सुहाइ ५२ ॥  
 परसुराम १६६१ साँवल १६६१ प्रमुख, तिनके पंचपतनूज ॥  
 तैं चउत्य ४ खंधिल १६६१ ४ तिमसु, पुनि माधव १९३१ कृतपूज ५३ ॥  
 निठि निठि कोटानगर, जिमतिमको हुंव जान ॥  
 तिन्ह दै निजकुलवृत्ति तैं, माधव १९३१ तिम किय मान ५४ ॥  
 जयसिंहहिं तिनके तनुज, महमानी दिय मान १६७१ ॥  
 पुनि माधव १६३१ जिम खैबपन, नृप हुव गर्बनिदान ॥ ५५ ॥  
 बुन्दीसन नृप भिन्न बजि, मान १६७१ रोधकिय मुंद ॥

॥ ४७ ॥ १ समूह २ हठ करके ॥ ४८ ॥ ३ आनेवाले समय के कर्म फल से ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ४ चलकर ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५ छोटे पन से ६ रा जा का गर्व ही कारण हुआ ॥ ५५ ॥ ७ मूर्ख ॥ ५६ ॥

आत रुक्यो न लवान१ यह, सता१९४११ दिगशु मन सुद्ध।५६।

सता१९४११ समन भूपहु सुन्यो, इम खिजि वृत्ति उतारि ॥

अप्पी कवि महियारियन, मान१६७।१ मान सठ मारि।५७।

लघु निवसंथ इक१ मोलखी, इनके रक्खि अधीन ॥

छिन्नि इतर सब किय छमहु, मिश्रन तनु जल मीन।५८।

हिंडोली जिम ताल हुव, बनिक प्रधान विधेय ॥

कहिमत सब अग्रिम किरन, सह विस्तर यह श्रेय ॥ ५९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसु-  
धावरशत्रुशाल्यचरित्रे शत्रुशाल्यस्योदयपुरविवाहानेहसि हयमारुह्य तो-  
रणावन्दनाद्वरिदासचारणस्य शत्रुशाल्योपालम्भप्रदान१, उक्तहेतोरि-  
तरचारणार्थकरिदायकशत्रुशाल्यप्रत्तापस्य दुर्दशा विधाय हरिदास-  
स्य शत्रुशाल्यसेनायां तदश्वमोचन२, शत्रुशाल्यस्य चारणादियाचका-  
र्थसप्तशतकरिसहितसहस्रमिताश्वयुतलिंशदयुतदानकरणा३, अनारां-  
नामवारांगनाप्रसादाङ्गजसिंहकनिष्ठात्मजयशवंतसिंहयोधपुरराज्या-  
सादन४, कथापूर्वापरापरिज्ञानहेतुकसमयानिश्चयसूचन५, बुन्दीपति  
शत्रुशाल्यपितृव्यहरिसिंहोन्मत्तताभक्षान ६, समेककरदक्षिणदेशस्थ

१ पोलपात पता उतारकर ॥ ५७ ॥ २ आन ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के अर्पति  
शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल के उदयपुर विवाह करने के समय घोड़े पर  
आरुढ़ होकर तोरण बांधने के कारण हरिदास चारण का शत्रुशाल को उपा-  
लंभ देना १ उपरोक्त कारण से अन्य चारणों को हाथी देनेवाले शत्रुशाल के  
दिधे हुए घोड़े की दुर्दशा करके हरिदास का उस घोड़े को पीछा शत्रुशाल  
की सेना में छोड़ना २ शत्रुशाल का चारण आदि याचकों को सात सौ हाथी  
और एक हजार घोड़ों सहित तीन लाख रुपयों का त्याग देना ३ जोधपुर  
में अनारां नामक पातुरी की प्रसन्नता के कारण राजा गजसिंह के छोटे पुत्र  
यशवंतसिंह को जोधपुर का राज्य मिलना ४ कथा के पूर्वापर नहीं जानने  
के कारण समय के निश्चय नहीं होने की सूचना करना ५ बुन्दी के पति शत्रु-  
शाल के काका हरिसिंह की उन्मत्तता का कथन ६ रत्नसिंह के छोटे पुत्र ना-  
थसिंह की दक्षिण में खानजहान को युद्ध में जीतने के कारण बादशाह ज-

खानजहानविजयाच्छाहजहांयवनेन्द्रस्य रत्नसिंहकनिष्ठात्मजमाधव  
सिंहार्थसहस्रत्रयमिताश्वाधिपत्यप्रदान७, कोटाप्रतोर्लापात्रत्वस्य मि  
श्रणाशाखीयचारणापरित्यागान्माहियारियाशाखीयचारणासादनंत  
तीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदितः पंचदशोत्तरद्विशततमः ॥ २१५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ दोहा ॥

प्रभु तुमरे कुल परपुरुष, नृप मानिक्य सनाम ॥

क्रम चौथो४ इहिनाम करि, ध्रुव हुव संभरधाम ॥१॥

नगरकोट गो जब नृपति, व्याहन चरम बिवाह ॥

शेरनि सुकामन धाम सब, बितरे सुजस बिवाह ॥२॥

हम कुल तब परपुरुष हुव, चंडकोटि मति चंड ॥

बाद छद् भाखा मिश्र बदि, दिय बादिन जिन दंड ॥३॥

मिश्रन दजोर नाम महि, जिनको ते जँहँ जाइ ॥

सुकवि रहे मानिक्य सन, पटालय१ पुर पाइ ॥४॥

कवि तिनके कुलमैं करन१५३१, पीछें हुव मतिपूर ॥

निबसे जे भरुसों नियत, दिस नैर्ऋत४ कछु दूर ॥५॥

करन१५३१पुत्र हुव दोल१५५१ कवि, तिनकैं डुंगर१५५ तत्थ ॥

विजयसूर१५६१ तिनके विदित, सूर१ सूरि२ गुन तत्थ ॥

जिन लहि कबहु दुश्काल जब, अर्बुद जनपद आइ ॥

बँटी कह व्याही बहिनि, भाँम समुद्र सुमाइ ॥ ७ ॥

सुरामत जिहिं भाम सठ, मतिबिनु संसक निमित्त ॥

हांगीर का तीन हजार मनसब देना ७ कोटा के पोछपात पन की वृत्ति मीशब  
शाखा के चारणों से छूटकर महियारिया शाखा के चारणों को मिलने के  
का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१५ मयूख हुए ॥

॥१॥ १ अन्तिम विवाह २ मार्ग के सुकामों के ॥२॥१॥४॥ ३ मारवाड़ से ॥५॥ ४ पंडित  
॥६॥ ५ देश में ६ बाटी शाखा के चारण ७ बहिनीई ॥७॥ ८ एक खरगोस के कारण

हुंदीके ईश्वरकविकी संततिका वर्णन ] सप्तमराशि-चतुर्थमयूख (२१६६)

विजयसूर१५६।१ हनि सत्रु वनि, वंधिय अपजस वित्त ॥८॥

जरत संग तिनकी जुवति, पूरन गर्भ प्रवीन ॥

दौरि पिष्टि सिसु कहि द्रुत, देय ननंदहिं दीन ॥ ९ ॥

हुव तिनको इम पिष्टहव१५७।१, धरा विदित अभिधान ॥

जिम सुकुंभनृप कोटि१०००००००जिन, सुररितजी तून मान ॥१०॥

तिनहिं गोरं दिय अवृज१०००००००००तव, वच्छराज वरवार ॥

वाधनवारि१ सहित बलि, सासन सप्तक७ सीर ॥ ११ ॥

तिनके हुव ग्रह सूर१५८।१तिम, सुत तिनके महसूर१५९।१ ॥

अंगज तिन्ह आनंद१६०।१ इम, प्रथित भक्ति गुन पूर ॥ १२ ॥

कर्मानंद१६१।१सनाम कवि, सुत तिनकै सुभसक्त ॥

वैष्ण१तनय२ए हुव२विदित, भये मुख्य हरिमक्त ॥ १३ ॥

कर्मानंद१६१।१तनूज कवि, धरिय लुंव१६२।१ अभिधान ॥

तिन्ह बुल्लिय चित्तेर तव, रायमल्ल जब रान ॥ १४ ॥

सासन उंटोलाव१ सह, देय तिनहिं सब दत्त ॥

करि हित रखे लुंव१६२।१कवि, रायमल्ल अनुरत्त ॥ १५ ॥

लुंव१६३।१सुकवि चउ४ सुत लहे, प्रष्ठ सुनाम१६३।१प्रगाथ ॥

तदनुज वामन१६३।२नाम तिम, रायमल्ल१६३।३अरु नाथ१६३।४ ॥

सुत हुव तीन३सुनाम१६३।१कै, माधव१६४।१भानु१६४।२सुमंत्र ॥

अरु तीजो३गोइंद१६४।३इम, लय३हि रान परतंत्र ॥ १७ ॥

तनु अपज माधव१६४।१तजत, अपि भानु१६४।२तिन थान ॥

प्रथित रान संग्राम पहु, मन्नें अति सनमान ॥ १८ ॥

जकखमूल जब रनरहे, महिपरेन१ रविमल्ल२ ॥

॥ ८ ॥ १ पीठ फाड़कर २ ननंद को दिया ॥ ९ ॥ ३ पीठवा (पृष्ठधर) ४ नाम

१ महाराजा कुम्भा के छोड़ रुपयों के दान को २ सुरङ्कर कृष्ण के समान छोड़

दिया ७ अजमेर के गोड़ राजा बछराज ने ८ सासन (उदक) ॥ ११ ॥ १२ ॥

१ समर्थ २० पिता ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

उत हुव विक्रम१ भूप इत, सुरतान२सु बुधसंल ॥ २९ ॥  
 विक्रम अखिलय कवि१ बुध२न, करहु मदग्रंज किति ॥  
 मरिय मारि रविमल१८८। मृंध, जिम सब हहृ६१न जिति ॥ २० ॥  
 कविता तिमतिम सबन किय, भनिय कछु न कवि भानु१६४।२ ॥  
 तिनपर विक्रम रुष्टि तव, किय दगं कोप कृसानु ॥ २१ ॥  
 जिहिं तिनतैं सब ग्राम जुत, उंटोलाव१ उतारि ॥  
 असनहिं रक्खिय रिष्ट इक१, निजढिग गमन निवारि ॥ २२ ॥  
 हठिदासी सुत रान हुव, विक्रम हनि वनवीर ॥  
 नाये कवि तासहु निकट, सो रिष्टहि गिनि सीर ॥ २३ ॥  
 जबहि उदय हुव रान जिहिं, हठन सुकवि हक्कारि ॥  
 सत्य कहहु अखिलय सुपै, न कवि कहिय निरधारि ॥ २४ ॥  
 लाई छितिहु दैबेलग्यो, इमहि प्रताप उदार ॥  
 क्रम दोहु२न हठ लंघि कवि, सोहु न किय स्वीकार ॥ २५ ॥  
 सच्ची बरान दै सपथ, पुनि जब कहिय प्रताप ॥  
 कहि जिम हुव तिम तवहु कवि, इलां गत न लिय आप ॥ २६ ॥  
 तिम निकसत मेवारतैं, तजि दिन्नौं तिन देह ॥  
 मन्नहु नृप यह अप्पमत, अब बहुसम्मत एह ॥ २७ ॥  
 मिथन अप्रज भानु१९४।२भृत, उदैपुरहि विधि अंत ॥  
 तब ईस्वर१६५।१गोइंद१६४।३सुत, मुख्य भये दगमंत ॥ २८ ॥  
 जिनतैं साहस१सपथ२जुत, पता नृपहु लाहि पट्ट ॥  
 किय निदेस सच्ची कहन, बढहु जथातथवट्ट ॥ २९ ॥  
 ईस्वर१६५।१तब जिम हुव अखिल, इत१उत२भृत उदंत ॥

१ बुद्धि के शाल ॥ १९ ॥ २ मेरे बड़े आई कीर्ति करो १ युद्ध में ॥ २० ॥ ४ नेत्र ५ अग्नि ॥ २१ ॥  
 ६ रीठ नामक ग्राम ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ७ गई हुई भूमि नहीं ली ॥ २६ ॥  
 ८ राजा राघसिंह यह अपरोक्त वृत्तांत थोड़े लोगों की सम्मति चाँहा है और  
 इससे आगे का वृत्तांत बहुत लोगों की सम्मति का है ॥ २७ ॥ २८ ॥ ८ सत्यता  
 के मार्ग से ॥ २९ ॥



शुद्धीके मिश्रण पाळपातों को ग्राम देना] सप्तमराशि-चतुर्थमयूख (२६०१)

वरन्यों तहँ कविता विरचि, अधिप रैन छल्ल अंत ॥ ३० ॥

तदनु सुकवि वह वास तजि, किय मरु गम्य प्रकार ॥

सासन उटोलाव १ सह, देतहु न लिय उदार ॥ ३१ ॥

पैट हुतो जब जोधपुर, नास उदय नरनाह ॥

तव कवि ईस्वर १६५१ चिति तहँ, रहनलगे मरुराह ॥ ३२ ॥

कुमार भोज १९११ यह श्रवनकरि, कासी नृपहिँ कहाइ ॥

सासन लाहिं बुल्ले सुकवि, गह्वे सपथ गहाइ ॥ ३३ ॥

सावरपुर पहुँचे सधिव, बुंदिय ओर बहोरि ॥

आने ईस्वर १६५१ अग्य अति, जथा उचित हित जोरि ३४॥

नगर वरोदाके निकट, दक्खिन दिस गिरिद्वार ॥

कुमार समुख तहँ जाइ कवि, लायो सादर लार ॥ ३५ ॥

कस्यो वहरि तिन्ह संगकरि, कासीनगर कुमार ॥

सुर्जन १९०१ तहँ आदरसहित, आनिय सुकवि अंगार ॥ ३६ ॥

सूचित विधि सब करि सुपहु, तिम ईस्वर १६५१ कवि तत्य ॥

दह ६१ नके किय बारहठ, अप्पि वृत्ति सह अत्थ ॥ ३७ ॥

नेग वजत वृत्ति जु निचत, गुरु तामै दुवर ग्राम ॥

अप्पिय वण्डनखेट १ अरु, भीमखेट २ अभिराम ॥ ३८ ॥

जव पट्टनि १ बस ग्राम जे, अब लकखैरि २ अधीन ॥

ऐसे निवसथ अप्पये, खट ६ करि दारिद खीन ॥ ३९ ॥

तिनमै सुरुष लवान १ तिम, देवाखेट २ दुपट्ट ३ ॥

पपेट ४ बक्र ५ रु शमपुर ६, वस्ससे खट ६ जसबट ॥ ४० ॥

केसवकवि सामोर कहँ, समरसिंह १८११७ नरनाह ॥

प्रथम वगोदाघांत जे, दिय खट ६ ग्राम दुवाह ॥ ४१ ॥

तिन्हकुल कोहु गहा न तव, भिन्नदि रक्खिय भूप ॥

सुर्जन १९०१ जे खट ६ ईस्वर १६५१ हिँ, अप्पे तव अनुरूप ४२

॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥  
३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

तँहँ कच्छोला१ सुरुप तिम, रोसुंदा२ हरिना३ रु ॥  
 दोडुंदा४ गिंदौलि५ दिय, चंपकखेट६ हु चारु ॥४३॥  
 कवि ईस्वर१६५१२ सकुटुंब क्रिय, वास अजस्र लवान ॥  
 इत हरिना कहूँ आगमन, बस तिन अटन विधान ॥४४॥  
 कवि ईस्वर१६५१२ कै नियति करि, पंच५ विदित हुव पुत्त ॥  
 परसुराम१६६१२ साँवल१६६१२ प्रथित, स्याम१६६१३ सुगुन  
 संजुत ॥ ४५ ॥

तिम खंधिल१६६१४ चोथो४ तनय, सबलधु पंचम५ सूर ॥  
 सहँसमल्ल१६६१५ अभिधान सो, पन रन अचलन पूर ॥४६॥  
 प्रकट बसाँयउ सहँसपुर, निबसथ जिनजिननाम ॥  
 जु अब रावरे भट्टजन, रहि भोगत प्रभुराम२०३१४ ॥४७॥  
 सहँसमल्ल१६६१२ पतनी सती, कहियत लालकुमारि१६६११॥  
 जो अपज पतिसह जरी, अतुल दुपकख उधारि ॥४८॥  
 परसुराम१६६१२ हुव पुत्रजुत, पट नगराज१७६१२हिँ पाइ ॥  
 साँवल१६६१२ सुत भूपाल१६७१२ सुहि, भगवतदास१६७१२  
 सुभाइ ॥ ४९ ॥

सुत तीजे३ सुत स्याम१६७१३कै, कर्मचंद्र १६७१२ पटुकर्म ॥  
 चोथे४खंधिल१६६१४कै चतुर, मान१६७१२दलन अरिमर्म५०  
 ईस्वर१६५१२कै हुव सचिव इक, बनिक राम वसु चित्त ॥  
 दोडुंदा कवि तिहिँ दयो, चहि सासन बस चित्त ॥५१॥  
 कन्या हुव इक१ रामकै, सो हम्मीर१९०१२ सुथान ॥  
 हिंडोली व्याहीहुती, भनि समीप सुखभान ॥५२॥  
 दोडुंदा पाउसदिनन, कबहु न जाइ कनी सु ॥  
 आई घर रथतँ उतरि, स्वचरन पंक सनी सु ॥५३॥

॥४९॥४३॥ १ निरन्तर लवान नामक ग्राम में रहे और इधर हरणा नामक ग्राम में भी कभी कभी आते रहे ॥४४॥ २ भाग्य से ॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥ ३ शत्रुओं का भर्म दलनेवाला ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ४ कीचड़ में भीगे हुए चरणों से

माधवसिंहका ईश्वरकविके पुत्र को कोटा ले जाना] सप्तमराशि-चतुर्थमयूख (२६०३)

सस्सु प्रति मंगिय सलिल, अंग्रिन धोवन अक्खि ॥

बुल्लो वह तव बप्पकै, संचित धन जग सँक्खि ॥ ५४ ॥

कहि तासौं व्यय करि कछुक, बिगचि तालमय बीच ॥

नावचढी आवहु निलय, कबहु न लगौं कीच ॥ ५५ ॥

इहिं अक्खिय तातहिं यहै, तिहिं जल संभव तुल्लि ॥

रचिय रामसागर सर सु, खरच खजानाँ खुल्लि ॥ ५६ ॥

हम्मं१९०।१ कहिय मम द्रंग दद, तुमरो है किम ताल ॥

कहिय बनिक तुमरो सु किम, हम चाहत जसहाल ॥ ५७ ॥

इत दोहुंदा सीम इम, मही रुकै जलमाँहि ॥

सो हमरी जानहु सदा, निज हृद हमरी नाँहि ॥ ५८ ॥

बनिकराम यह लिखि विदित, पुनि ईस्वर१६५मत पाइ ॥

रुचिर रामसागर रच्यो, नव कासोर खनाइ ॥ ५९ ॥

कवि ईस्वर१६५।१वपुहान किय, परसुराम१६६।१लिय पट्ट ॥

रक्खिय सोदर नृप रतन१९२।१, बहिय दुगम कुल बट्ट ॥ ६० ॥

दक्खिनतैं जब आइ द्रुत, बुंदी माधव१६३।२वारि ॥

लोभी पुनि जावनलग्यो, सो कोटा लहि सीर ॥ ६१ ॥

परसुराम१६६।१सन तव प्रनर्त, अक्खिय माधव१९३।२एह ॥

संग देहु इक१बंधु१ सुत२, गिनि स्वकीय मम गेह ॥ ६२ ॥

जंपिय कवि हम अल्पजन, तुम कुल प्रचुर प्रतान ॥

हाकिम कित है बारहठ, मित१ कवि२बहु१जजमान२ ॥ ६३ ॥

तदपि प्रसभ माधव१९३।२तन्यो, कवि तब करि तस कानि ॥

अक्खिय खंधिल१६६।४जाहु उत, माधव१९३।२कवि हिय मानि ॥

माधव१९३।२तब सुत मान१६७।१ए२, मितहु चित्त मिलाइ ॥

विरसहु इम कबहु न बनै, जमहु अभय तँहँ जाइ ॥ ६५ ॥

आई १ पैर धोने को जल मांगा २ जगत् साक्षी है ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

॥ ५८ ॥ नवीन ३ तालाव खुदवाया ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ४ विशेष नम्रता से

॥ ६२ ॥ ५ बहुत विस्तार वाले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६ मित्र ॥ ६५ ॥

अकिखय खंधिल १६६४ अग्रज १हिं, माहिपवंस सबमाहिं ॥  
 मेटहु जो न विभाग सम, यह तो स्वीकृत आहिं ॥ ६६ ॥  
 इम खंधिल १६६४ अरु मान १६७१ए, उभयरपिता १ सुत २ आनि ॥ ६७ ॥

मित मासन अंतर अवधि, दिय खंधिल १६६४ तजि देह ॥  
 किय तसथान सु मान १६७१कवि, लुत माधव १६३१अतिनेहा ६४  
 पै पहिलै चउ४ परगनाँ, खत बखसीस लिखाइ ॥  
 त्रय हजार ३००० सुनसव तखत, पुनि गुग्गोर १ सु पाइ ॥ ६६ ॥  
 बारन १ हय २ भूखन ३ वसन ४, पंचम ५ प्रीति प्रसाद ५ ॥  
 आतहि कोटा पाइ इम, बढ्यो अहम्मति बाद ॥ ७० ॥  
 कन्या निज दिय कूरमहि, मिश्रन कवि तँहँ मान १६७१ ॥  
 जाचक १ स्वकरू बरात ३ जन, भोजे सब रुचि भान ॥ ७१ ॥  
 तदनंतर अप्पहिं अतुल, माधव १९३१२ मन्नि महीस ॥  
 बुंदी १ जैपुर २ प्रतिम बनि, समयभर ओटयो सीस ॥ ७२ ॥  
 कवि मान १६७१हिं माधव १९३१२ कहिय, ममकुल वृत्ति स्पमानि  
 इतरन लेहु न देहु अब, अधिपति कविपन आनि ॥ ७३ ॥  
 सफर भये तुम सिंधुके, जिन अब बुंदिय १ जाहु ॥  
 बरजि लवान २हु निज ब्रजन, लेहु निभव सुख लाहु ॥ ७४ ॥  
 हम भूपति १ तुम बारहठ २, उज्जुहु ओगन आस ॥  
 अकिखय कवि सुनतहि अनखि, गर्वहु जिन लहु प्रास ॥ ७५ ॥  
 बुन्दीसम कवहु न बढहु, जिन गर्वहु मद जोर ॥  
 स्वीकृत तुम कुल कृति सन, अंशु रक्खन तजि ओर ॥ ७६ ॥  
 पुरबुन्दी १ रु लवान २पै, रुकिहे गमन न रंच ॥  
 अन्नदकाँ कहि दै अधिप, बिनु नृप पदहु अंच ॥ ७७ ॥

॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ १ हाथी ॥ ७० ॥ ७१ ॥ २ बुन्दी और जयपुर  
 के सदृश यनकर गर्व का भार अस्तक पर ३ केला ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ४ और  
 की आश छोड़ो ॥ ७५ ॥ ५ प्राण ॥ ७६ ॥ ६ स्पष्ट (नहीं ठग कर) ॥ ७७ ॥

बुन्दीके पोछपात माहियारिया चारण होना]सप्तमराशि-चतुर्थमयूख(२३०६)

प्रति ओसर तुमकौहु पुनि, बुन्दीगमन विधेय ॥

गम्य रोध<sup>१</sup> अपजस<sup>२</sup> गहत, गमन<sup>३</sup> बहत जस<sup>२</sup> गेय।७८।

यह सुनतहि माधव<sup>११३।२</sup> अनखि, तहँ कविवृत्ति उतारि ॥

छिन्नि त्रि<sup>३</sup>सासन मुख्य छिति, मान<sup>१६७।१</sup>मानपन मारि<sup>७९</sup>

मित कर ग्राम जु मोलखी<sup>१</sup>, सो तस रक्खि सदाहि ॥

अक्खिय कवि सबठाँ अटहु, अब तुम रोध न आहि ।८०।

मिश्रन कुल कवि मान<sup>१६७।१</sup>तै, निजकुलवृत्ति निवारि

दिय कवि लखमीदासकौ, चहि सासन बसु<sup>८</sup>च्यारि ॥८१॥

माधानि<sup>१६।२२</sup>न सन तब मिटे, नियत मिश्रनन नैग ॥

अरु पाये माहियारयन, बिधि उदकै लहि वेग ॥ ८२ ॥

इम मिश्रन<sup>१</sup> माहियारयन, बढिगो तबहि बिरोध ॥

तामै व्याहि कनीन त्रिक<sup>३</sup>, बहुरि लयो सुखबोध ॥ ८३ ॥

पहिलै रहि बुरहानपुर, सेयोखुमु<sup>३९।२</sup>विसेस ॥

अब कोटा हुव भिन्न इम, वाको फल मिलि एस ॥ ८४ ॥

निबसथ ए पंच<sup>५</sup>हि नियत, इतके चम्पलि वार ॥

पाये तिम माधव<sup>१९३।२</sup>प्रसू, स्वक जीवन अनुसार ॥ ८५ ॥

जबहि मरी माधव<sup>१९३।२</sup>जननि, उहु सत्रह <sup>१७२७</sup>सक अंत ॥

आये तबहु न ग्राम इत, यह हुव ताम उदंत ॥ ८६ ॥

नृप भाऊ<sup>१९५।१</sup>सन जिनदिनन, रुष्ट हुतो ओरंग<sup>४०।३</sup>

कोटापति तब राम<sup>१८८।३</sup>कछु, सद्धिय हुकम प्रसंग ॥८७॥

इस रहि पंच<sup>५</sup>हि ग्राम इत, आगत<sup>१</sup>पुनि गत<sup>२</sup>आहि ॥

अवसर पर सब अक्खिहै, वर्णन नियम निवाहि ॥ ८८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-

१ जाने योग्य को रोककर ॥७८॥७९॥८०॥८१॥ २ आनेवाले समय के शुभ फल से ॥८२॥८३॥८४॥ ३ चम्बल नदी के इधर ॥८५॥ ४ तहां ५ वृत्तांत ॥८६॥८७॥८८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में कोटा के पोछपात पत्र की वृत्ति मोक्ष शाखा के चा-

सुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे कोटाप्रतोलीपात्रत्वस्य मिश्रणाशाखीयचार  
णापरित्यागान्महियारियाशाखीयचारणासादनेन ग्रन्थकर्तुः संचित-  
वंशवर्णन १ ग्रन्थकर्तुर्दौडूदानामग्रामान्तिकरामसागरतडागनिर्माण  
वर्णन २, कोटाराज्यस्य बुन्दीजयपुरराज्यसमत्वासादनकथन ३,  
ग्रन्थकर्तृकार्याणां भाविसमययातायातत्वकथनप्रतिज्ञानं चतुर्थो  
मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः षोडशोत्तरद्विशततमः ॥ २१६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इन दिवसन प्रभु राम २०३।४ इत, समय १ अर्घ्य २ अनुसार ॥

अंगरेज लोकन इहाँ, बढ्यो बहुल व्यापार ॥ १ ॥

रंगराजनामक रहैं, विजयनगर वसुधेस ॥

तोफा किम बहु भेट तस, व्यापारिन सविसेस ॥ २ ॥

बल्लारी १ पुरतैं विदित, उत्तर १ दिस जो आहि ॥

अन्न १ गुंडी २ तैं हु इम, जंपहिं दक्खिन २ जाहि ॥ ३ ॥

धारवार १ पुरतैं जु ध्रुव, थिर प्राची १ दिस थान ॥

जो मूटीगढ २ तैं हु जिम, पच्छिम २ ओर प्रमान ॥ ४ ॥

वातैं पच्छिम २ संह्य अंग, तसपर २ सागर तथ्य ॥

गिनिचत ढिग गोवा नगर, पोर्तुगेजजन पर्थ ॥ ५ ॥

नदी तुंगभद्रा निकट, दक्खिन २ तट यह द्रंग ॥

रणों से छूटकर महियारिया शाखा के चारणों को मिलने के कारण ग्रन्थकर्ता  
(सूर्यमल्ल) के वंश का संचेप वर्णन १ ग्रन्थकर्ता के दौडूदा नामक ग्राम के स-  
मीप रामसागर नामक तालाब के रचने का वर्णन २ बुन्दी और जैपुर के स-  
मान कोटा के राज्य के होने का कथन ३ ग्रन्थकर्ता के कामों का आने और  
जाने का भविष्यत् काल में कथन करने के वर्णन का चतुर्थ ४ मयूख समाप्त  
हुआ और आदि से दो सौ २१६ सौलह मयूख हुए ॥  
१ समय के मूल्य के अनुसार ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ २ पर्वत का नाम है ३ पर्वत  
४ मार्ग ॥ ५

अन्नौगुंडी वामरअव, यहहु गिनहु तस अंग ॥ ६ ॥  
 प्रथम नदी विच रक्खि पुर, इन दोउरन हो एक ॥  
 नाम जास विद्यानगर, विद्यावढन विवेक ॥ ७ ॥  
 कोस दसक १० विस्तर कथित, वसि जिहिं द्रंग विरक्त ॥  
 आचारिज माधव उदित, भये विदित हरिभक्त ॥ ८ ॥  
 संप्रदाय पहिलो १ सगुन, इनकरि प्रकटयो अत्थ ॥  
 अधिपतिके मंत्री हुए, प्रथम हुते रहि पत्थ ॥ ९ ॥  
 अंग वसायउ द्रंग यह, बीरवक्र नरनाह ॥  
 नाम जास विद्यानगर, रक्खिय सफल सराह ॥ १० ॥  
 प्राकृतवानी नाम परि, विज्ञानयर बन्पौ सु ॥  
 विजयनयर देशीयविच, भावितबहुन भन्पौ सु ॥ ११ ॥  
 अंग जहाँके अधिपनै, फोजसहित फीरोज ८१ ॥  
 जित्यो दक्खिन साह जुरि, आहव विस्तरि ओज ॥ १२ ॥  
 अव जिहिंपुर हो उक्त वह, रंगराज नरराज ॥  
 पालतहो निज राज्यपद, समुचित लहि सब साज ॥ १३ ॥  
 वस्तु अंगरेजन बहुत, सखि भेट तस सज्ज ॥  
 लिखित हुकम नृपसों लयो, कोठी विरचन कज्ज ॥ १४ ॥  
 रंगराज नरराजसों, लहि इम सासनलेख ॥  
 कारोमंडल कूल विच, रसा परखि रुचि रेख ॥ १५ ॥

### पादाकुलकम्

जिहिं पूरव १ मूटी १ गढजानहु, पच्छिम १ धारवार २ पहिचानहु  
 जिहिं दक्खिन १ बल्लारी १ पुर जिम, उत्तर २ दिस अन्नौगुंडी २  
 इम ॥ १६ ॥

तटिनि तुंगभद्रा दक्खिनतट, विजय नगर जो विजय बुधन भट ॥  
 जाको नृप हो रंगराज जहँ, जिहिं करि तुष्ट अंगरेजन तहँ ॥ १७ ॥

॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ १ सगुन ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

कारोमंडलतट सतंत्र किय, कोठी गढ सम रचन मंत्र किय ॥  
 अक्खिय रंगराज अंग्रेजन, सो विरचहु मम नाम चिन्हसन ॥१८॥  
 इन अक्खिय कोठी १ हम अंकित, सहर २ रचहिँ तुमनाम असं-  
 कित ॥

आये जे पुरबतट कहि इस, तँहँ गढप्रतिम रचिय कोठी १ तिमा ११  
 फोर्टसेंटजार्ज १ सु अभिधा फबि, छमन रचिय वह हट्ट दुर्ग छवि ॥  
 धुव तँहँ रंगराज अभिधा धरि, रचनलगे पुर कलित कोल  
 करि ॥ २० ॥

सक सर अंक अष्टि १६९५ सम्मित सम, कतिकन मत रस अंक  
 अष्टि १६९६ क्रम ॥

अंग्रेजन तँहँ रचि कोठी वह, विरचिय नगर सिंधुतट सुखवह ॥२१॥  
 दक्खिन १ पुर चुंगलपट्ट २ विदित, उत्तर १ पल्लीकाट २ भील इत ॥  
 इन्ह पुर १ भील २ दुहुँ २न के अंतर, विरच्यो नगर अपुव छटावर  
 विजय नगर दक्खिन धर वाचहि, रोहित तुरग कोन २ तासौ रहि  
 ललित पुवसागर तट लहियत, कारोमंडलनाम सु कहियत ॥२३॥  
 पल्लीकाट १ रु चुंगलपट्ट २, दिस जासौ उत्तर १ दक्खिन २ दुव २ ॥  
 तिन्ह विचकारोमंडल अंतर, कोठी १ पुर २ विरचे क्रय जस कर ॥२४॥  
 अक्खहिँ गढहिँ फोर्ट अंग्रेजन, सेंटजार्जगढ १ हट्ट २ नामसन ॥  
 किय व्यापारिन मंत्र असंकित, कोठी किय नृपनाम अनंकित २५  
 अब नृपनाम रचै पुर यातै, विहित कोल नहि बचन बिधातै ॥  
 इम तिहिँ पुर अभिधा विचारि उर, रक्खन लगगे रंगराजपुर ॥२६॥  
 तँहँ नृप रंगराजके मंत्रिय, जानि नृपहिँ प्रतिमा प्रमत्त जिय ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ १ समर्थों ने २ विदित ॥ २० ॥ ३ सुख प्राप्त करके ॥ २१ ॥ २२ ॥ ४  
 रुका, हुआ ५ अग्नि कोण ॥ २३ ॥ ६ मोल लेकर ॥ २४ ॥ ७ अंगरेज लोग गढ  
 को फोर्ट कहते हैं इसकारण मदरासके गढका नाम फोर्टसेंटजार्ज है और कलकत्ते  
 के गढ का नाम फोर्टसेंटविलियम है ८ कोठी पर राजा का नाम नहीं रक्खा  
 ॥ २१ ॥ ९ उचित १० बचन का नाश नहीं करते ११ नाम ॥ २६ ॥ १२ मूर्तिमान्



अंग्रेजों का फोर्टसेंट किला बनाना ] सप्तमराशि-पंचममयूख (२६०९)

सामशदानर दुवर उपाय अनुसरि, कहिय कहहु पुर जैनक  
नाम करि ॥ २७ ॥

छितिपति राम २०३४ अनेह पाइ छम, अंग्रेजन जान्यो फल उद्यम ॥  
गढ सोपुर १ सचिवन करि ज्यो गय, ज्यो तिन्ह कपटभये नर-  
उर २ जय ॥ २८ ॥

तिम नयपटु भल्ला जालम तव, कही सबन नमि रीभ १ खीज २ सब  
हुव अंग्रेज कुसल जव हाकिम, तस नत्ती लिय बट तीजो ३ तिम  
इम प्रमत्त चिरतै हुव अधिपति, भहि दै सचिवन चहत भोगमति ॥  
इम ठग रंगराजके सचिवहु, लंचा १ बट २ लिपिपत्र अपि लहु ३०  
प्रभुमै कहु न प्रभुत्व प्रमानत, जिम करिहौ सु होहि यह जानत ॥  
चीनापानिज जैनक नाम चहि, किय पुर फुटि चीनापट्टन कहि ३१  
अंगरेज मन चहत हुते यह, स्वामी १ सचिव २ विरोध मचै सह ॥

यातै सचिव कथित अब धारयो, नृपको हुकम समूल निवारयो ॥  
मंदराज १ चीनापट्टन २ सहि, लहि सु दुर्नाम बस्यो तव खिन लहि ॥  
भूप्राची सागरतट भंडल, महीबिदित वह कारो भंडल ॥ ३३ ॥

सो तैह रंगराज सासनसन, उक्त रचिय कोठी अंग्रेजन ॥  
कोठी हुव पुब्बहु तैह केही, आनि उचित न हुती पर एही ॥ ३४ ॥  
सेंटजार्ज अभिधान रक्खि सो, अब बिरची रन उचित अक्खि सो ॥  
पुर मंदराज १ चीनापुरपट्टन २, धरि दुवर्नाम बसायो अति धन ॥ ३५ ॥  
व्यापारिन तासौ क्रय १ विक्रय २, अधिक बढ्यो फल भागधेय अय ॥  
वाहिसमय दिल्ली हु आइ और, साहजिदान ३९१२ तुष्ट करि अवसर

१ रंगराज के पिता के नाम से नगर रचा ॥ २७ ॥ हे भूपति रामसिंह २ समय  
पाकर उन समर्थ अंगरेजों ने. ३ जिस प्रकार सचिवों के कारण सोपुरगढ गया  
और उन्हीं के कपट से नरवर विजय हुआ (ये दोनों दृष्टान्त हैं) ॥ २८ ॥ ४  
जालिमसिंह के पोते ने ॥ २९ ॥ ५ बहुत समय से ६ नजराना और ७ बट  
(विभाग) की, लिखावट देकर ८ शीघ्र ॥ ३० ॥ ९ रंगराज के पिता का नाम  
१० प्रसिद्ध ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ११ भाग्य १२ आगामि काल के  
शुभ कर्मों से १३ शीघ्र ॥ ३६ ॥

लेख निदेस तदीय तथा लाहि, चित्त क्रयोचित बंगदेस चहि ॥  
 नदीशरु पुर २ जँहँहुगली नामक, आइ तहाँ लेखिं भुव अभिरामक  
 तिहिँ प्रदेस नाना कोठिन तनि, व्यापारिन बहुलाभ गयो बनि ॥  
 अकबर ३७१ साह समय ए आये, छितिपर सनैसनै इम छाये ॥ ३८ ॥  
 सक कति कहत व्योम ससि सन्नह १७१०, इम किय मंदराज  
 कोठी वह ॥

हुव तिहिँ पुब्वहि बंग बलेस्वर, इम ग्रंथन मत १ लिपि २ कछु अंतर ३९  
 इत गोपालदास चंपाउत, जाचक पुब्व बचाये हितजुत ॥  
 तससुत सूर भये बहु तिनसँ, रूपात प्रवीर बलूजाखिनमें ॥ ४० ॥  
 अमरकुमरदिग रहतहुतो यह, तसकरगन अज १ हुड २ घेरे तह ॥  
 बलू चढयो न अमर तँहँ बुल्लयो, तुम चढि भीर कयौन असितुल्लयो ॥  
 बलू कह्यो है दुख गो १ बिप्र २ न, छिति ३ कै जातचढै भट छिप्र न ॥  
 स्वामी तब समुझहु हम हेलैन, ओरहि बहु अज १ हुड २ उब्वेलैन ॥ ४२ ॥  
 गदिय कुमर हमसंकट साग्रह, साह पटा तजिकै मरिहौ सह ॥  
 अज १ हुड २ मोरि न आनत यातैं, बिरस भयो औसी बढिवातैं ॥ ४३ ॥  
 भई जोधपुर १ कति यह भाखैं, लाहि नागोर २ किते अभिलाखैं ॥  
 बिरस परंतु होत इम रस बढि, चंपाउत तजि पटा गयो चढि ॥ ४४ ॥  
 पत्तो बीर बलू सु उदैपुर, अग्घ कियउ जगतेस लाइ उर ॥  
 रान कहिय कहुरूपि रू रचैं रन, जिहिँ रवि देत सूरपन सौ जन ॥ ४५ ॥  
 बीर बलू बुल्लयो इक १ बारहु, रवि हमरो बीरत्व बिगारहु ॥  
 रविदिस यह तवतैं रदरावन, अर्धकाल लागि छार उडावन ॥ ४६ ॥  
 इम सु तदनु दिल्लीपुर आयो, पटाबिसेस साहसन पायो ॥  
 पहिलै कवि मति कुरन न पाई, इहाँ कही यह यौ स्मृति आई ॥ ४७ ॥

१ मोल लेन से उचित बंगाल को जानकर ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ २ बंगाला ॥ ३९ ॥ ४० ॥  
 ३ चोरों के समूह ने बकरे और ४ भेड़ ॥ ४१ ॥ ५ अपराध ६ बचानेवाले  
 ॥ ४२ ॥ ७ आग्रह सहित ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ८ रावण के समान इठ रत्नने-  
 वाला ९ अर्घ्य देने के समय सूर्य के सम्मुख भस्मी उड़ाने लगा ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

पुव्व१अपर२सवकोहि न पावत, उलटि१पलटि२वतैं इम आवत ॥  
अधिप सता १९४११ हु सुता दूजी इत, कमनकुमारि १९५१२रखि  
वय अंकित ॥ ४८ ॥

राजसिंह जगतेसरान हुव, धीदा वरन वर सु बुल्लयो धुव ॥  
कमनकुमारि १९५१२ दिय ताहि लग्नक्रम, रचि सब संवय उचित  
मनोरम ॥ ४९ ॥

जिहि अनुजा कल्यान कुमरि१९५१३ जिम, आयु अल्प करि सि-  
सुहि मरी इम ॥

कन्या तस अनुजा रामकुमरि १९५१४, क्रम वय लहत यहहु सं-  
भव करि ॥ ५० ॥

बंधू नृप चालुक्य बधेला, बुल्लि अनोपसिंह सुभवेला ॥  
परिनाई चोथी४ हु सुता पहु, चितरि अखिल अखिलन समुचित बहु  
अल्पहि हुव व्याहन इन्ह अंतर, दु२कनी दिय जस छाइदिगंतर ॥  
अमरसिंह गजसिंह तनै इत, जिम नागोर लह्यो तव अरि जितो५२॥  
जुव्वन वय उद्धतपन जाकै, तदपि जनकसासन सिर ताकै ॥  
तातैं लहि नागोरहु तुष्टहि, जिमतिम कियउ जवनपति जुष्टहि॥५३॥  
तदपि जोधपुर देविन आख्यतम, कित नागोर तास क्रम कमकम ॥  
इम जसवंत साह अधिकारी, किय लंचा पूरन बधिकारी ॥ ५४ ॥  
अमर कबहु दीवान न आयो, व्याधि कछुक बहु दिनन दवायो ॥  
नाम सलामतखान तवाहि नमि, किय छल विन्नति साह गाह क्रमि  
अमर रोगभिसु हमहिं डुलावत, अप्प अंगद दीवान न आवत ॥  
कहिय साह जा एह सत्यक्रम, दम्म लेहु तासों दैकैं दम ॥ ५६ ॥

॥ ४८ ॥ १ पुत्री को देकर बरने के लिये २ निश्चय ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥  
३ प्रसन्न ४ प्रीति-युक्त किया ॥ ५३ ॥ ५ धन से ६ अत्यन्त धनवान् ७ कम  
से कम ॥ ५४ ॥ ८ अपने स्थान (जगह) पर जाकर बादशाह से विनंती कीं  
॥ ५५ ॥ ९ नैरोग्य है तो भी सभा में नहीं आता ॥ ५६ ॥

सुनि यह \*पति पठाइ सलामत, तिम मंगे दम दम्न दिनन तत ॥  
 रोज तलब दैदै अमरसहु, लहि दठ न दिय दंडमैं लेसहु ॥ ५७ ॥  
 तदनु कबहु उल्लास होइ तैंहैं, पत्तो अमर असंक साहपैंहैं ॥  
 मिच्छ मीरबखसी जु सलामत, ताकैंहैं मुख्य प्रकाष्ठ मिल्यो तत ॥  
 अकिखय तिहिं दै दम्न जाहु इत, दठजिन करहु गँवार मरनहित ॥  
 सुनत गँवारबचन अमरसहु, लै पट्टिस कंचुक गोपित लहु ॥ ५९ ॥  
 छर्म करि पार सलामत छतिय, घोर सजोर कुलाहल धतिय ॥  
 माँहिं गयो इम मारि सलामत, बिकरयो रुहिर कटारहिं वामत ६०  
 भैचकि सभा निरायुध भूपन, प्रदुत हुव गिनि काल निरूपन ॥  
 जनताता इक१हु न लखो जिम, अंदर दुरन साह नछो इम ॥ ६१ ॥  
 बलज रुकाइ संधिल्ला बट्ट सु, आतुर पहुँचि सिरोगृह अट्ट सु ॥  
 टिकि उपपर जे भैर निज टारै, पकरन१मारन२ताहि प्रचारै ॥ ६२ ॥  
 हँसे सुभट कहि सिंह नख न हम, नहिं तिम दह नाम१सूकर२सम  
 जानहु सेस जीह रन जनिबो, व्है किम अब गहिवो१कै हनिबो२ ॥  
 डरविनु साह कुपित ओठन डसि, उपपरसन दुव२तव डारे आसि ॥  
 अर्जुन१गोर अमरसालक इक१, संग्रहि अपर२द्वितीय साहसिक ॥  
 समुख चलै द्वै२ही आसि सायुध, जत्रकुत्र जन इतर निरायुध ॥  
 अमर कहिय इक१पैं दुव२आवहु, गांजि असिन मम सीस गिरावहु  
 साहहु मूढ अंध अनुसारी, करैं खलन ऐसे अधिकारी ॥

सलामतखां ने पैदल भेजकरा दंड के रुपये ॥ ५७ ॥ १ नैरोग्य होकर २ मुख्य द्वार  
 (डोढी) पर ॥ ५९ ॥ ३ बागे (जामे) में ४ छिपी हुई कटारी लेकर शीघ्र ॥ ६० ॥ उस  
 समर्थ ने उस कटार से रुधिर टपकाता हुआ देखा ॥ ६० ॥ ६ भाग ॥ ६१ ॥ ७  
 सुरंग के (गुप्त) मार्ग का द्वार रुकाकर ८ ऊपर के महल की छत पर चला गया  
 ६ भट ॥ ६२ ॥ उन सुभटों ने इसकर कहा कि न तो सिंह के समान हमारे  
 नख हैं और न सूअर के समान डाँढा और तुंड हैं फिर बचन युद्ध से कैसे प-  
 कड़ा जावे और मारा जावे ॥ ६३ ॥ यह सुनकर बादशाह ने ऊपर से दो ख-  
 त्र डाले जिनमें से एक तो १० अमरसिंह का साला अर्जुन गौड़ था उसने लि-  
 या और दूसरा किसी साहसी ने लिया ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

वैवो दंड बुरो न कहे हम, तदपि अवाच्य अहो विस्मयतम ॥६६॥  
 अटयो अमर संसर्ग इम अक्खत, गिद्धि उभैरहि दिद्धिविच रक्खत ॥  
 अमरातंकै सभा अकुलाई, मनु होरी हरियार मचाई ॥ ६७ ॥  
 अबलाजनहु उच्च आवासन, प्रचुर सुन्यो कलकल चहुँ पासन ॥  
 साहसुता१हु व्यग्र कति सूचत, मन्निरही अमरहिँ पतिपन मत ६८  
 कहत बजीरसुता२संगत कति, अपर कितेक कहत मिथ्या अति  
 पटुँ मनुजन निश्चय यह है पर, जिमतिम जड़न सूचियत अवसर ६९  
 अक्खिय साल गोर अर्जुन इम, करहु भाम मोमँ संसय किम ॥  
 अमर तदपि सब गंजि सभा वह, गोरहिँ लखि सालकपन साग्रह ॥  
 अक्खिय तुम मम समुख न आवहु, लरि जिन मंतुँ भामसिर लावहु  
 अर्जुन कहिय अहो संसय इत, है को खल संबद्ध हननहित ॥७१॥  
 चाहि तुमहिँ गृहलग पहुँचैहो, लाभसमय अपजस किम लैहो ॥  
 तदपि अमर मन्त्री न बत तस, सूचिय नन प्रत्येय अव साहस ॥७२॥  
 रहि इम पिठि चरन मम रक्खहु, चरन संगु जानहु तिहिँ चक्खहु ॥  
 सालक भोकरि सौह ओट इम, तव अमरहु विस्वास मन्नि तिम ॥  
 साहसभा सब कहि नारिनसम, भुजकटार पारिजिततित भ्रम ॥  
 कठनलग्यो खिरकी विक्कम क्रम, सालक जानि सत्यपथ संगम ॥  
 अधम गोर विस्वास दयो इम, स्वीय स्वशा करिहो विधवा किम।  
 विश्रब्धहु कलुकलु इम बैनन, लखि खिरकी बाहिर असु लैनन ॥  
 मस्तक करि प्रविश्यो खिरकी में, धरत जदपि अवहितपनधीमें ॥

१ सभा में अमरसिंह इसप्रकार कहता हुआ फिरा और दोनों के रिष्ट (बन्धों) को दृष्टि में रक्खा २ अमरसिंह के भय से ॥ ६७ ॥ ३ स्त्रियों ने भी ४ ऊँचे महलों से ५ बहुत कोलाहल सुना ६ आसक्त अथवा व्याकुल होकर अमरसिंह को पति मानती थी ॥ ६८ ॥ ७ चतुर ८ मनुष्य ॥ ६९ ॥ ९ है बहिन के पति ॥७०॥ हे बहिनोई लड़कर मेरे मस्तक पर १० अपराधमतलाओ ॥७१॥११ अब भरोसा नहीं है ॥ ७२ ॥७३॥ १२ पद विन्यास से (पैड देने के क्रम से) अपनी बहिन को विधवा क्योंकर कहेंगा १३ विस्वास करके ॥७३॥ १४ बुद्धि में सावधान

पय इक१ अमर कहन न पायो, चोर गोर तहँ जोर चलायो ॥ ७६ ॥  
कट्टिय भाम चरन अधकारी, कट्टी श्रुति तस फैंकि कटारी ॥

बीर अमर बाहिर जकि बैठो, प्रगत श्रवन अर्जुन उत पैठो ॥ ७७ ॥  
कुहँक गोर अमरहिँ अचरन करि, कैलुखी बिरहित इक१ करन करि ॥  
पच्छोजाइ साह प्रति प्रनम्यौ, निरायुधहु अमरसुँ इत न नम्यौ ॥ ७८ ॥

चरन करि१ करन करि२ प्रनम्यौ१ ननम्यौ२ अन्त्यानुप्रासौ२ ॥

मिलि सो बहून सायुधन मारयो, कनकट गोर बुधन दुदुकारयो ॥

निजन कुमार कुँगाप इत आनिय, किय प्रारंभ जरन कुमरानिय ॥

यह सुनि वत्त बलू१ चंपाउत, जो निजबंधु नाम भाऊ२ जुत ॥

अमर भीर खिरकी लग आयो, प्रान बिहीन कुमर तहँ पायो ८०

दुव२हि पट निज फैंकि साह दिस, रारि मचाइ रचाइ काल रिस ॥

कुमर बैर मंगै सु देहु कहि, तोरन पर जुज्जे भँरजातहि ॥ ८१ ॥

कुमरानीप्रति जरन कहाई, बाचिक इक१ हमरो तुम बाई ॥

यह लैजाइ कहहु पतिअगँ, अक्खिय हमहिँ क्रोधमति अगँ ८२

पतिअगँ१ मतिअगँ२ अन्त्यानुप्रासः ॥ ११ ॥

अब तुम जो न छुरावहु हुड१अज२, गहिँ असि तो दलिहो कब

गुंडगज ॥

साहपटा तजि तुम रचि संगर, स्वामिसहाय लज्ज धरि लंगर ॥ ८३ ॥

ममसहाय धारन चढि मरिहो, कब तब सफल दर्प यह करिहो ॥

आनिबनी सुहि वत्त अमर अब कबतँ दर्प हुतो सु गयो कब ८४

पन धारण करता था तो भी ॥ ७६ ॥ उस पापी ने वहनोई का चरण काट

डाला और अमरसिंह ने कटारी फैंककर अर्जुन गौड़ का कान काट डाला

॥ ७७ ॥ १ जालसाज २ वह पापी एक कान से हीन होकर ॥ ७८ ॥ ३ अपने

लोगों ने सुर्दा कुमर को ॥ ७९ ॥ ४ वह ४ भट बाहर के द्वार पर जाकर

लड़े ॥ ८१ ॥ ५ हे बाई हमारा एक वचन पति के आगे जाकर कहना ॥ ८२ ॥

६ इस समय भेद और बकरे नहीं छुड़ाओगे तो पाखरों सहित हाथियों को

कय मारोगे ७ युद्ध ॥ ८३ ॥ ८ घमंड ॥ ८४ ॥

तुनसम हम सब साहपटा तजि, भीर आइ तुम मरनथान भजि॥  
कंकनहीन बहुल बीबिन करि, धव जस मनि कै डंक अनुल  
धरि ॥ ८५ ॥

पयचर्वक गोरहु जो पाते, हुत तस सुनपन संफल दिखाते ॥  
सहकरि हम इम भरत इहाँ अब, सति पति प्रतिमति १ गति २ सु-  
चहु सब ॥ ८६ ॥

जे औसैं समुझाइ सतीजन, करत अँजज १ मिच्छ २ न मन कन  
कन ॥

बहु हनि बीर बिरचि घायल बहु, लरि मरि कुमर सभापहुँचे लहु  
॥ दोहा ॥

तिहिँकालहु प्रभुराम २०३।४ तुम, पिकखहु इम रजपूत ॥

वचन गँवार न सहि बहुन, पारि परघो गर्जपूत ॥ ८८ ॥

आँट वचनकी धरि इमहि, बलू १ कबंधहु वीर ॥

परघो पारि बहु पुब्बके, स्वाभि लोन करि सीर ॥

सु निज बंधु भाऊ १ सहित, सह सज्जित निज सत्य ॥

बडि भिरत खिलखिल बलू १, तिलतिल कटिय तथ ॥ ९० ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तराध्याये सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशल्यचरिते सेण्टजार्जनामदुर्ग चीनापट्टननामनगरं च नि-  
र्माय विजयनगरसमीपे बङ्गदेशे चाङ्गलजननिवसन १, योधपुरार्धा-  
शात्मजामरसिंहरुष्टचाम्पाउत्तबल्लारुयस्योदयपुरगमनपूर्वकदिल्लीग

\* पति के यश रूपी मखि की अनुल ? जोभा धारण करके ॥ ८५ ॥ २ चरण  
के चलानेवाले गोड़ को पाते तो ३ उसका कुत्तापन ४ साथ करके ५ हे सती  
॥ ८६ ॥ १ आर्य और स्लेच्छों को ७ शीघ्र ॥ ८७ ॥ ८ गजसिंह का पुत्र  
॥ ८८ ॥ १० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तराध्याय के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशल के चरित्र से सेण्टजार्ज नामक गढ़ और चीनापट्टन नामक शहर ब-  
नाकर अंगरेजों का विजयनगर के समीप और बंगाले में रहना ? जोधपुर  
के कुँवर अमरसिंह से रुष्ट होकर बलू नामक चांपावत का उदयपुर होकर

मन १, सलामतखांनिधनयवनेन्द्रसभाभयापादकराष्टकूटकुमारामर  
सिंहस्य स्वश्यालकार्जुनगौड़करचरणाकर्त्तनानन्तरतत्कर्त्तामुत्कृष्टप  
वीरतया पञ्चत्वासादन ३, कुमारभगसिंहवैरवालिनेहेतुचाम्पाउत्तव-  
ल्लवाख्यस्य वीरतया मरणं पञ्चमो मयूखः ॥ ५ ॥

आदितः सप्तदशोत्तरद्विशततमः ॥ २१७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लोदीखानजिहान लौ, दक्खिन भीर दुगंत ॥

दिल्ली भुव दब्बत दल्हो, सो माधव १९३१रन संत ॥ १ ॥

जाके संगी सेस जे, दक्खिनअधिष दुवाह ॥

जिनपर साहजिहान ३९१३इत, सजि चले अब साह ॥ २ ॥

नृपशनवावरलहि सत्थि निज, अकबर ३७११नती एह ॥

लोदी पक्खन लुंछिं बे, गो दक्खिन गिनि गेह ॥ ३ ॥

संगहि हे माधव १९३१सता १९४१, जयसिंह १६ जसवंत २ ॥

बुंदेला वरसिंह ३ बलि, सूर ४ कबंध सुमंत ॥ ४ ॥

॥ पद्यात् ॥

लिगि पठई सुगलेस पहुँचि दक्खिन सन्नुन प्रति ॥

लोदी संगति लागि देस लुद्धिय तुम दुर्मति ॥

चोरन चोरन चाह दोन गृहपति जग्गनहद ॥

अब किन सम्मुह आहु मोहि अपनौ दिखाहु मद ॥

उनकै न रह्यो अवलंब अब जिहि मिस सब सम्मुह जुरै ॥

दिल्ली जाना २ सलामतखां को मारकर बादशाह की सभा में भय डालनेवा-  
ले कुंवर अमरसिंह राठौड़ का अपने साले अर्जुन गौड़ के साथ चरण कटे पी-  
छे अर्जुन का कान काटकर नीरमा से भागजाना ३ कुंवर अमरसिंह का वं-  
श होने के कारण कटूचांपावत का वीरता के साथ मारे जाने का पांचवाँ मयूख  
मनास झुआ और आदि से २१७ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ वीर ॥ २ ॥ १ पंख उखाड़ने के लिये ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ १ आधार



लोदी सु मरत टरिवो हि लखि मन व्यवाहित घरघर मुरै ॥ ५ ॥

॥ पद्धतिः ॥

थकिवैठ इम अरि थानथान, सुहि सानुकूल समुक्त सुजान ॥  
दिल्लीस बिहरि देखिनप्रदेस, बढि जत्रकुत्र किय अरि बिसेस ॥ ६ ॥  
भिरि असहवेढि गढ भिन्नभिन्न, भैर दुसह केहि किय छिन्नभिन्न  
पहिलै गयो सु आसेर १ पाइ, बिचके प्रदेस २ बसके बनाइ ॥ ७ ॥  
जय करि तिम अहमदनगर ३ जिति, प्रथम १ हि प्रमान किय  
विजय किति ॥

इम खानदेस निज जंत्र आनि, पच्छिम सहाचल ४ हद प्रमानि ॥ ८ ॥  
अब दुलम दोलताबाद ५ आइ, घेरयो गढ गोलन गंजर घाइ ॥  
सुत १ नारि २ कुमरपन जत्य साह, रखे चिर निर्भय सरन राह ॥ ९ ॥  
बीजापुर सम जाको विसास, इहि खुरुम ३ १ २ लही जैं जिय न आस  
दुर्ग सु हो दुर्गम पै सुदिष्ट, याके सहाय हुव फलन इष्ट ॥ १० ॥  
यह विदित मर्म हो निवसिअग, मिलिजात फलहि अनुकूल मग  
गढविच इस संकट किम हु गेरि, हड्डे ६ १ स सता १ ९ ४ १ दिक्  
पास हेरि ॥ ११ ॥

लिय असै संकट सत्रुलोक, अप्पन वचै न जिम तजिहु ओक ॥  
बुरदानपुर जु हुव कोल बैन, हड्डे ६ १ न पति हाकिम रहत रैन  
१ ९ २ १ ॥ १२ ॥

पुहवीस सता १ ९ ४ १ सुभिरन सुपाइ, बासी गढके कहे बचाइ ॥  
तिन मन्त्री उत १ जिय दिय सता १ ९ ४ १ दि, जयबीज गिन्यो इत २  
साह जाहि ॥ १३ ॥

अतिजस मनाइ भूपति दुश्ओर, जियो वह दुर्गहु खग्न जोर ॥  
इत तंत्र दोलताबाद ५ आनि, जयहेतु सता १ ९ ४ १ कैह साह जानि

१ छिपकर ॥ ५ ॥ १ ॥ २ भट (वीर) ३ आसेर जह ॥ ७ ॥ ४ बेग ॥ ८ ॥ ५ नि-  
रन्तर प्रहार से १ घाव करके अधया आकर ॥ ९ ॥ ७ अष्ट भाग्य से ॥ १० ॥  
॥ ११ ॥ ८ घर ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ९ जय का कारण

इम भेट दयो पहिले अनेह, नृप रत्न १९२।१ जहांगीर ३८।१ हि सनेह  
 सो सिव प्रसाद गज खास साह, बुंदीसाहि बखरयो सह सराह ॥  
 या द्विरद १ माहि हे गुण अनेक, क्रम तास संग दिय बस्तु केक ॥  
 पोसाक २ खास भूषन ३ उपेत, यह ४ हेति ५ दये जयहेतु हेत १६।  
 दाखिन प्रदेस इम कति दबाइ, अकबरपुर प्रविश्यो साह आइ ॥  
 करि सिक्ख नृपहु अप्पन निकाय, क्रमि आयो बुंदिय सु रवि  
 काय ॥ १७ ॥

निकाय १ चिकाय २ अन्त्यानुप्रासः ॥ ११ ॥

पूर्वा १ पर २ वत्तन क्रम न पात, इम बदलि कथानक बहुत आत ॥  
 जैह हम सक निश्चय लिखहि जानि, मेधावी तैह क्रम लेहु मानि १८  
 अंबर वसु सोलह १६८० सक अनेह, उपज्यो पटु भाऊ १९५।१  
 कुमार एह ॥

अब सक ख सून्य अत्यष्टि १७०० अंत, याकै हु कुमार हुव मह  
 अनंत ॥ १९ ॥

जेठीकुमरानी जनित जोहि, संज्ञा करि पृथ्वीसिंह १९६।१ सोहि ॥  
 नती यह जनमत सुनि नरेस, बुन्दीस सता १९५।१ दिय वसु बि  
 सेस ॥ २० ॥

दौहित्र जनम सुनि उदयदंग, जगतेस रान जैह अतिउमंग ॥  
 करि रौभ उतहु किय महप्रकास, मरिगो सु कुमार पुनिरहि दु  
 मास ॥ २१ ॥

क्रम करि तबलौ भाऊ १९५।१ कुमार, ऊढा कुमरानी त्रय ३ उदार ॥  
 धनकुमरि १९५।१ बडी १ तैह गुननिधान, जगतेसरानतनया सुजान  
 हरिसिंहसुता दूजी २ बहोरि, जो पुर प्रतापगढ गंठि जोरि ॥

१ समय ॥ १५ ॥ २ सहित ॥ १६ ॥ १७ ॥ ३ पहिली पिछली यात का क्रम  
 नहीं पाकर इसप्रकार कथा ४ बुद्धिमान् वहां क्रम मान लेवें ॥ १८ ॥ ५ वत्सव  
 ॥ १६ ॥ ६ नाम ॥ २० ॥ २१ ॥ ७ विवाहिता ॥ २२ ॥

राजाके कुमरके संबंधको बुंदेलोंका आना] सप्तराशि-चछमयूख (२३१९)

निजपतनी भाउलदेवि १९५।२ नाम, कुमरानी आनी वरि प्रकाम  
बडगुज्जरि तीजीइलग्नवेर, कन्या जु भूप फतमल्लकेर ॥

हरकुमारि १५९।३ नाम हद निपुन नारि, परनी सु राजपुरगढ प-  
धारि ॥ २४ ॥

इत दिनन कुमर संबंध एक, बुंदेलन विरचन किय बिबेक ॥

भूपति बुंदेलहु खुसुम ३९।२ भीर, पहिले हुव टारन परन पौरा ॥

जिहिं ठहै व साह साहेजिहान ३९।२, मनें स्व सहायक अधिक मान  
सीसोद १ भीमसुत रायसीह, बुंदेल २ भूप तिम रन अवीह ॥ २६ ॥

बैठतहि पट्ट दोउरन बुलाइ, भूपाल बनाये उचित भाइ ॥

कछु लहि कुजोग बुंदेलवंस, पुव्यहि सु हीन हुव हत प्रसंस ॥ २७ ॥

बुंदेलभूप वरसिंह दार, यहि अब सु सुदकुल करन सीर ॥

अपनें निहारि कन्या अनीक, वसुधेस वरहिं तनि मह तितीक ॥

बुंदीसकुमर कतिकन बताइ, जंपिय यह सगपन वानिहुजाइ ॥

तो आहि कनी तुमरे जितीक, वसुधेस वरहिं तनि मह तितीक २९

वरसिंह सुसंगत समुक्ति बात, भेजे पुर बुंदिय सचिव १ भ्रात २ ॥

संबंध उचित उपहार सत्य, आये फल चाहत तेहु अत्य ॥ ३० ॥

आदर १ सह डेरा २ तिन्ह दिवाइ, पाधुन सनमानें मोद पाइ ॥

वनि सुनि सता १६४।१ हु सगपन विचार, करि बिजन मेल संग-  
त कुमार ॥ ३१ ॥

नटि जान अकिख तिहिं सह निदान, पठई कहि न करत सुत  
प्रमान ॥

याकै विवाह त्रिक ३ पुव्व आस, तिनमै हि तुष्ट अधिकन उदास  
बुंदेलन जानिय लोभवेन, स्वीकरि हे सुनतहि उचित अैन ॥

पठई कहि यातें बुल्लि पास, पुनि करहु सभा आसय प्रकास ॥ ३३ ॥

१ विशेष कामना से ॥ २३ ॥ २४ ॥ २ विचार ॥ २५ ॥ ३ निर्भय ॥ २६ ॥ २ ॥

४ कन्याओं की सेवा ॥ २७ ॥ ५ उत्सव करके उनने ही राजाओं को विवाहमें

॥ २८ ॥ ६ साधुपादने=कुंवर के साथ एकान्त में सलाह करके ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

रचि संसद बुल्ले तब नरेस, बैठारे सब मिलिहित बिसेस ॥

प्राधुनन कहिय सिंधुर १ पचास ५०, इककोटि १०००००००

द्रम्म २ पुनि देय आस ॥ ३४ ॥

सत १०० हरिक ३ बहुगुन १ अर्थ २ सुद्ध, बज्राकर हम भुव ज-  
नित बुद्ध ॥

पुनि सीम विदित दुव २ परगनाँ ४ हु, बसुँ आढ्य पाइ रीकहि  
बैनाँहु ॥ ३५ ॥

अनुचर १२ मिथुन २ सत १०० सत १०० सुसेव, दुर्गुनों सब दा-  
यज लेहु देव ॥

नृप कहिय कुमार व्याहन निरास, स्वीकार नतो सगपन बिसास  
पुनि कहिय मिलावन जन्मपत्र, तमकपो हरि १९३३ काका सु-  
सुनि तत्र ॥

अपनों कुलसंकर तउ उदाग, गिनियत जगसुद्धहि गहिरवार ॥ ३७ ॥

हम कुलहु करन तुम सम चहंत, मुरि अब घर जावहु हे महंत ॥

संकर तथापि वुंदलसूर, औसी सहै न दूर २ रु अदूर २ ॥ ३८ ॥

असि अँचि अँचि तिन कहिय एह, गिनियत कुल सुद्धहि द-  
म्म १८३१ गेह ॥

नृप आनि डोड हरराज नारि, वंसहि यह तासों दिय विधारि ॥ ३९ ॥

ते इन अवाच्य कहि पकरि तेग, वुंदल सुरे प्रतिमग्ग बेग ॥

वरसिंह कुद्ध दुव सुनि सुवत्त, दिल्लीसहिँ जिहिँ इम अरज दत्त ॥ ४० ॥

जिम मान बढायो मम दजूर, पायो तथाहि अपमान पूर ॥

जिम जोहि वरनसंकर जनाइ, दहुद १२ न दुहुकारयो असह दाँड २१

अब औँचि गु सगपन करहु अप्प, देखहु कै हम कुल सुद्धि दप्य ॥

पाठ्यों ने कहा कि १ हाथी ॥ ३४ ॥ २ कामती ३ हरि का ज्ञान ४ धन से ५

धनवान् होकर ६ दुल्लु भी प्रसन्न होवेगा ॥ ३५ ॥ ७ सेवकों का जोड़ा ॥ ३६ ॥

८ चरित्रों का वंश विशेष ॥ ३७ ॥ १८ ॥ २ डारिया ॥ ३९ ॥ ४० ॥ १० खेद

का वचन ॥ ४१ ॥ ११ दर्प ॥ ४२ ॥

सुनि साह कहिय इत १ उतर २ समान, हमतें न होइ दुवश्पच्छ हान  
बलि देन उपासं बहु विसैस, आनत्त सता १९४१ संकोच एस ॥

गिनि सुहि निदेस बरसिंह गज्जि, सेना समस्त दुवअयुत २००००  
सज्जि ॥ ४३ ॥

बुंदेलबीर तिम पकरि तेग, बुन्दीपर आयउ वज्रवेग ॥

सुनतहि न देर किय इत सता १९४१ हु, बल सज्जि सुदित आ-  
जानुबाहु ॥ ४४ ॥

मारुत जव बाजिन बीच मेलि, भारिय असि सीसा छिगहि झेलि ॥  
वज्जिय सब सखन निसिंत बाढ, मन भीरु भज्जियत जतन गाढ  
बल कटत लुत्थिलुत्थिन बिलगि, जोगिन समाधि खिवसहित जगि  
ताल १ प्रेत २ डाकिनि ३ विलास, राचे रचि जोगिनि ४ नीर ५ गस ४६  
पत कितेक बहु दुर्दिन जुद्ध, वहमत दुर् जान वह कलाह बुद्ध ॥

छिगहि दुर् ओर बहु भरत बीर, भयकर भई अवमर्ह भीर ॥ ४७ ॥  
यै उदय भयउ बुन्दीस ओर, इतकेहि अस्त्र जिम लहिय जोर ॥

गहू कर गुटिका लागि कपाल, बरसिंह परयो गजनै विहाल ४८  
सतपंच ५०० परे इत १ उतर २ सिपाह, बुंदेल भजे खिल मोरिवाह ॥  
घायल दुर् ओर खटसत ६०० घुमात, बुन्दीस लह्यो जय जस वि-  
भात ॥ ४९ ॥

जो सबल १९३११ मनोहर १९१४ तनय जत्य, तोमर प्रताप २  
हरि ४ भल्ल तत्य ॥

ए सैंटि तीन ३ सामंत अत्य, संभर सता १९४१ सु जय लिय सं-  
मत्य ॥ ५० ॥

जयसिंह इत सु कूरम जनेस, आमेर विभव बिलरुत असेस ॥

शत्रुशाल को आलंभा देते संकोच ? लाते हैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ २ तीखे बाढ  
॥ ४५ ॥ ४६ ॥ १ पीड़ाकारी युद्ध में ॥ ४७ ॥ ४ भाग्य प्रभोली ॥ ४८ ॥ ६ वाहन  
॥ ४९ ॥ ७ बदले में देकर ॥ ५० ॥

राच्यो ब्रजभाखा काव्य रंग, सुचि १ रस विसेस अतिसय प्रसंग ॥  
सासन तस इक द्विज धारि सीस, किय सत्तसई ७००१ दोहा क-  
वीस ॥

अभिधान बिहारी सु कवि एह, सनमान्यौ माथुर अतिसनेह ॥५३॥  
दोहा १ प्रति इक १ इक १ महुर दीन, कवि १ नृप २ जस निजनिज  
विदित कीन ॥

द्विजग्रंथ अबहु यह अर्थ १ दीप, पै छंद १ सव्द २ मैलन ३ प्रतीप ॥५३॥  
जिहिं विप्र बिहारी बंसजात, कवि बालकृष्ण प्रभु अन्न पात ॥  
जिम बिस्वनाथ द्विज इत सुजान, धरि सत्रुसल्य चरित अभिधान ॥  
बुंदीस काव्य संस्कृत बनाइ, पटु आदिकविनविच नाम पाइ ॥  
श्रवन सु कराइ पाये समथ, सासन चउ ४ रूपय लक्ख १०००००  
सथ ॥ ५५ ॥

इत जनक मरत लहि पट्ट एस, जसवंत जोधपुर हुव जनेस ॥  
काहू कवि किय जिहिं प्रीतिकाम, नव भाखा भूखन ३ ग्रंथ नाम ॥५६॥  
बहु जत्य अलंकारन बिबेक, अिसो रच्यो सु लघु ग्रंथ एक ॥  
जसवंत नृपहु करि श्रवन जाहि, सासन १ गज २ वसु ३ दिय गुन सराहि ॥  
लच्छन १ मुख न मिलत सब ललाम, नृप १ कवि २ जुग २ पायो  
तदपि नाम ॥

महिपाल सता १९४१ इत सबन मान्य, बरखै बसु बिंदुन अति  
बदान्य ॥ ५८ ॥

बुध १ कवि २ जन दुर्विध भाव बोरि, निज रीझ दये लक्खन निहोरि  
पुहवीस करै सहजहु प्रयान, धरि संग लक्ख १००००० दम्भन  
निधान ॥ ५९ ॥

सकटन जे संभृत बहुतवेर, दिय मंगनमात्रन न किय देर ॥

१ शृंगार रस ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ छंद और शब्दों के मिलान में २ विरुद्ध है ॥ ५३ ॥ ३  
शत्रुशाल्य चरित्र नामक ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ४ राजा ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५ दाजी ॥ ५८ ॥  
६ दरिद्र भाव मिटाकर ॥ ५९ ॥

द्विज १ सूरिन सत्रह १७, ग्राम दत्त, पंद्रह १५ लहि चारन २ हुव  
सुपत्त ॥ ६० ॥

इकबीस २१ दये भट्टन ३ उदार, लखन पट १ भूखन २ रीझ लार ॥  
कवि चारन देवहिँ दम्भ १ कोरि १०००००००, बखसी सह सासन २  
गज ३ बहोरि ॥ ६१ ॥

देवहु निज जाचक बुल्लि द्वार, सब रीझ दिय सु किय जस प्रसार ॥  
अहि केने फलन जल कहि अर्क, देवहिँ नृप पायो जस उदैक ॥ ६२ ॥  
तदपि न बिरुदायो देव ताहि, सवरीति नृपति आदर सदाहि ॥

अनुगँत्व कबहु नृप करि अतुल्य, कवितैं सु लह्यो निज बिरुद कुल्य  
ऐसो अलुब्ध कवि देव एह, नृपजन सब जाको चहत नेह ॥

दिय जाहि सता १९४१ जो उक्त दान, सब दिय सु जाचकन जिहिँ  
सुजान ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

याहीतैं महियारियन, एह भयो अवतंस ॥

करी १ कोटि २ सासन ३ बरिस, बिरुद लहत तसबंस ॥ ६५ ॥

अब लिय सत्र महियारियन, यहहि बिरुद अपनाइ ॥

तजै बडाई कोन तँहँ, अनायास जँहँ आइ ॥ ६६ ॥

॥ ६० ॥ \* देवा १ नाम महियारिया चारण को ॥ ६१ ॥ रतिजारे के डोडा का अर्क नि-  
काल कर २ भविष्यत् काल में यश करने के लिये ॥ ६२ ॥ ४ सेवकपन ५ अ-  
पने वंश से उत्पन्न हुआ बिरुद लिया ॥ ६३ ॥ ६ इसी कारण से महियारिया  
चारणों में सुकुट हुआ जिससे महियारिये छस्तिवरीस कोडवरीस कहला-  
ते हैं ॥ ६४ ॥ ७ बिना परिश्रम किये ही जो बडाई मिल जावे उसको कौन छोडें ॥ ६५ ॥

\* बुन्दी के राव शत्रुशालने महच्यु ग्राम के महियारिया शाखा के चारण देवा की जूतियें (उपानत्)  
अपने हाथ से उठाकर देवा के आगे रखी उस समय देवा ने निम्न लिखित यह दोहा कहा सो इस स-  
मय भी राजपूताना में बहुत प्रसिद्ध है ॥

॥ दोहा ॥

पाणाँ गह पैजार, सुकवि अग्न धरतां सता ॥

हिक हिक बार हजार, पह सूमाँ माथै पड़ी ॥ १ ॥

इस दोहे में पह शब्द (पहु) अर्थात् प्रभु शब्द का अपभ्रंश है ॥

आरंभिय जवनेस इत, लंघि अटक भुव लैन ॥

अजै १ जवन २ बुल्ले अखिल, इकखन कावल अैन ॥ ६७ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
वसुधावरशत्रुशल्पचरित्रे दक्षिणप्रस्थितयवनेन्द्रशाहजहांकृतलोदी-  
पलायन १, सुतासंबन्धकरणाककटुवचनहेतुकबुन्देलहडवाहुज-  
विरोधसमरहड्डविजयन २, भाषाभूषणाविहारीसप्तशतीनिर्माणाव-  
र्णानतद्योग्यायोग्यत्वग्रन्थकर्तृसंमतिकथन ३, महियारियाशाखाय  
चारणादेवाकृताप्रतिमसेवानिर्मिततच्छाखायचारणार्थशत्रुशल्पप्रत-  
द्विस्तवरीसक्रोडवरीसविरुद्धप्राप्तिवर्णनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितोऽष्टादशोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥ २१८ ॥

प्राये न जदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अटकपार दिल्ली अमल, इक १ सूबा सिर आहि ॥

कावल १ अटक २ दुर्नाम करि, जग जन जंपत जाहि ॥ १ ॥

कावलवासी निकट करि, उतके अरि अफगान ॥

अवसर अवसर उप्फनै, दब्यन धरनि निदान ॥ २ ॥

कलालास अभिधान करि, जाहिर इक गढ जत्थ ॥

१ आर्य २ घर ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति श-  
कुशाल के चरित्र में बादशाह काहजहां का दक्षिण में जाकर लोदियों को भ-  
गाना १ पुत्री का संबंध करने में कटु वचनों के कारण बुंदेला और हाडा ज-  
त्रियों में विरोध होकर युद्ध में हाडों का विजय होना २ विहारीसतसई और  
भाषाभूषण दोनों ग्रंथों के बनने का वर्णन और उक्त दोनों ग्रंथों के योग्य  
अयोग्य होने में अन्धकर्ता की शक्त ३ राव शत्रुशाल का महियारिया शाखा  
के चारण देवा की अतुल्य देवा और महियारिया चारणों को हस्तवरीस  
क्रोडवरीस का विरुद्ध मिलने के वर्णन का छठा मयूख समाप्त हुआ और आदि  
से १८ मयूख हुए ॥

३ कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥



शाहजहाँ का काबुल पर चढ़ाई करना ] सप्तमराशि-सप्तममयूख (२६२६)

सो कबहुक इन्ह १ अनुसरैं, है कबहुक तिन्ह रहत ॥ ३ ॥

किते कहत उतकोहि यह, जितहिं अब जवनेस ॥

किमहु होहु पै काबलिन, दब्बो कछुक प्रदेस ॥ ४ ॥

तस पुकार सुनतहि तमकि, अब बल सजि अमान ॥

करन पराजित काबलिन, हंकि सहाजिदान ३९१२ ॥ ५ ॥

॥ मदनाबतारः ॥

भूपगन सर्व आहूत हाजिर भयो,

गैद बिकल सूर अभिधान नृप नाँ गयो ॥

रोग परतंत्र बीकानयर अप्प रहि,

सजि जिहिं पट्टधर कर्ण पठयो सुतहि ॥ ६ ॥

साह दरकुंच अनुसार हुव भूप सव,

अटकपर जात पछितात विभना हु अब ॥

भूप बुंदीस जब गो तबहि दर्प भरि,

कुप्पि इस साह तरज्यो उपाखंभ करि ॥ ७ ॥

मारि वरसिंह १ तब पास गत मित्र मम,

सुद्धमति बुद्ध हुव तूहु किम सत्रुसम ॥

हहु ६ १ नृप कहिय वह आत मो धर हन्यो,

तासघर जाइ नहि नैक रन मैं तन्यो ॥ ८ ॥

बंधु तस बैन कटु गेह मम बुल्लये,

गाढ अपराध तव मूढ कहैगये ॥

तोहु हरिसिंह १९३३ काका हि किय बाद तिम,

कटुक मम बैन सुनि तेहु मरते न किम ॥ ९ ॥

कूर हरि १९३३ टारि इस नम्र हुव जोरि कर,

॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १ बुलाये हुए २ रोग से बिकल होकर बीकानेर का राजा  
खुरसिंह नहीं गया ॥ ६ ॥ अटक नदी के उल्लंघन करने से आये हुए राजा अप-  
ना धर्म हानि समझते थे तिस कारण ३ उदास हुए ॥ ७ ॥ ४ मेरे पास ग-  
ये हुए मेरे मित्र वरसिंह बुंदेल को तुमने मार डाला ५ वह मेरे घर पर चढ़ कर  
आया तब मैंने मारा है ६ मूर्ख हरिसिंह के बिना

तोहु बुंदेल कटु भाखि हुव सन्नुतर ॥

जे न कुल सुद्ध इमं शरि बढिजावती ॥

तोहु गिनतेहि मम हानि प्रभु तावती ॥ १० ॥

देस मम लुट्टि वह आत मारन दल्यो,

चित्र तव ताहि कित जाइ हनिबो चलयो ॥

भूपअरजी सुं कछु साह मन्नी भली,

बैन कटु पात मरि जात समुझयो बली ॥ ११ ॥

पै ब इम नित्य दरकुंच चलि प्रातही,

अधिप करि मंत्र सब संभ अकुलातही ॥

कहिय बुन्दीस तुम छन्न इत कोप है,

एह तव सीस मम भार आरोप व्है ॥ १२ ॥

भीत होहु न तदपि इष्ट करिहै भली,

छोनि लहि धर्म विगराई जीवै छली ॥

धर्म रहि भूमि सब जात प्रानहु धरै,

मेटि जिहिं रक्खि भुवकोन जीवत मरै ॥ १३ ॥

पै ब पंजाबलग आँट कछु पारि हैं,

बिन्नति हु सर्व कर जोरि विसतारि हैं ॥

प्रेष्ठ करि मोहि मग रोहि पछिताइहैं,

होहु प्रभुकोहु सचिवत्व हम पाइहैं ॥ १४ ॥

जहव१ रु गोर२ बाघेल३ बडगुज्जर४न,

सोहि सम्मत कहाँ होहु कोऊ सरन ॥

भोज्य गुन जुत दग छुत्त हम नाँ भजै,

लांघि नदि सिंधु लहि मिच्छपन क्यों लजै ॥ १५ ॥

१ आप तक मरी ही हानि मानी जाती ॥ १० ॥ २ तब उसके मारने में क्या आशय है  
आ ॥ ११ ॥ ३ सन्ध्या समय ॥ १२ ॥ ४ भूमि लेकर ॥ १३ ॥ ५ मुझ को आगे कर  
के ६ मार्ग रोक कर ॥ १४ ॥ ७ यवनों के देखेहुए भोजन को भी हम नहीं खा-  
ते हैं तब अदक तदी लांघकर यवन होकर कैसे लजेंगे ॥ १५ ॥

हैं न बलवान तुमतुल्य लघुथान हम,  
 कर्म निजधर्म रहिजाइ करिये सु क्रम ॥  
 कुम्भ जयसिंह १ रटोर जसवंत २ क्रमि,  
 छमन किय अरज अपराध इक १ लेहु छमि ॥ १६ ॥  
 रंच हम धर्म नदि सिंधु लंघिन रहैं,  
 क्यों न तो नाम करि याहि अटकहु सदै ॥  
 धारि हित सिंधुतट वार रहि धर्ममैं,  
 मरन परजंत हम सज्ज प्रभुक्रममैं ॥ १७ ॥  
 होइ संदेह तो स्वामि परखो हमैं,  
 देहु तब दंड जब एहु मिथ्या जमैं ॥  
 कोपकरि साह सुनि एह पच्छी कही,  
 मोरसह गोन तजि कोन भजिहै मही ॥ १८ ॥  
 होत इम वत्त गय लंघि पंजाव हद,  
 नाम तिन्ह सुनहु प्रभुराम २० ३१४ जिम पंचनद ॥  
 जो सतद्रू १ सु सतलंज २ जिम जानिये,  
 जो विपासा २ सु व्यासा २ हु तिम जानिये ॥ १९ ॥  
 जिमजानिये १ तिमजानिये २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥  
 नाम ऐरावती ३ सोहि रावी ३ नदी,  
 चंद्रभागा ४ सु चिन्हाव ४ बहुर्यों बदी ॥  
 जो वितस्ता ५ सु भेलम ५ हु ए पंच ५ जहँ,  
 ते सबै लंघि जवनेस गय अगग तहँ ॥ २० ॥  
 वत्त तब मंत्रमय एह भूपन बदी,  
 नाव चढि साह जब सिंधु लंघैं नदी ॥  
 पार लहिहैं न तब वार रहिहैं परे,

१ समर्थों ने ॥ १६ ॥ यदि इस सिंधु नदी के उतरने की रोक नहीं है तो इस-  
 को २ अटक क्यों कहते हैं ॥ १७ ॥ ३ साथ जाना छोड़कर भूमि को कौन भोगेगा  
 ॥ १८ ॥ ४ नदियों के नाम हैं ॥ १९ ॥ २० ॥ ५ इस किनारे

अखिखहैं दास इत खास रच्छक खरे ॥ २१ ॥  
 केक माधव १९३१२ प्रमुख मंत्रबाहिर कटे,  
 बंधि पिसुनत्व उत बत्त रूपापन बडे ॥  
 दोह कछु जानि कछुमानि दिलीस हू,  
 रक्खि कछु प्रीति? कछु रीति किय रीस २२ ॥ २२ ॥  
 सिंधुतटवार कछुकाल रक्खे सिबिरे,  
 चलन तसपार दिय हुकम अब ठहै न चिर ॥  
 बुल्लि सुहि प्रात सबठाँ नकौबावली,  
 धारि अवधान अविलंबहित धारवली ॥ २३ ॥  
 भूमिपति सूर गदपूर तबही भयो,  
 पट्सुत पास देला बेग पहुँचन दयो ॥  
 कुमार तब सिक्ख लै दैन अपन कहिय,  
 लैनहो देस तिम तास सम्मत लहिय ॥ २४ ॥  
 तिहिँ कहिय इष्ट जैबो हि दठ तानिकै,  
 पुत्रपन हीन न दिखाइ जिम पानिकै ॥  
 कुमार मत एह लखि सर्व नृप कानिकै,  
 याहिकुल बिरुदबच साँनसित आनिकै ॥ २५ ॥  
 कहिय तुमकोहु जैबोहि सम्मत कुमार,  
 बहुरि तव बंस पहुँकेहि हुव धर्मपर ॥  
 कर्ण हम तोहि अब अगग पातैं करै,  
 एह अवलंब लहि धर्म करि उब्बरै ॥ २६ ॥  
 सौँह करि भूप इक १ होइ खुल्ले सबहि,  
 वाहि कहि हैं अखिल किति तुमरीहि कहि ॥  
 अप्प जै होइ करि जाहु यह नाम इत ,

॥ २१ ॥ २२ ॥ १ डेरे रछड़ीदारों की पंक्ति अभावधान होकर चित्तव नही करने के कारण  
 १ दीह ॥ २१ ॥ १ पत्रा ॥ २४ ॥ १ यश के वचन रूपी असाध पर तीक्ष्ण करके ॥ २५ ॥ २६ ॥

अप्प रहि भार हम वंदि करिहैं उचित ॥ २७ ॥  
 सोहि सुनि हड्ड १ कछवाह २ रठोर ३ सन,  
 करन हरिसौहैं करि सौहैं अप्पे करन ॥  
 हड्डवति १ देस सरुदेस २ हुंढाहर ३ हु,  
 कहिय हम पिठि तुम जाइ समुचित करहु ॥ २८ ॥  
 कर्ण तरुनत्वमद सोहि मत स्वीकरो,  
 कानि १ विसवास २ धर गोन घरही करयो ॥  
 सौर हुव धर्मधरि कर्णनृप सूरसुत,  
 अज्ज इत रक्खि सुनि बप्प दुख पत्त उत ॥ २९ ॥  
 भूप रहि सेस यह व्याज करते भये,  
 भारकछु पटकि सल अगग कछु भेजये ॥  
 साह लंघिय अटक माधवा १९३१ दिक सहित,  
 ओर नृप अगग न गये गिनैं ते अहित ॥ ३० ॥  
 स्याम १९४३ हिंडोलि ईस और जसवंत सुत १९२१,  
 अभय १९१३ हगिसिंह १९३३को पुत्र तीजो ३ हु उत ॥  
 छन्न कोटस सन एहि मिलि द्वेहि छदं,  
 माधव १९३२ हिं गुप्त लिखिदेत हुव पाप मद ॥ ३१ ॥  
 गैलविन्न तत्र तिन्हपत्र पकरेगये,  
 भीत हुवर् जानि भजि देस आवतभये ॥  
 कुमरपति भूपदिय पत्र तव एह कहि,  
 द्रोह करि दुष्ट आये हनो ए दुर्बहि ॥ ३२ ॥  
 देखि नृप पत्र भाऊ १९५१ कुमरकोप दवै,  
 स्याम १९३१ वह टुकड़ा जाइ होम्पौ सजव ॥  
 सो अभैसिंह १९४३ तवनो बच्यो काकसम,

॥२७॥ १ कर्णसिंह ने विष्णु की सोगन करत सवका वचन दिया और सबने  
 कर्णसिंह को वचन दिये ॥ २८ ॥ २ युवा अवस्था के मद में ॥ २६ ॥ ३ जूट  
 ॥ ३० ॥ ४ पत्र ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ५ अग्नि ॥

कुमर भगवंत १९५१३ मारयो सु पुनि कालक्रम ॥ ३३ ॥  
 लाइ उर स्त्राम १९३११ सुत रुक्म अंगद १९४११ लयो,  
 द्रंग हिंडोलि तस तंत्र रहिवेदयो ॥  
 जो कलावीस गढ साह इत जितिलिय,  
 कलहं जय सखि तँहँ माधव १९३१२हु किति लिय ॥ ३४ ॥  
 रीझि जवनेस कोटेस बल पिक्खिरन,  
 कुप्पि बुंदीसप्रति लुप्पि बचनादिकन ॥  
 परगनाँ मुख्य बाराँ १ मऊर छिन्निलिय,  
 द्वैरहि लखि माधव १९३१२ हिँ तत्थ सुलतान दिय ॥ ३५ ॥  
 साक गुन व्योम हय इंदु १७०३ विक्रम समय,  
 ग्राम इम ताम चउ इंदु सत १४०० छुट्टिगय ॥  
 भूप सुनि एह घर पत्र भेजतभयो,  
 देस जुग २ माधव १९३१२हिँ साह अपनौँ दयो ॥ ३६ ॥  
 सचिव सब लेह बुलवाइ निज नैर सुत,  
 देहु तजि द्वैरहि कांटेस बस जानि हुत ॥  
 कियसु आदेस अनुसार भाऊ १९५११ कुमर,  
 नैर दुवरठाम हुवसज्ज कोटेसनर ॥ ३७ ॥  
 अटक सूवाहि रहि साह चउ४ अब्द इत,  
 जो अभय देस करि सेस अरि दव्वि जित ॥  
 सप्त नभ अद्रि इक १७०७ अब्द मित होत सक,  
 आइ पच्छो सु जवनेस लंघ्यो अटक ॥ ३८ ॥  
 ताम नृप अज्ज हाजरि रहे वारतट,  
 पंथ नियराइ सब जाइ प्रनमै प्रकट ॥  
 राजगन पिठि सजि सेन निज निज रही,  
 कछुन नयराह तँहँ साह इनसौँ कही ॥ ३९ ॥

बादशाहका आर्घ्यराजाओंको ओलंभा] सप्तमराशि-सप्तममयुख(२६३१)

गेह इम स्वीय सुलतान दिल्ली गयो,  
भूपगन तत्य सह सत्य हाजरि भयो ॥  
कुपि तव साह दम दम्भ सबकै करे,  
इष्टविधि कोहु मिलि थान जिन्ह उब्बरे ॥ ४० ॥  
अत्य मतभेद प्रभु राम२०३४ बहु इकखये,  
गदत कति परगनाँ सबन कछु कछु गये ॥  
कतिक तिन्ह अधिक१सम२न्यून३गत भू२कहैं,  
रुप्पय हि खिलन कति कहत पहुँचे रहैं ॥ ४१ ॥  
होहु कछु खिलन गत भुम्भि जानैं न हम,  
कहत सब बुद्धि अनुकूल इकभूल क्रम ॥  
दे सबन सिक्ख जयसिंह१ढिग बुद्धि द्रुत,  
पूर रिस करि कहिय मानकुल तू प्रनुत ॥ ४२ ॥  
ज्ञान करि मान नदि सिंधु तरि क्यों गयो,  
भोन रहि अन्धुदय क्यों तवही भयो ॥  
बुद्धि जसवंत तिमही-उपालंभ बदि,  
निपट खिजि कहिय लंघी न तैं सिंधु नदि ॥ ४३ ॥  
कोहु लखि हेतु हम माफ ओगुन करघो,  
अधिक अपराध पर अल्प दम उद्धरघो ॥  
जो अबहु हानि कछु काम पर जानिहौं,  
तानिहो त्रास करि हो नतो कानिहौं ॥ ४४ ॥  
भूप बुंदीस सिर रीस २द्विगुनीभई,  
देस प्रति सिक्ख इम दंडि सबको दई ॥ ४५ ॥  
जोहि बढि गंग बीकानयर भूप जब,  
तनुज पहुँच्यो तदनु सूर हुव सांत तव ॥ ४६ ॥

१ दंडके रूपये ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ विशेष स्तुति योग्य ॥ ४२ ॥ ३ धन जन की बुद्धि  
॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४ छूरसिंह मरनया

भूमि तस लेत समवेत सब भूमिपति,  
 प्रनत हुव साह सचिवेस<sup>१</sup> सेनेस<sup>२</sup>प्रति ॥  
 ० सिद्धख हे दूर इम तेहु मंगि न सके,  
 बप्प गढ़े घार सुनि अप्प पुनि अकवके ॥ ४६ ॥  
 गेहु अब तेहु हमरेहि पठये गये,  
 भाग्यबस सांत तह तात तिनके भये ॥  
 देत तिन्ह दंड हमको सु बटिदीजिये ॥  
 करि अरज एह आसान उत कीजिये ॥ ४७ ॥  
 साह तब निठि तिनके कहै स्वीकरी,  
 अवनि सबकीहु तिनतैहि नहि उत्तरी ॥  
 कर्णसिर जोहु हित जतन सबनै करे,  
 पंचपु गुन तोहु दम दम्म दैनैपरे ॥ ४८ ॥  
 पै सु घरही रह्यो मिच्छभय पाइकै,  
 आवत न बैठि गद्दीहु अकुलाइकै ॥  
 सिद्धखकरि भूप आयै सदन सर्वही,  
 लेखबस व्याध दिल्लीहि माधव<sup>१</sup> १३१२लही ॥ ४९ ॥  
 अदि नभ सत्त ससि<sup>१</sup> ७०७ साक घर आइकै,  
 पिंड माधव<sup>१</sup> १३१२तज्यो अंत खिन पाइकै ॥  
 तास जेठे मुकुंडा<sup>१</sup> १४११भिर्धानी तनै,  
 बीर कांटेस बनि इक्क<sup>१</sup> किन्नौ अनै ॥ ५० ॥  
 कामबस नारि अबली सु मैनी<sup>१</sup> करी,  
 दूर करि लज्ज रति कज्ज मति आदरी ॥  
 सोहु विस्मै न प्रभु राम<sup>२</sup> ०३१४ कलिके समय,

१ बीकानेर खानसे करने पर सब राजा सामिल होकर अरजाऊ हुए २ पिता  
 का घोर रोग सुनकर ३ चक्रगये ॥ ४६ ॥ ४ नाज ॥ ४७ ॥ ५ दंड के रुपये ॥ ४८ ॥  
 ६ घर ॥ ४९ ॥ ७ कौटा के राव माधोसिंह ने शरीर छोड़ा ८ मुकुंद नामक ९  
 अन्ध (अतीति) ॥ ५० ॥ १० मैने (चांडाल विशेष) की स्त्री को



मिच्छपन नारिसन होत रत प्रेममय ॥ ५१ ॥

मिच्छकहँ अप्पि तनयाहु हैं मिच्छही,  
कोनकुल नीच तनया जु अपनै कही ॥

व्याहि तनयाहि संबंधि मिच्छन बनै,  
तत्थ किम धर्म मैनीन करि भौं तनै ॥ ५२ ॥

साह घर आत इत देस प्रायागसन,  
सोद करि कुमर दारा ४०।१ हु आयो मिलन ॥

भीम १९५।२ बुंदीस सुत तत्थ गतप्रान भो,  
हो जु दारा ४०।१ सु भटन्तास बपु हान भो ॥ ५३ ॥

अब्द सुनि व्याम हय इंदु १७०७ सक वत्त यह,  
राम हुव पोसवहि तीजइसबके असह ॥

सोहि बुन्दीहु दिन सत्त ७ पाछैं सुनी,  
वत्त सुनि अग्ग विसतारि चँविहैं चुनी ॥ ५४ ॥

या १७०७ हिसक साह लखुनीन सुत काला अहि,  
तीनइ दिम लाह करि नाह पठयो तवहि ॥

सोहु मधुगम २०३।४ क्रम १ नाम २ जुत लेहु सुनि,  
पात फल वण जिन्ह दप्प रुकि अप्प पुनि ॥ ५५ ॥

सुनुदजो २ सुजा ४०२ पुज ११ दिस प्रेसयो,  
देस अधिकार सब प्राच्य १ तासौं दयो ॥

पुल औरंग ४०।३ तीजो ३ सु दक्षिखन २ पती,  
सुकलयो अप्पि अधिकार दाहनमती ॥ ५६ ॥

देस प्रातीच्य ३ चोथे ४ सुराद ४०।४ दिं दयो,  
राजपति मुख १ दारा ४०।१ सुढिग रक्खवो ॥

अधिक बढि बुद्धि १ छल २ पाप औरंग ४०।३ के,  
जाइ आवाच्य २ दिम दक्षिखनिन जंगके ॥ ५७ ॥

द्वंग औरंगआवादः बहु दाम करि,  
निर्मयो तत्थ औरंग४०।३ निजनाम करि ॥  
देस तापीशरु गोदावरीर पूत दुवर,  
है दुहूर और तिन्ह बाच यह नैर हुव ॥५८॥  
॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

उत्तरः तापीर आहिं, दिसदक्खिनर गोदावरीर ॥  
मंडल जो इनमाहिं, खानदेस सो भाखियत ॥५९॥  
अग्नि कोन पुरर एह, दुर्ग दोलताबादतै ॥  
अति ढिग आढ्य अछेह, बहुरि सुनहु जैसैं बन्यौ ॥६०॥  
हुत लाहि जनक निदेस, साहकुमर औरंग४०।३सो ॥  
विरच्यो नगर सुवेस, उत औरंगाबाद इम ॥६१॥  
नृपको इत वह नाग, सिवप्रसाद मिलि विधि मर्यो ॥  
या गजमैं अनुगग, सबको हो साहन सहित ॥६२॥  
प्रतिमा तस महिपाल, पुर बुन्दी थप्पिय प्रथित ॥  
सो बाजार विसाल, नियत सिंह चैत्वर निचित ॥६३॥  
इत कहूँ समर उदंत, हुकम सता१९४।१को सखि हद ॥

भूप कुमर भगवंतः१९५।३, अभय१९४।३ हन्यौ हरिः१९३।३पुत्र वह ॥  
पीछैं सासन पाइ, अधिप कुमर भगवंतः१९५।३ यह ॥  
जय कर दक्खिन जाइ, रह्यो सुभट औरंग४०।३को ॥६५॥  
जगहि सता१९४।१ नृप जाइ, किय सहाय औरंग४०।३को ॥  
जन कति इमहु जनाइ, तत्थ रह्यो भगवंतः१९५।३ तव ॥६६॥  
आसि करि हनत मंडद, भुज पेठे तस नख उभयर ॥  
इम बहु गाम१ गइंदर, सता१९४।१ सुतहिं दिय साहसुत ॥६७॥  
दारा४०।१ हुकम दिवाइ, पहु सुत दूजोर भीम१९५।२ पुनि ॥

१ पवित्र ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ २ अग्नि कोण ३ धनवान् ॥ ६० ॥ ११ ॥ ४ हाथी ॥ ६२ ॥  
५ प्रसिद्ध ६ सिद्धचौक में बनी हुई है ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ७ खड्ग से  
सिंह को मारते समय ८ हाथी ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

छम बुलाइ हित छाड़, निज आश्रित रख्यो निपुन ॥६८॥  
 यह अति पुब उदंत, जब दारा४०१ निज जनकसौं ॥  
 लियउ प्रयाग लसंत, भीम१९५१२ रह्यो तब तास भट ॥६९॥  
 निहित रामगढ१ नाम पुनि सिंगावद२ परगनाँ ॥  
 ए उभय२हि अभिराम, दारा४०१ तँहि भीम१९५१२हिँ दयो७०  
 अटकपार सन एह, पुर जब आयो जवनपति ॥  
 दिल्लीतव तजिदेह, भीम१९५१२ कुमार सुरपुर भज्यो ॥७१॥  
 बच्यो याहिको बंस, औरनके बिनसे अखिल ॥  
 यह हहु६१न अवतंस, सह विस्तर इत सूचियत ॥७२॥  
 बंस रहे वय बाल, जिहिँ सुत कृष्ण१९६१२ प्रयाग१९६१२ जुग२  
 कर्यो अनुज२ सिसु काल, रन सप्रज अग्रज१२ रह्यो ॥७३॥  
 भीम१९५१२ मरन सुनि भौन, जिमकुमरानी चउ४ जरिय ॥  
 हाहा बुंदिय होन, कहियत सब अधिम कैरन ॥७४॥

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
 वसुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे अफगानिस्तानविजयशाहजहांप्रयागसमय  
 करतोयोल्लङ्घनार्थराजास्वीकरणा १, करतोयापरतटसहगामिमाध-  
 वसिंहार्थशाहजहांबुन्दीगज्याच्छिन्नवारांमऊप्रान्तप्रदान२, काबुल-  
 प्रयागतयवनेन्द्रस्य करतोयानुल्लङ्घकार्यराजदमन३, विक्रमनगराधि-  
 पसरजासिंहमरणो पट्टाधिकृतकर्णसिंहयवनेन्द्रदण्डसंप्रापणा ४, दि-  
 १ शोभायमान ॥ ५९ ॥ २ सुन्दर ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ३ सुकुट ॥ ७२ ॥ ४ संतान  
 सहित ॥ ७३ ॥ ५ अगले मयूख में कहते हैं ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
 शत्रुशाल के चरित्र में अफगानिस्तान विजय करने को शाहजहां के जाते स-  
 मय अटक नदी उल्लंघन करने को आर्य राजाओं का अस्वीकार करना ? को-  
 टा के अधीन माधवसिंह को अटक पार बादशाह के साथ जाने के कारण  
 शाहजहां का बुन्दी के राज्य से वारां और मऊ के परगने खालसे करके को-  
 टा के अधीन करना ? बादशाह का काबुल से पीछा आकर अटक नदी न-  
 हीं लांघनेवाले आर्य राजाओं को दंड देना ? बीकानेर के राजा सरजासिंह

ह्रीदङ्गकोटाप्रत्यागतमाधवसिंहतनुत्यजनः, शाहजहाँस्वात्मजपुत्रः  
 कृपुथक्प्रान्तवितरणा, राजपुत्रभीमसिंहमरणा सप्तमो मयूखः ॥१॥  
 आदित एकोनविंशत्युत्तरद्विशततमः ॥ २१९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

क्रिय विवाह भाऊ १९५११ कुमार, सब बास्ह १२ विधिसत्य ॥  
 तासचरित कहिहैं तिते, कृष्ण १९६१२ कुलाहु तिम तत्या ॥  
 अब प्रसंग संगत इहाँ, बरनत भीम १९५१२ विवाह ॥  
 कुमरानी खट ६ जिहिँ कुमार, रुचिर बर्ग विधिशह ॥२॥  
 भोजाउत बत्तभद्रकी, कनी अनोपकुमारि १९५१२ ॥  
 प्रथम १ नरायनपुर पगनि, निपुन चालुकी नारि ॥३॥  
 सेखाउत दूजी २ सुमत, अमाकुमरि १९५१२ अभिधान ॥  
 कन्हसुता व्याही कुमा, सुतदुवर जास सुजान ॥४॥  
 खीनाँपुर जुझारखाँ, बैल्लन चालुक बास ॥  
 कनी बडी १ देउलकुमारि १९५१३, तीजी ३ व्याहियतास ॥५॥  
 जिम सर मथुग जादवी, चौथी ४ बरिय विचारि ॥  
 सुता बहादुरकी सुपै, कथित अनोपकुमारि १९५१४ ॥६॥  
 दुबलानाँ चालुक दई, जिम राउत जगतेस ॥  
 कनी सोहु देउलकुमारि १९५१५, उपर्यम पंचम ५ एस ॥७॥  
 रामसुता रंभावती १९५१६, व्याहिय छेडे ६ व्याह ॥  
 कै १ मगताउति १६ही सुके १, राजाउति २ अम राह ॥८॥

का देहान्त होने पर कर्णामित्र का गद्दी बैठकर बादशाह से दंडित होना ४ च  
 हुवाण माधवसिंह का दिल्ली ने कोटे आकर शरीर छाँड़ना ५ बादशाह शाह  
 जहाँ का अपने पुत्रों को भिन्न भिन्न सूबे देना ६ राजा के पुत्र भीमसिंह के म  
 रने का सातवाँ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१६ मयूख हुए ॥  
 ॥ १ ॥ १ प्रसंग के साथ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ १ बालगोत सोलंखी ॥ ५ ॥ ३ कही हु  
 ई ॥ ६ ॥ ४ विवाह ॥ ७ ॥ ८ ॥

ऊढा ए खट६ भीम१९५२ इम, हित वय दुल्लह होइ ॥

भई पंच५ अप्रज भये, दूजीको सुत दोइ२ ॥ ९ ॥

दारा४०११ नैं यह तिन दिनन, साह कथन अनुसार ॥

नृपसों कहि रख्यो निकट, कोविंद भीम१९५२ कुमार १०१

॥ मनोहरम् ॥

सासनसों दारा४०११ जब पाइकैं प्रयाग सूवा,  
जायकछु हायन रख्यो सो तैंहँ जानिये ॥

सूवा निजमाँदिसों वहाँ रामगढ१ सिंगावाट२,  
परगनाँ देखी दये भीम१९५२हि प्रनानिये ॥

गंगातट दखिखन वहाँ प्रसंगम पै दारागंज,  
दारा४०११ जो बसायो देख्यो विदित बखानिये ॥

अटकतैं दिल्ली सुनि तात निज आयो दारा४०११,  
दिल्लीहू उहाँ भो भीम मृत्यु उर आनिये ॥ ११ ॥

॥ रुचिरा ॥

संवत समय नयन वसु सोलह१६८२ भीम१९५२ कुनर जनु  
लेत भयो ॥

अद्रि गगन सत्रह१७०७संवत इम दिल्ली तव तजि देह गयो ॥  
पोस १० असित २ तिथि तीज ३ समे पर भीम १९५२ परत

अति हानि भई ॥

दिन सप्तम७तासों दरुमी१०पर गढ बुंदिय यह बत गई ॥ १२ ॥  
कुमरानी छट्ठा६पहिलैं कछु मंदनिर्यति लहि रोग मरी ॥

पंच५दि खिल तिनमें चउ४पतनी जरन तैंदुपवन जाइ जरी ॥  
अमर कुमार १९५२ दूजी २ सेखाउति पोतक कृष्ण १९६१

प्रयाग १९६१ प्रसू ॥

अतिसाहस निऊय लागि पढ़हु उद्विग सह हुत करन असू ॥ ३१ ॥

विवाहिना ॥ १ ॥ २ चतुर ॥ १० ॥ ३ संगम पर ॥ ११ ॥ १२ ॥ ४ मंदभाग्य  
धार याग में ३ पाछक ७ प्राण होन करमे को ॥ १३ ॥

सो सत्वर निज स्वसुर सता१९४१के रोकत अति हठ निठि रही  
पुर कापरनि रची जिहिं बापिय मंजुल अबलग विदित मही ॥

कृष्ण १९६१२ बच्यो तनिबे प्रभुको कुल मिलि गेद सिमुहि प्र  
याग १९६१२ मर्यो ॥

प्रभुमत विनु अनुजात जु पंचम ५ भ्रात सु मुहुकम१९४५ लोभ  
भर्यो ॥ १४ ॥

पासहि रक्खि जनक दारा४०१२ पुनि दिस त्रय शंखिल सुत त्रय शिं दई  
तकि मुहुकम१९४५ पहिलैं दिल्ली तब लैन पटा दढ आस लई ॥

अग्रजके अनुमत विनु आवत सुनि पावत दिल्लीस मुही ॥

पिसुनै१कुपुत्र रजनाइ रु प्रत्युत गिनि अनुचित अपकिति गुंही१५  
साह ढिग सु बुल्ल्यो हु न सादर कछुक पटाहु न दैन कह्यो ॥

तब मुहुकम १९५५ प्राची १ पतिकों तकि रुठि सुजा ४०१२ ढिग  
जाइरह्यो ॥

पहु यह सुनत सता१९४१खिजि तापर लिखत दुघारिय छिन्न लई ॥  
लोभित इंद्रगढेसहु दिहिय दूजे२अनुजहु दिठि दई ॥ १६ ॥

अलप पटा दिष ताहि जवन इम भोगि अचिर तिहिं विरत भयो ॥

सुत गजसिंह१९५१हिं रक्खि तहाँसन लजि अप्पन गृह आइ लयो

उपआलंभ दयो नृप१अनुज२हिं किम विनु सासन भ्रमन करयो

अवनि१तथापि कितीक लही अरु धन२जस३पद हु कितोक धरयो१७

मूढ अनुज तब जिम हुव मुहुकम१९४५तूहु लुभाइ न होहु तथा ॥

सह जस१लाभ२चढहु आदरसन पिक्खहु निज कुल धर्म प्रथा ॥

मान बढाइ मिलैं विनुमंगिय१मंगिय२सो न घटाइ मिलैं ॥

जे जग जनम न उच्च बढैं जिन्ह खंडन जस हिय सुमन खिलैं १८

१ शीघ्र २ रोग ३ छोटा भाई ॥ १४ ॥ ४ बड़े भाई की सलाह बिना ५ चुगल  
खोर ६ उल्टा ७ अपकीर्ति गुथी ॥ १५ ॥ १६ ॥ ८ विरक्त ९ ओलंभा ॥ १७ ॥  
१० खाटवां (सम्पादन) ११ दृढ रूपी पुष्प ॥ १८ ॥

\*वासवसंल्ल१९४।२हिं समुभाइ रु पुव्व जथा पय लाइ लयो ॥  
 सुजा४०।२मिलि इत मुहुकम१९४।५कँहँ देय पटा कछु कट्टिदयो  
 रहिलैं ताजमहल इतँ अतिप्रिय मंजु जवनपति हुरम मरी ॥  
 ।हजिहान३९।२अतुल दुख सोचि रुधी जग जसतसरहन धरी १६  
 अकबरपुर जमुनातट वाकँहँ देस उचित दफनाइ दई ॥  
 कोटिन दम्म खरच तापर करि ललित मुकविरा कित्तिलई ॥  
 उपल विविध अतिअर्घ चिराइ रु जिहिं आलय सब जेहि जरे ॥  
 पसु१फल२फूल३छाता४दुम५पच्छिय६इम सब उपलन कोरि करे २०  
 पटुनम चित्र करहु गैजरदपर रुचिर कमलकरि चित्र रचै,  
 तदपि न नैक धरे छवि तिनकी मन जिन्ह कँतपन चित्र मचै ॥  
 इक१इक१अल्प कुसुमत्रिच अद्भुत सत्तरि७० सकल जैराव सज्यो  
 नखहु घिस्यो जिनपँ अटकै नहिं तिम इक१बनितिन भेद तज्यो ॥२१॥  
 मंडप तस खट रस ससि१६६कर मित उच्छ्रित मनहु अकास अरै  
 व्यासहु तास छ वेद४६ करन बनि प्रतिदिस जास प्रकास परै ॥

॥

वेगमकबर रुचिर ताके विच बहुधन उपलन जटित बनी ॥२२॥  
 चउ४ कोनन मोनार वनै चउ४ उच्छ्रित अंतर मग्न अहो ॥  
 जर्ता खिन प्रभु मैहु चढ्यो जँहँ क्यौ न टिक्यो हटतैहु कहो ॥  
 आयत चउ४ द्वारनपर आयत वर्ण जवनलिपि जटित वनै ॥  
 बहु जलजंत्र१कुसुमवाटों२वर खचित वितैदि१प्रैनाल२खनै ॥२३॥  
 श्रमित जनन सबकतु जँहँ प्रविसत माधव१ऋतु सरबस्व मिलै,  
 अलि१खग२गन गुंजन१कूजन२इत खिनखिन जित तित कुसुम३खिलै

अइन्द्रयाल ॥ १६ ॥ पापाण विदु मृत्यु १ पत्यरों को २ खोदकर ॥ २० ॥ ३ हाथी  
 दांत पर ४ सत्यपन में आश्रय होता है ५ जड़ाव ॥ २१ ॥ ६ ऊंचा ७ विस्तार  
 ॥ २२ ॥ अन्यकर्ता कहता है कि दलीप यात्रा के समय में भी उस पर चढ़ा था  
 ९ चौड़े १० फारसी के बड़े अक्षरों में ११ चतुर्थे बने हुए हैं १२ नाखिलें खुदी  
 हुई हैं ॥ २३ ॥ १३ वसंत ऋतु

महकि सुगंध१ मंदर हिम मारुत हिय१ संगहि श्रम२ सबन हौ॥  
जासन रुचिर अंगार अखिल जग प्रथित न ओरहु जानिपै॥२४॥  
सत्रह१७लख त्रि३कोटि३१७०००००० लगे सब रूपय जिहि  
सिर लिखितरहै ॥

जिहिं सिल्पी सु रच्यो तस फल जहँ कट्टिय करतस साह कहै॥  
तैसो अदय हुतो हाहा तब गीदर सुत औरंग४०।३ गह्यो ॥  
जो बितथहि तो सोहु अदय जिहिं बितथ कथन श्रम विफल  
बह्यो ॥ २५ ॥

असौ हुरममुकबिरां अद्वय२ ललित विरचि जस साह लयो ॥  
जाकहँ ताज हुरम रोजा जग भनत इमसु तिहिं काल भयो ॥  
इत बुन्दी१ पट्टनि२ दुव२पुर इम रुचिर सता१९४।१ प्रासाद रवे  
अद्वय एहु उभय२सम अधिपन आयत१ उच्छ्रित२ जटित२ जचे  
प्रभुपद छत्रमहल१ बुन्दीपुर जटित सितोपल तुंग जथा ॥  
गंजत जो पारद सित रुचिगुन परिचित सारद जलद प्रथा ॥  
सब गुन१ उच्च२पृथुल३दृढ४ जासम सौध द्वितीय२न जात सुन्यो  
सूत्र१ दिसा२ साधित जो सिल्पिन चतुरन चित्र विचित्र चुन्यो ॥२७॥  
याकै सिर हाटकमय उत्तम दिव्य जटित मनि छत्र१ दयो ॥  
पाद सुबुद्ध१९७।१ समय कोटापति गंजि सबन लौ भीम१९५।१गयो  
यह रचि छत्रमहल१ बुन्दी इम पट्टनिपुर प्रासाद२ प्रथा ॥  
सबसन तुंग चढाइ रच्यो सुभ जग इक१हिम गिरि सिखर जथा २८  
चन्मलि वामतट सु जाके चय पंच५ निवर्तन पीठ परयो ॥

१ मकान ॥ २४ ॥ जिस कारीगर ने उसको बनाया था उसके हाथ कटवाडाके  
तभी उसके पुत्र औरंगजेब ने उस गीदड़ को कैद किया २ जो यह बात मूठ  
है तो वह निर्दय है कि जिसने यह झूठ कहने का वृथा श्रम किया है ॥२५॥ ३ जो  
छे और जंचे ॥ २६ ॥ ४ श्वेत पत्थर का जड़ा हुआ जो ५ पारे की श्वेत क्रांति के  
गुणको दवाता है और शरद ऋतु के बादल का परिचय कराता है १  
महल ॥ २७ ॥ ७ स्वर्ण का ॥ २८ ॥ ८ समूह ९ बीस मांस का एक



बुंदी के केशव भगवान् के मंदिर का वर्णन | सप्तमराशि-अष्टममयूख (१६४१)

जिंहिं \* उच्छ्रय बाहिर वह जा सन धरनि समाहित द्विशुन धरयो ॥  
इक सत १०० कर चम्मेलि हृद अंतर गाढ निचित छिति मग्न गयो  
‡ पीठक मध्य विभाग महा पृथु ठाम बिहित प्रासाद ठयो ॥ २९ ॥  
सब भुवके दुवस बिध प्रासादन उच्छ्रित हुव प्रासाद वहै ॥  
जोजन चउ ४ दूरहु जो मनुजन रम्य सविध सम दिष्टि रहै ॥  
सुवरन छल १ कलसर दुवसो भित बहु धन उपलं विचित्र वन्यो ।  
प्रभु केसव जामैं पधराये तँहँ व्यय सह मह अतुल तन्यो ॥ ३० ॥  
पट्टनि तलैं जितोक परनां सो सब तत्थ लगाइ सदा ॥  
राज्य प्रताप अधिक तँहँ रक्खिय उदित बिभव सब राज्य सदा ॥  
तँहँ भेरी बादन १ प्रतिजाम २ रु रंजन गायन २ मिथुन २ रहैं ॥  
घटिका जंत्र ३ घटी १ प्रतिघोसक ४ जकुट लकुट प्रतिहार  
५ लहैं ॥ ३१ ॥  
समय समय सेवन बहु सेवक ६ तखत ७ रु चामर ७ छत्र ८ तर्ती ॥  
प्रभु अवसर बाहिर पधरावैं सह गज १० सादिय पंचसती ५०० ॥ ११ ॥  
भूखन १२ ससन १३ बसन १४ नवनव भांति समय समय मह  
१५ बहुल बहैं ॥  
केसव कोसैं बचैं सु रहैं वसु १६ चित वसु बलि जुहि भेट चहैं ॥ ३२ ॥  
मंदिर विघन बिनासक जन १८ सुख मासिक सैं दिय तिन्हहु मही  
राजबिभव प्रभु के इम रक्खि रु आयउ पुर अरि अनिलैं अही  
बुंदी तँहु रहत खिल वासर च्यारि ४ घरी हय डाक चढयो ॥

निवर्तन होता है ऐसे पांच निवर्तन अर्थात् सौ १०० वांसी का जिसका  
पीठा (चबूतरा) है, बाहिर \* ऊंचा है उससे दुगुनी भूमि है नींव (बुनियाद)  
‡ उस पीठे (चबूतरे) के मध्यभाग में बड़ा मोटा ॥ २९ ॥ १ ऊंचा २ पत्थर  
॥ ३० ॥ ३ आधीन ४ नौवत का वजना ५ प्रहर प्रहर प्रति ६ जोड़ा अर्थात्  
दो द्वारपाल ७ छड़ी लिये रहते हैं ॥ ३१ ॥ ८ पंक्ति ९ नैवेद्य वा पद  
१० नदीन नदीन भांति के ११ खजाने में ॥ ३२ ॥ १२ शबुओं रूपी पवन क

संध्या पट्टनि सद्धि सिधारत विघ्नन पारतभक्ति बढयो ॥ ३३ ॥  
 इम प्रासाद उभय२रचि अद्भुत लोभी नृप जसलुट्टिलयो ॥  
 इकदिन सब \*संसद लहि अवसर भाऊ १९५१ प्रति इम भनतभयो ॥  
 पलित धरत अब हम रन प्राधुन मह अहं चाहत नियति अजा ॥  
 तूहु तरुन सुत १ सिसु मरिगो तब प्रभु इम दैहैं बहुरि प्रजा ॥ ३४ ॥  
 त्योंहु नियतिप्रतिकूल मिलैं तहैं भीम १९५१ तनय लहि अंक भलैं  
 व्याहन सिसु गंगा १९५१ तव बहिनी फल यह जो नहिं हमहिं फलैं ॥  
 बिकखहु तो जव जाँमि उचित वय करि महतो यह देहु कुलैं ॥  
 अनुजा लाडकुमरि १९५१ न बची इम तस भर तव सिर नाहिं तुलैं ॥  
 भाऊ १९५१ कुमर प्रनत सुनि भाखिय प्रभु मतमैं नहि भेदपरैं ॥  
 अधिप सता १९४१ सकुटुंब कलि ४ हु इम कृत १ जुग बुंदिय  
 बिलासि करैं ॥

ग्राम अयुत १०००० लगते बुंदीगढ जहैं सत चउदह १४०० जवन लये ॥  
 कौतुक १ रीभरहगाम शतदपि क्रम दिनदिन नृप धन अधिक दये ३६  
 इत औरंग ४०१ बसाइ नगर वह कछु बढि दक्खिन अमल कखो ॥  
 भागनगर १ बीजापुर २ भटगन रोकि बढन रन अहु अरयो ॥  
 साहजिहान ३ १ २ जिती भुव सद्धिय यह जब तासहु अगग चलयो ॥  
 बेगहि तब दक्खिन २ ३ दल बीरन दिल्लिय दल हुत आइ दलयो ॥ ३७ ॥  
 इत अतिवीर सितारा ३ के अरि पच्छिम ३ १ सन मरहट्ट परे ॥  
 जितहि बढे तित आइजुरे जिन कन कन प्रतिभट मुगल करे ॥  
 सोम जितीक लई निज दब्बि सु लहि अब अधिकहु लैनलगे ॥  
 तोपप्रमुख उपहार सबै तनि गढ गढ निज सजि गैने लगे ॥ ३८ ॥  
 पीनेवाला सर्प ॥ ३३ ॥ \* सभा में † श्वेत चालों को धारण करनेवाले ‡ यु-  
 ङ के पाहुने ? प्रतिदिन २ भाग्य की ३ अनुत्पत्ति (मोक्ष) चाहते हैं अर्थात् प्र-  
 तिदिन यही चाहते हैं कि हमारी मोक्ष होवे ४ संतान ॥ ३४ ॥ ५ और जो  
 भाग्य विपरीत मिले तो ६ भीमसिंह के पुत्र को गोद ७ शीघ्र ८ बहिनी  
 ॥ ३९ ॥ कलियुग में इसप्रकार ९ सत्य युग करता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १० तोप  
 आदि ११ आकाश में लगे यह अत्यंत उद्धत के लिये कहायत है ॥ ३८ ॥

शत्रुशालकाबुन्दीमेंसबकोमनवांछितदेना]सप्तमराशि-अष्टममयूख(२६४१)

भाननगर१ पूर्व१ भयकारक बीजापुर२ जम ओर२ बली ॥  
 पच्छिम३ असह सिता३ पत्तन चउ४दिस तीन३न तेग चली ॥  
 बढत बढयो ओरंग४०।३ सु पै अब घटत अंतंत्र सिखाइ घनों ॥  
 गंठिहुके जु गुमाइछुक्यो गढ पाइ न हाइ प्रबीरपनों ॥३९॥  
 तबहि सिटाइ दयो दल तातहि भूमिवढात विपत्ति भिरी ॥  
 बुंदीभूप पठावहु तो बलि फैलतपावहु आन फिरी ॥  
 वह दुर्मन भुव तस लौ अप्पहु कोटापतिवस जदहि करी ॥  
 अप्पनअर्थ सदा यह साधत धी तस अप्पन कानि धरी ॥४०॥  
 सो करि तुष्ट सता१९४।१ नृप संभर प्रभु इत भेजहु भीर परी ॥  
 पत्र सु बंछि बुलाइ सता१९४।१ पुनि कुछ जवनेसहु प्रीति करी ॥  
 नाम गजादि गनेसकरी१ जिन तुरग२ विदित रहबाद तथा ॥  
 वस्त्र३ रु भूखन४ सरत्र५ सबै बर जे दिय दुर्लभ उचित जथा ॥  
 तदपि महीं न दई रंचहुं तिम कथन१ मुगल सह किति२कह्यो ॥  
 अबकी बेर सता१९४।१ जय आनहु लघु तव जानहु देस लह्यो ॥  
 इम कहि सिक्ख दई तब अधिपहु लौ बल बुंदिय सिक्ख लई ॥  
 जनपद आइ संजे रन जोधून भिरन प्रबोधन रीक भई ॥४१॥  
 बंछि अयुत१००००रूपपयतैंहँविप्र१न लहि खिन कवि२जन बुल्लिलये  
 तिनहित इकसत तीस१३०तुरंग१रु दम्म२सहँस चउबीस२४०००दये  
 सतत्रय३ ००बाजि१ रु दम्म२ सहँस सुर३३००० जो धन जोध३न  
 अप्पि जथा ॥

दु अयुत २००००दम्म सचिव मुख दास४न पननारि५न वसुस-  
 हँस ८००० मँथा ॥४३॥

छसहँस६००० दम्म गायक६न दिय छँम इतर७न पंचक५ सहँ-

१ दक्षिण दिशा २स्वतंत्रता घटने पर बहुत सिटाया ॥ ३९ ॥ ३ पिता को पत्र  
 लिखा ॥ ४० ॥ ४गणेशमज ॥ ४१ ॥ ५ शीघ्र ६ सेना ७ देश में ॥४२॥ ८ समय  
 पाकर. सचिव ६ आदि सेवकों को १० वेश्याओं को ११ प्रसिद्ध ॥ ४३ ॥ १२  
 उस समर्थ ने

हंस ५००० अहो ॥

बरख्यो धन सावनधनके विधि निर्धन रंकहु लखन नहो॥  
 इम करि रीझ प्रबिसि प्रभु आलय पीतंबर १ पय प्रनत पश्यो॥  
 पूजन ठानि प्रसाद लह्यो पुनि धी कुलदेविय २ दरस धरयो ॥४४॥  
 आसापूरनि २ पूजि उमा वह जासहु पाइ प्रसाद जहाँ ॥  
 लाये कृष्ण १९६१ कुमार ललाटहिँ स्व अलिक अछतति-  
 लकर तहाँ ॥

सोहि सबन तब पट्टकुमर सुवै पट्टकुमर यह समुक्तिपरी ॥  
 भाऊ १६५१ कुमार सुहाँ मन भाइ रु भुव तस सिर निज पण्य धरी ४५  
 यह लखि होइ प्रसन्न सता १९४१ इम अधर महल नमि इष्ट उभे  
 दक्खिन २१३ चढन विचारिय दुद्धर दूर करन आरंग ४०१३ दुँ २ भे ॥  
 सक नवनभ सत्रह १७०९ विक्रम सम ईन १ सित १ माधव २ तीज ३ अखै  
 परसुधरन जिहिँ दिन अवतारि प्रभु खिजि किय छत्रन बंस सखै ॥  
 जाहिदिवस चंडासि जनमि जब वानतनय जुग २ काल बन्यो ॥  
 जाहिदिवस समरेस १८११७ कुमार जब तिम लहि बुंदिय सुजस तन्यो  
 जाहिदिवस ताके सुत जैत्र १८२१३ हु कोटा निवसन सिद्धि करी ॥  
 जाहिदिवस यह ग्रंथ रचन जिम धी कवि इहिँ आरंभ धरी ॥४७॥  
 जाहिदिवस नरनाह सता १९४१ जव कुंच सु दक्खिन २१३ ओर करयो  
 पट्टकुमर भाऊ १९५१ ढिग नयपट्ट धीर चतुष्क ४ कहैं सु धरयो ॥  
 वासवसल्ल १९४१२१ अनुज धरि बुंदिय तिम रुकमंगद १९५  
 १२ स्याम १९४१ तनै ॥

॥ ४४ ॥ १ ललाट में २ पाटवी कुंवर का पुत्र ॥ ४५ ॥ ३ नीचे के मह-  
 ल में ४ दोनों भय अर्थात् भूमि जाने का और हारने की लज्जा का ५ राजा  
 १ वैशाख सुदी तीज अर्थात् अक्षय तृतीया के दिन, जिस दिन परशुराम ने  
 अवतार लेकर ७ क्षत्रियों के वंश को क्षय सहित किया था ॥ ४६ ॥ ८ च-  
 हुवाण ९ कुमार समरसिंह ने १० जिस दिन कवि सूर्यमल्ल ने इस ग्रंथ (वंश-  
 भास्कर) की रचने की बुद्धि की ॥ ४७ ॥ ११ शीघ्रता से

शत्रुशालका औरंगजेबके पास जाना ] सप्तमराशि-अष्टममयुख(२३४५)

मुकल १८४१४वंस अनुज माधव १९३१२को आसकरन १९३१३  
तिम प्रहत अनै ॥ ४८ ॥

केसव १९२१२ कुल सुखसिंह १९४१४ उचित कहि धुर भट  
ए चउ४ गेह धरे ॥

सूचित दिन संतत नृप संक्रमि क्रम सम दक्खिन २३कुंच करे ॥  
व्यूह १ विधान सरनि ध्वजिनी बहि रत्ति सु सिबिर २ विधान रही  
पहुँच्यो इम औरंग नगर पहु गढगढ सत्रुन भीति गही ॥ ४९ ॥

आइ सुमुख लैजाइ मुदित अति साह कुमर जयलाह सज्यो ॥  
जिम नृप कहिय तिमहि हित जानि रूतकि नयपुब्ब प्रमाद तज्यो ॥

भागनगर १ बीजापुर भूपन दुव २ दिस नृप इम पत्र दये ॥

तुम १ हम २ वचन हुतो सु अविदित न लिखि जुहि इज्जत १  
ज्यान २ लये ॥ ५० ॥

वयमद करि औरंग ४०१३उतैं बढि लुब्ध कुमग्ग अनर्थ लह्यो ॥  
गढ गंजे चिरकेहु गुमावत बालिसपन हठ विफल बह्यो ॥

तुम अब पुब्बहि सीम रह्यो तिम हद पर जानहु हमहु हटे ॥

क्यो इत १ उत २ सुभटन विफलहि कलि करि अनुचित सब  
लखहि कटे ॥ ५१ ॥

दुव २ जवनेस लखि सु इतको दल भूपति प्रति इम लखत भये ॥  
न हमहि दोस सता १९४१२ नृप नैकहु दिस त्रय ३ बढि पय सुगल दये

पूरव १ तिम दक्खिन २ अरु पच्छिम ३ ग्रामहि इक दुव नाहिं ग्रहे ॥

गढ पहिलो दव्वे अपनै गिनि चित्त अधिक हमरेहु चहे ॥ ५२ ॥

इत इक १ अज १ जवन २ दुव २ हम इत दिल्ली प्रति त्रय ३ इक १ दिपै

वचन मिलि सु हम त्रिकै ३ हि निबाहत लेस न जिम कहूँ भेद लिपै

२ अनीति को १ मिटानेवाला ॥ ४८ ॥ ३ व्यूह की रचना से ४ मार्ग में ५ सेना  
चलकर ६ रात्री में डेरा रचकर रहा ॥ ४९ ॥ ७ अप्रसिद्ध ॥ ५० ॥ ८ मुखपन  
९ युद्ध करके ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ १० सोभावमान ११ तीनों

रैन१९२।१नृपति आसान जु सुमिरत तुमसन नन मन हितहिं तजै  
 हम२सह सपथ मिले मरहठ१न भुवहित त्रिक३एक१त्व भजै ॥५३॥  
 हम१तुम२मेल सुनै मरहठ३हु तो छल रिपु इम हमहिं तकै ॥  
 दिष्ट सफल समुदित तिनके दिन समुक्ति सु भिन्नहुं नरहिसकै ॥  
 तकि दिल्ली अरिपन हम तीन३न प्रथितन भेदहु जानिपरयो ॥  
 किम तुम१ हम२हिं तुम१हिं हम२ हित करि कलि तनि बच  
 न निबाह करयो ॥ ५४ ॥

मरहठहु अपनै सुनि मेलहि ततखिन हमसन मेल तजै ॥  
 यातै करि गढगढ रन इक३इक१तोहु इम न हम उतहु लजै ॥  
 साहहु ठानि कुमरपन सपथ रु कलि हम अखिल सहाय करे ॥  
 सिसु१बेगम२अपनै हम आश्रय धुव दोलत आवाद धरे ॥५५॥  
 दैन हमहिं कहतो बटि देसहि जे१हम२एस१हि साहजहाँ३१।३।२  
 कित दैबो सुने गिनि उपकार२हु तक्तत ए१अरि हम२हिं तहाँ ॥  
 साह१ कपट सपथन विसवासन इम ओरंग४०।३॥हु तसहि तनै ॥  
 रक्खि सरन हम जिहिं असुं रक्खिय अरि गिनि चहत सुहनन अने  
 अगग पितर हमरे रन आलुल कहत रैन१९२।१जु कोल करयो  
 तुम सह रन टरिवो दहता बिच धुवकव इतर२न टरन धरयो ॥  
 यातै तुम निज दल करि गढ इक१ कै दुव२लहि जय भिन्न करो  
 गंजे हम सिर सँटि जिते गढ धक जितने सब लैन धरो ॥५७॥  
 इत१ मरहठ२ गिनै तुमको अरि रीति सु तुम१ उत२ गिनतरहो ॥  
 तुम विसवास प्रमत्त रहै तँहँ चितहु हमहिं न हनन चहो ॥  
 साहकुमर न तजै जो साहस तुम१ हम२ बचि खिल लरहिं ततो ॥  
 देहु न दोस दलतखिल पर दल निजनिज पन मन मिटहिं नतो ॥४८॥  
 महिपति अप्प तृतीय३ कुमारहु हमहिं लखत भगवंत१९५।३हनै ॥

१ सौगंद ॥ ५३ ॥ २ भाग्य के फल से उनके दिनका उदय है ॥ ५४ ॥ ३ युद्ध  
 में ॥ ५५ ॥ ४ प्राण ५ युद्ध को मथनेवाले ॥ ५६ ॥ ६ मस्तक के बदले में ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

। शत्रुशालसेदक्षिणकेराजाओंकावर्तलाप]सप्तमराशि-अष्टममगूख (२६४७)

कै१ जानै न जुदो तुमसन कै१ बैरिय बैरिय गिनि सु बनै ॥  
मह दल बंचि दयो नृप उत्तर भावित सब तुम उचित भनी ॥  
हैं सुत समुझाइ सुतो दृढ अब टरि टारहिं अप्प अनी ॥ ५९ ॥  
पै मम चक्र जुदो करि पानिप लारि कछु जो कछु दुर्ग लहैं ॥

य दिखाइ मरन१ मारन२ बिनु रन मरि१ मारि२न बचन रहैं ॥  
उचित हमहिं लारिबो संगहि इम इक्खत निजनिज टरहिं अनी ॥  
जुरि हम१तुम२इतरनसन जुझहिं धर जित लारि मरि देहु धनी ६०  
तिम दोलत आबाद लयो तव गढ जन सबकछु कहि गली ॥  
अप्प बचाइ निकासे ते अब अधिकहिं इच्छत भूप भली ॥

मूढ दु२दिस यह मति हुव गढगढ बिचबिच मारन१मरन२बुरी ॥  
भूपहु सुत उद्धत भगवंत१९५॥३हिं दृढ करि बोधिय बतदु२री ॥ ६१ ॥  
इम चउ पंच दिवस रहि अधिपहु कुमर बिजन लहि मंत्र करयो ॥  
ओरंग४०॥३हु लखि नृप आलंबन क्रमकरि सब तस तंत्र करयो ॥

मंत्रकरयो१ तंत्रकरयो२ अन्त्यानुप्रासः ॥

दक्खिन२॥३ देस सुदित१ अरु दुर्मन२ भूपहिं इम सुनि भीर भयो ॥  
आहव साज निचय साजि अवसर लहि जिमतिम अवधान लयो ६२  
॥ दोहा ॥

सता१९४१ सिविर रजनीसमय, आयो तँहँ अवरंग ४०॥३ ॥

अक्खिय अब दादा उचित, जानि जितावहु जंग ॥ ६३ ॥

कहिय भूप जइताहि किय, हृद लंघत तुम हाइ ॥

रेखां कुट्टत कोन रस, जँहँ पन्नग भजिजाइ ॥ ६४ ॥

तदपि अज सुलतानको, पुहवी अतुल प्रताप ॥

जथा सकति हमरे जतन, अरि गन गंजहु आप ॥ ६५ ॥

१ पत्र बांचकर २ यह प्राप्त वार्ता तुमने उचित ही कही है ॥ ५९ ॥ ३ मेरी सेना  
४ पराक्रम करके ॥ ६० ॥ ५ छिपी हुई वार्ता को जनाई ॥ ६१ ॥ ६ एकान्त में  
लेकर ७ युद्ध के साज ८ समुच्चय ९ सावधान ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ १० सर्प निकल गये  
पीछे लकीर कूदने से क्या लाभ है ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

सिंविरसमागम हेतु मन, उपदा गज१ हय२ आदि ॥

माहिँमाहिँ लिय दिय मिलत, सह हित मह संबादि ॥ ६६ ॥

इम दक्खिन२३ जातहि अधिप, जुग२ दिस आसय जानि ॥

सज्जे रन उपहार सब, पर दल प्रसंभ प्रमानि ॥ ६७ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
वसुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे अकवरपुस्ताजगञ्जनिर्माणातद्रचनावर्णन  
१, बुन्दीपुरच्छत्रप्रासादपट्टनमहलमन्दिरनिर्माणाभरण२, औरंगजेव  
दलागमनेन साहजहांनिदेशात्ससैन्यशत्रुशाल्यस्य दक्षिणस्यामौरंग  
जेवान्तिकगमनवर्णनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥

आदितो विंशाधिकद्विशततमो मयूखः ॥ २२० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सज्जे दल संभर सता१९४१, बज्जे सूचक बंब ॥

भरै१ छज्जे भज्जे अभरै३, लज्जे अलस३ बिलंब ॥ १ ॥

सिलह१ सख्ख२ भूखन३ बसन४, गज५ हय६रुप्पय७ग्राम ॥

बल इत१उत२ हुँत बंटियत, आदर गुन अभिशम ॥ २ ॥

भहनावत सानन भगत, हेति मनहुँ तपहेलि ॥

मन गहिलीधँट भट सुदित, किधौ सबय सिमु केलि ॥ ३ ॥

१ नजराना १ उत्साह के वचन कहकर ॥ ६६ ॥ ३ हठ.

शत्रुशाल के चरित्र में आगरे में ताजगंज के बनने की कथा और उसकी र-  
चना का वर्णन १ बुन्दी में छत्र महल और पाटण के महल मंदिर बनने का  
वर्णन २ औरंगजेव के पत्र भेजने पर बादशाह शाहजहां की आज्ञानुसार बु-  
न्दी के राव शत्रुशाल का सेना सहित दक्षिण में औरंगजेव के पास जाने के  
वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बीस १२०  
मयूख हुए ॥

४ युद्ध की सूचना के नगारे बजे ५ भड़ (वीर) शोभायमान हुए ६ कायर भा-  
गे और देरी करनेवाले आलसी लजे ॥ १ ॥ ७ शीघ्र ८ सुन्दर ॥ २ ॥ ९ मानों  
श्रीराम के सूर्य के समान शस्त्र चमकते हैं १० पागल स्त्री के कलश के समान



जब डारी अवरंग ४०।३ जुरि, अदिन मत्थै अग्नि ॥  
 सो व सिलग्गी सोरसम, जोर बिलग्गी जग्नि ॥ ४ ॥  
 ध्रुव जिततित टामंक ध्वनि, हुव इत १ हित अनुहार ॥  
 हेवर १ नर २ छाये हुलसि, पक्खर १ कवच २ प्रसार ॥ ५ ॥  
 जोरी बैलन बहु जकुट २, चोरी गैलन चाल ॥  
 नाली कति हंकिय निहुर, काली तति जिम काल ॥ ६ ॥  
 ॥ अन्त्यानुप्रासिनीशेला ॥

भूप सता १६४।१ अवरंग ४०।३ भीर सज्जे दल संगर,  
 वज्जे भेरिन असह ब्रात धमकात धरा १ धर २ ॥  
 पिढि गजन केतन प्रलंब उडि छायो अंवर ॥  
 बुल्लि नकीवन क्रम विसेल संक्रम किय सत्वर ॥ ७ ॥  
 सिव १ आदिक कुतुकी समाज सब न्याति समोसर,  
 सावन छल्लो सरित सेन दिपि हल्लो दुहर ॥  
 उद्धत बल अचत अमान लंबे अय लंगर,  
 पय अँडे डारत पयान वैँडे गज विथर ॥ ८ ॥  
 मँदढरनाँ सरनाँ मनोँकि भरनाँ गिरि भंगर,  
 भद्रक १ मँद्रक २ मृग ३ अभिन्न ४ कुल १ खेत २ प्रथा कर ॥

॥ ३ ॥ ४ ॥ १ नकारों के शब्द २ सदृश ३ बोड़े ॥ ५ ॥ ४ जोड़ा ५ तोपें ६ देवी  
 की पंक्ति ॥ ६ ॥ शवशाल ने औरंगजेब की सहाय के लिये ७ युद्ध पर सेना  
 सभी वहाँ नहीं सहने योग्य पर्वतों को धुजानेवाले नौचतों के ८ समूह वजे  
 और हाथियों की पीठ पर १० लंबी १ ध्वजाओं ने उड़कर ११ आकाश को  
 ढकदिया १२ शीघ्र चले ॥ ७ ॥ उस समय शिव आदि तमाशा देखनेवालों के  
 १३ समाज (समूह) को निजता दिया और सावण मास की छल्लती हुई नदी के  
 समान कठिनाई से धर्मणा की जावे ऐसी सेना शोभायमान होकर चली. उद्धत  
 चलवाले (नहीं माननेवाले) १४ हाथी लोहे के अतोल लंबे लंगर खींचने लगे  
 और वे मस्त हाथी घमंड के पैँड देकर विस्तार से चले ॥ ८ ॥ १५ उन हाथियों  
 के मद का गिरना है सो मानों झाड़ीवाले पर्वतों का भरना है १६ भद्रजाति  
 के १७ मद्र जाति के, मृग जाति के और संकर जाति के हाथी अपने कुल और  
 खेत को १८ प्रसिद्ध करके

उलटावत ऊरध उठात पन्नगगति पुंस्वर ॥

ईसा दंतन लसत अच्छ बर हाटक वंगर ॥९॥

हिमकर१ दिनकर२ मिलित व्है कि प्रतिमास अमा३० पर।

तनित चलावत करन तालसम पच्छ खगेस्वर ॥

स्याम घटा पाउससमै कि वक्र१ विज्जु २ बरबर ॥

इभै१न घटा भल्ली अनेक इम हल्ली उक्करै ॥१०॥

प्रोथै२ वालिहक१ पारसीक२ कांबोज३ प्रथाकर,

खुरासान४ ताजिक५ तुखार६ भाड़ेज७ छटाभर ॥

जवन बनायुज ८ खेत जात चमकात चरा१ चर२ ॥

क्रमि जलउप्पर किलाकिला कि प्रसरै दल उप्पर ॥ ११ ॥

चक्र हयच्छट झुकि बहत कोवँड हसीकरै,

पच्छे छुवत उठातपाय दगि भू बैसँदर ॥

ससि१ खुर१ तम२ खुरतार२ संग बिहरै जनु विज्वर ॥

क्रम नलकोल१न नैलकिनी२न घनपन मृग घत्वर ॥ १२ ॥

पुठै जुग२ पिंडक प्रगोलै मृदु चक्र मनोहर,

उर आयतविष्टर विडंवि धारन दबै धर ॥

करन जुग२ल लघुपन कलीन केतक निदाकर,

१सूंड के अग्रभाग को ऊपर करके सर्प के फण के समान उलटाते हैं १लंये दांतों में  
अष्ट सुवर्ण के बंगड़ शोभा पाते हैं ॥१॥ सांमानों प्रति महीने अमावास्या पर सर्प  
और चन्द्रमा सामिल होते हैं और गरुड़ की पांखों के समान तनेहुए कानों को  
हिलाते हैं किना वर्षा ऋतु में कालीघटा में बक्र (बुगला) और विजली बराबर दी-  
खती हैं ३इस प्रकार की हाथियों की उत्तम घटा (सेना) ४उत्कर (हाथ पग हिला  
कर) अर्थात् पगों और सूंडों को हिलाकर चली ॥१०॥ वालिहक आदि देशों में  
उत्पन्न होनेवाले ५घोड़े ६पानी पर किलाकिला पची चले जैसे सेना पर फैलते  
हैं ॥ ११ ॥ सेना में गर्दन झुकाकर ७ धनुष की ८ हसी करते हुए च-  
लते हैं भूमि को स्पर्श करते ही पग पीछा ऐसा उठाते हैं जैसा ९ अग्नि से  
जलकर उठावे, चंद्रमा रूपी खुरों के साथ खुरताल रूपी राहु १० विगत उवर  
(बिना पीड़ा) होकर बिहार करता है चलने में ११ नलियें और १२ अंघाओं की अ-  
धिकता से मृगों में १३ घुसते हैं ॥१२॥ जिन घोड़ों के दोनों १४ विशेष गोल पुंठे  
कोमल सुंदर चाक के समान हैं, जिन घोड़ों की १५ छाती १६ बाजों की नक

सहनाइन चहुँन समान सुरि प्रोथे मनोहर ॥ १३ ॥  
 बत्थ न माइ नमाइ बंक कसते धनु कंधर,  
 यालैन जूरा१ बिसिख२ ओपि प्रतिबंध१ ज्यका२ पर ॥  
 जवनी१ शालिग्राम२ जानि अंखी१ छंद२ अंतर,  
 गो१धि२ सु नत जिम सुनत१ गोधि२ पन्नगदल पदर॥१४॥  
 यान१ उठे बपु२ चरन१ थंभ२ चल बालंधि१ चामर२,  
 लेत कुसा छेकत मलंगि द्वैद्वै बरछी धर ॥  
 पलट१ उलट२ सर्फरीप्रमान मृगडान मनोहर,  
 बिरमय जव नटके बटौ१न कुलटाहग केकर२ ॥ १५ ॥  
 गहि बत्थन पीछें गिरात अवननी जवनी अर,  
 मुकुर विंव दिन चलन मान परिछो १ उडिबो१ पर ॥  
 जिन्ह पिकखत प्राकार जात न गिनै आता नर,

ल करनेवाली है और वे दौड़ने में भूमि को दबाते हैं, जिनके दोनों कान छो-  
 टेपन में केतकी की कली की निन्दा करते हैं जिनके सुंदर २ फुरख (नालि-  
 का) सहनाई के १ मुख के समान मुड़े हुए हैं ॥ १३ ॥ जिनके धनुष के समान  
 नमे हुए कंधे बाथ में नहीं आते हैं और उन कंधों रूपी धनुष में १ केसवाली  
 का ४ जुड़ा (केशों का समूह) है सो ही ५ तीर की ६ उपमा के समान है.  
 और ७ जेरबंध है सो ही ८ प्रत्यंवा है १ उजाली ( नेत्रों के ऊपर का चञ्च )  
 के भीतर नेत्र हैं सो मानों पड़दे के भीतर शालिग्राम है, उन घोड़ों के श्रेष्ठ  
 नमेहुए ११ ललाट १० गोह (गोहिली) सर्प के नमेहुए ललाटके समान है औ-  
 र सेना में सीधे चलनेवाले हैं (गोह भी सीधा चलनेवाला सर्प है) ॥ १४ ॥  
 जिनके संधि की गांठों (छुटनों आदि) के अंग उठे हुए, थंभ के समान चरख;  
 और चमरके समान हिलता हुआ १ बालछा (पूंछ) है. १ जिनकी बाग उठाते ही  
 दो दो बरछी भूमिको जो फांद जाते हैं १ अच्छी के समान उल पलट करनेवा-  
 ले और लंबे दौड़ने में सुंदर मृग, जिनके विस्मय (आश्चर्य) करानेवाले वेग के  
 समान न तो १ नट का छोकरा और न कुलटा के नेत्रों के १६ अपांग (कटाक्ष)  
 हैं ॥ १५ ॥ भूमि रूपी कनात को बाथों में भरकर शीघ्र पीछे गिराते हैं, उन  
 का शत्रुओं पर उडकर गिरना १ उकाच विंव के समान और सूर्य फिरखों के  
 समान है, जिन घोड़ों को देखते मनुष्य कोट को अपना रक्षक नहीं समझते

जे घ्रापेक दुम सुमन जाल वहिंफाल बरव्वर ॥ १६ ॥  
 वैरीबाधक विविध बंस साधक भट संगर,  
 सज्ज सयन चउंठ भेद सखपर भेद प्रयापर ॥  
 इकपतनीव्रत जे अभंग रन व्याह वैन वर,  
 कति अच्छरि न चहैं कलत्र गिनि निज सहगतवर ॥ १७ ॥  
 के हरिपद? हरपद? कितेक इच्छे कुल उद्वर,  
 भाखैं सत्य? असत्य? भंजि मनके मकराँकर ॥  
 सज्ज्यो कबहु न स्वामिलौन जिनके परि जाँठि,  
 सुमनकली? नासीर? सीर भर भोग अलीभर ॥ १८ ॥  
 चालुक? तोमर? चाहवान? प्रतिहार? प्रथाधर,  
 के करम? जहवद? कबंध? सीसोद? पुरस्सर ॥  
 सैंगर? दाधिम? सकवाल? परमार? परंपर,  
 चावोरे? दहिमे? चलाक गोहित? बडगुजर? १६॥ १९ ॥  
 मोहिल? बिंदु? रु मंकुवान? कुल गोर प्रभाकर,  
 लुलक? जाव? प्रभावलौन उफनाव अतित्वर ॥  
 इत्यादिक बाहुजै? उदार बलबाहुज विम्वर,  
 मरद किते बहुभेद मिच्छ? पहु भेद उभै? पर ॥ २० ॥

रत्नांदकर चरित्र में वृत्तों की धरावर जो हर उनके गुणों की सुगंधि लेते हैं ॥ १६ ॥  
 शत्रुओं के नाना धर्मों को पटनेवाले और गुण को साधनेवाले और जो वृत्त  
 ने ३ शायों में ४ वृत्त, अनुक्त, सुक्तावृत्त और पंचमवृत्त इन चार प्रकार के  
 शत्रु धर्मों के भेदों में प्रसिद्ध हैं, हितने ही और अपनी स्त्री को अपने साथ  
 ३ जानेवाली (मत्ता होनेवाली) जानकर ५, पंचमवृत्तों को स्त्री बनाकर  
 नहीं चाहते हैं ॥ १७ ॥ इन चारों में हितने ही बिंदु को और हितने ही बिंदु  
 पदवाले और उभाव कुल का उच्चार करनेवाले हैं जो शत्रु को मिटाकर सब  
 पालनेवाले और मन के २ समुद्र के ८ दिगंतों में पहुँचकर कभी स्वामी  
 लौन पावन (हजम) नहीं हुआ, जो शत्रु मनवाले कर्तों के प्रसार भार के भी  
 मन में मोदी और सब के २ भागे रहनेवाले ॥ १८ ॥ १९ अथवा ११ अथवा १२  
 अपनी सुजा में उपाय हुए पक्ष को हितानेवाले ॥ २० ॥

लागि आली नाली प्रलीव काली कदनाकर,  
 लालीमुख लोहित लुभाइ चाली रन चत्वर ॥  
 गढलोपन गोपन गिरिंद ओपी अग्रेसर,  
 जनु इल्ली डाकिनी जमाति असहन आडंवर ॥ २१ ॥  
 हरि१ गजर२ अहि३ मकरा४दि हिंस्र आनन भय आकर,  
 जुते वृखगन विविध जोट पथ अँचत पद्वर ॥  
 पीलुन टल्ले पिठ्ठि पाइ सरके बलि आसर,  
 चरखन अवनि प्रसात चक्र निकसात घने नर ॥ २२ ॥  
 इम चल्ली तोपन अनेक मिलि पंति मनोहर,  
 मरदठनसिर प्रथम मंडि सीमाहित संगर ॥  
 नासिक१पुर तिनको निराइ बेछ्यो बल विस्तर,  
 सूचत जँदै रावनस्वसा सु बनि विँल्ल लायो वर ॥ २३ ॥  
 तँहँ लारि तोपन दिवस तीन३ जिरयो नृप सत्वर ॥  
 मरदठे रनबहुत मारि पुर पाइ वहे अँवर ॥  
 विँटयो गढ अँवकर२ वहोरि सजि तोपन संगर ॥  
 लग्गी गोलान असह लाय जग्गी धमगँजर ॥ २४ ॥  
 तँहँ बाहिर रन प्रलय तार विस्तरि कँठु बीसर ॥  
 निश्रेनिन देँदै नरिंद पिँल्ल<sup>१</sup> भट उप्पर ॥  
 प्रचुर वन्यो गढके प्रवेश कैलि एस भयंकर ॥  
 कैपिसीसन पहुँचत कलाप अरि बाहिर१ अंदर२ ॥ २५ ॥  
 खगगन खंडविखंड खेरि क्रिय खेत सँवाकर ॥

१ लक्ष्मी तोपों की पंक्ति लगी जो २ कालिका के समान रेनाश करने की खान  
 थी. लाल मुखवाली रुधिर का लोभ करके युद्ध के ४ वर्षों में चली ॥ २१ ॥  
 सिंह आदि हिंसा करनेवालों के मुखवाली भय की खान ५ हाथियों के दल्ले  
 पाकर ॥ २२ ॥ ३ सर्पों के लोभ जहाँ रावण की बहिन (शुषेणा) ने ७ जकड़ा  
 होकर घर लिया था वहाँ ॥ २३ ॥ ८ जीघ ९ शीघ १० निरंघर पतन ॥ २४ ॥  
 ११ कुछ दिन १२ भंजे १३ युद्ध १४ कांगरी के सतीष ॥ २५ ॥ १५ मुर्दों की खान

गिरैं सुभटतजि कंगुरेन कटि सिर १ कटि २ पै ३ कर ४ ॥  
 नट जैसैं तिहरी निघात धरि जैन छुवैं धर,  
 लंका जातु १ न विविध लून बंका जिम बंदर २ ॥ २६ ॥  
 कटि कंगुर कंगुर किरंतै इम भट अग्रेसर,  
 उत १ के कटि इत २ अधर आत इत १ के उत २ अंदर ॥  
 विदित सता १९४१ के नव ९ प्रवीर तैंहें जुज्जे सत्वर,  
 दुवर हड्डे ६१ कछवाह दोइ २ सोलंखि स्वभू सर ५ ॥ २७ ॥  
 हड्डे ६१ तैंहें हरजस १९३१३१ पहार १९५१४१ बडे जस विंथ  
 बनि तिलतिल सामंत १८७१ वंस जस किय उज्जगर ॥  
 सूर अजब १ आनंदसिंह २ कूरम किर्तीकर ॥  
 ए दुवर कटे जस उबारि आमेर अनंस्वर ॥ २८ ॥  
 नवल १ तथा हरि २ चंद्रभानु ३ नाथाउत निडुर ॥  
 खेमाउत सद्गल ४ खंड वपु किन्न वरव्वर ॥  
 बदन ५ कमाउत निसित बाढ लग्गो लज लंगर ॥  
 ए पंच ५ हि चालुक असंक आलुक भर उदर ॥ २९ ॥  
 अस्त्रन भिदिभिदि अंग अंग बनि नाकबधूवर ॥  
 बुन्दी भूपति मुख्य वीर धारन तुट्टे धर ॥  
 इमहू घायल भट अनेक अर्जन १ अग्रेसर ॥  
 निडर मरत मारत नरेस दब्बयो गढ हुस्तर ॥ ३० ॥  
 रनविजई ओरंग ४०१३ रक्खि ध्रुव दब्बिगई धर ॥  
 नासिक १ सम गढे निसान ज्यंवर २ गढ सत्वर ॥  
 इम पच्छिम ३ दिस जित्ति आप धर संह तैरैं धर ॥  
 पूरव १ दिस तिम किय प्रयान सह चक्र नरेस्वर ॥ ३१ ॥

१ तिहरी कुलाट २ आकाश ३ राक्षसों का ४ काटकर ॥ २६ ॥ ५ गिरते  
 नीचे आते हैं ॥ २७ ॥ ७ कैलाकर ८ प्रसिद्ध ९ कीर्ति करके १० आमेर के  
 को बचाकर अमर किया ॥ २८ ॥ ११ शेषनाग का भार उतारकर ॥ २९ ॥  
 अप्सराओं के पति ॥ ३० ॥ ११ सख्याचल एक पर्वत का नाम है ॥ ३१ ॥

दब्यन अब इत विदर ३ दुर्ग बैढ्यो जुहि बिदर ॥  
 वज्रै जुहि ग्रंथन विदर्भ ३ इम देसी अक्खर ॥  
 जहँ सिलपीजन रूप जस्त मृदु मंजि प्रथाँ पर ॥  
 करि हुका १ कँचोल २ कादि दै क्रीत दिसावर ॥ ३२ ॥  
 जेहु कहावै विदरजात तपकाल सिंसिरतर ॥  
 सो गढ़ बैढ्यो सन्नसल्ल १ ९४१ बुन्दी वसुधावर ॥  
 मृध तोपन धमचक्र मंडि सम चक्र पुरस्सर ॥  
 गढ़के जवनन गंजि गंजि किन्नै भयकातर ॥ ३३ ॥  
 पृथुल कुंतू बारूद पूरि वसुधा १ वरनंतर ॥  
 अग्नि लगाई इक्क और अति घोर उपवहर ॥  
 उडि उतको डुत कौट अंस पथ भो कछु पदर ॥  
 लै तिहिं मग ओरंग ४०१३ लार नृप पैठो निडुर ॥ ३४ ॥  
 खगगन सेस विसैस खंडि करि दुर्ग वहै कर ॥  
 भंडे हजरतके झुकाइ जय तीजे ३ जित्वर ॥  
 धरि थानाँ तिहिंदुर्ग धाम धीरन बानीधर ॥  
 कल्लयानी ४ उप्पर कुपाइ अब लाइ चमू अरै ॥ ३५ ॥  
 सुपहु सता १६४१ अवरंग ४०१३ संग सज्ज्यो हृद संगर ॥  
 दिवस किते तोपन दरार पटकी किल्लापर ॥  
 सनैसनै बढि बल समीप पढि फल जय पीवर ॥  
 अनी उभय २ उभय २ हि अनीक बढि भार बरबवर ॥ ३६ ॥  
 आरुहि चले ओर ओर निश्चेनिन दै नर ॥

गढ़ का नाम है, संस्कृत में जिसका नाम विदर्भ है उसका देश भाषा में बिदर हुआ  
 २ मसिद्धरूपे और जस्त के हुक्के और कटोरे आदि ॥ ३२ ॥ ग्रीष्मकाल में  
 अत्यंत ठंडे होते हैं १ शूपाति ६ युद्ध ७ सेना के दआगे ॥ ३३ ॥ ९ बडे १०  
 ११ पों (पीपों) में बारूद भरकर ११ भूमि और कौट की संधि में १२ एकान्त  
 भयंकर अग्नि लगाई ॥ ३४ ॥ १३ जीतनेवाले १४ युद्ध से नहीं भागने के बि-  
 द रखनेवाले ॥ ३५ ॥ १५ शीघ्र १६ मोटा ॥ ३६ ॥

कपिसीसन पहुँचत कराल मचि कतल महाभर ॥  
 तेगन मञ्जरी तुष्टितुष्टि इत१उत२के ओसर ॥  
 उलटि उलटि गढतैं अचेत धर१सीस२गिरे धर ॥ ३७ ॥  
 तत्थहु दड्ड६१ नरेस तेग बल बेग चली वर ॥  
 विविध पठाये बहि बहि अरिलोक अनखैर,  
 कतिकन वह सुमिराइ कोल टारी जम टकर ॥  
 पायो जय चोथे४ प्रघात कल्ल्यानी४ लै कर ॥ ३८ ॥  
 धीर रच्यो गढ धामिनी५ सु पंचम५ रन पहर ॥  
 अधिरोहिनि पहिलैं अरोहि बुंदी वसुधावर ॥  
 दद भारी तरवारि दड्ड६१ घनसारी घैस्मर ॥  
 जिते जवन त्रातवै जोध तिन्ह रक्खि दिगंतर ॥ ३९ ॥  
 खिल मिच्छहु खगन खपाइ दुग्ग सु लिय दुहर ॥  
 इम इक१हायन अंतराय दड्डा६१ सुर्जन१२०११ हर,  
 पंच५ समर पुर१दुर्ग२पंच५निजबल जित्यो नर ॥  
 कहत गोलकुंडाहु केक सजि छेदे६ संगर ॥ ४० ॥  
 जित्यो गढ धरनीभुजैंग परअंग कटापर ॥  
 कतिक कहैं सुलतान संग सजि आयो संभर ॥  
 गढ दोलत आवाद गजि धन खिन्न धनीधर ॥  
 जयहि गोलकुंडाहु जिति जोधन परयो जर् ॥ ४१ ॥  
 अव इम पच्छे मुरारि आइ अवरंग४०पुरी अर ॥  
 दखल सुन्यो बलि विजित देस पच्छिम३छदि पकर ॥  
 राजा तैंहँ अवरंग४०१रक्खि निज पत्तन निहर ॥  
 आइव जित्यो अत्य अप्प तैंहँ पत्त अतित्वर ॥ ४२ ॥  
 सछ१ सिलोन्नय१ निकट सीम मंजुल नदि१मंजर२,

१ कोट के कांगरी के समीप ॥ ३७ ॥ २ नाश नहीं होनेवाले लोक (स्वर्ग) में भेजे  
 ॥ ३८ ॥ ३ जीसरनी पर ४ चपट मानेवाला ॥ ३९ ॥ ५ रचा करने के योग्य थे  
 धनकोषधन के अन्तर से ॥ ४० ॥ १ राजा ॥ ४१ ॥ २ धन ॥ ४२ ॥ ३ सहायक पर्वत के समीप



राजिंकाँ मऊ वारां बिना दूसरे परगने देना] सप्तमराशि-नवममयूख (२६५७)

जुरत जहाँ अवमर्द उग्र सख्यो यह संभर ॥

सोदर तँहँ निज राजसिंह १९४।४ सुतो अरि संगर ॥

पंच५ सुभट इतर हु पटैत धरथंभ परे धर ॥ ४३ ॥

जिम यह छटोई समर जिति किय किति कलाकर ॥

आसेर ७ हु अकखँ अनेक पुनि गो १ सु लयो २ पर ॥

दक्खिन २ धर इम बहुत दब्बि निज तंल नरेस्वर ॥

थिर सासक अवरंग ४०।३ थप्पि सुरि अप्प महीवर ॥ ४४ ॥

तुला १ पुरटँ उज्जैनि तुल्लि करि दान प्रभाकर ॥

आपो दिल्लिय घसत अब्भ वल्ल १ तेज २ बिँकस्वर ॥

हिय लायो साहेजिहान ३९।२ बदि मैँ अब बिँज्वर ॥

इतर देस १ गज २ वाजि ३ अप्पि प्रतिरीक करी पर ॥ ४५ ॥

न दये तिन द्वैरही निकेत बाराँ १ रु मऊ २ वर ॥

माधव १९३।२ सुत भोगैँ मुकुंद १९४।१ ध्रुव जो इतकी धर ॥

इतर दये सुनिये असेस मधु राम २०३।४ दैयापर ॥

इभ नव धन १ दिलदार २ अस्व पोसाक ३ प्रभाकर ॥ ४६ ॥

पंचकोटि ५००००००० दँम्मन प्रमान जिम अप्प्यो जेवर ४ ॥

इम त्रिक ३ पंचक ५ क्रम दुरओर वसु ८ सेस दये वर ॥

दिस उत्तर ४ त्रिक ३ टुंक १ दंग धन मालपुरा २ धर ॥

कहियत तीजो ३ केकरी ३ सु अप्प्यो नृपकोँ अर ॥ ४७ ॥

प्रथित परगनाँ सुनहु पंच ५ ए दक्खिन २ अंतर ॥

हथनीगढ गढ हिंगुलाज २ केथोलि ३ धँनाकर ॥

पानगढ ४ रु भैंसोद ५ पंच ५ घल्ले बुन्दीधर ॥

ही गतभुवँ उम्मेद हाइ न दई सु छलानिर ॥ ४८ ॥

और मंजरा नदी की सीमा में युद्ध ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ २ स्वर्ण की तुला ३ विकाश करनेवा  
ला ४ खेद रहित ॥ ४५ ॥ ५ परस दयावान् ६ कांतिवाली ॥ ४६ ॥ ७ रूप्यों के  
प्रमाणवाला = शीघ्र ॥ ४७ ॥ ८ प्रसिद्ध १० धन की खानि ११ गर्ई हुई भूमि 'मऊ  
और वारां' मिलने की उम्मेद थी ॥ ४८ ॥

एहि परगनाँ बखासि अठ्ठ सनमान्योँ संभर ॥  
 आमिल थप्पे टुंक १ आदि सबैँ अग्रेसर ॥  
 हाकिम जोलों हिंगुलाज २ पहुँचे न समैपर ॥  
 अखयसेन १ खिच्चिय १३ अराँति तोलों कपटीतर ॥४९॥  
 साह अमल उठत सबेग घुसि बैठो ज्योँ घर ॥  
 सारथल २हु इत भीमसिंह ३ पैठो कुहनापर ॥  
 गोर जु दुल्लह ३ मंगरोल ३ इत बैठो अंदर ॥  
 चोरत धन लाखि इक्क १ चोर ओरहु चोरैँ अर ॥५०॥  
 तिम तीन ३न ए थान तीन ३ दब्बे बनि दुँदर ॥  
 पहु संभर इत रीझ पाइ कुलहल ६१ दिवाकर ॥  
 सक दस सत्रह १७१० पाइ सिकख घुमडत आयो घर ॥  
 राजकुमार भाऊ १५११ पुरोग बर जे बसुधावर ॥५१॥  
 अब रहि आपहि दुर्दिन द्रंग तब सज्ज्यो निहुर ॥  
 मृत १ घायल २ कुल अधिप मानि बखस्यो वसु विस्तर ॥

॥

नहिँ मावत सह बल नरिंद उफन्योँ धर १ अंबर ॥५२॥

॥ षट्पात ॥

तारागढसन तोप उभय २ नरनाह उतारिय ॥  
 नाम धूरिधानी १ रु करक विज्जुलि २ हलकारिय ॥  
 लघुँहि जाइ गढहिंगुलाज बेढयो दल विस्तर ॥  
 दिन चउ ४ तोप दगाइ पंथ पंचम ५ करि पहर ॥

श्रेढिँ लगाइ चढिगो सु पहु अरि वह हनि खिच्चिय १३ अखय १॥  
 बल तस बिलोरि छसहँस बलिय ६००० जो गढ १ लिय स-  
 ह कित्ति २ जय ३ ॥५३॥

१ चहुवाण शत्रुशाल का सन्मान किया २ शत्रु ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ३ कठिनाई से  
 घर्षणा किये जावें ऐसे. राजकुमार भाऊ को ४ आगे जाने से राजा ने मना  
 किया ॥५१॥ ५ धन का विस्तार ६ बहा ॥५२॥ ७ शीघ्र निसेनी हमधकर ॥५३॥

माधव१९३।१ निजभट जकखमूल पति जो रन पारथ ॥  
 तस बंधुव नामन प्रतीत तैंहँ होइ कृतारथ ॥  
 सह बारह१२ भट सूर भये तिलातिल गढमैं भट ॥  
 सुहि माधव१९३।१ तैंहँ सुपहु किन्न गढपति रन उत्कट ॥  
 गिनि अखय सेन१घरं भीमगढ२पुनि सु जाइ जित्यो प्रधन ॥  
 हनि तास अनुज सुहुकम२कुहँक जिति गढ सु थपिय स्वजन५४  
 पूराउत१७३।१ प्रताप१९१।१ लिख्यो सासक हिंडोलिय ॥  
 नाम गंग१९१।५ तस अनुज परयो पंचम५ जुज्झन प्रिय ॥  
 एह राघयल अधिप सहित एकादस११ सादिन ॥  
 गिरयो भीमगढ गहत बह्नि बहु बल प्रतिनादिन ॥  
 तिम रायसिंह१ रछोर तैंहँ जुज्झ अनुज रविमल्ल जुत ॥  
 मह१जल२चढाइ पुर मेरता परे सहित तिथि१५भट प्रनुत ॥५५॥  
 इम हथेनीगढ१आदि प्रांत खिलैं चउ४सम्हारि पहु ॥  
 धरि तैंहँ रच्छक धीर बदलि बिस्वस्त बीर बहु ॥  
 तदनु सारथल२तिमहि गंजि भूपतिहनि गोलन ॥  
 खिच्ची१३भीम३हिं खंडि रुचिर जित्यो तीजो३ रन ॥  
 तिम बंधु रायमल्लोत२३।१९तैंहँ जथा प्रथम थप्ये सजय ॥  
 तिलातिल स्वबंधु तुट्यो सु तब भट हरदाउत३४।३०बीतभय ॥५६॥

॥ दोहा ॥

रस गुन३६ भट जुत रन रह्यो, खेत सारथल३ ख्यात ॥  
 पुर दुन्नीसं प्रयाग१९४।१को, यह चोथो४अनुजांत ॥ ५७ ॥  
 सुपहु जिति इम सारथल३, रायमल्ल१९१।३ कुल रक्खि ॥  
 मंगरोल४गोरन मिलन, आयो जुज्झहु अक्खि ॥ ५८ ॥  
 भकंखरोत सीसोद भट, साहबसिंह सनाम ॥

१ युद्ध में अर्जुन २ तीव्र ३ युद्ध ४ लकी ॥ ५४ ॥ ५ खबारों से ॥ ५५ ॥ ६ वि-  
 शेष स्तुति योग्य ॥ ५६ ॥ ७ बाकी के ८ भरोसा के ॥ ५७ ॥ ९ दृष्टी नामक  
 आगर का पति १० छोटा भाई ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ११ आकरोत वंश की क्षत्रिय

तास कुमर दुवर्बीर तँहँ, कालि करि आये काम ॥ ५९ ॥

सुनहु राम२०३।४प्रभु नाम सन, जेठो१कुमर जवान ॥

अनुज२कृष्ण२द्वै२ही अडर, थिर सोये रनथान ॥ ६० ॥

साँदी तेरह१३ सत्यके, सोये कुमरन संग ॥

दुल्लहसाहि४ मु गोर दलि, जित्यो भूप सु जंग ॥ ६१ ॥

जई परगनाँ तासजुत, जिति चउम४रन जोहु ॥

मंगरोल४अप्प्यो महिप, साहबसिंहहि साँहु ॥ ६२ ॥

सिवसत्रह१७११ सम लगत सक, पहु इम इक्क१प्रयान ॥

ग्रामक जुत चउ४जिति गढ, आयो पुर चहुवान ॥ ६३ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीय-  
सुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे दक्षिणादिक्वाशादुर्गविजयिदिल्ल्यागतशत्रु-  
शाल्यस्य शाहजहाँयवनेन्द्रान्नूतनप्रान्तसहितसत्कृतिप्रापणा १, नव-  
लब्धप्रान्तविजयानन्तरशत्रुशाल्यबुन्दीप्रत्यागमनवर्णनं नवमो मयू-  
खः ॥ ९ ॥

आदित एकविंशाधिकद्विशततमः ॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीभिश्चितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अवलग दिल्लिय आदरघो, जो पति साहजिहान३९।२ ॥

पै अब सुनिये राम२०३।४प्रभु, अहो समय अवसान ॥ १ ॥

तीजे३सुत अवरंग४०।३तँहँ, अति मदमति बद आई ॥

जनक कीलि लिय पट्ट जिम, जोर प्रभुत्व जमाइ ॥ २ ॥

१ युद्ध करके ॥ ५९ ॥ ६० ॥ २ सवार ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के आपति  
शत्रुशाल के चरित्र में दक्षिण में पाँच गढ विजय करके शत्रुशाल का दिल्ली  
जाकर बादशाह शाहजहाँ से नवीन परगने और सत्कार पाला १ नये पाप  
हुए परगनों को विजय करके शत्रुशाल का पीछा बुन्दी आने के वर्णन का नव-  
मा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२१ मयूख हुए ॥

३ अन्त समय ॥ १ ॥ ४ पिता को कैद करके ॥ २ ॥ ३ ॥

जिम जेठे दारा४०।१हिँ दलि, अरु सुजा४०।२हिँ मरवाइ ॥

गद्दी अनुज मुराद४०।४ गहि, पाई अवसर पाइ ॥ ३ ॥

सो कहियत धारहु श्रवन, सभ्यन सह नरनाह ॥

जिहिँ रन प्रभुकुल मूल जिम, लहिय सता१९४।१दिँवलाह ॥४॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

जिणसमय दिल्लीस साहजिदान३९।२ मूत्रकच्छूनामक महातंक  
रो प्रकोष थियो ॥

जिकणारी पीड़ारे परतंत्र होइ आपरा अधिकारै ऊपर बडापुत्र  
दारा४०।१नूँ रहणदियो ॥

जिकी बात प्राची२रा अधीस दूजा२ कुमार सुजासाह४०।१ रा  
उरमै न माई ॥

अर अनामय पूछणरो व्याजकरि पिता१नूँ बडा१ भाई२ समेत  
मारि साहदोगारो संकल्प करि दिल्लीमाथै आपरी चतुरंग चमूचलाई।

तिको मंत्र उपवहर भी चारलोकारा चतुरप्रणांथी चोड़ै आयो  
थको पहलीही इसो घाट घड़ता तीजा३साहजादा अरंगजेब४०।३  
रै सहायक बणियो ॥

जिकण महापातक माथै लेर आधी३ पातसाहीरो लोभ दे प्र-  
तीची३रा पति आपरा अनुज मुरादसाह४०।४नूँ मिलाइ पाउसरी  
कादंबिनीरै अनुकार आपरो अनीक तणियो ॥

अठी दूजैसाहजादै सुजासाह४०।२भी पहलीरी सूचनारै समा-  
न दिल्लीरै अभिमुख प्रयाण कीधो ॥

जैर बुंदीहूँ हाडोतीरै अधीस सत्रुसाल१९४।१भी वचावणारी वि-

१ सभासदों सहित २ स्वर्ग का लाभ ३ महाभयंकर रोग का ४ पूर्व दिशा का  
पति ५ आराम पूछने का मिस करके ॥ ५ ॥ ६ एकांत की सलाह ७ हलकारों के  
८ पश्चिम दिशा का हाकिम ९ वर्षों की मेघमाला के १० सट्टा ११ सेना कै-  
बाई १२ सन्मुख १३ गमन किया ॥ ६ ॥

चारि आपरा पंचम अनुज मुहुकमसिंह १९४ नूँ हित पत्रलिखाइ  
गारीति दीधो ॥ ६ ॥

अब सुजासाह ४०।२रै समीप रहियाँ भाई तू बुन्दीरी वसुधा  
विभाग परलोकमें पावसी ॥

अर अबही प्राचीशरा अधीसकपटी दूजार साहजादानूँ छोड़ि  
आयाँ म्हारा आसपरै अनुहार पिताराघरमें खटावसी ॥

जिको पत्र पढताँही हड्डा ६१ धिराजरै पंचम अनुज मुहुकमसिंह  
१९४।५ आपरा अधीस अग्रजरा आँदेसरै अनुसार अब भावीरा म  
रोसामैं भ्रम देखि प्राचीरापति सुजासाह ४०।२ नूँ तजि आपरे देस  
आइ अनुगतभाव दिखाइ संभरसिरोमणि सत्रुसाल १९४।१ रा  
गाँमें प्रणाम कीधो ॥

जरै राजा रत्न १६२।१रा बडा कुमार गोपीनाथ १९३।१रै पट्टप  
त्र नरेस सत्रुसाल १९४।१भी आपरा अनुजनूँ ग्रामता समेत पहली  
रा दुर्गापुररो प्रतिनिधि इणारा अग्रज इंद्रसाल ५६४।२रै अंतिक  
आलोचि करउर दंगदीधो ॥ ७ ॥

अठी दूजारसाहजादानूँ आपरैऊपर चलायो जाणि तिकणनूँ पा  
छो फेरणरैकाज कुमार दारासाह ४०।१रो कुमार सलेमसाह ४१।१  
विदा कियो ॥

तिकणरैसाथ कछवाह जयसिंह १ गोड अनिरुद्धसिंह २ नवा  
दलेलखान ३ तीनही मुख्य सामंत देर आपरो उद्धत अनीकें दियो  
तीनही सामंताँ सलेम ४।१रैसाथ साम्हें जाइ बागारसी रे समी  
प कुमाररा काकानूँ कोरँडो लोह चखायो ॥

जिणथी पहलाही प्रघातमें परम्मुख होइ दूजोरकुमार दूज  
रो प्रहार भी न खायो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

साह सुजा४०।२ गंजे समर, सामंतां३ रसलेम४१।२ ॥

मदविष्णु पाछो सेलिहयो, जिम्हग रैदविष्णु जेम ॥ ९ ॥

पिता१पितामह२ थी प्रणत, लिखि सलेम४१।१ जयलाह ॥

कलह जई सतकारिया, पटा दिवाइ सिपाह ॥ १० ॥

पंचलाख५००००० मुद्रा पटा, लौ जयसिंघ१दलेल२ ॥

लीधो गौड़ दुलाख२०००००लगै, खगगारखा जय खेल ॥ ११ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इणरीति आपरा और भी विसेसबीरानूँ बधाइ काकारा द्वारो  
धाड़ होइ सेनासमेत सलेम४१।१उठेही आडो रहियो ॥

अर काकैभी पुळियार होइ प्राची१रो परिकर इकडोकरि फेर  
। दिल्लीपर चलावखा दृढभाव गहियो ॥

इणवातरे हाके पहलीही सितारा१ बीजापुर२ भागनगर३ प्रमुख  
केखणारा २ अधीसानूँ विजयरा फलमैं विभागी बणाइ दक्खिखा  
पच्छिम ३ रा अधीस दो २ ही साहजादा मिळिया तिके दूजा २  
प्रजेरै अनुकार साँचै संकल्प दिल्लीरा दायाद होइ साम्हौँ चलाया ॥

अर दिल्लीसभी घणौँसाहसथी आपरा जावणमैं आडो होइ चलायो  
सदा बडा १ कुमार दारा ४०।२ नूँ साम्हें पूजणरो निदेस देर वि-  
कीधो जतरे तापी१ नूँ लाँघिनमँदा २ नदीरै नजीक आया ॥ १२ ॥

साह कहियो म्हाँराअनामयरो उद्देस करि आवै तिकाँनूँ साम्हें  
।इ हँही समुझाइ पाछा मोड़ियाऊँ ॥

तिकोभी तातरो निदेस सनमानि दारा ४०।२ कहियो पितारा  
धारणमैं हँभी पाटरोपुत्र १ प्रतिष्ठा नूँ पाऊँ ॥

जैरै पातसाह दारा ४०।२ रै साथ जोधपुररो अधीस राठोड़ जस-  
न१च्यारि४ही अनुजौँसहित कोटारोअधीस हाडो६१मुकुंद१९४।१२

सर्प २ बिना दांतवाला ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ३ आगकर ४ पूर्व दिशा की पर  
५ सदृश दंदायत ॥ १२ ॥ ७ आराम पुछने का अपिता की आज्ञा का अजय

मालवदेसरा पच्छिम ३ प्रांतरो पुहवीस रतळामनगररो बसा-  
वण्णाहार राठोड़ रत्नसिंह ३ बिस्वासघातकरि आपरो भाभे अमरसे  
रा चरणारो छेदणहार गौड़ नरेस अर्जुनसिंह ४ राणाउतराजा राय-  
सिंह ५ नवाब कासिमखान १ करीमखान २ प्रमुख आपरा मुख्य  
सामंत सहायक करि बडा बरूथरै साथ जूझणारा साहसी कुमार  
दारा ४०१ साहनू औरंग ४०३ मुराद ४०४ रै साम्हें बिदा कीधो ॥

अरै इणारा कुमार सलेम ४११ नू पहलीसूचिया सहायकांसमेत  
प्राची १ रै पंथ सुजासाह ४०२ आडोरहण दीधो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

अर्जुन १ रयण २ मुकुंद ३ ए, सोवण संगर सीम ॥

क्रमिया ए राखण कँवर, कासिमखान १ करीम २ ॥ १४ ॥

रायसीह १ जसवंतर रण, जायें तजिकढिजाण ॥

ले दारा ४०१ क्रमिया लंगस, फोजाँ संगस उफाण ॥ १५ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी पातसाहीपर जादा भार पड़तो जाणि साहनै कोटेसरे बारा  
१ राखि मऊर उतारि तिकणरै एवज माधाणी २६।२२ मुकुंद १९४।१  
नू ओर परगणां देर दारा ४१।१ रै साथ जावणरो हुकम दियो ॥

अब बुन्दीसरो बुलावो बिचारि मऊररो फरमाणा लिखाइ पह-  
लीही बुन्दी भेजि हांडाँ ६१रा हँस सता १९४।१ नू बखसीस कियो ॥

नरेसभी फरमाणा आताँही जाइ मऊर गरदाइ भगडो जमाइ  
कोटेसरा राखिया मऊरा फोजदार खीची १३ नगराजनू उचित आ-  
तकै देर बारै काढियो ॥

अर एकादस ११ अब्दरा गया मऊरपुरमै परगणांसहित पाछे  
अमल जमाइ प्रतीप दीठो तिको ही गहियो १ र बाढियो २ ॥ १६ ॥

१ भूपति २ बहिनोई अमरसिंह का पैर काटनेवाला ३ आदि ४ सेना के साथ  
५ और ॥ १३ ॥ ६ चले ॥ १४ ॥ ७ निकल जाना ८ लम्बे चले ९ क्रोध  
१० सूर्य ११ भय १२ बिरुद्ध ॥ १६ ॥



॥ दोहा ॥

सक चउदह सत्रह १७१४समा, लागीं इम जय लेर ॥

मारि खळां लीधी मऊ२, दळां पराभव देर ॥१७॥

कीधी थान बिनायकै, राडि बळां नरराज ॥

सो खीची१३ हणियो सतै१९।४१, बणियो तीतरबाज ॥१८॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

पहली अकबर३७।१ अवसांणसमयरे समीप रीछवारा राठोड़  
पूप भोज१९।२रै पगां पड़िया तिक्रै अब मऊ१ बारां२ छूटांकेडै  
पाछा प्रतीप थिया ॥

जिकांमाथै हाडैनरेस मऊ२थी राजकुमार भाऊ१९।११ भेजियो  
जिकणा जातांही राठोड़ दहबट्टांकरि काढिदिया ॥

इगारीति रीछवा१ बकाणी२सूधीजनकरी आण जमाइ कुमा-  
र भावसिंघ१९।११ पाछो मऊ आयो ॥

जठै आपरो अकंटक अमल जमाइ नरेसभी बुन्दी आइ बिज-  
यरो सुजस १ सत्रवां २ समेत दिसादिसा डुंलायो ॥ १९ ॥

अठांसाहरै समाधी हुवांकेडै दारा४०।१साहनै अधिकाररो का-  
मभी छोडिदीधो तोभी तीन३ही भायांरो तखतमाथै चलावणां जा-  
णि प्राची१में पुत्रनू भेजि आवाची२कू आवता दो२ही पुत्रानू समु-  
भावणा साम्है जावता पातसाहनू पेलि तिगारो बंडो१पुत्र साहसरै  
सहाय पहली कहिया कटकरे साथ दरकूचां दक्खिणारै अभिसु-  
ख चलायो ॥

तिकणा अवंती पुरीरै परै पंच५कोसरै प्रमाण पूगिवीरांरी बांसठि-  
हजार६२००० सेनारै साथ मेळ पायो ॥

जठै दौ२हीफौजौ रैदूजहीदिवसकाळिकोपतोपारोघोरधर्मसाणराचियो

१ पराजय ॥ १७ ॥ १८ ॥ २ अन्त समय ३ बिरुद्ध ४ बरवाद ५ अमाया ॥१९॥  
६ आराम ७ पूर्व दिशा में ८ दक्षिण ९ मना करके १० सन्मुख ११ उजैन १२  
युद्ध हुआ

अर बीचबीच वैडीरा वैहँडा बज्रवेग बानैत बीरोंरै सस्त्रोंरो सं-  
पात माचियो ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

असीसहँस ६०००० सेना अठी१, सहँस उंठी२ बासठि ६२००० ॥

भड़ाँ१ ओपियाँ भीरँवाँ२, नीर गया मुख नठि ॥ २१ ॥

जिणा दक्खिणा २ धररो जरे, अरि हूँतो अवरंग ४०१३ ॥

सोभी लै अब सीरमँ, जुड़णा चलायो जंग ॥ २२ ॥

त्रय३ भीडू दक्खिणा २ तणा, बदिया पहलै बाद ॥

धुर चोथो४ पच्छिमधणी, मेळे अनुज सुराद ४०१४ ॥ २३ ॥

प्रथम गजर तोपाँ पड़े, गोळा बजर गुड़ाण ॥

मचियो जिणादिन माक्षियाँ, घोर प्रळै घमसाणा ॥ २४ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

जिणासमय दोहरी फोजाँरा हिलोळा समुदरै समाणा प्रमाणाँमँ आया।

अर तोपाँरी गाजहूँ सेसरासीसाँ१ समेत मकराँकर मेखळा मही  
२रै मचोळा लगाया ॥

दिकपाळाँ१ रा गाढसमेत दिग्गजाँ२रा मद छूटि आठूही अने-  
कपँ चकितपणाँका चीकार करणलागा ॥

अर रज १ धूम २ रा बितानमँ मारतंडश मयूखँ अंतर्धानबिद्यारो  
अभ्यास धरणाँलागा ॥ २५ ॥

दो२ ही तरफ गोळाँरी गजरहूँ ओट आवै जिताही घोडाँ१सिपा-  
दाँ२ समेत हाथियाँ३ रा गोळें उडणाँलागा ॥

अर इळाँ१ आकासरै२ हारावळीरूप बिघ्नकारी डूंगराँरा डोहँ-  
णाहार बिघ्नविहीणा पगिरिँभँ जुड़णाँलागा ॥

१ पागल स्त्री के २ कलश के समान ३ वानाबंध (युद्ध से नहीं भागने की प्रति-  
ज्ञा का चिन्ह रखनेवाले ४ प्रहार ॥ २० ॥ ५ कायरों का ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥  
६ समुद्र की मेखलावाली ७ दिग्गज ८ सूर्य के ९ किरण छिपने लगे ॥ २५ ॥ १०  
समुद्र ११ भूमि १२ हार की पंक्ति के सदृश १३ मथनेवाले १४ शरीर से शरीर मिलाकर

जिणसभैं महामारीरे मंडाणा नरांगो नास देखि कोईक कच्चा-  
मंत्ररादेणहार आहवरा अमेध सामंतर सूचिया घोड़ै चढणरी हूस  
धारि दारासाह ४०।१ हाथीरूप तखतहूं हेठो उतरियो ॥

जैरै पैलांरा प्रबळ प्रहारहूं पड़ियो १ कै पुळियार हुवो २ जाणो  
साहसी सेनारा सिपाहां मतैमतै मार्गलागणारो आरंभ करियो ॥२६॥

दिल्लीरा दळमैं दरोळ देखतांही साहजादारी सेना बडेजोर ब-  
धीथकी आगैं आइ उछाहरै उफाणा महाप्रळे मचायो ॥

जठैघणारो कचरघाणामैं आपरा अनीकरा पदद्वरा प्रवाहमैं प-  
ड़ियो नवाब कासिमखान १ समेत कुमार दारासाह ४०।१।२ भी  
ठहरण नपायो ॥

जठैतो वडावडा अमीरांग आपाणा प्रहारपहलीही पड़तादेखि  
राठोड़राजा जसवंतसिंह १ राणावतराजा रायसिंह २ प्रमुख किता  
ही आर्थ १ जवनांरा ओघ दारा ४०।१ रो साथ छोडि दार २ रो  
साथ करण आपआपरै अगार चालिया ॥

अर च्यारि ४ही भायांसमेत माधाणी २६।२२ हाडो ६ १ मुकुंदसिं-  
ह १९४।१।१ गोड़अर्जुनसिंह २ राठोड़रत्नसिंह ३ जिसडा जोधार का-  
लीरा कलस रणगळियार होइ हाथियारै भाये हाथकरता साथि-  
यारै सूरतारो साणलगावता साहजादांरे समीप हालिया ॥ २७ ॥

घणां घोड़ां १ भड़ांरो घाणकाढि बूंदी १ कोटार दोरही ऊज-  
ळादिखाइ हाडां ६ १ रा वंसलू वीजांमैं वधतो वताइ लाजरूप लंगर  
रा खंचिया पैलांरा प्रतिमल्ल मदांलागा मइंद माधाणी २६।२२ मुकुं  
दसिंह १९४।१ मोहणासिंह १९४।२ कन्हाराम १९४।३ जूझारसिंह  
१९४।४ च्यारि ४ही भाई पैलांनू जयसंसय जणाइ खागांरा खेल्हमैं  
खंडविहंड होइ विमाणावैठा नारियारै साथ गलवाहं कीधां मुरलो-

क पूगा जिकानूँ इन्द्रादिक \*अमरां बधाइ आघालीधा ॥  
 तिकाँ सुधारूप सोधुरा छाकियाँ नंदनवनरै निवास सुधर्मा स-  
 भामैं बैठि सुररैसाथ बिलास कीधा ॥

अठी पाँचमो५भाई किसोरसिंघ१९४।५ केही हाथियानूँ हठाइ  
 बरबीर बैरियानूँ अग्रजाँ१रा तथा आपरा साथी बगाइ धरारो  
 कँवाड़ होण करवाँळ१रूप कैंकचाँ२मैं अंगरा फाचरा उडाइसेलाँ  
 १रा सालाँ२करि पाछो जुड़ाइ खेतपड़ियो ॥

अर आपरी आऊरेबळ ऊबरिया अंगनूँ कँवाड़पगाँमैं गाढोक-  
 रणा कलंब१रूप काँटाँ२मैं जड़ियो ॥ २८ ॥

गौड़राजा अर्जुनसिंघ२ बैरियाँरा थाट विरोळि बैँडा गजाँरैचा-  
 चर चंद्रहास चलाइ सैंकड़ाँ सूरानूँ साथी करि महारुद्री माळामैं  
 आपरा मुंडरो मेरु चढाइ रुंढथको भी धारामैं तिलतिल पळचराँ  
 री पाँती पुँडळन राखि इष्टलोक पूगियो ॥

इणारीति रतळामरैराजा राठोड़ रत्नसिंह३ सारथी१ समेत तर-  
 णी२नूँ तमासै लगाइ केही गजदंताँ१सहित सुंडादंड२ सूनाँ करि  
 दीठा दोयँगाँरै सोणित भद्रकाळिरो खप्पर भराइ बीर बेताळाँनूँ  
 गूदरी गाळा जिमाइ बिनाँमाथै भी साहजादाँ२नूँ संकाइ लोहक-  
 क घूमता गजाँरी घड़ामैं सूरसज्जासूतै इच्छारै अनुसार परलोक  
 लियो ॥

उठी हाडाँ६१रा अधिराज नरेस सत्रुशाल१९४।१रो तीजो३ कु-  
 मार भगवंतसिंघ१९४।३ ओरंग४०।३ आगैं केही पैलापटैतानूँ पो-  
 ढाइ प्रेत१ गीधारादिकेपलचराँनूँ धपाइ चंडीरा चसकमैं आपरो अ-  
 सैं आसव पूरि च्यारि४ तरवारि लागाँ जीवतोही खेत रहियो ॥

\* देवता १ मद्य २ देव सभा ३ खड्ग रूपी ३ करोतों में ४ बाण ॥ २८ ॥ १ उ-  
 ढाकर ६ खड्ग ७ मांस भक्षण करनेवालों की ८ शरीर ९ सूर्य को १० शत्रुओं  
 के ११ मज्जा १२ रक्त रूपी मद्य

अर दोरही तरफ हजाराँही सिपाह सरिया १ तथा घायल २ करि-  
या तिकाँमें दिल्लीरा दलरै भागवे अठिरो घायल बंधुपणास दावमें  
पड़ियो थको दूजेरदिन एक १ भी जीवतो न लहियो ॥२९॥

॥ दोहा ॥

ऊतरियो गजलूँ अठै, दारा ४०१ चूके दाव ॥

तदि ऊतरियो तखतलूँ, ओळो स्वमति भ्रमाव ॥३०॥

गज तजताँ पुलिया गिण, स्वामी १ कासिमर संग ॥

दल भग्गो दिल्लीसरो, जाणो परबल जंग ॥३१॥

भागताँ दलभाजिया, दारा १ कासिमर दोरहि ॥

पुलिया टोडा १ जोधपुर २, आदि घणाँ भइ ओहि ॥३२॥

सचरणागचम् ॥

जठै इणारीति हाडाँ ६११ गोडाँ २ राठोडाँ ३ आप आपरा लूणा उ-  
जाकिया ॥

अर हजाराँ बैरियाँनूँ वसुधामाथै बिछाइ हासौँ समेत केही गज  
राज हाळिया ॥

सातूँ ७ही सामंत खास बाढानूँ तोड़ि गजाँरा गोळमें जावता ज-  
किया ॥

अर ओरभी सीसोदिया राउत जगरूप ८ जिसा केही अछूती अ-  
णारि बाँद उठेही पूगताँ पड़िया लोह छकिया ॥३३॥

बीजाँरा बरूयमें जिकाँरा संबंधी जाणिया तिकेतो दिल्लीरा द-  
लरा घायल जावता रहिया ॥

ओर हजाराँही खेत सोधणारै समय सचेत १ अचेत २ प्राणधारी  
पाया तिके सर्वही ओरंग ४०३रा आदेसरूप अनळमें दहिया ॥

॥२६॥३०॥१ भागा हुआ जानकर ॥२१॥२ आश्चर्य ॥३२॥३ निजानों समेत ४ गिरे ॥३३॥

॥इस युद्ध में शाहपुरा का राजा शोपोदिया सुजाणसिंह पाँच पुत्रों सहित दारासिकोह के पक्ष में बड़ी  
वीरता के साथ काम आया था परन्तु विदित होता है कि प्रत्यकर्ता को बड़ इतिहास नहीं मिला।

आपरा घायलोंरा जीवणरा जतन कराइ दक्खिणरा सहायस-  
हित दोरही साहजादा अवंतीरै उपकंठ केही सुकाम किया ॥

अर आपरा भडांनूँ लाखारी रीक देर केही परायंरनूँ पल-  
टावणरा कुकाम किया ॥ ३४ ॥

इणरीति ओरंग ४०।३ रा भागरै जोर सोरंगसाहरा भडाँ तजियो ॥

अर तिकोभी यो बिसाळापुरीरो कजियो जीति आगरामाथै आ-  
वणरा आरंभमें सहियो ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

उज्जैणी रण जीति इम, बीराँ मन विकसाइ ॥

उमैर आत रहिया उठै, छकड़पर धक छौई ॥ ३६ ॥

सक चउदह सत्रह १७१४ समै, उज्जैणी रण एहि ॥

हुंवां हजारों मरण हद, मचि अस्मिधारां मेह ॥ ३७ ॥

सचरणगद्यम् ॥

अठौ नबाब कासिमखान १ दारासाह ४०।२।२रै साथ दरकुची

लाखैरैरै दैरै कछि आगरे आयो ॥

अर साहरी हजूर आपभी बणियो उदंत सारोही सुणायो ॥

जिके बज्रपातजिसडाँ बचन सुणाताँही पातसाहरा मनमें भी पा

तसाही करणारी आधी आस रही ॥

जठे दारा ४०।२नूँ उपालंभदेर पछतावारै प्रमाण सोकरा समुद्रमें

मग्न सुगलेस इणरीति कही ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

पुत घणों में पैलियो, जूझण तूँ मति जाइ ॥

हूँ मोड़े आऊँ हमै, सुत दोरही समुझाइ ॥ ३९ ॥

१ उज्जैन के समीप ॥ ३४ ॥ उज्जैन का २ युद्ध ३ स्वभा ॥ ३५ ॥ ४ उरसाह ५  
क्रोध ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ६ मार्ग ७ वृत्तान्त ८ वज्र पड़े ९ जैसा १० ओलम्भा ११  
११ मना किया १२ पीछा करकर ॥ ३९ ॥

मूरख कथन न मानियो, लसियो झूठ लजाइ ॥

तानूँ ख न दियो तखत, दोरनूँ रखत दिखाइ ॥ ४० ॥

दारा४०११ चुप रहियो दुमन, सिर नमाइँ अतिसोच ॥

सतो१९४११ बुलावशा साहरै, उरथायो आलोच ॥ ४१ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

साहजादोनो पाउसकाळ माळवमैही कीधो ॥

तिकाँ समाँसरै अंतर थोढ़ा थोढ़ा कूच करि आपआपराअ-

नीकानूँ आगे आवणारो आदेस दीधो ॥

दिंलीसभी राजा१ नवाबर रहिया तिकानूँ बुलावशारा फरमा-

शा दिया ॥

अर बडा सतकारै साथ बुलाइ साराही आगेरे एकत्र किया

॥ दोहा ॥

बुन्दीरा फरमाणविच, इम लखियो आदाव ॥

भूप सता१९४११ थाँरै भुजाँ, अब म्हाँरै घर आँ ॥ ४३ ॥

मुँगाँ किता दीधी मऊ११ इण फरैमाण अधीन ॥

पंच५ मास अंतर पड़े, वेळै अधिक बधी न ॥ ४४ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

नरेस कहियो पहली मऊ१रो फरमाणा आयो जरैही म्हेतो जा-

सिलीधी अब साहरै म्हारामाथासुँ काम पड़ियो ॥

अर इणसंकटसुँ भी बिसेस अब किसो काम रहियो जिणरो

रीशमाथै बळे वाराँरो देवो तेवड़ियो ॥

दक्खिणामै साह१रै तथा इणारा तीजा३ कुपुत्र२रै साथ केही जु-  
द जीनि केही पुर१ दुर्ग२ दावि पचहत्तरिलाख ७५०००००रो मुल-

१ शोभायमान हुआ २ खुदा ने ॥ ४० ॥ ३ हुआ ४ विचार ॥ ४१ ॥ ५ वर्षों  
फतु के संक्षेप होने से पीछे अर्थात् वर्षों मिटे पीछे ६ सेनाओं को ७ आज्ञा ८  
इकट्ठा किये ॥ ४२ ॥ ९ बड़प्पन १० शोभा ॥ ४३ ॥ ११ कितने ही कहते हैं १२  
फर्मान के साथ १३ समय ॥ ४४ ॥ १४ विचारा





बय बीरां सह बोळिया, केसर कुंड हुंकूळें ॥

वळे तरुणा भंड वरजिया, मंडे साहस मूळ ॥५२॥

कहियो बय थारो कढै, सम म्हारो तँदि सूर ॥

कुळ चील्हा ऊजळ करो, जाणो मरणा जरूर ॥५३॥

क्रम चौथो४ भारत१९५।४ कँवर, नटताँ रुकियो नीठि ॥

मुँणियो भारत नाम मम, दीधो किणा गुणा दीठि ॥५४॥

माइ१ जनक२ आता३ मिळणा, अतरा अंतर अंत ॥

अतिजवँ तीजो३ आवियो, भूप कँवर भगवंत१९५।३ ॥५५॥

सीखकरे अवरंगसूँ, इशाखिणा बुन्दी आई ॥

पयलग्गो प्रणामे पितरं२, मिळियो इतर मनाइ ॥५६॥

इति श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे यवनेन्द्रशाहजहांसूनुचतुष्कस्य मिथोविरो-  
धवृद्धिहेतुतातबन्दीकरणपूर्वकदिल्लीपट्टाधिगमाभिषेकानकशालप्रश्न  
व्याजदिल्लीगमन१, वाराणस्यन्तिकसलीमशाहाहवयवनेन्द्रापत्यसु-  
जाप्रदवशा२, दक्षिणदेशादिल्लप्रागच्छदौरङ्गजेबपुरादवक्साग्रोज्जयि-  
नीसमीपयुद्धदाराशिकोहप्रपलायन३, यवनेन्द्रपुनर्दत्तमऊप्रान्ताधिका-  
रसमासादनानन्तरपञ्चत्वाभिलाषुकदिल्लीयियासुबुन्दीन्द्रारावशत्रुश-  
ल्यस्य स्वसूनुभावसिंहनृपीकरणां दशमो मयूखः ॥१०॥

१ बुजोये २ वस्त्र ३ फिर ४ हठ । ५२ ॥ ५ तब ६ मार्ग ॥ ५३ ॥ ७ कहा ॥ ५४ ॥

८ व्यक्त वेग से ॥ ५५ ॥ ९ इस समय १० पिता ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में बादशाह शाहजहां के चारों पुत्रों में विरोध बढ़कर पि-  
ता को कैद करके दिल्ली का पाट लेने के अभिप्राय से आराम पूछने के मिस  
दिल्ली जाना ? काशी के समीप सलीमशाह के युद्ध में शाहजादा सुजा का  
भागना २ दक्षिण से दिल्ली आते हुए औरंगजेब और सुरादाबख्स से उज्जै-  
न के समीप युद्ध करके दाराशिकोह का भागना ३ बादशाह के पीछे दिये हु-  
ए मऊ के परगने में अमल करके मरने के अभिप्राय से दिल्ली जाने के विचा-  
र से बुन्दी के राव शत्रुशाल का अपने पुत्र भाऊ को राजा बनाने का दशम

आदितो द्वाविंशत्युत्तरद्विशततमः ॥२२२॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

समवयरा सुहड़ाँ सहित, बोळे कुंकुमबास १ ॥

पग रणालंगर पहरिया २, भूखेण ३ उडुगण भास ॥१॥

केसकळप तजियो सकळ, भजियो कजियो भूप ॥

बजियो इण १ गुण वृद्धवय, सजियो तरुण सरूप ॥ २ ॥

कहियो पहु कोटेसरा, सुत चउ ४ लग्गा सार ॥

ऊवरियो पंचम ५ अनड, भरियो जय १ जस २ भार ॥ ३ ॥

अव दर्शणां रण आपणां, पडियाँ सुजस प्रकास ॥

प्रकटे बूंदी पट्ट पण, न कटे नास विनास ॥ ४ ॥

॥ पट्टपात ॥

सखांशंकै खुरसाणा १ खांगधाराँ २ खणशांकै ॥

रणांशंकै रणाराग ३ भलम ४ पाखर ५ भ्रणांशंकै ॥

१० मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२२ मयूख हुए ॥

अपनी बराबर जमरवाले १ सुभटों सहित ३ केसर में वस्त्र २ डुबोये और पैरों में युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा के लंगर पहिने और ४ तारों की भाँति चमकते हुए (जड़ाज) भूषण पहिने ॥ १ ॥ ५ केशों में रंग करना बिलकुल छोड़ दिया 'क्योंकि मरते समय शरीर से नील के रंग का स्पर्श होना आर्य धर्म के विरुद्ध है' और उस राजा शत्रुशाल ने ६ युद्ध का सेवन किया और इस (वीरता के) गुण से विदित होकर तरुण पुरुष के समान सजा ॥ २ ॥ राजा शत्रुशाल ने कहा कि कोटा के पति के चार पुत्र ७ तलवारों लगे अर्थात् अभी काम आये हैं और पाँचवाँ पुत्र ९ अनश्र होकर जय और यश के भार से भरा हुआ ८ बचा है ॥ ३ ॥ इसकारण अब कोटेवालों से अपने वीर युद्ध में शत्रुगुने मारे जायें तब यश का प्रकाश होकर बूंदी का पाटवी पन प्रकट होगा और इसप्रकार विनाश होने से ही नासिका नहीं कटेगी नहीं तो नकटा पन है ॥ ४ ॥ १० यह शब्द सान के शब्द का अनुकरण है इसीप्रकार खणशांक रणांशंक आदि प्रत्येक पदार्थ के भिन्न भिन्न अनुकरण हैं १ तलवारों की धारा २ स्त्री

चण्णों के भड़ चिहुर ६ छोजि कातर छण्णों के ॥  
 टण्णों के टामें ७ भमर ८ फौलाँ भण्णों के ॥  
 ठण्णों के घंट ९ गंदलाँ ठहे गण्णों के पळवर १० गयण ॥  
 दण्णों के हीस हैगाम हय ११ जय कण्णों के बंदिजण १२ ॥ ५ ॥  
 गयराजाँ १ गुडं ग्रहण रहण पाखर हयराजाँ २ ॥  
 पाँजाँ छलि दळ ३ प्रघण संघण वरसाल समाजाँ ॥  
 ताँव अलाजाँ ४ तरस सरस रण चाँव सलाजाँ ५ ॥  
 वणें न रौजाँ वहिर गहिर तोपाँ घण गाजाँ ६ ॥  
 दूजाँ दुखुह काजाँ करण बाजाँ ७ जयबोधक वयण ॥  
 साँजाँ सुरेस चढियो सतो १९४ ११ राजामणि बीजो रंघण १९२ ११ ॥ ६ ॥  
 गज १ ठण्णियाँ घण घाँह २ बाँह ३ जणियाँ बाँदाळक २ ॥  
 तणियाँ कैरभ १ तिमीस २ चरम ३ भणियाँ चउ ४ चाळक २ ॥

(सिलह) वारों के १ चिहुर (केश) खड़े हुए 'यहां चिहुर शब्द सामान्य केशों का वाचक है परंतु भड़ शब्द के योग से मूछों के बालों का ग्रहण है जिसका अर्थ है कि वीरों की मूछों के बाल खड़े हुए' तथा वीरों को रोमांच हुए "रोमांच भय से भी होता है और उत्साह से भी होता है" सो यहां उत्साह से रोमांच जानो २ कायर जलते हैं ३ जंगारा ४ हाथियों पर ५ हाथियों के समूह में लगाये हुए वीरघट ६ मांसभोजी ७ आकाश में ८ घोड़ों के समूह में घोड़ों का दिनदिनाना और भाट लोगों का 'जयहो' ऐसा शब्द हुआ ॥ ५ ॥ ९ गजराजाँ पर हाथियों की सिलह को और घोड़ों पर पाखरों को रखकर सेना १० पाज (मर्यादा) पर ११ छलकर अर्थात् मर्यादा छोड़कर १२ बर्षा ऋतु के समय के समाज से (समान) १२ दरवाजे से बाहिर हुई १४ उस सेना के ताप से ११ निर्लेजों को ११ कंप और ११ लज्जावालों को युद्ध का १७ बहुत १८ उत्साह हुआ २० तलवारें म्यानों के २१ बाहिर हुई २२ तोपों की बहुत गंभीर गर्जना हुई दूसरों के २३ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसे कार्यों का वाद्यों से और वचनों से जय का बोध हुआ इंद्र के समान २४ सामग्री से अन्य राजाओं का मौलिमणि दूसरा २५ रत्नसिंह रूपी वह शत्रुशाल चढा ॥ ६ ॥ अब यहां हाडा जजियों की सेना का समुद्र के रूपकालंकार से वर्णन करते हैं कि इस सेना में हाथी हैं सो तो बड़े बड़े २७ मगर २६ हुए और २८ घोंड़े हैं सो ही समुद्र पर चलनेवाले २९ बहल हुए फैले हुए ३० ऊंट ही ३१ तिमिंगिल हुए, और वहां ३२ कालें ही चारों पैरों से ३३ जल को छाननेवाले कच्छ-

मणियाँ? रयगाँ? अमोल रोपे अणियाँ? मोती? रुख॥  
 सोही धणियाँ? सीप? मिळे असिवर? कणियाँ? मुख॥  
 हृद धरम? सीम? गणियाँ रहण ब्रणियाँ मेळ? सुवेळ? बाधि॥  
 खाणियाँ? न होड नाडाँ? खटे ऊफणियाँ हाडाँ? उदधि? ॥७॥

॥ उल्लासः ॥

मँह मह सुगंध? चिक्कसर मळणा, जीतणा तप अहमहें जुई ॥  
 जँह मँह विवाह लाडाँ जुडणा, हाडाँ? धर गँहमह हुई ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

हाडाँ ६? धर गहमह हुई, जाडाँ विरुंद लुभाणा ॥  
 गाडाँ भरि जाडाँ गळाँ, खाडाँ तुरक खपाणा ॥ ९ ॥  
 पंचम? राणी अति प्रिया, सूरजकँवरि? ९४।५ सनाम ॥  
 निज बाँसक कहियो निसाँ, इम साँसक अभिराम ॥ १० ॥  
 करणाँ सो अबही कियो, मरणाँ वेसँ महीप ॥  
 दिल्ली मग मोनूँ दहे, दीजै पग कुलदीप ॥ ११ ॥  
 जीतै रणा पैला जँरै, सुरपुर बसणा समीहँ ॥ १२ ॥

प कहीगई. वीरों के आभूषणों में जो मणियाँ हैं वेही अमूल्य ? रत्न २ बाणों की अनियाँ (नौके) ही जहाँ मोतियों की ३ आंति हुई, उस सेना के धणा (सेनापति) उन मोतियों को उत्पन्न करनेवाली सीपरूप हुए और अष्ट तलवारों समुद्र में रहनेवाले मुख्य ४ सर्प हुई. वीरों के धर्म की सीमा ही समुद्र की सीमा अर्थात् मर्यादा और वीरों का उस सेना में मिलना ही अष्ट तरंगों का बहना हुआ, ऐसे हाडों रूपी समुद्र के बहने में अन्य ५ खोदेहुए नाडे समता में नहीं ६ खटा (टहर) सकते ॥ ७ ॥ ७ नीठी नीठी सुगंधिवाला ८ चून का मालिस (उबटन) कराके चबनों का तप जीतने के लिये ९ में आगे मैं आगे कहती हुई वह सेना १० जुडी ११ जहाँपर विवाह के १२ उत्सव में दुलह जुड़े इसप्रकार हाडों की धरा (भूमि) में १३ अत्यन्त भीड़ हुई ॥ ८ ॥ १४ दुलहों के १५ यश पर लुभाये हुए बड़ी गर्दनवाले तुकों को छकड़े भरकर खड्डों में नष्ट करने के लिये हाडों की धरा में अत्यंत भीड़ हुई ॥ ९ ॥ १६ रात्रि के समय अपने बारे में कहा १७ पति से १८ सुंदर ॥ १० ॥ मरने का १९ बनाव (लिवास) अब ही करलिया ॥ ११ ॥ २० अष्ट इच्छा से स्वर्ग में वास करो

किन्ने सेवा बलमी कदो, दासीविगा नउठ दीह ॥ १२ ॥

मुक्तिकेनेचव जीवगा? मरण? ते सगळे दृष्टि द्याय ॥

हे अगजत उलटोदुर्गा, सोपणा छुटे साय ॥ १३ ॥

इस पदवी हावू? १२०१२ अन्तुज, भिया दहे रोपाळ १८२ ॥

विगासंभव मरिषो बळे, मोने कुजमसिवाज ॥ १४ ॥

नामि बळगादीधी नथी, वामे घरा वरा वाज ॥

सोभी सुणि पळताभियो, सोनगिरो? जसराज ॥ १५ ॥

पिंडदृष्टा जिशाभी भिया, भावी प्रथम भेलो न ॥

दे समुचित भावो दुर्गा, मही विफळ छे मो न ॥ १६ ॥

कदकं सज कीर्ती कर्मण, सो इन नृप समुभाइ ॥

कर्मकर्मण कर्मिणो कर्मण, भूत पुमावरा भाइ ॥ १७ ॥

सो नउदह मजह? १२१२ सन, सिमिन्द, चम्पा? १२२२ ॥

भारित? तपा? १२३२ अह? १३, रक्षियो इन नहवागा ॥ १८ ॥

प्रांतवह? १ पुणे प्रथम, भेद प्रभुजस वाह ॥

कुळदेवी? १२३३ कोर, पापे उभयव प्रसाद ॥ १९ ॥

वेद भिज मुन जगा बळे, सज नक सिपाइ ॥

पाव दिवो उय पागडे, मोव कियो रगा वाह ॥ २० ॥

घमंके जड़ी पाखराँ थाट घोड़ाँ, भमंके झड़ी पाखराँ आगि झोड़ाँ  
 ठहके कड़ी कंकटाँ ठौर ठाई, डहके भड़ाँ बंकड़ाँ घोर डाई ॥ २२ ॥  
 तुलीढालाँ रुड़ी घली कालाँपोँ, अली जोटं जूड़ी हली ज्वाळ तोपाँ  
 कहे एम दोठाँ प्रळे नेमं कोपाँ, लगीं टेक गोळाँ दगो अद्रि लोपाँ ॥ २३ ॥  
 इसो रूप कीधाँ जिके त्रास आणौँ, जिके आगि लीधाँ गढाँ त्रास जाणौँ  
 गझीदे घसाँ घोर घूँ घोर गाजै, विलागा किनाँ डूगराँ बज बजै ॥ २४ ॥  
 जथा कै कंडकै छटा १ मेघ २ जोड़ाँ, मचै सिंधुके मथं पल्लवै घमोड़ाँ ॥  
 बमं झाल जे फाडियाँ काल बाँका, प्रळे जीतरो चिन्ह धारै पताका ॥ २५ ॥  
 कंरी १ सिंह २ बाराह ३ रै तुंडै केती, लसै ग्राह ४ चक्रो ५ मुखी वाह लेती ॥  
 लगाँ नागेशी जागशी नौद लोपै, अंगाँ दागशी लागशी भाग  
 ओपै ॥ २६ ॥

हुवै गैल चोड़ा जठै सैल हूँता, हलै बैल जोटाँ घसाँ बैल हूँता ॥  
 ठही चोट दे झंझरी कोट ठाँगाँ, छैकी पान जे अट्टरै बँट छायौ ॥ २७ ॥  
 टळै ढील लागौँ घसाँ फील टळौँ, हठै नीठि पाँइक १ हलौँ हमलौँ ॥

पाखरें बजौं जिनके १ झोड़ से (टकर से) अग्नि चमक कर गिरने लगी ३  
 कवचों की कड़ियाँ २ टहक (वज्र) कर ४ निरंतर वाय ५ हुआ ७ घायड़ी  
 अर्थात् संयकर घात जाननेवाले धाँके वीर ६ चौके (सचेत हुए) ॥ २२ ॥ ९ झाल  
 की उपमा घला हुआ (दिया जाने योग्य) सुंदर ८ सेना का बड़ा झंडा ल  
 डा हुआ और १० बैलों की जोड़ियाँ जुपी हुई ज्वाला के समान तोपों की  
 पक्ति चली ॥ २३ ॥ ११ मेघ की गर्जना के समान आनों पर्वतों से १२ लगकर व  
 ज्र बोलता है अथवा मेघ में विजली १३ कड़कती है ॥ २४ ॥ १४ समुद्र के १५ म  
 थने में १६ पर्वत के घोर शब्द होते हैं १७ उगलती है १८ सुख १९ ध्वजा ॥ २५ ॥  
 २० हाथी के २१ मृगर के २२ सुखवाली २३ शोभायमान २४ सर्पों के सुख की  
 प्रशंसा लेती हुई २५ जासकी (अग्नि लगाने का तोड़ा) २६ जाग्रित होने वा  
 ली २७ पर्वतों को जलानेवाली २८ शोभित ॥ २६ ॥ २९ मार्ग ३० पर्वत ३१ धृ  
 वभों की जोड़ियों से चलनेवाली तोपें बहुत बैलों से चली ३२ चोट देकर को  
 ट को जर्जर श्रुत (ढीला) करती है ३३ छाकी हुई ३४ बुजों के ३५ मार्ग ॥ २७ ॥  
 ३६ हाथियों के जोड़ों से ३७ पैदलों के

तिकाँग्रग हेरबं१ के छैलै रतूटै, छकायाँ सुरा इरोधरै खैलं छूटै ॥२८॥  
 चढी नाँळियाँ बाहूँ राह चलीं, हलाड़े धजाँ के गजाँ पंति हली ॥  
 लसै आँल १ जंगाल २ सिंदूर ३ सुंडा, इळाँमै धसै धाँवरा पाव उंडा ॥२९॥  
 उठावै कराँ पोरगाँ वे उछाळा, किनाँ लागणाँ राग पैनाग काळा ॥  
 चले कर्णताँलाँ १ उँलाळाँ चलावै, धरे काळ भाँ अदि पँखाळ धावै ३०  
 ठँगो भँद १ मँदाँ २ मृगाँ ३ वंस ठावा, छटा फैलै हालै किनाँ सैल छाँवा  
 खँदी साथ जेता करै दुर्ग खोळा, मही १ रै अँही २ साथ देता मचोळा ॥  
 धराँ रूप खंबी कराँ धूप धारे, नराँ एक १ एको १ हजारों निवारै ॥  
 करंता पँटाँ डोंगा पँबवे करीं ज्युँ, करंता थँटाँ प्राणों मै केँ हरी ज्युँ ॥ ३२ ॥  
 रचै लौर गुँजार रोलबँ रौजी, भँगाणाँ भडाँ रोधँ ओ लंबँ भाजी ॥  
 अँरानाँ हसै डूंगराँ रैखाँ आँटे, छदी जे कराँ सीकराँ गैण छाँटे ॥ ३३ ॥  
 डंगों घीसता साँकळाँ सूतडोरा, धरा थूँ खराँ ज्युँ बखँ खेत धोराँ ॥  
 भला जूँहवे बेरियाँ वँधूँह भेदी, बिजै मित्र जे चित्र संग्राम बेदी ॥ ३४ ॥

उनके आगे १ गणेश का नाम कहकर (निर्विघ्नता से चलने के लिये गणेश का नाम लिया जाता है) २ वकरे तूटले हैं पलिदान होता है और मध्य से परिपूर्ण करने पर रुकने का दुःख छूटता है अर्थात् चलती हैं ॥ २८ ॥ ३ तो पँ ४ रंग विशेष ५ रंग विशेष ६ पृथ्वी में ७ दौड़ने के पैर गहरे छुसते हैं ॥ २९ ॥ ८ सुंड का अग्रभाग ९ मानों गिरनारी राग पर काळा सर्प १० ताड़ वृक्ष के पत्रों के समान कानों को ११ उछाल कर १२ क्रांति १३ पानोंवाले पर्वत दौड़ते हैं ॥ ३० ॥ १४ सज्जित हुए १५ चहाँ भँद, मँद, मृग, ये हाथियों की जाति विशेष हैं १६ शोभा फैलाकर १७ मानों पर्वतों के वस्त्र चलते हैं जिन जिन गढ़ों से १८ भिड़ते हैं उन उन गढ़ों को १९ ढीला करते हैं २० शेषनाग सहित ॥ ३१ ॥ २१ पर्वतों रूपी लंबा सीधा खड्ग सुंड में धारण करके २२ मिटाते हैं २३ हाथी के कानों के आगे मदधारा बहने का पटा कहते हैं २४ मद २५ पर्वत के २६ झरना के समान २७ समूह को २८ प्राणों का भय २९ सिंह के समान करते हैं ॥ ३२ ॥ ३० साथ ३१ शब्द ३२ अमरों की ३३ पंक्ति धीरों की ३५ रोक को ३४ अगानेवाले और ३५ लंबे दौड़नेवाले ३७ क्रोधित होकर ३८ पर्वतों को धूल करने के लिये ३९ सुंड के जल कणों से आकाश को छाँटते हैं ॥ ३३ ॥ ४० पैरों से ४१ खेत सींचने का जल बहने के मार्ग की भूमि भूमि को खोदते हैं ४२ समूह ४३ सेना की रचना को भेदन करने वाली, विजय के मित्र और ४४ युद्ध के चक्रवर्ती ॥ ३४ ॥

इसा रंगभूँ द्रंगरा अट्ट ऊँचा, सिंटावै जिकाँदोठें पंखी समूँचा ॥  
 उदैहाँटकी बंगड़ाँ दंतर्इसा, सुहावै लियौ आर ११ का ससीरसा ॥  
 कसे रेसमी लाल कंठाँ कलावाँ, किनाँवेदिपाराहु १२ भाँराकाँवा  
 सिरीसीसँ कुंभा मणी हेम साँऊ, जथा नारि बँतो जचोळी जडाऊ  
 उभैर घंट भासाँ दुर्पासाँ आरोहै, ससी १ सूर २ रैं बीच ज्युँ मेरु साँहै  
 रणाँके तिकाँ घोर रूढ़ी रंचाई, ठाणँके किनाँ भल्लरी ठोर ठाई ३७  
 नैखी जाँणि भूलाँ जरीतास नाँहीं, मिली तामसी १ राजसी २ वृत्तिमाँहीं  
 प्रकासै किता लंब दंडाँ प्रताका, भलै हूँगराँ सीस ज्युँ तालं भाँका  
 मिले पीठि छत्री मनाँ केक मोहै, सिरे ३ जाणि प्रासादरै गोखँ सोहै  
 कितौ पीठि होदा लसे चित्रकारी, उघाड़ै जिके तुंगँ सोभा अँटारि  
 बडे नाँद भेरी कितौ पीठि बाजै, लखंतौ घटा स्यामरी गाँज लाजै ॥  
 डिगाया डगाँ जे मगाँ डाकँदाराँ, लगा चंड बेतंड यूँ दंड लाराँ ॥ ४० ॥  
 बसो लूमभूमाँ हुवा सज्ज बाजी, तुखारी १ खुराँसा २ भाड़े ज ३ ताजी  
 किता खेत कंबोज ५ बालही क ६ कच्छी ७,  
 उडै फौल लौ लौ फिरै डाँल अच्छी ॥ ४१ ॥  
 धटी ८ जंगली ९ बंगली १० वेग धाराँ,  
 अरबबी ११ इराकी १२ र रूमी १३ अपाराँ ॥  
 लगा पाखराँ १ साज लूमाँ लड़ीसँ, प्रैडीनाँ चलै ज्युँ नटी पट्टीसँ ॥

१ युद्ध भूमि रूपी २ नगर का ३ ऊँची चुँई ४ लज्जित होवें ५ नीचे ६ सर्वत्र  
 ७ सुवर्ण के ८ बंगडों से ९ लंबे दांतों में लगे हुए हैं सो १० मंगल ग्रह और  
 ११ पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान शोभायमान होते हैं ॥ २५ ॥ १२ हाथी  
 के कंठ में महावत के पैर रहने का रस्सा है सो मानों राहु ने १४ सूर्य को १५  
 गोलकुंडा लगाकर १३ घेरा है १६ हाथी के मस्तक का भूषण १७ सुन्दर १८  
 स्त्री के कुर्चों पर ॥ ३१ ॥ १९ चढाये (लगाये) ॥ ३७ ॥ २० डालीं, उत्तम पर्वतों  
 पर ताड़ वृक्ष की शोभा के समान २१ प्रकाशित होता है ॥ ३८ ॥ २३ महल के  
 २२ मस्तक पर २४ झरोखा २५ ऊँचेपन में २६ छत की शोभा ॥ ३९ ॥ २७ नोयत  
 के शब्द २८ छोटे घाव लगाकर क्रोध दिलानेवालों (साँटमारों) ने मांगों में  
 डिगाये इस प्रकार भयंकर हाथी सेना के साथ लगे ॥ ४० ॥ २६ अंग ३० रीति  
 ॥ ४१ ॥ ३१ उड़ने में ॥ ४२ ॥



मिले मोहराँ चो४हराँ पँति मोती, कळा कर्त्तरी जीतपावै कनोती ॥  
 दिपैभाल बैठा तवाँ जेब देता, लसै गल्लकी ग्राव१ भा नैखार लेता  
 चुमै चित्त नासाँ मुड़े बँक चाँडा, गयाँ संकड़ेपंथ छेके छ६ गाडा ॥  
 कबी लेहँ जे राचिपा रेहँ कूदे, सजे डाँगा लंबा सृगाँ मागा सँदे ॥  
 कसंता बिजैमँड कोदंड कंधा, बणावै वृथा वेरैरै जेरँवंधाँ ॥  
 सँटा पालजाळी लटाँली सुहावै, प्रिया नागवाळी लँखे दाग पावै ॥४५॥

करै हँलूरा कँलरा नाद कंठाँ,  
 ग्रँथीला मणी भँलरा१लूमँ२ गंठाँ३ ॥

सचोडा उराँ माँकडा आसणाँटाँ, मँडे पीठ मँचाँ जिसा गाँत मोटाँ  
 जिकाँ गोळ पीँडा उँभै२चाक जोड़े, तिकाँ चामैरी लूमँ१भा लूमँ२तो डे  
 तळोटाँ१खुराँ१थंभ१पावाँ२तैराँजै, सको पिँड१प्रासाद२आधार सँजै  
 जड़ बज्र नाळाँ झड़े फूल ज्वाळाँ, मनोँ मेघ सँद्योत खद्योतँ माळाँ  
 घुजावै धराँ दाबि दे काळ धक्का, पड़े काच ज्युँ आवजावाँ पळका४८  
 फटे कोट चोडा जिकाँ चोट फेटाँ, चँळे सीमँहूँ कुड्यँपट्टी चँपेटाँ ॥  
 नचे बेगमँ अखिँ ताराँ न मावै, गजाँ डाँगाँ लागीँ बर्याँनैँ गमावै ४६

१ कतरणी अथवा केलकी से २ कान ३ ललाट ४ ललाट की दबीहुई हड्डी से  
 ५ शोभा देने हैं उन घोड़ों के नेत्र ६ गंडकी नदीके पत्थर (शालिग्राम) की शो-  
 भा लेते हैं ॥ ४३ ॥ ७ बाँके मुड़े हुए नसिका के मुख (फुरने) चित्त पर चुभते  
 हैं ८ लंगाम के १० चाटने में रंगे हुए ११ काड़ (परिखा; खाई) को कूदते हैं १२  
 दौड़ने में लंबाई सजकर सृगों के मान को १३ काटते हैं ॥ ४४ ॥ १४ विजय  
 की शोभा १५ धनुष १६ शरीर के १७ जेरबंध वृथा बनाते हैं; अर्थात् बिना  
 जेरबंध ही जिनके कंधे झुके रहते हैं १८ गर्दन के बालों की १९ केशवाली २०  
 लटावाली सुहाती है २१ जिसको देखकर सर्पिणी जलती है ॥ ४५ ॥ २२ कंठ  
 भूषण २३ अवाच्य शब्द करते हैं २४ गुथे हुए २५ भालरीवाले २६ बालछा (पूँछ)  
 २७ पीठतंग २८ रचे २९ माँचा (पिलंग) ३० शरीर में ॥ ४६ ॥ ३१ चमर के  
 गुच्छे की शोभा को ३२ पूँछ (बालछा) ३३ पैर के नीचे का भाग अर्थात् फर  
 से नीचे और घुटना से ऊपर का भाग ३४ सदृश है सो शरीर रूपी महल की  
 नींव को ३५ सजते हैं ॥ ४७ ॥ ३६ चमक सहित ३७ जुगनू की ३८ पंक्ति ॥ ४८ ॥  
 ३९ जलायमान होती है ४० सीमा (नींव) सहित ४१ (दीवार) पट्टी की दौड़ में  
 ४२ चपट लगने से ४३ नेत्रों में ४४ नेत्रों की पुतली ४५ अस्त हुए हाथियों को ४६  
 साई में गुमाते हैं ॥ ४९ ॥

मुड़े तार कच्चे किनाँ बर सच्छी, अटैफार जे पंचपही धार अच्छी ॥  
 गिह्याजै पटोमें किनाँ तोपगोळा, टळावै टळै बांगरे नागटोळा ५०  
 धरै केक सौभा अटे चक्र धावाँ, फिरै पाँन१पाँणी२अजे ज्यौं फिरावाँ  
 पड़े बक्र बीची कितौं नांगपेचाँ, मिलै आथसू भी समैसाथ मेचाँ ५१  
 लैसे रीति नाना खुराँ अंक लागीं, बणावै धरा चित्र नाना बिभागीं  
 हसावै भडौं ताँखंडौं लंघि हाथी, उडै पाव ज्यू ताव दौं भै ईळाथी ५२  
 छुवता भैलै ओभैलै आप छाया, जिके अंबु १ अप्वित्त १ के बायु  
 ३ जाया ॥

उडंता मृगाँ४कंध कोदंड आखौं, त्रि३बैरागीं उरै होडकै बैर ताखौं ॥  
 नचै थुंग थेई रचै भेद न्यारा, मिडैवै खलाँ हैदलाँ वेग भारा ॥  
 सजीलां भडौं प्राण जोड़े सुहावे, बहैभूपै होदौं कटारां बुहावे ५४  
 खगाँ जीतगाँ धाँवसँ दौं खेलै, मलंगे तडौं माँकडाँ पीठ मेल्है ॥  
 धौं जोमँ माता ईसै रूप घोड़ा, चलै थैट्ट अँडौं घलै बँट्ट चोड़ा ५५

१ जल में मच्छी फिरै उस प्रकार २ फिरते हैं ३ समूह घोड़े की धौरित रंचित  
 आदि पाँचों गतियों से ४ अत्यन्त दौड़ने में ५ हाथियों के समूह को ॥५०॥  
 गोलकुंडा की दौड़ में दौड़कर कितने ही घोड़े शोभा धारण करते हैं सो  
 उनकी बराबरी करने के कारण पवन और पाँजी६अथ भी७उन माग में फिरा  
 ते हैं ८देवी ९लहर से १० सर्प की गति के समान ११ धन से भी १२ समय के  
 साथ १३ मौका मिलता है ॥५१॥ १४ शोभायमान १५ चिन्ह १६ आश्चर्य कारक  
 अनेक प्रकार के विभाग १७ चंचल वीरों की १८ अग्नि की ताप से जलें इस प्रकार  
 १९ पृथ्वी से पैर उठाते हैं ॥ ५२ ॥ २० रान का स्पर्श होने से जलते हैं और  
 अपनी ही छाया से २१ चमकते हैं के घोड़े जल २२ अग्नि और पवन से २३ उत्पन्न  
 हुए हैं २४ धनुष २५ वरण (कोट) संबंधी गढ़ को; या तीन कोटवाली खाई को  
 फांदकर २६ इत पार होकर बैर लेते हैं २७ अंदन करावे २८ घोड़ों की सेना २९ वेग  
 के समूह ३० सभे हुए वीरों को ३१ प्राणों के बराबर सुहाते हैं ३२ रूप लेकर ३३  
 हाथियों के होदों में कटारों के वार करवाते हैं ॥५४॥ वे घोड़े ३४ पक्षियों को  
 जीतनेवाले ३५ दौड़ने में ३६ पेच खेलते हैं ३७ बाँसों तक फांदकर ३८ लंगूरों (काले  
 मुख के बन्दरों) को पीछे रखते हैं ३९ अत्यन्त ४० बल वा घसंड से ४१ पुष्ट  
 ४२ इस प्रकार के ४३ समूह ४४ घसंडी ४५ मार्ग ॥ ५५ ॥

खुराँ ने उर्राँ १ पाखराँ २ नोद खुल्लौ, तिकाँ बाँहरी इंदरै चाह तुल्लौ ॥  
जिसा अँब १ वै सोहणा पर्वजाणे, तिसा जोहँ २ आरौहणाँ मूँछ ताणे  
लसै अँज पूरे १ तिके फोज लाडौ २, गर्ज ३ बिप्र ४ भीडू दया ५  
लाज ६ गाडा ॥

बली ७ दीन बंधू ८ धरै वंसवानाँ ९, अँकूपार गंभीर १० रोलै अँरानाँ ११ ॥  
दिपै १२ मेयँ राधेयँ सर्वस्व दानी १३, महाकष्टभीमाँगवै भूप मानी १४ ॥  
हुवाँ प्राँणासँ नथी झूठ हेरै १५, फँसीदीठ पैला अँणा पीठ फेरै ॥  
सदा एक १ राँखीबँती १५ धर्मसेवी १६, खँरा जुद्ध सिंधू बिजेनाव  
खँवी १७ ॥

हठी जेन भागे १८ न भागाँ प्रहारे १९, धराँ लंगराँ संगरौ पाव धारै २०  
अजोरौ नराँलेण आँटा उधारा २१, सजोरौ हसा देसा वाँटा सुधारा २२  
महा स्वामिधर्मो २३ लियाँ हाथ माथा २४, गवे देसदेसाँ जिकाँ पैथ  
गाँथा २५ ॥ ६० ॥

उराँ धारि बंदूक २६ मोती उतारै, सरौ २७ मारि जाता खगाँ गैसाँ सारै

१ घोड़ों के चरगा ऋषणा २ शब्द ३ उन घोड़ों पर सवारी करने की इच्छा  
होता है ४ घोड़े ५ समय अथवा युद्ध ६ जोध (वीर) ७ चढ़नेवाले ॥ ५५ ॥ = शों-  
आयमान ९ मराक्रम के पूरे १० सेना के दुल्लह ११ वंश के चिन्ह को धारण करने  
वाले १२ गम्भीरता के समुद्र १३ युद्ध में १४ निरंकुश ॥ ५७ ॥ १५ शोभा देते हैं  
१६ क्राज्जि में १७ कर्ण के बड़े कष्ट में भीमसेन के समान अंगवाले १८ प्राणों  
का संदेह होने पर भी झूठ नहीं बोलते १९ सर्प के समान हाँपनेवाले २० श-  
त्रुओं की २१ सेना की ॥ ५८ ॥ २२ एक स्त्री का २३ नियम रखनेवाले २४ धर्म  
की सेवा करनेवाले २५ सच्चा २६ युद्ध रूपी समुद्र में २७ चलानेवाले २८ युद्धों  
में पर्वतों रूपी लंगरों को धारण करनेवाले २९ निर्बल मनुष्यों का उधारा  
३० बैर लेनेवाले और बलवानों को जारकर ३१ ओछ (सुधार पूर्वक) बदलाने-  
वाले ३२ स्वामी के कार्य का सुधार करनेवाले और सरने के लिये अपना  
माथा हाथ में रखनेवाले ३३ अर्जुन के समान ३४ कथा ॥ ६० ॥ ३५ आकाश में  
जातेहुए पाक्षियों को वेधन करते हैं.

बळी तोमर<sup>१</sup> २८ दावके चाव बांधै, समग्र<sup>२</sup> गुण<sup>३</sup> खगगरा मग-  
साधै ॥ ६१ ॥

लगे लाह कासू ३० क्रिया बाह लीधौ, कटारी ३१ छुरी २ साँकड़े  
सिद्ध कीधौ ॥

महावीर पाड़े पछाड़े मंडंदाँ ३३, गहे दंत रोकै मंडाळाँ गडंदाँ ॥ ६२ ॥  
सजे ओपरा टोप<sup>१</sup> सोभा सिखाळी, जिकै भीड़ियाँ दंसै २ नागोद ३  
जाळी ४ ॥

सबाहु<sup>१</sup> ५ ऊरु ६ जंघा ७ संगी, चहै बंस वीलहा रहै एक १ रंगी ॥ ६३ ॥  
लसै सक जोड़े इसो चक्र लीधो, कहे थानसू भूप प्रस्थान कीधो ॥

जठै रोकियो पुत्र चौथो ४ जिकोभी, तजे प्राण असाहुवो संग तोभी  
भड़ा ले अठी हलियो साथ भाऊ १ ९ ५ १,

पितारो बडो भक्त सीमा पुगाऊ ॥

क्रमे चंपैवाड़ी कनै आदि १ केरा,

दिया जैवती १ ८ ८ १ ताळ १ भूपाळ डेरा ॥ ६५ ॥

उठै फोजरी हौजरी दीठि<sup>३</sup> आताँ, बणाई किता सूचकाँ छत्रवाँतां ॥

जणाई जिकाँ बाठलो १ १ ४ १ सेर १ ६ ३ १ २ जायो,

अजे नाहयाँणाँ तणो नाहिँ आयो ॥ ६६ ॥

कथासो सुणी १ नाँ सुणी भूप कीधी, दुजिंदाँ १ कविंदाँ २ मंडाँ ३ रीकंदाँ ४

१ भालों के २ उत्साह ३ बघाते हैं अथवा बांधते हैं ४ सब गुणों से ५  
खड्ग के मार्ग (पैतरे) साधते हैं ॥ ६१ ॥ ६ लाभ ७ बर्छी के ८ चलाने की  
क्रिया को लिये हुए ९ सिंहों को १० मदचाले ११ हाथियों को ॥ ६२ ॥ १२  
शोभावाले १३ शिरघ्राण सभते हैं १४ अधिक १५ कवच १६ पेटी १७ पड़त-  
ला १८ दस्वाना १९ छुटनों का कवच २० जंघा का कवच २१ वंश का मार्ग  
चाहते हैं २२ शोभायमान २३ इन्द्र की बराबरी में २४ सेना २५ प्राण की आ-  
श छोड़कर ॥ ६३ ॥ २६ चला २७ चलकर २८ स्थान का नाम है २९ समीप ३० प्रथम  
के ॥ ६४ ॥ ३१ वहाँ पर सेना की हाजरी ३२ दृष्टि में आते ही ३३ जानकारी क-  
रनेवालों ने ३४ छल की बातें ३५ थाणा आम का पति ॥ ६५ ॥ ३६ अष्ट द्वा-  
श्यों को ३७ अष्ट कवियों को ३८ वीरों को ३९ दान दिया-

शत्रुशालका भाऊको पीछा भोजना ] सप्तमराशि-एकादशमयूख(२६८५)

कियो सिंह १८९१ कासार २ विश्राम बीजो ३,  
जठेही हरीदास पूगो कवी जो ॥ ६७ ॥

मन्त्रीजो १ कवीजो २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

कैनेँ भूपरै बैशाँ एँहो कहायो, अबै हूँ खरारूढर्हा होख़ा आयो ॥

दियो खासहाथी १ मिले तास दानी, गजी २ साथ हालै सदा सो गुमानी  
सुखी कीरती छाँकवालै सवादी, बिनाँ नारि हालै नथी कील बादी  
करी १ गैल तो एक दीधी करेणू २, बल्ले डाँकदारौ सजे लंब बैशाँ ६९  
गजी १ साथ गै २ पौत डरे पुगायो, इलानाम राकेसँ जोड़े उगायो

सतै १९४१ कीध विश्राम तीजा ३ सिद्धानै ३,  
जठै रीक बूँठो बल्ले इंद्र जाणै ॥ ७० ॥

भजे वास चौथो ४ नदी मेरू ४ भै ३ डै, नैराँनाह सँ नाँनखाँ दंग नैडै ॥

क्रमे पंचमौ ५ वास नीबोद ५ कीधो, दछाँ पौत वंसी छवो ६ जाइ दीधो  
उठै थंभि ३ वोर दीहँ लाखाँ उँडाऊ,  
दछाँलै भटाँ भेजियो दंग भाऊ १९५१ ॥

जिकी वात भाऊ १९५१ घखी नीच जाणी,  
पितारै मँतै नीठि ३ सोही प्रेमाखी ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

१ सिंह तलाव पर दूनरा सुकाम किया वहाँ पर सँढायच शाखा का हरिदास नामक चारण पट्टचा जिलने शत्रुशाला की मान हानि करके शत्रुशाला के दिये हुए घाँड़े की उदयपुर में दुर्दशा की थी ॥ ६७ ॥ २ पास ३ वचन ४ पेसा ५ गधे पर चढ़ने के लिये ही आया हूँ ६ आगे हथनी होने पर चलनेवाला ॥ ६८ ॥ उस कीर्ति की ७ लुसि के = स्वाद लेनेवाले ने यह सुना कि ८ दृष्ट से बंधा हुआ हाथी हथनी के साथ बिना नहीं चलता १० हाथी के साथ ११ हथनी १२ सारंगमारी ने १३ लम्बे भाले सजकर ॥ ६९ ॥ १४ हाथी १५ पात्र (चारण) के डेरे पुगाया १६ पृथ्वी पर चन्द्रमा के बराबर उज्ज्वल नाम किया १७ वर्षा की ॥ ७० ॥ १८ चौथा सुकाम किया १९ मेरू नदी के समीप २० रूपानि २१ नामणा नगर के समीप २२ पड़ाव ॥ ७१ ॥ २३ दहरा २४ दिन तक २५ उड़ानवाला भाऊ को बुन्दी २६ नगर में भेजा २७ पिता की सलाह से २८ कठिनाई से २९ प्रमाण करी ॥ ७२ ॥

वारण१ हय२ भूखणा३ बंसणा४, सतै११४।१ करे बखसीस  
 भाऊ१९५।१ घाछा भेजियो, नीठिहठां अवनीस ॥ ७३ ॥  
 भाऊ१९५।१ साथे भेजिया, भड़ौ अरथ भूपाळ ॥  
 साठि६० तुरग सिरुपाव सत१०० दीधा दस१० दंतौळ ॥ ७४ ॥  
 भेजे इम अणियां भँवर, जेठी१ कँवर जनेस ॥  
 वंसी६हूँ चढियो बळे, धन चय देणा धनेस ॥ ७५ ॥  
 क्रमियो नहँ भारत१९५।४ कँवर, पाछो प्रसर्भ प्रकास ॥  
 कहियो छोडे साथ किम, दुलभ पितारो दास ॥ ७६ ॥  
 बीठळ१९३।१ सो नायो बळे, थाणै पुर जिणायान ॥  
 सूची सो खळ सूचकाँ, कीधी भूप न कान ॥ ७७ ॥  
 आप करे दरकूच इम, मथुरा जाइ महीप ॥  
 पर्व माघ११ सित१ पूरणा१५, दान किया कुळदीप ॥ ७८ ॥  
 मुंडणा१ न्हावणा२ श्राद्ध३ मुख, साधे पूरव सूर ॥  
 बखसे धन कीधा बळे, दुजरजाँ दुख दूर ॥ ७९ ॥  
 तारतुळा१ हाँटकतुळार, एक१ एक१ दै आप ॥  
 सुरभी आठ समेत सत१०८, दीधी दीन दुँराप ॥ ८० ॥  
 कनक१ कोस सींगौ२ सज, रजत१ खुगौ२ अभिराम ॥  
 इम गोर्गण दीधो अधिप निर्यत उवारणो नाम ॥ ८१ ॥  
 हुई कटकै अब हाजरी, मथुरा नयै मुकाम ॥  
 सब कुँसुभ१ केसर२ बसणा, तुले बराती तैम ॥ ८२ ॥

१ हाथी २ वज्र ॥ ७३ ॥ ३ हाथी ॥ ७४ ॥ ४ सेना के अग्रभाग का रक्षिक ५  
 ग्राम का नाम है ६ धन का समूह देने में ७ कुवेर ॥ ७५ ॥ ८ घट करके ॥ ७६ ॥  
 ९ घुट ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ १० उत्तम ब्राह्मणों के ॥ ७९ ॥ ११ चाँदी की तुला १२  
 स्वर्ण की तुला १३ गौर १४ दुर्लभ ॥ ८० ॥ सोने के सींग और १५ चाँदी के  
 खुर १६ सुन्दर १७ गौरों का समूह १८ निश्चय ही १९ अपना नाम या की रखने  
 के लिये ॥ ८१ ॥ २० सेना की २१ नगर २२ कुसुमा के रंग में २३ तहाँ ॥ ८२ ॥

कहियो नृप आपण सकळ, वीर बरातीवेस ॥

एक दुलह १ बाणियो अठे, सोहै पूरण सेस ॥ ८३ ॥

कथन हास साँचो करण, वीराँ दै जस बोल ॥

भूप भाट समुचित भंगो, दुलह बणायो दोल ॥ ८४ ॥

बरसो दुलही १ दिवबधूर मन जिण आणि मरोडै ॥

वर कंकण १ वर बंधियो, माथै धरियो मोडै ॥ ८५ ॥

हुकम दीध तिखानूँ हसे, हालण आप हरोल ॥

विणामाथै जूझण बळे, बंदी वदियो बोल ॥ ८६ ॥

मेचक २ फागुण १२ पंचमी ५, चढे अडर चहुवाण ॥

आयो पट्टण आगरै, परदळ देहण पाण ॥ ८७ ॥

इति श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-  
वसुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे यवनेन्द्रशाहजहांनिदेशाद्वाराशिकोदप्रक्ष-  
वर्तितयोरंगजेवसमरार्थबुन्दीशशत्रुशाल्यस्यबुन्दीनगरादकवरपुरगम-  
नमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदितस्त्रयोविंशत्यधिकद्विशततमः ॥ २२३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुपहु सता १९४१ आगम सुनत, हरखिय साहजिहान ३९१२ ॥

१ पीद ॥ ८३ ॥ २ उचित ३ कहकर ४ दोला नामक भाट को ॥ ८४ ॥ ५ अण्-  
रा को दुलही करने का घमंड ६ उस दुलह ने ७ अष्ट कंकण डोरड़ा हाथ के  
बांधा ८ विवाह करने का मुकुट ॥ ८५ ॥ ९ चलने का १० अपने आगे ॥ ८६ ॥  
११ कुष्माण्ड १२ पत्तन (नगर) १३ दवाने को १४ बल से ॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में बादशाह शाहजहां की आज्ञानुसार दाराशिकोह के  
पक्ष में होकर औरंगजेब से युद्ध करने के लिये बुन्दी के राय शत्रुशाल का बु-  
दी से प्रयाण करके आगे जाने का न्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और  
आदि से २२३ मयूख हुए ॥

बूंदीपति बुल्लयो विरंचि, दूजे २ दिन दीवान ॥ १ ॥

मुगलदसता १९४१ जातहि मिल्यो, लेत नयन उर लाइ ॥

सुत१की वय२की सदन३की, दर्ई सरम बिरुदाइ ॥ २ ॥

सप्तहजारी ७००० मनसब १ रु, सह सिंधुर २ हय ३ सख ४ ॥

प्रीत दये दस १० परगना ५, बिबिध आभरन ६ बस्त्र ७ ॥ ३ ॥

गजपहाड़ १ गज १ अरु अरब २, फतेजंग २ जवफीत ॥

पहु सुनिमे दस १० परगनन, अभिधा समर अभीत ॥ ४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

तहँ आगर १ सागर २ छवडाँ ३ तिम, इत सिरोंझ ४ सारंगपुर ५ हु इम ॥

भेलसा ६ रु बालाभेटा ७ दिक, सत ७ दये निजसीम प्रसाँदिक ॥ ५ ॥

इत वाराँ १८ रु बरोद २ १ आढर्यतम, संगहि खेराबाद ३ १ ० रीझ सम

जगतसिंह १ ९५१ कोटा बिलसँ जिन्ह, यह त्रय ३ दिय तासों उतारि इन्ह

अनुजंनु त्रय ३ रु मुकुंद १ ९४१ अवंतिथै, दपितप्रान रन साहअ-

रथ दिय ॥

जगतसिंह १ ९५१ ताके तनूज जहँ, कोटापति भोगत तीन ३ नकहँ

ता सन लै रु सता १ ९४१ हिँ दये त्रय ३, भो इम साह ग्रस्यो संकटभय

पै मुकुंद १ ९४१ माधव १ ९३२ सेवौपर, सुमिरन आनि तथासित सत्वर ८

ओर त्रय ३ हिँ तेसे इहिँ अप्पिय, थिर कोटाहु कृपाविच थप्पिय ॥

त्रय ३ हिँ छिन्नि वाराँ १ मुख तासों, संभर पटलिखे सुखमासों ॥ ९ ॥

पहु दस १० पाइ परगनाँ जंपित, अमलकरन पठयो निदेसइत ॥

भुजवला तैथ अमलकिय भाऊ १ ९५१, यह उदँत कछु गिनहु अगाऊ

महिपहिँ दै इम रीझ मुदित मन, जानि बहुरि सुत १ भ्रातर २ भतीजन

१ सभा में बुलाया ॥ १ ॥ २ घर की ३ स्तुति करके ॥ २ ॥ ४ हाथी सहित ॥ ३ ॥

५ पहाड़ गज नामक हाथी ६ घोड़ा ७ बेग का समूह ८ हे प्रभु ९ नाम ॥ ४ ॥ १०

प्रसन्नता से ॥ ५ ॥ ११ अत्यन्त धनवान् ॥ ५ ॥ १२ छोटे भाई को १३ उज्जैन

१४ प्यारे प्राण ॥ ७ ॥ १५ चाकरी पर १६ शीघ्र ॥ ८ ॥ १७ आदि १८ बहुवाण (श-

त्रुशाल) के पट्टे में १९ परम शोभा से ॥ ९ ॥ २० तहाँ २१ वृत्तान्त ॥ १० ॥



बादशाहका हाडोंको बलसीस देना] सप्तमराशि-द्वादशमयुख (२४८९)

पूछि नामश्रवण२इच्छ१इच्छ१प्रति, अप्पन लग्गो खिलत अर्घ्यअंति१२  
अप्पिय प्रथम१ कुमार भगवंत१९५३हिं, इहिं सु लयो न मन्नि नै-  
यसंतहिं ॥

पूछत कारन भूप पयंपिय, इहिं ओरंग४०३कुमार स्वामीकिय १२  
तातैं दंत रावरो लेत न, बैगी यह इतके समवेतन ॥

मुगलदकहिय ओरंग४०३हमारो, नृपसुत कहि तूही किम न्यारो  
भूपहु साह सैनकरि भाखिय, लेहु खिलत प्रभुमत अभिलाखिय  
तदपि खिलत न लयो भगवंत१९५३१२ सु, अकिखिय हम लौहैं इ-  
तके असु ॥ १४॥

साहहु तब हसि कुमार सराहो, चिह्नन निप न लिपन जल चाहो  
दूजो२ खिलत२ दयो सुख मोदित, हुलसि कुमार चोथे४भारत  
१९५३१२ हित ॥ १५ ॥

खल स्वामी किय साहसुजा खल, साह कुपित इमं आनिभृकुटि  
सल ॥

कहि दुस्सह हेलैन मुहुकम१९४१५३ कंहैं, तीजो३ खिलत३रिसाइ  
दयो तंहैं ॥ १६ ॥

आकोसुत जेठो१ जोरावर१९५३१४, दयो खिलत४ चोथो ४ तिहिं  
सादर ॥

आको अनुज काथित छहोदकम, सगतसिंह१९५३१५ जगमोहन  
१९५३१६ सप्तम७ ॥ १७ ॥

पंचम५छहदखिलत तिन्हं पावत, इतदगवैरिसल्ल१९४३सुत आवंत  
जेठो१ वह गोपाल१९५३१७ बुल्लि जहैं, ताहि खिलत७ सप्तम अ-  
प्यो तंहैं ॥ १८ ॥

१ बहुत मूल्य के ॥ ११ ॥ २ नीतिवाल् ३ राजा ने कहा ॥ १२ ॥ ४ दान ५ हथर  
के साथ [इनके] शत्रु हैं ६ हे राजपुत्र ॥ १३ ॥ ७ प्राण ॥ १४ ॥ ८ चिकने घड़े  
पर ॥ १५ ॥ ९ शाहजहाँ के द्वितीय पुत्र का नाम है १० इसकारण ११ अपराध  
॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

इंद्रसल्ल१९४२ सुत दुव२दृग आये, बलिं इनछोर१९५३८ गुमान  
१९५८।९ बुलाये ॥

तीजो३अरु अष्टम८क्रममें तिन, अष्टम नवम९खिलत८।९पाये इन्१९  
सुत दूजो२मधु१९५३१०राजसिंह१९४१४सन, × × × ॥

सता१६४१अनुज छटो६ अरु सप्तम७, उदय१९४६।११ मूर१९४१  
७।१२ आँवहय वर विक्रम ॥ २० ॥

एगारहम११ बारहम१२इनकों, खिलत११।१२दये संमुचित लखि  
खिनकों ॥

महासिंह१६४१।१३ नमि नवम९ नृपालुंज, भट लिय खिलत१३  
तेरहम१३ अतिभुंज ॥ २१ ॥

ताहीके तनयहु जेठे१।३त्रय, मान१९५।१।१४रु कनक १९५।२।१५  
लाल१९५।३।१६ विक्रममय ॥

चहुदहम१४ पंद्रहम१५ खिलत१४।१५ चदि, सह सोलहम१६मिले  
इन्ह३ संगहि ॥ २२ ॥

इक१भगवंत१९५।३।१न लिय तिनमें अरु, सूचिय हम इंतके सैल१  
नखरु२ ॥

तदंनु समीप बुलाइ सता१९४१ तँहँ, कटि तस धरि निज खास  
खगंग१ कँहँ ॥ २३ ॥

नृपहिं पास बैठानि ठानि नुतँ, सो नृपअंक धरयो दारा४०।१ सुत  
पलित१पट्ट२सुत३सूचि अवधिपर, कहिय त्रानि तीन२न अव तो कर  
पानी१ दृग२ गङ्गद१ स्वर२पावत, दिय भँरँ साह नृपहिं विरुदावत

१ फिर ॥ १६ ॥ २ नाम ॥ २० ॥ ३ उचित ४ समय देखकर ५ राजा का छोटा  
भाई ६ महाबाहु ॥ २१ ॥ ७ पराक्रम सहित ॥ २३ ॥ ८ इधर को रोकने के लिये  
पर्यंत और मारने को निह हैं, तथा नगर को निषेधार्थ में रक्तवाजावे तो यह  
अर्थ भी हो सकता है कि हम इधर की भूमि को स्थिर रखनेवाले पर्यंत नहीं हैं  
किन्तु वन (कर) हैं ९ जिस पीछे १० खड्ग ॥ २३ ॥ ११ स्तुति १२ राजा की गाँद  
न अपने पुत्र दाराशाह को रक्खा १३ अपने श्वेत केश १४ रक्षा ॥ २४ ॥ १५ भार

बादशाहकाराजाकोदाराकीभलाभनदेना] सप्तमराशि-बादशाहमुख (२६११)

उर लगाइ दारा ४०।१ नृप अकिंखय, रघुवर जो धर १ पर सिर २ र किंखय  
तो गहिय अप्प १ हि रहिहो तिम, प्रभु १ पीछें एसहि दारा ४०।१।२ इम  
हृद १ नपति यह कहि ठहोहुव, दुपयन धरत कैनक शंखल दुव २  
पिक्खि सु कुंम्मकुमर नर्म पचिय, रायसिंह १ कीरतिसिंह २ राचिय  
कहिय सता १९४ नृप जैरठ कहावहु, पय लंगर धरि किम छविपावहु  
अकिंखय अप्प हूँपो रन रहनों, गिनहु लज्जलंगर १ नहि गहनो॥  
अति भर कष्ट तदपि जो आवहि, आइअद्रि इनमें उर भावहि २८  
इनहि घंसीटि भजै तब अप्पहु, धिर रहि हास्य जथामति अप्पहु ॥  
कूरमनृप जयसिंहके कुमर, तहँ यह सुनि चुप भये च्हीतैतर ॥२९॥  
सिक्ख भई बलिसब भट सभ्यन, अनिय साह सुभविधिविनु लभ्यन  
तव सहाय बुंदीपति तावहु, अप्प सिबिर दारा ४०।१ लै जावहु ॥३०॥  
सता १९४।१ कहिय दारा ४०।१ प्रभुपासहि, बहु विलासहु सुख भोग-  
विलासहि ॥

हम अवरंग ४०।३।१ मुराद ४०।४।२ हटावहि, उँपदा १ विजय २ नि-  
वेदन आवहि ॥ ३१ ॥

साह कहिय पुर्वहि बरज्यो सुत, यह गो तउ भजन अत्रंति उत  
इहि बरजत हम अबहु रहन इत, मानत सो न सूढ बय मदमित ॥  
यातै नृप तवसंग पठावत, याहि सरन याहि न भय आवत ॥  
तू नृप १ अरु कासिय २ जाफर शनिम, अरु साइस्तेखान ४ चउम ४ इम  
चपारि ४ न सरन करत सुत मैं चहि, बिधि कछु याहि वचावहु हित वैहि

॥ २५ ॥ १ खड़ा हुआ २ दोनों पैरों में ३ स्वर्ण के ४ लंगर पहने था ॥ २६ ॥ ५  
जैपुर के कढ़वाहे के कुंवर ने हंसी की ६ बुढ़ा ॥ २७ ॥ ७ शत्रुबाल ने कहा कि  
बुद्ध में खड़ा रहना है इसकारण वे ८ लज्जा के लंगर हैं शृणु नहीं हैं ९ बुन्दी  
का आडाबला नामक पर्वत इन में उलझैगा १० खँचकर ११ आप भी १२ खड़े  
रहकर १३ बहुत लज्जित होकर ॥ २६ ॥ १४ नजामदों को १५ तहाँ १६ डेरे में  
॥ ३० ॥ १७ केट ॥ ३१ ॥ १८ पहिले ही १९ उजैन ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ २० हित करके

भूपकहिय तउ सिविर न भेजहु, प्रस्थित होहिं हमहिं लौ यह पहु ॥  
 पै इक अरज सुनहु दिल्लीपति, अजलौक हम जिते नम्र अति ३४  
 साधत हुकमरावरो सबविधि, निजधर्महिं रखन रंक कि निधि ॥  
 हम निजधर्म भंगकरि हजरत, होत मृतक जियतहि स्वदिष्ट हत  
 प्रभु हम धर्म भंग जनि पारहु, पुनि सब जिततित मरन प्रचारहु ॥  
 हम सिर १ धर २ निज देत धर्महित, याहि रखिख धन गिनत  
 अपरिमित ॥ ३६ ॥

पै सुतको प्रभुके प्रपितामह ३१।१, गढ आमेर व्याह किय १ साग्रह  
 बलि प्रभुपिता ३८।१ जौधपुर व्याहे २, ए दुव २ विधन मुख्य अवगाहे ॥  
 इन २ करि धर्म चतुर्थ ४हु अंस न, विद्यमान अब बाहुज २ बंस न ॥  
 सुनहु पुव्व स्वामी अकवर ३७।१ सन, सत्त ७ करार लहे नृपसु-  
 र्जन १९०।१ ॥ ३८ ॥

दुर्ग तवहि रनथभनाम दिय, कोलहु नियत लेख दल ए किय ॥  
 न केनी दैन १ जान नोरोजन २, संसर्ग गमन इक १ आयुध मन ३ ॥ ३९ ॥  
 कवहु करै न अटक उलंघन ४, साह दाग न धरै हय संघर्न ५ ॥  
 बंब मुखपतोरन लग बजै ६, अंज अनुगवहे संग न सज्जै ७ ॥ ४० ॥

लंघन १ संघन २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अटक पार न गमन ४ यह इनमें, खल पन मिलतजात उत खिनमें  
 पुव्वहु सुर्जन ३८।१ लगे पठावन, रतन १९२।१ भूप न गये रहै रावन  
 करि बल सज्ज मरन स्वीकृतकिय, अटक गमन ४ तन १ मन २ करि,  
 उज्जिय ॥

१ आर्यलोक ॥ ३४ ॥ २ धन ३ अपने भाग्य से हान ॥ ३५ ॥ ४ भेजा ५ प्रमाण  
 गहित ॥ ३६ ॥ ६ आप के प्रपितामह ने ७ आग्रह सहित ॥ ३७ ॥ ८ क्षत्रियों  
 के वंश में ॥ ३८ ॥ ९ निश्चय १० लिखावट के पत्र से ११ कन्या १२ सभा में  
 ॥ ३९ ॥ १३ अटक नदी १४ घोड़ों के समूह में पादशाही दाग नहीं लगावेगे  
 १५ मुख्य द्वार तक नगारा बजेगा १६ आर्य राजा के सेवक हांकर साथ नहीं  
 जायेंगे ॥ ४० ॥ १७ रावण के समान हठ करनेवाला ॥ ४१ ॥ १७ सेना १८  
 छोड़ा ॥ ४२ ॥

प्रभु अप्पहु जब तत्थ पधारे, नृप हम सबहि रहे रुकि न्यारे ॥४२॥  
मम काका संगहि गय माधव १९३।२, धी हित गिनि तुम कियउ  
धराधव ॥

हुते कहा न और दैवहित, बुंदिय देस दयो बसुवर्धित ॥४३॥  
बुंदीमाहिं मऊ १ तिम बाराँ २।१, लाखहु प्रान २ बुंदी १ बपुँ २ लाराँ ॥  
सोहि प्रान तुम कहि समप्पिय, स्वास रहित बुंदी प्रभुअप्पिय ४४  
हमरी १ भुव विधिवस तुमरी २ हुव, धरयो हमहु आश्रय प्रभुको धुव  
धर्म रहयो गिनि भूदुख २ न धरयो, सब अज्जन प्रभुहुकम अनुसरयो  
अटकहिं लंघत रुक अज्ज इम, तह माधव १९३।२ पायउ प्रसाद तिम  
यह न गिनी धर्महि जिहिं उज्झयो, साधन जाहि लोभ इक सुज्झयो  
अरि मम कोहु सबल जब अहँ, लव तव पलटत यह न लगैहँ ॥  
इम न इक्खि काका आढ्यंकरयो, बुंदियं प्रान जु देस सु वितरयो  
देते अप्प और बहु देसहि, बनाते सु हमतै सु विसेसहि ॥  
तो हि उचित न परंतु अप्प तव, सो मम जीवन देस दयो सब ४८  
को तहँ मंतु अटकविनु कहिय, बलि अब दैन हेतु का बैहिय ॥  
आयउ करै न जनैक सुनि आतुर, तिम ओरहु हुव चलान त्वराँतुर  
आतुर १ रातुर २ अन्तपानुप्रासः ॥ १ ॥

रोकि सबन मै तव तत्थ रहयो, चित्त उदय हजरतकोहि चहयो ॥  
आये आप संग तव आये, समुचित दर्महु सबन पुनि पाये ॥५०॥  
तबहु मऊ १ बाराँ २ न दईतुम, सेवक भयो विदल जाँतीसुम ॥  
दिय अब प्रभु किहिकारन द्वेही, वितरन विनहु हुकम सिरवैही

१ बुद्धि ये २ भूपति ॥ ४३ ॥ ३ बुंदी खूबी करीर के साथ ॥ ४४ ॥ ४ मिश्रय ५  
आर्य लोगों ने ॥ ४५ ॥ ६ प्रसन्नता ७ छोड़ा ॥ ४६ ॥ ८ क्षण ९ धनवान् किया  
१० बुन्दी के प्राण खूबी ११ दिया ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ १२ अपराध १३ कौन कारण  
बड़ा १४ बीकानेर के हुमार कर्णसिंह १५ गिता को १६ व्याकुल सुनकर १७  
शीघ्रता में आतुर ॥ ४९ ॥ १८ दंड १९ ५० ॥ १९ बिना पत्तों का चमेली का  
पुष्प २० बिना दिये ही हुक्म होवे सो सहनक पर है ॥ ५१ ॥

निबह्यो पन तब अटक न लंघन, प्रानहु दैन करत अब हम पन॥  
 \*अज्जन धर्म रखि प्रभु औसैं, पठवहु मरन काल रन पैसैं॥५२॥  
 व्है हम'धर्महानि जिहिं हेतू, सुहि निवारि बंधहु बिय सेतू ॥  
 कोटिन अरज अरज यह इक्क१ हि, मित रखवहु धन१ धाम२चमू  
 ३महि४ ॥ ५३ ॥

धर्महि इक्क१निवाहि अखेधन, सब जयकाम लेहु प्रभु हमसन ॥  
 करैं विजय प्रभुको दुस्सह कलि, बढन आस प्रभुसोहि चहैं बलि  
 मृध लोदिन पहिलो१जय१मंडिय, खानजिहान पुत्र चउ४खंडिय ॥  
 भय बिहस्त लोदी सु भ्रमायो३, जिम कीलागढ अमल जमायो ॥  
 हुव तहैं रीभू लूट के गज१हय२, मन्नि तदपि मय अरज न्यायमय  
 काका हरि १९३३ गुग्गेर अधिपकिय, हम सोही सब रीभू गि-  
 नी हिय ॥ ५६ ॥

दुर्ग दोलतावाद१ प्रमुख बलि, करि अधीन जीत्यो दूजी२कलि ॥  
 सो जय मिल्यो रावरे संगहि, उहाँ रही भुव मिलन उमंगहि॥५७॥  
 सिवप्रसाद१मुख कथित समप्पिय, अवनी लेसहु तवहु न अप्पिय  
 दक्खिन२३कुमर साह पदवायो, प्रभुसासन तीजो३जयपायो॥५८॥  
 महि ले लखखपंचहत्तरि ७५००००० मित, किय ओरंग४०१३ तंत्र  
 जस अंकित ॥

ओरहि तवहु परगनाँ अष्टक८, पायो तउन मिल्यो निज नष्टक ॥  
 पै हम धर्म हानि जव न परी, क्रम बढिबढि सेवाहि तव करी ॥  
 लखिधर्महि इक्क१अटक न लंघिय, सब तहैं परेहे प्रभु संघिय ॥  
 विदिसैं धर्म दृढ तव न विसासे, तुम प्रत्युत दंडि रु सब त्रासे ॥

\* आर्यों का ॥ ५२ ॥ ? कारख २ मर्यादा ३ न्यूत ॥ ५३ ॥ ४ युद्ध में ५ फिर  
 ॥ ५४ ॥ ६ लोदा यवनों से प्रथम युद्ध में ७ भय से व्याकुल ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ८  
 आदि ९ युद्ध ॥ ५७ ॥ १० आदि ?? बादशाह के ॥ ५८ ॥ ११ अधीन १३ अ-  
 पना नाश हुआ परगना नहीं मिला १४ साथ में ॥ ६० ॥ १५ देखकर १६ उलट

देसहि मम काकाहिँ दिवायो, प्रभु प्रसाद सो मैं ममपायो ॥ ६१ ॥  
 ढिग गो बधन १ सुरालाय ढाहन २, बूंदिय दिखिय अवधि निवाहन ३ ॥  
 बिनुसिक्खहि पाउस गेह बसन ४, पाये कुमार भोज १९१२ इ-  
 ति मुख पन ॥ ६२ ॥

प्रभु जो लिखित निदेसहु पलटै १, हृद जो न गिनि समुद्रहु नहटै २ ॥  
 नैभावचि अधर मही जो न रहै ३, बट सतत रवि १ सासिर जो न बहै ४ ॥  
 विधिप्रपंच तो अखिल बिनासैं, पन निजनिज सब जाँ न प्रकासैं  
 अवतैं धर्म निवाहहु अज्जन, सज्जन समर खरे हम सज्जन ॥ ६४ ॥  
 मृधं गंजै ओरंग ४०।३।१ मुराद ४०।४।१ हिँ, बहैं संजव सत्रु छलबादहिँ ।  
 इहिँ संकल्प देव अनुसरिहैं, कै जय १ कै उपादा सिर २ करिहैं ॥ ६५ ॥  
 जोलों हम धर १ सिर २ सिर २ जानहु, तोलों सतनय प्रमद प्रमानहु ॥  
 यह करि अरज सिविर नृप आयो, संगर उचित वरुथ सजायो ॥ ६६ ॥  
 ॥ दोहा ॥

साहपास प्रसादही, रक्खि कुमार द्वारा ४०।१ सु ॥

भूप चढत मिलिहैं भनि रु, आयो स्व सिविर आसैं ॥ ६७ ॥

रासु १ आसु २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सेर १९२।२ तनय विह्वल १९३।१ सुभट, आयो तामें न एह ॥

किय निंदा तस सूचकन, नृप न सुनिय करि नेह ॥ ६८ ॥

तंदनु प्रात करि सिक्ख तहैं, भूप कुमार भगवंत १९५।३ ॥

स्वामी निज ओरंग ४०।३सन, मिल्यो जाइ मृधमंत ॥ ६९ ॥

अरु चोथो ४ सुत भूप इत, समुझायो सविसेस ॥

तव वय अवहि न रन तलप, सयन उचित अतिसेस ॥ ७० ॥

१ प्रसन्नता ॥ ६१ ॥ २ मंदिरों को गिराना ॥ ६२ ॥ ३ आकाश में ४ मार्ग में नि-  
 रन्तर ॥ ६३ ॥ ५ ब्रह्मा की रचना (सब लोक) ६ आयों को ७ युद्ध के प्यारे ८  
 हम मित्र होकर खड़े हैं ॥ ६४ ॥ ९ युद्ध में १० शीघ्र ११ मस्तक अंद करे में ॥ ६५ ॥  
 १२ शरीर के ऊपर १३ मस्तक १४ पुत्र सहित १५ हर्ष १६ सेना ॥ ६६ ॥ १७  
 महलों में ही १८ शीघ्र ॥ ६७ ॥ १९ तहां ॥ ६८ ॥ २० जिस पीछे २१ युद्ध के  
 विचार से ॥ ६९ ॥ २२ युद्ध शय्या सोने की ॥ ७० ॥

विसेस१ तिसेस२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥

करनजोरि भारत१५।४ कुमर, बिन्नति किय प्रति\*वप्प ॥

भारतसिंह१९।४ मिमाऽभिधा, अप्पी क्यौं प्रभुअप्प ॥७१॥

मम यहनाम लजाइ मै, भजिज दुरौं किम भोन ॥

जुइ जनक अगौं जुरौं, पय१ पैव्वय२ कर पोन२ ॥७२॥

आलय भेजन प्रैसभ अति, जदपि सता१९४।१ किय जाहि ॥

करि साहस चोथे४कुमर, तदपि नमन्निय ताहि ॥ ७३ ॥

कैय१ विक्रय२ स्वीकारकरि, प्राननके व्यापार ॥

वनिक तुला आरुहि सैवय, किय बहु सज्ज कुमार ॥७४॥

धार१ अनी२ लग्गी धुपन, लोहन सानन लेह ॥

पंडु बारन रन पाहुँन, दीसन लग्गे देह ॥ ७५ ॥

मुच्छै१ भौह२नसौं मिलन, जिमजिम सूरन जाइ ॥

इत अति संमद अच्छरिन, उत तिभतिम अधिकाइ ॥ ७६ ॥

अँज१ जवन२ दल हुव अतुल, आकारितें एक१त्र ॥

उव्वट२ वल पौउस उदक, तुँला न पावत तत्र ॥ ७७ ॥

नर१ बाहन२ आयुध निकर, जिततित पिकखेजात ॥

जिन्ह संचय अति दीर्घ जगि, मनमन जयहि जनात ॥ ७८ ॥

भैवतें सुरि अँज१ विष्णु१ भैव२, स्वर्ग४ विभव द्विष साहि ॥

दैन पैराभव१ दुर्जनन, संभव२ लेत समाहि ॥ ७९ ॥

दान१पठन२जय३सैह४दिपत, हँवैन५सउच६दति७दान७ ॥

\*पिता प्रति\* मेरा नाम ॥७१॥ १ पिता के आगे २ पैरों को पर्वत और हाथों को पवनरूपी करके ॥७२॥ ३ घर भेजने का हठ ॥७३॥ ४ लेना देना ५ अपनी समान अवस्थावालों को ॥ ७४ ॥ ६ तलवारों की धारा ७ भाले आदि की अगियों उज्ज्वल होनेलगीं ८ सांख्य चाटने लगा ९ चतुर वीरों को ॥७९॥ १० हर्ष ॥ ७९ ॥ ११ आर्य १२ बुलाये हुए १३ वर्षा ऋतु का जल १४ बराबरी नहीं पाता ॥ ८७ ॥ १५ समूह १६ बमंड ॥ ७८ ॥ १७ संसार से मुक्त १८ ब्रह्मलोक १९ कैलास २० पराजय ॥ ७९ ॥ २१ उत्सव २२ होम २३ स्त्रियों का त्याग (ब्रह्मचारी)



पुंनना अज्जनं सुभट प्रति, वरतत सरिस विधान ॥ ८० ॥

संध्या त्रयं गंगा सलिल, आप्लव पूत अधीस ॥

दृष्टुं उपाले इष्टं हरि, स्वकुल धर्म धरिसीस ॥ ८१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशल्पचरित्रे यवनेन्द्रान्छत्रुशल्पदशप्रान्तप्रापणापुत्रवान्ध-  
वादिपारितोषिकासादन १, वारंमज्जप्रान्तानधिगमहेतुधर्मोद्देशमुख्य  
ताप्रतिपादनपुरःसंगनेकोदाहरणपूर्वकशत्रुशल्पवनेन्द्रनिवेदन २, य-  
वनेन्द्रान्तिकदाराशिकोहरणकशत्रुशल्परणसर्जाभवनं द्वादशो म-  
यूखः ॥ १२ ॥

आदितश्चतुर्विंशत्युत्तरद्विशततमः ॥ २२४ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतीभिश्चितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुभटसंस्त्रवाहनसिलह ४, वानाँ नरन बटाइ ॥

रोकि इतर गोचररहे, असहे आगरा आइ ॥ १ ॥

जवन १ न चलन कुरान २ जिम, अज्ज १ न श्रुति २ अनुनार ॥

क्रम चिंतन १ अर्चन २ कलित, होत उचित व्यवहार ॥ २ ॥

१ सेना २ आर्यों की ॥ ८० ॥ ३ स्नान ४ पवित्र ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में बुन्दी के राव शत्रुशाल का वादशाह की ओर से दूध  
परगने और पुत्र वान्धवादिकों को विलत मिलना १ वारों और मज्ज का पर-  
गना पीछा नहीं मिलने के कारण धर्म को मुख्य बनाकर आदशाह से शत्रु-  
शाल का अनेक उदाहरणों सहित निवेदन करना २ दाराशिकोह को  
के समीप रखकर शत्रुशाल का युद्ध के अर्थ सज्जित होने का बारहवां  
यूख समाप्त हुआ आदि से २२४ मयूख हुए ॥

१ युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा का चिन्ह ३ हे  
लने कुरान के अनुसार और आर्यों का चलन  
म पूर्वक चिंतन और ८ पूजन ९ विदित होते  
रूपक से सेना का वर्णन करते हैं ॥

\*पाउस घन घनपन<sup>१</sup> प्रतिमं, पुहवी<sup>२</sup> दलान प्रपात<sup>३</sup> ॥  
 कठि लहरू<sup>४</sup> कि प्रसार कौं, जैनता<sup>५</sup> जिनतैं जात ॥ ३ ॥  
 इंद्रायुध<sup>६</sup> केतन<sup>७</sup> उदित, चपला<sup>८</sup> असिबैर<sup>९</sup> चंड ॥  
 गति खद्योत<sup>१०</sup> फुलिंगरगन, बक<sup>११</sup> बारन द्विज दंड<sup>१२</sup> ॥ ४ ॥  
 गज्जन<sup>१३</sup> बज्जन<sup>१४</sup> भेरिगैन, फुज्जहु<sup>१५</sup> तोपनफैर<sup>१६</sup> ॥  
 चातक<sup>१७</sup> घंटार चीरिका<sup>१८</sup>, सिजित<sup>१९</sup> दिखवत सैर<sup>२०</sup> ॥ ५ ॥  
 अज्ज<sup>२१</sup> जवन<sup>२२</sup> इम आगरा, आये सब आहूत<sup>२३</sup> ॥  
 भूप बिसालातैं भजे, दुरि घर न लखैं दूत ॥ ६ ॥  
 जथा जोधपुर<sup>२४</sup> आदिजे, आये ज्हीत<sup>२५</sup> न अत्थ ॥  
 रायसिंह<sup>२६</sup> संसय रहत, सुनहु स्व निश्चय सत्य ॥ ७ ॥

पादाकुलकम् ॥

इक्खे साह सुभट सब आये, पै कति तैंदपि न हाजरि पाये ॥  
 गेह अंति जुहू तजि जे गय, रिसकरि बुल्ले तेहु बडे रय ॥ ८ ॥  
 त्रैपा<sup>१</sup> विदुर<sup>२</sup> सब तजि भय आतुर, पत्तो भजि जसवंत<sup>३</sup> जोधपुर  
 तनया कर्मवती १९५१ जु सता १९४१ की, एह हुती रानी तैंहें  
 याकी ॥ ९ ॥

बासंक हो ताको तिहिं बासैर, बिसैंपो तसाहि प्रासाद धरौवर ॥  
 इहिं रानी प्रति सुनि भजि आयो, रटत महींनस लोह रुकायो ॥ १० ॥

\* वर्षा काल के अत्यन्त मेघ के † समान पृथ्वी पर ‡ सेना का पड़ाव हुआ ?  
 मनुष्यों के समूह का उत्पन्न होना ही जहां मेघ की लहरों का फैलाव हुआ  
 ॥ ३ ॥ २ ध्वजाओं का उदित होना ही इन्द्र धनुष ३ भयंकर खड्ग ही बिद्युत्  
 ५ अग्निकण ४ जुगलू, और हाथियों के ६ दांत जहां पगुले हुए ॥ ४ ॥ ७ नाचतों  
 के समूह का बजना ही मेघ की गर्जना, और तोपों के फौर ही ८ बिजुली की  
 कड़क, हाथियों के वीर घंट ही चातक और १० मृगशंख के शब्द ही जहां ६  
 भिक्षुओं की ११ शोभा दिखाते हैं ॥ ५ ॥ इसप्रकार आर्य और धवन १२ बुलाये  
 हुए आगरा में आये १३ उल्लैन से भगे हुए राजा घरों में छिप गये जिनको दूतों  
 ने नहीं देखा ॥ ६ ॥ १४ लज्जित ॥ ७ ॥ १५ तौ भी १६ उल्लैन का १७ वेग से  
 ॥ ८ ॥ १८ लज्जा १९ भय से व्याकुल ॥ ९ ॥ २० बारा २१ उस दिन २२ प्रवेश  
 किया २३ भूपति ने २४ रसोई में लोहे का पजना बंद करवा दिया ॥ १० ॥

आलय सख दुराइ दूर२ अरै, इभरदं बलपै ठंकि पटअंतर ॥  
छोनी वह पगभंडन छाई४, अप्प व्यंजन गहि सम्मुह आई५।११।  
दासिन बदिय बधाई वंटन६, खिनं तिहिं टारि बाजनै भूखन७ ॥  
बलि लैजाइ तल्प बैठारथो८, पयदब्बन लागि९ हरख प्रसाथो१०  
अधिप न समुझि व्यंग्यजुत इनको, चविष ठकहु क्यों कर  
चूरिनको ॥

बदिय प्रकट गजरदं बलपावेलि, विघ्नकरै प्रभु रहन इहाँ२बलि ॥  
वरज्यो हमहिं महानैस बज्जत१, सिजित के न भूखनहु सज्जत२ ॥  
स्वामि लखन चिरैकरि हुव संभव, लहु तामैं जिन होइ विघ्न लवा  
यह समुझि रु मै रातिकरी यह, सुनि सु कबंध १ सिटायो छवि २  
सह ॥

बहुरि साह जसवंत बुलायो, इहिं आगसै सो नहीतै न आयो ॥१५॥  
रायसिंह१ भजि तिम टोडा रहि, दुर्धर भीम जनेक जस सुत दहि ॥  
अंदर पैठि न बाहिर आयउ, तस अस नारि उदार तनायउ ॥१६॥  
सुपै न तव दिली जाइसक्यो, तजि बाहिर१ अंतर२ रहन तक्यो ॥  
गदतै किते भजि गो भय साग्रद, अमरसिंहमुंत रायसिंह२यह ॥१७॥  
नृप जसवंत भतीज निहागहु, धो नागोरेपुसाधिप धारहु ॥  
सूचत किते अवंती रसने, भज्यो सु बीकानेर भूमिधन ॥१८॥

१ शीघ्र २ हाथी दांत का ३ चूड़ा कपड़े से ढका ४ भूमि को ५ पंखा लेकर  
॥ ११ ॥ ६ शय्या पर बिठाया ॥ १२ ॥ ७ इस व्यंजन में राजा यशवंतसिंह नहीं  
समझा ८ कहा कि चुड़ियों को क्यों डकती है ९ राणी ने प्रसिद्ध कहा १०  
हाथी दांत का चूड़ा ११ बलवान है सो फिर आपके यहाँ रहने में विघ्न करेगा  
॥ १२ ॥ १२ रसोवड़े में १३ बजनेवाले श्रुषण भी नहीं पहने १४ बहुत समय  
ने आकर देखना स्या है १५ शीघ्र ॥ १६ ॥ १७ इस अपराध से १८ लज्जित  
होकर नहीं आया ॥ १९ ॥ २० पिना जीयसिंह के यश को जलाकर ॥ २१ ॥  
१६ कितने ही कहते हैं २० यह रायसिंह अमरसिंह का पुत्र था ॥ २१ ॥ २२  
बुद्धि में २२ नागौरपुर का अधिप २३ उज्जैन के युद्ध से २४ राजा ॥ २५ ॥

पे वह रायसिंह ३ अति\*पुठबहि, अक्बर ३७१ समय हो पवन  
नश\*हीर अहि ॥

जहाँगीर ३८१ लग संभव जाको, तबको सुनहु उदंतहु ताको १९  
यह प्रवया परन्यो भटियानी, जो बय १ रूप २ अतुल जगजानी ॥

यह नोरोज स्व तोरन आई, सुगलदनयन १ उर २ लखत न माई २०  
दगदगमिलत मिले मन दोहु २न, कतिदिन कढ्यो विरह खिन  
कोहु न ॥

रायसिंह ३ सुहु जानि सहिरहयो, यह १ गहि २ वैभव ३ देस ४  
लहिरहयो ॥ २१ ॥

हुव दिल्ली चिर बास हवेलिय, जत्थहु जाइ साह किय कोलिय ॥  
कैद मुहुम्मद तकी १ खुरुम ३६१२१२ किय, जिहि कहूँ साह बि-  
जन लहि जंषिय ॥ २२ ॥

अहो रैन १९२१ नृप मम आलोचत, रायसिंह ३ भीरु कर्पन रोचत ॥  
हे हमसंगम कवहु हवेलिय, करन तास रानी सन कोलिय ॥ २३ ॥  
इस असगोत्र १ सर्जातीय २हि तब, सजहु नर्म कहि असह मर्म  
सब ॥

असि १ फर २ ताहि रैन १९२१ तुम अप्पहु, थाहन मोहि हन-  
न मति धप्पहु ॥ २४ ॥

तुमरे नर्म लज्जि रिस तानै, असि १ फर २ गहि सुखहु कर आनै ॥  
पुरुखारथ १ तो ताग प्रमानै, जो नहि तो बै असत्व २हि जानै ॥ २५ ॥

\* बहुत पहिले पवन रूपी लज्जा को खानेवाला सर्प "सर्प का नाम पवना-  
शन है" इसकारण पवन रूपी लज्जा को खानेवाला कहा सां इस निर्लज्जता  
का कारण आगे बताते हैं ॥ १९ ॥ २ वृद्ध अवस्था में अपने (बादशाह के) द्वार  
पर ॥ २० ॥ २१ ॥ ३ बहुत समय तक ४ कीड़ा ५ एकान्त में लेकर कहा ॥ २२ ॥  
६ मेरे विचार से = कायरपन ॥ २३ ॥ ७ एक ज्ञानिवाले १० हँसी. हे रत्नसिंह  
११ हाल तलवार देकर उसके मन का १२थाह लेने के लिये मेरे मारने की मति  
स्थापन करो ॥ २४ ॥ १३ अब १४ चलहीन ॥ २५ ॥

जुवती भोगसक्ति१ व्है जामैं, सो नर जार२ सहै न सभामैं ॥  
 सद्धि रहस्य साह१ नरनाह२सु, रचि नोरोज सुगल६ किय राहसु  
 मस्जिद लग गो जाँत१ तियनमैं, मन्निय आत२ कही सु कियनमैं  
 यह तब भेजि हुरमजन अग्गहि, सुग्घो भटन संगैत तस मग्गहि॥  
 प्रबिसि हवेली तजि ठाँ प्रबहन, नालि चडि सु सहसा ज्ही नबहन  
 रायसिंह३ दर्पति२ जँहँ राजत, ताहि महल गो साह मदन तत२८  
 लखि तजि तल्प सलाम करि लज्यो, भेट तिय सु करि नृप नि-  
 कसि भज्यो ॥

हुतो प्रैकोष्ठ प्रौहरिक रैन१९२१हि, बुल्लयो सो असहन कटु बैनहि  
 मम असि लै रु मुररि वीर बनहु, हम१ तुम२माँहि जाहुसाह हनहु।  
 नृप असि रायसिंह३ जब न लयो, भरि स्वर तौर साह कहतभयो  
 प्रसभ राव राजा किम पावत, यह काहूकी दई न आवत ॥  
 अखिलैन मन्नि रत्न१९२१ अपगयी, बचै अब न जान्यो प्रभुबोधी  
 सु किय परंतु साहके सम्भत, गँदी कछु न इम साह मर्म गत ॥  
 रायसिंह३ नृप१की यह रानिय१, याकी बहिनि२ देवरहु आनिय ॥  
 पृथ्वीराज२अनुज निज पति२को, सो व्याहो इहि धर्म सुमतिको  
 ही स्वसाँ२१सु देरानी२इम हुंव, दिष्टं तंत्र इक१घर आई दुव२३३।  
 कबहु कहिय जेठी२१ अनुजों २ कैहँ, जुग२हि करै इक१ थाल  
 असेन जँहँ ॥

अनुजा२कहिय छुयो तव अँभहि, छत्र२कुलीन पिवै सु अछँभहि३४

१ स्त्री के भोगने की शक्ति २ सलाह ३ बुन्दी का राय रत्नसिंह ॥ २१ ॥ ४  
 जाते समय ५ साथ ॥ २७ ॥ ६ नरयान (ताम्रजाम) ७ लज्जा ८ स्त्री पुरुष ९  
 कामदेव के कारण ॥ २८ ॥ १० शय्या ११ द्वार पर १२ रत्नसिंह पहगायत था  
 ॥ २९ ॥ १३ उच्च स्वर से ॥ ३० ॥ १४ हठ १५ सब ने १६ स्वामी को मारनेवाला  
 ॥ ३१ ॥ १७ बादशाह की सलाह से १८ इस कारण बादशाह ने कुछ नहीं कहा  
 ॥ ३२ ॥ १९ छोटा भाई २० बहिन २१ भाग्य के वश होकर ॥ ३३ ॥ २२ बड़ी बहिन  
 ने २३ छोटी बहिन से कहा २४ भोजन २५ तेरा स्पर्श किया हुआ जल भी ॥ ३४ ॥

अनख सु सुनि जेठी१ उर आई, साहहिँ इम बनि पिमुन सुनाई ॥  
 मोमै रूप कहा प्रभु मानहु, जामि अनुज२ देवर घर जानहु ॥ ३५ ॥  
 तिलहु रूप मोमै नहि ताको, वह किन इकखहु पुंज प्रभाको ॥  
 अरयो मुगल ६ जब ताहि बुलावन, पित्थल २१ हो हरिभक्त सु  
 पावन ॥ ३६ ॥

इहिँ संकट जिहिँ उमा उपासिय, कँछ वासिनी पँछ प्रकासिय  
 स्वप्न कहिय मै १ व्है तव तिय २ सम, दलिहौं दर्प मिच्छको  
 दे दम ॥ ३७ ॥

पै मम जौन न पिहितै पठावहु, तव तिय अतुल लाखै जग तावहु ॥  
 तिम नृजान भेज्यो पित्थल तह, सब पुरभनिय अतुल छवि साग्रह  
 मर्दित जाग्र करयो मुगले६ सहिँ, लज्ज्यो तव तजि नैरपन लेसहिँ ॥  
 अरु किय नियम कुँसुम १ तिय २ तू १ अलि २, बीकानेरतै न  
 संगहु बलि ॥ ३९ ॥

बिमाति रह्यो कित व्यूँढ १ बुलैबो, पै अबतै डोला२ हु नपेबो ॥  
 साह दियउ लिपिदँल सुहि स्वीकैरि, टाग्यो बीकानेर गया टरि ॥ ४० ॥  
 कतिक कहत जेठी१ यह कन्या, रायसिंह३१ न बरी धँव धन्या  
 सो १ गिनि हुरम बरी जवनेस१हि, अनुजा २ तस पित्थल २ बरि  
 एसहि ॥ ४१ ॥

आनी बहुरि गई पिउहर ए२, असेन निमित्त मुगी हठपर ए२ ॥  
 जेठी१ जाइ साहप्रति सूचिय, तव बलकरि बुली अनुजारतिय ४२

१ क्रोध २ चुगल खोर होकर ३ छोटी बहिन ॥ ३५ ॥ ४ क्रांत का समूह ५  
 हठ किया ॥ ३६ ॥ ६ देवी की उपासना की ७ कँछ देश में निवास करनेवाली  
 राजमाई नामक चारण कुल की देवी ने ८ पल ९ दंड ॥ ३७ ॥ १० यान ११  
 द्विगुण मन भेजना १२ तहाँ ॥ ३८ ॥ १३ अनुपपन्न १४ लोखी पुष्प का  
 १५ अमर १६ फिर ॥ ३९ ॥ १७ विवाही हुई को बुझाना तो कहाँ रहा १८ लिखावट  
 १९ स्वीकार करके ॥ ४० ॥ कितने ही कहते हैं कि उस बड़ी कन्या जिसका नाम  
 राजपूताने में “नाधी भाटियांखी” प्रसिद्ध है तिसको २० पति होकर रायसिंह  
 ने नहीं विवाही थी ॥ ४१ ॥ २१ भोजन के कारण २२ छोटी बहिन को ॥ ४२ ॥

भक्तन मति पित्थलरतवही भजि, सो उमाहु भक्तहिँ अवसर सजि  
जो पठई अपिहित तिय जैसैं, तँहँ ह्वै सिंह त्रास दिय तैसैं ॥ ४३ ॥  
जंगल तिय न चहैं सु जवन जिम, अंबा लिखित कराइ लयो इम।  
इमहु होहु हमहिँ न कछु अग्रह, साह १ हुरम १ अनुजा २ पित्थल  
२ सह ॥ ४४ ॥

नत्थी १ तिहिँ भटियानी १ नामहु, कहत कति रु तासहि यह  
कामहु ॥

तो यह वत्त होहु असैं तँहँ, करन चही निर्जसम अनुजारकँहँ ॥ ४५ ॥  
अंबा किय अनुजी २ सहाय इम, जस जिततित पित्थलरको हुव  
जिम ॥

रायसिंहकी कोउक रानी, सुगलदराज तो ओरहि मानी ॥ ४६ ॥  
पै लापर निदाकरि पित्थलर, किय अग्रज १ अपजस कोलाहल ॥  
कहिय आत १ वपु मढ्यो कँनकमैं, नक्क रु १ पग्घरहे न तँनकमैं ।  
जामि बडी १ पित्थलर तियरकी जो, रायसिंह १ अग्रज १ न वरी जो ॥

१ देवी ने भी रसासु १ सिम ॥ ४३ ॥ ४ जंगल दरा (वीकानेर के राज्य) की ५  
देवी ने वहुमको दठ नहीं है ॥ ४४ ॥ ७ नाथी = उसी से यह कार्य हुआ १ अपने  
समान छोटी बहिन को करनी चाही ॥ ४५ ॥ १० देवी ने ११ छोटी बहिनकी  
सहाय की ॥ ४६ ॥ १२ स्वर्ण में १३ कुछ भी नहीं रहे ॥ ४७ ॥ १४ बडी १ बहिन

\* इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध है कि पृथ्वीराज द्वारका गया तब चंडारवा नामी ग्राम में उसको राजवाई  
नामकी चारण जाति की स्त्री मिली जो उस समय शक्ति का अवतार मानी जाती थी उसने प्रसन्न होकर  
पृथ्वीराज से कहा कि तुममें काम पड़े तब मुझे याद करना इसकारण पृथ्वीराज ने इस कष्ट में याद करी  
तो उस देवी ने पृथ्वीराज की स्त्री का रूप किया और महायान पर बैठकर वह देवी बादशाह के समीप गई ता-  
व उसको महायान से उतारने के लिये बादशाह समीप गया तब देवी ने सिंह का रूप करके उसको ता-  
स दिया और राजाओं की स्त्रियों को फिर नोरोज में नहीं बुलाने का प्रण करालिया ॥

† वीकानेर और जैसलमेर के इतिहासों से सिद्ध है कि, जैसलमेर के रावळ हरराज के तीन पुत्रियें  
थीं जिनमें एक तो नाथी नाम की बादशाह अकबर को परणई और दूसरी गंगा वीकानेर के राजा राय-  
सिंह को और तीजी चंपा (चांपा) रायसिंह के भाई पृथ्वीराज को परणई थी सो यहां नाथी को राजा राय-  
सिंह की राणी लिखकर उसका अकबर के साथ व्यभिचार लिखा सों मिथ्या है ॥

तो वह१ होहु साह१ ब्याही तिम, अरु पितृल २ तिय२ सील  
बच्यो इम ॥ ४८ ॥

रायसिंह१ नृपकी तउ राँनी१, ओरहि कोहु साह उरभाँनी ॥  
मुनसब१ सप्तहजारी७००० सम्मद, पायउ रायसिंह३१ राजापद२  
बहु परगनां३ वसन४ भूखन५ वलि, कैरी६ तुरग७ पाए तिय मुकॅलि  
सजाँतीय१ अरु विजातीय२ सब, ताको अपजस करनलगे तब५०  
रायसिंह१ कविलोकन रक्खिय, दान पटा१ मनि२ धन३ लक्खन  
दिय ॥

सो कवि जबहि बारहठ संकर, उजिँऊ जोधपुर बास१ ग्राम२ अर  
चंपाउत गोपाल जंगचहि, लगे न जे तिन्ह सबन यहै लाहि ॥  
संकर१ सह खट६ दरसन खेला, बीकानेर गयो तिहिँ बला ॥५२॥  
रायसिंह ३१ कवि कहँ तिय२ रोधिय, पट्ट लिखित करि दई  
पलोधिय१ ॥

तास ग्राम दसअग दुसत ९१० तब, संकर खट६ दरसनहिँ दये  
सब ॥ ५३ ॥

कविसंकरहित बहुरि रीभकिय, पुर नागोर२ त्रिलक्ख३०००००  
पटा दिय ॥

बीकानेर बच्यो तबतै तँहँ, किय इम रीभ घनै सुकवि५न कहँ ॥५४॥  
जान्यौ कवि टारहिँ तिय अपजस, बरख्यो इम बसुविंदु त्रपावसा ॥

१ बादशाह की बिचाही हुई ॥ ४८ ॥ २ हर्ष सहित ॥ ४९ ॥ ३ हाथी ४ स्त्री  
को भेजकर ५ अपनी जातिवाले और दूसरी जातिवाले ॥ ५० ॥ ६ छोड़कर  
७ जीविका ८ जीभ ॥ ५१ ॥ ९ मारवाड़ में ब्राह्मण चारण आदि को \* खट  
दरसन कहते हैं १० क्रीड़ा सहित ॥ ५२ ॥ ११ धन लुपी बुन्दों से १२ राजा

\* मारवाड़ में ब्राह्मण १ चारण २ सैन्यासी २ (हिन्दू साधुमात्र) जती ३ (जैनी साधु) फकीर ५  
(यवन साधु) और देवताओं के पुजारी क्षत्रिय ६ (जैसे रामदेवजी के पुजारे तैवर क्षत्रिय हैं) इनको खट  
दरसन कहते हैं अर्थात् ये वहाँ दर्शन करने योग्य हैं ॥



पै न टरूँ ऐसे कलंक पवि, क्यों न उपाय करहु काटिन कवि ॥५॥  
जु यह रायसिंह ३११ की कथा जिम, अकबर ३७१ छत हुव कहत  
किते इम ॥

बूंदीपति तँहँ भोज १९१२ विचारहु, नैर्म सु तब तसरचित निहारहु  
पै इहिँ रायसिंह ३११ संभव पर १, अचिर जहाँगीर ३८१ रु चिर २ अ-  
कबर ३७१ ॥

जो अब भज्यो जुद्धतँ अतिजैव, सो यह न तँहँ द्वैरहिको संभव ५७  
रायसिंह टोडा १ रानाउत, सह नागोर २ कबंध अमरसुत ॥

इनमँ इक १ कै द्वैरहि भजे अर, साहजिहाँन ३९१२ साहके अवसर  
ए २ हु साह आहुँत न आये, जिम जसवंत १३ सु तिमहि लजाये  
बीकानेर करननृप तब हो, जुग २ ठाँ रायसिंह जुग २ जबहो ॥५९॥  
पुर्व कथित करि मंतुँ कर्ण पहु, आयो नहि तब १ को भीतँ अबरहु ॥  
भजि रन तब द्वैरही ए भूपति, जैत रुके आवनमँ लखि हैति ॥६०॥  
तमँकि साह अहदी पठये तह, दुसहँस २००० दम्म अखि दम्  
प्रतिअह ॥

अपि दमहु ए बहुरि न आये, बलिबलि तिमसिर दम्म बढाये ॥६१॥  
भनत किते इम बढतबढत भय, प्रतिदिन दिय अयुत १०००० हुदम  
रूपय ॥

आये तउ न पाइ साध्वँस १ अति, प्रतिदिन कुपित सहो सु जव-  
नपति ॥ ६२ ॥

के वश होकर १ वज्र खी ॥ ५५ ॥ २ हँसी ॥ ५६ ॥ जहाँगीर के समय में ३  
अनिश्रय और अकबर के समय में ४ निश्रय है ५ अत्यन्त शीघ्र ॥ ५७ ॥ ६  
शीघ्र \* ॥ ५८ ॥ ७ बुलाये हुए ८ दोनों जगह दोनों रायसिंह थे ॥ ५९ ॥ ९ प-  
हिले कहा हुआ १० अपराध ११ डरकर १२ लाजित १३ हानि ॥ ६० ॥ १४  
क्रोध करके १५ रुपये १६ दंड के १७ प्रतिदिन ॥ ६१ ॥ १८ भय ॥ ६२ ॥

इत औरंग ४०।३।२ मुराद ४०।४।२ अवंतिय, पट्टे करि निखिल  
घायलन पंतिय ॥

उचित गीत सब वीरन अप्पिय, मग लखि चान कुंच भुव मधिप्य  
दुवर्हि भीरुलै इम सब दखिखन ३।२, पट्टे लहन गंजन परपक्षिखन  
जुगर्हि साहजादे तदनंतर २, हं गं हं हंके अकबर ३।७।१ हं १६।१  
दर्म इक २ पर बाजीगर दुवर्, इमदिह्नी १ पर ए २ हंकतहुव ॥  
दस १० में जोहि सता १९।४१ वृद्धिदसा, लिय छत्रो ६ परगनाँ  
भेलसा ६ ॥ ६५ ॥

तस सोमाडिग द्वै बैल तिनको, उत्तर ७।४ बढ्यो ग्रीखम किं इनको ॥  
इम कडि देस निपथमग अंतर, कालीसिंधुकेर परतट पर ॥ ६६ ॥  
निपथा १ पुग जु वजत अब नरउर १।२, धारी जैह नल भूप राज्य धुर  
वैह तैह साहसुतन इल हंक्रिय, अगौ मग जोजन जुगर् अंकिय १६।७  
कल मुकाग ग्वालेर निकटकरि, सेनापति न बुल्लि क्रम अनुसरि ॥  
सैनन संधि दुहुर्न दिह्नी १२ दिय, लैनन बंधि हजरती नैह लिय ॥ ६८ ॥  
इत आगरा सोहि क्रम अनुसरि, कासिमखान १ सता १९।४।१२  
सम्मत करि ॥

जितो स्वचैक कुनर दाग ४०।१ जब, सह हाजरी सम्हारिलयो ल  
उत १ तै वे भ्राता दुवर् आये, धीर वीर इन तै ए धाये ॥  
दलन इक फुटिय देसंतर, इत १ उतरवढे मिटावन अंतर ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

चैतुरंगिनि हुव चैक्रमन, रन अंगन भुव रीक्षि ॥

दिय जयप्रीतन हुलने, स सौमीनन गय सीक्षि ॥ ७१ ॥

१ सय घायलों को निरोग करवा दे २।१२ यदुओं को इजिप्त पीह ४।१२ धीरे धीरे २  
अकबर के पोते ॥ ३५ ३ पर क समय पर ४ जय कल हुए दस परगनों में ८ २।७ के म  
॥ ६७ ॥ सेना १ ॥ तिनको १ जो पय का सज ॥ ६८ ॥ १२ हाथ ॥ ६९ ॥ १३ बरना  
सेना ॥ १९ ॥ २० ॥ १४ चतुरंगिणी सेना का गलन हुआ १५ मग में प्रीतन रमन  
घायलों के दस गहरीलन हुए आह १६ परी दस भयवालों के लल गये २० ॥

धोलपुर के पास शाहजादों का युद्ध] सप्तमराशि-त्रयोदशमयुग (२७०७)

दुवर्द्विष कर्मत अनीक दुवर्, \*मह सह हुवांटासंक ॥

वारा अंकन विष्णुके, बंकनकहून बंक ॥ ७२ ॥

अज्ज १ जवन २ दत्त उज्जले, रिपुन लवन आरंभ ॥

पलाटे यिति १ दिन जिम प्रलय २, उलाटे सिंधुन अंभ ॥ ७३ ॥

केतु १ न प्रखर २ न कंकट ३ न, बीर ४ न बाह ५ न ब्रात ॥

छोनी मग दुहुं २ धाँ छडे, अहि १ घोनी २ अकुलात ॥ ७४ ॥

गंही रक्खन इत १ गरज, उत २ तरि लौन उपाय ॥

जोध रचन रन जय जतन, करै वचन १ मन २ काय ३ ॥ ७५ ॥

प्रतिरन भावत धालपुर, ठाम जनावत ठीक ॥

निधिपर धावत रंक निभ, आवत उभय २ अनीक ॥ ७६ ॥

इत १ दारा ४० १ १ २ ओरंग ४० ३ ३ २ उत, धरिवाजीगर २ धम्म ॥

चहत दव्यो दल १ चम्म २ तै, दिल्ली १ कहून दम्म २ ॥ ७७ ॥

दारा ४० १ १ २ इत १ अप्पन सदन, जानत रक्खन जंग ॥

सिंहनके कैसे सदन, उत १ मानत ओरंग ४० ३ २ ॥ ७८ ॥

जंज १ तंज २ मंज ३ न जतन, इत दारा ४० १ १ २ चउ ४ अंग ॥

इक १ न अकुस आदरै, उत पन्नग ओरंग ४० ३ २ ॥ ७९ ॥

सिर अतिविस ओरंग ४० ३ की, दिसदिस त्रासत देस ॥

फोज १ न रूप उठाइ फन २, आयो फुंकरि एस ॥ ८० ॥

मनमें गिनत मुराद ४० ४ कौ, विजय अनंतरै बंधि ॥

इक १ छत्र रहिहौ अभय, सब दहिहौ भयसंधि ॥ ८१ ॥

इत १ हंके तजि आगरा १, सकल मनोरथ मुजिष्क ॥

० उत्तराय मर्त्य में मनारे धृष्ट १ कर्मव को अपने नाम से चिन्हित करनेवाले कोधिय धृष्ट ॥ ७२ ॥ २ शत्रुओं को नाश करने के आग्रह से ३ जल ॥ ७३ ॥ ४ पाप्मर (घोड़े का कवच) ५ कवच ६ लसुह ७ दोनों ओर ८ शेषनाग की छोटी ॥ ७४ ॥ ९ मर्दा सेमे का उपाय ॥ ७५ ॥ १० घन पर ११ लहज ॥ ७६ ॥ १२ धर्म १३ मेला की धर्म (जाल) से दिल्ली की १४ जगों को दवाना चाह ॥ ७७ ॥ १५ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ११ विजय हुए पीछे ॥ ८१ ॥

करि चले जय संकल्प, उत २ ग्वालेर २ हिं उज्जिं ॥ ८२ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमगणौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे विशालारण्यप्रतिनिवृत्तयोधपुराधीशयशव-  
न्तसिंहस्वपत्नीतिरस्करणा १, विशालाप्रपत्तापितरायसिंहसंदेह-  
हेतुकविक्रमनगराधिपरायसिंहनिर्लज्जताकथन २, धवलपुरसमीप  
दाराशिकोहौरङ्गजेवसैन्यसंगमवर्णनं त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥

आदितः पञ्चविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सता १९४१ चलिष विरचन जब सो रत्न, मिलि आरंग ४०१३ मुराद  
४०१४ हि मोरन ॥

भाता १ भ्रातृजैर आदि तबहु भट, बट्ट मिले बंहु स्ववल विसंकट ॥

जेठो १ इंद्रसाल १९४२ को जायो, सज्ञा करि गजसिंह १९५१ सुहायो

अनुज तास पंचम १ आनंदक १९५५ ते दुव २ मिले कोस पंचक ५ तक

सोदर राजसिंह १९४४ को जो सुत, जेठो १ विष्णुसिंह १९५१

अभिधाजुत ॥

जेठो १ सुत काका हरि १९३३ को जिम, अगौं कछुक सुजान १९४१

मिल्यो इम ॥

सुतहु तास जेठो १ गजसिंह १९५१ रु, अनुज चउत्थ ४ अजब १९४४

शत्रु नंखरु ॥

१ विजय का संकल्प करके २ ग्वालिघर को छोड़कर ॥ ८२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के प्रपति  
शत्रुशाल के चरित्र में उज्जिण के युद्ध से भागे हुए जोधपुर के महाराजा यश-  
वंतसिंह का उनकी राणी से अन्याय पाना १, उज्जिण के युद्ध से भागनेवाले  
रायसिंह के संदेह में बीकानेर के राजा रायसिंह की निर्लज्जता का कथन २  
धवलपुर के समीप दाराशिकोह और औरंगजेब की सेना के मिलने के वर्ण-  
न का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२५ मयूख हुए ॥  
१ भतीजे ४ मार्ग में १ विशाल अथवा विशेष संकट में ॥ १ ॥ १ नाम ॥ २ ॥  
॥ १ ॥ ७ शत्रुओं पर सिंह रूप

धोलपुरके पास शाहजादोंकी सेना आना। सप्तमराशि-चतुर्दशमयुख (२७०९)

तिम त्रय३हृदयनरायन१९२।२नत्तिय, पहुसन मिले वीर भ्राता प्रिय  
हरु१ स्वरु२ अन्त्यानुप्रासा ॥ १ ॥

मुख्य प्रयाग१९४।१जैत१९३।१सुत मानी, दुज्जीपुर सासक अति दानी  
सूनु बडे रनछोर१९५।१सहित सो, आइमिल्यो भग दलन अहितसो  
तस काका बल१राम १९३।२ तनै तइ, सबलसिंह १९४।१ पहुँच्यो  
प्रसरित सह ॥

कह्यो विजयराम १९४।१ जु तस काका, तँहँ धारसराम १९४।१हु  
सुत ताका ॥ ६ ॥

रत्न१९२।१ अनुज केसव १९२।३ कुल रोचन, सतल १९५।१ नाम  
सबु संकोचन ॥

अप्पन भट गुरु१लघु२इत्यादिक, बटहि विच पहुँचे जयवादिक ॥७॥  
इहिँ क्रम ढिगहि धोलपुर आयो, पै विठल१९३।१आनेसन पायो ॥

तँहँ पिसुनन निधुर जंपिय तब, मगमिले हु स्वामिधर्मी सब ॥ ८ ॥  
अरु रनभूमि दिष्टि यह आई, परपुतनाहु ढिगहि सुनिपाई ॥

अब को सँस आगमन अवसर, विठल १९३।१ जिन गिनते ग्रहु  
भट जर ॥ ९ ॥

तबतोतिमाहि अपिसुनन अदिखय, रंचहु विठल१९३।१कानि नरदिखय  
गदि इन पुनि पूछ्यो रुकमंगद१९४।१, हे कवलग काका आवन हद

भाखी यह सुनि दुमन भतीजै, प्रबल दिष्ट कछु विघ्न पतीजै ॥  
अधिप कह्यो रन जय आरंभहि, खरो तरु न लखँ जयखंभहि ॥ ११ ॥

विधिवस तस कछु विघ्न बखानै, तुममै अबहि कोन रन तानै ॥  
संगर पुव्व विफल सबहीहो, तुमहिँ तास सूचन तबहीहो ॥ १२ ॥

ऐसी बत्त होत भग आई, दारा१८०।१सिनिन डाल दिखाई ॥  
१ पोते २ राजा से ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ लिखायत का रुख ॥ १ ॥ ४ कुल को भा  
देनेवाला; अथवा कुल का चंदन ॥ ७ ॥ ५ थाया नामका आय का पति ॥ ८ ॥

६ सबु की सेना ७ आने का समय कौनसा बाकी है ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥  
८ बडा झंडा

पट आलय दारा४०।१ पैठायो, अप्पहु अधिप सिविर निजआयो  
॥ दोहा ॥

इम किय प्रथम१ सुकाम इत, रन लोभिन रहि रति ॥

चले प्रातं दरकुंच चहि, धैन आडंभर घति ॥ १४ ॥

उततैं वे दुवर साहसुव, मिलि ओरंग४०।३ मुराद४०।४॥

दरकुंचन आये दुसह, विस्तारत जय वाद ॥ १५ ॥

घोर प्रलय घनकी, घटा, जिम दुवर अभिमुख जात ॥

इम हल्ली पृतना उभयर मही बँलय मचकात ॥ १६ ॥

उभयर अनीकनतैं अनी१, जिम लहरूर कढिजाइ ॥

मृगयामुख कोतुक करत, जित तित स्वजय जनाइ ॥ १७ ॥

घटत निवानन पान घन, नासीर१न करि नीर२ ॥

कमि तँहँ तँहँ चंदोल१के, पँक२हिँ लखत प्रवीर ॥ १८ ॥

वन दुर्ग१न पद्धर२ वनत, दिसदिस मग्ग दिख्वात ॥

भजि भजि फोजन भीरमैं, जंतुव जन थकिजात ॥ १९ ॥

दुसह कंप लागि दिग्गजन, अकिवकि खंड असेस ॥

उदक समुद्रन उच्छलत, प्रसरत बिजल प्रदेस ॥ २० ॥

मूँड१ चंडी२ दंपति३ मुदित, सह नारद३ लागि संग ॥

ओघ विमानन अच्छरि४न, आये वरन उमंग ॥ २१ ॥

गजतुंडा१दिक जोगिनी५, भैरव६ भीम दगादि ॥

चउसठि६४ रु बावन५२ चले, छक लावन मह छादि ॥ २२ ॥

किन्नर७ डाकिनि८ साकिनी९, रक्खस१० प्रेत११चुरल१२

बिहसि जच्छ१३ बेताल१४बलि, गुह्यक१५ लग्गे गैल ॥ २३ ॥

गिद्ध१६।१कंक॥७।२चिल्ल१८।३न गगन१, उडत छये बहु ओघ ॥

हरे में ॥ १३ ॥ ३ मेघ के समान ॥ १४ ॥ १५ ॥ ३ सन्मुख ४ भूमि मंडल को

॥ १६ ॥ ५ सेनाओं से ६ शिकार आदि ॥ १७ ॥ ७ आगे चलनेवालों को ८

सेना के पीछे चलनेवालों को कीचड़ मिलता है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ९ पानी १०

निर्जल प्रदेशों में ॥ २० ॥ ११ शिव ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

महीरकोक<sup>१९</sup> जंबुक<sup>२०</sup> मु<sup>२१</sup> त पाके ॥ ३५ ॥  
 सिव<sup>२</sup> आदिक ए उक्त<sup>२०</sup> तात<sup>२</sup> सखा<sup>१</sup> रके,  
 इत वीरन उच्छाह अ<sup>२</sup> तति भ्रातृजै<sup>१</sup> काके<sup>२</sup> ॥  
 जुब्बनवय जिम र<sup>२</sup> तेज मंताके,  
 डम सूरन रन वर भ्राता<sup>१</sup> रके ॥ ३६ ॥  
 लश्रेय बिर्धाके ॥  
 र रखवार रंसाके,  
 छकमै जस छाके,  
 न पानि तीरन गन ताके ॥ ३७ ॥  
 छह दिलचाव दगाके,  
 त जंग थट्टन नन थाके ॥  
 न प्रहार गेरत गुंजाके,  
 सक सज भर लंव भुजाके ॥ ३८ ॥  
 ह मंडेलगा भुख मंग मजाके,  
 तेकउग्र सैय सिंहसटाके ॥  
 त बल अखंड पट्ट दंड<sup>१</sup> पटारके,  
 क रसिक रारि रासक रैतांके ॥ ३९ ॥  
 जिम पचन सुद्धि मन तिभ मंतांके,  
 सूरन सद्ध हथिन हंतांके ॥  
 हरबै<sup>३</sup> अर्क<sup>४</sup> नरहरि<sup>५</sup> नंतांके,

तीजे ४मामा ५विचारके ॥३६॥ ६दादा(पिता-  
 नुत्रिय १०भूमि के रक्तक ११ क्रोध में ॥३७॥  
 १३ चिरमी १४ भाले ॥३८॥ १५ खड्ग १६  
 सिंह की गर्दन के बाल २० कितने ही वी-  
 स्वामी के लोन की पाचन की ख-  
 ाओं के साथ में २२ जानेवाले २४

पट आलय दारा ४०१ पैठायो, अप्पहुं अधिप सिबिर निज आयो,

॥ दोहा ॥

इम किय प्रथम१ सुकाम इत, रन लोभिन रहि रति ॥

चले प्रातं दरकुंच चहि, घन आडंबर घति ॥ १४ ॥

उततैं वे दुवर साहसुव, मिलि ओरंग ४०३ मुराद ४०४ ॥

दरकुंचन आये दुसह, बिस्तारत जय बाद ॥ १५ ॥

घोर प्रलय घनकी, घटा, जिम दुवर अभिमुख जात ॥

इम हल्ली पृतना उभय२ मही बैलय मचकात ॥ १६ ॥

उभय२ अनीकै नतैं अनी१, जिम लहरू२ कडिजाइ ॥

मृगयामुख कोतुक करत, जित तित स्वजय जनाइ ॥ १७ ॥

घटत निवानन पान घन, नासीर१न करि नीर२ ॥

क्रमि तैंहैं तैंहैं चंदोल१के, पंक२हिं लाखत प्रवीर ॥ १८ ॥

वन दुर्ग१न पहर२ बनत, दिसदिस मगग दिखात ॥

भजि भजि फोजन भीरमैं, जंतुव जन थकिजात ॥ १९ ॥

दुसह कंप लागि दिग्गजन, अकिवकि खंड असेस ॥

उदक समुद्रन उच्छलत, प्रसरत बिजल प्रदेस ॥ २० ॥

मैंड१ चंडी२ दंपति३ मुदित, सह नारद३ लागि संग ॥

ओघ बिमानन अच्छरि४न, आये वरन उमंग ॥ २१ ॥

गजतुंडा१दिक जोगिनी५, भैरव६ भीम दगादि ॥

चउसठि६४ रु बावन१२ चले, छक लावन मह छादि ॥ २२ ॥

किन्नर७ डाकिनि८ साकिनी९, रक्खस१० प्रेत११ चुरेल१२

बिहसि जच्छ१३ बेताल१४ बलि, गुह्यक१५ लग्गे गैल ॥ २३ ॥

गिद्ध१६ १कंक ॥ ७१२ चिल्ल१८ ३ न गगन१, उडत छये बहु ओघ ॥

दरे में ॥ १३ ॥ ३ मेघ के समान ॥ १४ ॥ १५ ॥ ३ सन्मुख ४ भूमि मेंडल को

॥ ११ ॥ ५ सेनाओं से ६ शिकार आदि ॥ १७ ॥ ७ आगे चलनेवालों को ८

सेना के पीछे चलनेवालों को कीचड़ मिलता है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ९ पानी १०

निर्जल प्रदेशों में ॥ २० ॥ ११ शिव ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥



शाहजादों की सेनाका मिलना] सप्तमराशि-चतुर्दशमयूख (२०११)

मही२कोक१९।१जंबुकै२०।२मुखन, मन्न्यौ सुख न सुमोघ२४-

सिंघ१ आदिक ए उक्त२० सब, हुव सैगहि हरखाइ ॥

इत बीरन उच्छाह. अति, बीर दगन बरखाइ ॥ २५ ॥

जुबनबय जिम रसिकजन, मन्नै व्याहत मोद ॥

इम सूरन रन मह अतुल, किय सूचन चहुँ४कोद ॥२६॥

॥ मनाहरस् ॥

उभय२ अनीकनमें कालीसम नाली केक,

चाली मतवाली पारै वज्रमैहु बुरमाँ ॥

सूरि निज दासनको आसनको पूरि दुख,

नासनको भूरि देत थैली१ थान२ थुरमाँ ॥

नीठि नीठि जाइ पै बडेगढ निरौइ खंड,

खंडन खिराइ खाइ जाइ जैसे खुरमाँ ॥

फैलन के फीली१न जुती जे जूह बैल२नके,

गैलनके बीच करै सैलनके सुरमाँ ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

एक१हि दिली१आगरा२, साह सदन सामान्य ॥

सुकवि कथन सामान्यमै, मन्नहु जुग२धा मान्य ॥ २८ ॥

पुव्व१हु लिखि आये प्रथित, अबै२ जनावत एह ॥

इन दोउ२नमें अन्यतर, गिनहु कोहु तस गेह ॥ २९ ॥

॥ अन्त्यानुप्रासिनीरोला ॥

दिल्लीपति चहुवान भान छै पान विदाके,

करि सब पति दारा४०।१कुमार भट सज्जि प्रभाके ॥

पहुँ भेज्यो अज्जनपुरोगँ हुव तैज्जस हाके,

१ व्याघ्र २ गीदड़ ३ आदि ॥२४॥२५॥ ४ उत्साह ५ चारों दिशाओं में ॥ २५ ॥

६ तोप ७ छंद ८ पंडित ९ चहुन १० रूप्यों की धेली ११ दुशाला १२ समीप लेकर १३ हाथियों से १४ समूह १५ पर्वतों का कज्जल ॥२८॥ १६ प्रभिन्न ॥२९॥ १७ कानिवाले १८ राजा शत्रुशाल का १९ आर्य लोकों का अग्रणी २० उसके यश के

कथित राम ११२ कीरतिराइ कुमार कूरमनेताके ॥ ३० ॥  
 इत्यादिक गुरुलघुअनेक नृपः कुमारश्च नाके,  
 मिच्छन कासिमखानमुख्य सममान सता१९४१ के ॥  
 जिम साइस्तेखान२ जोध जाफर३ ढिगजाके,  
 कहत कलीज४हु को कितेक क्रम विचिकिच्छाके ॥ ३१ ॥  
 नहिं जो याके भागनैर तातो इतयाके,  
 भागनगर जो तासभाग तो उतर पहु ताके ॥  
 अधिक सता१९४११२कासिम२उमैरहि सासक सेनाके,  
 और चलेदाग४०१उपत छकछाई छैटाके ॥ ३२ ॥  
 इम दक्खिन३१२उत्तर११४१२अनीक तिम सम्मुह ताके,  
 दरकुंचन दळे दुल्लह जम जूह जिलाके ॥  
 अंगैअंभ२सु पिछि१पंक२तैहँ सर१सरिता२के,  
 परि जलजंतुन असह पीर रहि सीर सिराके ॥ ३३ ॥  
 डगमांगय डुंगर डरात पविपात प्रथाके,  
 अंग मचके दलन धाव उफनाव इलाके ॥  
 कगरक्खि आलुके कपाल फटि जाल फँटाके,  
 प्रविमै तस रद कमठपिठ किमु टँकक्रियाके ॥ ३४ ॥  
 मित्रूलगत भटनसीस कारन भोकाके,  
 मिहछा के असह सूर करतार कैटाके ॥  
 वेन नद जिम डक्खेर बुल्लन बाचाके,

१ कीर्ति सह. कलवाहों के २ पति का ॥ ३० ॥ ३ नांही नहीं करनेवाले ४ से  
 नापात ५ शत्रुशाल के समान आदरवाला ६ विचिकित्सा (संदेह) के क्रम में  
 है अर्थात् इसमें संदेह है ॥ ३१ ॥ ७ शीघ्र ८ शोभा ॥ ३२ ॥ ९ कठिनाई से  
 तर्कना में आवे ऐसा १० आगे पानी और पीछे कीचड़. तालाब और ११ नदी  
 के १२ ऊपर से सीर का आना बंध होगया ॥ ३३ ॥ १३ वज्र पड़ने की प्रसिद्धि  
 से १४ पृथ्वी के १५ शोषनाग के १६ फण के १७ मानों १८ पत्थर पर टांकी छुसे  
 इसप्रकार ॥ ३४ ॥ १९ सिन्धवी रागनी के २० युद्ध वा कतल करनेवाले २१  
 दाही के दांतों के समान (दाही के दांत एक ही चार) बाहिर निकलते हैं जो  
 पीछे नहीं छुसते ॥

भासत इत१उत२बंधुभाव प्रचुरन हित पाके ॥ ३५ ॥

कति जामाता१स्वसुर२केक सुत१तात२सखा१२के,  
कति सालक१जाँमिप२प्रकार कति भ्रातृजै१काके२ ॥

क्रम मातुल१भानेज२कक मन तेज मंताके,  
दौहित्रक१नानाँ२उदार भट वर भ्राता११.के ॥ ३६ ॥

जैनकपिता१नैती२अजेय बलश्रेय विद्याके ॥

बाहुजरा१के के जवन२वार रखवार रंसाके,

धैकमैं मन मावै न धीर छकमैं जस छाके,

पटकत पछिछन कतिन पानि तीरन गन ताके ॥ ३७ ॥

दाव नमनै कति दुँरुह दिलचाव दगाके,

जे अभिमानिन हनत जंग थट्टन नन थाके ॥

पटु बिगंतरि तुपकन प्रहार गेरत गुंजाँ.के,

सद्वे कुंतन कतिक सज्ज भर लंब भुजाके ॥ ३८ ॥

लेत किते गहि मंडलगा भुख मंग मंजाके,

अँचनहार कितेकउग्र सँय सिंहसटाके ॥

अभ्यासक कति बल अखंड पटु दंड१ पटा२के,

रिपुगन बासक रसिक रारि रासक रेतोंके ॥ ३९ ॥

स्वामि लवन जिम पचन सुदि मन तिम मंताँके,

सत्थिन गंताँ सुरन सद्व हत्थिन हंताँ के ॥

ईस१ उमा२ हेरंब३ अर्क४ नरहरि५ नैताँके,

१ बहुताँ से ॥३५॥ २वहिनोई ३भतीजे ४मामा ५विचारके ॥३६॥६दादा(पिता-  
मह ७पोता ८अष्ट विधानवाले ९क्षत्रिय १०भूमि के रत्नक ११ क्रोध में ॥३७॥  
१२ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसे १३ चिरमी १४ भाले ॥३८॥ १५ खड्ग १६  
आदि १७मार्ग(पैतरे) १८हाथा से १९सिंह की गर्दन के बाल २०कितने ही वी-  
र्य से नृत्य करनेवाले ॥३९॥ २१मंत्री अथवा स्वामी के लोन की पाचन की ख-  
बर पर मानों उपदेश करनेवाले २२ देवताओं के साथ में २३ जानेवाले २४  
मारनेवाले २५ गणेश २६नमन करनेवाले

तुच्छ चउदह १४ लोक तकि किल अतिक्रंताके ॥४०॥

कर बल मेदनहार केक बहु बैर व्यथाके,  
हृद संसृति की रहनहार विच किंति कथाके ॥

इभं गंजन मजबूत अंग जमहूत जथाके,  
चल्ले इम रजपूत चंड पुंरूहूत प्रथाके ॥ ४१ ॥

हुलसे अतिभट चलनहार प्रतिभट पर्जा के,  
हेला संगर बहनहार लंगर लज्जाके ॥

पल्लभोजिन पालक पुगाइ मधु रस मंज्जाके,  
लुब्धि सयन सुख लैनहार मूगन सँज्जाके ॥४२॥

इत निर्भय जीवन उदास खिल दास खुदाके,  
मानी अति बल मुसलमान मनमेत मुदाके ॥

पर खंडन पटकै प्रपात तरवारि तुदा के,  
इम पंजपुर्तन १ च्यहार ४ यार २ जिम इष्ट जुदाके ॥४३॥

उभय २ दीन जय पीन अोज तँहँ भिन्न तँफाके,  
होडाहोडी बदनहार बल १ लौन बैफा के ॥

दबै संकल असह दाव पय काल कफा के,  
द्वै २ ही दिस इच्छक दुरुहँ निज किंति नफा के ॥

१ निश्चय २ उल्लंघन करनेवाले. (इस छंद में अन्त्यानुप्रास में 'के' शब्द आये हैं सो बहुधा कितनों के वाचक हैं) ॥ ४० ॥ ३ पीड़ा के ४ सृष्टि की सीमा ५ कीर्ति ६ हाथियों के मारने में ७ इन्द्र के समान प्रसिद्धिवाले ॥ ४१ ॥ ८ शत्रुओं को ९ नीच बनानेवाले वा दवानेवाले १० युद्ध में पीड़ा पूर्वक चलनेवाले ११ मांस भोजन करनेवाले पशु पक्षियों के १२ मेद (हाड के भीतर की मीजी) १३ लोभ करके १४ शरशय्या ॥ ४२ ॥ १५ बाकी के १६ हर्ष १७ 'तुद व्यथने' इस धातु से तुदा शब्द का अर्थ पीड़ा देनेवाला है १८ दिन भर में पांच बार निमाज पढ़नेवाले १९ आयों में चार वर्षा हैं इसीप्रकार यवनों में शत्रु, शय्यद, मुगल, पठान ये चार जातियाँ हैं सो इन चारों में कितने ही का मजहब (सुन्नी सिया आदि) जुदा था परन्तु परस्पर में १९ मित्र थे ॥ ४३ ॥ २० पुष्ट. जुदे जुदे २१ जिलों के २२ निमक हलाल २३ क्रोध से काल की सांकल को पैर से दवानेवाले २४ कठिनाई से तर्कना में आवें ऐसे

कहूतहार करीनकाय संमसर सफा के ॥४४॥

वादी हारन विजय वाद असिबर आखा के,

कोप जहर भासक कराल बासक ताखाँ के ॥

सुरवा<sup>१</sup>नी१ अरवी२ सं मुख्य भाखन भाखा के,

तेरह१३ चबु४ आदिक प्रतानं संभृत साखाके ॥४५॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणा सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे धवलपुरान्तिकदारांशिकोहौरंगजेवसमरार-  
म्भवर्णनं चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

आदितः षड्विंशत्युत्तरद्विशततमः ॥ २२४ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

विदित तीज३ आसाढ४ वदि२, जोसी हरजि द्विजात ॥

समर सुद्धिः पण्डरुन सहित, अप्पी वुद्धिं आत ॥ १ ॥

रानि१न कुमरानि१न सरुचि, बहि ठकुगानि३न चाय ॥

सुनि बहुतन पातिमृत समर, किय प्रातहि हुत काय ॥२॥

तीर्जा३ अरु चौथी४ तिमहि, इम लुट्टा६ अमुं आस ॥

रानीअपणं जीवते रही, करि अपकिति प्रकास ॥३॥

तीर्था३ गजकुमारि१९४३तँहँ, जो प्रतापगढ जात ॥

जाके बापी१ वाग२ जुग२, कोटा मग्ग कहात ॥४॥

१ हाथियों के शरीर में २ साफ तरवार निकालनेवाले ॥ ४४ ॥ ३ हठ करनेवाले  
४ पूर्ण ५ तक्षक ६ संस्कृत. नेरह और चार शाखाओं को ७ फैलाकर ८ पोषण  
करनेवाले; अथवा भ्रष्ट रीति से पुष्ट करने वाले यह आर्य और यवनों का व-  
र्णन यथा संख्या से है ॥ ४५ ॥

श्रीवंशशास्त्र महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम रात्रि में बुन्दी के सूपति शयुशाल के चरित्र में भालपुर के समीप दाराजिकोह और औरंगजेब से युद्ध प्रारम्भ होने का चौदहवाँ ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२६ मयूख हुए ॥

१. ब्राह्मण? ० युक्त की खबर ॥१॥ १. चरीर होवे ॥२॥ १. प्रार्थ की आज्ञा से ॥३॥ ४॥

नित्यकुमरि११४४ तिम नारची, चौथी४ जीवन चाहि ॥

विदेखन सुख विलसन बची, सुत भगवंत१९५३ सगाहि ५

इम छट्टी६ असु लाभ वह, करि आनंदकुसा॥१९४६॥

बडो१ सुतहु मरतहु बची, बंधू सगर्म विचारि ॥६॥

पंच५हि सुत भारत१९५४प्रिया, उठी जसन दित आति ॥

चरु४ सगर्भा चालुकी, तँहँ रोकीं दठ ता ति ॥ ७ ॥

अकखी ममसुत असयह, उदर तिहारे आहि ॥

यातै तू१ रहि मैरहु ईम, जियत रही लखि जाहि ॥८॥

रानी ए३ इम बचिरही, तीन३हि लोन ठयताई ॥

सत्त७ मरी सुभगा सुनहु, पात पहिलैं विधि पाइ ॥९॥

बूदीसन दिस बंरुनी३५, अंग मिर आयत एस ॥

रविछत्रा१ विरची रुचिर, बंधु जिहिं खरचि विसस ॥१०॥

स्यामकुमरि११४१२ रट्टारि सो, पुव्व गई परलोक ॥

जेठी१ यह भाऊ१९५१ जननि, सुभगा सतिय विसोक ॥११॥

चंद्राउति दूजो२ चतुर, प्रेमकुमरि१९४१२ खिनपाइ ॥

भीम१९५१२ प्रेम सङ्गति भंजी, विधिवल देह विहाइ ॥१२॥

नयम९ ईडेरची निपुनि, अरु पिछली चउ४ ऊँढ ॥

पति पहिलैं सुभगापनहि, मृत ए सत्त७ अमह ॥१३॥

रानीखट६ अव नृप मरत, पंच५ खवासि उपेत ॥

जे पातुरि चालीस४० जुत, हुत हुव सहगति हेत ॥१४॥

प्रिया चालुकी पंचमी५, सूरजकुमरि१९४५ सनाम ॥

ऐकी हठि पहिलैं जगत, अब सु जग अभिगम ॥१५॥

१नरुकी २सुख देखने की ॥१॥ ३प्राण के लाभ से ४ पुत्र की वधू को गर्भवती जानकर ॥ ५ ॥ ५ उस ली की, अथवा उसको स्त्रियों ने रोकी; अथवा माता रूपी सासू ने रोकी ॥७॥ ६है ७उसकारण से भी ॥८॥ ९निमक हराम होकर ॥९॥ १०पश्चिम दिशामें १०पर्वत के ऊपर ११बडा १२घन ॥१०॥ ११ १२भीमसिंह की माता ॥१२॥ १३विवाही हुई १४सुहागनपन में १५चतुर ॥१३॥ १६सहित ॥१४॥ १५॥

जाके बापी१ बाग२ जुग२, अबहु सुजस अंकूर ॥  
 छारबाग सन इत सु छवि, दिस दक्खिन२३ कछु दूर ॥ १६ ॥  
 रानी सप्तम०हरकुमरि१९४१७, उदित चालुकी आहि ॥  
 रानाउति अष्टम०रुचिर, चंद्रकुमरि१९४१८जस चाहि ॥ १७ ॥  
 जाके बापी१ बाग२ जुग२, मिलत कुमारति मग्न ॥  
 इमहि जरी तँहँ अष्टमी०, यह करि किति उदग्ग ॥ १८ ॥  
 कावंधी दसमी१० कही, कम कल्याण कुमारि१९४१२० ॥  
 सोहु जरी अति प्रीतिसह, असह विगह अवधारि ॥ १९ ॥  
 विदित बेल१ अस बापिकार, याके दक्खिन१३ओर ॥  
 छारबागके छिगहि छवि, जे सूचत जसजोर ॥ २० ॥  
 कावंधी एकादसी११, फुल्लकुमरि१९४११गुन फीत ॥  
 जो महलन वासी जरी, भूपविरह अवधीत ॥ २१ ॥  
 जासबेल१ बापी२ जुग२हि, माहुंदापुर मग्न ॥  
 अंकित जससूचक अबहु, लसत पुव्व१दिस लग्न ॥ २२ ॥  
 अपर२ईडरेचीहु इम, धुव लच्छी१९४१२अभिधान ॥  
 रहउरी यह बारही, विसी कृसानु विहान ॥ २३ ॥  
 पंच५भुजि०वा राम२०३१४प्रभु, जरी सुनहु अब जत्य ॥  
 प्रथम१चमेली१नाम पटु, स्वामि विरह हुव सत्य ॥ २४ ॥  
 चत्वर जो चोगानके, गोपुंर छिग इत आहि ॥  
 कहियत ताके नामकरि, सो यह विदित रुदाहि ॥ २५ ॥  
 गिरि१ओर८चत्वर छिगहि, सिद्धरबंध हरिसद ॥  
 तिहि विरच्यो अज्जहु तनत, प्रभा प्रात जिम पैदा ॥ २६ ॥

१ राठोड़ी स्वारण करके आधीत विरह को मारुत जानकर ॥ १२ ॥ ३ बान ॥ २० ॥  
 ४ गुणों का समूह ५ राजा के विरह से उली हुई ॥ २१ ॥ ६ जिसका बाग ॥ २२ ॥  
 ७ दूसरी ईडरेची = प्रवेश द्वार १ अग्नि में १० प्रज्ञान समय ॥ २३ ॥ ११ पास-  
 वान जिये १२ हे प्रभु रामसिंह ॥ २४ ॥ १३ शहर के दरवाजे के पास ॥ २५ ॥  
 १४ ईशानकोण में १५ चोगान के समीप १६ पिण्ड का मंदिर १७ जिस प्रकार

इस खवासि दूजीर इहाँ, जरी अनारौं रजास ॥  
 पुर साखापुर छत्रपुर, बापी १ हरिमृदुवास ॥ २७ ॥  
 स्यामरंग ३तीजी ३सुवति, चोथी ४तँहँ चंपा ४रु ॥  
 पट्टु हरिमाला ५पंचमी ५, चढी चिता ५ चौरु ॥ २८ ॥  
 तिम पातुरि चालीस ४०तँहँ, गई मयूरी १गैल ॥  
 पुरढिग तस छत्री १प्रथित, समन दिसा २३के सैल ॥ २९ ॥  
 इस दूजीर आसावरी, अठतीस ३८ तिम ओर ॥  
 चालीस ४०हि प्रविसी चिता, ठानि सुजस सबठोर ॥ ३० ॥  
 छ ६अरु पंचचालीस ४५छम, इहिँ क्रम रानि १न आदि ॥  
 इक्कावन ५१प्रविसी अँनल, सत्यहि दित संवादि ॥ ३१ ॥  
 चिता निलय आयत रुचिर, इक्क विंसी सबआइ ॥  
 किय भाऊ १९५१सबको रँवकर, दाह सु विधि दरसाइ ॥ ३२ ॥  
 जिम निज निज पति पगधजुत, सुनहु जरी अवसेस ॥  
 कुमरानी भारत १९५४कुमर, ऊँठा पंचक ५एस ॥ ३३ ॥  
 आदि सुता आनंदकी, सेखाउति रंभा १९५१ सु ॥  
 परनि मनोहरपुर प्रिया, आनी भारत १९५४ आसु ॥ ३४ ॥  
 पुनि कोलासर सिवपुरी, राजाउत अमरस ॥  
 कुमरहि दिय जमुना १९५२ कनी, इहिक्रम दूजीर एस ॥ ३५ ॥  
 बल्लनोत जुज्झार बलि, कनी सुजानकुमारि १९५३ ॥  
 परिनाई खीना पति जु, निपुन तृती ३य सु नारि ॥ ३६ ॥  
 सोलखी हरिसिंहकी, रतनकुमरि १९५४ कुमरी सु ॥

प्रधान समय में कमल प्रांति कैलाता है तिसप्रकार यह मंदिर भी कैलाता ॥  
 ॥ २६ ॥ १ पुरा (शहर के द्वार के बाहर का छोटा ग्राम) ॥ २७ ॥ २ सुन्दर ॥ २८ ॥  
 ३ प्रसिद्ध ४ दक्षिण दिशा के ५ पर्वत पर ॥ २९ ॥ ३० ॥ ६ समर्थ ७ अग्नि में  
 ८ रनेह का कथन करके ॥ ३१ ॥ ९ चिता के चौड़े सुन्दर घर में १० इकट्ठी  
 होकर चुली ११ अपने हाथ से ॥ ३२ ॥ १२ बिवाही हुई ॥ ३३ ॥ ३४ ॥  
 ॥ ३५ ॥ ३६ ॥



कुमरानी मारत १९५।४ कुमर, ब्याह चतुर्थ ४ बरी सु ॥३७॥  
मरीसु १ बरीसु २ अन्त्यानुपासः १ ॥

॥ दोहा ॥

कती गोर रनछोरकी, इंद्रकुमरि १९५।५ अभिधान ॥  
पंचम ५ ब्याह कुमार, पट्ट, परन्यों रीति प्रमान ॥ ३८ ॥  
ए पंच ५ हि जरिवे उठी, इन्हँ सस्सू तँहँ आई ॥  
चउमं ४ सगर्भा चालुकी, रोकी प्रसभ रचाइ ॥ ३९ ॥  
बरंजी भाऊ १९५।१ जेठ बलि, \*ओक रही इम एह ॥  
तनय जन्पों आनंद १९६।१ तस; उच्छव किन्न अछेह ॥४०॥  
बहुरि मरयो चउ ४ मास बचि, यह बालहि आनंद १९६।१ ॥  
अति सोच्यो भाऊ १९५।१ अधिप, मन कल्प न कहि मंद ॥४१॥  
यह कछु भायी १ सुनहु अब, वर्तमान २ सुहि बत ॥  
चोथी ४ भूषा सु चालुकी, रोकी जियन बिरैत ॥ ४२ ॥  
तास सपत्नी चउ ४ हि तिम, सूचित जाइ मसान ॥  
ज्वलन अप्रसूता जरी, सह पतिपग्य सुजान ॥ ४३ ॥  
अधिप अनुज मुहुकम ११४।५।१ उदय, १९४।६।२ सूर १९४।७।३  
परे लय ३ सूर ॥  
परे भतीजे चउ ४ प्रधन, यह सुनिये जसपूर ॥ ४४ ॥  
दलि ओरंग ४०।३ मुराद ४०।४ दल, परे जहाँ अतिप्रान ॥  
इंद्रसल्ल १९४।२ सुत अष्ट ८ महु, गिनिये प्रथम १ गुमान १९५।८। ॥४५॥  
तिम जेठो मुहुकम १९४।५ तनय, जोरावर १९५।१।२ भुज जोर  
प्रधन तत्थ दूजो २ परयो, सचि खग्यन धन रोर ॥ ४६ ॥

दूजो२ अरु तीजो३ हुय रहि, महासिंह १९४।९ सुत मेय ॥  
 ए तीजो३ चोथो४ इहाँ, कनक १९५।१।३ लाल १९५।३।४ जसक्रेय ॥ ४७ ॥  
 इक १ कुमार अरु त्रय ३ अनुज, बंधुन चउ ४ समवेत ॥  
 स्वयं नवम ९ संभर सता १९४।१, खिरयो असम रनखेत ॥ ४८ ॥  
 लो मुहुकम १९४।५ मुख सत ७ जँहँ, तुष्टे तेगन तँष्ट ॥  
 तिम संगहु निज निज तियन, किय सहगोन अर्कष्ट ॥ ४९ ॥  
 जुग २ मुहुकम १९४।५ पतनी जरी, सती बिदित पतिसंग ॥  
 इक १ इक १ सेसदन संग इस, अनल विसी हुतअंग ॥ ५० ॥  
 किते कनक १९५।२ लाल १९५।३ हि कहत, दिव अनूढ रंगतदोइ ॥  
 किते बिबाहै पै कहत, गई न तिय जिय गोई ॥ ५१ ॥  
 बिठल १ माधव २ आदि बलि, परे सुभट सतपंच ५०० ॥  
 चउ सत ४०० तँहँ धारन चढे, बाहुज २ बीर अबंच ॥ ५२ ॥  
 बाहुज २ तँहँ कोउक विरयो, ललनाविनु सुरलोक ॥  
 क्रम इतरन संगहु किती, सती जरिय गतसोक ॥ ५३ ॥  
 हम सुचि ४ असित २ चउत्थि ४ अँह, हुंघ घरघर होकार ॥  
 बिसवासे भाऊ १९५।१ बखसि, अखिलन बिभव उदार ॥ ५४ ॥  
 चँविहँ पहु भाऊ १९५।१ चरित, बंधन दोउ २ न व्याह ॥  
 भीम १९५।२ व्याह पुव्वहि भनै, त्रय ३ बालहि मृत ताह ॥ ५५ ॥  
 अधिप सता १९४।१ बिरचेहु अब, सुनि ए थान असेस ॥  
 अधिप ख्यात सूचत अबहु, निज जस राम २०२ नरेस ॥ ५६ ॥  
 चउ ४ मंदिर हरिके रुचिर, पुरबिच इक १ प्राकार १।५ ॥  
 तिहँ डिगइक १ चोगान १।६ तँहँ, इक २ दुर्गा आगार १।७ ॥ ५७ ॥

१ प्रमाण (गणना) वाला २ यश खरीदनेवाला ॥ ४७ ॥ ३ साथ ४ चट्टवाय  
 शत्रुशाल ५ जिसके समान दूसरा कोई नहीं ऐसा ॥ ४८ ॥ ६ आदि ७ खजों  
 से छोटे छोटे टुकड़े होकर ८ बिना फट ॥ ४९ ॥ ९० ॥ ९ स्वर्ग गये १० बिना  
 विवाहे ११ जी छिपाकर ॥ ५१ ॥ १२ घायल हुए १३ चात्रिय १४ नहीं ठगनेवाले  
 ॥ ५२ ॥ १५ ली बिना कोई ही ज़मीन स्वर्ग में गयी १६ आबाद यदि चौध के  
 १७ दिन ॥ ५४ ॥ १८ कहेंगे ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १९ कोट २० देवी का मन्दिर ॥ ५७ ॥

दुवरगोपुर२।९ प्रासाद२।१२ दुवर, इक १ सर १।१२ इक १ उद्यान १।१३  
ए तेरह १३ अविवाद इन; पहु प्रणीत थित थान ॥ ५८ ॥

पत्थरगज १।१४ इक १।१४ अष्टपर, संसय तँहँ दरसात ॥  
सब ए अव क्रमतेँ सुनहु, आयत जस अवदात ॥ ५९ ॥

श्रीकेसव मंदिर १ सुभग, अतुल सु पट्टनि आईहिं ॥  
दुवरस्यामल २ जगदीस ३ के, मंदिर २।३ बूंदीमाँहिं ॥ ६० ॥

हित निर्जपर बलराम १ हुव, सेवक बिप्र सनाह्य ॥  
किय चोथो ४ तसनाम करि, इहाँ बिदित छवि आह्य ॥ ६१ ॥

पूरब सूरजपोलितैँ, बरपो जु संतति बीत ॥  
दामोदर १ राधा २ बिदित, पधराये तँहँ प्रीत ॥ ६२ ॥

रत्नबुरज १ सन बारुनी ३।५, करि गिरि २ लागि प्राकार १।५ ॥  
बाहिर करि दक्खिन २।३ बसति, बिचकिय चोक १।६ बिथारा ६३।

उमा हर्षदाको उहाँ, मंदिर १।७ पंचम ५ मंडि ॥  
गोपुर १।८ तँहँ चोगानको, बिरचिय चोर बिहंडि ॥ ६४ ॥

दूजो तँहँ मंडूकदर, तँहँ गोपुर २।९ रचि ताम ॥  
दढ, त्रि ३ खंड १।१० चउ ४ खंड २।११ दुव, रचे महल २।११ अभिरामा ६५।

महलन बिच पहिलो १ महल १।१०, रात्रिखंड अभिधान ॥  
गजमुखसाल १ रु रंगमुख, मंडप २ मंजु अमान ॥ ६६ ॥

मुकुट आदिमंदिर ३ सहित, तीजो ३ खंड जु तास ॥  
महलन भिरि दूजो २ महल २।११, प्रौची १ करत प्रकास ॥ ६७ ॥

जाको खंड चतुष्क ४ जुत, नाम इक १ नरनाह ॥  
छत्रमहल २।११ बिख्यात छिति, सो यह लेत सराह ॥ ६८ ॥

केतु १ कलसर २ दोउ २ न कमन, छत्रमहल २।११ सिर छल १।२ ॥

१ शहर के द्वार २ महल ३ तालाब ४ बाग ॥ ५८ ॥ ५ पाषाण का शार्थ  
६ बुर्ज पर ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ७ तहाँ ॥ ६५ ॥ ८ नाम  
९ गजशाला १० रंग मंडप ॥ ६६ ॥ ११ मुकुट मन्दिर १२ पूर्व दिशा में  
॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ११ सुन्दर

गढ कोटा जिहिँ लैगयो, अधको भीम१९८।१अमल ॥६९॥

पती१नाम निजधाइ पटु, ताके नाम तैडाग१ ॥

राचि प्रताप सागर१।१२ रुचिर, भूप भज्यो जसभाग ॥७०॥

।।हितं रक्तदंता निकट, बिहित सुरथपुर बांग१।१३ ॥

माधव१ ऋतु बिरखन मनुज, रक्खैं जैहँ अनुराग ॥७१॥

प्रतिमा गज१।१४इक१अटपर, दक्खिन१।३दिस सो स्निग्ध॥

नगर बरोदाके निकट, सता१९४।१ रचित सँदिग्ध ॥७२॥

गज जवानभाई गँदित, तस प्रतिमा, वह तत्थ ॥

रची रतन१९२।१ कति इम कहत, सो पै संसयसत्थ॥७३॥

एक१ कुंड१ छत्री२।३ उभय१, धन्य पंती१ नृपधाइ ॥

किय प्रतापसागर१।१२ निकट, पँहु यह अह पधराइ॥७४॥

अगग मनोहर१९२।४ भोज१९।२ उत, जो उपवन किय जत्थ ॥

तास दिगहि जो कुंड१ तिम, सुभ छत्री२।३ जुग२सत्थ॥७५॥

इम नृपधाली भात इत, मन्नि सुजस फलमान२ ॥

छत्ती१ किय पँथु तास छिति, थित प्राची१ गिरिथान॥७६॥

सक दुव बसु सोलह१६८२ समय, भूपकुमार हुव भीम१९५।२ ॥

तनुत्यागी सूचित समय, सत्त ख सलह१७०७ सीम ॥७७॥

भूपकुमार भारत१९५।५ भयो, इम नव अष्टि अनेह ॥

पंद्रह सत्रह१७१५ साक पर, दिव पत्तो तजिदेह ॥७८॥

गुन खट सोलह१६६३ सकल गन, भयो सता१९४।१ यह भूप ॥

सिंधुर अहि सोलह१६८८समय, राज्य लहयो अनुरूप॥७९॥

पंद्रह सलह सक परब, तनुभव१ भ्रातर भतीज३ ॥

१ पाप का पात्र ॥ ६९ ॥ २ तालाच ॥ ७० ॥ ३ वसन्त ऋतु में ४ प्रीति ५  
वुर्ज पर ६ सचिद्वान ७ शङ्खशाल के रचने में सन्देह है = जिस दायी को  
जवान भाई कहते हैं ॥ ७१ ॥ ८ राजा की धाय ने १० प्रभु का ११ उत्सव सहित  
दिन में पधराये; अथवा उत्सव के दिन पधराये ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ १२ राजा का  
धाय भाई १३ मोटी १४ पूर्व दिशा के पर्वत पर ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

अष्टसहित सुतो अधिप, धवलद्रव्य रनधीज ॥८०॥

इति श्रीविंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशलयंचरित्रे हरजीनामविप्रशत्रुशल्यादिवीरमरणोदन्तप्रा-  
पक्षाराज्ञीकुमारपत्नीपतिलोकगमनः, शत्रुशलयसामयिकप्रासाददे-  
वालयदिस्थाननिर्मितिवर्णनं पञ्चदशो मयूखः ॥ १५ ॥

आदितः सप्तविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२७ ॥

१. भोलपुर के युद्ध में ॥ ८० ॥ \*

श्रीविंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के प्रपति  
शत्रुशाल के चरित्र में हरजी नामक ब्राह्मण का राव शत्रुशाल आदि-वीरों  
के मारेजाने की खबर खाने पर राणियों और कुमराणियों का सती होना १  
शत्रुशाल के समय में महल मंदिर आदि स्थान बनने के वर्णन का पन्द्रहवां  
११. मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२७ मयूख हुए ॥

\* ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की इच्छा थी कि शत्रुशाल के मारेजाने के इस युद्ध का वर्णन अत्यन्त उत्तम-  
ता के साथ किया जावेगा इसकारण शत्रुशाल के बुन्दी से चढ़ने का वर्णन करके युद्ध के वर्णन का स्था-  
न खाली छोड़ दिया और आगे शत्रुशाल के मारेजाने का और उसके साथ मारेजाने की गणना करके बु-  
न्दी में सतिये होने का वर्णन कर दिया है, परन्तु फिर या तो सावकाश नहीं मिला अथवा स्मरण नहीं  
आया, इसकारण इस युद्ध का वर्णन नहीं हो सका, यह हमने स्वयं सूर्यमल्ल के समीप रहनेवालों से सुना  
है ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भावसिंह १९५१ चरित्रस्य प्रारम्भः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभीष्मा ॥

॥ दोहा ॥

रवि चउत्थि ४ दिन ग्यारहम ११, कथित आहकैरटा १ दि ॥

दान अखिल विप्रनं दये, सब विधेय संपादि ॥ १ ॥

बहु भोजन दिन बारहम १२, जन द्विज १ मुख जेमाइ ॥

तद्दिन विधि सम सद्धि तिम, ठाम नदालय १ ठाइ ॥ २ ॥

सक पंद्रह सत्रह १७१५ समय, रीति सद्धि अनुरूप ॥

मुचि ४ संगत पंचमि ५ असित २, भावसिंह १९५१ हुव भूप ॥ ३ ॥

कनक छत्र १ चामर २ कर्त्तित, छादन १ श्रीजन २ छाइ ॥

जनक पट्ट भाऊ १९५१ जई, बैठो नय विकसाइ ॥ ४ ॥

आये जन गुरु १ लघु २ अखिल, संभरराज समाज ॥

उत्तारन १ उपादा १ दि इन, सब सद्धि विधि साज ॥ ५ ॥

सुधा बचन सबके श्रवन, पुंठ सह प्रीति पिवाइ ॥

आस्वासन करि आदरे, स्वच्छभाव दरसाइ ॥ ६ ॥

पीतांबर १ पायन प्रनमि, रवि अर्चन अभिराम ॥

आसापूरनि २ अंबिका, पूजा सविधि १ प्रनाम २ ॥ ७ ॥

तद्दिन इम बैठो तखेत, पट्ट भाऊ १९५१ भूषात्त ॥

मित्र १ न घृती धर्ममति, सत्रु १ न छती सात्त ॥ ८ ॥

जुग २ भ्रातन अब जंपियत, व्याह अखिल बिलसंत ॥

परनै पुब्ब अनेह इम, भाऊ १९५१ १२ अरु भगवंत १९५१ ३२ ॥ ९ ॥

कुमरपन हि भाऊ १९५१ करे, बारह १ रगिन सब व्याह ॥

१ एकादशा आदि आह २ उचित सम्पादन करके ॥ १ ॥ ३ आदि ४ आह विशेष ॥ २ ॥ ५ अपाह वदि पंचमी ॥ ३ ॥ ६ विदित ७ छत्र ८ चमरों से ॥ ४ ॥ ९ सभा में १० न्यौछावर ११ नजराना ॥ ५ ॥ १२ कर्णपुट में अर्धात्त कानों के सड़ों में ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ १३ पहिले समय में ॥ ६ ॥

अष्टकरे भगवंत १९५।३इम रचि निगमोदित राह ॥ १० ॥

॥

ए क्रम करि कहियत अखिल, राजराज प्रभु राम २०३।४॥११॥

॥ घनाक्षरी ॥

रानी राजसिंहवारी भगिनी कुमार भाऊ १९५।१,

नाम धनकुमारि १९५।२ बरी जो पहिले १ विवाह ॥

साक ख ख सत्रह १७०० तनूज ताके पृथ्वीसिंह १९६।१,

जो भयो सो जियत दुरमास भयो नरनाह ॥

दूजी २ हरिक्री सुता प्रतापगढ सीसोदनी,

भातुलादिदेवी १९५।२ नाम व्याहो अधिके उछाह ॥

राजपुर तीजी ३ हरकुमारि १९५।३ सनाम बढ-

गूजरि विवाहो फतैसिंह सुता रुचिराह ॥ १२ ॥

कल्यानकी कन्या ईडरेची रठ्ठारि ऊढा,

चोथी ४ कुमरानी नाथकुमारि १९५।४ तदीय नाम ॥

भीम जमुनादि भानुदहर दुरनाम वारो ताकी,

सुता पंचमी ५ विवाहो गंगा १९५।५ अभिराम ॥

नाथाउत चालुक प्रतापसुता छट्ठी ६ नाम,

अमरकुमारि १९५।६ सो बरी निज रिहानी गाम ॥

चंद्राउत नरहरी अमरसुता जो सप्तमी ७ सो,

दीपकुमारि १९५।७ विवाहो भाटखेरी ताम ॥ १३ ॥

स्वसुरको नाम सो न जान्यो पर अष्टमी ८ यो,

कल्यानाहिं कुमारि १९५।८ विवाहो जोधपुर जाइ ॥

चुंडाउत राजसिंहकन्या देवकुमारि १९५।९ विवाहो,

नवमी ९ यो पुरवेप्रम सुपर्व पाइ ॥

१ वेद के कथनानुसार ॥ १० ॥ २ हे राजाओं के राजा: अपना कुपेर रानसिंह

॥ ११ ॥ ३ भातुल देवी ४ प्रीति के मार्ग से ॥ १२ ॥ ५ विवाहिता ६ उसका ७

तहां ॥ १३ ॥ ८ अष्ट समय पाकर

लाडकुमरी१९५।१० सो प्रेमकुमरी१९५।१० दुनामवारी,  
 दसमी१० कबंध हरनाथकी सुता सुभाइ ॥  
 एगारही११ मल्हनादिवासी रठ्ठरि सदा-  
 कुमरि१९५।११ सुमेरुसाहिपुत्री बरी छक छाइ ॥१४॥  
 सो सीसोदनी जो सुता सहस्रमल्लवारी बारही१२,  
 कुमरानी लाडकुमरि१९५।१२ बरी कुमार ॥  
 भाऊ१९५।१ कै सुता इक१ खवासकी भई सो अन्न,  
 पूरना१ बिबाही रानाउत रघुनाथ दार ॥  
 आठों८ भगवंत१९५।३ कै विवाह सुनि ए बै सबे,  
 जंपेजात राम२०३।४ नरनाह क्रमके प्रकार ॥  
 भाग्यवती१९५।१ जेठी१ जसकुमरि१९६।१ कनीकी प्रसू,  
 प्रमारी जु रामठेस भानुकी सुता सुढार ॥१५॥  
 दूजी२ मंचहरी फतमल्ल बडगुज्जरकी,  
 देवमति१९५।२ कन्या सो ही बखतकुमारि१९५।२ नाम ॥  
 तीजी३ चंद्रकुमरि१९५।३ चालुक्य हरिकन्या चौथी४,  
 नष्ट जिहि नाम बल्लनोति१९५।४ सु बिबाही बाम ॥  
 कल्यानकी कन्या पट्ट पंचमी५ मऊके प्रांत,  
 रठ्ठरि राधा१९५।५ सुभ लग्न सो लही ललाम ॥  
 चंद्राउत उदय तनूजा तिम छट्टी६ छत्र-  
 कुमरि१९५।६ बिबाहयो जाडभानुपुर भव्य धाम ॥१६॥  
 राघवकी कन्या सप्तमी७ जो जाइ रामगढ,  
 व्याहयो ब्रजकुमरि१९५।७ सनाम गोरि विंदबनि ॥  
 तामैं भई दूजी२ भगवंत१९५।३ कै तनूजा नाम,  
 कुमरि१९५।२ बरी सो रामपुर के महीप मनि ॥  
 रतनकबंधकी कनी जो हरकुमरि१९५।८,



बिबाही अष्टमी८ सो भगवंत१९५।३मह मंजु तनि ॥

भाता च्यारि४ ए इम कुमार हि बिबाहे क्रम,

बारह१२ छद् अष्ट८ पंच५ भूत सु उदंत भनि ॥१७॥

वर्तमान बात अब अन्वय मैं आनी जात,

भाऊ१९५।१भयो भूपति पिताको इम पट्ट पाइ ॥

साचिव सुसील सनमानैं उपर्धा मैं आनि,

राज्यके सम्दारे सब अंग दृढता दिखाइ ॥

घायलन पांयो जब पाटवैं तबहि तैसैं,

कामआये बीरन के पुत्र बली बुलाइ ॥

ते१रू तिमं घायल २ अघायल ३असेस आप,

नियत निवाजे वीर वाजे जसके बजाइ ॥ १८ ॥

धोलपुर धारन लगे १ जे धुर धारन सपिंड१,

असपिंड २ रु सगोत्र ३ असगोत्र ४ सूर ॥

घायल भये २ जे नहि घायल भये २ पै जे,

विसेस बढि जूके मुख्य मुख्य प्रतिधात पूर,

जूके सतपंच५०० नाम तिनमें जितेक जानैं,

विप्रा१दिक वीर जे असुरख्य हु कलह क्रूर,

तिनके तनूजनके वैभव बढाये भाऊ १९५।१,

दृढ६।१न अधीस ए बुलाइ सबही हजूर ॥ १९ ॥

सता१९४।१के सपिंड१ तूटे एकादस११ संगरमें,

एक१अंगजन्मा१भाता३।४तीन३रू भतीज४।८च्यारि४ ॥

तीन३हि सपिंड१ भाता ३।११ सात७ असपिंड२ रु,

सगोत्र ३ दुव २तूटे असगोत्र ४ दस १०राचे रारि ॥

याही क्रम थायल २सनाभि १ असनाभि २ रु,  
 समोल ३ असगोत्र ४ इन्ह पीछें बैदिहैं दिथारि ॥ २० ॥  
 सता १९४१के सपिंड १ ए व एकादस ११ जानों इहाँ,  
 इक १ सुत भारत १ जो ढारत गजन ढालें ॥  
 सूचे क्रम आता मुहुकम १९४१ २ ज्यों उदय १९४१ ३ सूर १९४१ ४,  
 भातुज गुमान १९४१ ५ जोरावर १९४१ ६ त्यों कनक १९४१ ७ ला-  
 ल १९४१ ८ ॥

ईटावा अधीस हिरदाउत २४१२० उदयसिंह १९४१ ९,  
 बिहल ११३११० रु माधो १९४१ ११ पूर १८८१३ मोकल-  
 १८८१४ प्रसंस्तिपाल ॥

ए व असपिंड २ सात ७ सारन १९४१ पिनाति रायसिंह १९०१ ११,  
 नगराज १९११ २ पिता १ पुत्र २ तलवासवाल ॥ २१ ॥  
 कल्याणादिसिंह १९०१ ३ नवगामपति निम्माउत १२१८,  
 भाई नवरंग पोते ८४ उभय २ इहाँ अर्वाह ॥

खैरुनाँ १ खजूरी २ पति हृदयनरायन १९२१ ४ रु,  
 साँवल १९३१ ५ सधीर अरि एनं संहन सीह ॥  
 हालूपोते ४ वंधु दुवर डाभीपति हरिसिंह १९२१ ६,  
 ओवन अधीस दूजोरकनक १९३१ ७ उदार ईह ॥  
 खीची १३ द्वै २ सगोत्र ३ जोध १ जुन्यापति गैरोलीस,  
 गोवर्द्धन २ ए व असगोत्र ४ दस १० जेत लीह ॥ २२ ॥  
 भाटी जैतसिंह १ चंद्राउत मुहुकमसिंह २,  
 गोर सदानंद ३ दहिया दुवर विजय २ ४ रामरा ५ ॥  
 डाभीआसकरन ६ कबंध चंद्रसिंह ७ रूपसिंह १८,  
 लालसिंह १९ दुवर चालुक रु भाला स्याम १० ॥

१ विस्तार से कहेंगे ॥ २० ॥ २ हाथियों के निशान को गिरानेवाला  
 दस्तावेजों (लिखावटों) का पालनेवाला ४ पोता ॥ २१ ॥ ५ कल्याणसिंह  
 निर्भय ७ शत्रुओं रूपी हरिणों को मारनेवाला सिंह ८ इच्छा ॥ २२ ॥

बिम्बशुवर्ध्वीर जोगीरामश्वलरामरघ्यारि४,  
 लालशहरि२।४रत्न३।५खेम४।६ए४बनिक३आये काम ॥  
 फतैनंद१।७कायथ गुमान१।८ऊदा२।९गुज्जर रु,  
 मालीखेम१।१०नाथू२।११पज्ज४पंचक५पौकीनी नाम ॥२३॥  
 जानौं अब जवन दलेलखान१अलीखान२,  
 दाऊद३रु रुस्तुम४सल्लेमखान५मोनखान६ ॥  
 पीरखान७भाजीखान८हैदर९रहीमबेग१०,  
 कुतब११करीम१२सेखकादर१३पहलवान ॥  
 तेरह१३ए नाली खरे खगनकी धार खिरि,  
 स्वामी सत्रुसाल१६४।१७के समीप परे अतिमान ॥  
 और गज१बाजि२चामर३दिन के चाकर,  
 अनेक ही परे पै उनके न जानैं अभिधान ॥ २४ ॥  
 इत्पादिक संकल परे जे जूझि पंचसत५००,  
 रीक्ष दै विसासे पुत्र तिनके बुलाइ बीर ॥  
 पुत्र जिनके हुते न तिनकी तियन पाये,  
 स्वापतेय जीवन लौं पुण्य१ रु निवाह२सीर ॥  
 नारिहु हुती न जिनके तो तिनके निमित्त तीरथ,  
 प्रयाग१गया२आदिक निखिल नीर ॥  
 काँकस१गिराइ दान२भोजन कराइ कवि,  
 लोकनके काव्यन मढाये धर्मधारी धीर ॥ २५ ॥  
 घायल२हु बीस२०जे सपिंड१अमपिंड२पंच५,  
 यौ त्रय३सगोत्र३सप्तदस१७असगोत्र४आइ ॥  
 तीजो३इंद्रसाल१९४।२को तनूज रनछोर१९५।३।६जो२,  
 गोपालादिसिंह१९५।२मुख्य१वैरीसाल१९४।३को बुलाइ ॥  
 मुहुकम१९४।५स पुत्रसतेन१९५।६।३जगमोहन१९५।७।४हे२,

छठोद्वार सप्तमद्वाराहि मन मोदछाइ ॥

कका महासिंह १९५।५रु तदीय सुत जेठो १मान १९५।१६,  
ए खटद्वारसिंह १९५।१६ में मुख्य बढते बनाइ ॥ २६ ॥

याही क्रमसे सजे चउद्वार १४सिंह १९५।१६,

जनक के काका हरि १९३।३को सुत बडो १सुजान १९४।१।१

याको भ्रात चौथो ४अजबेस १९४।४।२रु तनय याको,

जेठो १गजसिंह १९५।१।३कुलपट्टप नय निधान ॥

पट्टप प्रयाग १९४।१।४नाती हृदयनरायन १९२।२को,

जेठो १रनछोर १९५।१।५सुत संजुत प्रथितपान ॥

भाई सबलेस १९४।१।६याको काका बलराम १९३।३सुत,

काका बिजैराम १९३।३सुत घासीराम १९४।१।७मतिमान २७

रतन १९२।२के भ्राता के सोदास १९२।३को पिनाती मुख्य

सातल १९५।१।८सधीर सनमान्यो सतकार ठानि ॥

रायमल्ल १९१।३तनय कुपुत्र जेठो १रामचन्द्र १९२।१,

ताको मुख्य १नाती अजबेस १९४।१।९हु अधिक मानि ॥

सुर्जन १९०।१के भ्राता अखैराज १८९।२के पिनाती दोइर,

जेठो १रूपसिंह १९३।१।१०दूजो २साखा बखतेस १९४।१।११जानि ॥

सुर्जन १९०।१को चौथो ४भ्रात राम १८९।४को पिनाती मुख्य १,

मान्यो त्यो मुकुंद १९२।१।१२हु प्रवीरन मैं पहिचानि ॥ २८ ॥

अर्जुन १८८।१के दूजो २भ्रात भीम १८८।२को पिनाती मुख्य १,

प्रेमसिंह १९३।१।१३नाम ताको बैभव १पटा २बढारि ॥

अर्जुन १८८।१के तीजे ३भ्रात पूरन १८८।३को नाती मुख्य,

हिंडोलीस नाम रुकमंगद १९४।१।१४बली विचारि ॥

निकट छदबंधु अरु दूरयो चउद्वार १४,

सिंह १सब ही ए बीस २०धायन परे निहारि ॥

रामे २०३।४ दिन दुल्लह सुनों वै असपिंड २५ पंच ५,  
 घायन परे जे सुगलान की मरोरि मारि ॥ २९ ॥  
 भूपति सुभांड १८६।४ को जो आता अखैराज १८६।१ वडो १,  
 स्वामिद्रोह ठानि खोयो जाके कुल स्वामिधर्म ॥  
 तामें मुख्य १ सूर सिवसिंह १९४।१।२ असपिंडन,  
 पाये घाय सन्तुनके सस्त्रन विदीर्षा बर्म ॥  
 लालाउत १०।६ जैतसिंह १८५।१ वंस अवतंस मान १९१।१।२,  
 डुंगरपउत्त ७।३ बलू १९१।१।३ कलिमें कृतान्त कर्म ॥  
 भीम १९३।१।४ हरपालपोता ५।१ हाथाउत्त ३ धीर १९४।१।५ अस,  
 पिंड २५ पंच ५ घायल ए सर्वक सुगल ६ मर्म ॥ ३० ॥  
 ए त्रय ३ भदोरिया ६ सगोत्र ३ चहुवान अब,  
 भंडपुरभूप को भतीज सन्तुसाल १ नाम ॥  
 दूजो २ अभैपुर को अधीस्वर सुकुंद २ तीजो,  
 मंडाउरी सासक जो सो पै चंद्रसिंह ३ ताम ॥  
 अब असगोत्र २ सुनों सोढा वनमालीदास १,  
 साला रविमल्ल ३ स्वीय चालुक जनन जाम ॥  
 मोहिल सुकुंद ३ प्रतिहार त्यों परसुराम ४,  
 भाला रत्नसिंह ५ रु विहारीदास ६ धीरधाम ॥ ३१ ॥  
 मानकुल मंडन त्यों कूरम अजवसिंह ७,  
 तोमर प्रतापसिंह ८ जादव विजयपाल ६ ॥  
 सक्रवाला राघव १० कबंध सैरसिंह ११ रु,  
 प्रमार जयसिंह १२ हरी सैगर १३ कलहकाल ॥  
 वाँधूगड भूपको भतीज भीमसेन १४ वंस,

१ हे रामसिंह २ अब ॥ २९ ॥ शत्रों से कटे हुए अकचचवाला ४ युद्ध में यम  
 राज के समान कार्य करनेवाला ॥ ३० ॥ ५ तहां ६ सोलंखी वंश में जन्म ले-  
 नेवाला ॥ ११ ॥ ७ युद्ध में यदराज

चालुक बघेल वीर ढाढ़न गजन ढाल ॥  
 भाटी रतनेस १५ बड़गूजर कनक १६ वैस,  
 बंसी बलवंत १७ वीर वीरतरु आलवाला ॥ ३२ ॥  
 अँसैं बीस २० घायल सपिंड १ असपिंड २ पंच ५,  
 तीन ३ त्यों सगोत्र ३ सप्तदस १७ अमगोत्र ४ आनि ॥  
 भूसुर सदासिव १ जनेस जलधारी धाय,  
 भाई सिवराम १ सुत भारत १ ९५ ४ को ठामठानि ॥  
 इत्यादिक स्वस्थ भयें सप्तसत ७०० घायल,  
 बुलाइ कै निवाज भट भावसिंह १ ९५ १ भूमीजानि ॥  
 घायल भये न जे बिसेस बढि जुजके तेहु,  
 सुनिये समस्त मुख्य मुख्य पटुता प्रमानि ॥ ३३ ॥  
 राम २० ३ ४ नरनाह तिनमें हु जे सपिंड १ अस-  
 पिंड २ अँसैं जानहु सगोत्र ३ असगोत्र १ जोध ॥  
 जेठो १ इंदसाज १ ९१ १ कोतनूज गजपिंह १ ९५ १ १ तथा,  
 आनंदादिसिंह १ ९५ ५ २ सुत पंचम ५ रिघुन रोध ॥  
 विष्णुसिंह १ ९५ १ १ ३ जेठो १ राजसिंह १ ९४ ४ को तनूज वीर,  
 दूजा २ मधु १ ९५ २ ४ वैरिन विदारन विसंदबोध ॥  
 दूदाउत २ २ १ ८ मुख्य १ प्रेम १ ९४ १ ५ काका अनरेस १ ९३ १ १ ६ सुत,  
 नाता रायमल्ल १ ९२ ३ को त्यों केसरी १ ९३ १ १ ७ कलह क्रोध ॥ ३४ ॥  
 सूर सुरतान १ ८ ९ १ को पिनाती रामसिंह १ ९३ १ १ ८ मुख्य,  
 आठ ८ सपिंड १ असपिंड २ अब जंपेजात ॥  
 चुंडाउत १ ४ १ ० मुख्य १ नसे सेसनमें मुख्य १ लाल १ ९३ १,  
 ऊदाउत १ ५ १ ७ मुख्य १ अखैराज १ ९३ १ १ २ तिम खग ख्यात  
 सारन १ ९६ १ के अन्वर्ष अधीस १ जसवंत १ ९२ १ १ ३ नव-

वीरता लुपी वृक्ष का १ थांबला ॥ १९ ॥ २ अघात १ राजा का जल रखनेवाला (पाये-  
 री) ४ नैरोग्य ५ श्रुपति ॥ ३३ ॥ ४ आनन्दसिंह उज्ज्वल ज्ञानवाला ॥ ३४ ॥ ८ वंश

ब्रह्म१९५।२को पिनाती वीर बिठल१९१।१।४जस जमात ॥  
 बंस नवरंग१८३।२के को नाथ अट नाथूराम१९२।१।५,  
 लाडपुरवारो जाहि संगर सदा सुहात ॥ ३५ ॥  
 बैरिन बियाती थिरराज१८३।३नाती रामचंद्र१९१।१।६,  
 नाम भगवानदास१९२।१।७पट्टप१तनै उपेत ॥  
 सप्त७असपिंड१ए बली अब सगोत्र३सुनौ,  
 देवरा९दलो१हरि२खीची१३संभु३समवेत ॥  
 टंक५गजमाल४च्यारि४सूर ए सगोत्र३अस-  
 गोत्र४अब जानौ जुग२जादव नवल१नेतर ॥  
 भाटी मालदेव३कृष्ण४कूरस प्रमार पता५,  
 एते असगोत्र४पंच१खग्गन खिल्हारी खेत ॥ ३६ ॥  
 इत्यादिक आपुनै दुर्जन दत्तनहार,  
 राज्यरखवारे ते छुलाइ सनमान सूर ॥  
 आस्वासन ईसको समरत पै समुक्ति जानि,  
 हानिन सतां१९४।१की भो प्रजाहुं कै प्रमदपूर,  
 आयो इन आगरा कुमार दारा४०।१साहनै सो,  
 पैठन दयोन कछो दिली रहि मोसौ दूर ॥  
 जो बनें तो जूझि नतो अने यह ऊजिझ बलि,  
 काहूसौं न बूझि कालैं काटहु कितहु कूर ॥ ३७ ॥  
 वरज्यो घनौ भैं तब तो तैं अतिवीर बनि,  
 जंग जुग२हारे सब सेना अपनी नयाइ ॥  
 आगरा रहै तैं अब अनुज२तिहारे तजि,  
 मेरोहु बिसास कछु करिहै अनिष्टआई ॥  
 दिल्ली जो टिकै न तो जितोक धन जाइसके,

सो लै जाहु भै न जिहिं भो न मन तैरे भाइ ॥  
 दारा ४०१ यों कहाई बनें दिल्ली टिकिबो न अब,  
 जानिहो अभय जहाँ बचिहों जियत जाइ ॥ ३८ ॥  
 भाखि इस लै धन अभीष्ट दारा ४०२ भजि,  
 होइ मरुदेस मैं लग्यो सो पंचधनद भग्न ॥  
 जोलों कछुवाह १ गोर २ जवन ३ न जुड़े भये,  
 ता सुत सलेस ४११ सों विसासि राख्यो यहि बग्न ॥  
 पीछैं जो पलाइत है श्रीनगर सासक सों,  
 पाइहै पनाह ज्यों उदंत सु कहेंगे अग्न ॥  
 पाइ जय पापी अवरंग ४०३ रु मुगद ४०४ इत,  
 आये आगरा पै गूढ तखत के लोभ लग्न ॥ ३९ ॥  
 सुतन समीप सुत आवंत उभय साह,  
 यों कहि पठाइ सुरि जाहु तुम स्वस्व धाम ॥  
 कपट करंड इन दोउ २ न कहाई एह,  
 खाने जाद आये एक चुवन चरन काम ॥  
 आयो सुनिबेमें खेद प्रभुके अमाध्य पातैं,  
 भेजिहो दरस दे तो गिनिहो हमें गुलाम ॥  
 योंही भेजिबेमें खीज खोली इत जानीजात,  
 द्वांपरमिटाइ देहु तातैं तात तिम ताम ॥ ४० ॥  
 त्रैसीदेत अरजी समीप आगराके आइ,  
 परभट भेदि केक तैं तैं स्वीय २ राखि ॥  
 साहसों कहाई आप दारा ४०१ कों द्विनिं दैकें,  
 भेजते नहीं जो अैसे अंगजती अभिलाखि ॥

॥ ३८ ॥ १ पंजाब के मार्ग २ आगकर ३ श्रीनगर पर आज्ञा करनेवाले से ४  
 शरण ५ वृत्तान्त ॥ ३९ ॥ ३ अपने अपने घर ४ कपटके करंड (छबड़ा) अर्थात्  
 कपट का (दोकरा) पाज ८ सन्देह ९ तहां ॥ ४० ॥ १० धन देकर ११ पुत्रपुनकी



तो तो हमैं संसय न होतो पर यातैं अब,  
 \*पानवान जतन कियोहै प्रभुको भै भाखि ॥  
 याको आप धोखा जिन आनहु दरस दैकैं,  
 पुत्रन पठावहु सनातन सनेहसाखि ॥ ४१ ॥  
 साह कहि पठई कही मै तब दारा ४०।१ सन,  
 अनुजतिहारे मौपैं पूछन कुसल आत ॥  
 मानी गूढ तोहू मम सम्मति न मानी खल,  
 जूझयो जाइ जाइ कै अवंती१ धोलपुर रुपात ॥  
 नाहक अनीकें आपुनैं ही दुहुँ२ओर के जे,  
 बालिल विनासे तातैं सो१न सुत मै२न तात ॥  
 याही तैं बिडारयो पुर पैठन दयो न द्रव्य,  
 कछु न दयो मै कोन कहत तृथाही बात ॥ ४२ ॥  
 पुत्रन२कहाई सो हु सुनि रु पिता सौं पीछी,  
 अबहु सलेम४।१प्रभु सासन सौं अजआहि ॥  
 सत्रुमुत सौं जो प्रीति रावरी न ठहै तो आप,  
 दारा४०।१के निर्दान क्यों न तबही बिडारो ताहि ॥  
 दारा४०।१संग द्रव्य दैकैं अब जो नटत आप,  
 यातैं भय धोखा रहैं चाकरन चित चाहि ॥  
 अंतर प्रकोष्ठलौं जे चोकी रावरी है उहाँ,  
 आपुनी उतीही हम राखहि नय निबाहि ॥ ४३ ॥  
 बिगरतवेरें भली१आसत बिरुद्धथात,  
 यातैं करी सो सब प्रमादी साह अंगीकार ॥  
 जान्यौं जेस तेम दुष्ट बिलिहु खुरैं तो ताज१,  
 तखत२बचाइ देखिलौहौं पुनि जोरदार ॥

\*प्रायः रक्षा का प्रथम कहकर प्राचीन स्नेह रखकर ॥ ४१ ॥ १ सुबाह २ सेना  
 ३ खर्च ४ निशाना ॥ ४२ ॥ ५ हमारे शत्रु दाराशिकोह के पुत्र से. ६ कारण  
 ७ निकाले ८ भीतर के द्वार पर ९ नीति ॥ ४३ ॥ १० समय

आपुनैँ प्रवीर पलटाये जे न जानि उन,  
 माँहि उतनैँही राखि रिपुनके र रखवार ॥  
 अंतर प्रकोष्ठ अंत \*छद्मिनके छंदकरि,  
 स्वल्प रचि संसद बुलाये दुवर्दी कुमार ॥ ४४ ॥  
 अंतर मंजराज आइ पैठन लगै न उहाँ,  
 पूछत कही यों क्यों व पुत्रन मैं धोखा पूर ॥  
 चुंबन चरन बाबा ज्यान के अधीन इहाँ,  
 स्वीय बालबच्चे हम लाये सब ही हजूर ॥  
 धावरन अंक यातैं एहु सिंसु अहैं भय,  
 प्रानको हम हु तातैं आयक तजैं न दूर ॥  
 औसी भाखि ठहरि प्रकोष्ठपैं कछुक काल,  
 सिबिर सिखाइ राखे सैन सँ बुलाये सूर ॥ ४५ ॥  
 छयोली साहजादनके बढत बिसेस बीर,  
 जैहैं मिलैं जालम प्रमादी इम साह जानि ॥  
 भाखी सावधान रन अंकन मैं आनदेहु,  
 छाँ जिते सभामैं तिते सुतन के संग ठानि ॥  
 सासन सु पाइ अवंग ४०।३६ सुगद ४०।४३ भैर,  
 पुत्रन लै आगैं त्यों तंजुत्रन को तोम तानि ॥  
 पीठि दै प्रजाकों दुवर्दुष्टन चरन चुंबे,  
 अश्रुन उपेत व्है रुमालसन बंधि पानि ॥ ४६ ॥  
 दै दै उपांलंभ साह ए दुवर्दुलगाय इम,  
 लेत दूंग लेत सब सिंसु हु लगाइ उर ॥  
 भाख्यो अब जाहु नेक निपुन सुपुत्र तुम,  
 दारा ४०।१ ज्यों करो त्यों करिहो न धारि धर्म धुर ॥

\*छलियों के आधीन करके छोदी सभा रख कर ॥ ४४ ॥ प्रभीतर के द्वारपर १  
 बाउओं की गोदों में रखकों को रचेरे में ॥ ४५ ॥ ४ गोदों में प्रभव्यों को ५ समूह ७  
 सन्तानों को अपनी पीठ पीछे रखकर ८ हाथ ॥ ४६ ॥ ६ प्रोक्त भा १ नेत्र मिलते ही

सुनि अवरंग ४०।३ कहि चुंवते चरन हम,  
 च्यारिदिनपे भो छली रावरो ही चित्त \*छुरे ॥  
 तो ए बालबच्चे सब जंघ्र में मिलावहु हमें,  
 तो जानदैहु है अभीष्ट हमें प्रान १ + पुर २ ॥ ४७ ॥  
 चरनन चुंवि अवरंग ४०।३ कहि अैसें ऊठि,  
 अश्रुन दिखाइ आयो प्रथम १ प्रकोष्ठ पर ॥  
 आवत हि दोउ २ न ॥ विसासके बुलाये हुते,  
 ते सब पठाये कहि साह डारो कैद घर ॥  
 एतेमें मुराद ४०।४ हु सवेग उठि आयो मिलि,  
 डाकिंन प्रकोष्ठ रुपि तापैं डारयो एक डर ॥  
 साहके जिते हे तिन सो दस १० गुनित दोरि,  
 पकरन पैठे मेरे पुत्रनके पापपर ॥ ४८ ॥  
 सिसुन बचाइ गहिलीनों इम साह तिन,  
 पाके १ हुते ताके ते खिरे ह्वी फारि तरवारि ॥  
 नमि नमि काचे २ साहजादन सो राचै धरा १,  
 धाम २ धन ३ जाचे तिन्हैं साचे मिले सुखकारि ॥  
 उजिफ जयसिंघ १ अनिरुद्ध २ दलैल ३ इत,  
 साह रोक्यो सुतन सलेम ४१।१ भज्यो मनमारि ॥  
 श्रीनगर सासंकके सरन गयो सो पीछैं,  
 ताहि गहिदैहैं सो विसासघात विसतारि ॥ ४९ ॥  
 एक १ देह इहाँलौ अवरंग ४०।३ रु दारा ४०।४ उभैर,  
 पकरि पिताकों दयो कारांनाम धाम धरि ॥

\* छुर (लींच) वांशी में † नगर अर्थात् हमारा प्राय और हमारा नगर ही हमको चाहिये ॥ ४७ ॥ § आश बोही पर ॥ विश्वासवाले सेवकों को १ उन मनुष्यों को खानेवालों ने ॥ ४८ ॥ २ पछे बिचारवाले बादशाह के सेवक थे ३ साहजादों के रंग में रंगे ४ जयसिंह आदि नीचे लिखे हुएों को छोड़कर ५ आशा खलानेवाला (हाकिम) ॥ ४९ ॥ १ इस समय तक ७ कैद के घर में

यातैं जयसिंह १ अनिरुद्ध २ रु दत्तल ३ दुव २,  
 बंधनसों सूची हम काँकौगिनेँ साह करि ॥  
 अब अवरंग ४०।३ लै सुराद ४०।४ हिं बिजन बोल्यो,  
 कैसीकरिहैं बँ लिखी कूरम तो पाप परि ॥  
 औसी कहि ताहि पत्र ओरहि दै आप लघु,  
 बाधों मिस आयो छली घेरन को घाट घरि ॥ ५० ॥  
 दूजे २ द्वार आपुनै भरोसाके असेस भट,  
 भेजिके सुराद ४०।४।१ हिं गहाइ पापी पुत्र २ जुत ॥  
 कूटमंत्रि निर्दय निसंक करि कैद तेहु,  
 ग्वालेरके गढमें पठाइदये द्वै २ हिं हुत ॥  
 आपुनै पिताकों आगेरेही राखि कारा अब,  
 आप भयो साह व्है निरंकुस निखिल जुंत ॥  
 दिल्लीपुर जाइ पीछैं नृप १ रु नबाब २ सब,  
 बेगहि छुलाये अवरंग ४०।३ तीजे ३ साहसुत ॥ ५१ ॥  
 जब जयसिंह १ अनिरुद्ध २ रु दत्तल ३ एहु,  
 सैदावाद सों चढि कै दिल्ली गये बैस्य बनि ॥  
 भूमिपति भाऊ १९५।१।१ गयो बुंदी तैं सम्हारि सेना,  
 आयो जसवंत २ जोधपुरतैं खलत्वैखनि ॥  
 गो इत मुकुंद १९४।१ सुत कोटातैं जगतसिंह १९५।१।३,  
 इत्यादिक आरिज १ मलेच्छ २ जुरे तोयें तनि ॥  
 आमेरेअधीसकों हजारी एक १००० को अधिक,  
 मुनुसव दीनों ख्यात कीनों मानवंस अनि ॥ ५३ ॥

१ पादशाह को कैद करनेवाले औरंगजेब और सुरादबख्श से पूछा कि हम  
 २ किसको पादशाह जायें ३ सुराद को एफाना में लेकर ४ अब दिल्ली  
 करने के मिससे १ सुराद को घेरने का वाद चयकर ॥ ५० ॥ ७ खोदे मंत्री  
 शीघ्र ६ कैद में १० समय से स्तुति पाकर ॥ ५१ ॥ ११ आधीन बनेकर १२  
 बुद्धता की खान ११ आधी १४ सन्त ॥ ५२ ॥

॥ दाहा ॥

उत्तारनजुत आममै, उपदा १ गज हय २ आदि ॥  
 सबन भेट किय साहके, पहिलैं क्रम संपादि ॥ ५३ ॥  
 तदनंतर साह हु तहाँ, सलुचित सबन समपि ॥  
 इकरहँस १००० सुनसब अधिक, इम जयसिंह १ हिं अपि ॥ ५४ ॥  
 लुछि निकट जसवंतर बलि, अदभुत तुरा एक ॥  
 स्वकर साह तस पण्य सो, रक्खयो हठ अतिरेक ॥ ५५ ॥  
 कहिय बिहसितैं नृप कहिय, पटक कंठ अतिप्रान ॥  
 अवरंग ४०१३ हि गहि आनि हौं, सुह अब तुह सुखमा न ॥ ५६ ॥  
 यह भजिगो उज्जैनितैं, अपाँ दूर परि आस ॥  
 गहीके चाकर गदिय, प्रभु अर्धान अब पास ॥ ५७ ॥  
 याहि रीझि इक १ इक १ अधिक, दुव १ दुवरगज १ हय दत्त ॥  
 इक १ खिलत रु जानी न उर, बदलन भाँवी वत्त ॥ ५८ ॥  
 भोजिवेशकरि रीझतभयो, वां कारन कछु और ॥  
 वा लुटिवेशरहोर इम; मन्थ्यौं गिनि भटमोर ॥ ५९ ॥  
 इम चतुष्क ४ क्रमतैं अधिक, भाऊ १ ९५ १ नृप किय भेट ॥  
 जिन्ह नाम हु जँहँ गढ गिरे, फते सुवारिक १ फेट ॥ ६० ॥  
 गजराज २ ह तिम प्रानगज ३, संग्रामादिकें सूर ४ ॥  
 उपदा भिन्न ६ भिन्न ६४, गेवैर डानगरूर ॥ ६१ ॥  
 कीनों पंचम ५ जयंकलभ ५, उपदा क्रम अनुसार ॥  
 सब रक्खि रू दिय जो मुनहु, असो साह उदार ॥ ६२ ॥

१ न्यूँछावर २ नजराना ३ पहिले करने थे यह क्रम संपादन करके ॥ ५३ ॥ ५४ ॥  
 ४ अतिशय हठ करके ॥ ५५ ॥ ५ सत्यन्त बल के साथ कंठ में कबान डालकर  
 ६ यह परम शोभा अब तुम्हारे मुख पर नहीं है ॥ ५६ ॥ ७ लज्जा ८ कहा  
 ॥ ५७ ॥ ९ दिये १० आगे आनेवाले समय में पड़लेगा यह बातों नहीं जानी  
 ॥ ५८ ॥ उज्जैन के ११ कुछ से भागने के कारण ॥ ५९ ॥ ६० ॥ १२ संग्रामशूर १३  
 नजराना जुदा किया और ये चारों ही जुदे नजर किये १४ हाथी ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

सहससत्त ७०० मुनसब १ सहित, इम २ हय ३ प्रमुख उपेत ॥  
 पाइ एकदस ११ परगना ४, खिरयो सता १९४ १२ रनखेत ॥ ३६ ॥  
 गद्दी को चाकर गिन्यौ, जो भजिगो जसवंत ॥  
 जो तुट्यो सत पंच ५०० जुत, सतसप्तक ७०० छतसंत ॥ ६४ ॥  
 गद्दीपति तंत्र न गिन्यौ, सता १९४ १२ नृप सु अतिसूर ॥  
 इम चउ ४ दिय भाऊ १९५ १२ अधिप, जे पुनि रक्खि हजूर १५६ ॥  
 इती अधिक उपदा हु इहिं, रक्खिहु प्रत्युत रुष्ट ॥  
 पहुके मुनसब १ परगना २, दुव रहि घटाये दुष्ट ॥ ६६ ॥  
 पहिलै मुनसब १ परगना २, सता १९४ १२ लये भजि साह ॥  
 आगस बिनु औरंग ४० १३ ए, रुष्टि लये खलराह ॥ ६७ ॥  
 सो सब क्रम १ उद्देश २ सह, अग्रिम किंरन उदंत ॥  
 कहियत अब सुनिये कहुक, महिप राम २० ३ ४ मतिमंत ॥ ६८ ॥  
 इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-  
 भूपभावसिंहचरित्रे भावसिंहबुन्दीसिंहासनाधिरोहणविवाहादिक-  
 थन १, धवलपुरसमरहतशस्त्रक्षतवीरतारणविधातृगणन २, यव-  
 नेन्द्राप्रसाददाराशिकोहपञ्चनदप्रान्तपलायन ३, कपटरचनया यव-  
 नेन्द्रान्तिकप्राप्तकुमारौरंगजेबमुरादतद्वन्दीकरण ४, कीलितमुरादौ-  
 रंगजेबयवनेन्दीभवन ५, पूर्वाधिकैकसहस्राश्ववाराधिकारप्रदानपूर्वक  
 १ घायल ॥ ६४ ॥ २ अधीन ॥ ६५ ॥ ३ खलटा क्रोधित हुआ ॥ ६६ ॥ ४ बादशाह का सेवन  
 करके ५ बिना अपराध ॥ ६७ ॥ ६ अनुसंधान सहित ७ अगळे मयूख में ॥ ६८ ॥  
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के प्रपति  
 भावसिंह के चरित्र में भावसिंह का बुन्दी की गद्दी पर बैठना और विवाहा-  
 दि का कथन १ धोलपुर के युद्ध में मरनेवाले, घायल होनेवाले और वीरता से  
 युद्ध करनेवालों की गणना २ बादशाह की अप्रसन्नता से दाराशिकोह का पं-  
 जाब की ओर भागना ३ कपट की रचना से शाहजादा औरंगजेब और मुरा-  
 दखण का बादशाह शाहजहाँ के पास पहुँचकर उसको कैद करना ४ मुराद-  
 खण को कैद करके औरंगजेब का बादशाह होना ५ जैपुर के राजा जयसिंह  
 को एक हजारी मनसब अधिक देकर उसको और जोधपुर के राजा जसवंत

जयपुराधीशजयसिंहयोधपुराधीशयशवन्तसिंहप्रसादापादन ६, बु-  
न्दीन्द्रभावसिंहाश्ववाराधिकारन्हासवर्णनं प्रथमो-मयूखः ॥ १ ॥

अदितोष्टविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२८ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मुनसब इक्कहजार१०००मित, जयसिंह१हिं दिय जूथ ॥

गद्दीपति तंत्रं सु गिन्यौ, तोसो समुचित तत्थ ॥ १ ॥

दारा४०११कुमर हिं पिठि दै, जो रन तैं जसवंतर ॥

गो भजि तिहिं गज१हय२द्वि२गुन, सहतुररा३दिय संत ॥२॥

अधिक निवेदे च्यारि४ई११, सो भेटहु लहि साह ॥

भाऊ१९५११ प्रति रूष्टहि भयो, रंच न समुझयो राह ॥ ३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अल्पहि रीक सता१९४११मन आये, पहिले अष्ट८परगनां पाये ॥

टौंक१मालपुर२केकरी३हु तिम, अरु गढहथनी४हिंगुलाज५इमा१४॥

भैंसोदा६रु पानगढ७भासक, केथोली८बलि सुबलि प्रकासक ॥

अखेसेन१मुहुकम२खिच्ची१३अरि, सोदरद्वै२हि तहाँ मित संहारि५

तिनकाँ जित्ति भीमगढ९पत्तन, लयो नवम९लरि धीर धराधेन ॥

गढमऊ१रु वाराँ२पहिलैं गत, लये साह तब अटंक न लंघत ॥६॥

मिलिअवरंग४०१३मुराद४०१४इक्क१मन, सब आयेउज्जयिनी जुज्झन

पुव्वहि तब सु मऊ१पुनि पायो, अरु बुंदी हि पटा तस आयो ॥७॥

जब औरंग४०१३मुराद४०१४हि जित्ते, विसालाहि इतके भट वित्ते ॥

दारा४०१११सहित जियन मन दिन्नों, कासिमखान पत्तार्यन

सिंह को अपनी प्रसन्नता में लेना ६ बुंदी के राजा भावसिंह का मनसब घ-  
टाने के वर्णन की प्रतिज्ञा का प्रथम ? मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२८  
मयूख हुए ॥

? आधीन ॥१॥१॥ २हथी ३कुल ॥३॥४॥ ४ नाश करके ॥ ५ ॥ १पूजति३अटक  
नदी के पार नहीं जाने के समय ॥६॥ ७ ॥ ७ उज्जैन के युद्ध में ८ भागा ॥८॥

किन्नाँ ॥ ८ ॥

बुंदी अधिप सता १९४१ तब बुल्लयो, तस आदर बढतो इम तुल्लयो  
प्रथम लयो सु दयो बाराँ २ पुनि, संग अधिक नव ९ प्रांत लेहु  
सुनि ॥ ९ ॥

बाराँ २ जुत ते दस १० हि बखानत, जहँ बाराँ १ पहिलो १ सब जानत  
बहुस्यो खैराबाद २ बरोद ३ हु, लौ कोटासन लय ३ हि दये लेहु ॥ १० ॥  
अप्पन तंत्र चउम ४ दिय आगर ४, सारंगपुर ५ भेलसा ६ सागर ७ ॥  
बालाभेट ८ सिरौंभ ९ दंग बलि, छवरा १ अप्प्यो दसम १० रीभ  
छलि ॥ ११ ॥

दस १० ए मऊ १ सहित एकादस ११, बीस २० भीमगढ १ जुत  
पहिले ८ बस ॥

नृप परगनाँ इते २० क लहे नुत, सप्तहजारी ७००० मुनसुब संजुत १२  
नृप भाऊ १९५१ गुन साह न धारे, अब ए बीस २० हि प्रांत उतारे  
हो जब मुनसब सप्तहजारिय ७०००, अबहु सहचउसहँस ४५००  
उतारिय ॥ १३ ॥

अहसंहित दुसहँस २५०० मुनसब इम, जिहिँ भाऊ १९५१ कै रक्ख  
इतरँ जिम ॥

सहँस सहदुव २५०० मित रनसंतहिँ, भनि मुनसुब दिन्नों भगवंत  
१९५३ हिँ ॥ १४ ॥

दिय तिहिँ संग मऊ १ बाराँ २ दुव २, सम आदर किय द्वै २ हि सता  
१९४१ सुव ॥

भाऊ १९५१ कै कंछु अधिक रही भुव, हाइ तदपि स्वानुजँ स्व  
तुल्य हुव ॥ १५ ॥

॥ ९ ॥ १ शीघ्र ॥ १० ॥ २ अपने अधिकार में ३ रीभ में उभल कर ॥ ११ ॥

४ स्तुति योग्य ॥ १२ ॥ १३ ॥ ५ दाई हजार ६ अन्य राजाओं के सत्तान ७

युद्ध में अष्ट जानकर ॥ १४ ॥ ८ शहशाह के पुत्र ९ खेद की बात है कि १०  
छोटा भाई अपने बराबर होगया ॥ १५ ॥



॥ दोहा ॥

मुनसब १ मुनसब २ माँहिँ सौं, देस १ माँहिँ सौं देस २ ॥

भिन्न रावपद ३ पाइ भौ, इम भगवंत १६५।३ इलेस ॥ १६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सहँस दुसह २५०० रक्ख मुनसब सब, इम किय अल्पविभव भाऊ

१९५।१ अब ॥

लुब्ध सहचउसहँस ४५०० छिन्नि लिय, दुव २ दँल १ सहँस २५०० ताबि

च उक्त हिँ दिय ॥ १७ ॥

पुनि यह हुतँ सु रावपद ३ पै हैं, जेठे १ सौं हु बहुरि बढिजे हैं ॥

पंचसहँस ५००० दँल २५०० वटि इम ए पहु, लखि जेठे १ सम अनुज ३।२

कानि लहु ॥ १८ ॥

कहि अब रावपद २ हु सम करि है, साह १ कथित २ दिस दित

अनुसरि है ॥

खल मुनसब दुवसहँस २००० रह्यो खिल, किन्नाँ स्वबल खालसा

सो किल ॥ १९ ॥

अगँ सता १९४।१ प्रांत अष्टक ८ इम, जिति भीमगढ ९ नवम ९

लपो जिम ॥

बाराँ १ मऊ २ गई सु लई बलि, क्रमतैं दई मऊ १।१० पाहिले

कलि ॥ २० ॥

प्रांत सता १६४।१ कोही यह १० ही पँर, दयो माधवहि १९३।२

साह जथा दँर ॥

तस संगहि बाराँ २।११ हु गई तिम, जब नव ९ संग दई सूचित

१ भूपति ॥ १६ ॥ २ लोमकरके ३ दो और आधा (ढाई) ॥ १७ ॥ ४ शीघ्र ५ पांच हजार का आधा आधा ६ शीघ्र ॥ १८ ॥ ७ बाकी ८ निश्चय ॥ १९ ॥ ९ युद्ध में ॥ २० ॥ १० परन्तु ११ अथ से ॥ २१ ॥

जिम ॥ २१ ॥

मिलिबरोद१बाराँ२आगर३\*मुख, खैराबाद४सिराँकपाँसुधनमुख॥  
इक घटिबीस २० स खिल इत्यादिक, बीसम २० तत्थ भीमगढ  
९।२० आदिक ॥ २२ ॥

ए भाऊ१९५।१ सनसब२०हि उतारे, पुनि मऊ१।१० रु बाराँ२।११  
बट पारे ॥

ते दुवर अप्पि स्वभट भगवंत १९५।३ हि, सुरि साह रु मन्नि न  
कछु मंतहि ॥ २३ ॥

रहे भीमगढ९।२०जुत अह्वारह१८, तेसब प्रांत खालसा करि तह ॥  
मुनसब कथित तुल्य दै मित मित, इत भाऊ १९५।१।१ भगवंत  
१९५।३।२गिन्यौ इत ॥ २४ ॥

मऊ१बहुरि बाराँ२ खल मंत सु, अधिप भयो लाहि जुग२ भगवंत  
१९५।३ सु ॥

कही इम न मैं अग्रज१किंकर, अग्रज२को किम सहो अनादर२५  
बुंदी सब हड्डन जननी बर, जनन्यौ मैंहु अवहि जिहिं जाठर ॥  
किम चंडातक तस कतराऊँ, प्रभुसौं भिन्न नई भुव१पाऊँ ॥ २६ ॥  
भिन्नहि तिम मुनसुब लाहि भासौं, प्रसू सुजंस मैं पुत्र प्रकासौं ॥  
सक्तहिं हजरत भिन्न समर्पन, अप्पन कछु अप्पन हित अप्पन  
अग्रज१भुव१मुनसब२चहि अकखय, मोहि इतर अप्पैं बहु बंसुमय  
सुमैं तदपि न बढौं अग्रज१सन, मन्नों सदा मुख्य स्वामीसन ॥ २८ ॥  
पुहवी१कछु पद१कछु घंटीपाऊँ, अग्रज१सासन स्वसिर उठाऊँ ॥  
सता १९४।१ तनयपन तब मम सुधरैं, किति मैदीय सुकवि अ-  
तुल करैं ॥ २९ ॥

\*आदि अष्ट धन ॥ २२ ॥ †पेट कर दिये १सलाह ॥ २३ ॥ २थोड़ा थोड़ा ॥ २४ ॥  
३दुष्ट विचार से ॥ २५ ॥ ४उदर में थलहंगा ॥ २६ ॥ ५ माता ७ समर्थ = देने में  
॥ २७ ॥ ८ धनमय ॥ २८ ॥ १० शत्रुशाल का पुत्रपन ११ मेरी कीर्ति ॥ २९ ॥

जन्मसफल तो मैं सम जानौं, \* प्रभु१ प्रभु प्रभु२ मम उचित प्रमानौं  
भाऊ१९५१ अनुज तबहि मैं भूतल, विदित रहौं जसः खट्टि बा-  
हुबल ॥ ३० ॥

पै प्रभु राम२०३१४न यहहु प्रमानी, जिहिं सठ स्वीयें वृद्धि सुभजानी  
मति सोधी भाऊ१९५१ अग्रज१ मम, सो क्यों रहैं दुष्ट० है मोसम ॥  
कछु ताहु सौं तिकख निकाशौं, प्रभुता बंटि ताहि तनु पारौं ॥  
सुहि गिनि मुनसब१ देस२ सुहाये, अग्रज१ के इहिं खल उतराये ३२  
तउन प्रांत बीस२० हि पाये तिहिं, जुग२ मऊ१ रु बारा१ रहि मिले जिहिं  
मुनसब सहस्र१ सचउ ४५०० मिटाइ, पुनि तासौं सह दु सहस्र  
२५०० पाइ ॥ ३३ ॥

अग्रज१ पूज्य जदपि संभव अहं, मन्नि तदपि निज वृद्धि महामह  
कुटिल तंत्र दुसहस्र २००० मुनसब करि, उक्त प्रांत अठारह १८  
लिय अरि ॥ ३४ ॥

पहुनैं साह सीभ यह पाई, उपदा तहैं चउ४ गज अधिकार्इ ॥  
भोज१९१२१ प्रतिम भो यह भगवंत१६५३२हु, लिन्नी भुव दूदा  
१९११ सन जिहिं लहुं ॥ ३५ ॥  
यह न कही हो प्रभु तुम अकबर ३७११, वखसहु भिन्न बिभव  
भूमिख बर ॥

पै सुनि कहि बुंदी तिहिं पाई, अग्रज१ सन गिनि मन अधिकार्इ ॥  
इसाहि दुष्ट भगवंत१९५३ इहाँ यह, मन्नतभो घर बंटि बडो मह ॥  
भेट अधिक चउ४ गज तउ भूपति, करि मन्निय इसु दिन जैहैं कति ॥

\* हे स्वामी मेरी स्वामिता के समान स्वामिता मिलना उचित है, अथवा हे  
प्रभु आप स्वामी के स्वामी हो सो मेरे उचित होवे सी प्रमाण करो भूमि पर  
सम्पादन करके ॥३०॥ हे स्वामी रामसिंह २ अपनी ॥३१॥ ३ न्यून ॥३२॥ ३३॥  
४ जन्म दिन से ५ बहने में बड़ा उत्सव माना ६ उस कुटिल औरंगजेब ने अपने  
अधिकार (खालसे) में ॥ ३४ ॥ ७ राजा ने ८ सदृश ९ दुर्जनशाल से १० जिसने  
शीघ्र भूमि ली थी ॥३५॥ ११ हें अकबर बादशाह १२ भूमि आदि ॥३६॥ १३ उत्सव

\*बलिहु गिनै न साह गद्दी बस, तजिवो तबैं समुचित आश्रय तस  
इहिं विचार अल्पहि लहि आदर, बिर्यो सिबिर निज सुरि बुंदीवर  
भगवंत १९५३ हु अग्रज १ निभ भास्यो, करि खलभाव समत्व  
प्रकास्यो ॥

साह लयो दुसहँस २००० मुनसब सोमि, अछारह १८ परगनाँ अ-  
तिक्रमि ॥३९॥

आमैर १ जोधपुर २ आदि इँनन, पाइ देय अदर हि इत क्रजुपन ॥  
भयो विमन कछु तँहँ नृप भाऊ १९५१, इच्छि मरन रन सबन अगाऊ  
जान्यो कामपरहिं तब जुझहिं, बिरखँसु साह काँहि बलि बुझहिं  
बीरँत्वहि लखि जु यह बढावहिं, पुनि तोतो विभवहि हम पावहिं  
तदपि स्वकीय गिनै न साह तब, समझहिं अब विपदा रँवो कृत सब  
रान प्रताप रहे जिम रहिहँ, बनै तिम न तो दिवँ सुख बहिहँ ॥ ४२ ॥  
सुनि यह अरज करी सब सुभटन, पटा तजहु अब सजहु बीरपन ॥  
को इहहेतु बिसिख यह कुप्यो, लज्जा १ रीति २ प्रीति ३ सब लुप्यो  
भूप कहिय अवहि न इम भाखहु, रंचक बीर धीरपन राखहु ॥  
अपनो मन जो लखि यह उज्वल, खलपन तजि बहुरि न भासै खल  
याके अनुग हैंहितो अप्पन, पुनि लखिलौहि स्वामि मत थप्पन ॥  
बहुरि न मिच्छ प्रीति जो बिरखहिं, सब सम्मत तोतो सुहि सिखहिं  
पै यह सोक अतुल हम पायो, दुव २ प्रांतन सब घास दुरायो ॥  
बिष्णुसिंह १९५१ आदिक बीरन वस, हरीगढा १ दि हुते जय  
साहस ॥ ४६ ॥

॥ ३७ ॥ \* फिर १ उचित २ अपने डेरे में प्रवेश हुआ २ बुन्दो का पति  
॥ ३८ ॥ ३ सदृश ४ बराबर पन ५ ठँडेपन से; अथवा काट लिया १ उल्लंघन क-  
रके ॥ ३९ ॥ ७ रोजाओं ने = सीधापन ९ उदास ॥ ४० ॥ १० देखकर ११ फिर  
किसको पूछेगा १२ बीरता ॥ ४१ ॥ ११ संगीकार १४ स्वर्ग के सुख ॥ ४२ ॥  
१५ बिना शिखावाला (यवन) ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १६ सेवक ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

ते सब गये रही मम भूतनु, जवन लई हेतन लखिकैं जनु ॥  
 अब न इतीक मिलैं छिति इनकों, जथाश्रद्ध मिलिहैं तउ जिनकों  
 बदि यह निज अध्यक्ष बुलाये, ए बस सब बुंदी चलि आये ॥  
 काका महासिंह १९४।९।१ जहँ हाकिम १, अरु दहिया सुंदर २  
 चमूप २ इम ॥ ४८ ॥

सचिव ३ रायमंलोत २३।१९ संपिंड सु, बंधु नाम हरिमानु १९४।१।३  
 बुद्धिबंसु ॥

त्रय ३ हि मऊ १ बाराँ २ अधिकृत तब, ए हे ते भाऊ १९५।१  
 बुल्ले अब ॥ ४९ ॥

सुनहु पुब्ब दहिया यह सुंदर २, बन्यो सता १९४।१ उत सचिव  
 वर्ग बर ॥

मऊ १ रघो सु सजि भट मेला, दल्यो सता १९४।१ जब नृप बुं-  
 देला ॥ ५० ॥

अनख्यो तब कछु साह देखि उर, पलटयो यह प्रभुभक्त मऊ १ पुर  
 सूबा मालवईस बिसौला, हो जो सेरखान १ जिम दौला ॥ ५१ ॥

सोहि नसा बढिकैं निज सूरन, प्रस्थित भो दिल्ली कछु पूरन ॥  
 कछन लग्यो भग मऊ १ सीमकरि, तँहँ सुंदर २ बनि समरसिंधु तरि

फिरि अहो रु रोकि तस फैलन, गेरयो मोरि दयो वह गैलन ॥  
 अबहु चमूप हुतो दहिया यह, सुहु आयो निज स्वामिधर्म सह ५३

अंतिम दोउ २ न ग्रामहुते उत, जेहु गये इतरन बहुतन जुत ॥  
 बलि इत्यादि मऊ १ बाराँ २ बस, जहँ आये निबहन सासन १ ॥

जसर ॥ ५४ ॥

जड़ हरपालपउत्त ५।१ भये जिम, उतरयो इनतैं जज्जाउर इम ॥

१ अल्प मानो २ अपराध देखकर १ अन्दा के अनुसार ॥ ४७ ॥ ४ अपने अधिकारी  
 ५ सेनापति ॥ ४८ ॥ ६ राजा के सात पीढ़ी के भीतर का आई ७ बुद्धि ही है ध-  
 न जिसके ८ अधिकारी ॥ ४९ ॥ ९ समूह ॥ ५० ॥ १० उज्जैन का ११ जहर ॥ ५१ ॥  
 १२ युद्ध रूपी समुद्र को तिरकर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १३ आज्ञा ॥ ५४ ॥

सता१९४१महासिंह१६४१हिं बितरयो सो, काका हाकिम मऊ  
१करयो सो ॥ ५५ ॥

मंत्री१सेनानी२रू सचिव३मत, ते आये सिटि जदपि हुते तत ॥  
हो जज्जाउर महासिंह१९४१हित, अतुल ग्राम तो जुत प्रवृत्त इत  
यातैं उत३न मिल्यो कछु याकँहँ, तिन सेसनके ग्राम हुते तँहँ ॥  
नृप अधिकृत सुंदर २१ हरिभानुक ३१२, भये छुंधित तंत्रत्य ग्रा-  
स भुक ॥ ५७ ॥

इनको त्रिक३बुंदी जब आयो, पहु तब समुचित हुकम पठायो ॥  
ग्राम ब्रह्म२ जुत ठिकरिया १ गुरु ३१२१, अप्यो सुंदर २ हित देस  
अनुरु ॥ ५८ ॥

अरनिष्ठा१२दुव२ग्राम सहित इम, हरिभानु१९४११हिं दिय नृपवै  
उर हिम ॥

अधिकृत दुर्मन त्रय३नहिं आये, दुव अंतिम दै कथित दिपाये ॥५९॥  
राजसिंह१९४१४कुल मुख जस रक्खन, विष्णुसिंह१९५११ आदि-  
क देव अरिबन ॥

इत्यादिक सुभटादिन अखिलन, ग्रास विहीन भयेउत बहुगना॥६०॥  
गदित हँमारे नेगन ग्रामहु, परबस परि इम दुव२हि गये पहु ॥  
वंभन खेट१रू भीमखेट२बलि, वृत्ति नियतहै बहुल भेट बलि ॥६१॥  
खेटबलि१भेटबलि२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

ग्राम जुग२हि वह मऊ गलै गय, इम बिनु वृत्ति भये हम बिनु अय  
विष्णु १९५११ राजसिंहोत ११३१ आदि वर, भये अनायँ जिते  
अप्पन भैर ॥ ६२ ॥

१ दिया था सो ॥५५॥५६॥ २ भूखे ३ वहाँ के ग्रामों को ४ भोगनेवाले ॥५७॥  
५ तीनों का समुदाय ६ समीप ॥५८॥ ७ ठंडे हृदय से ८ कहे हुए ॥५९॥ ९ अ-  
ग्नि ॥ ६० ॥ १० ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) अपने नेग के ग्रामों को कहते हैं ११, हे  
राजा १२ ग्रामएवाँ खेड़ा १३ निश्चय १४ यद्वत ॥६१॥ १५ बिना शुभ भाग्य  
के १६ बिना आमदनी १७ भट ॥६२॥

इत चम्मलि सन-तिन्हहु मिले अब, संबसथांदि सबन क्रमतैं सब  
हमरे पितरहु वृत्ति हीन हुव, दिल्ली पहुँचे खेम१६८११राम१६८११।

१ दुव २ ॥ ६३ ॥

सुकवि खेम१६८११नगराज१६७१२ केर सुत, जहँ भूपाल १६७१२  
तनूज राम१६८जुत ॥

दिल्ली गये वृत्ति बिनु ए दुव२, हड्डनपति सन बिर्मन मिलन हुव६४  
॥ दोहा ॥

भूप कह्यो जिन दुख भजहु, गये जदपि ए ग्राम ॥

गिनहु उभैरहसरे गये, तुम सिर भारन ताम ॥ ६५ ॥

उनको जो कर आवतो, दम्म ताहिमित देय ॥

समय समय बंदि सु सुकवि, सकल लोहु गिनि श्रेय ॥ ६६ ॥

संबधन१०याहनरसिसुन, गर्भधरनरतिम गेह ॥

बसु इतमुख अवसर बिर्भजि, अखिल सम्हारहु एह॥६७॥

उरलाये कवि स्वीय इम, बुंदी अधिप बिसासि ॥

नेगन बंधिय रीति नव, प्रीति बिसेस प्रकासि ॥ ६८ ॥

गत मुनसब नृपको गिन्यौ, सहससद्व४५००चउ४सर्व ॥

समुझिरहे कविजन सुमति, अप्पत यहहु अखर्व ॥६९॥

कहियत सो अग्रिम किरन, राजमुँकुटमनि राम२०३१४ ॥

नेग कविन जिम हुव नियत, गुमत वृत्तिमय गाम ॥ ७० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीभू-  
पभावसिंहचरित्रे यवनेन्द्रोरङ्गजेवाप्रसत्तिहेतुबुन्दीन्द्रभावसिंहप्रान्ता-

१ ग्राम ॥६३॥ २ उदास ॥६४॥ ३ तहाँ ॥६५॥ ४ हासिल ५ उतने ही रुपये ॥६६॥

६ धन ७ इत्यादि, समय छंद करके ॥ ६७ ॥ ८ नवीन ॥६८॥ ९ जो देते हैं सो

ही बहुत है ॥६९॥ ११ अगले मयूख में १२ हे राजाओं के सुदुष्ट रावसिंह १७०।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति

भावासिंह के चरित्र में बादशाह औरंगजेब की सप्तसत्ता के कारण बुंदी के

राज भावसिंह के परगने और मन्सब कम होकर उसके छोटे भाई भगवंत-

शुक्लाराधिकारन्हासतदनुजभगवन्तसिंहवृद्धिवर्णनं द्वितीयो मयूखः  
 आदित एकोनत्रिंशदधिकद्विशततमः ॥२२९॥  
 प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हमतेँ खिल जे पंच५हे, नेगी हे नरनाह ॥  
 ग्राम तिनहुके सब गये, हे पैरतट ते हाँह ॥ १ ॥  
 इमहिँ सबन किन्नी अरज, जिन जिन दिलिय जाइ ॥  
 तिन तिन सबन बिसासितँहँ, किय नृप हित अधिकाइ ॥२॥  
 प्रथम पुरोहित१०यास२पुनि, चारन३भट्ट४हुँचित ॥  
 पंचम५नापित५डौँबै६पुनि, बिसवासे भूवित्त ॥ ३ ॥  
 कतिक नेग सामान्य किय, सब हम तत्थ सरीक ॥  
 दुव२त्रय३चउ४पंचम५बिदित, ठाँठाँ सुहु अब ठीक ॥ ४ ॥  
 जे उद्देस१रु चिन्ह२जुत, अब कहियत अवनीप ॥  
 ते मुक्तागन धरहु तिम, खवन सु पेसलँ सीप ॥ ५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

जब जब स्वस्व समय रानीजन, लहँ प्रथम१सुत दोहँदलच्छन ॥  
 सहपैरिजन तबछ६हिँ हँत्यासन, नृपघरहोइ प्रँसवलग भोजन ॥१६॥  
 प्रथमेतेँ गर्भहिँ जब पावैँ, जिम तब करि सीमँतँ जिमावैँ ॥  
 प्रथम १ पुत्र संभँव उच्छवपर, बँटैँछ६हिँ खटसत ६०० रूप -  
 य ३ वर ॥ ७ ॥

सिंह की वृद्धि होने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से २२९ मयूख हुए ॥

१ बाकी २ घामल नदी के पैले किनारे ३ खेद है ॥ १ ॥ २ ॥ ४ उदास ५ ना-  
 ई ६ ढोली ७ भूमि ही है धन जिसके ऐसा राजा ॥ १ ॥ ८ ठौर ठौर ॥ ४ ॥ ९  
 मोतियों के समूह के समान धारण करो १० कानों रूपी सुन्दर सीप में ॥ ५ ॥  
 ११ गर्भ १२ घर के लोगों सहित १३ वृत्ति भोगनेवाले १४ बालक के जन्म होने त-  
 क ॥ ६ ॥ १५ ब्राह्मण (पुरोहित) को छोड़कर अन्य १६ पंचमासी १७ जन्म ॥ ७ ॥



अरु चउ१मुख्यन चउ४गज४उत्कट, पुरुख१तिगहनके सब भूख  
न ५ पट ६ ॥

अंत्य जुग२हि सब यह द्य४आदिक ५६, सुनहु कनिष्ठ सुतन  
प्रासादिक ॥ ८ ॥

करैं तवहु यह उत्तरतम्य करि, पुत्र जितेक तितेक भेद परि ॥  
प्रसवनें अश्विष्य जो पूरव, सुता जन्म अवधिहु सो ८ सो ९जव ॥  
अरु कन्याके प्रसव अनंतर, पावहिं जे कहिहैं अवसरपर ॥  
खिलन नेग जे भिन्न रहे खिल, ते तिन्ह जानैं होहु गिरि'१ कि  
तिलर ॥ १० ॥

पुत्र निमित्त अधिक हम३पावहिं, सो वें सुनहु सबनिर्भतसुदावहिं  
हम३कुल मुख्य दंपतीखंडें जे, तहि गोरैंव यह बढत लहैं जे ॥  
प्रथम१पुत्रभैव भुक्तिन पूजन११२०, जहैं गार्धे प्रभुबंधु वधूजन१११  
इम महर्घे भूखन ३१२२ पट ४१२३ अर्चित, सदन क्रैमें अवरोध  
समर्चित११२४ ॥ १२ ॥

पूजन१धूजन२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सब घरके हम बैसन ६११५ लहैं सब, तिम खाजन अवरोधें लहैं  
७११६ तव ॥

महुर ८११७ पंच ५ इक१ द्वार ११२८ पुरटमय, जेवाहैं कवितियहि  
जसोदय ॥ १३ ॥

नेग नवक ९ हमको यह नियतहि, लिखिदिय प्रथम १ कुमार उ-  
द्वेग लहि ॥

कुमार सखबन्धन अनेह क्रम, मिले महुर् ११९६स १० कनक मनोहर  
प्रथम १ कुमार प्रथम १ सगपनपर, धरै कटक ११२० हम खट ६  
हि वृत्तिधर ॥

सत १०० सत १०० रूप्य २१२१ तिमहि लहै सब, तुरग ३१२२ बख ४१२३  
समुपेत तथा तब ॥ १५ ॥

लघुसुतादि प्रसवादि समै लहि, सगपनलग कछुघटिइम ५१२४  
सर्वहि ॥

अब विवाह बिधि वृत्ति इत्तापति, मति क्रम कहियत सुनहु महा-  
मति ॥ १६ ॥

ज्येष्ठ १ कुमार व्याहन बिधिक्रम जँहँ, कहत लहत जोजो जाजा कहँ  
कहुँ छ ६ पंच ५ चउ ४ त्रय ३ दुव २ इक १ क्रम, पै हम बंट सु सुनहु  
जथा प्रेम ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

गनपतिपूजनतै गिनहु, बंधुनसहित बुलाइ ॥

सुरस अन्न नृपके सदन, खट ६ हि वृत्तिधर खाइ ११२५ १८१

आम अन्न २१२६ सबके अरथ, बलि मन मिति चउबीस २४॥

मिलै सु बँटै खट ६ हि मिलि, अक्षतनाम अधीस ॥ १९ ॥

वृद्धिबैराभिध धान्य ३१२७ बलि, मनन बिहत्तरि ७२ मान ॥

बँटै सुहु खट ६ वृत्तिधर, सब सब वृत्ति सुजान ॥ २० ॥

बहुरि बिहत्तरि ७२ मन बिहित, आम सालिमय अन्न ४१२८ ॥

जव पावनदिन मिलहि जो, सब बंटहि संपन्न ॥ २१ ॥

मँहँ डेकेदिन सत १०० महुर् ५१२९, पेसँल खट ६ सिरुपाव ६३० ॥ २२ ॥

१ निश्चय २ जन्म ३ समय ४ स्वर्ण की ॥ १४ ॥ ५ कहे (कंकण) ६ सहित  
॥ १५ ॥ ७ हे भूपति ॥ १६ ॥ ८ प्रमाण ॥ १७ ॥ १८ ॥ ९ कचा अन्न १० आखे  
॥ १९ ॥ ११ नेग का नाम है ॥ २० ॥ १२ कछे चावल १३ यथ धान्य ॥ २१ ॥ १४ सुन्दर

खंभहिं रोपत महुर७।३१खट६, भूखन८।३२खट६मनिभाव ।२२।

इक१खंभहिं बंधें सु इमं१।३३, मनन विहत्तरि७२ मेय ॥

मधुर नव्यं गोधूम मय, अट्ट१०।३४पिंड अभिधेय ॥ २३ ॥

बेहें खंभहिं जो वसन११।३५, विहित जरीमय बुद्ध ॥

तुलित विहत्तरि७२मन तिमहि, सुरस मिठाई१२।३६सुद्ध ।२४।

तिहिं बासर अवसान तिम, निस बीरत निसनाम ॥

सूचित७२मित समिता१३।३७सुमन, त्योंहि सुमन१४।३८तैंहैं तीम७२

आज्य१५।३९विहत्तरि७२मन इहाँ, संकर१६।४०ता७२हि समान

इम बीरत निस नेम ए४, अखिल दलित अभिधान ॥ २६ ॥

॥ पट्टपात ॥

दूजे२दिन इम दिष्ट निचैय बसु परन निमंत्रन११७।४१ ॥

धवपट्ट१भूखन२धरन२।१८।४२रु तस बँडवा आरोहन३।१९।४३

दस१०।१५पंच५।२६ पंचदस१५।३महुर३०त्रय३ठाँ इम मारैन ॥

वृत्तिलहें अष्टवदत विदित वृद्धन सैकखी सन ॥

चडि बलि बरात पथ गर्भ्य चलि व्याहें दुलहनि जाइ वर ॥

तहें निधत वृत्ति दूजे२दिवस प्रथित त्याग आरंभ पर ॥ २७ ॥

मारैन१खीसन२अन्त्यालुमासः ॥ १ ॥

नेम छदमित तहें नियत त्याग पहिलैं इम तीन३न ॥

भेदक चारन१।३महुर३४जथा अंतिमै६ पट्टही जन३।६ ॥

महुर२०।४४तीन३धरि मध्य पंचै५अंगुलि भरि रूपय२।४५

॥ २२ ॥ १ छापी २-पलाश ( तोल ) ३ नवीन ४ गेहूँ ५ इन नेम का नाम  
म जाटा का पिंड नाम है ॥ २३ ॥ १ धूम्र के लपेटने हैं चट बरत ॥ २४ ॥ ७  
वसन दिन के चरन में द मैदा (गेहूँ का चारोंक जाटा) २ गेहूँ की २० गेहूँ ११  
गहाँ ॥ २५ ॥ १२ सूत ॥ २३ ॥ १३ धन का मन्त्र १४ पनि के यज्ञ १५ यात्री  
१६ मोक्षक शाखा के चारण १७ वृद्ध लोगों की बार्छी से १८ जानें योग्य स्थान  
न पर जाकर १९ निमेष २० प्रसिद्ध ॥ २७ ॥ २१ लोहा २२ पाँचों अंगुलियों से

सयं निज निज संग्रहित तावें मानव हमही त्रय३ ॥  
 ए वीरमुष्टिनामक उदित तीन३न३तीन३हि नेग तिम ॥  
 तीन३न बहोरि त्रय३त्यागसैं नेग सुनहु पालन प्रतिम ॥ २८ ॥  
 चंडाल१रु चम्मार२ रंजक३तच्छक४व्योकार५रु ॥  
 क्रम नापित६कुंभार७आदि कारुकं उपेत अरु ॥  
 भृत्य८रु बेतन९भृत्य९जिते जाके पुनि जाचक१० ॥  
 सुरपूजक११तिम साधु१२विप्र निजवृत्ति सु बाचक१३ ॥  
 जामात१४भाम१५भानेज१६जुत सवित सुत१७रु विधवा१८सहित  
 लै द्वि२गुन त्याग२२१४६निज निजकुलजपुरुख दूरदेशहु प्रहित१२१  
 ररु१अरु२अन्त्यानुप्रासः ॥ २ ॥

रूपय१गज२हय३कैर४वसन५भूखन६जाजाविधि ॥  
 बंटाहि त्याग बिसाल नियत खुलवाइ कास निधि१ ॥  
 तास द्वि२गुन हम त्रय३हि गहैं गौरव१लाघव२गति ॥  
 भूखन१गज२हय३ भौलि४अयन५ इक१इक१इक१इक१अनि ॥  
 जाचक१ रु पुरोहित२ भृत्य३ जन पावहिं द्विगुनित पुरुखप्रति ॥  
 खिल नाम द्वि२गुन इक१इक१लखहिं सबन तदपि पालनसुमति३०  
 वाहीदिनके अंत पंति भोजन जब पावहिं ॥  
 कौनी जनकसन कहि रु दुलह यह हमहिं दिवावहिं ॥  
 पंच५महुर१२३१४०वर पुरट मंजु मन बीस२ मिठाई२१२४१४८  
 बलि घर आइ बरात दुलह प्रविसें बसुदाई ॥

मुठ्ठी भरकर १ अपने अपने हाथ से २ तहां ३ सदृश ॥ २८ ॥ ४ चमार ५ घो-  
 बी ६ खाती ७ लुहार ८ नाई ९ कमीशों सहित १० चाकर ११ तनखा  
 पानेवाले नौकर १२ मन्दिर का पुजारी १३ स्वामी (संन्यासी आदि) १४ पुरो-  
 हित १५ जमाई १६ बहिनोई १७ पुत्र सहित पुत्र की माता १८ अपने अपने  
 कुल के पुरुष १९ दूर देश में बिखरे हुए भी दूना त्याग लेते हैं ॥ २९ ॥ २५ ॥  
 २० जंड २१ धन का खजाना २२ बड़प्पन २३ जंड २४ एक एक के घर २५ सेवक  
 २६ पाकी के ॥ ३० ॥ २७ कन्या के पिता से २८ सुवर्ण की २९ धन देनेवाला ॥

तैंहँ महुँर१।२५।४९ जुग२ रु कुलदैवतहिँ पूजत २।२६।५० पंच५  
रु बहुरि वर ॥

कंकन तजंत दस१० महुँर३।२७।५१ करि ध्रुवहम हुव इम वृत्तिधर  
॥ दोहा ॥

पयलग्गैँ दुलहनि प्रथम१, पंच५ महुँर१।२८।५२ करि पेस ॥  
तिम पगलग्गैँ कवितिनय, ईतर इक्क१ दै एस२।२९।५३ ॥३२॥  
॥ पट्पात ॥

मध्य२ कनिष्ठ३ कुमार जितैजिहिँ क्रम प्रभु जानहु ॥  
नेगहु तिहिँक्रम१।३०।५४ प्रचुर१ न्यून२ प्रति दुलह प्रमानहु ॥  
लै जन्म१हिँ व्याहरलग गेह आवन३ लग यागति ॥  
नियत इते५६हम नेग करे इम खिलन भिन्न कति ॥

हमरेहि नेग१ कैकै हमहि सहिपै भाग जिनमैँ मिलहिँ२ ॥  
तेअत्थ कहि१रु कहियत२ तथा खेतन मिति जिम तजिखिलहिँ३३।

सब व्याहन सब सुनत नेग सम च्यारि४ घटैँ नन ॥

इम मुखसन सब असन१ करहिँ मोचन लग कंकन ॥

वंधैँ गज२खंभ बलि सोहु पलटैँ न सदासम ॥

वीरसुद्धि ३ तिन बहुरि त्याग४ आरंभ नियत तम ॥

परदेस थितहु निजकुलपुरुष कारुनजुत पहिलेहि क्रम ॥

लै द्वि२गुन त्याग४एँ च्यारिँ लछु वैन नेग इम तुष्ट हम ॥३४॥

कानी नेग अब कहत गर्भआदिक पहिलीगति ॥

प्रसवकाल छ६हि पात्रं महुँर१।३१।५५द्वादस१२लैँ१सम्मति ॥

सिरुपाव१।३२।५६नत्रिक३ सहित महुँर२।३३।५७।३ पंद्रह १५

तीन३न मैँ ॥

१ दुलहन पहिले पहिल पने लागै २अन्य ॥ ३२ ॥ ३ बहुत ४ बाकी के लोगों के ५ हे राजा ६ सब ॥ ३३ ॥ ७ कंकण डोरड़ा खोलने तक ८ कमीज लोगों सहित ९ छोटै ॥ ३४ ॥ १० कन्या के नेग

बरके घरतैं वृत्ति मिलै ए दुवर् सगपनमैं ॥

हम१ भट्ट२ तथा पंढरी सहित बरपरखाई नामविधि ॥

तैंहँ ए दुश्नेग बंटैं त्रय३हि नेग व्याह सुनिये सुनिधि ॥३५॥

ननमैं १पनमैं२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

वहै पूजित हेरवं उहाँ बारह१२ मन अच्छत १३४।५८ ॥

जथा पुव्व सब जनन असन२।३५।५९ तबतैं तैंहँ अबिरैत ॥

बावन जब चउबीस२४ मान सुमनैन अच्छत ३।३६।६० मन ॥

मंडप दिन खट६महुर१।३७।६७ प्रथित पीछल कपर्दपन ॥

खट६ महुर५३।८।६२ खंभरौपन खिन रु जिहिं बेढन१अंसुक ज-  
री ६।३९।६३ ॥

मन चउ रु बीस२४अच्छत सुमन७।४०।६४ क्रमतिहिं बंधै सो  
करी ८।४१।६५ ॥ ३६ ॥

पुनिछ६महुर९।४२।६६सिरुपाव१०।४३।६७तथ्यखट६मिलहिंखंभतल  
मधुर मिठाई११।४४।६८छ६मन मिलहिं सबके बट निर्मल ॥

पंच५महुर१२।४५।६९मिरुपाव१३।४६।७०मंहत पंच५रु पचीस२५मन  
अट्ट१४।४७।७१पिंड अभिधान तास बट पंच५सदातन ॥

तिहिं दिवस अंत वीरत.तमी मन बारह१२विदलित सुमन१५।४८।७२  
मन छ६छ६हंवी१६।४९।७३रु सकर१७।५०।७४मिलहिं जुहुं हम बंटहिं  
पंच५ जन ॥ ३७ ॥

मन पचीस२५पुनि सुमन१८।१।७५नेग यह अच्छत नामक ॥

पंच५महुर१९।५२।७६सिरुपाव२०।५३।७७पंच५तैंहँमिलहिंप्रकामक  
पिंडा१४दिन हम पंच५बंट पावहिं तैंहँ व्यास२न ॥

बंट सबदन बलि बदहिं सकल सनियम जिम सांसन ॥

१.ढोली ॥३५॥ २.गणेश ३.निरन्तर ४.गेहूं ५.प्रसिद्ध ६.पीली कोडी ७.थम्भ के लपेटने का ८.जरी का बज्र ९.हाथी ॥ ३६ ॥ १०.बड़े सिरपाव ११.दलेहुए गेहूं १२.घृत ॥ ३७ ॥ १३.विशेष कामना सहित १४.जैसी आज्ञा है

तँहँ मन छतीस३६सालि२१।५४।७८कि सुमन२१।५४।७८वृद्धि बरन  
लाहिहै छ६बट ॥

दापा सनाम जावतदये प्रति नर दुव२रूप्य२२।५५।७९प्रकट॥३८॥

लग्नसमय प्रभुमिलहिँ हमहिँ इक१महुर१।२३।५६।८०विवाहत ॥

तँहँ बंटत तंबोलँ मिलहिँ भूखन२।२४।५७।८१इक१सम्मत ॥

जंपति२कर जुग२जुरन समय जरमय इक१सारिय३।२५।१८।८२

बहुरि दु२कर बिच्छुरत भर्ममाला४।२६।५९।८३इक१भारिय ॥

ए नेगचारि४हमरेहि अब पटजर चँवरी १।२७।६०।८४मंडप२।२८।

६१।८५ न ॥

छादक जितैक तिन्ह बंट छ६हि समय हैं रु पहुँचन सबन ॥३९॥

इम प्रभु अठ्ठाईस२८कनीउपयाम नेगकिय ॥

बरके घर सन बहुरि सुनहु जे नियत प्रकासिय ॥

समुह मेलसिरुपावा१२९।६२।८६महुर२।३०।६३।८७खट६खट६प्रभु

मानहु ॥

दापानामक दम्भ३।३१।६४।८८प्रमिति खटसत६००पहिचानहु ॥

इम नेग सबन त्रय३वस्तु ए लाहि विभाग छ३हि हम लहैं ॥

हम त्रय३हि नेग पंचक५लहत करहु श्रवन ते अबकहैं ॥ ४० ॥

आदिम१तोरन ईम१।४३२।६५।८९रु दैत गोरनदिन दाई ॥

तिथि१५महुर२।५।३३।६६।९० रु सिरुपाव३।६।३५।६७।९१तीन३मन

दुदस१२मिठाई४।७३।५।६८।९२ ॥

दास१ंकारु२जुत द्वि२गुन पुरुख त्याग५।६।३७।६९।९३सु सबपावहिँ

हम१भट्ट२रु पटँही२ सुबिसिखपुमित नेग बटावहिँ ॥

इम गर्भआदि१व्याहनअवधि२नेग५।८।३६।६९।९३पुत्र१पुत्रि२ननियत

बंधि रु नरेसभाऊ१९।५।१३।६५।९७जिन दुख पावहु सो जियत ॥४१॥

१चावल, अथवा गेहूँ ॥ ३॥ २पानवीड़ा ३खी पुरुष का हथलवा ४तांस की साड़ी

५दोनों हाथ (हथलवा) छूटते समय ६ सोने की माला ॥ ३९ ॥ ७ कन्या के विवाह

में १४०। ८तोरणका हाथी ९ चाकर और कमीषों सहित १०दोली ११पाँचों ही ११॥

॥ दोहा ॥

बुल्लि सपिंड१सगोत्र२बलि, इंद्रसल्ल१९४१२कुल आदि३५ ॥

सवन सुनाये नेगसव, सब देहुव संवादि ॥ ४२ ॥

सव हट्ट६१न घर तवहि सन, नियत भये सब नेग ॥

नदिय लुपन हम वृत्ति नृप, बांधि रीति यह बेग ॥ ४३ ॥

के हसरी१ हम बंटरकै, अकखी वृत्ति सु अत्थ ॥

भिन्न कतिक अपरन भई, सो सो नही समत्थ ॥ ४४ ॥

इम नेमितिक१ अप्पि अब, नित्य२नेग नरनाह ॥

प्रतिबच्छर१ अवसर प्रथित, रचै सुनहु ध्रुवराह ॥ ४५ ॥

जिनमें हम पावत जितै, कहियत विनति कर्म ॥

श्रवनदेहु भूपति श्रवन, विजय१ धर्म२ जस६ वर्म ॥ ४६ ॥

॥ षटपात ॥

मधु१ सित१ प्रतिपद१मिलन दम्भ १।९४नवँ अब्द लगत दुवरा ॥

मन१ मोर्दक २।९५ गुनगोरि६ हेतु अंतहपुरतँ हुव ॥

पुनि इक१इक१सिरुपाव१।३।९६महुर२।४।९७सित१राधै२तीजमत ॥

जिह्वा१अमा३० दम्भ५।६८जुगर२मु पहु अंतहपुर संगत ॥

इम अट्ट१आदि सावन५अमा३०सव भोजन उपहार६।९९ सव ॥

रक्खी अनहै पुणिगाम१५रुचिर तिथि जब रूपय७।१००पंच५ ॥

तव ॥ ४७ ॥

ज्यौं कुलदेविय जैजत दम्भ१।८।१०१ईस७सित२छट्टी६दस १० ॥

दिन नवमी९पुनिदम्भ२।९१०२तेहु दस२० सान अग्न तस ॥

दसमी१० विजयादिवस महुर ३।१०।१०३दस१०दये महीपति ॥

१ कथन करके ॥ ४२॥४३॥२ अन्य लोगों की ॥४४॥ ३ सालाजा ४ प्रसिद्ध ॥४५॥ ५ यश के कवच ॥ ४६ ॥ ६ चैत सुदी एकम ७ नवीन वर्ष लगता है तब ८ ल-  
हू ९ जगाने से १० वैशाख सुदी तीज ११ ज्येष्ठ वदि अमावास्या १२ समय  
॥ ४७ ॥ १३ पुजते हैं तब १४ आसोज सुदि छठ और दशमी के दिन



\*प्रथित इक्कशिरुपाव४।११।१०४ मुल्लवहु मेय मद्दामति ॥

दस१०दम्म१।१२।१०५दीपमांला३०दिवस अखिलनेग मल्लुजन

असन २।१३।१०६ ॥

जँहँ इम प्रदेय रानी जनन विदितखाद्य१रुप्पय२ वसन३।४८।

नियत पट्टरानी सु पक्कं मोदक१।१४।१०७ मन पंचक ५ ॥

पंच५ दम्म ४।१५।१०८पहुँचात इक्कशिरुपाव५।१६।१०९अवंचक ॥

इम लघुरानी अखिल दुस्सन मोदक६।१७।११० रुप्पय ७।१८।१११

दुवर ॥

भेजै तँहँ हम भोन धन्य सिरुपाव८।१९।११२इक्कशधुव ॥

जीरोति नाम यह नेग जिम तिथि दूजी२सुदि१उज्ज८तँहँ ॥

मंतालदम्म१।२०।११३ पंच५रु सुमन जावक२।२१।११४ मिति मन

पंच५जँहँ ॥ ४९ ॥

अहच्छहीदत्तस अग्ग देय थाप्पिय रुप्पय२२।११५दस१० ॥

माघ११विसद१पंचमि५यजुगल२महुर२३।११६हि साधकजस ॥

होरी१५दिन आहँर पुरटर्नुद्वार२।११७किय पंचक५ ॥

कर्क४।१ मकर १०।२ सक्रांति असन १।१५।११८।२२६।११९ सब

जनन अवंचक ॥

जवजबहिफागखेलन जुरहिँ तव तव इक१उष्णीस १।२७।१२०तँहँ

तुरा२।२८।१२१रु हार३।२९।१२२सुमननँ बितरि किय सु वृत्ति इम

कविन कहँ ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

जन्मदिवस नृपको जहाँ, महुर१।३०।१२३इक्कशअतिमान ॥

जिठैकुमरके जन्मपै, दम्म१ ३१ १२४पंच५मित दान ॥ ५१ ॥

\*विदित १वडं प्रमाण का ॥४८॥२ पके हुए लड्डू ३सरल चित्त से ४काती सु-

दी दौज ५ जव ॥ ४९ ॥ ६ छठ के दिन ७ होली के दिन की शिकार में ८ सो-

ने की ९ पगड़ी १० अष्ट मन से; वा फूलों के हार और तुरी देकर ॥ ५० ॥ ११-

पाँचवी कुमर के १२ जन्म दिन (साकगिरह) पर १३ पाँच रुपये देते हैं ॥५१॥

इतर कुमारन जन्म अहै, दुव२दुव२रूपय३।३२।१२५ देय ॥  
 तजि रोगहिँ नृप न्हान तँहँ, महुर१।२३।१२६ द्वि२संख्या मेय॥५२॥  
 जिठ१कुमरके न्हान जिम, रूपय२।३४।१२७पंचक रक्खि ॥  
 दुव२दुव२इतरन न्हानदिय, अप्पन रूपय३।३५।१२८अक्खि॥५३॥  
 बीस२० महुर १।३६।१२९रन नृपविजयँ, पुरुखन प्रति सिरुपाव २।  
 ३७।१३० ॥

महुर३।३८।१३१पैट्सुत पंचपमित, चैलँ४।३९।१३२उचित जयचाव  
 इक१महुर४।४०।१३३ सन दस१०अवधि, दम्म५।४०।१३३ खिलत  
 जय देय५।४०।१३३ ॥

इक१हय५।४१।१३४दँ नृप खिलत२।४२।१३५इक१, साह रीभलहि  
 अये ॥ ५५ ॥

महिखी१केर द्वि२रागमन, जँहँ पय लगगत जावँ ॥  
 मिलैसुकवितियकोमहुर१।४३।१३६, पंच५इक१सिरुपाव२।४४।१३७  
 उभय२महुर ३।४५।१३८ सिरुपाव ४।४६।१३९ इक१, क्रम रानीजु  
 कनिठ ॥

इक१महुर५।४७।१४० सिरुपाव६।४८।१४१ इक१, जिठ१ कुमार तिय  
 जिठै१ ॥ ५७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

पटसव७४९।१४२रूपय८।५०।१४३पंच५, अप्पै कुमरानी इतर ॥  
 रीति यहै तँहँ रंच, हड्ड६१हेलि न न्हँसहै ॥ ५८ ॥  
 जाया भ्रातन जेम, आवै घर मुख्य१रु इतर२ ॥  
 अंबैर ९।५१।१४४ नाखकँ १०।५२।१४५ एम, अप्पै ते निज निज

१ जन्म दिन पर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ २ युद्ध में राजा के विजयी होने पर ३ पाहुने  
 पुत्र के युद्ध जीतने पर ४ चक्र ॥ ५४ ॥ ५ पाकी कुमरों की जय होने पर ६  
 दशाह स रीभ लेने के समय ॥ ५५ ॥ ७ राणी के ८ जहाँ ॥ ५६ ॥ ९ छोटी राखी १० बड़े  
 कुंवर की बड़ी कुंवराणी ॥ ५७ ॥ ११ अन्य कुंवराणियों १२ हाडों के सूर्य १३ जय  
 अर्थात् इन नेगों में क्षति नहीं करते ॥ ५८ ॥ १४ भाइयों की स्त्रियों १५ चक्र १६ रूपय

उचित ॥ ५९ ॥

जिम ए सूचित जाइ, पितालय कछु हेतु पुनि ॥

अप्पन आलय आइ, तँहँ पयलगै कवितियन ॥ ६० ॥

अप्पै महिखीएह, तब तब रूपय १५३१४६ पंचपतिन्ह ॥

अरु खिल ताहि अनेहँ, दै पयलगत दम्म २१५४१४७ दुव २६२

द्वैरहि निवेदहि दम्म ३१५५१४८, मुख्य १ कुमार जेठी १ जनी ॥

क्रम पयलगन कम्म, दम्म ४१५६१४६ इक्क १ दै सेस सब ॥ ६२ ॥

रखिख नेग इहि रीति, सब हहु ६१ न घर तान ससि १४९ ॥

पुनि सोलह १६१६५ सह प्रीति, देस प्रजाप्रति किन्नदढ ॥ ६३ ॥

कर्षुर्क धान्यकुमाइ, जो घरआनै मन जिते ॥

उनतै क्रम कठि आइ, सेर ११५० तिते हमरे सदन ॥ ६४ ॥

इच्छु १ दसंगुल २ अंब ३, साका ४ दिन विक्रय समय ॥

कठि लव ११५१ दसम १० कंदब, सब पहुँचै हमरे सदन ॥ ६५ ॥

लहत ज्येष्ठ १ सुत लाह, पंच ५ दम्म ३१५२ भेजहि प्रजा ॥

इतरन भैव उच्छाह, दुव २ दुव २ रूपय ४१५३ देय सब ॥ ६६ ॥

दम्म ५१५४ पंच ५ दुव २ दम्म ६१५५, याही क्रम तिन्ह व्याह अरु ॥

करन असन हम कम्म, सामग्री ७१५६ अष्टा १ दि सब ॥ ६७ ॥

हालिक १ कारु २ बिहाइ, श्रील खिलन जन्मते सुता ॥

इक १ रूपय ८१५७ घर आइ, व्याहनतस जुग २ दम्म ९१५८ बलि ६८१

गुड़ १ घृत २ आदिक गैल, विक्रय बट लव १०१५९ बारहम १२ ॥

विकि महिषी १ गो २ बैल ३, बीसम २० लव १११६० उपदाँवने ॥ ६९ ॥

॥ ५६ ॥ १ पिता के घर २ किसी कारण से ॥ ६० ॥ ३ राणी ४ समय ५ रुपये

॥ ६१ ॥ ६ भेट करते हैं ७ माता ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ = घरसे लोग ॥ ६४ ॥ ७ गन्ने

१० खरदूजा ११ तरकारी आदि १२ बेचने के समय १३ दशवें अंश का खनूह

निकालकर ॥ ६५ ॥ १४ जन्म ॥ ६६ ॥ १५ आटा ॥ ६७ ॥ १६ हल हाँकनेवाले

और १७ कमीशों को छोड़कर १ = बाकी के धनवालों के पुत्री होने के समय

॥ ६८ ॥ १९ बारहवां हिस्सा २० भैंस २१ भेट ॥ ६९ ॥

इतपरदेसिन आइ, वारन१हय२मय३मुख विकत ॥

क्रम लव सतम१०० कढाइ, सठिम६०तिम तीसम३० सहित१॥

१२।१६१।२।१३।१६२।३।१४।१६३ ॥ ७० ॥

बनिज पंटा१दिक वस्तु, व्यापारिन देसि१न विकत ॥

अंस१।१५।१६६सोलहम१६अस्तु, अस्तु विदेसि१न अष्टम८सु२।

१६।१६७ ॥ ७१ ॥

इम दिल्लियनृप अक्खि, सँसदविच ए १६७नेग सब ॥

रीति निघत पर रक्खि, स्वीकारिने हड्ड६१न सबन ॥ ७२ ॥

॥ युग्मम् ॥

अवनि रही घर अढः, अढः लही उद्धत अनुज ॥

निज पालन सँनढ, भूप तँदपि भाऊ१९५।१ मयो ॥ ७३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

गर्भ१प्रसव२संबंध३कैग्रह४, वैच्छरइक१विच दिवस५चउदह१॥

कक०।१५कर१०।२रवि गमन६फाग७क्रम, सहिपा१दिन जैन्माह८

सनोरम ॥ ७४ ॥

सहिपा१दिन गेँद तजि न्हँवन मह ९, इम सहिपा१दिन जुँ

विजय अँह१० ॥

सुपहु लँहँ जवरीक११साहसन, महिपी१आदि डिगगस मेलन१२

पुनि पिउँहर जाइ रु आवनपर१३, बंस नेग खिल ए तेरह१३वर॥

अर्जनधान्य१।१४फलादि२।१५विकन इम्, तनपादिने प्रसव ३।१६

रु विवाह४।१७तिम ॥ ७६ ॥

विकत गुडा१दि ५।१८गवा२दि६।१९ समै वर, परदेसिन गज१मुख

विक्रय७।२०पर ॥

१हार्थ २ ऊट आदि ॥ ७० ॥ ३ वस्त्र आदि ॥ ७१ ॥ ४ मन्त्रा में ५ योगिकार

निगा ॥ ७२ ॥ ६ पृथ्वी ७ तैयार ८ तो भी ॥ ७३ ॥ ९ जन्म १० लग्न ११ वि-

वाह १२ एक वर्ष में १३ जन्म दिन ॥ ७४ ॥ १४ नैराग्य होकर १५ दिन १६

राष्ट्र ॥ ७५ ॥ १७ पिता के घर १८ धान इकट्ठा करने पर १९ कन्याओं के ज-

दुकूलांशदि-विक्रय=२१ कर देसि१ न, पावतलाभ-तस९।२२ हि  
परदेसिन ॥ ७७ ॥

करदेसिन१परदेसिन२अन्त्यानुमासः ॥१॥

ए नव६समय प्रजा बलि अप्पन, सब बाईस२२स्ववृत्ति सम्पन्न  
द्वि२धा गर्भ१सब असन नेग दुव२, होते द्वि२धा-हि प्रसव२ पंचक  
२।५।७ हुव ॥ ७८ ॥

कनी गर्भ३ दुव२दुव२।७।९ पूरवकन, प्रथम१पुत्र भव४ नेग नवक  
९।१८ प्रम ॥

हुव ए नेग नव९हि हमरेही, सुनहु खिलहु सब६बट सनेही ॥७९॥  
दुरिकाबंध५नेगइक१।१९छजै, कुमर प्रथम१सगपन६चउ४।२३कजै  
लघु१सुतादि भव१ जुन सगपन२।७लग, मिलैमकल यह १।५।२५  
तारतम्य मग ॥ ८० ॥

प्रथमा१दिक सुतव्याह२।८तास३०।५४पुनि, सदा सहस तैंहँ च्यारि  
४लेहु सुनि ॥

गृहजन असन१ रु खंभ बद्ध गज२, वीरमुष्टि३ अरु द्वि२गुन त्याग  
४ बँज ॥ ८१ ॥

दुहिता नव९इक१।५५ रु सगपन१०दुव२।५७, हित ए द्वै२हि दुलह  
घरतैं हुव ॥

अष्टाईस२।८५कन्यका उपपम११, प्रभु निजघर१तैं देय जथाप्रम८२  
पुनि वरघर२तैं अष्ट८नियतपन, लिक३।३१।८८सब६बट पंचक५।८।  
३६।९३ हम तीन३न ॥

चउदह१४ समय१५ नेग चउवीस२४।११७ हि, महीदिन किय प्रति-  
अब्द१महीसहि ॥ ८३ ॥

न्म ॥ ७६ ॥ १ वल्ल आदि ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ २ जन्म ३ प्रमाण ॥ ७९ ॥ ४ छुगी बां-  
धने का ५ विचार ॥ ८० ॥ ६ समूह ॥ ८१ ॥ ७ विवाह ॥ ८२ ॥ ८ उत्सव के  
दिन १ सालाना ॥ ८३ ॥

दुव१११९ संक्रांति२६ फाग२७ त्रय३।२२ दृढदय, तिम नृपा१दि३ज-  
न्माह३।३० नेग त्रय३।१२५ ॥

अरुज नृपा१दि३ न्हानत्रय३।३३ त्रय३।१२८ इम, जय३।३६ नृप१ मुख्य  
त्रय३ करतपंच५।१३३ जिम ॥ ८४ ॥

प्रभु दुव३।१३५ साहरीभ प्रभुपावत१।३७, खट६ हि१ द्विरागम ६।४३  
दसक१०।१४५ दिखावत ॥

रानि२ न कुमरानि४ न ठकुरानि६ न, ए गुरु१ लघु२ पन छ६ खिनन  
रनइन ॥ ८५ ॥

पिउहर१ वहै चउ४ गेह पधारत१।४७, महिखी१ प्रमुख४ देत चउ४।  
१४९ ध्रुव मत ॥

नेग तानभू१४९ मित नरनायक, बंधे निजकुल१ वृत्तिविधायक।८६।  
सोलह१६ सनियम बंधि प्रजासन, सहिप दिवाये हमहिं महामन ॥  
सब कृषिधान्य१।४८ बंट१।१५० चालीसम४०, दसम१ फला१ दि१।२।  
४९ न बंट१।१५१ अरिंदम ॥ ८७ ॥

आदि१ रू इतर२ सुतनके संभर्व१।१५१, अप्पै दम्म१।२।१५३ पंच५।  
दुव२ उच्छव ॥

द्वि२ विध व्याह१।२।१५३ तिनकेहु१।२।१५५ पंच५ दुव२, हमरे सब-  
मनुजन भोजन३।१।५६ हुव ॥ ८८ ॥

हलिय१ कारु२ विनुसुताजन्म१।५४ हित, इक्क१।१।१५७ रू व्याह१।५८  
दम्म१।५८ दुव२ अंकित ॥

वेचिगुड़ा१ दि१।५६ बारहम१२ लव१।१५९ बट, बीसम२० वेचि१।१५७ ग-  
वा१ दि१।१६० विसंकट ॥ ८९ ॥

वेचि१।५८ द्विरद१ लव१।१६१ सतम१०० विदेसिन१, सहिम६० लव१।  
१६२ विक्रय१।५६ हय२ सेसिन ॥

१ दृढ दयावाले ने २ जन्म दिन ३ नैरोग्य ॥ ८४ ॥ ४ हे युद्ध के सूर्य ॥ ८५ ॥ ८६ ॥  
५ नियम सहित ॥ ८७ ॥ ६ जन्म ॥ ८८ ॥ ७ हल हांकनेवाला ८ कमीश ॥ ८९ ॥

बट११६३तीसम३०वांसंत३न विक्रय११६०, बेचि११६० पटा१दि अंस  
११६४अष्टमऽव्यय ॥ ९० ॥

देसि२नलव११६५ सोलहम१६ पटा१दि६१न, दूढ ए१६५ नेग करे  
नृप जा दिन ॥

चउदह१४दिन प्रतिअब्द१तेहुचुनि, समयनकी संख्याहु लेहुसुनि९१  
सब अवसर इकसठि६१संकलन, सोलह१६तँहँ ए नेग प्रजासन ॥  
तानइंदु१४९ मित नेग स्वकुल१ तत, सोलह१६ सह पैसठि अग्न  
सत १६५ ॥ ९२ ॥

॥ दोहा ॥

छितिप बांधि इम नेग छुद्धि, वृत्तिधरन बिस्वास ॥

पठये सब बुंदीपुरी, रक्खि मुद्धित गुनरासि ॥ ९३ ॥

हमरे पुब्ब पितामहहु, दै आसिख लहिदान ॥

सुकविखेम१६८।१।१अरु राम१६८।१।२सह; बिलसे आइ लवान ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभू-  
पभावसिंहचरित्रे ग्रन्थकर्तृसूर्यमल्लाद्याश्रितनियतवसुप्रतोलीपात्रत्व-  
त्यागादिवर्णनं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदितस्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मह समाढय बाराँश्मऊ२, भूप मयो भगवंत१९५।३ ॥

अग्रज१भू लिय छिन्नि इम, अनख बढाई अनंत ॥ १ ॥

१ ऊँट ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ९५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
भावसिंह के चरित्र में ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) आदि नेगियों के नेग और पोलपा-  
त्र के त्याग आदि के वर्णन का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से  
२३० मयूख हुए ॥

२ धनवान् ॥ १ ॥

बसुधा साह सहाय बिनु, लेतो छिन्नि सु लुद्ध ॥  
 जबहु बीरपन जानते, बदि यह धर्म बिरुद्ध ॥ २ ॥  
 पै जिम सैरभसहाय पगि, रुकर लै सिंह ३ विभाग ॥  
 भूमि अद्व ३ लहि सम भयो, रक्खि भूपपन राग ॥ ३ ॥  
 तब भाऊ १९५१ भूपहु तजी, प्रथित अनुजसन प्रीति ॥  
 बहुरि दुश्भ्रातन मिलन बिधि, न हुव मान धननीति ॥ ४ ॥  
 भीरु सुजा ४०१२ इतजो भज्यो, पहिलै गंगापार ॥  
 जय १ अनिरुद्ध २ दलेल ३ जब, रहेरोध रखवार ॥ ५ ॥  
 साहभयो अवरंग ४०१३ सुनि, एहु मिले सब आनि ॥  
 सुजा ४०१२ कटक उततै सज्यो, पुनिदै मुच्छन पानि ॥ ६ ॥  
 पूरव पाटलिपुत्रतै, राजमहल अभिराम ॥  
 पुर गंगातट जो प्रथित, तह आयो यह ताम ॥ ७ ॥  
 व्है तथहि दल हाजरी, चढयो सु दर्प मचात ॥  
 अहो अनुज गद्दी गद्दी, सत्य सु उर न समात ॥ ८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सुनि आत सुजा ४०१२ बल बहुल संग, अवरंग ४०१३ चढयो इततै  
अभंग ॥

संभंवित भूप हाजरी लसात, भाऊ १९५१ १२ भगवंत १९५३ १२ हु  
संग भ्रात ॥ ९ ॥

इम समुख मिले उद्धत असेस, दुव २ कटक दंगेखजुवा प्रदेश ॥  
 दुश्दिनरु दुश्रति तोपन दगाइ, ठहरे बिदूर बिच जुद्ध ठाइ ॥ १० ॥  
 तीजे ३ दिन बाजिन बग्ग तानि, जुग चैक्र जुरे बल १ संक्र २ जानि ॥  
 आरुढ गजन भाई उभैरहि, ललकारत पहुँचे निजन लैहि ॥ ११ ॥

१ लोभी ॥ २ ॥ २ सिंह की ३ राजापन से स्नेह रखकरा ॥ ३ ॥ ४ विदित  
 ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ पटना शहर से ६ प्रसिद्ध ७ तहां ॥ ७ ॥ ८ आश्चर्य है कि  
 ॥ ८ ॥ ९ बहुत सेना के साथ १० जिनका हाजर होना सम्भव था वे ॥ ११ ॥ ११  
 खजुवा नगर के पास १२ बहुत दूर ॥ १० ॥ १३ सेना १४ इन्द्र और बलराजा ॥ ११ ॥



इतरहु इतउत२के कति अमीर, बेतंडन आरुहि मिलन वीर ॥  
हुसियार सुजा४०१२कैदल हरोल, लहि अवसर भारे खग लोल  
अवरंग ४०१३ कटक कछु सिथिल आस, तिमातिम इत क्रमक्रम  
बढत त्रास ॥

विच पैठि सुजा ४०१२ के भटन ब्रात, दूढ सँय चलाइ कछु जय  
दिखांत ॥ १३ ॥

इमपिल्लि सुजा४०१२ के इक अमीर, सन्निधि अवरंग४०१३ हि लै  
सधीर ॥

गज तास स्वंगज टकर लगाइ, जानुन जकाइदिय सीघ्र जाइ १४  
चीस१४ पुरीसं२इम ईम अचेत, बेपन२लग्यो सु घुम्पन२व्यपेत ॥  
नो होइ पैलायन सक्ति जाहि, तो जाइ दूरभजि भजि सु ताहि१५  
त पांत अति असह एह, दिय स्वामि अनुज अरि द्विरददेह  
अवरंग ४०१३ चाहिय गिरि चढन अँव, गिनि अँसु बिपत्ति ईभपर  
बिगँव ॥

अवरंग ४०१३ बीर तँहँ इक अँलीह, ललकारयो स्वामि सु तज  
लीह ॥

गिरिबो यहगज१तँ तखत२तँ सु, हत्थी रहँहि निजहिहँ हैं सु१७  
ईभ१ही यह दिल्लीपद२ अज्ज, करिये नताहि तजि लजि कुँकज्ज

१ और भी २ हाथियों पर सवार होकर ३ चपल ॥ १२ ॥ ४  
ढीला हुआ ५ समूह ६ हाथ ॥ १३ ॥ ७ औरंगजेब को सक्षिप लेकर  
८ उस औरंगजेब के हाथी के अपने हाथी की टक्कर लगाकर ९ घुटनों के प-  
ल गिरादिया ॥ १४ ॥ १० लीद करके ११ हाथी १२ कांपने लगा १३ दुर्गति  
होने से १४ भागने की शक्ति होती तो ॥ १५ ॥ १५ स्वामि के शत्रु छोटे भाई  
औरंगजेब के हाथी ने १६ औरंगजेब ने हाथी से गिरकर घांड़े पर चढना चा-  
हा १७प्राण का १८हाथी पर १९गवै रहित ॥ १६ ॥ २० बिना मार्ग से अर्थात् से-  
षक का स्वामि से यह कइने का मार्ग नहीं है तो भी उसने ललकारा २१यह  
हाथी से गिरता है सो तखत से गिरना है २२हाथी अपने नीचे रहने से ही त-  
खत भी अपने नीचे रहेगा ॥ १७ ॥ २३ यह हाथी २४ छोटा कार्य

उज्जैन की दारा ४०१२ करि यहैहि, बन बनन भ्रमत बिपदा बहै-  
हि ॥ १८ ॥

है मरन१ जियन२ जय३ दैव हथ, सब स्वीय लाखिँ गजथित  
समथ ॥

भनि मृत कि१ भग्न२ इम सून्य इकिख, सब लगहिँ मग्न उद्वा-  
व सिक्खि ॥ १९ ॥

तिम कहिय गजाजीवहिँ प्रतर्जिँ, इमकोँ उठाहु कछु धिज्ज अ-  
र्जि ॥

घन रीक१ लेहु तो जय घुमंड, देहु न उठाइ तो प्राणादंड२ ॥२०॥  
वृत्तांत कहंत लगत विलंब, काल सु हुव दुद्धर डर करंबे ॥

जो लौं गज उठहिँ पुब जास, प्रदुत अनीक हुव तास पास ॥२१॥  
मिथ्याहि नैष्ट अवरंग४०१३१मानि जित्यो सुजा ४०१२१ हि जि-  
य सत्य जानि ॥

तहँ नृप१ नबाव२ बहु बदलि तोर, अति त्रस्त भजे पति सिविरे  
ओर ॥ २२ ॥

जसवंत जोधपुरभूप जत्य, मन्त्रिसु सुजा४०१२ बै हुव पति समथ ॥  
इहिँ धूर्त अचानक सिविर आइ, सन्नद स्वीय सब बल सजाइ ॥  
क्रम लुटि साह वैभव१ कितोक, जु मिल्यो वरोध जेवर२ जितोक  
लौ वित्त जोधपुर गो निलज्ज, अवरंग४०१३ न जान्यो जियत अ-  
ज ॥ २४ ॥

१७जैन के युद्ध में दाराशिकोह ने हाथी से उतर कर ॥१८॥ अपने लोग३ समर्थ  
४ हाथी को खाली देखकर आप का मराहुआ या भगाहुआ कहकर सेना  
के सधलोग ५ भागे ॥ १९ ॥ ६ महाबत को ७ धमका कर कहा ८ कैय  
देकर ॥ २० ॥ ९ यह बात कहते वार लगती है १० वह समय ११ अय का  
वसह होने के कारण दुर्धर हुआ १२ सेना भागी ॥२१॥ १३ छूटे ही औरंगजेब  
को मरा हुआ मानकर औरंगजेब को १४ डेरों की ओर १५ मग्न ॥२२॥ १६ ल-  
नाने में १७ घन १८ आज औरंगजेब को जीवित नहीं जाना ॥ २४ ॥

खल एह सुजा ४०।२ जय करत रूपात, जब लुटन लग्यो अर्थ  
जात ॥

बुंदीस सिबिर, जब नरम नात, हो सोहु सुजा ४०।२ जय सुनि सु-  
हात ॥ २५ ॥

भगवंत १९५।३ सिबिर संजुत स्वभाइ, लुटतहुव जँहँतँहँ प्रसभ  
लाइ ॥

सन विगरे सबके सिबिर माँहि, जन बहु पँलाइ दिसदिसन जाँहि  
इस डसर मच्यो इत सिबिर आनि, तिम उत रन २ तिहिं भट को-  
प तानि ॥

उतरन दयो न इभँतँ स्वईसँ, रु कहिय इभँपँलाहिं बितँत रीसा ७२।  
इभँकोँ उठाइकै लेहु इष्ट १, असु तव कै लैहो २ रे अनिष्ट ॥

बिसवास १ धिज्ज २ बल ३ मन ४ बढाइ, इभँ सिथिल निडि तिहिं  
दिय उठाइ ॥ २८ ॥

उठत मतंग तापर बइड, दल १ अप्प २ अप्प १ दल २ विकल दिह ॥  
गजकै गजटकर गो लगाइ, जो मिच्छ इन्ह्योँ भगवंतँ १९५।३ जाइ ९२।  
भाऊ १९५।१ नरेस गिनि स्वामि भाव, कछु दूर खरो न भजन  
कहाव ॥

अवरंग ४०।३ कहिय लखि कवन एह, निज बुल्ले भाऊ १९५।२  
यह सनेह ॥ ३० ॥

बुल्लयो सु खरो यह सरबिलंद, करिहँ फतेहि तो किति कंद ॥

अवरंग ४०।३ अखिख इस पीछु पिल्लि, किय हल्ल सुजा ४०।२ पर

१ प्रसिद्ध २ धन ३ बुन्दीश के डेरों से ४ बुल्लयोँ का समूह ॥ २५ ॥ भगवन्तसिंह के  
डेरों सहित ५ अपनी इच्छानुसार ६ हठ करके ७ भागकर ॥ २६ ॥ उपद्रव १  
क्रोध करके १० अपने स्वामी औरंगजेब को हाथी से नहीं उतरने दिया ११  
महावत को १२ क्रोध फैलाकर ॥ २७ ॥ १३ मन चाहा फल १४ प्राण १५ हा-  
थी को ॥ २८ ॥ १६ हाथी के दफ़र लगानेवाले मलेच्छ को भगवन्तसिंह ने मा-  
रलिया ॥ २९ ॥ ३० ॥ १७ कीर्ति का मूल १८ हाथी को बढाकर

सरन किल्लि ॥३१॥

हड्डादशधिप भाऊ१९५ तस हरोल, बढिगो लै अखिलन देत बोल  
 बुंदीस दल१६ निजदल२बिसिष्ट, दिल्लीस जुरघो स्वभंटोपदिष्टा३२।  
 अवरंग४०।३ जियत लखि सुभट ओर, ते दूर दूर हे प्रहतजोर ॥  
 मिलि तेहु सबै रचि सख मार, मिलि जुटे अरिसिर पटकि भार ॥  
 अवरंग४०।३नियति अनुकूल आइ, इक चित जुरे सब छक अघाइ ॥  
 भाऊ१९५।१ अधीस भुजबल भरोस, सो गोहि पैठि परबल सरोस  
 चउ४भेद लारन प्रहरन चलंत, छिति अंग रंग१ नभर उच्छलंत ॥  
 सामीप्य लयो गजथित सुजा४०।२ सु, इ३१ इभरन जुरे हय१ ह-  
 यरन आसु ॥ ३५ ॥

बुन्दीसहिँ अक्खिय साह बीर, व्है तव भुज रैन१ खनि२ विजय१  
 हीर२ ॥

सद्धु तिम खल जिम बढि सकैन, अवसर यह मुनसब बढन अैन  
 सुनि नृप प्रसन्न हलकारि स्वीय, गय अपि सुजा ४०।२ सिर रय  
 गरीय ॥

जिम परत किलकिला१ सैफर२जानि, तिम पहुँचि सत्रु गंज रँज  
 प्रतानि ॥३७॥

पीलुँ१हिँ प्रहारि खैर आरि खग, आंधोरन मस्तक कियअलग  
 दूजी२हु बाँजि अपा दिवाइ, आघात सुजा ४०।२।३ सिर कियउ

१ बाणों से कीलकर सुजा पर हला किया ॥३१॥ २ सब को युक्त अपने वीरों से  
 उपदेश पाकर ॥ ३२ ॥ ३ निर्वल होकर ॥ ३३ ॥ ४ भाग्य ॥३४॥ ५ मुक्त, अमु-  
 क्त, मुक्तामुक्त और यंत्रमुक्त इन चार प्रकार के द शस्त्र चलते समय ९ नज-  
 दीक १० हाथियों के सवारों का हाथियों के सवारों से और घोड़ों के सवा-  
 रों का घोड़ों के सवारों से ११ शीघ्र युद्ध हुआ (यहां हाथियों का हाथियों से  
 और घोड़ों का घोड़ों से लड़ने में लक्षणा से सवारों का ग्रहण है) ॥३५॥ १२  
 युद्ध रूपी खान में विजय रूपी हीरा १३ स्थान ॥ ३६ ॥ १४ अपने लोगों को  
 बढाकर १५ बड़े वेग से १६ मच्छी को देखकर १७ रजोगुण फैलाकर ॥ ३७ ॥  
 १८ हाथी को १९ तीक्ष्ण २० महाबत को २१ घोड़े को अप दिलाकर ॥ ३८ ॥

आइ ॥ ६८ ॥

सो खग खवासीके सिपाह४,\*अड्डन पर भेल्यो अखिख बाह ॥  
आधोरन आसन पुनि सु आइ, प्रेस्तहुव पीलुहिं छिद्रपाइ ॥३९॥  
प्रभु १ बाहु सुजा४०१२ सर इक पइठ, बलि भंपि गयो ढिग हय  
वइठ ॥

गजपेरक १ अवरहु दियउ गोरि, जान्यो सुजा ४०१२हु हनिहैहि  
हेरि ॥ ४० ॥

हय १ लिय तिहिं गय २ तजि कछु सहाय, कुंजर लखि परभट  
सून्यकाय ॥

जिहिं जानि नष्ट अवरंग४०३जेम, तासहु दलभग्गो पुव्व तेम ॥४१॥  
इहि अंतर भो इत भानु अस्त, मचि अंधकार छाये समस्त ॥  
पर १ अप्पन २ जन बोध न परंत, हुव त्रास सुजा४०१२हिय आस  
हंत ॥ ४२ ॥

नृपके भतीज तँह रूप १९६१२ नाम, जजाउरपति बढि उचित  
जाम ॥

अरि साहसुजा४०१२को जो वजीर, मारयो सु इवादतखान १वीरा४३॥  
उदावे मचतठहरयो न एह४०१२, निज असु लौ भग्गो रनअनेह ॥  
बुंदीसकेहु कनका १९५११दि बीर, साधक सहाय हुव बिजय सीर  
अवरंग४०३केहु खिलभट अनेक, इहिं जय हुव भग्गो चित्त एक १  
पै हहु६११ ताहि गज २ सह पिराइ, गजपाल १ खवासीभट २ गि-  
राइ ॥ ४५ ॥

\*हाल पर १ महावत के आसन पर आकर रहथी को ॥३९॥ राजा भाऊसिंह  
के भुज पर सुजा का एक तीर लगा ४ दूसरे महावत को भी ॥४०॥ सुजा हाथ  
छोड़कर घोड़े पर चढ़ा २ हाथी को खाली देवकर ३ जिस प्रकार औरंगजेब का  
मरा हुआ जाना था तिस प्रकार सुजा को भी मरा हुआ जाना १ पहिले की  
भांति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ८ जहां ॥ ४३ ॥ ६ भागना १० प्राय ११ युद्ध के समय  
॥ ४४ ॥ १२ पाकी के वीर एक चित्त होकर १३ बंद करनेवाले १४ पीड़ा देकर  
१५ महावत ॥ ४५ ॥

गजतैं सु गिरायो विकल गत, \*धमसान मचायो प्रात घत ॥  
 पति न लाखि परना प्रद्व परंत, इभ १ बाजिरहे कति रंगअंता ४६  
 इक १ सोहि खासगज रु दुव २ ओर, १ त्रिगजी ३ लिय नृप बल बिजय  
 सोर ॥

बलि तिनमें इकपर रजत बंब ४, किय निज तिम तिथि १५ तिम  
 हय कदंब १९ ॥ ४७ ॥

त्रय ३ गज हय पंद्रह १५ लुटि ताव, भास्यो अवरंग ४० ॥ ३ हि जयद  
 भाव १९५ ॥ १ ॥

पायो सता १९४ १ जु जगजस प्रसारि, बलि मुनसब देवे सुहि  
 चिचारि ॥ ४८ ॥

सतकारि सराहत रीकिसाह, भाऊ १९५ १ प्रति भाखिय वाहवाह ॥  
 वारन त्रय ३ तिथि १५ हय रजत बंब १, लूटहु दई सु कहि जय वलंब  
 भूपहु प्रसन्नहु अडर भासि, बचनन निज कथन नन बिकासि ॥  
 कासिब १ सुख निच्छन अकिख किति, बुल्ले मुगलेसहि समय बिति  
 अब होत सकल हय जय उपेत, खेलन रन जित्यो कोन खेत ॥  
 प्रभु अप्प लखत जिहि बल प्रसारि, इभतैं सु प्रहत दिन्नो उतारि  
 तासो बै उचित इह बुल्लि ताहि, अप्पन मन जो कछु देहु ग्राहि ॥  
 जवनेस बदिय तुम कहत ज्योहि, सह बिजय भये बुंदीस सोहि  
 सिविरन अब याको अप्पि सर्व, अनुमत सैराहि गिनिहै अखर्व ॥  
 रन जिति इम सु दुंदुभि घुराइ, पहु भाऊ १९५ १ जय अवलंब पाइ  
 सिविरन दिस आवत सुदित साह, पथमाहि सुन्यो आगस प्रवाह

\*युद्ध कोपने खासी को नहीं देखकर शत्रुओं में भागण पड़ी युद्ध भूमि  
 के अन्त में ॥ ४६ ॥ १. तीन छाधियों का समुदाय १ चांदी का नगरा २ पन्द्रह  
 घोड़ों का समूह ॥ ४७ ॥ ३. तहां ४ जय देनेवाला भावसिंह ॥ ४८ ॥ ५. हांथी  
 ६ चांदी का नगरा ७ जय का अवलम्ब कह कर ॥ ४९ ॥ ८ आदि ॥ ५० ॥ १९ सहित  
 १० आकर ॥ ५१ ॥ ११ अब ॥ ५२ ॥ १२ हेरों में १३ उत्साह करने की प्रशंसा  
 करके १४ बढ़ा ॥ ५३ ॥ १५ अपराध का

बुंदीस \*सिबिरके जनन जात, खलभावं विभव लुट्योहि ख्यात  
मन्नत जसवंतहि जड निमित्त, बुंदीसहि लोलुभ चाहिय बित्त ॥  
किय प्रथम लूट जसवंतकूर, सिबिरस्थ तदपि बुंदीस सूर ॥५५॥  
करते जो संगति दोस कष्ट, भगवंत१९५॥३सिबिरहोतो न भष्ट॥  
बलि खास सीर२खी पुर३वजार४, सब लुटिन करते लुप्त सार५६  
जसवंतसौहु ए बढत जाव, भगवंत१९५॥३विभव लुटन प्रभाव ॥  
रन चहत सुजा४०॥२जय मच्छरीक, अब जानिपरिय लुटत अनीक५७  
न पिहित जो व्है इन्ह नृप निदेस, क्यों मंतु करै तो असह एस ॥  
अवरंग४०॥३सुनत यह सिबिर आइ, प्रजस्यो कसानुं जनु आज्य पाइ  
सासन दिय तोपन पिछि साह, भाऊ१९५॥१कैहँ भुंजहु गुरु गुनाह  
पाये भगवंत१९५॥३हु दुवप्रहार, तिहिँ करहु स्वस्थ तम बैद्यवार५९  
बुंदीस सिबिरजन इक१वचैन, अखिलन पहुँचावहु समन अैन ॥  
यह सुनि लौ तोपन तस अनीक, रिसरस बस वेढिय संभरीक६०  
उतरयो इत भूपति सिबिर आनि, मन लुटन आगस असह मानि  
लुंटाकनै धिक्करि बंधि लैन, दृढ किन्न जथोचित दंडवैन ॥ ६१ ॥  
जिहिँ चविय आतताइन सजोर, मूढन किय जयश्रम व्यर्थ मोर ॥  
पाये प्रहार परभटन पारि, हत्थी तजिगो भजि अरि सु हारि ॥६२॥  
सो मम जस दुर्लभ दलन सज्ज, असुदंड सहहु फल सकल अज्ज ॥  
जिन्ह इनन खिलन दै हुकम जाव, तोपनगन बिटिय सिबिरताव  
हो सज्ज नृपहु लौ असि सदायै, निजभटन कहिय अब मरन न्याय

\* डेरों के लोगों के । समूह ने ॥ ५४ ॥ । कारण § अत्यन्त लोभी १  
डेरों में ठहरे हुए ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ २ जहाँ ३ चहुवाख ४ बुरा ॥ ५७ ॥ ५ राजा  
की इस आज्ञा नहीं होती तो नहीं सहने योग्य अपराध क्यों करते ६ अग्नि  
७ घृत ॥ ५८ ॥ ८ तोपें भेजकर ९ बड़े अपराध से १० बहुत नैराग्य ॥ ५९ ॥  
११ डेरों के लोग १२ यमराज के घर १३ चहुवाख को घेरा ॥ ६० ॥ १४ अप-  
राध १५ लूटनेवालों को धिक्कार देकर ॥ ६१ ॥ १६ कहा १७ आततायी लोगों ने  
१८ विजय के परिश्रम को ॥ ६२ ॥ १९ प्रायों का २० जहाँ २१ तहाँ ॥ ६३ ॥  
२२ खड्ग को सहाय लेकर

पुनि आतताइगन बुद्धिपास, अक्खिय अवहै इक १ मरन आसा ६४।  
बचिहैं तो दैहैं दम बहोरि, जितने जस भुजबस लेहु जोरि ॥

कति भटन अरज किय नय प्रकास, पटकहु अपराधिन साहपास  
नृप कहिय मोहि दम दैन नीति, इहैं तुम मर्त जिय भय कुजस  
इति ॥

तौहू कति सुभटन प्रसभ तानि, अक्खिय दैहेला दिष्टि आनि ६६।  
हुत हम अपराधिन करत दूर, व्है इष्ट तिसहिं सखव हजूर ॥

जिन किन्न अरज पच्छहु जाइ, तिन्हतर्जि साह दिय बध बताइ ६७।  
इत कहिय आइ मन्नी न एह, नृप इत निज तर्जें नीति नेह ॥

बाहर सु कहि बाहन बिहीन, लौ निजगन मन पन सरन लीन ६८।  
अक्खिय इक १ पहिले तोप वार, सहि पीछैं आरहिं निसित सार

चाहैं यह जीवन आरु चाहि, सोहैन रहै इम आसि समाहि ६९।  
पहिलैं तुम सखहु स्वामि पच्छैं, मारहु पुनि हम कहैं मिलि सखच्छ

अतिघोर अज्ज यह जवन अग्नि, जहैं को पंतंग हम जरन जग्नि  
पुनि यह उदंत गय साहपास, अति क्रुद्ध तबहु हंताहि आस ॥

सासन यह तीजो ३ घोर सोधि, बल्लमैं हुय हाहा भय प्रबोधि ७१।  
बहु साह सान्य तहैं दुव २ नवान, सिविरमैं थित जय १ बध २ गि-

नि हिसाव ॥

कुंदोस सिविरहिं कडत बेर, अक्खिय क्रुद्ध ठहरहु नहिं आवेर ७२।  
सन्नेन लाट तो रवोप मंग, आचरि मरि करियो जस उदंग ॥

तोपन अर्थ्ये कहु बुल्लित तत्थ, अरु अक्खिय ठहरहु बुल्लित अत्थ

१ कुंदोसियों के समूह को पास बुलाकर ॥ ६४ ॥ २ देख ३ नीति ॥ ६५ ॥

तुम्हारा सलाह ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ १ तोप वार ॥ ७० ॥ २ पक्ष ३ समूह

(सन्मुख) = आज ॥ ७० ॥ १ कुलान्त २० मारनेवाला ही बुद्धि ११ सेना में

॥ ७२ ॥ १२ हतों में स्थित १३ घेर के पास निकलते समय ॥ ७२ ॥ १४ अपने

मर्ग (मरने मारने) का १५ आचरण करके १६ तोपखाने के दारोगा को ॥ ७३ ॥



जोलौं हम विन्नति करहिं जाइ, भूमि तोलौं न करहु हुकम भाइ  
जंपिय सकोप तिन दुहुँ २ न जाइ, प्रभु गर्बहु तानक दु२ जय पाइ ७४  
दारा सो सत्रु रु उचित दायं, सो दूरभयो हिंदुन सहाय ॥

भगो सुजा ४०।२ हु तिन्ह त्रास भार, तिनको न हनहु गिनि अ-  
प्रतार ॥ ७५ ॥

प्रभुके पिता ३९।१ हु बैलि विद्यमान, दारा ४०।१।२ सुजा ४०।२।३  
हुं अरि नय निर्दान ॥

रिपुवै कढयोहि रहोरगज ४, अरिकरत अप्प या ५ कोहु आज ७६।  
हो भूप यहै प्रभुके हरोल, तस स्वामिधर्म जय विगत तोल ॥

पीछैं कबंध यह लूट पाइ, संगी किय कति खल फल सुनाइ ७७।  
बुंदीस दये तिनको बिडारि, जोदोइ देहु खल बंधि १ जारि २ ॥

हिंदुन भुव यह हुव अप्प हस्त, प्रतिकूल न वर्तहु तिन्ह प्रसस्त ॥  
है इह ६१।१ स्वामिहित करनहार, अप्पहु कछु जयफल हो उदार ॥

जसवंत जामिपहु सत्रुजानि, प्रभु स्वामिधर्म सेवत प्रमानि ॥ ७९ ॥  
देहो इनिबैको इहिं निदेस, अभिमत तब करिहै सरत एस ॥

प्रभुलौं बढिआवहिं जो प्रतारि, वैं तब अनिष्ट न सुरैं सु दारि ८०  
जो कढिहु जाइ तो बंधि जोर, ए द्वे २ हि रहैं प्रभु घातओर ॥

जो अल्पआयु मारयोहु जाइ, दुर्मन है तो सब मन दुराइ ८१ ॥  
विगैरैं सब हिंदुन प्रभु बिसास, अति दूर परैं तव राज्य आस ॥

तातैं जो मन्नहु स्वहित तुल्लि, बैल १ तोप २ न प्रत्युतैं खेहु बुल्लि ८२।

॥ ७४ ॥ १ इस दाराशिकोह का घंटा भी उचित था २ ठगने के वा ताड़ना के योग्य नहीं जानकर ॥ ७५ ॥ ३ फिर ४ नीति के शत्रु होने के कारण ॥ ७६ ॥ ५ लाभ ॥ ७७ ॥ ६ निकाल दिशे ७ उन श्रेष्ठों के प्रतिकूल न बनना ॥ ७८ ॥ ८ यहीन के पति को भी ॥ ७९ ॥ १० विशेष ताड़ना करके ॥ ८० ॥ ११ जोधपुर का राजा यशवंतसिंह और बुन्देला का राजा भाजसिंह ॥ ८१ ॥ १२ सेना १३ उलटी (पीछी) ॥ ८२ ॥

नहिँतो यह अवसर बलि बनै न, हजरत पछितैदो उचित हैं ॥  
हम मृत्यु हिताहित १ कहनहार, बलि प्रभु प्रमान जिहिँ तिहिँ  
बिचारं ॥ ८३ ॥

निस अंधकार अति जिहिँ अनेहँ, अकखी दुसनबावन अरज एह  
तिम सुनि भय संसय नैय तुलाइ, बल १ तोप २ निकैर साह सँ  
बुलाइ ॥ ८४ ॥

नृप कहँ बिसासि अकिखय निसैस, बंधन घरभेजहु फल विसैस  
बल १ तोप २ न जातहि मत बिचारि, नृपतैं खल लुंठक दिय  
निकारि ॥ ८५ ॥

अकिखय मैं आतहि बेर अत्थ, सब दंडि बिडारिय खलन सत्थ ॥  
वहै तो गहाइ लेहु ब हजूर, देसहु सन ते जन किन्न दूर ॥ ८६ ॥  
अवरंग ४०।३कुधानलतैं अधीस, रक्खयो हम दिष्टहिँ टारि रीस ॥  
जाफर १ साइस्तेखान २ जोट २, एहुव नबाब नृप कष्ट ओट ॥ ८७ ॥  
॥ दोहा ॥

इम बुंदीपति तैं अनख, निठि न साह निवारि ॥

कथित नबाबनके कहँ, धीरभयो हितधारि ॥ ८८ ॥

कछुदिन अंतर न्हानकरि, भाऊ १ ९५।१।१ अरु भगवंत १ ९५।३।२ ॥

भिन्न समय जावतभये, साहसभा बिलसंत ॥ ८९ ॥

करैरीक भगवंत १ ९५।३।३ को, सत्त ७ परगनाँ साह ॥

पै तिनमें इक बिघ्न परि, हे परतंत्र प्रबाह ॥ ९० ॥

चक्रसेन १ अभिधान चढि, सबरराँज अतिसूर ॥

॥ ८३ ॥ १ समय २ नीति ३ समूह ४ बादशाह ने उनको बुझवा लिये ॥ ८४ ॥

५ सम्पूर्ण ६ लूटनेवालों को ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ७ क्रोध की \* अग्नि से ८ भाग्य ने

॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ १ चक्रसेन नामक १० भीलों का राजा ॥ ९१ ॥

\* अग्नि शब्द पुलिङ्ग के परतु लोहित में गी रिक्त से प्रकृत किया जाना है अतएव दग्ने भी  
ही लिङ्ग लिखा है ॥

सहस्र पंच५००० भिल्लन सहित, पैठो तहँ बल पूर ॥ ९१ ॥

जावहिँ साह अनीकें जब, जो दुर्गम भजिजाइ ॥

आइबिसैं बनि ईस यह, पीछैं अवसर पाइ ॥ ९२ ॥

जत्र कुत्र तत्रत्यं जन, हुव हाकिम दुव रहेतु ॥

तत्थ रहैं इम तोरिबो, कठिन किरातन केतु ॥ ९३ ॥

पुर चाचुरनीशनाम पुनि, खत्ताखेरियरख्यात ॥

बिलसैं जो जुगथान बसि, सैवर परगनाँ सात ७ ॥ ९४ ॥

ते भगवंत १९५३ हिँ रीकतकि, सात ७ हिँ अप्पे साह ॥

कहयो चक्रधर हनि करहु, अप्प अमल रुचिराह ॥ ९५ ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीभूप-  
भावसिंहचरित्रे खजुवान्तिकसूजौरङ्गजेवरखाकरखा १, सूजावीरवार-  
खाघट्टनेनौरंगजेवारोह्यकरिपातन २, औरंगजेवपञ्चत्वभ्रमयोधपुरेश  
यशवन्तसिंहस्यौरंगजेवशिविरलुगटन ३, भावसिंहानुजभगवन्तसिं-  
हस्यौरंगजेवगजपातकयवनहनन ४, हड्डाधिराजभावसिंहसूजारोह्यग  
जाम्बव्ठमारखा ५, अश्वारूढसूजापलायनेन तत्सैन्यप्रपलायन ६, ए-  
तद्विजयहेत्वौरङ्गजेवभावसिंहप्रसत्तिलमययोधपुरेशयशवन्तसिंहस्यौ-

१ सेना ॥ ९२ ॥ २ वहाँ के लोग ३ दोनों कारणों से ४ तहां ५ भीलों की  
ध्वजा ॥ ९३ ॥ ६ भील ॥ ९४ ॥ ७ चक्रसेन नामक भील को ॥ ९५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
भावसिंह के चरित्र में खजुवा के पाल सूजा और औरंगजेव का युद्ध होना १  
सूजा के एक वीर का अपने हाथी की टक्कर दिलाकर औरंगजेव की सवारी  
के हाथी को गिराना २ औरंगजेव को सरासुआ जानकर जोधपुर के राजा य-  
शवन्तसिंह का औरंगजेव के डेरों को लूटना ३ औरंगजेव के हाथी के टक्कर  
लगानेवाले यवन को भाऊसिंह के छोटे भाई भगवन्तसिंह का मारना ४ ह-  
ड्डाधिराज भाऊ का सूजा की सवारी के हाथी के महायत्न को मारना ५ सू-  
जा के घोड़े सवार होकर भागने के कारण सूजा की फौज का भागना ६ इस  
विजय के कारण औरंगजेव का भाऊ पर प्रलय होने के समय जोधपुर के रा-  
जा यशवन्तसिंह का औरंगजेव के जनाने आदि लूटने के समय बुन्दी के लो-

रङ्गजेवावरोधलुखटनखुन्दीभटसहायकरणासूचनप्राप्त्या भावसिंहो-  
पर्यौरङ्गजेवसैन्यप्रेषणा ७, जाफरखांशाइस्तखांनामयवनद्वयनिवेदन  
क्षान्तभावसिंहापराधनीरुजभगवन्तसिंहप्रान्तसप्तकप्रदानं चतुर्थो  
मयूखः ॥ ४ ॥

आदित एकत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३१ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जसवंतहु इत जाइकैं, प्रथम कर्मवति १९५। पास ॥

मुच्छ करंखि हड्डीमहत, अधिक बिकैथन आस ॥ १ ॥

अकिखय जिहिं आतंकतैं, मोकहूँ भग्गो मानि ॥

उज्जइनीतैं आवतहि, तैंहु नर्मकिय तानि ॥ २ ॥

भय ताकै जो मैं भज्यो, तो बँ तसहि जव जुद्धि ॥

मुच्छ १ रु नासार् छिन्नि मैं, लायो किम बँसु लुद्धि ॥ ३ ॥

आनैं तस अवरोधकै, हरम जनन हारादि ॥

ए धारहु तुम आभरन, छँमपन संसय छादि ॥ ४ ॥

कर्मवती १९५।रानी कही, जहँ हड्डी करजोरि ॥

सूरहि प्रभुलाये सदन, वसु लखि छिद्र बहोरि ॥ ५ ॥

पतिके देतहु नलियपुनि, बासकैं करन बिलास ॥

जथा कुपित जसवंतको, तथा सखी सवलास ॥ ६ ॥

लिपि पत्रन पावत लिखित, भाऊ १९५।१ नृप भगिनी सु ॥

गों का यशवन्तसिंह की सहायता करने की सूचना पाने के कारण औरंगजेब  
का अपसन्न होकर भाऊ पर जेना भेजना ७ जाफरखां और जाइस्तखां दोनों  
नवाबों के निवेदन करने से आज्ञासिंह का अपराध क्षमा करके भगवन्तसिंह  
के नैरोग्य होने पर उसको स्वतः परगने मिलने का आधा ४ मयूख समाप्त हु-  
आ ॥ और आदि से २३१ समाप्त हुए ॥

१ हाडी रानी २ मुछ खाँचकर ३ कहता हुआ ॥ १ ॥ ४ दूरी ॥ ५ छब  
६ धन ॥ ७ ॥ ७ जनाने के ८ हार आदि प्रपञ्च ९ समर्थ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १० अपन

सुलतान सुहृद्मदका सुजासे मिलना] सप्तमराशि-पंचममयूख (२७७१)

रमन बिरत अबिरत रही, गृहसुख रति न गिनी सु ॥ ७ ॥

प्राची१दिस भो प्रद्वित, भीरु सुजा ४०।२ इत भजि ॥

बंधनलग्गो बहुरि बल, सा लोभित भट सजि ॥ ८ ॥

॥ पटपात ॥

तापर पठयो तनय मुख्य१ सुलतानसुहृद्मद ४१।२ ॥

भाऊ१२५।१ बुंदियभूष दयो तससंग दुरासंद ॥

कुमर राम१।२ अरु किर्तिसिंह२।३ कूरमनृपकरे ॥

नृपति गोड अनिरुद्ध४ प्रंगुन अर्थंजपर प्रेरे ॥

पुनि जगतसिंह१६५।१।५ कोटापतिहु संगहि भोजि सुकुंद१६४।२  
सुत ॥

सबतैहि कहिय पकरहु१सुजा४०।२हेति" अनल कै रहहु हुँत९

पुत्रसंग इन्ह प्रमुख अयुत अष्टक८०००० दल दिन्नो ॥

साहसुतहु बढि सविध कथित काका बल किन्नो ॥

सुता सुजा४०।२ की सुनत एह चिरैतैं हो इच्छित ॥

सुजा४०।२ सु जानत सहज तास सुहिपासै रच्यो तित ॥

पठई भतीज कहिकहि पिहितै अनुजपुत्र तुम मुख्य१ उत ॥

जामातैं होहु जुवराज जिमै प्रिया आय व्याहहु प्रनुत ॥ १० ॥

यह न लखैजिम इतर अप्प छनै कहि आवहु ॥

कारि निँकाह आतहि कैंनी सु पैतनी प्रिय पावहु ॥

बार में ॥ ५ ॥ १ पति से विरक्त होकर २ निरन्तर ३ प्रीति ॥ ७ ॥ ४ पूज  
दिशा को ५ भाग ६ लना ॥ ८ ॥ ७ दुष्प्राप्य अथवा दुर्घट " यह बुन्दी  
के राजा का विशेष है" ८ कीर्तिसिंह ९ विशेष गुणवाले १० बड़े भाई  
सुजा पर ११ राजा स्वर्ण अग्नि में १२ होय होकर रहा ॥ ९ ॥ १३ आदि १४ बहू-  
त समय से चाहता था १५ सुलतान सुहृद्मद सुजा की पुत्री के पाल राच र-  
हा था १६ पुत्र १७ पाटवी १८ जमाई १९ युवराज की आति अर्थात् औरंग-  
जेब को कैद करके तुम युवराज होकर वहाँ आकर २० विशेष स्तुति योग्य  
प्रिया से विवाह करो ॥ १० ॥ २१ अन्य नहीं देखे ऐसे २२ यावनी भाषा का  
विवाह याची शब्द है २३ कन्या का २४ स्त्री

हम सहाय इत होइ जनक<sup>१</sup> करि तास जनक<sup>२</sup> जिम ॥  
 दिल्ली बिलसहु दुलभ करहु संदेह अथ किम ॥  
 जामात मारि जो मैं जैरठ कनी रुचिर विधवा करौ ॥  
 तुम<sup>३</sup> नर<sup>४</sup> मिलाप रँव सखिख तब पलटि कोल दोजखपरौ ॥११॥  
 काका लिपि यह कुमर कलिंत निर्जन गोचर करि ॥  
 अंतरंग निज अनुग भावबोधन लोभी भरि ॥  
 काका पुव्वहि कुटिल जेहु कुट्टे जर जुतिन ॥  
 ते बुल्ले कटि त्वरित निटिल निज मंडहु सुतिन ॥  
 बिस्वस्त भेजि काका बहुरि जिम बुल्ले तिम चलहु जँह ॥  
 करिजेर बप्प तस बँप्प क्रम तुम बिलसहु नव रूच्य तँह ॥१२॥  
 लुब्ध सु लुब्धन लपित मन्नि सुलतान सुहुम्मद<sup>४</sup> ११२ ॥  
 छोरि जनक बँलछिद्र पाइ निकस्यो अघ<sup>५</sup> छलरपद ॥  
 बुल्ल्यो जो बिस्वस्त सुजा<sup>६</sup> ४०१२ भेज्यो सुहि तालह ॥  
 काकाप्रति कतिकाम मिल्यो इक सु व्याहन<sup>७</sup> सँह ॥  
 कुमरहि न विखिख इत तँह कट<sup>८</sup> क पठई सुहि लिखि साह प्रति ॥  
 अवरंग<sup>९</sup> ४११३ लिखिय रहियो उतहि मग अहे तुम रोध<sup>१०</sup> मति ॥१३॥  
 इम लहि हुकम अनीक रहिय तत्थहि मग रोधक ॥  
 काका सन इत कुमर विदेवनि मिलिय कुबोधक ॥

१ तुम्हारे पिता और नज्ब का उल्लेख पिता जाहजहाँ के समान कैद करके  
 २ तुम ३ तुम्हरे कन्या को ४ नरक में पहुँचा ॥११॥ ५ विदित  
 अथवा प्राप्त ६ पक्षान्त में देवदार ७ जामनी ८ जोकर ९ अभिप्राय जानने के  
 लिये १० लगाव सोनियों ने रचो चर्चा सोनियों के अजन चढ़ाया "निदि-  
 त जाहजहाँ का कर्म दण्डालार चरित्र की टीका में प्रमाण साहित्य लताए लिये  
 है" १२ भरोसे के सुनो का १३ हमके पिता (शाहजहाँ) के क्रम में १४ तमीन  
 हुसैन ॥ १२ ॥ १५ जम जोनी ने सोनियों के कहने को मानकर १६ पिता  
 (और नज्ब) की सेना को छोड़कर १७ व्याह करने के उन्हाह में १८ सेना ने  
 कुमर को मारि देवदार १९ रोकने की सुझि में ॥ १३ ॥ २० सेना २१ दुलह  
 २२ दुर्ग लताएवाला

स्वसुता तत्थ सुजा४०।२सु भेट किय व्याहि भतीजहिं ॥  
अति तामैं आसकत बन्यो मन्नि सु सुख बीजहिं ॥  
अवरंग४०।३पटकि कछु पेच इतकुमर१आत२बिच द्रोहकरि ॥  
कछु मिस बुलाइ गहि सो कुमर अटकयो गढग्वालेर अरि१४  
॥ अष्टपात् ॥

जैरा अवधि रहि जत्थ मरहिं सुलतान मुहुम्मद४१।१॥  
तिम मुराद४०।४काकाहु तास सहपुत्र१सभासद२ ॥  
इत बिजई अवरंग४०।३प्रबल आयो दिल्लीपुर ॥  
लरिहौं कछुक बिलंबि आइ यह मंत्र सुजा४०।२उर ॥  
सो कुटुंब बलसहित तबहिं दिल्लिय सीमातजि ॥  
छलवध संकित छभहु भीरुदिस पुब्व१गुयो भजि ॥  
सो साहसुजा४०।२बिस्वाससह अराकान पुरके अधिप ॥  
सकुटंब हन्यो पापी सहज भरि अघ भर निजदेह निपा१५।

॥ घनाक्षरी ॥

बर्मा की विलायतके पच्छिम३।४प्रदेस माहिं,  
इंद्रओरि१अप्पनतैं अराकान नाम पुर ॥  
तामैं राज्य करत नरेस कोऊ तासमय,  
ता बिसासघातीनैं धिजोइ दैदैं धिज्ज छुर ॥  
सोहैंदैं सहाय मै रु बिजय बिभागी बनि,  
इच्छत कृतघ्न अवरंग४०।३को प्रसाद उर ॥  
भूलिधीज्यो भोरां जो सुजा४०।२ सो सकुटुंब मारयो,  
छत्रघात कीनों बँदा मनके महानिदुर ॥ १६ ॥  
रोधैंक सुजा ४०।२के मगमैं जो बँल राख्यो साह,

१ अपनी पुत्री २ कारण ॥ १४ ॥ ३ वृद्धावस्था पर्यन्त ४ पुत्र सहित ५ विलम्ब  
करके ६ सलाह ७ सेना सहित ८ छल घात से ९ अपने शरीर रूपी कलश  
को पाप के भार से भरकर ॥ १५ ॥ १० ईशान कोण में ११ प्रसन्नता १२ छल  
॥ १६ ॥ १३ रोकनेवाली १४ सेना

सो अब बुलाइ भेजे सीख दै स्वयं घर ॥

जान्यों जसवंत जोधपुरके नरस इत,

देह<sup>१</sup> परयो दुर्लभ तो पुहवी बिदूरपर ॥

आलोचत असें स्वयंभटन समेत गहि,

दारा<sup>४०१२</sup> काँ धिजौइ सौंपिदेबो जानि श्रेयतर ॥

दारा<sup>४०१२</sup> नै दुखेरे जो बचायो आगैं तातैं वह,

धीजतहो ताहि सोहि भेज्यो भाटीबंस भैर ॥ १७ ॥

ताके संग ओरहु कृतघ्न भट आपुनैं ते,

भेजि रु कहाइ हमहैं ब अवरंग<sup>४०१३</sup> अरि ॥

नीतिहूसौं निधत तुमारोही तखत यातैं,

कीजै पातसाही आप हमहिं वजीर करि ॥

चोर अवरंग<sup>४०१३</sup> हाहा स्वामीके तखत चढ्यो,

ताहि गहि लेहौं मैं महामृध मैं मारिमरि ॥

बीच हरि<sup>१</sup> गंगा<sup>२</sup> दै बुलावत हजूर हमैं,

पीछैं पछितैहो आज संसय प्रवाह परि ॥ १८ ॥

ज्योंही इन हाहा जाइ दुष्टन मिलाइ दारा<sup>४०१२</sup>,

किंतवन त्योंही भरे कपटके बैन कहि ॥

दावपेच विरचि लपेटलीनों दारा<sup>४०१२</sup> यातैं,

कौल जोजो कीनीं सो लिखाइ चढ्यो संगचहि ॥

जोधपुर आयो जो सैतबूके समीप सैन,

दिल्लीपति आदर बढाइ आन्यों, छैद्य बहि ॥

मैना<sup>१</sup> मेर<sup>२</sup> व्याध<sup>३</sup> रु पुलिंद<sup>४</sup>न मुखर मेलि,

१ दिवार करते हुए २ अपने वीरों सहित ३ विश्वास देकर ४ बहुत श्रेष्ठ  
५ भड़ (वीर) " गोविन्ददास आदी " को ॥ १७ ॥ ६ जब ७ निश्चय ८ युद्ध  
में ९ संदेह के ॥ १८ ॥ १० ठगों ने ११ नदी का नाम है १२ से १३ छल करके  
१४ भील १५ नीचाँ (अप्रिय गोलनेवालों) को मिलाकर



चक्र च्यारिअयुत४०००० दिखायो निज रेफ रहि ॥१९॥

दारा ४०११ कहुं संग तहाँ जुरिगो कितोक दल,

तासहित ताकाँलौ कबंधज प्रयानकिय ॥

दिल्लीढिग आवत अनीक इतकोहु सज्जि,

अभिमुख आत भीरु प्यारिनके प्रानप्रिय ॥

मंत्रमिस दावमैं लै दारा४०११ अतिसीम दुष्ट,

देखत गहाइ दग लज्जाको न लेसलिय ॥

दिल्लीपुर आइ पठवाइ कैद दारा ४०११ जोरि,

कहाई सु बत यह लैकैं देहु दास जिय ॥ २० ॥

साह जसवंतसौं तो कहु न कहाइ ताहि,

मारनके मंत्र निजफोज चढिवो निवारि ॥

अंतिक बुलाइ दारा४०११ पूछयो अवरंग४०१३ हमको,

जो गहते तो कहाकरते तब निहारि ॥

दारा४०११ कह्यो तेरोकंठ कर्तन कराते हम,

अवरंग४०१३ कह्यो कैसी हमैंकरिवो विचारि ॥

दारा४०११ कह्यो जोहि करते हम करो तुम सो,

सो सुनि हुनन भेज्यो बीजैं इकहू बिसारि ॥२१॥

जवन भरोसाको बहादुरखानाम जानि,

भाख्यो अवरंग४०१३ कंठदारा४०११के छुरीकरहु ॥

दारा४०११कों लिवाइ तिहिं बारह१२ पुलन आइ,

१ मेना २ ऊपर रहकर अर्थात् रेफ, अक्षर के ऊपर रहता है इसप्रकार मचके ऊपर रहकर; अथवा उस अक्षर ने अपने को दारा को निज का दिखाया ॥१९॥ ३ राठोड़ ने ४ सन्मुख ५ कायर ६ छियों के प्रार्थों के प्यारे ७ सलाह करने के मिस से ॥ २० ॥ ८ दाराजिकोह को.जारने की सलाह से जो फौज की बहाई होती थी वह रोक दी ९ समीप १० कंठ कटवाना ११ अब हम को क्या करना चाहिये १२ एक बीर से उत्पन्न हुये थे सो भूलकर ॥ २१ ॥

भाख्यो करिलेहु कैरतव्य जिय जो धरहु ॥  
 गुंसल<sup>१</sup> निमाज<sup>२</sup> करि दारा<sup>४०१</sup> कछुकाल कहि,  
 पढत कुरान<sup>३</sup> कह्यो क्यौं बै चिर आचरहु ॥  
 सो सुनि कुरानकी किताबकी बहादुरके,  
 उरमें दई रु कह्यो पापी पापमें भरहु ॥ २२ ॥  
 लै वह किताब कलामुल्लाकी बहादुरनै,  
 बैठि उर दारा<sup>४०१</sup> को बिदारयो कंठ बीर बनि ॥  
 पुस्तक कितेकनमें पावत यहहु लेख,  
 नभतैं प्रसून उहाँ बरसे बितान तनि ॥  
 जोधपुरभूप जसवंत मुख धूरिडारि,  
 प्रचुर प्रजानै हाहा धिकधिक भूरि भनि ॥  
 जानि धूर्त कातर बिडारयो अवरंग<sup>४०३</sup> जाहि,  
 फलहि मिल्यो न नाँकदैकैं अपसौंन जनि ॥ २३ ॥  
 श्रीनगर भूपतिके सरन सलेम<sup>४११</sup> हुतो,  
 दारा<sup>४०१</sup>को तनूज अहो बिपुल बिसास लहि ॥  
 माख्यो सुनि दारा<sup>४०१</sup>को कृतघ्ननै कपटमंडि,  
 सो गहि सलेम<sup>४११</sup> भेज्यो सोपै रह्यो कैद सहि ॥  
 रोकि<sup>१</sup> जनका<sup>१</sup>दिक सुजा<sup>२</sup>दिक भराइ<sup>२</sup> इत,  
 दारा<sup>३</sup>दिक मारि<sup>३</sup>अकंटक अवरंग<sup>४०३</sup> रहि ॥  
 दारा<sup>४०१</sup>की सुता निज तृतीय<sup>३</sup>सुत आजम<sup>४१३</sup>को,  
 दीनी तास ओरहु जो भात हैतो कैद कहि ॥ २४ ॥  
 सेना जो सुजादिसँ ही ताके सब भूप सहि,

१ करना होवे सो करलो २ अप विलम्ब क्यौं करते हो ॥ २२ ॥ ३ आकाश से  
 ४ पुष्प ५ विशेष फैलकर ६ बहुत ७ बहुत ८ कायर ९ निकाला १० नासिका  
 देकर अपशब्द देने का ॥ २३ ॥ ११ दारा का पुत्र १२ पिता आदि को ॥ २४ ॥  
 १३ सुजा की ओर थी

औरंगजेबका भगवंतको राज पद देन । सप्तमराशि-पंचममयूख (१७८५)

गेहन पठाये तब भाऊ १९५१ को अनुज गो न ॥  
पंचमासपीछें भगवंत १९५३ चढ़ि सीख भाख्यो,  
भेट गुप्तदैकें जाइ जाफरनुबाव भोन ॥  
बुंदीको वरव्वर बढायो बैलुधादे मोहि,  
पै नपायो भूपपद सो अब सफल होन ॥  
ईष्ट उपदा दे अवलोक आप मानें यातें,  
करहु सहाय इहाँ आपसो इतर कोन ॥ २५ ॥  
सोही खान जाफर नबाबहु निवेदि,  
अत्ररंग ४०३ तें दिवायो भगवंत १९५३ काजें रावपद ॥  
पीछें लहि सीख मऊ पत्तन यहहु आइ,  
मर्तुलकों मारि वहाँ दिखावतभो राजपद ॥  
कल्यानकनाम जो ककोरको नरुकी सुत,  
चंद्रभानुको सो हो अमात्य लउदंग-हद ॥  
प्रीति १ ताकी भाऊसोंहि १९५१ पिहित प्रमानि,  
पकराइ कछु पत्र २ सु हन्याँ यों गेरि कोप गंद ॥ २६ ॥  
भाऊ १९५१ भूमिपाल इत बुंदी भूत भीम १९५२ सुत,  
कृष्ण १९६१ मान्यों कुमरसता १६४१ सो स्वान्त सत्यकरि ॥  
कुमरपनेगें मुख्य कापरनि १ पत्तनसों,  
सहस्रपचीस २५००० को पटा दिय सनेह भरि ॥  
जौम यह बुंदीकी मैही न बटिजाति तोतो,  
पावतो कुमार पटा द्वि २ युन २५००० ध्रुवत्व धरि ॥  
तोहू धर्मधार पुत्र पट्टप प्रपनि ताकों,  
बैभव बढाइ कीनों विदित इतो विर्तरि ॥ २७ ॥

१ भाऊ का छोटा भाई भगवन्तासिंह नहीं गया २ भूमि देकर ३ राजा  
की पदवी ४ बांझिम नजराणा देकर ५ आधार ॥ २५ ॥ ६ अर्ज करके ७ पुर  
८ मामा को ९ छिपी हुई १० कोष स्वर्ण रोग लाकर ॥ २६ ॥ ११ जन में १२  
जहाँ १३ भूमि १४ निश्चय ही १५ पाटली १६ देकर ॥ २७ ॥

इत भगवंत<sup>१</sup> १९५<sup>३</sup> मऊपत्तन अधीस होइ,  
 भाऊ<sup>१</sup> १९५<sup>१</sup> सौ बिरोध कोटि अधिक तुलापै आनि ॥  
 बुंदीके समान सब बेभव बनाइ गज<sup>१</sup>,  
 बाजि<sup>२</sup> छत्र<sup>३</sup> चामर<sup>४</sup> चलाये मद<sup>१</sup> मोद<sup>२</sup> मानि ॥  
 पीछ खिन पाइ<sup>३</sup> पृतना निज सकल सज्जि,  
 चाचुरनी<sup>१</sup> खाताखेरी<sup>२</sup> जाइ भो अवनिजा<sup>३</sup> नि ॥  
 चक्रसेन सबैर बिडारयो जीति चोरैखेत,  
 परगनां सात<sup>७</sup>हि तहाँके करे स्वीयपानि ॥ २८ ॥  
 चाचुरनी<sup>१</sup> चालुक हरी<sup>२</sup> कौ राखि हाकिम रु,  
 सोमानी बनिक राम<sup>२</sup> खाताखेरी<sup>२</sup> रूपातकरि ॥  
 अच्छी च्यारिसहंस<sup>४०००</sup> चर्म हौं इन्हपास राखि,  
 आयो मऊ आप भिल्ल गंजनके दंर्पभरि ॥  
 सोपै ताहि हौयनके सावनमें आइ सूर,  
<sup>१२</sup>पैने पंचसहंस<sup>५०००</sup> पुलिंदनको जाल जरि ॥  
 गोर्गेन गिराइ परमाँहि तँनु पाइ खाता-  
 खेरी<sup>१</sup> १<sup>२</sup> गरदाई<sup>३</sup> जुरयो जमकी जलूस धरि ॥ २९ ॥  
 जाकहँ न आतो जानि मेघागमँ सोद मनि,  
 घरने घने भट गयेहे सुख सिक्ख लहि ॥  
 सोही छिदपाइ चक्रसेन इम आइ मेह,  
 गोलीन मचाइ दुर्ग कीनों रुद्ध दौव दहि ॥  
 वरखा प्रसौद असनौदि उपहार बीति,

१समय पाकर २ सेना ३ सब ४भूपति हुआ ५चक्रसेन नामक भील को ६नि  
 काला ७ अपने हाथ में किये ॥ २८ ॥ ८ प्रसिद्ध ९ सेना १० भील को दबाने  
 के घमंड में भरकर ११ उसी सम्बत् के १२ तीक्ष्ण १३ भीलों का समूह १४  
 गजओं के समूह को गिराकर और फिले में १५ थोड़े शत्रु पाकर १६ घेर कर  
 ॥ २६ ॥ १७ वर्षों के भागम का आनंद मानकर १८ अपने अपने घरों को १९  
 वर्षा २० अग्नि से जलाकर २१ मेघ की प्रसन्नता के दान से अर्थात् अत्यन्त  
 वर्षा होने से २२ भोजन आदि २३ सामग्री बीतने से

माँहिके सिपाह भये व्याकुल विपत्ति वहि ॥  
 अप्पन सहाय मंग्यो तबहु मऊतैं दैसक्यो,  
 न भगवंत१९५।३ सोपै रुद्ध कछु\*देतु रहि ॥ ३० ॥  
 दुर्गके प्रवीरनकाँ खाताखेरी१।२ तीन३दिन,  
 असनबिहीन जात निखिलन व्है निरास ॥  
 माँग्यो धर्महार द्वारि सबरसिरोमनिसोह,  
 तानैं जय जानिकैं इन्हैंहु दयो अवकास ॥  
 हरि१अरु राम२देरहि ए तब उहाँहे पहुँचे,  
 ते सब संगले सिटायै भगवंत१९५।३पास ॥  
 धिक्करि न चहि भगवंत१९५।५वहाँ दुर्दुर्न भाख्यो,  
 असन न अप्पि अहो अब यह कोप आस ॥ ३१ ॥  
 मास इक१लौ तो भूँज्यौ अन्नहु कठिन मिल्यो,  
 पाउसमैं तोहू पंचसहस५०००रुकाइ पर ॥  
 जिम तिम जुइ छम संधाते नछुट्टे के,  
 किरातगन कुट्टे देखि लज्जा१जाति२स्वामि दर३ ॥  
 भोजनको गंध जब त्रि३दिन न भाख्यो तब,  
 फोजनको आख्यो फैल खोजनको गैल खैर ॥  
 स्वामी अब नाहकहीं विमन बनें तो कट्टि,  
 कट्टहु कृपान गँदि यौ रु कीनैं अगग गैर ॥ ३२ ॥  
 निर्बचन व्हैकैं तब आगसँ निवारि पीछैं,  
 पाउसकै अंत भगवंत१९५।३सजि सेना भूरि ॥  
 प्रबल पुलिंद चक्रसेनपै चलाइ ताकाँ,

\*कारण॥३०॥ भोजन बिना असब श्रीलों के राजा से अधिकार देकर भोजन नहीं देकर १हुआ ॥३१॥ ४गुंडा भागी आदि हुना हुआ अन्न ५वर्षा में ६श-  
 वरों को ७ समर्थ प्रतिज्ञा से ८ श्रीलों के समूह से ९ स्वामी के भय से १०  
 आस दिया हुआ ११ तीक्ष्ण मार्ग १२ उदास १३ खड्ग १४ यों कहकर १५ कंठ  
 आगे लिये ॥ ३२ ॥ १३ चुप होकर १४ अपराध १५ चढ़न १६ भील २० भीलों

बहुरि विडारि खाताखेरी १।२लाई पनपूरि ॥  
 साहनैहु काऊकाम तासमै \*समरसाध्य,  
 सोंप्यो भगवंत १९५।३हिं सुधारि सु समरखूरि ॥  
 दिल्लीके अधीन देस १दुर्ग २जो बिरचि बीर,  
 आयो मऊ बैरिनको चंड चतुरंग चूरि ॥ ३३ ॥  
 ताकों तिहिं रीझपैं बहादुरी बखसि पंच,  
 लाख ५०००००के पटासों दीनों गूगोरक १नाम दंग ॥  
 साहसों इतोक अब पावतं अतिक अति,  
 सीमपन पायो दर्पछायो भगवंत १९५।३ अंग,  
 भाऊ १९५।१सों १भनाई आजलों तो तुल्य अप्पहे बं,  
 साहदों बढायो सब सुनसब १ देस संग,  
 बुंदीके घरानैमाहिं मैं अब बढो यों आइ,  
 मुजराकरहु मोहि पहिलैं विनय बंग ॥ ३४ ॥  
 भाई भगवंत १९५।३बीरपन १मैं बढयो त्यों धर्म १,  
 धारि मद ३मारतो तो भासतो ज्यों धर्म १मनि २ ॥  
 पै इम अहंपदके पत्रहिं पठात भनी,  
 निर्जनतैं भाऊ १९५।१चलो विलासैं विनम्रबनि ॥  
 पंचन प्रबोध्यो अवरंग ४०।३की महर वापैं,  
 एक १घर बाढयो द्रोह दैहैं अपकिलि तनि ॥  
 राज्य इत अनुज जमायो भलीरोति बैठे,  
 आनिके मऊमें बडेसेठ रूपापतेय खनि ॥ ३५ ॥

के राजा का नाम है \* युद्ध से सिद्ध होनेवाला कार्य १ अयंकर सेना का  
 चूर्ण करके ॥ ३३ ॥ १ प्रशंसा युक्त; अथवा अधिक पाकर बढप्पन पाया १  
 कहाई १ अथ २ देश के साथ ३ नम्रता के व्यंग्य से; अथवा सरतक झुकाकर  
 (झुकाकर मुजरा करने में और प्रथम मुजरा करने में व्यंग्य रूप नम्रता सिद्ध  
 होती है) ॥ ३४ ॥ ४ अपने लोगों से ५ विशेष नम्र होकर ६ समझाया ७ अप-  
 कीर्ति फैलावेगा ८ धन की ९ खान ॥ ३५ ॥

बुंदीसों बढयो यों सुतबैभव बिचारि बुंदी,  
 माता भगवंत१९५।३की हुती सो आनि मानमति ॥  
 नाम नित्यकुमारि१९४।४ककोरकी नरूकी भेदि,  
 पतिके परिग्रहके लोकहु कटाइकति ॥  
 सोचि अब बुंदीहै मऊकैबस यातैं सब,  
 चाहो स्वामि सेवन बलो तो इस गूढगति ॥  
 पाटनके न्दानके बहानैसों निकसि प्रैसू,  
 लोक बहु लैकैं पहुँची यों मऊ पुत्रप्रति ॥ ३६ ॥  
 संबत प्रमान अष्टि सत्रह१७१६समय यहै,  
 यों पति सता१९४।१के घर ईरखा१असूया२आनि ॥  
 सासु१नके सोति२नके जेठ३देवर४नके प्रभूत,  
 पलटाइ जन पुत्रकों महत मानि ॥  
 धावर१धइत्री२दास३दासी४बलि बैतनिक५,  
 मौल६मनुजादिक के लैगई जो लोभी ठानि ॥  
 रीति गनिकाकी रजपूतहु कितेक गये,  
 संग१ रु कितेक जुदे२ जाकों बरजोर जानि ॥ ३७ ॥  
 जीविका मऊवस ही जिनकी कितेक जेहू,  
 जाइभये तंत्र सनमानैं ते समस्तजन ॥  
 स्वासी सुनो स्वीयं कविकुलको कुलीन कोऊ,  
 तबहु गया न मानि कोटाको प्रैसाद मन ॥  
 वृत्तिधर जे गये पुरोहित२ प्रमुख बंस,  
 बाँधि गज१ बाजी२ तिन्ह बाँर भरे धाम धन ॥  
 इनकों सुवर्ण तारैं पात्रहु अखिल दैकैं,  
 बुंदीपैं कटाक्ष कीनों ईरखा अमंदपन ॥ ३८ ॥

१अङ्कार की बुद्धि सेरद्धिपाकर३माता ॥३६॥ ४सहित५यदा ६तनखा पानेवाळे  
 सबक ७मनुष्य आदि ॥३७॥ ८आधीन ९हे स्वामी रामसिंह १०आप के कवि  
 (सूर्यमल्ल)के कुल की ११प्रसन्नता १२आदि १३द्वार समय १४चाँदी के ॥ ३८ ॥

भाटहु करोडिया चतुर्भुज धनिक भयो,  
 याकों दये जानैं तहाँ अधिक बतीस ३२ बीति ॥  
 मातुलको मारिबो प्रबंधन लिखित पायो,  
 भाट यह कारन बतायो तामैं तजि भीति ॥  
 गुरैरकों गुरुइ गिनी सो राजधानी राखि सब,  
 छक पाइ राज्य बिलस्या रमनरीति ॥  
 जहाँजहाँ साहनें पठायो तहाँतहाँ जाइ,  
 हत्यन बिकथन दिखाइ सुरयो जंगजीति ॥ ३९ ॥  
 इनही दिन १ न कछू पीछें २ पहिले ३ वा ईतर,  
 बुंदेलन भूमैं ब्रजभाषाकवि विप्र तीन ३ ॥  
 जेठो १ भात भूखन १ रु मध्य २ मतिराम २ तीजो ३,  
 चिंतामनि ३ विदित भये ए कविता प्रबीन ॥  
 किंबदंती औसी कर्णपावतहे राम २० ३।४ प्रभु,  
 भूखनकी भामो कहों पीछें लिखि तुंग पीन ॥  
 होंसैं गजबांधवेकी निर्भसि हृदय हेरि,  
 भारुयो किम राखैं भिँछु दारिद लघुत्व लीन ॥ ४० ॥  
 जेठो १ यहजानि वा सुमति मतिराम २ मानि,  
 अग्रज प्रबोधि प्रजावैतीको दुखितपाइ ॥  
 जेठो १ गोसितारा सिवराजको सुजसजानि,  
 मध्य २ आयो बुंदी रीक भाऊ १९५।१ की गुरु गिनाइ ॥  
 चिंतामनि ३ विचरयो समीपके रसेसनमें,

१ करोडिया जाति का भाट २ धनवान् हुआ ३ घोड़े ४ मामा का मारना ५ ग्रन्थों में  
 लिखा हुआ मिला ६ भारी ७ पति की भाँति ८ हाथों के विशेष कथन के  
 साथ अर्थात् बाहुबल दिखाकर ॥ ३९ ॥ ९ अन्य समय में १० दंतकथा ११  
 भूषन कवि की स्त्री ने १२ जंघा और पुष्ट हाथी देखकर १३ चाह १४ निश्चा-  
 स बालकर १५ मिलाऊ होकर दरिद्र से छोटे पन में लीन होकर हैं ॥ ४० ॥ १६  
 बड़े भाई को समझाया १७ भोजाई को १८ यही १९ राजाओं में



लाये सब बारन बिसेसक्रमतें बढाइ ॥  
 लहुरो३ नजानिये कितेक करी लायो मति-  
 राम२ इत आयो त्यों रिझायो भूप गुन गाइ ॥ ४१ ॥  
 भाऊ१९५१ को प्रभाव अलंकारन विषय आनि,  
 नूतन बनाइ ग्रंथ ललितललाम१ नाम ॥  
 संसंदकों पाइ सो नरेसन सुनाइ रुचि,  
 रीझपैं बढाइ कह्यो आगम जितेक काम ॥  
 सब पट१भूखन२रु वारन३वर्त्तीस३२कहैं,  
 बाईस२२हु कति रु दये चउसहँस४०००दाम४ ॥  
 गेहहि इत गज निर्बाहन बहुरि दये,  
 पाटनिके प्रांतके रिरा१रु चिरा२दुव२गाम५ ॥ ४२ ॥  
 भाऊ१९५१भूमिपाल अभिलाप मतिराम२को यों,  
 कूरन विरचि भेद्यो जगती जगाइ जस ॥  
 भान भान ललितललाम१हु विदित भयो,  
 पढन१पढावन२में सुकविन रम्यरस ॥  
 बुंध मतिराम२भगवंत१९५३हु बुलायो सो,  
 गयो न गिनि गर्व वीखिं बुंदीसों विरोधवस ॥  
 जेठो१गो सितारा जहँ वनमें सिकारीबेस,  
 अस्ववार एक१सिवराज२आयो दिठि तस ॥ ४३ ॥  
 पूछ्यो को१कह्यो मैं कवि२राजाकों रिझाइ ईभ,  
 भूरि लैन आयो कहो कौन तुम प्रश्नकार ॥  
 सेवक समीपी छत्रपतिको छितिपै भाख्यो,  
 मोहि पै सुनावहु सो अनुकंपा अनुसार ॥

बाकों तब भूखन१मनोहर सुनायो एक१,  
 जेप्यो करजोरि जिहिं ओरहु कहो उदार ॥  
 छन्ननृपकों इम सुनावत कतिकछंद,  
 घाँघाँतैं घुमंडि मिले सेनाके विविध वार ॥ ४४ ॥  
 प्रभु पहिचानि कवि बावन५२प्रमित पद्य,  
 हे जब उपस्थित सुनाये ते सुदित होइ ॥  
 कहत कितेक आयो एकाकी१सिकार तानै,  
 बावन५२सुने यो छंत नम्रबनि गोत्रगोइ ॥  
 किमहु उदंते होहु पै इम सितारा कवि,  
 आनि सनमानि दैकैं द्विद१पचासदोइ५२ ॥  
 ग्राम२धाम३दाम४पट५भूखन६उचित अप्पि,  
 रूपातकैनों भूखन सु दूखन दगिद खोइ ॥ ४५ ॥  
 बावन५२सुनाये कवि बनमें नृपहिं छत,  
 तादीमिंत दंतावेल५२दानमें अचिंज्ज येह ॥  
 दक्खिन१२के अर्द्ध३देस पच्छिम५३को पाता नव,  
 लक्ख९००००००दलनाथ ताकै गज न कितेक गेह ॥  
 तनकहुं तर्कपै सता१९४१२नै दई सैतसई७००,  
 मूर्ति तामैं नंद रस भू १६९मित दिपत देह ॥  
 कै गज जितेक निबहैं घर तितेक लौकै,  
 आयो मचवायो द्वारमें दुरमदन मेह ॥ ४६ ॥

१ मनोहर जाति का छंद २ कहा ३ छिपे हुए राजा को ४ दिशा  
 दिशा से ५ समूह ॥ ४४ ॥ ६ प्रमाण अर्थात् गिन्ती के बादन छंद ७ कंठ थे ८  
 अकेला ९ छंद १० गोत्र छिपाकर ११ वृत्तान्त कैसे ही होओ १२ हाथी १३  
 प्रसिद्ध किया ॥ ४५ ॥ १४ उतने ही १५ हाथी १६ आश्चर्य है १७ "पा रक्षणे"  
 इस धातु से "पाता" शब्द का अर्थ रक्षा करनेवाला है १८ थोड़ी सी तर्क पर  
 शत्रुशाल ने १९ सात सौ हाथी दिये थे जिनमें १६९ हाथी २० मूर्तिमान  
 (सदरूप) थे २१ सस्त हाथियों के मद की चर्पा ॥ ४६ ॥

## ॥ दोहा ॥

इम आतन त्रयश्चानि इम, बंधि निबह निज \*बार ॥  
 प्रजावतिन प्रति किय प्रकट, ए घर लखहु उदार ॥४७॥  
 नाम सत्रुसल्लहि नृपति, बुंदेलहु रनवीर ॥  
 बरनि महुब्बानाह बलि, भूखन १ धन किय भीर ॥ ४८ ॥  
 बहु उज्ज्वल १ के वीर १ के, पैद्य मनोहर प्राय ॥  
 जे भूखन १ कृत नामजुत, अबहु विदित जस आय ॥ ४९ ॥  
 मतिराम २हु शृंगारमय, ग्रंथ सोत्र रसरज २ ॥  
 नेत्रित लच्छन निर्मयो, अपर २हु भासत आज ॥ ५० ॥  
 चिंतामनि ३ नृगिरा रचिय, पिंगल ३ लच्छन पद्य ॥  
 उज्ज्वल १ मुख लुत्तहु इतर, बहुत अबहु गुन गद्य ॥ ५१ ॥  
 भाऊ १९५ १ गज बनिर्त, मनत, इक १ मनोहर आहि ॥  
 आयो अग्रज संग इह, जुपै जनावत जाहि ॥ ५२ ॥  
 कवि भूखन १ निज काव्यमें, मारित १ कथित सुराद ४० १४ ॥  
 कवि बहुमत रूढ़ २ जु कह्यो, पहुँचै कित सु प्रभाव ॥ ५३ ॥  
 बंधनमें हु बिसेस बैलि, गढ पठयो ग्वालेर ॥  
 कैदहि तस पुत्रा १ दि किय, जोपै तथहि जेर ॥ ५४ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तराध्याये सप्तमराशौ बुन्दी  
 भूपभावसिंहचरित्रे औरंगजेबसूनुसुल्तानसुहृद्मदस्य स्वपितृव्यसु-

\*द्वार भोजाइयो को ॥४७॥ १८॥ १ शृंगार रस के और वीररस के रंजद जिनमें अधिक रंजद मनोहर जाति के हैं १ लच्छनों को दिखाने वाला; वा लच्छनों की अनर्गलता सहित; अथवा लच्छनों की लक्ष्मीवाला ४ बनाया ५ अन्य अर्थात् खलितललाम नामक ग्रन्थ से अन्य ॥५०॥ ६ देश भाषा में १ शृंगार आदि छंद भी ॥५१॥ ८ भाऊसिंह के हाथियों का दर्शन १ है ॥५२॥ १० सुराद को मारना कहा है ११ सूर्यमल्ल कहते हैं कि मैंने पहलों के मत से कैद करना कहा है ॥ ५३ ॥ १२ फिर १३ वहाँ ही कैद रहे ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तराध्याय के सप्तमराशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में औरंगजेब के प्रछे पुत्र सुल्तान मोहम्मद का अपने काका-

जासुतोद्वहनतन्मेलनहेतुबन्दीभवन १, औरंगजेबभयप्रपलापितारा-  
कानस्थानस्थितसूजाछलघातमरणा २, योधपुरेशयशवन्तसिंहच्छल-  
गृहीतदाराशिकोहौरंगजेबमारणा ३, भावसिंहाजुजभगवन्तसिंहस्य  
कोचदानराजपदादान ४, भावसिंहस्य कृष्णसिंहयुवराजीकरणा ५  
भगवन्तसिंहस्य चक्रसेनभिच्छनिष्कासनखाताखेडीप्रभृतिप्रान्तादान  
तद्वत्सरचक्रसेनतत्स्थानपुनरादान ६, तदनन्तरचक्रसेनविष्कासनेन  
भगवन्तसिंहस्य पुनरधिकारसंपादन ७, शिवराजाङ्गुषणाकवेर्भाव-  
सिंहान्मतिरामस्येतरराजभयश्च चिन्तामणोः करटिलाभैकैकस्य पृ-  
थक्पृथग्ग्रन्थनिर्मितिसूचनं पञ्चमो मयूखः ॥ ५ ॥

आदितो द्वात्रिंशोत्तरद्विंशततमः ॥ २३२ ॥

प्रायो नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

जिम जिम हित साहने जनायो, तिम तिम है भगवंत १९५३

मुख्य नामी ॥

बिभव अधिक ज्ञात १ मों वनायो, मुनसबकोंहु वढान वृत्ति मन्त्री ॥ १ ॥

रुचि पद तस रड्कुरि रानी, पटुपटु इक्क १ सुता वहै-प्रसूता ॥

शूजा की पुत्री से विवाह करके शूजा से मिलजाने के कारण कैद होना  
१ औरंगजेब से भागेहुए शूजा का आराकान में छलघात से मारा जाना २ जो-  
धपुर के राजा यजवन्तसिंह के छल से पकड़ेहुए दाराशिकोह को औरंगजेब का  
मरवाना ३ भाऊ के छोटे भाई भगवन्तसिंह का रिरवत देकर राजा पद लेना ४  
भावसिंह का कृष्णसिंह को कुमर बनाना ५ भगवन्तसिंह का चक्रसेन नामक  
भील को निकालकर खाताखेडी आदि परगने लेना और उसी संवत् में चक्र-  
सेन का फिर खाताखेडी विजय करना ६ जिसपीछे चक्रसेन को निकालकर  
फिर भगवन्तसिंह का अधिकार करना ७ भूपण कवि का शिवराज से, मति-  
राम का भाऊ से और चिन्तामणि का अन्य राजाओं से हाथी पाना और  
प्रत्येक के भिन्न भिन्न ग्रन्थ बनाने की सूचना का पाँचवां मयूख समाप्त  
छुआ ॥ ५ ॥ और आदि से २३२ मयूख हुए ॥

जसकुमरि१९६।१ जु नामपाइ जानी, उचितविवाह बैया भई सु इक्खी  
जिम सगपन चित्रकूट जाको, रहैत समै तिहिँ राजसिंहरानाँ ॥  
तनुजैनु सरदारसिंह१ताको, बर गिनि सो भगवंत१९५।३ तत्थ बुल्लयो  
जसकुमरि १९६।१ सुता बिबाहि जासौं, हिरद १ तुरंगम २ ग्राम३  
दास४ दासी५ ॥

पट६ पुरट अलंकृतो ७ प्रथाँसौं, मनिन जरी परितोरैव दै समप्पी ॥४॥  
जु दुल्लह सरदारसिंह१ जंप्यो, प्रथित सु पट्टप धर्मसील पिकरयो ॥  
स्वजनक रिससौं कृती सु कंप्यो, पट्टु निजदेह बिहांत भोहि पीछै ॥५॥  
सक नख मुनि भू१७२० समै बरयो सो, जसकुमरी१९६।१ भगवंत  
सिंह१९५।३ जाई ॥

सक सरहग वाजि भू१७२५ मरयो सो, अवसरपर कहि हैं सहेतुं अगगैं  
॥ घनात्तरी ॥

संवत प्रमान नख सलह १७२० समय हुतो,

लांधनमें पातसाह दूजो२ चारलिस १ नाम ॥

पुत्री ताहि व्याहि पोर्टगेजनके पातसाह,

बंबईपुरी हो इहाँ जाकेबस बत्तीधाम ॥

दायजमें जानै दूजे२ चारलिस१ कौं जो दयो,

तबतैं गयो सो अंगरेज८नके दंग तीम ॥

सुता भगवंत१९५।३ नैं बिबाही जाही संवत१७२० में,

यो गो अंगरेज८नके बंबई१ नगर बौम ॥ ७ ॥

संवत नयन पच्छ मुनि भू१७२२ प्रमित समै,

कारो अवरुद्ध साहजिहान३९१२ हु छोरयो काय ॥

१ दय (अवस्था) जाती ॥ २ ॥ २ पुत्र ॥ ३ ॥ ३ स्वर्ग के भूषण की ४  
प्रसिद्धि से ५ इनाम देकर ॥ ४ ॥ ६ कछा ७ विदित ८ वह पण्डित पिता के  
क्रोध से कंपायमान होकर ९ उस चतुर ने अपना शरीर इस विषाह हुए पीछे  
छोड़ा अर्थात् आत्मघात किया ॥ ५ ॥ १० समय पर आगे कारण सहित  
कहेंगे ॥ १ ॥ ११ तथा १२ उलटा ॥ ७ ॥ १३ कैद में रुके हुए ने १४ शरीर

तबतो निसंक अवरंग ४०।३०है प्रसभ तानि,  
 सत्वर बुलायो सब भूपनको समुदाय ॥  
 संबत बिकृति बाजि भू१७२३मित लगत समा,  
 राध१में गये सब निदेशतंत्र नरराय ॥  
 स्वामी तब कर्ण१बीकानैरको हुतो सो सिटि,  
 नायो भूत अटक किनारेको सुमिरि न्याय ॥ ८ ॥  
 मूरसिंह नृपनै बिहायो जब संहर्नन,  
 ताको पट्ट पायो तब कर्ण१हि बडेकुमार ॥  
 मातम मिटाइबेहु आयो तबतें न वह,  
 अटकि न लंघि१मुरि अंबे२के भय अपार ॥  
 आहुतेंसु अबहु न आयो सुहि संका आनि,  
 दूजा२जसवंत२जोधपुर वै दुरितेंकार ॥

१शीघ्र २सम्बत् ३ वैशाख में ४ ज्ञाशा के बन्हा होकर ५ राजा इनहीं आया ७  
 पाहिले अटक नदी उल्लंघन नहीं की थी उसका स्मरण करके ॥८॥ ८देह छोडी  
 तय ९ बुलाया हुआ १० जोधपुर का \*पापी पति ॥९॥

\*इस ग्रन्थ वंशभास्कर) में यथावसर निन्दा और स्तुति सभी की है यहां तक कि बुन्दीवालों के परम वि-  
 रोधी शोपोदिया क्षत्रियों ने जो जो कार्य स्तुति योग्य किये हैं उन उनकी पूर्ण प्रशंसा की है और स्वयं बुन्दी  
 वालों ने जो जो कार्य निन्दनीय किये हैं उनकी निन्दा भी लिख दी है. इसकारण मिथ्यावादी होने का दोष  
 तो इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) पर कदापि लग नहीं सकता. परंतु कहीं कहीं किसी किसी के इतिहास में हेर  
 फेर भी पाया जाता है; इसका कारण यही प्रतीत होता है कि उनको बहवाभाटों आदि से जहां का जै-  
 सा वृत्त मिले वहां वह वैसा ही लिखना पड़ा है. जिसके लिये हमने दिग्दर्शन न्याय से जहां तर्क  
 नोट कर दिये हैं. वैसे ही इस स्थान में भी लिखा जाता है कि जोधपुर के महाराजा ससबन्तसिंह के उ-  
 जैन से भागने के कारण उनकी राणी हाडी का व्यंग्य से पति की निन्दा करना, औरंगजेब के जनाने को  
 लूटने के कारण अश्वर्मी आदि विशेषण देना और दाराशिकोह के साथ विश्वासघात करना लिखकर पापी  
 लिखना, जोधपुर की ह्वात से सिद्ध नहीं होता. दारा के साथ विश्वासघात का किसी ह्मात में कोई ले-  
 ख ही नहीं है; और उजैन से भागने के विषय में लिखा है कि युद्ध में सत्र परगह के मारे जाने पर रतलाम  
 के राजा रत्नसिंह के समझाने पर उनको छत्र चमर देकर महाराजा स्वयं निकल आये और जिस पक्षि और-  
 गजेब का छटवात करना जानकर उसके हुमखाने को लूट कर जोधपुर चले आये इत्यादि. इस ग्रन्थ के इस  
 प्रकारके कथन से विरुद्ध लेख उक्त महाराजा से पाहिले के और पिछले अनेक मिलते हैं जिनको पाठक लोग  
 स्वयं बिचारलें. इसमें तो किसीको संदेह नहीं है कि उक्त महाराजा बड़े प्रतापी, वीर और बलवान् थे.

दारा४०।१छलिदीनों तोहु जोधपुरलीनों सो न,  
दीनों यातैं यहहु न आयो भीति अनुसार ॥ ९ ॥

कहत कितेक यह आयो पै न धीजि' अरु,  
रह्यो कुछ अंतर सौं स्वीय सेना समुपेत ॥

कहत कितेक दारा बंछि' जबदीनों यह,  
तोहु आदरयो न तबहीतैं हो तिहिं निकेत ॥

कहत कितेक यातैं जोधपुर लैकैं याके,  
अग्रज समरसुत रायसिंह कहैं देत ॥

देस पुनि लैवेकौं गद्दाइदीनों दारा४०।१सोहु,  
भेदहिं मिल्यो न हुतो तबतैं चकित चेत ॥ १० ॥

सेस जे असेस तहैं हाजरि नरेस होत,  
निर्भय निदेस अवरंग४०।३तिन्ह दीनों एस ॥

हिंदु न कहावहु बहावहु भ्रमिंत भेद,  
अबतैं जवनहोइ पावहु बिभवबिसेस ॥

मानिकें सुहुस्मद१कुरान२करि कंठ नित्य,  
साधहु निमाज३बदि कलमा४बिहित बेस ॥

दुहितासमैं दे ताहि राखतहो भिन्न तुम,  
सो अब करो न करो पंति हमरी प्रबेस ॥ ११ ॥

पबिसो परत यह सासन सबन सीस,  
भीत सबभूपन बिबिक्त बिचयो बिचार ॥

दीसत दुलभ जाहि मुत्तसब१देस२द्रव्य३सो,  
तुरक दोहु दो२हु लोकन लहन सार ॥

भूमिपाल भाऊ१२५।१एक१बेर सरिबोहै भाखि,

१ विश्वास नहीं करके २ अपनी सेना सहित ३ डगकर ४ घर में ५ मूर्ख को ॥ १० ॥  
६ भ्रम युक्त भेद को छोड़ो ७ समय पर हमको पुत्री देकर फिर तुम उसको  
भोजनादि व्यवहार से जुदी रखते हो सो अब ऐसा नहीं करके ८ हमारी पं-  
क्ति में प्रवेश करो ॥ ११ ॥ ९ वज्र के समान १० जानें

भाख्यो मिलि सब यह झेलहिं भुजन भार ॥  
 जानैं सीसधरपैं<sup>१</sup> कृपानकरपैं<sup>२</sup> है जोलों,  
 मृत्यु<sup>३</sup> बरें मानैं पै न ठानैं जवनतैं प्यार ॥ १२ ॥  
 एक<sup>४</sup> मन व्है करि समस्तन सत्ताह एह,  
 निर्भय निवेदी निबहैं जो हमतैं निदेस ॥  
 सोतो सिरधारैं लौन आजिमैं उजारैं भेट,  
 प्राननकी पारैं अरि मारैं प्रभुके असेस ॥  
 जापैं जाफरा<sup>५</sup> दिक नबाबन निवास्थो जोहु,  
 बाँदी अवरंग<sup>६</sup> ४०।३ तोहु न तज्यो प्रसभ बेस ॥  
 भूपन कंहाई औसी कबहु भई न हम,  
 हाजरिहैं मारहु<sup>७</sup> बढारहु<sup>८</sup> वा सुगलेस ॥ १३ ॥  
 हो आमैर कुंम्म जयसिंह कछुकाज तहाँ,  
 तैनुज तदीय रामसिंह<sup>९</sup> २।१ हो हे नरनाह ॥  
 भाटी तैससंग जैसलादिभेरैवारो भूपर,  
 सूंचि हित भिन्नलौकैं ए दुव<sup>१०</sup> प्रबोधे साह ॥  
 तिनमें तृतीय<sup>११</sup> जसवंत<sup>१२</sup> कहत केतै,  
 इनसौं कही इम रहो तुम हुकम राह ॥  
 द्विरगुन पटा लौ बाँत स्वीकृत दिखावो सोहि,  
 सबन सिखावो चित्त आदरि कैथित चाह ॥ १४ ॥  
 जेजे दुहिता न देत तिनपैं जैतन जानौ,  
 जवन न व्हैहैं<sup>१३</sup> तोहु दैहैं दुहिता<sup>१४</sup> तो जेहु ॥  
 जो तुम<sup>१५</sup> न मानौ तो तिन्ह<sup>१६</sup> तो दूरजानौ यातैं,

१ खड्ग २ ओष्ठ ३ परन्तु ४ यवन पन से ॥ १२ ॥ ५ लरज कराई ६ युद्ध में  
 हठी औरंगजेब ने ७ छठ ८ हे सुगलों के पति ॥ १३ ॥ ९ कछवाहा १०  
 पुत्र ११ उसके साथी १२ जैसलमेर का १४ हित जना कर १५ बादशाह  
 समझाये १६ प्रबन होने की हमारी कही हुई बातों स्वीकार करके १७  
 हुई ॥ १४ ॥ १८ पुत्री नहीं देते हैं १९ कपाय



लेखसंग सुमति कही सो तुम करिखेहु ॥  
 अजनके अच्छे दिन रंचक हुते यों उन,  
 लाभ न लह्यो रु कस्यो आलोचहु अप्प एहु ॥  
 होइ हमरै जो सुता लोहु तो हजूर दाहा,  
 दीनद्विगराइ हमें जाति तैं न जानिदेहु ॥ १५ ॥  
 अधिप उदैपुर ११ यों रामपुर २४ बुंदी ३३ आदि,  
 जाति १ तैं बिडारें कुल २ तैंहु टारें दै कलंक ॥  
 जवन अमीर इतै रावरे जितेक हम,  
 जंपिहैं १ जवन सुता न दैहैं २ सहसंक ॥  
 इत १ उत २ द्वैरहि धौ तैं अंतर १ अनादर दै,  
 बाहिर २ बडेकहि बखानिहै कथनबंक ॥  
 पुत्रि १ न तो जवन विवाहहिं परंतु रिक्त,  
 रहिहैं हमारेकुल पुत्र २ नके परजंक ॥ १६ ॥  
 दाहा यह दुष्करै हजूर पकन्यो प्रैसम,  
 अग्गहु सिकंदर १ से उग्रन भई न एह ॥  
 छत्रिय २ न राखों छिति कहि यों कुठारकरि,  
 काटे रौम हम कुल तोहु अवहै अछेह ॥  
 यातैं आहि उचित निदेसको निवारिबोही,  
 जोन यह तो ज्यों नृपभाऊ १ २५ १ विरचिनेह ॥  
 पहिलें कराइ ताहि स्वीकृत हमारी पंति,  
 पीछें हमें प्रेरहु लुपें न ज्यों लपितैलेह ॥ १७ ॥  
 बीकानैरभूप बदलो समनै आइवन्पों,

१ जो तुमको अष्ट सखाह कही है उसकी लिखावट कर दो २ आयों के ३ आप  
 ही बिचारो ४ पुत्री ५ धर्म ॥ १५ ॥ १ निकालें ७ यवन तो कहेंगे और अपनी  
 पुत्रियें नहीं देंगे ८ दोनों ओर से ९ देहे कथन से १० रीता (स्त्री) ११ यथा  
 ॥ १६ ॥ १२ कठिन १३ हठ १४ परशुराम ने १५ है १६ कहा हुआ सोख ॥ १७ ॥

ताकीसुता व्याहो कृष्ण १९६।१ भाऊ १९५।१ जो गिन्यों कुमार ॥  
 बीकानेर १ बुंदी २ अैसे संबंधी उभै २ ए घातैं,  
 भाऊ १९५।१ जो भनै सो कर्ण १ क्यौ न निबहै करार ॥  
 बुंदीसकी बहिनी विवाही जसवंतजैसे,  
 सो १ जिम कहैतिम करै यह २ समुक्ति सार ॥  
 सोहि जब भाखी साह भाऊ १९५।१ तब भाखी हम,  
 हाजरि इनहु हमै बिरचहु ज्यों विचार ॥ १८ ॥  
 अैसे अवनीसनतैं सासन लगाइ साह,  
 दिल्लीकी दुहाईमें भरोसाके भट पठाइ ॥  
 हुकम दया यो ढाहि देवालय हिंदुनके,  
 मस्जिदन मंडो जिन सामग्री सु व्यर्थजाइ ॥  
 जबतैं नरेस एक १ दीनको हुकमजान्यों,  
 बीर जबहीतैं असु आरा निहचै निहाइ ॥  
 दूजो २ सुनि देवालय लाहन निदेश पत्र,  
 बुंदी पठयो यो कृष्ण १९६।१ कुमारहिं जो जताइ ॥ १९ ॥  
 केसवके मंदिरपैं हल्ला जो करैं तो मेरे,  
 भैरव मरै पैं दुष्ट मिच्छन छुवनदेहु ॥  
 जवन न व्हैवो हमै १ इत मरिजैवो तुम्है २,  
 उत न वचैवो प्रान निर्भय उचित एहु ॥  
 बितैं बहु दैकैं मेर १ मैना २ सैबरादि बुलिया,  
 सदनकी सेना सह लासिकैं भँचक लोहु ॥  
 दीठि अ्यों परैं न भ्रष्टव्हैवो इष्टदेवनको,

१ भाऊ ने जिसको कुमार मान लिया उस कृष्णसिंह को २ बादशाह ने कहा  
 सो वार्ता कही ॥ १८ ॥ ३ राजाओं से ४ मंदिर गिराकर ५ चनाओ कि सामग्री  
 व्यर्थ नहीं जावे ६ धर्म ७ प्राणों की आज्ञा छोड़कर ८ मंदिर गिराने की आज्ञा  
 ॥ १९ ॥ ९ बीर १० धन ११ भील आदि बुलाकर १२ घर की सेना से १३ युद्ध में  
 दृष्ट सहित १४ टकर

प्रान१ आगैं पीछैं लाल तिनके गिरहुगेहु२ ॥ २० ॥

कृष्णसिंह१६६।१कुमर पिताको यह पत्र पाइ,  
सेना सजि बुंदी पहिलैं यों भयो सावधान ॥

देसकेहु छत्रिय१ चतुर्थ४लैव दैनहार,

अखिल बुलाये मेर२मुखहु बडे उफान ॥

एतेमाँहि सेना पंचसहस्र५००० उपैत इत,

देवालय दारिवेकों आयो खल अस्तखान१ ॥

केसवके मंदिरको कलस उतारयो यामैं,

मिच्छन चमूके दैकैं पट्टनिपुरी मिलान ॥ २१ ॥

कलस उतारि ताहि गेरनको जलनकरैं,

बैर न लगाइ तोलों बुंदीपतिके कुमर ॥

कृष्णसिंह१९६।१ अशुत अनीक लै कराल पहुँच्योहि,

बनि काल ततकाल परजाल पर ॥

पूरे पृष्ठवाँहन प्रभारी जे जवनजन,

अन्नादिदि लैन आँढ्यग्रामनमें जात अर ॥

भिल्ल१ मेर२ मैनें सब संगदै कितेक भट,

तिनपर चक्र भेज्यो छसहस्र६००० तूर्यांतर ॥ २२ ॥

वानाधर टारिकैं हजारचउ४००० वीर करि,

दूजी२ अनी आप कढ्यो सिबिरे बिनास काज ॥

पहिले गये तिन प्रसारमें पहुँचि पृष्ठ—

वाहन पकरि लूटे१ मारे२ घनें सहलाज३ ॥

१ हे पुत्र, २ गिरो ॥ २० ॥ ३ चौथा बंद देनेवाले ४ आदि ५ मंदिर गिराने को ६ स्लेख सेना के ७ मुकास ॥ २१ ॥ ८ समय मिले ९ दश हजार १० घमराज होकर ११ तुरन्त १२ शत्रुओं के समूह पर १३ बैल पोढिये १४ धनवान ग्रामों से १५ शीघ्र १६ सेना १७ बहुत शीघ्र ॥ २२ ॥ १८ युद्ध से नहीं भागने का चिन्ह रखनेवाले १९ डेरों का नाश करने को २० फैलाव (यातव) में या तृण काष्ठ बानेवालों के समूह में २१ पोढियों (पैलों) को



भाऊ१९५।१ रु भूँ२ पै इक१ संग देल भेजतो सो,  
निहिनिहि निहोरिवे२ नवाब बोले नृपमित्र ॥

मारघो सुनि दारा४०।१ मन हारघो खानकासिम१हु,  
लाग्यो पय आनि सोहु बोल्यो पहुँता पवित्र ॥

बुंदीपति सम्मति कुमार जो करी तो ताहि,  
वै हम हरोल हनै१ कौ गहै२ चहि न चित्र ॥

भाऊ१९५।१ भिन्न वै तो कोप रहसा करो न हाल,  
अपनहु हैं ज्यों बारि भ्रमरी बहिर ॥२६॥

माँचिर है घाँघाँमें उपलव तिहिँ अनेहँ,  
चोरी१ घाँटि२ जोरी हेतुँ प्रचुर परै पुकार ॥

देस१ दुर्ग२ गाम३ धाम४ सबठाँहुँजन दावै,  
यातैं रुक्यो तबतो नवाब त्रिक३ अनुसार ॥

औसैं एक१ दीनँ पै निहोरे होत इत१ उतर,  
देस गुड़वानैकी पुकार आई जँवदार ॥

वारीगढ१ चोकीगढ२ है२ ही दाविराखे अब,  
गौड़न उपाय इलाँ खिलहु करैं अगार ॥२७॥

होत आदँकारक ज्यों सव्य१ अपसव्य२ होत,  
एकदीन करत हुतो यौ साह व्यग्रअँति ॥

घाँघाँकी पुकारमें पुकार सु सुनत घोर,  
पठयो लिखाइ फरमान भगवंत१९५।३ प्रति ॥

सुबापति संगलै अवंतीको वजीर खान,

भाऊ और बुंदी की भूमि पर अलेना शेरजा भाऊसिंह के मित्र४ अतुरता ५ सलाह से १ इसमें आश्चर्य नहीं है ७ भाऊसिंह कुमार से जुदा होवे तो ८ अमानक ९ जल के भ्रमर में १० नाव होवे जिसप्रकार ॥ २६ ॥ ११ दिशा दिशा (ठौर ठौर) १२ उस समय १३ बाढ़ा १४ कारण से बहुत पुकार १५ दुर्जन १६ भ्रम १७ शीघ्रता से १८ बाकी की भूमि को भी अपने घर करते हैं ॥ २७॥ १८ आद करानेवाला सव्य अपसव्य होता है इसप्रकार २० व्याकुल

गढ दुवर् लोहु गंजि गौड़न दे कौदमति ॥  
 साँवनमें सासनगयो सो धरि सीस इस,  
 अंतमें चढयो सो मिल्यो सूचित सो जुद्धमति ॥ २८ ॥  
 वानाँधर साँदी खटसहस्र ६००० स्वकीय बलि,  
 रक्खि रनकाज है २५ हजार २००० बढते बहोरि ॥  
 उज्जइनी जाइ सो वजीरखानकों लै इम,  
 गौड़नकों गंजन गृये ए जवँ १ जोरँ २ जोरि ॥  
 सूची भगवंत १९५१ ह्वाँ वजीरखानतें समद,  
 तुम १ हमारभेजे जय वंठन अरिन तोरि ॥  
 जातैं जाहि जैसी शरि रुचत रचो सो तिम,  
 दीजिये न दखल जुँ जँहँ मन न मोरि ॥ २९ ॥  
 यह सुनि दर्पवन अंतर १ अनखँ घानि,  
 अच्छी कहि ऊपर २ तैं सुवापति होइ संग ॥  
 लुट्टि गुड़वान द्वै २ हि वारीगढ १ लागे जागे,  
 भाग्यबल जेगिनके जाविधि जभायो जंग ॥  
 सुर्जन १९०१ पोरि १ घाँ प्रचारि भटखीय भग-  
 वंत १९५१ चढि निश्रेनिन पैठो इततैं अभंग ॥  
 केते काटिडारे १ केते पकरि निकारि २ दई,  
 गढमें दुहाई औधिराज सूचि अवरंग ४०१३ ॥ ३० ॥  
 सिद्ध जय सीरी पैठि पीछें तँहँ सुवापति,  
 बाहिरकी बाँह दे सराहयो भगवंत १९५१ वीर ॥  
 ज्योंही ज्यों जाइ गरदाइ दूजी २ चोर्कागढ २,  
 लौलयो सता १९४१ केसुत तायें लग्यो इक १ तीर ॥

१ कौद करके २ साशियन मास के अंत में ॥ २८ ॥ इनहीं भागने का चिन्ह रखने  
 वाले ४ सवार १ अपने १ वेग ७ बल ८ इर्ष युक्त कहा ॥ २९ ॥ १ घमंड के  
 बषन १० क्रोध ११ ऊपर के मन से १२ अवरंग को स्वामी जनाकर ॥ ३० ॥ १  
 ऊपर के मन से प्रशंसा करके १४ वेगवान्,

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ १ ॥ हाथी धोहा मार्ग में राधा के इलाज में शिष्य दिला  
कर ४ पौष यदि पक्ष में ॥ ३ २ ॥ खिद है कि देखवर विवाहिता स्त्रियें समूह शुभगर  
नामक स्थान में ॥ ३ ३ ॥ १० पास ११ हे पुत्र १२ हे पुत्र १३ हेरे की लड़की सीमा श्री

ऊतरयो कलस सो पै न तुम चढाहु अब,  
औहँ इस तो पुनि चढैहँ विधिसौँ अचल ॥

\*एक१दीनदठ न तजै हम१मरै तो उहाँ,  
तुम२हु मरै पै देहु आपनौँ छोनितल ॥३४॥

हल्ले बारबार इत एक१दीनकाजें होत,  
भाऊ१९५।१मुख भूप पेलिदेत जे समै प्रवीन ॥

एक१ गज आगेँ ज्यौँ बगंडहि के अंतराय,  
केही टिकै खड्गी२ इन यौँ नय बरंड कीन ॥

भाऊ१९५।१ पास भेज्यो दल तासमै करनभूप,  
आप जो सहाय रहो आऊँ तब मै अधीन ॥

पच्छी लिखी भूप साह भ्रष्ट जो न पारै१ लिखि,  
मैं बलि बुलाऊँ२ तब आवहु स्थाहित लीन ॥ ३५ ॥

मानी साह पट्टनि लुट्यो सो उपहार१ मंग्यो,  
माख्यो तिहिँ बैर मंग्यो मारक सुहीँ कुमार२ ॥

भूप लिखिभेजी उपहारतो अबहि भेजि,  
कुमरकहाई बंदि लैगये बिजयकार ॥

साह इहिँ अंकट विलांबहि परत सोधि,  
लैनलागो पट्टनि तदीयै सब ग्राम लार ॥

भूपहु कहाई नयओटै लै कुमर१ भेजौँ,  
आनि तस संग हि लुट्यो सु दूनो२ उपहार ॥ ३६ ॥

भाखो साह बिरचि विलांब क्यों न भेजत तो,  
तब नृप वेहीमित्र दै विच नबाव तीन३ ॥

\*एक धर्म करने का । भूमि तल ॥ ३४ ॥ † भाऊ आदि १ अगड़ के अंतर से एक हाथी के आगे कई १ खड्गवाले भी टिकजाते हैं तैसे ३ नीति का बरंडा (अगड़) किया बीकानेर के राजा कर्णसिंह ने भाऊसिंह के पास ४ पत्र भेजा १ धर्म अष्ट ६ फिर ॥ ३५ ॥ ७ सामान दभारनेवाले कुमर कृष्णसिंह को मांगा ९ विजय करनेवाले १० भोड़ (अगड़े) में ११ उसके ग्रामों सहित १२ नीति की आह बोक १३ सामग्री ॥ ३६ ॥



लकखदुवर०००००० मुद्रा दै वजीरहिँ पिहित लोभ,  
बिन्नति कराई इन च्यारिन४ पै यों प्रवीन ॥

सुत अपराधी गहि सौंपन भनत भूप,  
दूनों२ उपहार देत आगसँ१ जपाँ२ सौं दीन ॥

इतर असाध्य जोलों मतलब लेहु यातै,  
कोलों बहिकावहि हजूरकों सो बलहीन ॥ ३७ ॥

एक१ दीनको हठ हजूर न तजो, तो अब,  
जोधपुर हीन अतिखीन राजाजसवंत ॥

भाऊ१९५१ सु भाम तातै याहि विच दैकै ताहि,  
भीतरहि बुलाइ साँकरमें लै भयभ्रमंत ॥

देहु बलि लोभ जानिवैमें सो करै गदित,  
औरहु किते तो करै नाँकरै ते पावै अंत ॥

पै इहिँ प्रसभ हाहा उलटपलट व्हैहैं,  
हिंदुनके बैस ए असेस कहि हंतहंत ॥ ३८ ॥

मरिबेलगैं जे तिनकों तो टारि काह मिस,  
लोभ१ भय२ सौं जे व्है तिन्हें यों निजदीन लेहु ॥

हुकम न मोघ होइ जगहु हसै न जैसैं,  
असैं सुनि मानी साह नीठि, नीठि मानी एहु ॥

भाखी तुम मोहि भाखी सोहि भाखो भाऊ१९५१सन,  
देहु अपराधी१जसवंत२हिँ बुलाइ देहु ॥

मिलि सु महीपसों नवाबन निवेदी गूढ,  
यह जो करो तो रहैं पट्टनि निजहिँ गेहु ॥ ३९ ॥

अधिप कर्यो हैं हम पट्टप अधीन पँहु,

१ छानें २ अपराध की ३ लज्जा ले दीन होकर ४ अन्य ॥ ३७ ॥ ५ बहिनोई ६ कहा हुआ ७ नाश ८ हठ से ९ हुक्म (ह्राहाकार) ॥ ३८ ॥ १० अपने धर्म से ११ कुमार कृष्णसिंह को और जोधपुर के राजा जसवंतसिंह को ॥ ३९ ॥ १२ पाँट (तखत) के अधीन

हितही हमारे सतच्यारि४००मरे धोलपुर ॥  
 पट्टहितही मैं सत्तसय७०० न प्रहार पाये,  
 औसैं अवरंग४०।३ अब पट्टप प्रमानि उर ॥  
 मैं यों प्रभुजानि उपदाहु लैं अधिक मिल्यो,  
 धोरी गज च्यारि४त्यौं निसेस दये भेट धुर ॥  
 रीभकी ठाँ अर्द्धः प्रतिदेय२मिल्यो औरनसौं,  
 सोहु सही तोहु पुनि रीभ सुनि ये प्रचुर ॥ ४० ॥  
 मुनसव१मोसौं सत्तसहस७०००छमासौं छोनि,  
 वारा१मऊ२प्रवर छमा३हु छोनि अर्द्धः इम ॥  
 अर्द्धः अबनी सौं मोहि अट्टाईहजारी२५००अक्खि,  
 जेठो१करयो अनुज२समान मंतु हाइ जिम ॥  
 ताहि पुनि द्वि२गुन बेढायो जैमी रीभ तकि,  
 तैसी ठाँ सुजा४०।१के रन मोपैं प्रतिकूल तिम ॥  
 नाक काटिवो१जो तुम सबल न मानौ तोहु,  
 नाक काटिवेमें२तो कुमी न राखी साह किम ॥ ४१ ॥  
 पट्टनि हू लेहु तजि एक१दीनको प्रसभ१,  
 उजिभंडावरे२को तिम दूरनौं लेहु उपहार ॥  
 भृत्यहैं न मेरे जसवंत१रु करणा२भूप,  
 तोहु अभैं दैहैं तो चलै हैं कहु जत्न तार ॥  
 हम पहिलैंही मरिवेकों हुसियारहैं पे,  
 कपटकरो तो लगैं पातक हसैं हु डार ॥  
 भाखैं जग भाऊ१९५।१की भलाई विसवास दै,

१मालिक जानकर २नजराना ३ मुख्य ४ जगह ५ छलटा (पाछा) दान ६ बहाल  
 ॥ ४० ॥ ७ छमा युक्त से; अथवा सम से ८ भूमि ९ अपराध होवे इसप्रकार  
 १०मासिका(मनसब कम होजाने से कुन्दीवालों ने नाक काटना माना) ११स्वर्ग  
 की प्राप्ति मिटाने में तो किसी प्रकार कुमी नहीं रखता ॥ ४१ ॥ १२मेरे लड़के  
 को छोड़कर १३सामान १४ सेवक

बुलाइकै मराये१कै कराये२कैद अघकार ॥ ४२ ॥

होत असै भंभट बसंत१दूजो२पूरो होत,

ग्रीखम१के लगत अराजक पुरी गूगोर ॥

माताभगवंत१९५।३की बुलाइ कृष्ण१९६।१कुमरहिं,

निरलोभी छानै धरयो दूरनै राज्य सुत ठोर ॥

पहिलै बुलायो मधु१९५। नाम राजसिंह१९५।४पुत्र,

स्वीयन ह्वाँ सूची जिन मेटो पतिबँस जोर ॥

बलि जिहिं भेजि गूढ कृष्ण१९६।१सु बुलाइ ताहि,

अंकलौ नरुकी दीनौ पंचकद्वजारी५००००तोर ॥ ४३ ॥

तैसी सुनि भूप लिखिभेजी अब बूंदी ताहि,

पैठन न देहु गयो अप्पनतैं सो कुपूत ॥

पट्टनिकी लूट सब दूरनी पहुँचाइ कहयो,

मो बस न कृष्ण१९६।१है बुलावहु दै बर्यादूत ॥

जोहू साह पट्टनि उतारिवे लग्यो सो तँहँ,

दम्भ दुवलदख२०००००मार्न दै पुनि सचिव सूत ॥

अय३हि नदावन बजीर४सह भाखी ताहि,

भाऊ१९५।१साधयो हुकम तऊ न करिये अभूत ॥ ४४ ॥

दूरनौ उपहार तब लूटको हजूरकोँ दै,

कढिगो पिहितं कृष्ण१९६।१बलि सु दयो बताइ ॥

मरजी तऊ तो कुछ लेहु दैम सुदा जातैं,

सासन बनेँ१रु जोधैभूप न बिगरिजाइ ॥

पंचलाख५०००००मुद्रा तब सौहस सो भूपपर,

१ पापी ने ॥ ४२ ॥ बलन्त ऋतु का २ दूसरा महीना वैशाख मास ३ राजा विना  
४ अपने लोगों ने कहा ५ वंश के पति का बल रात मेटो ६ गोद ॥ ४३ ॥ ७ पत्र  
८ प्रमाण ९ पहिले नहीं हुआ सो मत करो ॥ ४४ ॥ १० छिप कर ११ दंड  
के रुपये १२ हुक्म १३ वीर राजा है सो बिगड़ नहीं जावै १४ दूत से

सोहु भरदीनों स्वांत टेक उत्तकी टराइ ॥  
 सो पै टेक साह न तजी रु यों प्रबोधयो सोहु,  
 मीन पै पल्लमान लोभको लपेटा लाइ ॥ ४५ ॥  
 पत्तन गूगोर इत नतींओ पितामहीरके,  
 राज्य प्रभुतामें नैक न बनी बिहित रीति ॥  
 भिदिभिदि लोक इत त्यों उत दुर्पाले भये,  
 औसी बढी सो न फेरि समिति सखी अनीति ॥  
 तबही नरुकी तीरथनको बहाँनाँ ताकि,  
 कोपि चली निकसि भुलाइ यों करन भीति ॥  
 अपजस घाँघाँ उडयो पोतेओ पितामहीरको,  
 बात सु सुनतगई साहकी कृपा हु बीति ॥ ४६ ॥  
 समुझी नरुकी नाँती पट्टनि अहित साध्य,  
 याही अपराध साह कृष्ण १९५ १ साँ न अनुकूल ॥  
 तातैं मो पुकार सुनि दै हैं सो बिडोरि ताहि,  
 मैं त्यों कृपापाल भगवंत १९५ ३ प्रेसू हितमूल ॥  
 च्यारिधाम को करि बहाँनाँ सो अनखि चली,  
 संग कुमरानी बडी १ भेजी कृष्ण १९६ १ सहि सूल ॥  
 सचिव १ सिपाह २ संग दीनैं दै कथित द्रव्य,  
 झारि यों प्रबोधे क्यौहुँ पेटहु हृदय हूल ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

केसरदेवी १९६ १ नाम करि जेठी १ कुमरानी जु ॥

१ मन का हठ छुटाकर २ समझाये ३ मछली पर मांस के समान ॥ ४५ ॥  
 ४ पोता और दादी ५ उचित ६ अनीति रूपी सखी की सभा में; अथवा सभा  
 में अनीति रूपी सखी ऐसी बढी ७ उलझकर झूलकर भय करने को चली ८  
 ठौर ठौर पोता और दादी का अपयोजन बढा ॥ ४६ ॥ १० पोते ने पाटन में ११  
 प्रसन्न नहीं है १२ उसको निकाल देवगा १३ भगवन्तसिंह की माता होने के  
 कारण १४ कहने के साफिक द्रव्य देकर १५ किसी प्रकार ॥ ४७ ॥

\*दइत नरुकी संग दिय, जतन निपुन जानी जु ॥ ४८ ॥

साह नाम पंचायशन सु, सचिवशरु कति सामंत ॥

उचित पठाये संग इम, उचित निहोरन अंत ॥ ४९ ॥

तीरथ न्हानशन चित्त तस, प्रत्युत करन पुकारि ॥

गया अवाधि सो तब गई, बहुरि मुरी इहि बारि ॥ ५० ॥

कुमरानीसह कृष्णशके, जनवैभव हे जेहु ॥

मथुरा आतहि मुद्धमति, गहि हठ पठये गेहु ॥ ५१ ॥

जाइ अप्प अवरंग ४०।३जैहँ, किय तिय कुमति पुकार ॥

मातासन जातहि मिल्यो, भाऊशेखरकुलभार ॥ ५२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी  
भूपभावसिंहचरित्रे महाराणा राजसिंहसूनुसरदारसिंहस्य चाहुमान  
भगवन्तसिंहसुतोपयमन १, आंगलमोहमयीपत्तनप्रापणा २, यवनेन्द्र  
शाहजहांकारामरणा ३, आर्यराजयवनीकरणौरंगजेबप्रसभार्थराजा  
स्वीकरणा ४, आर्यमन्दिरपातनतत्सामग्रीयवनमस्जिदनिर्माणौरंग  
जेबनिदेशन ५, पट्टनिमन्दिरपातनसमयकुमारकृष्णसिंहयवनेन्द्रसे  
न्यविजयन ६, गुडवानावारीगढविजयानन्तरसविषक्षतौषधिमऊरा  
जभगवन्तसिंहतनुत्यजन ७, स्वसूनुकृष्णसिंहोपरि भगवन्तसिंहजा  
यायाः प्रक्रोशार्थदिल्लीद्रङ्गगमनं पष्टा मयूखः ॥ ६ ॥

\*प्यारी;अथवा पति ने साथ दी।४८।१उत्तराय ॥४९।२उलटा।५०।३सूनु ॥५१।२।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
भावसिंह के चरित्र में महाराणा राजसिंह के पुत्र सरदारसिंह का चटुबाण  
भगवन्तसिंह की पुत्री से विवाह होना १ वंजई का अंगरेजों के हाथ लगना २  
बादशाह शाहजिहांका कैद में सरना ३ औरंगजेब का हिन्दू राजाओं को  
यवन करने का हठ करना और राजाओं का अस्वीकार करना ४ हिन्दुओं के  
मंदिर गिरा कर उसी सामग्री से मस्जिद बनवाने का औरंगजेब का कृत्य ५  
पाटण का मंदिर गिराते समय बादशाही सेना से बुन्दी के कुमार कृष्णसिंह  
का विजय ६ गुडवाना और वारीगढ विजय किये पाँचे घाय के इलाज में  
जहर होकर मऊ के राजा भगवन्तसिंह चटुबाण का देहांत होना ७ भगवन्त

आदितस्त्रयस्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ बैतालीयम् ॥

इत भाऊ१९५।१भूप उच्चर्यो, कठिन अनुग्रह पुत्रपै करयो ॥  
 बिअया जो कृष्ण१९५।१आदरयो, पाप सु पुत्रकपंति तैं परयो ॥१॥  
 अरजो मम चित्त आनिकैं, सैमि अरजी हु न देहु साहको ॥  
 जननी सुत मोहि जानिकैं, पुरबुंदी अबहू पधारिये ॥ २ ॥  
 बंदे सिर ही विराजिये, जोलों जीवित दासकै जथा ॥  
 सबपै स्व निदेस साजिये, अनुचित विन्नति दै न उजिभकौ ॥३॥  
 प्रत्युत खिजि नारैवी प्रसू, अंगज बैननसोहु आदरयो ॥  
 बिचकी जन अर्थ दै बसू, पठई विन्नति स्वीय साहपै ॥ ४ ॥  
 हजरत भगवंत१९५।३ माइ हौं, अंकस्थ न जिहिं कृष्ण१९६।१  
 १ आदरै ॥

प्रभु सासन मान पाइहौं, भय तिहिं दै तँहँ मोहि भेजिये ॥५॥  
 सो सुनतहि कुपि साह हू, अस्विय जाहु निकैाय अप्पनै ॥  
 गिनि ममकैत बहु गुनाह हू, लोभिनिअंक कुपुत्र क्यौलयो ॥६॥  
 तिहिं इम जवनेस तैजिकैं, विन्नतिसौं प्रतिकूल ठहौं बन्यौं ॥  
 बलि यह वह मान बैजिकैं, गुग्गेर१ हि तजिकैं मऊरगई ॥७॥  
 राजसवर्तिका ॥

बुंदी करे नव९ कृष्ण१९६।१ विवाह चही तिहिं त्योंहि खवासि

सिंह की स्त्री का पुत्र कृष्णसिंह पर दिल्ली पुकारू जाने का ६ छठा मयूख समाप्त हुआ और आदि से २३३ मयूख हुए ॥

१ वी (आला) नहीं मानने का कार्य कृष्णसिंह ने अंगीकार किया तो; अथवा कृष्णसिंह ने निर्लज्जता अंगीकार की तो २ पापी ॥ १ ॥ ३ शान्ति करके ॥२॥  
 ४ सेवक के अस्तक पर ही चिराजो ५ अनुचित अरजी देना छोड़कर ॥ ३ ॥  
 ६ उल्टा ७ माता नरुकी ८ पुत्र का वचन ९ धन ॥ ४ ॥ १० गोद रखता हुआ कृष्णसिंह ॥ ५ ॥ ११ घर १२ किये हुए १३ गोद ॥ ६ ॥ १४ धमका कर १५ मान

चउदह१४ ॥

तथहि ताके भये सुत तीन३ \*सुता दुवर तेहु सुनो क्रमसंग्रह ॥  
कर्णकी नंदिनी राजकुमारि१९६।३ तृतीय३ बधू त्रय३ तोकजनै  
तह ॥

सो अनिरुद१९७।१ रु कीरतिसिंह१९७।२ सुत द्वय२ बख्तकुमारि  
१९७।१ सुता१ सह ॥ ८ ॥

जादवी ही तस छट्ठी६ जनी तस इक्क१ सुता हुव नाम सुखाँ१९७।१  
तस ॥

इक्क खवासिके सूनू ओ इक्क१ पै सिवराम१ ए पंच५ प्रजा अस ॥  
सो त्रयोविंशति२३ वर्ष बया अब जाइ बन्पों भगवंत१९५।३ को  
औरस ॥

यानै सबै तिय बुझी उहाँ जहँ पंचगई न उबारि त्रैपा जस ॥९॥  
सो भयो कृष्ण१९६।१ नृपारुज को सुत ताके न व्याह कहे सब  
ताहि सों ॥

पै जे बधू न गई तहँ पंच५ सुनो तिनको क्रमतो लुखमाँहिसों ॥  
तीजीइबधू जो प्रजा त्रिक३ की जननी न गई पहिलैं हठि जाहिसों ॥  
ओरहु च्यारि४ गईन उहाँ पतिके अबुधत्वपै छिज्जि लपाहिसों ॥१०॥  
गोड़ी किसोरकुमारि१९५।५ गिनो पुनि पंचमी५ जादवी छट्ठी६  
जसोवति१९५।६ ॥

सप्तमी७ कल्ली जो गंगा१९६।७ सनाम रु अष्टमी कावंधी पूराँ  
१९६।८ सुंधी अति ॥

बुंदीपुरी इन पंच५ बधून तजी न चहे न पती सुख१ संतति ॥  
पंच५ हि ते इत राखी प्रसन्न मनोमैत साधिकैं आऊमहामति११॥

रहित होकर ॥ ७ ॥ \* पुत्रिये † बालक ॥ ८ ॥ ‡ माना १ सन्तान २ मय  
लाया ३ लज्जा ॥ ९ ॥ ४ राजा के छोटे भाई भगवंतसिंह का पुत्र १ छिये ६  
परम प्रोभा से ७ मूर्खपन पर ८ लज्जा से ॥ १० ॥ ९ राठोड़ी १० अष्ट रुद्रि  
बाली ११ मनचाँदित ॥ ११ ॥

दैं अरजी निज दर्प दहाइ मुरी जब नारवी नैर मऊ मग ॥  
 कृष्णा १९६।१ पैं ठहै तब मिच्छप क्रुद्ध उतारि मऊ हु लई लघुता  
 लग ॥

नारवी मान तहाँतैं नसाइ गुगोरगई प्रतिकूलसे दैं पग ॥  
 तानैं स्वमान गुमायो तऊ सुतकृष्णा १९६।१ घटयो सु अहो भई  
 उच्चग ॥ १२ ॥

लै मऊ१ बाराँ२ त्यों संगही लै अवरंग४०।३ नैं कृष्णा १९६।१  
 घटाइदयो इम ॥

राखी गुगोर१ ओ चाचुरनी२ खाताखेरी३ ब्रईहि दीय पटातिम ॥  
 राख्यो हजारउभै२००० उँपटंक जु पै त्रीहजारी ३००० को छीनि  
 लयो जिम ॥

तातैं लुभावन स्वस्त रुकौं अवरंग४०।३ बिचारयो सुलोभ दैं  
 अयिम ॥ १३ ॥

भाऊ१९५।१ साँ साह सो अैसेँ भनी वह कृष्णा १९६।१ कुपुत्र मरयो  
 अपराधन ॥

दंग वे बाराँ१ मऊ२ अब द्वै२ हि लहो तुमरेतुम हैं हमैं लोभ न ॥  
 जो इक१ दीनमैं होहु जई ततो होहु वजीर हमारे सनातन ॥

सुर्जन १९०।१ पायो जितो लाहि सर्व करो जस रूपात भरो घर  
 कंचन ॥ १४ ॥

जिति सुजा४०।२ को लयो जस एसैही सासन एहहु मानिवो  
 सारहै ॥

जो न रुचै यह तो जसवंत१ रु कर्ण२ बुलावहु सु पै उपकारहै ॥  
 भूप भन्यो नहिँ पूर्व१ निदेस वनैं तस क्योँ हठ बारहिबार है ॥

१जरुकी२बादशाह३ऊँची गति बाखी-अर्थात् कृष्णासिंह के बढने से आप अपने  
 को ऊँची समझने लगी सो आश्चर्य है ॥१२॥४खिताब ॥१३॥ ५प्राचीन रीति  
 (सदैव)के अनुसार६प्रासिद्ध ॥१४॥ ७प्रथम[एक दीन होने] की आज्ञा नहीं बनती



सासन दूजो२ करो जब सोह रचौ तब जो छलको न बिचारहै १५  
 मार्भक मान घटायो घनौं इस फेरि घटाइबेहीको उपाय है ॥  
 आपतैं छन्नमदीय उदंत अहो न जितोक रहयो व्यय १ आय २ है ॥  
 ज्यों उपटंक अढाई हजार २५०० को रंच रहयो समुक्तयो सु ॥  
 सहाय है ॥

तोहू बनी सो करी तब त्यों घरआन्यों बिजै खजुवा लहि घाय है १६  
 तोहू हजूरकी रीझ वदै तिम गौरव मेरो लिखपाद गुमाइकैं ॥  
 भ्राता मदीय लई सुधि भूमि लहौ अब मैहु जो लोभहिं लाइकैं १ ॥  
 जाँमिप १ व्याही २ बुलाइ उभै २ जिम पेचके संकटमाँहिं पराइकैं  
 हड्डन ६ १ को मुख स्यामैं व्है जो किम सुख व्है सो न कही  
 बहिकाइकैं ॥ १७ ॥

आपकाँ न कहानहै ओरकै देखतही मम चित्त जो निर्दर ॥  
 साह कछो तुम स्वामिकाँ सौंह दिवावत न्याय सो कैसे दिगंतर ॥  
 लैहु इहाँ नृप द्वै २ ही बुलाइ जिन्हैं हम भेदिहैं अपि जमो १ जर  
 लोभतैं वे हम दीनलहैं तो नही सु मही तब कृत्य गिनैं नर १८  
 चाकरी सोपै सिरेचढती तुमरी हम मानिहैं सीम जहाँतक ॥  
 यों करजोरि कहाई अधीस व्है हीन बिसाससो नाँ करिवो इक ॥  
 कोल करो प्रतिभू जो स्वयं कडि बाढै बिसास जो संसय बाधक ॥  
 जो न रुचै यह तोपै हजूरके आश्रितहैं रहिहैं बनि रोचक ॥ १९ ॥  
 जोरतैं यों नृपपै इठजाल दिखावत साहकाँ अब्द गये दुव २ ॥  
 अंतपै भाखी उभै २ अबलीसन हड्डन ६ १ बुलाइ कहाहु कृती हुव ॥  
 तासों चहे नृप सौंह तहाँ धरि कोप इठी प्रतिकूलता लै धुव ॥  
 भाख्यो अहो खल किंकर भाखि भुवोलवनैंद्वैराखिअधोभुव ॥ २० ॥

१ मेरा २ मेरा वृत्तान्त ३ खरच ४ आसद ॥ १६ ॥ ५ तीन अंश बिटा कर एक अंश  
 चाकी रक्खा ६ वहिनोई ७ काला मुख ॥ १७ ॥ ८ निर्भय ९ श्रुति और धन देकर  
 पृथ्वी पर वह १० कार्य तुमारा नहीं गिना जावेगा ॥ १८ ॥ ११ जामिन [जमानत  
 देनेवाला] १९ ॥ १२ चतुर १३ सौगन १४ बिह्वना १५ राजा १६ खड़े में ॥ २० ॥

भाऊ१९५।१ तहाँहु चहयो प्रैतिभू कहि यों आप बली बदलो तो  
कहाकरैं ॥

हायन है इम भंभूठ होत महीप कहयो हनिये बै इहाँ मरैं ॥

जोरपैं यातैं बढे जवनेस भन्यो तुमपैं दस ओर कहा भरैं ॥

हिंदुन इष्ट जो कृत्य इहाँ इम होन न दै हैं मिटाइ हरैं ॥ २१ ॥

संवत बेद बिलोचन सत्रह१७२४ उज्ज्वल१ भद्वद के दसमी१०  
अह ॥

साँदस साहि कही इम साह अहो अब हिंदु तजो यह आग्रह ॥

कलिह कछू मह जो करिहो मचिजैं हैं ततो महमैं सृतिको मँह ॥

ज्यों जिजिया१दिक भेट भरो इक१दीनन होहु रहो कुल उँदहा२२।

वज्रसो भाऊ१९५।१ यहै सुनि बेन विचारि इहाँ अब हे मरिबो बर

कूरम१ आदि महीपनको समुझाइ कहयो गिनो मोहिपूरस्सर ॥

संग न जो पै चलो तुम सर्व तथापि पैसिग्रह संगदै सँत्वर ॥

कलिहको उच्छव भेटकरैं न निरंकुस जुजिभ परैं नरपैं नर ॥ २३ ॥

ओर नरेस न भाखी यहै छितिपैं तुमरी नहिं वीरता छन्न हैं ॥

रावरेसंग पठाइहैं रीक्षि पैदाति कितेक जे जाति प्रपन्नहैं ॥

माच्यो निसा सबठाँ यह मंत्रपै राजा न भो खिलकोहु प्रसन्नहैं ॥

इकिखलई अबतो सबनैं इहाँ अज्ज असेसहिं मिच्छन अन्नहैं ॥ २४ ॥

प्रात भयो इहिं मंत्र प्रपंचमैं सुंदिपैं लागिरहे चैर साहके ॥

नित्य निवेरि रू भाऊ१९५।१ नरेस सज्यो मरिवेहिततंत्र सलाहके ॥

कुँकुमीवस्त्र पिताजिम स्वीकारि राजसचिन्ह धेर पिंदराहके ॥

१ जामिन २ वर्ष तक ३ अथ ४ दंड. हिंदुओं के दण्ड का ५ कार्य जो यहाँ  
होता है सो नहीं होनेदेंगे ॥ २१ ॥ ६ दिन ७ हठ करके = हठ ९ उन उत्सवों  
१० सृष्टि का उत्सव ११ कुल के नायक [कुल का उच्चार करके] ॥ २२ ॥ १२ अग्र  
णी १३ परिणह १४ शीघ्र ॥ २३ ॥ १५ पैदल १६ जाति के शरण है १७ सलाह  
१८ सब आर्य १९ म्लेच्छों का भक्ष्य है ॥ २४ ॥ २० खबर पर २१ हलकार २२  
बलाह के आधीन होकर २३ केसर के वस्त्र २४ शत्रुनाश ने किये थे जिस प्रकार  
स्वीकार करके २५ राजावन के अध्या; रजोगुण के २६ स्वर्ग के मार्ग के

राजाका दिह्ली में देव झूलनी का उत्सव करना] सप्तमराशि-सप्तममयूख (२८१७)

सो सुनि चोथे ४ वजीर समेत नबाब सखा सकुचे नरनाहके ॥ २५ ॥  
स्वामी रुठाई सहाय न दै सकें १ राज्यको थंभ गिरें इत संभरी ॥  
तोहू तिरोहित दूत तंती करि प्रस्थित भूपपै ख्याति यहै करी ॥  
क्यों मरिये अनिमित्त १ अकाल २ हिंदाइये आज पटाल यही हरी ॥  
एककी मानै नही अवरंग ४०।३ धरि मन सोलिपि बंजपै ज्यो धरी २६  
भूपहु गूढ कहाई न भो तुमसो यह पाप पै साह प्रतीपै तो ॥  
जो मरिबे मैं प्रसन्न व्हो जोधैं मुरै न सो छुद्रहु दूर महीप २ तो ॥  
चूकिबो हो तो हमैं कुलचाल जो टारते क्यों इक १ दीनकी  
टीपै तो ॥

मुक्तिसे जाबिच मोती मिलैं सो तजैं किम धर्ममयी सुभ सीप  
तो ॥ २७ ॥

साइस्ते १ जाफर २ कासिम ३ सोँ इम गूढ कहाइ वजीर ४  
उपेताहि ॥

जाम उभै २ दिनपै कछु जात करयो इक ठाँ बल ब्रौत यहै कहि ॥  
श्रीप्रभुवारे बिमानके संग चलो मम पीठि जिते मरिबो चाहि ॥  
सेसनको हितसोँ जब सीख गिनोँ जुहि श्रेय करो सुअभै गहि २८  
पंचन भाखी हमैं प्रभुपास अहो न भयो कछु दुर्लभ आजलौँ ॥  
खगन यातैं घनै रिपु खाइ कहो बँ न क्यों पहुँचैं प्रभुकाजलौँ ॥  
भेजि भरोसाके आधे इहाँ सब विष्णुबिमानन आनिसमाजलौँ ॥  
बीच तिन्हैं करि आप बली जमुनापै चलयो धरि धर्मजिहाजलौँ २९  
बुंदीचँसू सुनि आते बिमान कहयो अवरंग ४०।३ न ठाँठाँ कटाकरो

१ स्वामी को कुद करके २ चहुवाण ३ छिपीहुई ४ पंक्ति ५ भेजकर ६ बिना  
कारण ७ बिना समय ८ जलजात्रा के उत्सव में विष्णु को ९ डेरों में ही खुला-  
ओ १० हीरे के लेख के समान ॥ २६ ॥ ११ गुप्त १२ यह पाप तुम से नहीं छुआ  
है परंतु बादशाह ही १३ विरुद्ध १४ बीर होता है सो छोटा भी मरने से नहीं  
डरता सो राजा का डरना तो दूर रहा १५ उच्चस्वर की आवाज ॥ २७ ॥ १६  
साहित १७ सेना का समूह ॥ २८ ॥ १८ अब ॥ २९ ॥ १९ बुन्दी की सेना २० ठाम ठाम

ए जब पीछे मुरै करि इष्ट सबै फल तोपन दै तहँ संहरो ॥  
 आप लै जाइ विमान इतैं बिधि क्रीड़ा कराइ कह्यो बैल विस्तरो ॥  
 कालिंदी कै लपैं अज्ज कहाइ महाभट अज्ज महापदकों मरो ३०  
 यों कहिकैं मुरिबेके अनेहतो पूगी प्रलैकरी तोपनकी तति ॥  
 अध्व महीपको रोकि अनीक निदेस चह्यो हनिबे सहबिन्नति ॥  
 भाऊ १९५१ कह्यो भट भूपन भेजे जे स्वैस्व विमानके अग्र लै  
 संगैति ॥

हौं १ सदै इष्ट २ हौं सर्व हरोल करैं जस यों जु मरैं न सँमा कति ३१  
 बरिन यों अनुकूल बनाइ वहै भाऊ १९५१ हरोल कह्यो बैलना-  
 हहिं ॥

क्यों मग नाहक रोकिरहे सुकरैत्वमें कष्ट दै मात्र सिपाहहिं ॥  
 क्योंहै बिलंब निदेस करो इतपै मरिबो हम सर्व उमाहहिं ॥  
 साहको सासन आयो तहाँ यह दाहहु क्यों न तुमहैं न तो दाहहिं ३२  
 लै यह १ सासन खानदलैल द्वितीय २ चलयो वहाँ निदेस सुही दयो ॥  
 आइ चतुर्दश ४ सो इहिं अंतर पाय परयो रू भली भनतो भयो ॥  
 वीतिहैं हिंदु न स्वामी बिसासतो आसको देखहु आसहि उन्नयो ॥  
 नीतिके आश्रय देहु निदेस लचे जिम हिंदु तजैं हठ जोलयो ॥ ३३ ॥  
 चाहैं मरे जे स्वतंत्र चलैं तिन्ह मारन टेक कहाँ लग तानिये ॥

१ नाश करो २ सेना अथवा पराक्रम फैलाओ ३ जमुना के किनारे ४ आर्थ  
 कहाकर ५ आज ॥ ३० ॥ ६ पीछे फिरने के समय ७ पंक्ति. राजा का ८  
 मार्ग रोककर ९ सेना ने मारने का हुक्म चाहा १० राजाओं ने भेजे जो वीर  
 ११ अपने अपने विमानों को आगे लेकर १२ साथ रहो १३ इष्ट देव के साथ १४  
 कितने वर्ष नहीं मरेंगे अर्थात् कभी तो मरना होवेहीगा ॥ ३१ ॥ १५ सेनापति  
 से कहा १६ अष्ट कार्य में १७ नहीं तो तुमको जलावेंगे ॥ ३२ ॥ १८ अतीत तो ऊपर  
 कहेहुए और चौथा दलैलखा यह चारों का नमुदाय यादशाह के पैरों पड़ा  
 १९ हिन्दुओं पर स्वामी का विश्वास जाना रहेगा ॥ ३३ ॥

भाऊको दिल्लीमें देवदूतनी काउत्सवकरना] सप्तमराशि-सप्तममयूख (२८१०)

जानिये यों १ \* प्रपितामह १ जोर मुरे इत २ रान प्रताप २ से मानिये ॥  
तुटै पै जोरतै नाहि नमै बपुके १ वलतै बल बुद्धि २ वखानिये ॥  
ज्यों प्रपितामह जे जिजिया १ दि तजे तिनको इनपै पुनि आनिये ३ ४  
ए १ जिजिया १ दि रुके इक बीस २ १ ही आप इहाँ बहुभार बिथारिये  
और मिलाय घनै इनमें दैम दुस्सहको डर बज्रसो डारिये ॥  
कोलग दैहै विचार कितेक मुरै इतको तिनह दारिद आरिये ॥  
ऐसी विधा करि अल्प इन्है बलि जोरके तोर सुसाध्य विचारिये ३ ५  
व्याज कछु करि दंड बुलाइकै सक्तिलौ दंडके दैम सम्हारहु ॥  
त्यों जिजिया १ मुख दंड कितेहि वनै न इते बरजार बिथारहु ॥  
सो सुनि लौ जननीमिस साह बुलाइ अनीक कहाई विचारहु ॥  
आज मो माता बचाये इहाँ पर यों कबलौ रहिहो भयपारहु ॥ ३ ६ ॥  
यों जब सेना मुरी अवरंग ४ ० १ ३ की सम्मद हौ सबके उर संचर  
माइको है मिस भाऊ १ ९ ५ १ १ मन्यौ कित माइ १ हुती जब कैद  
पिता २ करे ॥

पै भलो क्यों रह्यो कुल पंथ यों बधि बिमान खड़े रन आ हरे ॥  
स्वीय विमान वहाँ थापि सबै क्रमतै खिल ठाँठाँ स्वयं पहुँचे करे ३ ७  
बज्र १ टरयो यह बुंदियतै सहिबो यह बंट टरयो तिम सेसतै ॥  
लोभके पत्र तथापि लिखाइकै लोभिन धाँधौ दये हित लेसतै ॥  
अज १ कुलीन हजारन आइकै सिच्छ भये टरि सेस १ उमेसतै ॥  
इक १ वहाँ चालुक १ हाडा २ हु इक १ यों दोरे द्वै दुष्ट त्यों बुंदिय देखतै ३ ८

अकबर के बल से भी राणा प्रतापसिंह कुछ बैठा था ३ ४ १ हिंदुओं के तीर्थों पर  
यवन वादशाह की लागत विशेष लो थीं उन इक्कीस लागतों को अकबर ने  
छोड़ दी थी १ दंड २ वहाँ तक ॥ ३ ९ ॥ १ मिस ४ सेना का बुलाकर दंड के रूप में आदि  
५ जवरदस्ती फैलायो ७ माना का मिस का के अर्थात् माना के कहने से सेना  
पीछी बुलाई गई है यह कहकर ॥ ३ ६ ॥ ८ हृष ॥ ३ ७ ॥ ६ ठौर ठौर १ ० आदि १ १  
सक्ष्मी के पति विष्णु और शिव की भक्ति से दलकर ॥ ३ ८ ॥

हो जयसिंह १ जु चालुक हो अरु मोहन उत्त २ हो दहदह १ सो हथिय ॥  
राज्यकी हौस बढाइ ए रंक सबेग हजूर गये दुव २ सथिय ॥  
लैलै पटा इक १००००० इक १ हि लाख १००००० को ओ उपटंक  
हजारी १०० को अथिय ॥

दभ्र हि लोभपै यौ अति दुष्ट किते नव्है मिच्छ स्वगौरव कथिय ३१  
यौ जिन सत्रह १७२४ संवत अंतर एकादसी ११ सिर्त १ पद्मा ११  
उछाहको ॥

धौधौ छयो बरखा जल धौट नवीन यहै जस बुंदिय नाहको ॥  
मिच्छ हु केक भये टरि मूढ सद्यो १ निबद्यो २ सु निदेसै सलाहको ॥  
पे अब दुस्सह दंड परयो सु घटानल ग्यो सब भूपन साह को ॥ ४० ॥  
मुद्रौ सवाय ४ तैं बीस २० प्रमान समान धर्यो जिजिया १ सबके सिर  
इक १ सैमा प्रति दंड जो अज्ज न जाय चंडालके द्वार भरै चिरै ॥  
ऐसे अकव्वर ३७ १ छोरे इकीस २ १ इहाँ इनमें बहु ओर मिले ईर ॥  
कष्ट भो अज्ज कहाइबो वहाँ तिथि १ धर्मकी भाऊ १ ९५ १ करी  
सिरपै थिर ॥ ४१ ॥

ऐसी सुनै जल १ अन्न २ हु पै कैर अंचकै लोभ बढायो भयंकर ॥  
नीठि बचाये जे देवनिकेत परयो दैम दुस्सह त्यौ तिनै ऊपर ॥  
को चैऊ ४ धाम रु तिथि करै विनु भूपन सूपन पाइ सकै वर ॥

१ हाथी सिंह २ चाह ३ साथी ४ खिताय ५ अर्थ (धन) वाला ६ अल्प लोभ  
से घबरा होकर ७ अपना बहृष्पन कहा ॥ ३९ ॥ ८ शुक्ल पक्ष की ९ भाद्रपद  
की एकादशी का नाम पद्मा है १० ठाम ठाम ११ वर्षा ऋतु के जल की भांति  
१२ आज्ञा ॥ ४० ॥ १३ रुपये १४ एक वर्ष प्रति १५ बहुत १६ आ मिले "इ-  
गतौ" इस धातु से 'इर' का अर्थ गति है १७ आर्य कहलाना १८ धर्म का दिन  
॥ ४१ ॥ १९ हासिल २० उल कर को चलाने वाले ने "अञ्चु गतिपूजनयो" इस  
धातु से यह शब्द बना है २१ मंदिर २२ दंड २३ उन हिन्दुओं पर २४ जगदीश,  
वद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वर ये चारों धाम और २५ तीर्थ राजाओं के बिना  
कौन करै २६ व्यंजन अर्थात् भोजन के पदार्थ भी नहीं पासकते

असो परयो अवरंग ४०।३ अकाल जो सप्तही ७ इतिन रीतिन  
सोदर ॥ ४२ ॥

जोरतैं मिच्छबनैबो रुक्यो जिम ए ए अनीति मची चहुँ ४ ओरतैं ॥  
ओरतैं छुटत टेक अहेय सबै रही दहदह ११ नके सिरमोरतैं ॥  
मोरतैं श्रीजमुनातैं विमान दब्यो न जो सम्मह गोहन दोरतैं ॥  
द्वारतैं डेरन लेगो स्वदेव जथा लघु १ दिग्घ २ विमानन जोरतैं ॥ ४३ ॥  
भाऊ १९५।१ नरेस बिचारि मन्यो दढचित्त अहो सहिहैं सब दंड तो ॥  
तोहु जो मिच्छ करैं बलतैं अटकी वह साहकी टेक अखंड तो ॥  
मंडतो जो यह टेक अमोघ तोमैं परिवो ततकालहि मंडतो ॥  
दंडतो जो न रुकैं तनु दंड तो चंड तो है पै तथा न प्रचंड तो ॥ ४४ ॥  
मानि विमान निकासन संतुलये दम दम्भ छलाख ६००००० इलोसतैं  
संसद आवनजावन साधि जो पूरबरीति मिल्यो जवनेसतैं ॥  
बुद्धि यों लाहि रंच बिसास दै पत्र स्वनामको जंगलदेसतैं ॥  
बुल्लयो भूपति कर्ण कबंध सु पै गयो संसय कै कछु सेसतैं ॥ ४५ ॥  
आइ नरुकी करी अरजी लाहि कोप तहाँ सरवस्वहि लेतहो ॥  
कृष्ण १९६।१ पै हो जो धनो प्रतिकूल सो मारिवेके अभिप्राय  
समेतहो ॥

उक्त नवाबनैं वहाँहु कह्यो इम हाहा कितो भगवंत १९५।१ सों  
हेतहो ॥

नामतो ताको मिटाइये नाहि बढैबो बिसस बहयो प्रभुचेतहो ॥

१ औरंगजेब रूपी दुर्भिक्ष अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टीढी, चूहा, खुदे, अपने राज्य की  
सेना, शत्रु की सेना इन सातों को ईति कहते हैं जिसका रसगा भाई ॥ ४२ ॥  
अन्य लोगों से ४ नहीं छोड़ने योग्य चहुना से विष्णु का विमान पीछा ५  
मुड़ते समय ६ उत्तम उत्सव ७ तोपों के गोलों के फैलाव से; बागेलों की दौड़ से  
८ अपने इष्टदेव ॥ ४३ ॥ ९ खाली नहीं जानेवाली १० छोटा दण्ड देता हुआ  
नहीं रुकै तो यह दंड ११ अर्थकर तो है परन्तु अत्यन्त अर्थकर नहीं है ॥ ४४ ॥  
१२ अपराध १३ दंड के रुपये १४ राजा आजसिंह से १५ सभा में १६ बुद्धि  
१७ बीकानेर से ॥ ४५ ॥ १८ चित्त ॥ ४६ ॥

पट्टनि जुद्धके मंतुं प्रसंग बन्यों खल कृष्ण १९६।१ निगाइतें  
बाहिर ॥

ईखिं तऊ भगवंत १९५।१ की ओर जनाइये राखि कछू धिर  
जाहिर ॥

मिच्छैव लैतव वारां १ मऊ२ लघु राखे त्रि ३ देस गुगोर १ साँलाहिर  
मेजी नरुकी तथा तिहिं भाँति दया न करी अपराध पै दाहिरा १७।  
विक्रमनेरतें आये कबंध महीपति कर्ण स्व इष्ट मनावत ॥

गोपुरमाहिं हवेली गिनी इम गो पुरमाहिं न पहर आवत ॥  
बाहिर बुंदीकी बाहिनी बीचसों भाऊ १९५।१ साँ आनिमिल्यो  
हित भावत ॥

मित्र नवाव वे पूछे महीप चले नृपकर्ण विसास न लावत ॥४८॥  
मानत को हो वजीरके सम्मत पावत को हो विसासमें प्रत्येय ॥  
कर्णनरेस जो आप कहो विसैं पुर आनि चहैं नहीं व्यर्त्यय ॥

मंडि उपर्ये ते चउ ४ मंत्र जनातभये जिम सूचना सत्यय ॥  
तातको अत्यर्थको जो तर्कें अहो सो थकैं कोनसी बातके  
अत्यय ॥ ४९ ॥

कर्णके बाहिर देग कगड़कें राखेर सँनिधि हालतो राखहु ॥  
साहको आलय पूछैं इहिं अंतर आगन जो अभिलाखहु ॥  
तैसाही ठानि सता १९४।१ के तनैं भनी कर्णसों संसयतो नहि  
भाखहु ॥

पै निजदेर नदी गहि पास कित खिन कयों सुमि राखहु माखहु ५०

१ कर्ण २ भावसिंह ३ पुर ४ मंत्र ५ (बादशाह) ने ६ कर्ण साथ ७ कर्ण सुगार के साथ ८  
९ (जगन्नाथ) वाता ॥ ४७ ॥ १० अंतर्गत ११ कर्णके घर में रहनेवाला था इस प्रकार  
कर्ण में नहीं गया और ८ सीधा बुंदी की ९ जेता में गया ॥ ४८ ॥ १० विमान  
नका नका ११ अंतर्गत १२ अत्यधिकत (विपरीत) उपरोक्त वारोंमें १३ कर्ण  
ने कर्णके घरके १४ विमान को देत देना: कर्ण भावना जो देना रहा है सो  
कोन का दोष करने में भोगा ॥ ४९ ॥ ११ नदीय ॥ ५० ॥



आपुनो हयाँ मिलिबो सुनि एह बिवाहीपनो १ व्यवहार २ विचारिकै  
मानै न ज्यो करि वे मिलि मंल टिक्यो यह बाहर रीतिहु ढारिकै  
संसय नाँ व्यवहारी सगे सो न वहे बिपरीत कुकाल निहारिकै ॥

आपैँ भार परै जो इहाँ मिलिहोँ मैं तहाँ तब फोजन फारिकै ॥५१॥

कर्ण कह्यो बहु भारपरै पंहिलै मिलिहोँ यह माँहि प्रतीतिहै ॥

आपके डेरनहु अबतै नहिँ आइबो मेरो सु पै सुभनीतिहै ॥

कालके पासमँ बास कर्यो तऊ भाऊ १९५१ के पास न नासन  
भीति है ॥

भूप भनी मन इक्क १ भयो जिनको वे सदाही असंसय जीतिहै ५२  
गीतिः ॥

करि सिक्ख कर्ण इम कहि, भाऊ १९५१ नृप सिबिरँ ढिगहि  
रहत भयो ॥

गूढ वजीरहिँ आग्रहिँ, द्रव्यहु उपहार पंचलक्ख ५००००० द्यो ॥५३॥

नृपके मित्र नबावहु, सह कासिम १ जाफर २ पुनि साइस्ते ३ ॥

पहुँ प्रेरित साधे पहु, लखि देस १ रु काल २ लोभं दुर्दिस लग्यो ॥५४॥

तत्थ वजीर १ रु ए त्रय ३, च्यारिन ४ को मंत्र साह अधिक चहो ॥

इन जिम सम्मति आश्रय, कति कहत कलीजखान ५ पंचम  
५कों ॥ ५५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी  
भूपभावासिंहचरिते यवनेन्द्रौरंगजेवाज्ञाविरुद्धनिश्चितनिधनभावासिं  
हजलयात्रैकादशीधस्त्रविष्णुविमानयमुनातटनयन १, साइस्तेखांप्रभु

१ छिपीहुई सलाह २ उत्तार कर ३ व्यवहार रखनेवाले ४ बुग समय ॥५॥ ५ नाश  
होने का डर नहीं है ६ निस्संदेह ॥ ६२ ॥ ७ डेरे के समीप ८ आग्रह करके ९  
नजराने में ॥ ५३ ॥ १० राजा भाऊसिंह की प्रेरणा से औरंगजेब को शीघ्र  
साधा ॥५४॥ ११ इन चारों की सलाह का आश्रय लेकर ॥५५॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भा  
ऊसिंह के चरित्र में औरंगजेब की आज्ञा के विरुद्ध भाऊसिंह का मरना ठान  
कर जलयात्रा एकादशी के दिन विष्णु भगवान् के विमान को यमुना नदी

तिप्रार्थनयैतत्प्रत्यूहशमन २, औरंगजेबबहुलतरार्ययवनकिरणा ३,  
विक्रमनगराधीशकर्णासिंहस्य दिल्लीद्रंगभावसिंहान्तिकनगरान्तर  
निवसनं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥

आदितश्चतुस्त्रिंशोत्तरविंशततमः ॥ २३४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कहे जवन जे च्यारि४कै, पंच५ वजीर पुरोग ॥

मानतहो इनकी सुगल६, जानत प्रतिभा जोग ॥१॥

तोहू बाहिर उत्तरयो, सुनि नृप कर्णहिं साह ॥

सह सेबैस१ बजीर२ सिंग, रिसकिय लिय लाखि राह ॥२॥

राजसवतिका ॥

द्वैम्स तथा प्रतिवासर दंडके पंचहजार५००० चमूप१पै मेरिकैं ॥

पेरि बजीर२पै या५००० ही प्रमान अन्यौं तुम छन्न मिले हिय  
मेरिकैं ॥

जो लग द्रंगन बुल्लहु जंगली तोलग देहु तथा हित हेरिकैं ॥

भाऊ१९५१पै कर्ण२पै दै सुहि भार बलेस१ बजीर२ सुलीनो  
निबेरिकैं ॥ ३ ॥

कर्णसँ यों अवरंग४०१३ कहाई पिता नम संग गयो न क्यौ  
पाछिअ५१३१ ॥

सिंधुपै रोके क्यौ हिन्दू सबैर रु गयो सुरि गेह क्यौ तूही

पर लेजाना ? साहस्तखा आदि की परज से इस विघ्न का मिटना ? याद  
शाह औरंगजेब का चपुत से हिन्दुओं को अवन करना ? बीकानेर से राजा  
करणसिंह का दिल्ली में जाकर भाऊसिंह के समीप पुरकेबारह ठहरने का सा-  
तवां ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चौतीस २१४मयूख हुए ॥  
? प्रज्जणी (आदि) ? बुद्धि के योग से (बुद्धिमान्) ॥ १ ॥ २ मार्ग ॥२॥ ४ रूपये  
५ प्रतिदिन ६ सेनापति पर ७ हृदय सिद्धाकर ८ बीकानेर के राजा को  
नगर में नहीं बुलाओगे तब तक ६ सेनापति ॥ ३ ॥ १० अटक नदी पर

तहाँ तिम३ ॥

\*अजहू कयौ न हवेलिय आत४कहावहु तो तनुाँइ घुसी किम॥  
भाऊ १९५।१ के सम्मत जंगलीभूप २ इतीक भयै अरजी पठई  
इम ॥ ४ ॥

सिंधुको लंघन गर्जित १ सूचिकै हाडा६१सता १९४।१ अटके वहाँ  
सदा हम२ ॥

साध्य न खेद पिताकै सुन्यौं मुरिगो घर मैं सुपैं धर्महीहों मम३॥  
तापर खीजिकै रावरेतात लुभायै लयो सु दयो सन्नै दम ॥

जो सब पूछत मोसूँ हजूर उहाँ हो मदीयँ किसोर बै आगम ॥५॥  
बुंदिय भूप की प्रीति बिसेस सो मैं दुहिता दिय कृष्णा १९६।१  
कुमारकाँ ॥

भूपति भाऊ १९५।१ इहाँ उतरे मगमैहि मिले बढतै व्यवहारकाँ ॥  
हैं हम जेते अधीन हजूरके प्रेरै परस्पर प्रीति प्रसारकाँ ॥

ताहुपै द्वैरहम व्याही तहाँ प्रकटै किम नाँहि जँयोचित प्यारकाँ६  
भेद इतो समुझ्यो मैं इहाँ भये खुंदी अधीस्वरकाँ बहु बासर ॥

मैं इनसौं यह जानि मिल्यो इनकाँ अब ओसर सीखको सँत्वर॥  
ताहुपै जो प्रभुको यह त्रास तो पासही दास हो दूर कितेपर ॥

बिक्रमनैर उतारि बुलाइकै कीलते लंबे इते प्रभुके कर ॥ ७ ॥  
जो हुँत सीख मिलै चढिजाइ तो भाऊ १९५।१ सौं मो२ सौं अहो

कब भेट व्है ॥

आगै मिले नहीं पातैं इहाँ कछु काल रह्यो ज्यौं पुरागमँ केट व्है  
ऐसीहु विन्नतिपै अवरंग ४०।३ फँटा जिम व्यालकी १ कालकी

\*आज भी १ घमंड १ सलाह से २ बीकानेर का राजा ॥ ४ ॥ ३ अटकनदी  
का उतरना हिन्दुओं को बना है यह जनाकर शकुशाल ने रोके ४ मेरे पिता के  
असाध्यरोग सुना ५ लोभ करके ६ देव ७ मेरे ८ तबख अवस्था का आगम  
था ॥ ५ ॥ ९ पुत्री १० जय करने के उचित ॥ ६ ॥ ११ दिन १२ समय १३  
शीघ्र १४ बीकानेर १५ कैद करते ॥ ७ ॥ १६ शीघ्र १७ पुर मैं आये केहे [पीछे]  
होबेगा १८ काले सर्प के फण की टकर के समान होकर

फैट २५ है ॥

कर्णमहीपपै कोप्यो कराल मनो प्रलयोदधि सो किम मेट वहे  
बेगही खानबलेल बुलाइकै प्रेरयो तोपन संगी चमूपति ॥

भाऊ १९५।१ यहै पहिलैं सुनि भीर सज्यो नृपकर्ण२की कर्ण  
की संमति ॥

बल्लहू कुंकुमरंग बनाइ कँम्यौ निजहेरन रक्खि बली कति ॥  
जोलौ दलस१न जाइसकै गयो तोलौ यहै गजपै हरिकी गति ॥९॥

भाख्यो तहाँ इक जंगलभूप महीपको निर्मित वृत्त मनोहर ॥  
ऊहाकरो इहि पद्यकौ आदिलै अग्रिन आदिकै जोरिकै अक्षर ॥

काव्य मनोहर के जिम अंतके पंद्रह१५वर्ण जे रूपात धरापर ॥  
भव्य मनोहर कीरति भाऊ१९५।१की पद्य प्रतीक जनातजो प्रध्वर१०

रोधक सत्रु न संभरराय सहाय सज्यो न लज्यो भय साहके ॥  
साथी स्वकीय प्रवीरन साथ लहै पट इष्ट त्रिविष्टप लाहके ॥

ज्यौं लखि जातहि वंदी लौ बैन कहै नृपकर्ण अहो इम बाहके ॥  
भल्ले इहाँ पहुँचे पहुँ भीर गदोग्रज जैसे समै गज१ग्राह२के ॥११॥  
रोकि करीनै बिथौकि अरीन तुरंगन ओकि हैं तोकि त्रिभागन ॥

१ प्रलय का संसुद्रा २ सेनापति को कर्ण के समान बीकानेर के राजा कर्ण की  
सहाय पर सभा ३ केसर के रंग के वस्त्र बनाकर ४ चला जिस भांति गज और ग्राह  
के युद्ध में गज की सहाय पर ५ विष्णु भगवान् गये तिस भांति ॥९॥ ६ बीकाने-  
नेर के राजा ने अपना जनायाहुआ मनोहरजाति का छन्द भाऊ से कहा १३ स-  
छन्द को आदि में देकर तर्जना करो १० इस छन्द के आदि के चरण से प्रत्येक  
चरण के आदि के अक्षर जोड़ो ११ मनोहर छन्द के अन्त के चरण के पृथ्वी  
पर पन्द्रह अक्षर १२ प्रसिद्ध हैं १३ भाऊसिंह की सत्य और १४ सुन्दर की  
ति का १५ छन्द का एक अंग (टुकड़ा) १६ सीधी [पाथरी] जनाता है ॥ १० ॥  
१७ शत्रुओं को रोकनेवाला बहुवाण राजा १८ स्वर्ग के लाभ के अर्थ १९ जि-  
स प्रकार भाट स्तुति करे तिस प्रकार २० प्रशंसा के वचन कहै २१ हे राजा २२  
विष्णु भगवान् ॥ ११ ॥ २३ छाथियों को रोककर २४ शत्रुओं को बिलेर  
कर तथा शत्रुओं के विशेष समूह को रोक कर २५ आले उठाकर २५ घोड़ों

साधन सोहि \*सुरालय कौनयको जय संसय कोहुं निरागन ॥  
 दीपन बोला उछाहके दै §अवनीपन आदरयो त्यों ॥तनु त्यागन ॥  
 नामी नरेस मिलयो इम मित्रसों वृष्टि ज्यों चित्रसों सूकते बागन १२  
 नाकी १ बिमान चढे सहनारि २न आनिकैं छाये अनीकन ऊपर ॥  
 थैट सजे दुव २घाँ रनथंभ बजे स्वर सिंधुन बंब १धुर २ वर ॥  
 काल इतेकके अंतर काल ज्यों साह व्है साहचमू चली संगर ॥  
 पंद्रह १५अंघि इहाँलौं त्रि ३पंद्यन आदिमें धारत कर्णके अक्षर १३  
 खानदलेल १निदेस ले खीजत आयो इतेकमें तोपन तानिकैं ॥  
 बत्तीबतावनको ही विलंब उभै २दल बेछि लये विधि आनिकैं ॥  
 बेग मिलाइ सजे गज १वाजि २चढे नृप द्वै २मरिबो पहिंचानिकैं ॥  
 पुत्रनलौं यह तास परयो जन दैदैं कपाट दुरे भय जानिकैं ॥ १४ ॥  
 अर्ज १रु मिच्छ २रसेसं असेस १ससेसप्रजेसं २ह सोचे यह सुनि ॥  
 धुंधि रची रज दिग्गज धूजि पयोधि हले पुट १मू के चले पुनि ॥  
 मांसुरी वीरन भूसों मिली गन जोगिनी २वीर २न जोगिनीसो १०० गुनि

को शत्रुओं में डालेंगे साही \*स्वर्ग का साधन है और † प्राप्ति का भी  
 यही साधन है और जय के संदेह में भी निश्चय ही † प्रीति नहीं है [यहां  
 नि अन्वय निश्चयार्थ में है; अथवा बादशाह से युद्ध करने में विजय का संदेह  
 है तोभी उस युद्ध करने में किसीको अप्रीति नहीं है, उस अर्थ में यह नि  
 निषेधार्थ में है] § उन राजाओं ने इसप्रकार वीर रस के उद्दीपन के दोक्त  
 देकर ॥ शरीर छाड़ना अंगीकार किया ? आश्चर्य करानेवाली बर्षा ॥ १२ ॥  
 २ स्वर्ग में रहनेवाले (देवता) ३ सेना के ऊपर ४ लखूह ५ युद्ध के मंत्र ६ जि-  
 न्धवी रागनी (वडाराग) ७ सृष्टि ८ सम्राज के सम्मान, यहां तक के १० तीन  
 छन्दों के पन्द्रह ९ चरण, वीकानेर के राजा कर्णसिंह के कहे हुए अक्षर आदि  
 \* में धारण करते हैं ॥ १३ ॥ १४ ॥ ११ आय १२ अंपमि १३ सब दोष मोक्षित  
 १४ ब्रह्मा १५ समुद्र १६ भूमि के पुट १७ वीरों के लड़कों के पात १८ वीरों ने  
 धिले १८ पावन वीरों से; अथवा सेना के वीरों में जोगिनियाँ (देवी की

\*उपरोक्त तीन छन्दों के पन्द्रह चरणों के आदि के अक्षर जोड़ने से मनहरजाति के छन्द का नीचे  
 लिखा हुआ अन्तिम चरण निकलता है जो राजा कर्णसिंह ने कहा था 'भाऊ का भरोसा ज्यों भरोसा  
 दीनानाथका'.

रारिके कौतुकी रुद्र१ पुरोगं चले सब रीभ घनी मनमें चुनि ॥१५॥  
 भाऊ१५५१ मन्यों पहिलो तो प्रहारइहाँ सहिवोइक१साहकीओरको  
 पोछे वनें सु लरैपरिहैं करिहैं पल्लपूजन खड्ग कठोरको ॥  
 बाहुन बाहिनी डारैं बिलोरि जथा मद मारैं अरातिन जोरको ॥  
 यों अवरंग४०१३ करैं अनुताप चुकयो जिम धापरुक्कयो मन चोरको१६  
 तोपनके चलतेहि तुरंगं चमूपर सम्मुह संग चलाइहैं ॥  
 दुर्मर्ग२वेर न फेर दगें जिम भूपर भंजते ऊपर जाइहैं ॥  
 मा० प्रसार घपार मचाइ कितैंक अनीकहिं खगगन खाइहैं ॥  
 अजसों औसी बहोरि वनें न तथा अवरंग४०१३ प्रथा पछिताइहैं १७  
 घोर समेंमें तटाँसेवर्धाभुव पैं जितहीतित भासित भैं रह्यो ॥  
 लोह समैसमके लहिवे छलि छोई छमाछम छत्रन छैंवै रह्यो ॥  
 पानिय छ्वाँ प्रतिमाँप्रतिमाँपैं चढ्यो लख्यो वीर१न भीरु२नछैंवै रखो  
 आसा विधात दुर्य्या वचिवो अबवै किनवै यह संसैय वैरह्यो१८  
 वा समेह जिहि नेक दजोर१ओ साइंस्त२जाफर३कासिम४संगवै  
 यों अरजा कर जोरि करी इक१दीनैक सागन हीन उमंगवै ॥  
 चिन दखाइ रहे चउ१ध्याँ जिनमें अब सज्ज परजुज्जन संगवै॥  
 जो मरिहै तो घनी बजें जंगमें वातिहै रावरो राति कुवंगवै॥१९॥  
 जो नि आडमिहै जसवंत२द्विधारुत द्विदुव भूप दुरचित्तके ॥  
 कर्म२बादिहै भीरकरै विपरीत इहाँ बहु दौचक वित्तके ॥

दासियों) को सांगुनी गिनी १ गवाणा देवतेवाले २ आदि ॥ १४ ॥ ३ आ-  
 कासिम ने कछा ४ सांभ मे ५ हाथों से मंजा को दिला डारेंगे ६ बाहुओं  
 के ७ परमाणाद ॥ १५ ॥ ८ घोर (यहां लच्छा से मोड़ों के नवार, जाना) ९  
 कासिम १० अजस (असिह) ॥ १७ ॥ ११ सयठोर (सब दिशाओं में) १२ सय  
 गवाणा जोरहा है १३ सय जोर सय आकासों के होने से १४ कासिम बरकर १५  
 छारहा है १६ गवाणा १७ गति गति पर अर्थात् इरेक मनुष्य पर १८ बायो का  
 गवाणा दगर (मह) १९ भा २० दोनों ओर अपने ही आकाश का नाश हो रहा  
 था २१ सज्ज २२ ॥ २३ एक मजहब होने के कृपम से २४ मंजा २५ कुरानि  
 से ॥ १५ ॥ २६ लच्छादा [आसिम का राजा] २७ देववाले

बित्त जो लेत न क्यों बैबली भय छोरिन तो लुटिहैं इहाँ भित्तके॥  
 भित्तके पच्छ भरोसा करो मतिमानों इतैं इते भित्त अमित्त के२०  
 जो सब हिंदु जुदे टरिजाइ तो कैसी बनें इनमें हि रहैं किते ॥

मित्त१को पच्छ मिटैं सह मूल अमित्र२उदास३दु२घाँ उँमहैं किते  
 सर्वघाँ सीमा इहाँ इँनकी तिनकी प्रतिकूलता लांह लाहैं किते॥  
 सोचो बिपत्ति हुमायोंसमै अजमेर अधीस करो सो कहैं किते२१  
 साँईस सीमाहुतो यह साह पै मानीयहैं सो भुवाँलन भागतैं ॥

पूँजे तोप पदाति२नके सजे सूर सबै करे दूर कुमार्गतैं ॥  
 लाख चुहान सों पंच५०००००इतैं लाहि लाख पचीस २५०००००  
 कैबन्ध२कों लागतैं ॥

साँईसमुद्रा इती३००००००क समेटि ससाँईससाहसँम्यो इन आगतैं  
 कर्नकों औसैं बचावनकों जस हाका जग्यो चहुँ४घाँ चहुवानको ॥  
 कृत्यें सो काव्य कविंदनके में इतो प्रसरयो ज्यों सता१९४१सँस  
 आनको ॥

भूप उमै२सों तहाँ सब भूप मिले करि उच्छव ज्यों निज मानको  
 भाऊ १९५१ के पायन कर्ण २ भुवाल परयो गिनि निर्भय दा-  
 यक प्रानको ॥ २३ ॥

कंठलगाइकैं भाऊ१९५१कसो हमकों तो इहाँ ब सँमा त्रय३वहै गयो

१धन के२अब३भीति(शहरपनाह)के भीतरवाले४मित्र के पच्छ का भरोसा मत करो  
 अर्थात् यवन लोग आपके मित्र हैं जिनके भरोसे पर मत रहो क्योंकि यह  
 इतने आर्य राजा ५ मित्र हैं सों अमित्र होरहे हैं ॥२०॥ ५ उदासीन (तटस्थ  
 रहनेवाले) ७ बसाह (उत्साह) करेंगे ८ हिन्दुओं की ९ लाभ ॥ २१ ॥ १०ठ  
 की सीमावाला यह बादशाह था परन्तु ११राजाओं के भाग्य से मानलीतोपें  
 और पैदलों के १२समूह सके हुए जो बीर थे उनको उस कुमार्ग से दूर किये  
 १३राठोड़(बीकानेर के राजा) को इतने रुपये लगते ही १४दंड के रुपये १५बह  
 इठ १६ शान्त किया ॥ २२ ॥ १७ कार्य १८शत्रुशाल के समान अन्य का यश  
 ऐसा कभी नहीं हुआ ॥ २३ ॥ १९ तीन वर्ष

सीखको पाइवो आयो समीप सु पै अहो साहको साहस खैगयो  
 आयेहो आप इहाँ अबही पुरमें प्रबिसो इम भ्रंसेको भै गयो ॥  
 कीनी सोकया त्यों सेस रसेसन संघहुँ गेहकों सिक्खहिँ दैगयो २४  
 यों रहि तीन इसमा कछु ऊँन सबै जिन सत्रह १७२४ संवत अंतर ॥  
 बापसों कीगति आप बढाई गवाइ कविंदन छाइ दिगंतर ॥  
 आपनों धर्म निवाहि अहो सिरदैन सज्यो बहुबेरके संगर ॥  
 यों जय सिक्खलै बुंदीअधीस पुरी प्रबिस्यो सक उँक्त १७२४ समा पर  
 संवत सोहि इतैं जिन सत्रह १७२४ मान गयो तँई साह महामति ॥  
 लंधन सासक चारलिंसाख्य सो कंपनीकों दई बंबई संप्रति ॥  
 अब्दै चतुष्टय ४ साहअधीन रही अब कंपनी पाई जथा रँति ॥  
 बानिजको व्यवहार बढाई सु पै गिनि मुख्य पुरी त्रय संगति २६  
 यों इन अब्दन भाँहिँ उदैपुर राजपदोंदिकसिंह जो रानहो ॥  
 ता समै या जगतेस तँनूजके दास जो हीरक मंत्री प्रधान रहो ॥  
 राज्यमें कोऊ स्वतंत्र न राखि सबै तस तंत्र करे यों सुजानहो ॥  
 भेदी असेस सो हीरक भृत्य अधीसके नासमें उँद्यगवानहो ॥ २७  
 मुख्य वहाँ रानके जो ही कुमार सु पै अभिधाँ करि सो सरदारहो  
 जो भगवंत १९५३ सुतापति जानहु धर्मधुरंधरता जैत धारहो ॥  
 पट्टकुमारकी ही जो पैसू तिहिँ हीरक भेदि तन्धों इक तारहो ॥

१ बादशाह का हट भिद गया २ नाश होने का भय गया ३ जाकी के राजाओं के  
 ४ समूह को ॥ २४ ॥ ५ तीन वर्ष से कुछ कम ६ घुसा ७ कहे हुए विक्रम के शक  
 के सम्वत् में ॥ २५ ॥ ८ चार्लिस नामक ९ सौदागरों के समूह को अंगरेजी  
 भाषा में कंपनी कहते हैं १० इस समय ११ चार वर्ष १२ प्रीति के अनुसार ॥ २६ ॥  
 १३ राज शब्द है आदि में जिसके अर्थात् राजसिंह १४ इस महाराजा जगत्सिं  
 ह के पुत्र [राजसिंह] के हीरदास नामक सलाहकार और प्रधान [दीवान]  
 था १५ अधीन १६ अपने स्यामी के नाश में उपाय करनेवाला था ॥ २७ ॥  
 जिसका १७ नाम सरदारसिंह था १८ नियम का धारण करनेवाला था  
 १९ पाटली कुमार की माता को ही हीरदास ने भेद कर यह तंत्र रचा कि पुत्र  
 को गद्दी मिलाने के कारण पति को सरवा डाले।



पुत्रके काज हतैं पतिकों बिरच्यो इम पापिनी पापविथारहो ॥२८॥  
 पापिनीके सरदारसो पुत्र हुतो पै सुतो अपराध बिहीन हो ॥  
 जाकी प्रसूही रच्यो यह जाल सो कँतिय ७स्वेत १मैं स्वीकृतकोन हो  
 भूँति बिसासको हीरक भृत्यके ऊँरुज नाम दयालु अधीनहो ॥  
 रान १के हीरक २ज्यो रुचिमैं इम हीरक २के यह ३प्रत्यय पीनहो २९  
 ऊँरुज दीपावलीकी निसा यह सासुरै जावनलागो समीपही ॥  
 हीरक तापैं प्रसन्न वहाँ होइ कटारी स्वकीयं सो बैरु यहै कही  
 सासुरेभैं डिगसो हनो सस्त्रन लै यह जाहु ज्यो जानैं स्वयं लही  
 सो लै दयालु इती समुझ्यो न सम्हारिकैलै कछु जैवो भलोनही ३०  
 हीरकसो कछु अंतर व्हैकें सम्हारी दयालु कटारी सो सत्वर ॥  
 कोस तँदीयमें पत्र कढ्यो सब राज्यके अंगनकी लिपि संकर ॥  
 मारिकें रानकों सर्व मिलै बइठारिहै कालिह कुमारकों बिष्टर ॥  
 पै कही रानी जो ताकी प्रसू वाकी डाकिमी ताहूरहैं सबऊपर ३१  
 देखि यो जो अघपत्र दयालु हो हीरको पै पलट्यो हिय हालही  
 सासुरेको तजि जैवो सुपै पुहँधीस प्रकोष्ट क्रम्यो ततकालही ॥  
 रान बुलाइ त्वरी अवरोधतैं सौँप्यो सोपत्र निभालकें सालही ॥  
 लै यह रान ज्यो प्रानलाये महाकालनिसा मची दीपकें मालही ३२  
 सूची जो रानी प्रँतू सरदारकी जातिकी हाडी ६१के ताहि जनावत  
 ताहिको बाँसक हो सो तहाँ पुनि रानाँ गयो छलछिद्र जो पावत

१ विस्तार २ कर्तव्य मास के शुक्लपक्ष में यह अपना कार्य करना ठहराया था  
 ४ तनजायाला हीरदास का लेखक ५ वैश्य [वर्णियाँ] ६ दयालदास नामक आधीन  
 था ७ पूर्ण विश्वासपात्र था ॥२९॥ ८ वह वर्णियाँ १ दीवाली की रात्री में २० अपनी  
 कटारी देकर ॥३०॥ ११ शीघ्र १२ इस कटारी के मियाज के संहारिये में १३  
 राजा के मुख्य लोगों के १४ लेख लिखित संकर [मिलाष्ट्रज्ञा लेख] १५ सिंहासन  
 पर १६ सरदारसिंह की माता ॥३१॥ १७ राजा की १८ हाडी पर १९ गया [चला]  
 २० राना को शीघ्र २१ जनाने से बुलाकर २२ देखने से निश्चय हो शाल रूपी  
 २३ दीवाली की उस रात्रि में बड़ी कालरात्रि मची ॥३२॥ २४ माता २५ घर

मारि गदा करि सो महिला जन ताके असेस हनैं तिम जावत ॥  
 पापी सु धाड़ उदैपुरमें सबही पकरे सुनैं जेहु नैसावत ॥ ३३ ॥  
 माताको मारिबो जानि कुमार अमंतुहोपै सुनि जा अभिसापकों  
 काय तज्यो द्रुत काहु प्रकार बहोरि दिखायो न आनन बापकों ॥  
 सूचित हीर लयो सरनैं सो पुरोहित रानके जानिन पापकों ॥  
 केते कहैं नहीं हीर कढयो तस पुत्रही गो सरनैं लाखि तापकों ३४  
 केते कहैं तस बंधु कढयो हितसों सरनैं सुहि राख्यो पुरोहित ॥  
 कोइ कढोपै पुरोहितको कुल १ हीरक के कुल २ ज्यों दल्यो द्रोहित  
 ओरहू जे हुते या अधतैं स कुटुंब ते कोलहू पिलाइकैं सोहित ॥

१ उस स्त्री का गुरज से मारी २ नाश किया ॥ ३३ ॥ ३ निरपराध  
 [निर्दोषी] था परन्तु उस ४ झूठे दोष को सुनकर ५ शरीर ६ छोड़ा १ फिर  
 पिता को सुख नहीं दिखाया. यह पाप नहीं जानकर पुरोहित ने हीर को शरण  
 लिया ॥ ३४ ॥ ७ द्रोह करनेवाले ने ८ पापी में पिलाकर ९ शोभित हुआ

अमेवाड़ के इतिहास बीरनिनोद में यह वृत्तान्त इसप्रकार से है कि कुमार सरदारसिंह की माता ने अपने  
 पुत्र को राज दिलाने के कारण महाराणा के मन में सन्देह कराकर बड़े कुमार सुलतानसिंह को मरवाडाला  
 जिस पीछे बड़े पुरोहित के नाम एक पत्र लिखा कि सुलतानसिंह को तो मैंने मरवाडाला अब दरबार को  
 भी जहर दे दो कि मेरा बेटा सरदारसिंह राजा होजावे, इस पत्र को पुरोहित ने अपनी कटारी के खोसे  
 में रख दिया, जब पुरोहित का नौकर दयालदास वैश्य अपने ससुराल देवाली नामक गांव में जाने लगा  
 तब उसने पुरोहित से कोई शस्त्र मांगा और पुरोहित ने वही कटारी दयालदास को दे उसका खासा  
 (भंडारवा)खोल कर देखा तो वह पत्र दयालदास को मिला जिसको पढ़कर उसी समय देवाली से एक कोस  
 पर पीछा उदयपुर आया और उसी आधी रात को वह पत्र महाराणा राजसिंह को दिखाया जिसको देखते  
 ही महाराणा ने क्रोध में होकर भीतर जाकर उस राणी [सरदारसिंह की माता]को गुरज की देकर मार डाली  
 और प्रभात होते ही पुरोहित महलों में आया तब उसी गुरज से उसको मारा यह वृत्तान्त सुनकर  
 निर्दोषी कुमार सरदारसिंह ने बहर खाकर आत्मघात किया और मरते समय निम्न दोहा अपने हाथ से  
 लिखकर मस्तक नीचे रख दिया.

“पांणी पिंड नण्हि, पिंड जातां पांणी रहै ॥ तो चातारसी वणांह, सपना उवें सरदारसी ॥ १ ॥”

इस पीछे महाराणा ने दयालदास वैश्य को अपना प्रधान [दीवान] बनाया और इन पापों से छूटने के  
 कारण राजसमुद्र नामक बड़ा तालाब बनाया उस समय में बड़ा पुरोहित गरीबदास था परन्तु उसको  
 मारना नहीं पायाजाता. इससे ऐसा जाना जाता है कि यह पुरोहित गरीबदास के भाइयों में से  
 कोई होवेगा.

पापिश्नमें गिनिकेही अपाप२तयो अघ रान कियो पुर लोहित३५  
जानै न पापको गंधहु जे पै सुनै इम रान हजारन संहरे ॥

बाहिर हे ते वचे बलसौ पुरके तो घनै जमजंत्र पिले परे ॥

वानिज सोही दयालु बिसासि मुसाहिब मानि टराइ जिते टरे ॥

ते जन सर्व करे तस तंत्र चवी सब पंथ चलो अंब उबरे ॥ ३६ ॥

कृष्ण१९६।१ बुलाई स्वसा पहिलैं कछु आई गुगोर सुता भगवंत

१९५।१ की ॥

स्वामी मरयो वहाँ सुन्यो सरदार करयो सहगोन लही गति कंतकी

संवत मान पचीस रु सत्रह१७२५निंदा नची यह रान उदंतकी ॥

ऊर्ज७सिता१दि१की के उत१के इत२केके लिखैं यह आश्विन

६ अंतकी ॥ ३७ ॥

रानसौ वहे यह पापकराल भई जगनिंदक हाक भयंकर ॥

अर्चकलो नसुनै जिन्ह अंग उमंग न रंचक राखैं कही और ॥

पीछैतै रान तथा पिछताइ बुलाइके पंडित पूछि महीवर ॥

राजसमुद्र तड़ांग१रच्यो रु दयालु रच्यो हर्मिमंदिर दुस्तर ॥३८॥

रानको छोटीकुमार रह्यो जयसिंह सु पे इहिं पाप घनौ जरयो ॥

तानै जयोदिसमुद्र तड़ांग३कुमारनै तातहुसौ बढतो करयो ॥

तापर ईश्वरा आनिकैं तात बडोहु सो ताल कहयो जरि डीवरयो

१नगर को लाल कर दिया ॥ ३५ ॥ २ बनियां ३ आधीन ४ कहा ॥ ३५ ॥ ५ कृ-

ष्णसिंह ने अपनी बहिन को ६ पुत्री ७ पति ८ सती हुई ९ प्यारे की गति

ली १० रानी के वृत्तान्त की ११ सेवाइ के बड़वाभाट आदि ११ कार्तिक

सुदि एकम लिखते हैं और १३ बुंदी के बड़वाभाट आश्विन सुदि पूर्णिमा

लिखते हैं ॥ ३७ ॥ १४ जिसके अंग पर कोई पूज्य पन नहीं सुना अर्थात् कोई

राज्य चिन्ह नहीं पहना और १५ शीघ्र ही उस राजसिंह ने कहा कि मुझको

राज्य की कुछ भी उमंग नहीं है १६ बड़े श्रेष्ठ लोगों से पूछा; अथवा पण्डितों

से बड़ा वर पूछा १७ तालाव ॥ ३८ ॥ १८ जयसमुद्र तालाव १९ पिता

से भी बड़ा बनाया २० राजसिंह ने उस तालाव का नाम जलकर

जाहिर नाम भयो तस जोह्रितऊ वह ताल बदै अति बिस्तरयो ३९  
 बुंदी इतैं नृप भाऊ १९५। १ प्रवीर प्रबुद्धन पूजिकैं वेदविधानसों ॥  
 अस्तखाँ के अब कुंभ उतारयो सो पीछो चढाइकैं रीति प्रमानसों  
 धर्मसों राज्य जमाइ धुरंधर भूपन मुख्य रह्यो रहि भानसों ॥  
 अजहुँ जाको लै नाम असेस करैक्य १ विक्रय २ काढि दुकानसों ४०  
 यों सिवराज सितारा अधीसको दोरै मच्यो अति जोरको दक्खिन  
 पावत साहनैं ताकी पुकार तयार करयो नृप संभरी तर्कखन ॥  
 भाऊ १९५। १ मन्यो इक १ मो भगिनी सु बिवाह बै' है अब साखकी  
 संकिखन ॥

याकों सबेग बिवाहि इहाँ १ पुनि दास उहाँ २ दहैलि परपंकिखन ४१  
 ऐसी बैलापति दे अरजी बलि ठानि पैंपंच स्वसाके बिवाहको ॥  
 रानकै पुत्र जो मुख्य १ रह्यो सो बरयो कछु टारक सासन साहको  
 व्याही स्वसा वह ताकों बुलाइ निदेस सो चिति सता १९४। १ न-  
 रनाहको ॥

गंगा १९५। ५ को व्याहि उदैपुर गो सैंवधू जयसिंह लैबोल सराहको  
 व्याह्यो व्है रान किते यों वदै सु पे पैंच्छ गिनोँ निहचैन सम्हारिकै

देवर \* रक्खा १ फैलाहुआ ॥ १६ ॥ २ चिदानों को ३ पाटण के मंदिर का  
 कलश ४ आज भी ५ व्यापार ॥ ४० ॥ इधर सितारा के पति का ६ फैलाव  
 ७ चढ़ाव को ८ उसी समय ९ अवस्था १० साची से ११ शत्रुओं को  
 ॥ ४१ ॥ १२ आडा बला नामक पर्वत का पति १३ रचना १४ बहिन के  
 बिवाह की १५ बादशाह के हुक्म को नहीं माननेवाला १६ स्त्री सहित  
 ॥ ४२ ॥ १७ कहते हैं १८ इसमें निश्चय पक्ष कौनसा है सो नहीं जाना गया

\* बहनामाओं की लिखी हुई या कोई अन्य लोगों की प्रसिद्ध की हुई यह कथा ग्रन्थकर्ता [सूर्यमल्ल] के  
 कथनानुसार तब राजपूताना में प्रसिद्ध है परन्तु इसमें है क्योंकि मादाराणा राजासिंह के देगंत सम्वत् १७३०  
 में हुए पीछे जयसमुद्र तालाब का काम सम्वत् १७४४ में प्रारम्भ होकर सम्वत् १७४८ में समाप्त हु-  
 या है और पर्वतों के जिन नामों को मास्कर यह तालाब बनाया गया उस नामों का नाम देवर या  
 इसकारण इस तालाब का नाम देवर का तालाब प्रसिद्ध हुआ है ॥

दायजमें सब दूरन दये नृप भाऊ १९५१ स्वतंत्र सो व्याह निहारिकें  
ताहूँ नै त्याग दयो दिपंतो पट १ भूखन रहै ३ गै ४ स्वयं भोजि ६ प्रसारिकें  
भाम १ नै सालक २ प्रीति भजी सजी भाम १ की सालक २ धी हित  
धारिकें ॥ ४३ ॥

संभरें व्याहि यौ गंगा १९५५ स्वैसा पुनि साह स्वैरा लाखि साजि  
प्रयानकों ॥

रानी कितो इहाँ रखि स्वसंग लई किति बाहिर मंडि मिलानकों  
ओरंगाबाद गयो दरकुंच यौ मानी बढावत बीरन मानकों ॥

पास बसाइकें भावपुरा १ निबैरयो तहाँ सज्जन संक. निदानकों ॥ ४४ ॥  
कृष्ण १९६१ कुमार गुगोर गयो बंजि बारा १ मऊ २ जिहिं खोई  
कुबुद्धिसौ ॥

गो अब दिल्ली यहै पैर गो न सभालग जोलों स्वभाव बिस्वुद्धिसौ ॥  
बार १ मऊ २ की दई लाखि विन्नति काहू कसो तँहँ साहहे कुद्धिसौ ॥  
सो सुनिकै भजि भीत सिटाइ गयो सो गुगोर लगी हिय लुद्धिसौ ४५  
जोपै मुकुंद १९४१ तनै जगतेस १९५१ लखाइकै अस्तमरार त्रिल-  
कख ३०००००० ॥

लोभी इजारा मऊ इक १ लैकै चुभयो हिय कृष्ण १९६१ कैं आस-  
य चकखन ॥

संबत भू गुन सलह १७३१ में इत कृष्ण १९६१ गुगोर पित्तमही  
अकखन ॥

सो भगवंत १६५३ की दूजी २ सुता परिनाई स्वसा निज बुद्धि लौपकखन

१ स्वतंत्र राजा से व्याह हुआ देवकर २ प्रकाशमान [प्रसिद्ध होने योग्य] ३  
हाथी ४ घोड़ा ५ खन ६ ऊट ७ पहिनोई ने = साले से प्रीति की १ हित की  
बुद्धि धारण करके ॥ ४३ ॥ १० अष्टमयुध ने ११ गंगा नामक बहिन को १२  
शीघ्रता १३ अपने साथ १४ नगर के बाहिर मुकाम करके १५ निवास किया  
॥ ४४ ॥ १६ फिर १७ परन्तु सभा तक नहीं गया १८ विशेष शुद्ध स्वभाव से  
१९ लोभ से ॥ ४५ ॥ २० दादी के कहने से ॥ ४६ ॥

भाऊ १९५१२ तहाँ घर सासन भेजि नरूकी प्रसू जिन जीवत जानिकैं  
दूसरी रानी जो भाउल देवि १९५१२ पठाई गुगोर स्वमेह प्रमानिकैं  
रामपुरा मुहुकम्म नरेसको पुल गुपाल तथा पहिचानिकैं ॥

कृष्ण की १९६१२ जामि जो मानकुमारि १९६१२ सो ताहि बिचाहि  
दर्ई मेह तानिकैं ॥ ४७ ॥

जानि इतैं अवरंगके जोरकोँ राजपदादिक सिंह साँ रानहु ॥  
साहके पायन लागिवो सोधि प्रथासों चमू सजि कीनों प्रयानहु ॥  
नौपित पंथमें सो कमं नाम मिल्यो कवि ओ कह्यो क्यों न हँ मानहु ॥  
नैक अहो कुलरीति निहारि पतासे पितामहतो पहिचानहु ॥ ४८ ॥  
यों मरुबानिमें छप्पई एक १२ नई रचि पंथ पढी कवि नापित ॥  
सो सुनि रान हु चेत सम्हारि सुर्यो प्रतिमग्ग जथा मही माँपित  
मालपुराके प्रमाण ३२ मारि सु पै पुर लूटि करयो किधौँ साँपित ॥  
यों गो उदैपुर ओ इनसों पलटे करि दोह प्रमार ते पाँपित ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

सुर सत्रह १७३३ मित लगत सक, इत श्रीपुष्कर आई ॥

बहु कवि नरहरि बारहठ, बुधजन तत्थ बुलाइ ॥ ५० ॥

एकलक्ष १००००० मितैंसों अधिक, करि मुद्रा किय कैज ॥

पूछि अर्थ तिन्ह पंडितन, सु हुव काव्य हित सज्ज ॥ ५१ ॥

ओर खरचि सरवरव इम, न कवि निकासैं नाम ॥

बुध विप्रन लहि अर्थवल, तिहिं सु काव्य किय ताम ॥ २५ ॥

१ बहिन २ उत्सव ॥ ४७ ॥ ३ रांणां राजसिंह ४ प्रसिद्धि से  
मार्ग में वक्रमा नामक ५ नाई मिला ७ खेद (हाय) ८ प्रतापसिंह जैसे ॥ ४८ ॥

इस अभिप्राय की सरसाया में ९ उलटे मार्ग १० भूमि को सापताद्वया ११

आपयुक्त [जलाया] १२ पापी ॥ ४६ ॥ १३ तहाँ पंडितों को बुला कर ॥ ४७ ॥

१४ प्रमाण १५ कार्य किया ॥ ५१ ॥ १६ पंडित ब्राह्मणों से अर्थ का यत्न लेकर उस

(बारहठ नरहरिदास) ने तहाँ अष्ट काव्य किया ॥ ५२ ॥

\* गवाड़ के इतिहास में महाराणा राजसिंह ने पाट बैठ कर टीका दोह की उसमें मानपुरे को जलाना लिखा है।

भनि रामायन१भागवत२, उभय२मुख्य अनुसार ॥  
भाषाकवितामैं भने, अखिल विष्णु अवतार२४ ॥ ५३ ॥  
सहस्र अष्टि१६०००अरु अष्टसत् ८००, एकसष्टि६१तिन्ह अग्ग ॥  
आर३अष्टमी८सुं८चि४असित२, सो किय ग्रंथ समग्ग ॥ ५४ ॥  
कावि अवतारचरित्र१करि, इहिं प्रबंध अभिधान ॥  
क्रम लिखाइ तिम रूपात किय, पुस्तक सतर्न प्रतान ॥ ५५ ॥  
संकृति २४ मित अवतार सब, हरिके जाबिच हैहि ॥  
राम१।२१कृष्ण२।२२विस्तररचित, द्युतिहिं प्रकासत द्वै२हि ॥ ५६ ॥  
असो कवि चारन अपर, भाषा कैविवर भो न ॥  
जाकी कविता भक्तिजुत, कित्ति लहत चहुँ४कोन ॥ ५७ ॥  
पुब्बहि इत आमैरपुर, सो नृप मृत जयसीह १ ॥  
रामसीह२तस पट्टलहि, लहिय राज्य जस लीह ॥ ५८ ॥  
कुलपति२माथुर बिप्रकुल, भाषाकवि जिहिं रूप ॥  
सादर बुद्धि प्रसाद सह, सीक बिंरचि अनुरूप ॥ ५९ ॥  
दोनपर्व७।१भारत बिदित, अर्थ तास अनुकार ॥  
ग्रंथ रचायो नाम करि, संगीमादिकसार ॥ ६० ॥  
सुर सत्रह मित१७३३यहहि सक, बदि२फगुन१२गुरु५वार ॥  
सप्तम७तिथि तँहँ ग्रंथ सो, किय प्रारंभ प्रकार ॥ ६१ ॥  
भाषा ग्रंथनमैं भलो, प्रविदित यहहु प्रबंध ॥  
पद असाधु बहुठाँ परत, सुतो हरत दृढबंध ॥ ६२ ॥  
इक संबतविच ए उभय२, बनै ग्रंथ दिरूपात ॥

॥५३॥१मंगलवार२आषाढ मास कृष्णपक्ष१समग्र ॥५४॥४इस ग्रन्थ का नाम है  
सैकड़ों पुस्तकें फैलाकर प्रसिद्ध किया ॥५५॥७प्रमाण८विस्तार पूर्वक प्रकाशित ॥५६॥  
१० अन्य भाषा में ११ अष्ट कवि नहीं हुआ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १२ प्रसन्नता  
सहित बुलाकर १३ अपने स्वरूप के अनुसार ॥५९॥ १४ सहस्र१५संग्रामसार  
॥ ६० ॥ ६१ ॥ १६ विशेष प्रसिद्ध १७ ग्रन्थ १८ अशुद्ध १९दृढ़ प्रतिज्ञा कालाश

कुलपतिश्पावन रीक्षकिय, नरहरि लोभ निपात ॥६३॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी  
भूषभावसिंहचरित्रे यवनीकरणार्थविक्रमनगराधीशकरणसिंहोपरि  
यवनेन्द्रौरंगजेबसैन्यप्रेषणतत्सहायभावसिंहतदन्तिकगमन१, जाफ  
रखांप्रभृतिप्रार्थनौरंगजेबसैन्यप्रत्यागमनेनोभयभूपमृत्युमुखोदरण२,  
मोहमयीपत्तनस्यांग्लकरपतन ३, उदयपुराधीशराजसिंहच्छद्मघात  
प्राकट्यहेतुराज्ञीपुरोहिताद्यनेकमरणकुमारात्मघातमरण ४, राज-  
समुद्रजयसमुद्रकासारनिर्मितिभणन ५, महाराणा राजसिंहमालपु-  
रप्रज्वालन ६, महाराणा जयसिंहस्य भावसिंह भगिनीपरिणयन ७, यव-  
नेन्द्रौरंगजेबनिदेशसैन्यभावसिंहस्य दक्षिणात्यसितारानगराधी-  
शशिवराजक्रमण ८, चारणद्वारहठनरहरिदासस्यावतारचरित्रप्रबन्ध  
रचन ९, कुलपतिमिश्रस्य संग्रामसारग्रन्थनिर्माणसूचनमष्टमो  
मयूखः ॥ ८ ॥

करते हैं ॥ ६२ ॥ १ नरहरिदास ने लोभ का त्याग कर दिया ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भा-  
जसिंह के चरित्र में यवन करने के अर्थ बीकानेरे के राजा कर्णसिंह पर बाद-  
शाह औरंगजेब का सेना भेजना और कर्णसिंह की सहाय पर राव भाजसिंह  
का कर्णसिंह के पास जाना १, जाफरखां आदि की अरज से औरंगजेब का  
सेना को पीछी बुलाना और इन दोनों राजाओं का मृत्यु के मुख से वचना  
२ बंबई नगर का अंगरेजी कंपनी के हाथ में पड़ना ३ उदयपुर में महाराणा  
राजसिंह को छलघात से मारने का यत्न प्रकट होजाने के कारण रानी और  
पुरोहित आदि अनेक मनुष्यों का माराजाना और कुमर सरदारसिंह का आ-  
त्मघात करके मरना ४ राजसमुद्र और जयसमुद्र तालाबों के बनने की कथा ५  
महाराणा राजसिंह का मालपुरा को जलाना ६ राणा जयसिंह का राव भा-  
ज की पहिन को बिवाहना ७ बादशाह औरंगजेब की आज्ञा के अनुसार सेना  
सहित दक्षिण में सितारा के पति शिवराज पर जाना ८ चारण बारहठ नरह-  
रिदास का अवतार चरित्र नामक ग्रन्थ बनाना ९ कुलपति मिश्र के संग्रामसार  
नामक ग्रंथ बनाने की सूचना का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि  
से दो सौ पैंतीस २३५ मयूख हुए ॥



आदितः पञ्चत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

गो भजि जो गूगोरगढ, कुपित साह सुनि कृष्ण १९६।१ ॥

सूचित पुनि व्याही स्वसाँ, वसु बहु वितरि वितृष्ण ॥ १ ॥

पुव्वहि हो साहहु कुपित, रनपट्टनि अपराध १ ॥

वने उभय २ अपराध बलि, बिधि समस्त करि बाध ॥ २ ॥

गो दिल्ली पै डरि न गो, दिल्लीपति दरबार ॥

मरजी बिन बाराँ १ मऊ २, चाहयो लैन विचार २ ॥ ३ ॥

बिनाँ मिलें भजिगो ३ बहुरि, अति रिस तातें आनि ॥

इनन विचारयो हड्ड ६ १ कौं, मुगल निरंकुस मानि ॥ ४ ॥

दूजो २ हो दिल्लीसकै, सुत जो आलमसाह ४ १ २ ॥

पठयो ताहि अवंति पुर, राबि सूबापति राह ॥ ५ ॥

भगवंत १ ९ ५ १ ३ हिं गरलँद भन्यो, जो खल खानवजीर ॥

तिहिं बिडारि इमानिजतनय, मालव पठयो मीर ॥ ६ ॥

क्रमतवेर तासों कहयो, सठ कृष्ण १ ९ ६ १ २ हु तव संग ॥

ताहि इनहु कछु छिद तकि, सँहसा पटकि प्रसंग ॥ ७ ॥

आलम ४ १ २ सुत समुझाइ इम, पठयो कथित प्रदेस ॥

दै फरमान रु संग दिय, ऐस कृष्ण १ ९ ६ १ २ भनि ऐस ॥ ८ ॥

अबतैं तू आलम ४ १ २ अनुग, सासन मम अनुसार ॥

कथितैं तास अविर्त करहु, मालिक गिनहु कुमार ॥ ९ ॥

॥ वेताल ॥

१ बादशाह को जोधित सुनकर २ कहीहुई वहिन का विवाह किया ३ धन ४ देकर  
५ तृष्णा रहित ॥ १ ॥ ६ पाटण के युद्ध को ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ विष देनेवाला ८ निकाल  
कर बादशाह ने अपने पुत्र को भेजा ॥ ९ ॥ १ चलते समय २ ० अचानक ॥ ७ ॥ १ ॥ इस  
कृष्णसिंह को १ २ यह कहकर ॥ ८ ॥ १ ३ सेवक १ ४ उसका कहना १ ५ निरन्तर करना

दल दौर घोरन जोरतव गूगोर तौर दिखाइ ॥

मगमाँहिँ आलम४१२सौँ मिल्यो यह कृष्णसिंह१९५१हु आइ ॥

उपदा१रु बलि२ करि रीति आश्रित सद्धि थान सलाम३॥

कर जोरि अक्खिय दासको सिरहै ब साहन काम ॥१०॥

भगवंत१९५३ सौँ अतिमेयँ लै प्रतिदेयँ सो नवभूप ॥

भाखी सुँठाँ लहि संग भौ रहि रीतिके अनुरूप ॥

निज चित्त चिंतिय साहसुत इहिँ होइ बहु नरनास ॥

छलि मारिवो सुनि छन्न व्है प्रति बीर कति इहिँपास ॥११॥

इम सोचिकैँ किय कृष्ण१९६१आलम४१२स्वीयँ बेगम संग ॥

भ्रम टारि पुष्प करंडिनी चलि सद्धिहौँ खल भंग ॥

दरकुंच हंक्रिय थप्पि यौँ नियराँयि उक्त प्रदेश ॥

अरु सुँक३सुँभ१ चतुर्दसी१४दिन ताजपुर रहि एस ॥१२॥

श्रुति बन्दि सलह१७३४मान संवत पूर्णिमा१५तिथिपाइ ॥

पँधिस्पो सु पुँष्पकरंडिनीपुर एम आलम४१२आइ ॥

आवासहो जँहँ आपनौँ तँहँ पैत सैत्वर एह ॥

गहि बाँह कृष्ण सु१९६१लैगयो जिम मित्र अप्पन गेहा१३॥

करि छँदा घातक सज्ज अप्प टस्यो कछू मिस कँस ॥

कर कृष्ण१९६१पैँ तिनके चले इत चोर जानि कँरास ॥

तस बीर सज्ज प्रकोष्ट हे तिन हक्क अंदर होत ॥

सह हल्ल पैठन क्यों करयो जिम मीन प्रतिमुख सोत१४

जिनमैँ कटे बहु रँवामिलौँ नवबीर पहुँचेजाइ ॥

१ सेना के २ कैलाब से ३ प्रताप ४ नजर ५ न्यूकावर ६ अब ॥ १० ॥ ७

प्रमान ८ पीछा दिया ९ नवीन राजा पन १० ओष्ट जगह ११ मनुष्यों का ना-

म ॥ ११ ॥ १२ अपनी बेगम के साथ १३ स्थान का नाम है १४कहे हुए प्रदेश

को समीप लेकर १५ ज्येष्ठ १६ खुदि ॥ १२ ॥ १७प्रवेश हुआ १८नगर का नाम

१९महल २०पहुँचा २१शीघ्र ॥ १३॥ २२छलघात करने वाले को२३पास से२४बुरे

दंग से २५ द्वार पर २६ उलटी धारा में मँची जावे जैसे ॥ १४ ॥ २७अपने स्वा-

भारे सपातक स्वामिघातक खगग फगग मचाइ ॥  
 कटि चूक पूरन टूक सूरन उच्छटे चहुँ४कोद ॥  
 चहुँवान१मिच्छ२नके चले बहु पाँनि तानि विनोद ॥१५॥  
 जँहँ रंगरंग सुगंध नीर१प्रसून२मनि३गन जोग ॥  
 भारिगो सुथान कृपान कर्तित अस्थि१पल२आभोग ॥  
 त्रय कृष्ण१६६११करतँ कटिपरे कटिमिच्छ घातक तत्थ ॥  
 खिल बीस२०रखिखय खेत जे समवेत हड्ड६१न सत्थ ॥१६॥  
 लखतो रहयो सु अटा चढयो सुत साहको यह लाभ ॥  
 तल लुत्थि लुत्थिनपै लगी हुव चूक वह तुमलाँभ ॥  
 तँहँ ए परे दस१०स्वामि१संजुत पारि अरि तेईस२३ ॥  
 सिव अर्थको हु रहयो न वहाँ खिरि खंड संभर सीस ॥१७॥  
 इम बेदराम३४प्रमेय संवत सुँक्रके३सित१अंत ॥  
 गुगोरको नृप काम आयउ प्रेरि कित्ति दिगंत ॥  
 दिल्लीपुरी सैन भीरु ज्यौं तब त्यों भन्यौं सुनि दोह ॥  
 अब बीर यौं स परयो अँवतिय लागि बुँत्थिन लोह ॥ १८ ॥  
 ढिग पंच५धीर सगोत्र१बीर परे अरातिनँ लाहि ॥  
 असगोत्र२च्यारि४करे उहाँ दस१०गोत्र ए अब आहि ॥  
 लरि सदाराम१पहार२भैरव३केसरी४अरु लाल५ ॥  
 तँहँ हड्ड६१पंच५हि ए खिरे जिम टूक लोभन ताल ॥ १९ ॥  
 सीसोद भारत१भारमल्ल२उभै२कटे पहु संग ॥

मी ( कृष्णसिंह ), पर्यंत १ पाप साहित २ स्वामी को मारने वालों को ३ चारों दिशाओं में ४ हाथ ॥ १५ ॥ ५ पुष्प ६ खड्ग से कटेहुओं से ७ हाड और मांस से परिपूर्ण होकर ८ बाकी के ९ मिलेहुए [साथ] १० हाडों के साथ ॥१६॥ ११ आकाश को भर देनेवाला १२ शिव के काम का [पूर्णमस्तक] कोई नहीं रहा अर्थात् सब के मस्तकों के टूक टूक होगये १३ चहुँवाण का मस्तक ॥१७॥ १४ ज्येष्ठ सुदि के अन्त में १५ दिल्ली से १६ जलैन में १७ शस्त्रों से लोथें [मृतक शरीर] लगकर ॥१८॥ १८ शत्रुओं को गिरा कर-१९ हरताल से कसों के डुकड़े होजाते हैं तैसे ॥ १९ ॥

आनंदशङ्कनाम कबंध चालुक लाल ११४ खंडित अंग ॥

ए० ज्यों नव० गृह कृष्ण १०६ ११ ज्यों सिसुमार १० इन्ह आधार

वहै टूक ए दस १० ही अरे बहु मारि मारनहार ॥२०॥

इत १ के प्रवीर प्रकोष्ठ बाहिर तुट्ये इकतीस ३१ ॥

उत २ केनकी गिनती न जाहिर भइ प्रमानहु ईस ॥

तिम कृष्ण १०६ ११ मारन दक सुनि खिल सत्य भजि गतास

पठई चमू तिनकेहु डेरन पै प्रकोप प्रकास ॥ २१ ॥

दुव २ देस बगड पै बजै सीसोद राउल दोइ २ ॥

हो तथ दोउ २ न माहिंसै इक १ जास संभव होइ ॥

कति लोग भजि रुतास डेरन उब्बरयो ततकाल ॥

बलि गो कितो गूगोर भजि तजि सिबिर सून्य बिसाल २२

बिनुसंक डेरनको सु वैभव लुटि मिच्छन बात ॥

सब लैगयो जिहि हथ जो परिगो सु जै दरसात ॥

गय हो गनेसवतार १ सो गयलूट कारन गैल ॥

गज तिलक २ दूजो २ नांग यो सह कोप सासु कि सैल ॥२३॥

मदमूढ मिच्छन हो लयो करटी सु गोलन मारि ॥

पुतनाप्रदेस अरथ सो दुव को सकै वै पुकारि ॥

सूबा अवंति अधीन हे नृप जे हुते तहँ सर्व ॥

उनके अचानक मंतु खोजत भो अचिज अखर्व ॥२४॥

द्विज जो पुरोहित कृष्ण १०६ ११ को तहँ हो भवानियदास १

खिलमै जु मुख्य १ हुतो द्वितीय २ सु स्थाभरूप २ खवास ॥

१ तारा मंडल २ मारने वालों को ॥२०॥ ३ डयोही के बाहर ४ हे स्वामी रामासह  
५ बाकी की सेना (साथ) ॥ २१ ॥ ६ बागड देश के पै अर्थात् पति ७ मलेच्छों  
का समूह लूट लेगया ८ जय दिखाते हुए ९ हाथी १० हाथी ११ मानों प्राण  
साहित पर्वत ॥२३॥ १२ हाथ १३ उस हाथी को १४ सेना का प्रदेश १५ वन (शून्य)  
होगया १६ अब १७ अपराध हेरने में १८ आश्चर्य १९ १० बाकी के लोगों में

ए द्वैरहि राउलकेर डेरन मुख्य है अवसेस ॥

सीसोद पुच्छिय द्वैरहिसों कछु बुद्धहै किं कलेस ॥ २५ ॥

सीसोद राउलसों कह्यो द्विज खगग चालन सुदि ॥

बलि गोशकि स्वामि मरयोस्तु निश्चय बुद्ध है न स्वबुद्धि ॥

किय ख्यात राउल विप्रकों तैंहैं काम आयउ कृष्ण १९६ ॥

तृदिवोंक भो स्व स्व वेद ४० सत्थिन जुजिभ देह बिल्ल २६

बहु मिच्छ बाहिर १ बद्धये इम माँहि खल तेईस २३ ॥

सुनि विप्र अक्खिय वाहवाह घनौ धुनावत सीस ॥

बलि हेतु पुच्छत विप्र बुल्लिय अप्प जानहु एह ॥

गहिवो बुरो १ हनिवो भलो २ सुरगेह व्है जिम गेह ॥ २७ ॥

पीछें वकील स्वकीय राउल भोजि आलम ४० ३ पास ॥

सब लुत्थि मंगिय छारि मंचन स्वामि सों सबिसास ॥

चालीस ४० पुद्गल मंच चउदह १ ४ इक्क १ पै निज १ आनि ॥

सिंपातटस्थ पिसाच सोचन ठाम दग्धहु ठानि ॥ २८ ॥

अहैं तीन ३ विप्र १ खवास २ राहि किय अस्थि लैन उपाय ॥

तत्रत्यं लोकन यों कह्यो तैंहैं है न लैन दिताय ॥

यह मुख्य तीस्थ है तहाँ सन अस्थि जाइ अहो न ॥

कछु बुद्धि ऊँहन सुद्धि कारन कोन क्योंसु कहो न ॥ २९ ॥

नर जे बचे सीसोद के तिन्ह ताहि रति निकासि ॥

बलि एहु द्वैरहि चउत्थ ४ वासर त्यों कटे हिय आसि ॥

इन सुद्धि विम १ खवास २ दोउ २ न दिन बुद्धिय आइ ॥

१ हुंगरपुर के राउल के डेरों में चाकी थे ॥ २५ ॥ २ हमारी बुद्धि में आलम नहीं ३ देवता हुआ अर्थात् स्वर्ग गया ४ अपने चालीस माथियों सहित ५ वृष्णा रहित ॥ २६ ॥ ६ कटे ७ कारण ८ जिसमें स्वर्ग घर होता है ॥ २७ ॥ ९ लोपें (मृतक शरीर) १० शरीर ११ लफरा नदी के किनारे पिशाचमोचन नामक जगह पर दाग दिया ॥ २८ ॥ १२ तीन दिन १३ वहाँ रहनेवालों ने १४ यहाँ से अस्थि लेना हित के अर्थ नहीं है १५ तर्कना ॥ २९ ॥ १६ चौथे दिन १७ खबर

गूगोर सेस वचे गये पतिनास त्रस्त पलाइ ॥३०॥

नभ व्योम १७०० सम्वत भद्रमेचक ३ कृष्ण १९६ १ जन्म निदान ॥

मति भिन्न जाइ मऊ लई तेवीस २४ सम वय मान ॥

वपु त्यों तज्यो चउवीस २४ सम वय सुक्र ३ अंतिम १५ स्वेत १ ॥

न कही मऊ पति जानि ही नव ९ नारि तास निकेत ॥ ३१ ॥

बुंदीपुरीहि रही कही तिनमाँहि पंच सु बुद्धि ॥

तिनमाँहि भस्म भई त्रयी सुनि स्वामि नियत न सुद्धि ॥

पटु पंचमी ५ १ तँहँ गोड़ि झल्लिय सप्तमी ७ २ सु प्रवीन ॥

तिम अष्टमी ८ ३ गहोरि बुद्धिय ए जरी तिय तीन ३ ॥ ३२ ॥

तीजी १ १ रु छट्ठि ६ २ य द्वै २ जरी न प्रजावती रहि तत्थ ॥

वैधव्य धर्म विधानतँ अवसान सद्धिय अत्थ ॥

गूगोर चपारि ४ कही गई पति के बुलावत पास ॥

इक १ दाहरी नवमी ९ १ जरी तँहँ प्रीतिके अवकास ॥ ३३ ॥

अरु द्वै २ हि पुंय मरी द्वितीय २ १ चतुर्थ ४ २ सेखाउति ॥

पहिली १ जु केसरदेवि १ ९ ६ १ सो न जरी मनोहर पुत्ति ॥

कति कहतही दसमी १ ० हु तिय तस गौड़ि लाडकुमारि १ ९ ६ १ ०

नहिँ सुद्धि पै रु खवासि तेहु जरी चउदह १ ४ नारि ॥ ३४ ॥

गूगोर नारायनगिरीके बाग हुव सँहगोन ॥

अद्यापि चौरा तत्थ उनके भाँ प्रकासत भोन ॥

अठ्ठारही १ ८ लहि संग नारिन कृष्ण १ ९ ६ १ गो दिवँ एम ॥

तस नास संसय भो असेस न हेरि हेलैन तेम ॥ ३५ ॥

१ दर से भगकर ॥ ३० ॥ २ भादवा वादि शुद्धि से भिन्न होकर [निर्गुद्धि]

४ वर्ष ९ ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा के दिन. उसके घर में नौ स्त्रियाँ थीं परन्तु

उस कृष्ण को ३ मऊ का पति जानकर स्त्रियों के व्याह का वृत्तान्त नहीं कहा

७ घर में ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ = सन्तानवाली होने से नहीं जली ९ विधवापन

के धर्म में १० यहाँ ही अन्त हुआ ॥ ३३ ॥ ११ खबर ॥ ३४ ॥ १२ सती १३ अय तक

भी १४ कान्ति १५ स्वर्ग १६ दोष नहीं देखकर ॥ ३५ ॥

सुनि कृष्णा १९६। १मारन भावसिंह १९५। १नरेस इत किय सोक ॥  
 ताकेहि बुंदिय सुद्ध ओरस जे रहे चउ४तोक ॥  
 तिनमाँहिँ दोउ२न द्वै२मुता बिनसी अनूढहि गेहु ॥  
 रठोरि३कै सुत द्वै२ रहे लघु२अंत तिम सुनिलेहु ॥ ३६ ॥  
 यह कीर्तिसिंह १९७। २सनाम जो अनिरुद्ध १९७। १सोदर आस ॥  
 पहिलैं सु भावपुरा १ हि भूपति बुल्लयो निज पास ॥  
 सो व्हां मरयो सिसु या समै तनु रक्खि हायन तीन३ ॥  
 अनिरुद्ध १९७। १इक्क १रहयो सँता १९४। १कुलतंतु अप्प अधीन ॥ ३७ ॥  
 तव कृष्णा १९६। १कों दिय जो पटा सु स्वसूनु गिनि दिय ताहि ॥  
 अरु अब्द ग्यारह ११ लौ इहाँ बयमै गये तस आहि ॥  
 कति यौ कहैं बुंदीहि ताकहैं स्व स्व पुत्र बनाइ ॥  
 मतभेद कोउक होउ पै दिय औरसत्व मनाइ ॥ ३८ ॥  
 इत साह जो दिय १जोधपुर अमरेसके सुत अंत्य ॥  
 तो लैलयो रु दयो न२तो तबलौ रहयो तिम तंत्य ॥  
 अरु काँनि स्वीय घटाइ सो जसवंत बर्जित आस ॥  
 निरंगार दुँस्थ रहयो ससंक त्रिसंकु भूप निकास ॥ ३९ ॥  
 बुंदीस वढि जब लैगयो पँद्वा ११ विधेय विधान ॥  
 जसवंत तव कहि मुक्कली किय भव्य अप्प सु मान ॥  
 अबतैंहि तुम १हम २इक्क १हैं भनिमुक्कली तव भूप ॥  
 हम साह आश्रित अप्प हेरहु रावरे अनु रूप ॥ ४० ॥  
 कहिमुक्कली पुनि साह प्रेरित आहु ज्यौ नृपकर्ण ॥  
 संका तथापि मिटी न जावत ज्यौ धनी १प्रतिसर्ण २ ॥

१ बालक २ बिना विवाही हुई ॥ ३९ ॥ ३ सगा भाई हुआ ४ वर्ष ५ शत्रुशाल  
 के वंश में ॥ ३७ ॥ ६ अपना पुत्र मान कर ७ औरसपन ॥ ३८ ॥ अमरसिंह  
 के पुत्र के ८ अर्थ जोधपुर दिया ९ तहाँ १० आदर (इज्जत) ११ आशा रहित हुआ  
 १२ बिना घर १३ दरिद्री ॥ ३९ ॥ १४ भादवा सुदि एकदशी के दिन १५ शुभ १६ आप  
 के सदृश ॥ ४० ॥ १७ जिसप्रकार राजा करणसिंह आया वसीप्रकार

सो तोहु जाइसक्यो नः ओ ठहरयोऽन बिनु अवलंब ॥  
 अब साह अखिखय नैरतैं इन्ह कहि देहु कदंब ॥ ४१ ॥  
 जसवंत तिर्यजन मात्र हे जिन्ह नैरतैंहु निकासि ॥  
 रठोर परिजनहीन पुर किय इक परजन रासि ॥  
 सकुटुंब अब जसवंत सोचत देसविरहित दीन ॥  
 मतिहीन गति अवलंबे खोजत ज्यौं क बाहिर मीन ॥ ४२ ॥  
 अदख्यो जु कासिमखान<sup>१</sup>तस सुत नाम खानअमीर<sup>२</sup> ॥  
 भो पुब्ब तासन मित्रभाव सु पै चह्यो अब सीर ॥  
 कछु छन्न दै उपहार ताकैंहें मंडि पत्रन मंत्र ॥  
 तिहिं द्वार लै बिच तास तांत<sup>३</sup>तथा वजीर<sup>४</sup>हु तंत्र ॥ ४३ ॥  
 जिनकोहु दै उ<sup>५</sup>पदा अभीष्ट रु साहचिंत जगाइ ॥  
 इक प्रान निर्भय मंत्र जानि पर्यो सु पुरढिग आइ ॥  
 सबही नबाव<sup>६</sup>अमात्य<sup>७</sup>वहाँ सन छत्र भेट प्रसारि ॥  
 अपनैकरे तैंहें के भये<sup>८</sup>न भये<sup>९</sup>समै अनुकारि ॥ ४४ ॥  
 दिय तत्थ बिन<sup>१०</sup>तिपत्र यौं अब जीविकाबिनु दास ॥  
 कहिहो सु करिहैं चाकरी लाहि प्राणलाभ प्रकास ॥  
 लाहि सरन चरन हजूरके दिय आदि परिजनलोक ॥  
 सबही इहाँ रहिहैं परे स्व निबाहको तजि सोक ॥ ४५ ॥  
 तब साह त्यों हि निदेसदै चहि जीविकाबिनु ताहि ॥  
 दियभोजि सूबा सिंधुपार तथा अनादर दाहि ॥  
 बलि कहिय परिजन तब रहैं इहैं जौं तौंम बिसास ॥

१समूह सहित ॥ ४१ ॥ २ स्त्रियां मात्र ३ पास के लोगों [सेवकों] से ४ शत्रु के  
 लोकों का समूह रहा ५ आधार ६ जल से बाहिर होकर मीन (मछली)  
 आधार सोचै जैसे ॥ ४२ ॥ ७ उससे ८ नजराना ९ पुत्रों से सलाह करके  
 १० उसके द्वारा उसके पिता (कासिमखान) को ॥ ४३ ॥ ११ नजराना इच्छा-  
 नुसार देकर १२ समय के अनुसार (सदृश) ॥ ४४ ॥ १३ अरजी १४ सेवक ॥ ४५ ॥  
 १५ जब तक तेरे घर के सब लोग यहाँ रहैं १६ तब तक ही विश्वास है



नहि तो निलज्ज' वहैहि तू हमरोहु चाहत नास ॥४६॥  
 सुहि मन्नि गो जसवंत सिंधुहि लॉघि काबल सीम ॥  
 दिल्ली रहे सब तास परिजन आस जानि कदीम ॥  
 तिम इक्क१गर्भवती हुती जसवंत रानिय तत्थ ॥  
 सब तास चाहिरहे प्रसूति गहे बडे मह सत्थ ॥४७॥  
 पैतीस सत्रह१७३५ साल पै इम दिष्टके अनुसार ॥  
 कछु काल जातहि बाल भो तस अजित१सिंह कुमार ॥  
 इन गूढ रक्खिय तोहु सुत वह जानिकै अवरंग ४०॥३॥  
 सूची पठावहु बाल अप्पहि जोधपुरही संग ॥४८॥  
 इन यौ बिचारिय मारिबे सिसु साह संगत अज्ज ॥  
 कहि मुक्कली अबही न भो ढिग तोहु प्रसवन कज्ज ॥  
 जान्यौ न आसय साहको पर एहु सुनि अति जोर ॥  
 अपनौ अनीकै पठाइ तिन्ह दैल बिंटयो चहुँ४ओर ॥ ४९ ॥  
 अरु यौ कहाइय जो न भेजहु पास बालक एहु ॥  
 न बहोरि ता कहै जोधपुर मिलि है मुँधा किम नेह ॥  
 उन देखि प्रत्युत बेढै अप्पन मारिबोहि प्रमानि ॥  
 कछु रीति कह्ठन बाँब चितिय बंस रक्खन कानि ॥५०॥  
 गोविंद बनि तँहँ व्याल ग्राहक बेस अप्पन गोई ॥  
 धसिगो चमूबिच छै स्व डेरन जेमतेम धिजोइ ॥  
 कछु बित्त इक्क१ करंड रक्ख करंड इक्क१ कुमार ॥

१वही हमारे डेरों को लूटनेवाला है ॥४६॥ २अटक नदी को लांघ कर प्राचीन  
 आशा अर्थात् जोधपुर की आशा ४ उत्सव सहित ॥४७॥ ५ भाग्य के ६  
 बालक ७ छाने ८ सूचना की ९ जोधपुर साथ ही देंगे ॥ ४८ ॥ १० आज  
 ११ प्रसव होने का कार्य १२ सेना १३ सेना को घेर ली ॥ ४९ ॥ १४ वृथा स्नेह क्यों  
 करते हो १५ उलटा १६ अपने को घेर कर १७ विचार अथवा प्रसंग ॥५०॥ गोविं-  
 ददास भाटी तथा १८ काल बेलिया बना १९ अपना लिबास छिपाकर २० धन २१  
 टोकरे (करंडे) में रखकर एक करंडे में कुमार अजितसिंह को रक्खा

कठिगो सु मंगत टूक रुंछिन भाखतो जयकार ॥ ५१ ॥  
 आजन्म रक्खन बाले समुचित भै समस्तन आनि ॥  
 तिम दुर्गदासकबंध त्यों रघुनाथर भट्टिय मानि ॥  
 इनसौ कहयो तुम जाहु द्वैरतैंहँ उच्चरी इम एह ॥  
 यह साह छन्न करी इहाँ मचिहँ ब सखन मेह ॥ ५२ ॥  
 जहँ सर्व तुम जुत स्वामिके रनिवासलौं कटिजाइ ॥  
 कहि ए तहाँ दुवक्यौटैरैं हम धर्म हीन कहाइ ॥  
 उनको तऊ हठ देखि दोउरन उच्चरी पुनि एह ॥  
 भैवदीय मरन निभालि द्वैरअसिपूत करि निजदेह ॥ ५३ ॥  
 पीछैं उभैरकटिजाइकैं रहिहँ सदा सिसु पास ॥  
 इम सौहँ लै जबही कहीं तबही लही उन्ह आस ॥  
 करि कोप यह सुनि साह तत्र अवरोध निश्चय काज ॥  
 संह मुक्कलेनरबेस नारिखू सौविदल्लैरसमाज ॥ ५४ ॥  
 तिन जाइ इम जसवंतको अवरोध सोधिय ताम ॥  
 परखी सु सँव प्रसूतिका जसवंत रानिय जाम ॥  
 न लख्यो तथापि प्रसूत बालक त्योंहि आइ निवेदि ॥  
 रिस साहकै बढती रचात भये प्रलुब्धन भेदि ॥ ५५ ॥  
 खिजि साह अखिखय अस्तखानहिँ जाइ तू अति जोर ॥  
 न मिलै जु सिसु तो पकारि नारिन आनि वहाँ हनि और ॥  
 सुनि अस्तखाँ इम साह सासन संक्रम्यो सह सेन ॥  
 इत त्यों कबंधन अंगम्यों रनिवास कट्टन ऐन ॥ ५६ ॥

१ रोटी का टुक मंगता हुआ ॥ ५१ ॥ २ जन्म पर्यन्त ३ उचित ४ अब ॥ ५२ ॥  
 ५ जनाना ६ आप मरना तक कर ७ खड़ से अपने शरीर को पवित्र  
 करके ॥ ५३ ॥ ८ सौजन लेकर ९ जनाने में निश्चय करने के लिये १० साथ  
 भेजे ११ कंचुकियों (नाजरों) के समूह को ॥ ५४ ॥ १२ जनाना १३ तहाँ १४ तुरन्त  
 की बालक जननेवाली स्त्री १५ उस समय (जहाँ) १६ लोभियों को भेदकर ॥ ५५ ॥  
 १७ स्त्रियों को पकड़ ला और अन्य को मार १८ चला, जनाने को काटना  
 १९ अंगीकार किया २० घर में ॥ ५६ ॥

प्रविसे वरोध सपिंड भट लै लै बिकौस कृपान ॥  
 हनिबेलगे निज स्वामि नारिन मन्नि निज बपु हान ॥  
 हड्डी ६१ जु कर्मवती १६५ १ हुती तिनसौ कहयो तिहिँ तथ्य ॥  
 हनिकै हमै मरिहो कहो तहँ कोन पिकखहि हँथ ॥ ५७ ॥  
 सुनि यौ कहयो तिन स्वामिनी मरिबो न तंत्र प्रमान ॥  
 तुम हथ पिकखन जो रहो अब तो गहँ तुम कान ॥  
 हठपुब्ब वे न हनै १ गहँ २ गहिवो विचारनहार ॥  
 दिल्लीस पित्थल १७ १ २ से इहाँ दुष्टांत केहि उदार ॥ ५८ ॥  
 भटवेस कर्मवती १९५ १ सज्यो तहँ इक्खि सो तिन्ह भाव ॥  
 छुरिका उभै २ खर मारि छतिय बेढि कोच बनाव ॥  
 अपनै सपिंडन इक्खतै यह सज्जि यौ हुव संग ॥  
 भट ते मुरे इम ठानि खिल सब भूप नारिन भंग ॥ ५९ ॥  
 अपने प्रबीरनमै रही हड्डी सु गज आरूढ ॥  
 गहि छत्र १ चामर २ आदि निजपति राजचिन्ह अगूढ ॥  
 इहिँ बीच सह बल १ पुब्बबल २ मिलि अस्तखानहु आनि ॥  
 प्रतिबैन भोजिय अर्भ अप्पहु के दिखावहु पाँनि ॥ ६० ॥  
 करि हल्ल मिच्छनसौं भिरे तहँ धीर बीर कबंध ॥

१ जनाने में घुसे २ सपिण्डी ( सात पीढ़ि के भीतरवाले ) उमराव ३ खड्ग निकालकर ४ अपने स्वामि की स्त्रियों को ५ तुम्हारे हाथों ( प्रहारों ) को कौन देखेगा ॥ ५७ ॥ ६ मरना अपने आधीन नहीं है ७ आदर ८ हठ पूर्वक ९ दिल्ली के पति पृथ्वीराज ने बहुत मरना चाहा था परन्तु गोरी-शाह ने पकड़ना चाहा तो पकड़ ही लिया सो ऐसे कितने ही दृष्टान्त विद्यमान हैं ॥ ५८ ॥ दो १ १ तीक्ष्ण १ ० छुरियाँ छाती में मारकर १ २ कवच से ढक ली १ ३ अपने सपिण्डी के देखते १ ४ बाकी के । ५९ । १ ५ हाथी पर सवार रही १ ६ ससिद्ध १ ७ पाहिले भोजी हुई सेना से १ ८ बालक को सौंपो १ ९ हाथ दिखाओ (युद्ध करो) ॥ ६० ॥

हड्डी ६१ लरी बिच अट्ट ८ हथिन स्वामिवेस सुसंध ॥  
 इक १ जामलौ घमसान अंकुरि पूर सत्रुन मारि ॥  
 पैररखि कर्मवती १९५१ परी बपु खंडखंड बिथारि ॥ ६१ ॥  
 रटोर सूर सबै रहे रन बाढ भारि बिचित्र ॥  
 पहिलै कहे दुवश्ते कढे करि काय घाय पवित्र ॥  
 धरि अगग ते खिलै लैगये कतिदूर फोज धकोइ ॥  
 दै अस्तखानहिं प्रानसंसय निरखसे इम दोइ ॥ ६२ ॥  
 पैतीस सत्रह १७३५ साँकपै अतिघोर रन हुव एह ॥  
 दुवरघाँ हजारन वंहाँ भये तिभ मृतक १ घायल देह ॥  
 पहुँ जो रहयो इत सिंधुपार सु जानि सुहु जसवंत ॥  
 औसो लग्यो भुवलोभ जिहिं समुझ्यो न आगम अंत ॥ ६३ ॥  
 इत भूप दकिखनदेस भावपुरा रह्यो दस १० अब्द ॥  
 सबघाँ संपान कृपान साधन बिस्तरयो जस सब्द ॥  
 अब अट्टपावक बाजि भू १७३८ सक राँधर लगत एह ॥  
 अह पकख मेवँकर अष्टमी ८ दिवँ गो बिहाइ स्वदेह ॥ ६४ ॥  
 विधि प्रथम १ पंचम ५ २ छठ ६ ३ सप्तम ७ ४ नवम ८ ५ दसम १० ६ विवाह  
 पहिलै मरी खट ६ ए प्रिया निज भक्ति सौँ भजि नौह ॥  
 इनमँहु सप्तम ७ ऊँठ इक १ पहिलै मरी पतिपास ॥  
 खिलै जे रही खट ६ ते जरी अवसान अब खिन तास ॥ ६५ ॥  
 दूजी २ १२ चौथी ४ २ अष्टमी ८ ३ छुंदी भई हुतदेह ॥

१ अष्ट प्रतिज्ञा से २ प्रहर तक ३ युद्ध में खड़ी होकर ४ शत्रुओं को मारकर ५ १५ घावों  
 से शरीर पवित्र करके वाकी की राटोड़ी फौज को आगे धर कर घका ले गये  
 ७ प्राण का संन्देह ॥ ६२ ॥ ८ सम्बत् में ९ दोनों ओर १० राजा (यशवन्तसिंह) ११  
 भूमि का लाभ १२ अन्त समय के आगम को नहीं समझा (यशवन्तसिंह इस  
 से थोड़े ही समय पीछे मर गया इस कारण अन्त का आगम लिखा है) ॥ ६३ ॥  
 १३ सब दिशाओं में १४ हाथ के साथ खड्ग के साधन से १५ वैशाख मास १६  
 दिन १७ कृष्णपक्ष अपना शरीर छोड़ कर १८ स्वर्ग को गया ॥ ६४ ॥ १९ पति का  
 सेवन करके २० विवाहिता २१ वाकी २२ उसके अन्त समय में ॥ ६५ ॥ २३ सती हुई

तीजी११तथा एगारही११२अरु बारही१२३ढिग एह ॥  
 बुंदी१तथा तँहँ२द्वै२हि थान जरी खवासि बतीस३२॥  
 इम अष्टतीस२८जनीन सहदिवपत्त हड्ड६१नईस॥६६॥  
 पैहुकै सुता इक१अन्नपूरनिकाखवासि प्रजात ॥  
 सीसोद बीरमकर सुनुहि ताहि व्याहिय तात ॥  
 जामात सो रघुनाथ नामक देह रक्खि जनेसँ ॥  
 ताके समान पटा हु ताकँहँ दत्तँ बुंदियदेस ॥६७॥  
 बुंदी सुन्यौ नृप मरन निश्चय ताहुसौ सुनि वेग ॥  
 तब हड्ड६१दुर्जन१९६१नाम दुर्जन स्वामिपर लिय तेग॥  
 पति एह बलवनि द्रंगको गोपालको१९५१खल पुत्र ॥  
 सहसा मरयो सुनि स्वामिको तब भो अधर्म तनुत्र ॥६८॥  
 अति लुब्ध भिल्ल१रु मेर२मैनन३जोरि लोभ उपाय ॥  
 बुंदी प्रसू निज भोग बंछि चढ्यो सु लोलुप चाय ॥  
 जिहिँ पैस बुंदिय भूप निपतन सुद्धि पहुँचिय जाइ ॥  
 पहुँच्यो सु दुर्जन१९६१ताहि बाँसर बेठपुर प्रकटाइ ॥६९॥  
 तिहिँ काल भातुलदेवि१९५२आदिक उक्त रानिय तीन३  
 पति सत्य होन खवासिगनजुत निक्खसी जसपीन ॥  
 अरजी सुनी तँहँ दुष्ट दुर्जन१९६१द्रंग लगिय आनि ॥  
 महिपाल निज अनिरुद्ध१९७१पंद्रह१५अब्द वय सिखुमानि ॥७०॥  
 सीसोदनी२प्रति सर्वनैँ अरजी निवेदिय एह ॥  
 इह कोन अँग लरैँ मरैँ हम अप्प जरन अनेहँ ॥

१स्वर्ग गया ॥६६॥२राजा के रपासवान स्त्री से उत्पन्न ४पिता ने ५जमाई ६  
 राजा ने अपने देश में रख कर ७दिया ॥१७॥८शत्रु [दुष्ट] दुर्जनमिह ने ९अचा-  
 नक १०अधर्म का कवच ॥६८॥ ११अत्यन्त लोभी १२बुन्दी रूपी अपनी माता  
 से भोग करना चाह कर १३जिस दिन बुन्दी के राजा के मरने की १४ग्वर  
 १५उसी दिन नगर के घेरा लगा कर ॥ ६९ ॥ १६पुर के आ लगा (घेर लिया)  
 है ॥७०॥ १७ किसके आगे १८ आपके जलने का समय है

बलि सत्रु तक्रत छिद्र बाहिर देखि यौं कछु देर ॥  
 करिकैं जसो लखि जुद्ध विघ्नहु व्है न ज्यौं उतकरे ॥ ७१ ॥  
 सीसोदनीरसुनि यौं तनै अनिरुद्ध १९७१ बुल्लि समीप ॥  
 सबसौं कह्यो यह मूनु मन्नहु याहि स्वीय महीप ॥  
 तासौहु अक्खिय रक्खि तू सुत स्वीयजन सतकार ॥  
 हमसंग होहु न सत्रुसद्धहु पिल्लि चंड प्रहार ॥ ७२ ॥  
 मोको टैरे कढि जारि आवहु जोध इकहजार १००० ॥  
 कलि भूप जुत खिलजित्ति दुर्जन १९६१ होहु जय जसकार ॥  
 तिन्ह छार बाग कहे जिते १००० टारि लैगये भट तथ ॥  
 सहगोन ठानि विधानसौं तिन त्यों कर्यो पति सत्य ॥ ७३ ॥  
 पुर कोटपै इत सज्ज भट करि दुर्ग तोपन प्रेरि ॥  
 गन जत्रकुत्र करे अरातिन लुत्थिलुत्थिन गेरि ॥  
 अनिरुद्ध १९७१ को इम जुद्धमैं दुवर्जाम होत अतीत ॥  
 भजिगो सु दुर्जन १९६१ इहुहु ६१ दुर्जन ताहि बासर भीत ७४  
 सौराष्ट्री दोहा ॥

भाऊ १९५१ नृप भवभूत, संवत नभ वसु नृप १६८० समय ॥  
 हहु ६१ नकुल पुरुहूत, तिथि सतह १७१५ सक शो तथा ॥ ७५ ॥  
 अब वसु गुन अन्पष्टि १७३८ अष्टमि ८ अह माधव २ असित २ ॥  
 नियति करी वपु नष्टि, सोक भयो अज्जन सबन ॥ ७६ ॥  
 अब तस निर्मित अैन, स्वनकरहु प्रिय लोक सब ॥  
 निरखत व्है सुख नेन, सरप अैसे आयत रुचिर ॥ ७७ ॥  
 भंडिय महलनमाहिं, सौधैं मुकुटमंदिर सता १९४१ ॥

१ इसकारण ॥ ७१ ॥ २ इस पुत्र को ३ अपना राजा मानो ४ अपने लोगों का  
 ॥ ७२ ॥ ५ छटे हुए ६ युद्ध में ७ यश करनेवाले ८ शत्रुओं को ९ लोथ पर लोथ  
 गिरा कर १० दो प्रहर ११ व्यतीत १२ दुष्ट दुर्जनसिंह १३ उसी दिन डरकर  
 ॥ ७४ ॥ १४ जन्म हुआ १५ इन्द्र ॥ ७५ ॥ १६ दिन १७ वंशाख यदि १८ सर्व  
 आयों को ॥ ७६ ॥ १९ उसके बनाये हुए स्थान २० चौड़े (वड़े) ॥ ७७ ॥ २१ महल

भावसिंहके स्थानोंका वर्णन] सप्तमराशि-नवममयुख (२८५३)

ऊपर तस इक<sup>१</sup>आँहि, महलसु<sup>२</sup>भाऊ<sup>१</sup>९५<sup>१</sup>निर्मयो ॥ ७८ ॥

अधमहलन बिच एम, मंजु पृथुल मोतीमहल ॥

तँहँ कुमारपन तेम, निबस्यो यह नयमँ निपुन ॥ ७९ ॥

अध्यात्मादिकदास, बैष्णवकी बिज्ञाप्ति<sup>३</sup>तँ ॥

नियत पांथश्रमनास, नृपति स्थान इक निर्मयो ॥ ८० ॥

पुर लक्खैरिय पास, दिपत कोणा ईसान दिस ॥

अधिप पूरि तस आस, मंदिर<sup>१</sup>बाँपी<sup>२</sup> निर्मये ॥ ८१ ॥

ताकी निर्मितिकाज, लूणाकरणा कायथ ललित ॥

रक्खि भाउ<sup>१</sup>९५<sup>१</sup>अधिराज, लूणाबाय प्रसिद्ध हुव ॥ ८२ ॥

उपवन विरच्यो एक<sup>१</sup>, रत्नबाग ढिंग जो रुचिर ॥

बैलि दूजो<sup>२</sup>सबिबैक<sup>३</sup>, फूलसरोवर तट फँवत ॥ ८३ ॥

पति बिबिध प्राकार, जो चहारि जैलजंत जुत ॥

अब जीरन उद्धार, किय जाको प्रभु अर्प्य किल ॥ ८४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी  
भूपभावसिंहचरित्रे औरंगजेबनिदेशतत्पुत्रालमगुगैरपतिकृष्णसिंह  
छद्महनन १, कृष्णहननानन्तरभावसिंहस्यानिरुद्धपुत्रीकरणा २,  
योधपुरराज्यप्रहाणाहेतुप्रार्थितौरंगजेबदिल्लीरक्षितस्वावरोधयशव-

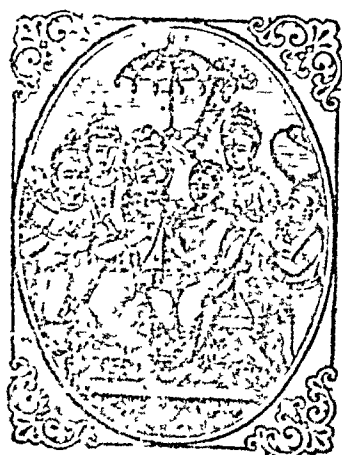
१ है २ भाऊने बनाया ॥ ७८ ॥ ३ नीचे के महलों में ४ सुन्दर खड़ा ५ नीति  
में ॥ ७९ ॥ ७ अध्यात्मदास की ८ अरज से ९ पथिक [मार्ग चलनेवाले] लोगों  
का श्रम मिटाने के लिये ॥ ८० ॥ १० बावड़ी ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ११ बाग १२ फिर  
१३ विचार पूर्वक १४ शोभायमान है ॥ ८३ ॥ १५ फव्वारों सहित १६ हे प्रभु  
जिसका जर्णोद्धार आपने १७ निश्चय किया है ॥ ८४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
भाऊसिंह के चरित्र में औरंगजेब की आज्ञानुसार औरंगजेब के पुत्र आलम  
का गुगैर के पति चहुवाण कृष्णसिंह को छलघात से मारना १ कृष्णसिंह के  
मारेजाने पीछे भाऊसिंह का अनिरुद्धसिंह को अपना पुत्र बनाना २ जोधपुर  
खालसे होजाने के कारण औरंगजेब को अरजी देकर राजा जसवतसिंह

न्तसिंहकाबुलाक्रमण३, यशवन्तसिंहात्मजाजितसिंहजन्मसमकालनिःशलाकतन्निष्कासनानन्तरकृतयवनेन्द्रसैन्ययुद्धयशवन्तपत्नी-  
हाडीमरण ४, दक्षिणजनपदभावसिंहपञ्चत्वप्राप्तावनिरुद्धसिंहपट्ट-  
प्रापण५, दुर्जनसिंहबुन्दीरणपराजयवर्णनं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥

आदितः पट्टत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३५ ॥

का अपने जनाने को दिल्ली में रखकर काबल के सूबे पर जाना३ यशवन्तसिंह के पुत्र अजितसिंह का जन्म होने पर उस बालक को छाने निकाले पीछे यशवन्तसिंह की राणी हाडी का बादशाही सेना से युद्ध करके काम आना ४ बुन्दी के राजा भाऊसिंह के दक्षिण में देहान्त होने पर अनिरुद्धसिंह का पाट बैठना५ हाडा दुर्जनसिंह का बुन्दी से युद्ध करके हारने का नवमां९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ छत्तीस २३६ मयूख हुए ॥





॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथाऽनिरुद्धसिंह १९६।१ चरित्रस्य प्रारम्भः ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

करि उत्तरविधि निज करन, बय किसोर जय बुद्ध ॥

तीजी ३ तिथि बैठो तखत, राधं२विसद१ अनिरुद्ध १९६।१ ॥१॥

किते विसद१तेरसि१कहत, अधिपभाव अभिसेक ॥

भाऊ १९५।१ठाँ अनिरुद्ध १९६।१भो, अंक गनित घटि एक १।१

कहयो प्रथम तुम कृष्ण १९६।१को, यातैं तिहिँ क्रम अंक ॥

अब भाऊ १९६।१सुत अंक इहिँ, इहिँ क्रम गनित असंक १।१

पट्टदिवस मंगल प्रसरि, सब उपदाँ बलिँ २साधि ॥

भट १अमात्य २परजन ३भये, उर प्रसन्न तजिआँधि ॥ ४ ॥

पीतंबर १कुलइष्ट प्रभु, जजि कुलदेवी २जुत ॥

भाऊ १९५।१विधि पालतभयो, अवनी दुरित अछुत ॥ ५ ॥

ईक १ठाँ भावी १भूत २अब, बदाहिँ ससंतति व्याह १-॥

वर्तमान बलि बरनिहँ, आदरि क्रम उच्छाह ॥ ६ ॥

( घनाक्षरी )

भूत १भावी २कीने छदविवाह अनिरुद्ध १९६।१भूप,

चउ ४द्वै २सुता त्यों भावी ये लहे छदतोकै ॥

पुव्व व्याह जादवी करोली रत्नपाल पुत्री,

व्याहि स्यामकुमरि १९६।१बनियक करे विसोक ॥

१ वैशाख शुक्लपक्ष में ॥ १ ॥ पीढ़ियों की २ गणना के अंकों में एक अंक घट कर ॥ २ ॥ ३ गोद आने के कारण पीढ़ियों की गणना का जो अंक कृष्णसिंह के नाम पर आया था वही अंक अनिरुद्धसिंह के नाम पर आया इस कारण एक अंक घट गया ॥ ३ ॥ ४ नजराना ५ न्यौछावर ६ प्रजा के लोक ७ मन की पीड़ा छोड़ कर ॥ ४ ॥ ८ पूजन करके ९ पाप से अछूती [ बिना स्पर्श की हुई ] भूमि १० पहिले और पीछे के सब विवाह और संतान एक ही स्थान पर कहेंगे ११ फिर ॥ ६ ॥ १२ बालक १३ याचकों को शोक रहित किये

नाथाउति दूजीरलाडकुमारि१९६।१नमानाँ स्त्रीय,

भट जसवंतसुता अन्वय चुलुक्य \*ओक ॥

वापी जुगर्बाग एक१जाके बनवाये प्रभु,

अज्जहि प्रसिद्ध पूर लहत प्रसंसा लोक ॥ ७ ॥

देवी हर्षदा साँ दीप पच्छिम३।५प्रदेस पर,

बापी बनी एक१यह सो हैं बडे विस्तार ॥

साखापुर देवपुरा ताके जो समीप बापी,

दूजीरसो रु ताहीके समीप बाग१।३छविदार ॥

याही चालुकीके बडे अंगज भये ए उभैर,

सूर बुधसिंह१९७।१जोधसिंह१९७।२क्रमतै कुमार ॥

बापी नाथाउति२नै बनाई पहिली१जो बडी,

मुदाँ तँहँ लागी मानँ द्वै अयुत द्वै हजार२२००० ॥ ८ ॥

व्याही तीजी३दक्खिनमै डोलाही बुलाइ भटि-

यानी चंद्रकुमारि१९६।३भवानीदासपुत्री भूप ॥

कन्या फतैसिंहकी नरुकी बरुतकुमारि१९६।४कको-

रकी विवाही कछवाही चोथी४रुचिरूप ॥

प्राचीश्वाननामक खवासकी हवेलीपास,

जाकी बापिका१है लाखयो पुण्य सत्र१जसजूप ॥

जंदाकेर तकिया समीप बाग१।२जाको ताल,

जायवंतसागरतै उत्तर४।७छिति अनूप ॥ ९ ॥

पंचमी५भुलायपुर व्याही गजसिंहपुत्री,

राजाउति रानी रामकुमारी१९६।५नियतनाँम ॥

ताकै द्वै२तै३नूजा द्वै२तनूज चउ४तो३कै तहाँ,

\* सोलंखियों के घर में वावड़ी ॥ ७ ॥ शहर के बाहर का पुरा २ पुत्र ३ रुपये  
४ प्रमाण ॥ ८ ॥ १ रूप में क्रान्तिवाली १ पूर्व दिशा में ७ वावड़ी = पवित्र यज्ञ  
६ यज्ञ रूपी खंभ युक्त १० जैतसागर ॥ ९ ॥ १ निश्चय १२ पुत्रियें १३ बालक

कुसलकुमारि१६७।१\*कल्यानादिककुमारि१६७।२ताम॥

ए वडी सुता द्वै२द्वै२भये स्यो इनके अनुज,  
बाल अमिधातें अमरेस१९७।३रु विजय१९७।४वाम ॥

दुर्जननादिसिंह सुता छठी दुबलानाँ लाड-  
कुमरि१९६।६सनाम व्याहयो चालुकी छवी ललाम॥१०॥

भूत१पहिले१ द्वै२पिछले चउ४बिवाह भावी३,  
भावी३सर्व संतति कही ए अनिरुद्ध१९६।१केर ॥

वर्तमान२जानाँ विधिसौं इम तखत बैठि,  
वर्ष तिथि१५ वै विच सव्हारयो राज्य ताही बेर ॥

साहपास भेजन जथोचित सचिव सोधि,  
सवन निवेदी वेनीदत्त है बचन सेर ॥

याहि कुछ सासन दै सासन करहु एह,  
आनाँ फरमान अव दै अरज वहे न देर ॥ ११ ॥

वेनीदत्त व्यासकोँ निवेदि ऐसी पंचननै,  
सुलवपत्र सासन गहायो बारवासि१ ग्राम ॥

हांडा६१ जगभानु१द्विज नागरप्रताप२हेरि,  
ताको संग दै ए द्वै २ पठायो वह दिल्ली ताम॥

गोति अनुसार अनिरुद्ध१९६।१वस बुंदी राखि,  
दीनाँ फरमान साह व्यासहिँ लिखे लै दाम ॥

लोभी परगनाँ तोहू ए हुव २ उतारिलये,  
नाम मुख्य तामैं खैरावाद१ रु वरोद२ नाम ॥ १२ ॥

मुख्य उपदा१वैलि२रहे खिले स्वयंमिलेन.

\*कल्याणकुमारी जितही दुर्गादा नाम से दुर्जनसिंह १सुन्दर ॥१०॥२पदि  
द्वै ३ आने होने वाले बिवाह और आगे होनेवाली ४ संतान ५ अरज  
अरज करी ७ बोलने में सिंह. इसको कुछ उदक ग्राम देकर हुक्म करे  
६ नाया पत्र देकर बारवासी नामक ग्राम उदक दिया १०तहाँ ॥११॥  
१२ न्यायाधर १३ नाकी १४ अपने मिलने पर

सेस बिधि साहि आयो बेनीदत्त तांके साथ ॥  
 सेस अवनीसौं फरमान लै लिखितसिद्ध,  
 आये पंचप्रहदी हजूरके पसारे हाथ ॥  
 भर्मभसनादि रीति उचित तिन्हें दै भूप,  
 नाइ सिर ठाढे फरमान लयो बुंदीनाथ ॥  
 मरत महीप भाऊ १९५ १ देस इन दक्खिन २ ३ में,  
 अमल अरीनको लग्यो बढन लै लै आथ ॥ १३ ॥  
 अकबर ४ १ ४ चोथो ४ अवरंग ४ ० ३ को तनय इतैं,  
 जनकसौं जनक करी जो बिधिमें बिचारि ॥  
 कोपपाल हो खल कुपाचिता कितीक करि,  
 सो अब कढ्यो भाजि सखा लै मंत्र अनुसारि ॥  
 भागपुर १ बीजापुर २ पत्तन सितारा ३ भूप,  
 एते अपनावैं अवरंग ४ ० ३ ईला धक धारि ॥  
 जाइमिल्यो इन ३ में कह्यो सो ४ साहजादा टेक,  
 पापकी पकरि संगी भेदसौं कतिक टारि ॥ १४ ॥  
 मालवके सूबापैं बहादुरखाँ १ भोजि मीर,  
 आलम ४ १ २ २ अवंतीमें पठायो अवरंगाबाद ॥  
 कासिमको तनय अमीरखान ३ कावलके,  
 सूबापर भेज्यो साह प्रीत अधिक प्रसाद ॥  
 प्रेरयो अस्तखान ४ दुर्गदास १ रघुनाथ २ पटु,  
 एह न ठिगायो दुर्गदास १ भट अंप्रमाद ॥  
 मिच्छन प्रसादी रघुनाथ २ जाइ मारयो वंदै,

१ साधि (विधि स्थापक) २ स्वर्ण वस्त्र आदि ३ खड़े होकर शिर झुकाकर  
 ४ धन ॥ १३ ॥ ५ पिता औरंगजेब ने उसके पिता शाहजहाँ को कैद किया  
 सो ६ पचावट (सहनता) नहीं करके ७ सलाह के ८ भूमि को ॥ १४ ॥  
 ९ प्रसन्नता से १० सावधान ११ स्तेछों की प्रसन्नता चाहने वाला १२ कहते हैं

साह पहिलैही इन्ह लच्छन विनु विखाद ॥ १५ ॥  
जब जसवंत जात अर्भक अजितसिंह,  
गोइंददास भाटी कापालिक जेस गहि ॥  
ले कढयो करंड धरि साहको कैंटक लंघि,  
वसंथिति हेतु स्वामिधर्महिं विसेस बहि ॥  
सिसुके सहाई दुर्गदास रघुनाथरद्वैर ही,  
काढे नीठिनीठि कढे रारिहु पुरोग रहि ॥  
काह बिप्रगेह राख्यो गोई सिसु केतै कहैं,  
केतै कहैं संभव बन्पाँ त्यों देसकालरसाहे ॥ १६ ॥  
पाँछै रद्वैर भाटीरपासन उभैरपकरि,  
लूटतभये जे लागि दिल्लीके द्रविन देस ॥  
विरले पुर नबाब दीपक जरनदये,  
अग्रहतै राखि भूमि जोधपुरकी असेस ॥  
गोपै अधिकारीकहतै कति बनिकरगहे,  
धूमि डारि धरनी धुजावत जन धनेसैं ॥  
साह तैसी तिनकी पुकारपै पुकार सुनि,  
दोउरनके चित्र मगवाइ देखे वपुश्वेसैं ॥ १७ ॥  
तोभरतै वर्तक पकात फेरि पावकतै,  
आसुकरा अंगैजतो ईखयो अस्ववारएह ॥  
भाटी सुरतानसुतछीवै सह भोजनपै,

॥ १५ ॥ जसवंतसिंह भे उत्पन्न(पुत्र) १ बालकरगाविन्ददासके कालवालये का  
थेस करके ४ करंड (टोकरे) में रखकर ५ वादशाहा सेना को लांघकर ३५ श की  
स्थिति के कारण ७ युद्ध में अग्रणी रहकर छिपाकर ॥ १६ ॥ बाल पकड़कर १०  
धनवाले देश नवाबों के विरले पुरों में दीपक जलने दिया ११ ज्ञाने(हानि)रहित  
१२ रवाल १३ जला डाली १४ धनवात जनुप्यों को १५ नखरि १६ शरीर के वेस  
(पोशाक) ॥ १७ ॥ १७ भाले से फेरकर अग्नि पर १८ वादी [आकर्षण] पकाना हुआ  
१९ आजकारण के पुत्र (दुर्गदास) को बाँह पर चढाहुआ देवा २० सुरतान-  
सिंह के पुत्र (रघुनाथसिंह) की तसवीर भोजन करते सदोन्मत्त रूप की देवी

जोपै भीम अनुजनिवारयो तउनै सुजान ॥ २३ ॥

संवत भुजंग गुन सत्रह १७३८ सिसिरदसमै;

साह इम रानकी लिखाइके सह प्रसाद ॥

कुंच अजमेरतै अतिवर तदनु कीना,

बेलापटु जैबोही बिचारि अवरंगाबाद ॥

आप दिस टोडाशराजमहल २ समीप आत,

बुंदीसहु जाइमिल्यो सम्मुह बिनुबिखाद ॥

गेहको प्रबंध करि जैसै अनिरुद्ध १९११ गयो,

सोपै सुनिये ब लौकथारस सरस स्वाद ॥ २४ ॥

बुंदीनृपको हो अवरंगाबाद सो विभव,

उदित कथासौ कछु पहिले समय आनि ॥

जज्जाउरेईस भानासिंह १९५१ तनुजात महा-

सिंह १९४१ को पिनाती रूपसिंह १९६१ मिल्यो प्रभु मानि ॥

संग गै पचास ५० है छसै ६०० ओ बीस २० वेगसर,

तीनसै संकट ३०० रथ १३ हैल २ तदर्थ १५० तानि ॥

सत्ताईस २७ तोप तथा तिन्ह उपहार सजी,

पंचसै ५०० किरांची लायो स्वामिधर्म पहिचानि ॥ २४ ॥

सवन सराह्यो रूपसिंह १९६१ कहि सांधुसाधु,

पछै इम अबो सुनि साहको समय पाइ ॥

सेवा १ कुलदेवीकी पुरोहित सुंकहि सौपि,

नाथाउत चालुक किसोरहि प्रभु खनाइ ॥

१ छोटे आई भीमसिंह ने मना किया तो भी ॥ २३ ॥ २ प्रसन्नता के साथ ३ प्रस्थान ४ जीय जिस पीछे ५ समय चतुर ६ उत्तम ॥ २४ ॥ ७ ऐश्वर्य वह कथा ८ पहिले कह दी गई है १० पुत्र ११ पोता १२ दाधी १३ घोड़े १४ वेगवान् घोड़े; अथवा जघर १५ छकड़े १६ रथ और पोठिये छकड़ों से आधे फैलाकर १७ सामग्री १८ भार के छकड़े (तोपों की सामग्री भरे हुए छकड़े) ॥ २५ ॥ १९ अष्ट अष्ट २० गान है

कर्मसिंह३वनिक नियोगी३ताकै पास करि,  
 उदैसिंह४कायथ मुनीम४करि सीम आइ ॥  
 गैनोलीपुरीको सेखा५ वनिक बुलाइ गुली,  
 सेस ताकोँ देसको असेस काम५समुझाइ ॥ २६ ॥  
 द्वारा६मिरंधाकोँ कोट६पाल अधिकार६दैकै,  
 कल्प६पाल घासी७नाम अदि१वन२पाल७करि ॥  
 सेस अधिकारी जे पुरातनही राखि सबै,  
 इम भुंदी ताम अधिकारी ए७नवीन धरि ॥  
 दै रानी पुरा१तिम पुरोहित भवानीदास१,  
 संग लै मिल्यो यौं राजमहल समीप सरि ॥  
 साह बिसवारग्यो कहि नाती तू सता१९४१को अब,  
 बीर चलि दक्षिखन२३हमारेसंग जीति अरि ॥ २७ ॥  
 रीति साधि उ१पदा१ निछावरि२ बिरचि राजा,  
 पाइ प्रतिदे१य तैसैं साहसोँ ई१भ१पुरो१र्ग ॥  
 सेना स्वीय सहित नरेश बहैं यौं साह संग,  
 पुर अवरंगाबाद पहुँचे ज१लूस जोग,  
 भावपुरहीमैं अनिरुद्धको१९६१निवास भयो,  
 छाइ तास चहुँ४घाँ बैरूथिनी बिबिधछो१र्ग ॥  
 मिच्छ१पैले मानैं बुरहानपुरको बचन,  
 लोभी तऊ बेरहि प्रमानैं म१हद्व२लोग ॥ २८ ॥  
 लाखैरी पुरीके अदि धाँटेमैं कहत दल,  
 बाँसी बंधदु१र्ग१आइ लूटी पिछली बहीर ॥

१आज्ञा करनेवाला २गुमास्ता ३नाम है ४गुलमी (कुछ समूह की रक्षा करनेवाला अर्थात् हाकिम) ॥ २९ ॥ ५जाति विशेष; अथवा अधिकार विशेष ६कोटवाल ७कलाल कोटपहिले थे उनको ही रखकर चलकर ॥ २७ ॥ १०नजर ११खिन्न १२हार्थी १३आदि १४सुरातिव; अथवा शोभा; अथवा तखत के योग्य १५सेना १६उत्माह ॥ २८ ॥ १७पर्वतों का कठिन मार्ग १८राठोड़ दुर्गदासने १९भार वरदारी आदि सेना का पिछ-

\*उपालंभ भेज्यो अस्तखानपै तमकि यातै,  
 पीछे खानदेस गो अवंतीके अरचि पीरें ॥  
 सूनु साह आलम४१२कौ जातैहिं पकरि साह,  
 राख्यो अवरंगाबाद पासहिं बिमति बीर ॥  
 आजम४१३तृतीय३सुत तातैं भो प्रसन्न अति,  
 मूढ जान्यौ दिल्लीदंग मैही बन्यौ हों व मीर ॥ २९ ॥  
 संभा नाम कैतो हो सिताराको अधीस१उत,  
 प्रतिनिधि२को हैं मरद्वनमें मुख्यपन ॥  
 अकबर४१४चोथो ४ पुत्र ताके पास हो सो अव,  
 साह आयो सुनत निकासिदीनों भीतिसन ॥  
 अस्त गो उदैपुर वहाँ रानहु न राख्यो ताहि,  
 धीज्यो जाहि दुर्ग१हिं टिकायो तिहिं बिबधन ॥  
 खानदेस अरजी पठाई यह अस्तखान,  
 तापै पुनि भेजी चमू सुनतहि सद्यतन ॥ ३० ॥  
 बाहिनी बहोरि अस्तखानके सहाय इम,  
 आई अजमेर सुनि संका दुर्गदास१आनि ॥  
 अकबर४०१४ताहूनै निकासिदीनों भीत वह,  
 काहूनै नराख्यो पुनि साहकी करत कानि ॥  
 उत्तरि अटक तब साहको तनय एह,  
 मगमैं अमीरखानसौं दुरि कुसल मानि ॥  
 सरन बिचारि देस फारस गो ताम तिह,  
 रान नगरीके पातसाह राख्यो हित तानि ॥ ३१ ॥  
 काबुलसौं पच्छिम३१५बिलायत इरान कहै,

ला भाग\*उलहना क्रोध करके. उजैन के १पीर का १पूजन करके ३जाते ही४  
 निर्बुद्धि ॥ २९ ॥ ५ अस्तखां. दुर्गदास ने उस ६धन के प्रतिबिम्ब को ठहराया  
 ७ तुरन्त ॥ ३० ॥ ८ सेना ९ आदर तथा भय १० छिपाकर ॥ ३१ ॥



सूबा मुख्य जामैं गिनैं बारह<sup>१२</sup> \*द्विनि सार ॥

तिनमैं नगर मुख्य कर्मासाह<sup>१</sup>तवरज<sup>२</sup>दिज-

फूल<sup>३</sup>सारी<sup>४</sup>कर्मा<sup>५</sup>मसहिद<sup>६</sup>जेबदार ॥

रसद<sup>७</sup>सखुरमादि<sup>१</sup>अस्तरादि<sup>२</sup>आवा<sup>३</sup>द<sup>४</sup>८९,

रुसीराज<sup>१०</sup>रुतार<sup>११</sup>द्वंग<sup>१२</sup>इतिमुख हैं सुंदार ॥

सबनमैं नामी राजधानी के सहर इस्फ-

हान<sup>११</sup>तिहरान<sup>१३</sup>उमै<sup>१४</sup>गिनिये जिहिं अगारैं ॥ ३२ ॥

इस्फहान<sup>१</sup>पत्तन पुरानी<sup>२</sup>राजधानी उहाँ,

राजधानी नैव्य<sup>३</sup>तिहरान<sup>४</sup>दिरची बहोरि ॥

जाको पार्तसाह अवलंब लांखि साहजादा,

जो तस सरन गयो अकबर<sup>४१</sup>१४हाथ जोरि ॥

ताको उर लाइ बिसवामि वहाँ टिकायो तानैं,

रहतो इहाँतो गहिलेतो पिता रन रोरि ॥

आलमको<sup>४१</sup>१२रोकि अकबर<sup>४१</sup>१४को भजाइ ऐसे,

दक्खिन<sup>२</sup>३रहो सो परपक्खिन दल्लन दोरि ॥ ३३ ॥

नृप अनिरुह<sup>१९</sup>१२अरु मनवरखा<sup>२</sup>रनबाव बीर,

देश आंजम<sup>४१</sup>३पै राखि अवंगवादा ॥

सूबा खानदेसकी सम्हारि इन्हको हैं साह,

अजि आप सत्रुनपै पहुँच्यो विनुमैमाद ॥

अंगी अनुकूल भई साहकी नियति उहाँ,

गंगैर बिक<sup>३</sup>इहिंम चखायो जानैं जयखाद ॥

बीजापुर<sup>१</sup>ले निम सिकंदर<sup>२</sup>पकरि दान,

एव<sup>३</sup>जय पायो नच्यो चउ<sup>४</sup>था सजस नाद ॥ ३४ ॥

१ पत्तन २ जो नाममान ३ नगर ४ दरगाह ५ रुसराज ६ इल गवाज सेम ७ ८ ९

१० कर्मा ११ नापाक १२ देवदार १३ जय को मर्या को सिद्धांत कर्म ॥ ३३ ॥ ३४

नापाक ११ सुन्दर १२ भाग्य १३ पाल सुख से ॥ ३४ ॥

दूजैरन भागनैर बलको \*बरन डारि,  
 पानिबल जीति तानाँ साह२हु लयो पकरि ॥  
 समर तृतीय३जीतिलीनों गहि संभा३साह,  
 ग्रैसैं दावि दक्खिन२।३लये ए बाँधि तीन३अरि ॥  
 नैन पुनि संभा३के निकासे यों किते कहत,  
 दोलतादि आबादक१धाम ए सबैहि धरि ॥  
 आन तिनकी पर मरठवतखाँ राखि तहाँ,  
 जीते सेस जिमहि सिपाहनके अग्रसरि ॥ ३५ ॥  
 पंचम५तनूज खानबखस४१।५हुतो जो पास,  
 तानि अनुकंपा राज्य उभय२स्वमृद ताहि ॥  
 बीजापुर१भागनैर२दीने ए सबित्त१बल२,  
 दक्खिन२।३प्रभुत्व१दीनों साहपद२सीमासाहि ॥  
 प्रीतिपात्र हो यह५कुमार पैननारि पुत्र,  
 अधिक प्रसन्न यासों आप होइ मउ माहि ॥  
 पट्टे ताहि दैकरि अवाची१।३भुव पातसाह,  
 आयो पातसाह पीछो स्वीय जहाँथिति आहि ॥ ३६ ॥  
 विजय त्रयी३लै दैपीं आइ अवरंगाबाद,  
 अभय निरंकुस भो अव सबघाँतें साह ॥  
 तीजे३सुत आजम४१।३विचारि रहयो साहतनै,  
 मैही अव मुख्य लैहों अवसरं दिल्ली लाह ॥  
 सैंक नव राम मुनि भू१७२इत अटक सूबा,  
 नाम जसवंत मरयो जोधपुर नरनाह ॥

\* सेना का कोट डाल कर १ भुजा के बल से ? स्थान ॥ ३५ ॥ २ कृपा फैलाकर  
 ३ वेङ्ग का पुत्र ४ दक्षिण भूमि का पाट देकर, जहाँ अपनी प्रस्थिति है ॥ ३६ ॥  
 ७ तीन ८ घमंडी ९ अकुश रहित (स्वतन्त्र) १० समय पर ११ लाभ १२  
 विक्रम का संवत् १३ जोधपुर का राजा

अनिरुद्धसिंहको दक्षिणमें भेजना ] सप्तमराशि-प्रथममयुख (२८६७)

साहनेँ अजितसिंह तबहु बुलायो सोपै,  
भटन न भेज्यो राख्यो तिमहि \*निगूढ एह ॥ ३७ ॥  
आनंदादिरावश्नाम संभाके सुभट इत,  
बारहहजार१२०००<sup>†</sup>वाहिनीसौ वीर बंध बल ॥  
सीमा जो सिताराकी कितीक अब दावी साह,  
नेमके सहायतामें हिंडनेँ न देत हल ॥  
जिततित जात मार१लूट२हिँ सचात भैत,  
सो सुनि पुकार साह दे कितोक संग दल ॥  
नृप अनिरुद्ध१९६।१।१अरु मनवरखाँशनबाब,  
पठये उभै२ए मुख्य तापै न बिलंबि पल ॥ ३८ ॥  
सोलह१६संभा वय नरैस अनिरुद्ध१९६।१।१सूर,  
सूचित नबाब३लैकै मित्रपनमें समान ॥  
गाढे हठ लूटि बुरहानपुर को गरदँ,  
जात मरहट्ट रोहयो सो पुनि न जायो जान ॥  
ग्रामनाम कुंभारी समीपलों पहुँचि गैल,  
खंडन खलन अनिरुद्ध१९६।१।१मनवरखाँन ॥  
खंडन खिल्हारी भृंग१भानु२हिँ रुकातभये,  
घाँघाँ धुमडाइ कुँसुमाकर सो घमसान ॥ ३९ ॥  
वनिक धनिक कैदी१लूटको संकल वित्त२,  
ए२तो पहुँचतही छुराये भीम अनुकारी ॥  
वाहिनी सिताराकी बिलौरिडारी व्हैव्है बीच,  
मोरिडारो मिलत अनी केँ धनी मनुहारि ॥

\* गुप्त मार्ग से ॥ ३७ ॥ † सेना से बंध बांध कर १ भाले की सहायता से २  
हल नहीं चलने देता ३ मस्त ४ सेना ॥ ३८ ॥ ५ वर्ष की अवस्था में ६ तुलना  
किये हुए नबाब को ७ घेरा ८ रोका ९ काट कर. खिदहाड़ी भैवरों ने सूर  
को रोका १० वजन ननु के समान लाल ॥ ३९ ॥ ११ भीम के सदृश १२ सेना  
१३ मथदाली १४ कितनी ही

पाइ समता न सेख १ मुगल २ पठान ३ नकी,  
 तैसी चंड चाली चहुवाननकी तरवारि ॥  
 मालिक समेत रूपे न रहे इकठे \*आजि,  
 मठे मन नठे मरहठे स्वीय मद मारि ॥ ४० ॥  
 भूप अनिरुद्ध १ ९६१ को प्रवीर १ असपिंड भ्राता,  
 ताम आयो काम नवरंग पोता ४८ सुरतान १ ॥  
 सरत्र दुव २ लाये बुंदी अधिपके संहनन,  
 सूरसज्जा इत १ उतर २ के बहु समान ॥  
 नृप १ रु नवाब २ इस आये पाइ उभै दीनों,  
 साह रीझ १ मैं सराह २ को विदित दान ॥  
 जासमैं विरोधी मरहठनैं जिततित,  
 भीत करिराख्यो देस दक्खिन २ १ बिकल भान ॥ ४१ ॥  
 दूजी २ वेर बहुरि बहादुर खाँ १ संग दैकैं,  
 भेज्यो मरहठनपैं साह अनिरुद्ध १ ९६१ भूप ॥  
 सिवापुर १ कालोचा २ दि दंगन समीप सीम,  
 जुद्ध १ मख २ दूजो २ रच्यो तोमर १ विदित जूप २ ॥  
 सत्रु १ हँवनीय २ आप १ दिच्छित २ कृपानं सुंवा,  
 सिंधूरागै १ मंत्र २ सहस्रगै १ वेदी १ २ अनुरूप ॥  
 जय १ फल २ ताको लै निवेद्यो साह आगै जाइ,  
 चाहि प्रीति तवहु सराहे जुंग २ ही चमूप ॥ ४२ ॥

\* युद्ध में माही मन ले भागे ॥ ४० ॥ १ मान पीढी से बाहिर का भाई १ तहाँ  
 १ शरीर २ शृंगशय्या ३ चेत रहित ॥ ४१ ॥ ४ युद्ध रुकी यज्ञ ५ भाला है  
 सोही प्रसिद्ध यज्ञ धंभ है। गजु है सो ही ७ होम का पदार्थ है और स्वयं ८ दीक्षित  
 [ यज्ञ की दीक्षा लेनेवाला ] है ९ खड्ग है सो १० होम करने का पात्र है ११  
 सिन्धवी रागिनी [ यडाराग ] है सो ही वेदमंत्र है १२ युद्धक्षेत्र है सो ही १३  
 वेदी [ होम करने का झुंड ] है १४ दोनों सेनापतियों

बालापुर तीजीरारि त्यों जुगलहयो विजय,  
 यों अब प्रमान्यों आजि कोबिद है अनिरुद्ध ॥  
 अहितन ओघ अभिभूतहु रुके न इत,  
 द्यूतमें दबाये द्यून मीठो जानि जेम मुद्ध ॥  
 बीजापुर १ भागनैर २ कहै जे जवन बचे,  
 मेल मरहटनसों जोरि अब तेहु जुद्ध ॥  
 धामधाम लूटनलगे यों डारि धाँटिनको,  
 पारत पुकारपै पुकार बीरप्रन बुद्ध ॥ ४३ ॥  
 चौथी ४ बेर आजम ४१ ३ तृतीय ३ सुतको चढाइ,  
 सत्रुनपै भेज्यो दै नरेस अनिरुद्ध १ ६ १ संग ॥  
 आनंदादिराव १ मरहटनमें मुख्य उत,  
 जवन दुर्घाँके जुरे इक्क १ व्है बिश्वलजंग ॥  
 दिल्लीकी बरूथिनीको बिक्रम असह देखि,  
 भाजत १ जुगै २ जुरि १ भाजत २ लहत भंग ॥  
 आगै आगै धाटिनके उक्त अधिकारी अटे,  
 पीछै पीछै साहपुत्र बिचगयो दमन बंग ॥ ४४ ॥  
 दारा ४० १ की सुता जो व्याही आजम ४१ ३ उचित देखि,  
 सोपै ही तदीय संग बेगम सह सनेह ॥  
 पाइ छिद्र कोऊ परी सत्रुनके सकट सो,  
 ताहि लै बली ते परदाई चले सुरि गेह ॥  
 सो परयो अलीअल व्है आजम ४१ ३ मंडई श्रुति,  
 आनिचित अनख अचानक उछरि एह ॥

की प्रशंसा की ॥ ४२ ॥ १ मुद्ध में २ चतुर ३ अत्रुओं का समूह ४ व्याकृ-  
 ल होकर भी नहीं रुका ५ मुख्य ६ धाड़ा दायित्यों को ॥ ४३ ॥ ७ सेना का  
 ८ बल ९ फिरे (चले) १० दंड देन के भेद (व्यंग्य) से ॥ ४४ ॥ ११ पड़दे  
 में लेकर (छिपाकर) १२ बिच्छू का डंक होकर आजम रूपी १३ सिंह के कान  
 में पड़ा १४ क्रोध

भेजतभो भुजन भरोसा भाखि भूपतिकों,  
 आनिपूगो यहहु सचावत सरन सेह ॥ ४५ ॥  
 अैसे अनिरुद्ध १९६१ पहुँचतही अरिन ओघ,  
 सम्मुह पलटि जुरे घोर भयो घमसान ॥  
 मिच्छ १ तो टरे वहाँ बुरहानपुर कोल मानि,  
 काटे सरहट्टन २ के चखाइ घाय चहुवान ॥  
 स्वीयजन कैदी १ अवरोधकी विभूति २ सह,  
 जीतिकें छुरायो उक्त वेगमको नरजानि ॥  
 फोरयो घाय तीन ३ नृपके वपु लगे फवत,  
 पान १ सान २ पैने एक १ बान रु दुव २ कृपान ॥ ४६ ॥  
 गेरे मुंड १ केते फेरे रुंड २ केते अंधगति,  
 तोरे तुंड ३ केते काटे भुंड केते जयकार ॥  
 आनंदादिशव १ संतू २ आदि सरहट्ट उहाँ,  
 पंच ५ मुख्य पारे चीरिडार घने अनुचार ॥  
 लोभ दे पलाद १ गन रनके कुंतूहलि २ न,  
 सकल रिभाये ढाहि संचय प्रहरि सार ॥  
 भंजिकें सितागदल एक अनिरुद्ध भूप,  
 हरकों निवेदे वीर तहिन प्रैचुर द्वार ॥ ४७ ॥  
 बुंदीके भटनसाहिं मुख्य भूरे दुव २ वार,  
 फतेसिंह १ चालुक परचो प्रबल दल फागि ॥  
 गोरि देवसिंह २ दूजी २ नारद रिक्ताड गिरयो,  
 अट्टीतम १ इतके रहे भट इतर गागि ॥

१ बागों का भेद २ पत्नी के राजा नरसिंह से युद्ध नहीं करने का बुरहान  
 में मल्लकों ने कोल दिया था उसको मानकर ॥ ४५ ॥ ३ जनान की सामग्री  
 सहित ४ पाकाली ५ मान से तीरग किये हुए ६ नर ॥ ४६ ॥ ७ अन्ये का  
 ८ सेवकों की ९ मांस भोजन करनेवाले आभ आदिकों को १० युद्ध का तमा  
 देनेवाले ११ मरनकों के यष्टन द्वार जिव की भेट किये ॥ ४७ ॥ १२ गोर

आनंद १ रु संतू २ नारु ३ नत्थेराव ४ ईस्वर ५ ए,  
 मुख्य मरहट्ट मरे ओर घने अनुसारि ॥  
 विजय १ समेत यौ नरेस लायो वेगम २ कौ,  
 वाराह १ ज्यौ बसुधा २ दिती के सुत कौ बिदारि ॥ ४८ ॥  
 ॥ दोहा ॥

आजम ४ १ ३ मिलत लगाइ उर, बहुत नृपहिं बिखदाई ॥  
 राखी इजत तैं मरद, भाखी यौ मम भाइ ॥ ४९ ॥  
 बहुत बडाई वेगमहु, पहुँकौ करि पतिपास ॥  
 अकखी जो जात न यहै, व्है कुल १ जस २ असु ३ न्हास ॥ ५० ॥  
 आजम ४ १ ३ जन कहिं वै अरज, नृप कहँ रीझ निमित्त ॥  
 प्रथित दिवाई गत पुहवि १, बलि पीछी सह बित्त ॥ ५१ ॥  
 महत देस वाराँ १ मऊ २, बलि लघु खैरावाद ३ १ ॥  
 चाचुरनी ४ १ २ खेरी ५ १ ३ उ ४ हि, सहित वरोद ६ १ ४ प्रसाद ॥ ५२ ॥  
 खट ६ हि देस पट १ भूखन २ रु, आयुध ३ गय ४ हय ५ आदि ॥  
 देय विभव भूपहिं दयो, बीर सुजस संवाँदि ॥ ५३ ॥  
 इम सोलह १ ६ सम वय अधिप, नियत उधारयो नाँम ॥  
 भटियानी व्याहत भयो, तर्थाँहि डोला ताँम ॥ ५४ ॥  
 नाम चंद्रकुमरि १ ९ ६ ३ जु निपुन, जेसलमेरु प्रजात ॥  
 इम रानी तीजी ३ यहै, व्याही नृप बिख्यात ॥ ५५ ॥  
 पाये इम गत देस पुनि, सह जस १ विजय २ प्रसंग ॥  
 गत सुनसर्व देवोहु गिनि, रहयो साह अवरंग ४ ० ३ ॥ ५६ ॥  
 इति श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी

१ हिरण्याक्ष को मारकर ॥ ४८ ॥ २ स्तुति करके ॥ ४९ ॥ ३ राजा की ४  
 भाग्य ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ वही डोला मंगवाकर  
 ५ वहीं व्याहा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ६ भाऊसिंह से गयाहुआ मनस्य ॥ ५६ ॥  
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के अन्त

पत्यनिरुद्धसिंहचरित्रेऽनिरुद्धसिंहविवाहसंततिवर्णन १, बुन्दीपट्टले  
खनहेतुवेशीदत्तादिल्लीप्रेषण २, औरंगजेबपुलाकबरतत्प्रतीपीभवन ३  
अकबरमन्त्रज्येष्ठात्मजालमौरंगजेबप्रतीपभावौरंगजेबससैन्यदक्षि-  
णादिगमन ४, राठोड़दुर्गदासयवनेन्द्रसार्थलुगटन ५, कीलिताल-  
मौरंगजेबकियत्कालदक्षिणानिवसनाकबरफारसदेशगमन ६, बुर-  
हानपुरान्तिककृतमहाराष्ट्रयुद्धानिरुद्धसिंहाजमरमणीमोचन ७, अ-  
निरुद्धवारां१ मऊ२प्रान्तफ्रयासादनं नाम दशमो मयूखः ॥१०॥

आदितः सप्तत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ ॥ २३७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

फैल्यो जस नृपको फबत, हुत इम दक्खिन २॥३ देस ॥

हित सह साह प्रसन्न हुव, अप्पि विभूति असेस ॥ १ ॥

जीत्यो जुद्ध चउत्थ ४जब, पाये दुव २प्रतिकूल ॥

इक भ्राता असपिंड इह, सामंत १८७११ज कुलमूल ॥२॥

कैर सुपै अभिधान करि, दुर्जनसिंह १हि दुष्ट ॥

भुजनेरी सासक भयो, स्वामिद्रोह संतुष्ट ॥ ३ ॥

विश्वनाथ १कायथ बलि, फतैचंदसुत फुटि ॥

अनिरुद्धसिंह के चरित्र में अनिरुद्धसिंह के विवाह और सन्तानों का वर्णन ?  
बुन्दी का पट्टा लिखवाने को वेशीदत्त को दिल्ली भेजना २ शाहजादा अकबर  
का औरंगजेब से वाणी होना ३ अकबर की सलाह से बड़े शाहजादे आलम  
का औरंगजेब से विरुद्ध होना और औरंगजेब का सेना सहित दक्षिण में  
जाना ४ राठोड़ दुर्गदास का बादशाह की वहीर को लूटना ५ शाहजादे आल-  
म को कैद करके बादशाह औरंगजेब का दक्षिण में रहना और शाहजादे अ-  
कबर का भागकर फारस में जाना ६ बुरहानपुर के समीप अनिरुद्धसिंह  
मरहटों से युद्ध करके आजम की हुरम को मरहटों से छुड़ाना ७ अनिरुद्धसिंह  
को चारा, मऊ का परगना पीछा मिलने का दशवां १० मयूख हुआ और  
आदि से दो सौ सैंतीस २३७ मयूख हुए ॥  
१ शीघ्रा ॥ २ मयूख ३ दुर्जनसिंह ॥ ३ ॥



संदरीस पलटयो सुपै, बखसी धर्मबिछुटि ॥ ४ ॥  
 मरहठन सन ये मिले, दुवरहि ठानि प्रभुद्रोह ॥  
 उत१क पाये पत्र इतर, पापिन पाप प्ररोह ॥ ५ ॥  
 इत१के पत्रहु जात उतर, सुनै पिहितलिपि सज्ज ॥  
 जेम तरै उत१के जवन१, उनतै इतरके अज्ज ॥ ६ ॥  
 इत्यादिक सब मर्म इन, खल दोउरन किय ख्यात ॥  
 प्रभुद्रोही जानै प्रभुहु, पलचरन पँह पात ॥ ७ ॥  
 चेति काँकगति अति चमक, प्रथम१सुद्धि यह पाइ ॥  
 भीत जुगरहि दिगैत भजे, लघुजन कुलहिँ लजाइ ॥ ८ ॥  
 दुवरभुजनैरी१संदरी२, तव इन्हस्थान उतारि ॥  
 बुंदी कहि पठई बहुरि, विमतिन देहु बिडारि ॥ ९ ॥  
 दुवरन दये गेहन दुँरन, जामिक इतके जाइ ॥  
 इम अधमन जिस आदस्यो, अर्घ पर अघ अधिकाइ ॥ १० ॥

( घनाक्षरी )

संवत गगन वेद सत्रही १७४० लगत समा,  
 दुर्जन१रु विस्वनाथ२छन्न रहि बुंदी देस ॥  
 विष्णुसिंह१९५१सूनु राजसिंह१९४१४नाती बलभद्र१९६१२  
 बुंदी हो सु फोरयो नृप ताकोँ लोभ दै बिसेस ॥  
 सो अघ विदितहोत गो भजि इहाँ तँ सोहु,  
 लीनों जाइ सरन उदैपुर लवकुलेस ॥  
 जानै स्वीय तनया विचित्रकुमरी१९७११सो जहाँ,  
 व्याही वरि बिंदु जयसिंह राना बसुधेस ॥ ११ ॥  
 कन्या इक१याकोँ भई पीछै सोहि कालकरि,

॥ ४ ॥ ५ ॥ १ बुँदने के लेख २ भेद ३ हलकारों से ४ पाते थे ॥ ७ ॥ ५ काकपक्षी  
 सदैव सचेत रहता है इसप्रकार ॥ ८ ॥ ९ घरों में नहीं घुसने दिये ७ पहरा-  
 यत ८ पाप पर पाप ॥ १० ॥ ९ लव के वंश के पति (महाराणा) का १० दुल्लह ॥ ११ ॥

व्याहयो भीम१९८।१कोटा कुमार नृप बुधवेर १९७।१वेर ॥  
 अँसैं बलभद्र१९६।१बर्तमानमें उदैपुर गो,  
 सो इत दुजनसिंह१९६।१समुक्ति सपिंड सेर ॥  
 विस्वनाथ१दुर्जन२सौँ अँसैं कहि भंजे वेन,  
 बैरीसाल१९४।३वंसी वीर दुर्जन१९६।१न करि देर ॥  
 बुंदी लईचाहैं तासौँ मिलिकैं करो विहित,  
 कैसी प्रभुता वहै तह१के उद्यममें हमेकर ॥ १२ ॥  
 बुद्धि मेरी बदली तुमारे बढ़िकाइवैंत,  
 पीछैं राजसिंह१९४।४कुल लगन कलंक पाइ ॥  
 हेरि हित पीछैं सकुटुंब निकस्यो मैं हारि,  
 लाभ पुर पढ़नके न्हानको बहानौँ लाइ ॥  
 उत तुम संग टिकियो न लखि पायो इत,  
 अँसन१बसन२को निवाह उदैपुर आइ ॥  
 इस बलवैनिको सहाइ तुमरैहि अब,  
 भूपति भंजहु बुंदी बुंदीपतिकों भ्रमाइ ॥ १३ ॥  
 दुर्जन१९६।१के आगैं बलभद्र१९६।१टारि अँसैं दीन,  
 विस्वनाथ१दुर्जन२सौँ निरुह कहार्ह बात ॥  
 हुरबलौँ ए तो दुष्ट चाहत हे चाम१हाड,  
 बलवनि ईससौँ मिल मन हुत बहात ॥  
 द्विगुन पटाके लोभ अधस विस्वासि द्वैरही,  
 दुर्जन वहै दुर्जन१९६।१घुमाई बुंदीपर घात ॥  
 अस्ववार१छसत६००पदाति१छहजार६०००आनि,  
 पटके पुरीकोँ बोढि हेतिनके वज्रपात ॥ १४ ॥  
 संवत गगन वेद सत्रह१७४०कथित समै,  
 राध१मास असित१चउत्थि दिन मंडी रारि ॥

१ बुवासिंह के समय में रसिंह १ उचित ॥ १२ ॥ ४ भोजन ५ ग्राम का नाम है ॥ १३ ॥ ६ इच्छा रहित ७ शीदड़ के समान ८ शीघ्र ९ दुर्जनसिंह ने शत्रु होकर १० सवार ११ घेर कर १२ राज्यों के ॥ १४ ॥ १३ वैशाख १४४५

नीठिनीठि द्वैरदिन किसोरसिंह नाथाउत,  
 बुंदी जुद्ध ठहरि कह्यो भट जस विगार॥  
 दारित कपाट माँहि पैठे भट दुर्जनके,  
 धाम धाम लुट्यो पुर जामैशताम दूठ धारि॥  
 बुंदीमें अमल ठानि छद्दीके दिवस वैठा,  
 पट्ट आइ दुर्जन१९६१अचानक दिशाय पारि ॥१५॥  
 दुर्जन१रु विस्वनाथ२आदिक गृहायदाता,  
 जानै जई द्विरभुन पटा दै मानै मुख्यकरि ॥  
 मुख्य भुजनैरी१ तैं हु नंदनारनृपति मान्यो,  
 यहहि जनाइ हेतु पीछैं दुंदुकारि अरि ॥  
 वर्तमानमें यो स्वामिद्रोही सो तखतवेठि,  
 धरनीअधीस है दिवान बज्यो होस धरि ॥  
 चिन्ह सिर आतपत्र१चामर२चलाये पहिले,  
 न जे पलाये ते मिलाये कौरा दर्प परि ॥ १६ ॥  
 ऊँरुज करमसिंह१कायथ उदैसिंह२,  
 विप्रविस्वनाथ१३हरिवल्लभ२१४उभयूरव्यास ॥  
 कौरामें पठाये अधिकारी ए चउ४हि कैद,  
 रानी जन भेजिराखे निखिल अधोनिवास ॥  
 द्विज व्हाँ पुरोध्या सुकदेव कह्यो दुर्जन१९६१सों,  
 होत अवरोध काळें कुल१जस२धर्म३होस ॥  
 अधम सैदर्प उलटी रिस पकगि सापें,

१ किंवाह तोड़कर २ एक प्रहर तक; अथवा जहाँ तहाँ ३ तहाँ ॥ १५ ॥ ४  
 सहाय देनेवाले ५ जय करने वाले ६ ग्राम का नाम है ७ विकार के साथ  
 निकाल कर ८ शृपति ९ बुंदी के राजराजा का उपपद दीवान है १० छत्र  
 ११ भागे जिनको १२ कैद किये ॥ १३ ॥ १४ चंद्र १५ कैद (जेलखाने) में  
 १६ सबको नीचे के महलों में रखने १७ पुरोहित १८ दानि १९ धर्मद

पट्टनि पठायो अवरोधहु हठ प्रकास ॥ १७ ॥

भ्राता पहुँचाइकेँ आपुनै अनुज भेजे,  
नेता करि द्वैरही फतेसिंह १९६।२ जैतसिंह १९६।३ नाम ॥

आधे पंथ रानिन उमैरए पहुँचाइ आये,  
ठाकरिया ग्रामलौं गये लखि निकट ठाम ॥

जन अवरोधवारे पट्टनि बसे यौं जाइ,  
जानी यह सुद्धि अहिरुद्ध १९६।१ नृप बेतीं जाम ॥

आजम ४१।३ के द्वारा भेजी अरज हजूरएह,  
दासपै इहाँ बै बिनु धाम न खरच दाम ॥ १८ ॥

अधिक प्रसन्न नृप सौं हो साह यातँ एह,  
सुनत रिसायो यौं दमंग ज्यौं मिलत सोर ॥

आजम ४१।३ की अंगनैहु बिन्नति पठाई अैसें,  
मानहु स्वसुर राखी इज्जत नृपहि सोर ॥

इच्छा प्रियपुत्र १ की बध २ को लंखी त्योंहि आप,  
जोध अनिरुद्ध १९६।१ संग बाहिनी है अतिजोर ॥

बुंदी लैन भेज्यो कह्यो चलत बहोरि बेल,  
अलप लखोतो लिखिभेजो भेजिहौं मैं और ॥ १९ ॥

भीम १ नाम रानाँ जयसिंहको अनुज भ्रात,  
रानाँ राजसिंहसुत जो बच्यो तटस्थ रहि ॥

पीछै जाहि उचित पटामैं सह भूपपद,  
बनहँडा १ द्रंग मिल्यो गौरव विसेस बलि ॥

हित १ जनाने लोकों को ॥ १७ ॥ २ हाकिम ३ जनाने के लोक ४ खबर ५  
राजा अनिरुद्धसिंह था वहाँ कही ६ अब ॥ १८ ॥ ७ अग्नि ८ दुरम ने ९  
पुत्र की स्त्री की १० सेना ११ सेना ॥ १९ ॥ १२ राना राजसिंह को मारने का खे-  
द प्रसिद्ध होजाने पर जो उपद्रव हुआ था उस उपद्रव से किनारे रहकर १३  
राजा पन के साथ \*बन्हडापुर भिला.

\* महाराणा जयसिंह श्रीर महाराज भीमसिंह का एक ही दिन का जन्म है इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध

पीछें सुता याहीकी विवाहयो जोधसिंह १९७१ अग्रज १,  
के संग अनुज समै पै विधिलेख लाहि ॥

अग्रजसों तोरि साहआश्रित हुतो वहाँ यह,  
सो १हु दयो संग पहिलैतैं प्रीति चित्त चहि ॥ २० ॥

दीनों संग भूमिपति अबिदित नाम दूजो,  
अन्ववाँय गोड़ १ जाको चामरिक १ उपटंक ॥

जवन सुगलखान तीजो ३ संग भेज्यो जाहि,  
सूबा अजमेर दीनों उद्यमी गिनि असंक ॥

अस्तखान अलस न राख्यो अधिकारी उहाँ,  
एक १ दुर्गदासहि रुक्यो न जानि हठ अंक ॥

सुगलसों सुगल कही यों इन्ह संग मिलि,  
बुंदी लै प्रथम १ पीछें २ सरलीकरहु बंक ॥ २१ ॥

बोधि ऐसें भीम १ चामरिक २ आ सुगल ३ बुंदी,

॥ २० ॥ १ जिसका नाम मालूम नहीं २ वंश ३ पदवी ४ आलस्य नहीं रक्वा  
५ युद्ध में हठ करनेवाला; अथवा हठ का चिन्ह रखनेवाला ६ देहां को सीधे  
करो ॥ २१ ॥ ७ समझाकर

हे कि दोनों की बधाई लेकर दो जने महाराणा राजसिंह के पास गये तब महाराणा सेते थे तहां जयसिंह की बधाई देनेवाला पैरों की तरफ और भीमसिंह की बधाई देनेवाला सिर की तरफ बैठ गया, फिर महाराणा जगे तब पगथे की तरफ दृष्टि पड़ते ही जयसिंह की बधाई देनेवाले ने कुमार के जन्म की सूचना की तब मिराने की तरफ से भीमसिंह की बधाई देनेवाले ने अरज की कि मैं जिनकी बधाई लाया हूँ उनका जन्म पहले हुआ है इस पर महाराणा राजसिंह ने कहा कि इस समय हमारे पाटकी पुत्र सुरताखसिंह और छोटा सरदारसिंह दोनों मौजूद हैं फिर इन में छोटे बेटे का भगड़ा निर्वक है इसलिये हमको पनेले खबर हुई वही बड़ा है इस पर उस समय तो कुछ विचार नहीं हुआ परन्तु सुरताखसिंह और सरदारसिंह तो राणा राजसिंह की विद्यमानता में न मरगये और सम्यक् १७३७ में महाराणा राजसिंह का देगान हुआ तब जयसिंह के पाट बैठने पर छोटे बेटे का विचार बढ़कर भीमसिंह ने उदयपुर की छोटी-सी और अजमेर में बादशाह औरंगजेब के पास जाकर राजपुत्र की पदवी सहित बनेड़ा पाया तो उस समय बादशाही अधिकार में होगया था उदयपुर से इनके साथ इस टीकाकार (चलत कितनसिंह) के पर पुरा उदयभाग जागे जिनको भीमसिंह ने बनेड़े के नेग और गीहड़्या नामक ग्राम दिया सो यही मौजूद है सो इन भीमसिंह को बुंदी की सहाय पर भेजना क्षिप्र सो तो उचित ही है परन्तु बनेड़े का पत्र उस समय मित्रता दिना तो असत्य है; क्योंकि बनेड़ा पहिले ही मित्र चुका था.

सीसोदरु गोर मिच्छर भेजे नृपके सहाय ॥  
 आजम४१३की बेगमहु पतिसौं निवेदि इहाँ,  
 पठई कितीक पति सेनाहू प्रबल प्राय ॥  
 मऊ१बारा१२आदिकमैं अमल जमाइ मग्ग,  
 कोटापुर आइ तनैं फोजके पटनिकाय ॥  
 सूबापति संगिन मयूर तँहँ एक१मारंग्यो,  
 बढिगो कलह तापैं बिखकी लगत लाय ॥ २२ ॥  
 जावत भो दक्खिन२३नरस साहसंग जव,  
 पट्टनिके डेरन भो पहिलैं यह उंदत ॥  
 न्हदयनरायन१९२१पिनाती छत्रसिंह१६हाडा,  
 संग अवनीसकौ हुतो सो भट बंधु हंत ॥  
 नामी गज ताकौ एक हो गजकुमर१नाम,  
 केते कहैं पहिलैं दयो सो ताहि छितिकंत ॥  
 तासौं नृप मंग्यो सो दयो न गजराज तनैं,  
 जारहयो कोटा तजि बुंदी वास बरजंत ॥ २३ ॥  
 कोटाके मुकामपैं मारत मयूर क्रुद्ध,  
 छत्रसिंह१९भटन चलाई तेग धारि छोहँ ॥  
 मारिक मयूरको लयो वह जवन मारि,  
 दल निज भेज्यो तापैं सूबापति आनि द्रोह ॥  
 छत्रसिंह१९ । सिबिर<sup>२</sup> लयो तिन भटन छाड़,  
 तोपन दगाइबो तदयोही महारिसमोह ॥  
 भूप अनिरुद्ध१९६।१यह जानत सबेग भजि,  
 ले भैर स्व सिर रोच्यो पहिलैं जवन रोहँ ॥ २४ ॥

१ अरज करके २ बहुत प्रबल ३ डेरे ४ जहर की ॥२२॥ ५ वृत्तांत ६ पोता ७  
 हाथ (खेद है) ८ बुन्दी के राजा ने ९ बुन्दी का निवास छोड़कर ॥२३॥ १० क्रोध  
 ११ मयूरों को मारनेवाले यवन को १२ डेरे का १३ भार १४ शोभायमान  
 हुआ १५ यवनों को रोककर ॥ २४ ॥

मिच्छनकों सौँह दै टिकाइ ततकाल सुरि,  
 आइ सूबापतिपै सबेग भूप अनिरुद्ध १९६।१ ॥  
 सूची ऐह राखि जवनेस भोज १६१।२सुर्जन १९०।१सौँ,  
 सोहु तुमसौं न छानी समुझहु भाव सुद्ध ॥  
 हनिबो हमारो तुम्हें जो रुचत स्वीय हित,  
 अर्थ लागिजैहैं तोतो लुत्थिनपै लुत्थि उद्ध ॥  
 नाँतो सौँपिदेहैं असिबाहकँ तुमहि न्याय,  
 जवनन रोकिदेहु जवन न होहु जुद्ध ॥ २५ ॥  
 मानि सु मुगलखान लैबो गहि मारकँको,  
 भूप संग दूत भेजि बैलाहि लयो बुलाइ ॥  
 छलसिंह १९ । डेरन गो बैठो गजपै छितिप,  
 उतरि उहाँ रु मन भूताको लयो मनाइ ॥  
 लगगत विरुद्ध पास आपुनैं चढाइ लायो,  
 ठाम निज पिठिपै खवार्सामैं सुभट ठाइ ॥  
 मोदित मुगलखानसौं यह मिलायो सूर,  
 मारकँ दयो सो पहिलैंही गूढ निकसाइ ॥ २६ ॥  
 माँग्यो मोरमारकँको मारकँ मुगलखान,  
 पहुँतहैं भाख्यो भजिगो सो क्योंहुँ लहि प्रान ॥  
 हाडोतीधरामैं अपराधी पुनि आइहैं तो,  
 समुचित पाइहैं बचाइहैं न अवसान ॥  
 औसैं बढयो विग्रह मिटाइकैं निज अनीकँ,  
 कोटातैं चलाइ घेरी बुंदी सह तुरकानैं ॥

सौगन देकर यह बात ३ यहाँ ४ ऊँची ५ तरवार चलावेवाले को दर्जा प्रुद्ध नहीं है ॥ २५ ॥ ७ मारनेवाले को ८ सेना ९ स्तुति १० मारनेवाले को पहिले ही अग्नि निकाल दिया ॥ २६ ॥ ११ मयूर को मारनेवाले यवन को मारनेवाला १२ राजा ने कहा १३ किसी प्रकार; अथवा कहीं आग गया १४ उचित दंड पावेगा १५ नाश; अथवा अंत में बंद हुए १६ विग्रह को मिटाकर १७ अपनी सेना में १८ यवनों सहित

समय हुतो पै छत्रसिंह १९ । सुत आयो संग,  
 आहव रचायो अनिरुद्ध १९६। इतैं अतिमानैं ॥ २७ ॥  
 बुंदीतैं कछुककाम बखसी सु बिस्वनाथ,  
 १पट्टनि गयोहो गूढ रानी जन जानि पास ॥  
 पहुँचत सुद्धि ताकी नृपपै मगहि मध्य,  
 ग्राहक पठाइ गहि संग लयो अबिसास ॥  
 आवतहि बुंदी गरदाई पटक्यो असह,  
 सहरके सूरनपै तोपनको अति त्रास ॥  
 तोप इक १तैसैं प्राच्य १पर्वत चढाइ तासों,  
 जोरही दुर्ग अट्टे डारघो तोरिकैं चरख जास ॥ २८ ॥  
 दक्खिन २।३दिसासों इत गोपुर अररं दारि,  
 अर्द्ध १दल माँहि आयो बाहुन बढात दल ॥  
 उत्तर ४।७दिसासों डोभरेकी राह होइ इत,  
 दुर्गके अररं तोरि पैठो माँहि अर्द्ध १दल ॥  
 दुर्जन १९६।१सनाँभि १असनाँभि २कहि भीतद्वैही,  
 प्रान लै पँलाये दुष्ट थान ठहरे न पल्ल ॥  
 भाद्रपद ६असितैं चतुर्थी पै अमल भयो,  
 बुंदी अनिरुद्ध १९६।१को यों जयजस लै विमल ॥ २९ ॥  
 तारागढ कौरा खल बिस्वनाथ १ राखि तिम,  
 वाजे मंडि मंगल विजैके वीर बजवाइ ॥  
 रीति कुलधर्मकी चलाइ रु जमायो राज्य,  
 लीनों अवरोध उँकतपुर १तैं पुर १बुलाइ ॥

१गुद्धबडा ॥२७॥ ३जयर ४पकड़नेवालों को भेजकर ५घेर कर ६पूर्व दिशा के ७  
 बुरज = तोप का शकट ॥२८॥ ८सहरके द्वार के १०कपाट ११ तोड़कर १२आधी  
 सेना १३भाग का नाम है १४गढ के किवाड़ तोड़कर १५आधी सेना १६सपिंडी  
 बाई १७ सपिंडी से बाहर के भाई १८ भाग १९ जग भर भी नहीं ठहरे २०  
 कृष्णपक्ष २१निर्मल ॥२९॥ २२कैद २३जनाना २४कहेहुए (पादण) पुर से २५बुंदी में



सूबापति१आदि जे सहायक त्रय३हि संगी,  
गेह महमानि राखि दीनी सीख हित गाइ॥

जातहि मुगलखान सूबा अजमेर जंगी,  
रठ्ठर रोके जितहीतित रनरचाइ ॥ ३० ॥

सामंत१८७१के सुनुनमैं जेठो बलकर्ण१८८१जान्यौं,  
मुख्य१कुल ताको तामैं दुर्जन१९१ कहयो जो मूढ ॥

बैरीसाल१९४३नाँती दुष्ट दुर्जन१९६१को संगी बन्यौं,  
गो भजि बहोरि तास संगहि निकसि गूढ ॥

तीजै१शुत तेज१८८३बंसी मानैं तिहिँ ठाम१मुख्य,  
राख्यो भुजनैरी१ छीनि नंदनाँ२अनवरूढ ॥

संदन सम्हारि अनिरुद्ध१९६१नृप याही समैं,  
आनी तीन३रानी पुनि ओसर विरचि ऊँढ ॥ ३१ ॥

भाख्यो जो सपिंड दुष्ट दुर्जन१९६१ इहाँ तैं भज्यो,  
गूढ रहि लूटैं तिहिँके इत भडके ग्राम ॥

आनिमिल्यो यासौं तहाँ धाँटिधर भिल्ल भीम,  
जाडलई चाचुरनी१दोउ२न लरि छुदजामैं ॥

साकैं लगतेही भूमि बेद सुनि इंदु१७४१समैं,  
स्वेत१मधु१दसमी१०चढ्यो नृप जय सकाँम ॥

साधानी२२१२६जुझार१९४१सुत नाम जयसिंह१९५१मगग  
ईस कोटरेको ईख्यो बलसैं बहत बाँम ॥ ३२ ॥

पत्तन बरोदसौं कितोक धन जोर पाइ,

भोमियाँ बिभाग यह लेतहो प्रसाद आइ ॥

१ मिहमानी ॥ ३० ॥ २ पुत्रों में ३पोता ४प्राचीन समय से चढाहुआ अर्थात् प्राचीन अधिकार से नानणा नामक ग्राम छीन लिया ५ घर ६ विवाह ॥ ३१ ॥ ७ छाने ८ धाढायती (डाकू) ९ नाम है १० पहर ११ सम्बन्ध १२ शुद्धपक्ष १३ चैत्रमास १४ जय की कामना से १५ साधोसिंहोत हाडा १६ देखा १७ विरुद्ध ॥ ३२ ॥ १८ भोम का बंट १९ मत्तता की रीति से

तासों करि जुद्ध कोटराहु लै निकास्यो ताहि,  
 सोपै भाजि चाचुरनी पहुँच्यो तिम सिटाइ ॥  
 एक१ही दिवसमें महीप अनिरुद्ध१९६।१वहै,  
 जीतिलीनी चाचुरनी सत्वर असह जाइ ॥  
 भिल्ल१रु सेनाभि२सह दुर्जन१९६।१तहाँ सों भजि,  
 खीचि१३नमें जाइ दुरघो स्वीय बलकों खपाइ ॥ ३३ ॥  
 चाचुरनी१हाँता भट राखि भूप वहाँतें चढि,  
 नगरी मऊ२में किते दिवस करघो निवास ॥  
 साहडिग जाइ इतैं मालवको सूबादार,  
 आयो पीछो मालव बहादुर लै अवकास ॥  
 अधिपके मित्र खानमुगल१बहादुर२ए,  
 तासों यह मिलन अवन्ती गो सुहृद तास ॥  
 छत्रार्धम दुर्जन१९६।१न आइ इत छानैं पुरी,  
 लाखैरी प्रविंसि निसि कीनों कोटवाल नरस ॥ ३४ ॥  
 सो सुनत सूचि नृप सुहृद बहादुरसों,  
 दंड हित भेज्यो दंडें खीचि१३नपैं जोर दैन ॥  
 कहि यों पठाइ तुम काढि हाडा६१दुर्जन१६।१कों,  
 बहुरि न आनदेहु कानदेहु इक१वैन ॥  
 दंड भरि साहकों बिडोख्यो तिन दुर्जन१९६।१कों,  
 आकुल अटयो सो अैनअैनैं मैं रहित अैनैं ॥  
 तीससत३००सैंदिन सों कुसल पठायो तापैं,

१ शीघ्र २ सपिंडी आई ३ अपने बल का नाश करके ॥३३॥ ४ रत्नक (चाचुरनी) की रक्षा के लिये ५ फुरसत दरजा अनिरुद्धसिंह के मित्र ७ वज्रैन उसका मित्र ८ अधम चर्चा १० प्रवेश करके ॥ ३४ ॥ ११ मित्र १२ सेना १३ सुनो १४ निकाला १५ व्याकुल होकर फिरा १६ घर घर में १७ बिना घर १८ सवारों से १९ कुशल सिंह को

निज जो सिलहदार नृपसो अरुननैन ॥ ३५ ॥

दुर्धर कुसलसिंह नृपके सिलहदार,  
दुर्जन १९६१ को एक शठाम स्वस्थ टिकिवे दयो न ॥

छाया शजिम विग्रह की संग न कबहु छोरि,  
भाजतहि राख्यो दुर्गदास सो जुंग भयो न ॥

जैतथ वह १ प्रात तथ दुपहर २ एहर जात,  
लहि इम त्रास स्वास सीतल कहूँ लयो न ॥

सहसा तुपक छूटि धात्रीसुत स्वीयहीकी,  
ठाँ इक मरयो सो दुष्ट चितितं तस ठयो न ॥ ३६ ॥

मित्र १ मिल २ द्वै ३ इत अवंती अति मोद मिलि,  
गज १ हय २ लौ दै भूप बुंदी दिस कीनों गोने ॥

द्वै २ ही उक्त दुर्जन १९६१ के अनुज इहाँ ते आनि,  
भूप १ रु बहादुर २ के पाय पर गत भोने ॥

तिनकी दया लौ कह्यो सूबापति १ भूपति २ सों,  
लंघि कुलधर्म जिहि रावरो लजायो लोन ॥

सहज मरयो सो खल दुर्जन १९६१ हरामखोर,  
हीन तस बंधु दीन आये ए अनुग होन ॥ ३७ ॥

अन्न १ बख्ख २ इनको हमारोही कथन हरि,  
देहु आप अवतो गयो करि दुसह दाह ॥

मित्रको कथन आनि संग तिन्हँ आनि मित्र,  
नगर गुगोर आइ ऐसेँ जई नरनाह ॥

चौराँ पूजि कृष्ण १९६१ १ भगवंत १९५१ २ के तहाँतें चढ़ि,

१ आहद का नाम है २ लालनेत्र करके ॥ ३५ ॥ ३ काठिनोई से धपणा (डराने) से आवे ऐसा शजिसप्रकार शरीर का साथ छाया नहीं छोड़ती है तिसप्रकार ४ दुर्गदास से नहीं मिल सका ५ जहाँ ७ ठंढा, स्वास ८ अचानक चन्दक कूटकर ९ अपने ही धाय भाई की १० उसका विचारा हुआ नहीं हुआ ॥ ३६ ॥ ११ गमन १२ बिना घर १३ सेवक ॥ ३७ ॥ १४ दग्ध स्थान का मंदिर

लाखैरी पुत्री लाखि प्रजाकों दे दाम लाह ॥  
 कोटवाल सुतकों पिता ज्यों अधिकारी करि,  
 कंटक प्रजाके कांछि बुंदा बिस्मो रुचिगह ॥ ३८ ॥  
 दुर्जन १९६१ के भ्राता फतैसिंह १९६११ को उचित दीनों,  
 गोत्र रह टोडा १ जो समीधीको लगत ग्राम ॥  
 खेग १ गजधगको दुलारा १ लाखैरीको खेट,  
 दीनं दुवरेखि जैतसिंह १९६१३ को उचित जाम ॥  
 साधि स्वामीसेवा बीर पीछें यह जैतसिंह १९६१३,  
 किंति करि भावीकाल दिल्लीपुर आयो काम ॥  
 सूनू जाको देव १९७१ सो बखामैं बुधसिंह १९७१ संगी,  
 धीर भयो छोरि दुवलाख २००००० के धरनि धाम ॥ ३९ ॥  
 संवत नयन वेद सत्रही १७४२ लगत समा,  
 सितरमधु १ आदि १ तिथि संगत समय सुद्ध ॥  
 नाथाउति दूजी १ नृपरानी नैं प्रसव पाइ,  
 बालक जन्याँ सो नाम करि सो कुमार बुद्ध १९६१ ॥  
 पत्तन १ रु देसरजाको उच्छव मच्यो प्रचुर,  
 रीतिपर लखन लगाये द्रम्म अनिरुद्ध १९६१ ॥  
 पीछें सक वेद वेद सत्रह १७४४ अनेह पर,  
 तेनघ भो दूजो २ ताकै जोधसिंह १९७१ रजित जुद्ध ॥ ४० ॥  
 रानी जुत दुवरेहि कुमार ए तब नरेस,  
 मातामैंह भोन भेजे नगर नमानाँ नाम ॥  
 तबतैं रहे ए वसु ८ अर्द्धलो कुमर तत्थ,  
 आये सक वावन ५२ मै पीछें गेह प्रभुराम ॥  
 जेठे १ के जनम पीछें राजाउतिरानी जनी,

१ प्रवेश किया ॥ ३८ ॥ २ परगना के मुख्य ग्राम का नाम है ३ खंडा ४ जहाँ की किंति ५  
 आगे आनेवाले समय में ७ दुःख में ८ भूमि ॥ ३९ ॥ ९ चैत्र शुद्ध एकम १०  
 जापा ११ चहुन १२ रूपये १३ समय १४ पुत्र ॥ ४० ॥ १५ नाना के घर १६ आठ वर्ष तक

दोइरदुहिता जे वाल्यहीमँ मरी विधिबाम ॥  
 कावलके सूबा गये याहीके उभैरकुमर,  
 तत्थ भये पीछँ मरे तत्थाहि पृथुक ताम ॥ ४१ ॥  
 एह कछु भावी वर्तमान अब जानौं इहाँ,  
 पाये मतभेद दोइअंथलेख भेद परि ॥  
 मानै किते बेद वेद सत्रह १७४४के सालमँहि,  
 धीर अंगरेज ८न उँपायन कितोक धरि ॥  
 साहके निदेसँसौं रिक्काइ बंग सूबापति,  
 अर्घ दैके मोललये तीनग्राम होन अरि ॥  
 मानै किते छप्पन ५६के संवत लये ए मोल,  
 कलकत्ता १गोबिंदोर २छोटानटीनाकरि ॥ ४२ ॥  
 ग्राम कलकत्ते माँहि सत्तरि हुते वहाँ गेह,  
 बहुरि बसायो इननै जो बडोबिसंतार,  
 अंतर तदीयँ फोर्टविलियम १नाम एक,  
 रूचिर बनायो दुर्ग स्वीय पँच्छ रखवार ॥  
 अज्जनके मंडलकी राजधानी एक १ अब,  
 व्है रही पुरीजो सब वस्तुसार दुखहार ॥  
 सो तँहँ बनाइ अवरंग ४० ॥३ साह सम्मतिसौं,  
 देखो अंगरेज ८ भये उतके जमीनदार ॥ ४३ ॥  
 नृप अनिरुद्ध १९६१ के प्रवीरपनको प्रभाव,  
 जान्यो सो इहाँलौं अपकिति अब जानौं जास ॥  
 मान सक पंच वेद सत्रह १७४५ तँपस्य १२मास,  
 बुंदीपति कीनो रँच पट्टनि नगरवास ॥

१ ब्रह्मा की विरुद्धता से २ बालक ३ तहाँ ॥ ४१ ॥ ४ नजराना ५ हुक्म से  
 ६ बंगाले के सूबापति को ७ मूल्य (कीमत) ८ नाम है ॥ ४२ ॥ ९ उसको भीतर  
 १० सुन्दर ११ अपने पक्ष के लोगों की रक्षा के लिये १२ आर्यावर्त की ॥ ४३ ॥  
 १३ अब आगे उसकी अपकृति जानो १४ प्रमाण १५ फाल्गुन १६ कुछ

जासमै सिनसिनी १ रु सिवगिरिश्वारे जट्ट,  
 प्रबल भये जे मंडि मारलूट २ चहुँ ४ पास ॥  
 सो सुनि पुकार अवरंगाबाद बासी साह,  
 आजम ४१ ३ को पुत्र भेज्यो स्वीय नाती जय आस ॥ ४४ ॥  
 याके संग हो न बुंदीसहुको हुकम आयो,  
 ओरहु नबाव १ नृप २ भेजे के घन उफान ॥  
 पट्टनिही पहुँच्यो निदेस साहनतीको हु,  
 थट्ट सह बट्ट आइ मिलियो असुकथान ॥  
 चूक मिलिबैमें करिहो तो दंड पैहो चाहि,  
 हमहि न दोष व्हेंहैं जस १ बसु २ देस ३ हान ३ ॥  
 याबिधि कहाइ साहजादा दरकुंच आइ,  
 जेय जटवारि कीनी सन्निधि रन अजान ॥ ४५ ॥  
 पट्टनिहैं भूप चलयो खटपुर १ रति रहि,  
 कीनौ पुरवंसी २ जाइ दूजो २ दलको मुकाम ॥  
 सीखवारे गेहनसौ सुभट बुलाये संग,  
 विन्नति करी वहाँ किते भृत्यन नियति बौम ॥  
 देखहु रहैंहैं गुनगोरि ३ के दिवस दोइ २,  
 जोध १ अपनैहू आइ मिलिहैं अखिल जौम ॥  
 यातैं पुरबुंदी व्है पधारहु सँजव आप,  
 लौकैवय जुबन नवोढन रस ललाम ॥ ४६ ॥  
 पीछैं पूगिजैहैं करि धाव साहजादेपास,  
 को मरै १ बचै २ को चलिबो है उहाँ रनकाज ॥  
 स्वामी मूढ भृत्यनकी अरज यहैही सुनि,

जाट २ अपने पोते को ॥ ४४ ॥ ३ बहाव से ४ हुकम ५ लेना साहित  
 मार्ग में ७ फलाने स्थान पर ८ घन ९ जाटों का देश १० समीप ॥ ४५ ॥  
 १ भाग्य की २ विरुद्धता से ३ वीर ४ जहाँ ५ शीघ्र ६ जोवन ७ न-  
 दा स्त्रियों का ८ सुन्दर रस लेकर ॥ ४६ ॥ १९ दौड़ २० सर्व सेवकों को

आयो चढि बुंदी अहो हहुँ ११को अधिराज ॥  
 तीजी ३ अरु चौथी ४ तिथि रहिकैं कथिततत्थ,  
 सकल मिलाइ सेना संगरको सजि साज ॥  
 स्वेत १ मधु १ पंचमी ५ छ वेद मुनि इंदु १ ७ ४ ६ साक,  
 बुंदीतैं चलयो जो करि लंबे कुंच अतिवार्ज ॥ ४७ ॥  
 संकेतपै जाइ सुत आजम ४ १ ३ के स्वीय सेना,  
 अखिल निहारी वहाँ न पूगिसक्यो नृप एह,  
 ताके अपराधकी लिखाइ अरजीहु तानैं,  
 पठई पितामहपै नृप यों जनायो नेह ॥  
 पीछैं बडे बेगैं विजेयथान पहुँचत,  
 अमित मिल्यो सो गुनिगोरि ३ पै निबंसि गेह ॥  
 कैदतैं छुडाईहुती सु प्रसू तऊ कुमार,  
 आदरयो न बुंदीपति सूचिकैं रिसअछेह ॥ ४८ ॥  
 मानी प्रतिपै किखनसों प्रातहि प्रधात मच्यो,  
 जँतहु न पूगिसके साहके कतिक जोध ॥  
 जटनको तत्थ बढिगो अति असह जोर,  
 स्वबल सिटायो ताको कुमरहुँ पायो सोध ॥  
 मोहनोत २ माधानी । वहाँ कोटाकी चँमूतैं कढि,  
 काम आयो गोवर्द्धन १ ९ ५ २ मारि घनैं अतिक्रोध ॥  
 त्रिदिवँ गयो सो राजगढको अधीस तहाँ,  
 बाँह गलछारि नारि अच्छैं सीसह सुबोध ॥ ४९ ॥  
 पुव्वहि अनीककी अनी कति मुरत पेखि,

आश्वय २ कही हुई ३ युद्ध ४ चैत्र सुदि ५ अत्यन्त शीघ्रता से ॥ ४७ ॥ अप-  
 ७ औरंगजेब के ससीप ८ विजय करनेवाले स्थान पर ९ थकाहुआ १०  
 एगोर पर घर में निवास करके ११ शाहजादे की माता को ॥ ४८ ॥ १२ शत्रुओं  
 १३ विशेषघात (युद्ध) १४ जहाँ श्री १५ शाहजादे ने १६ माधोसिंहान १७  
 ना से १८ स्वर्ग १९ अप्सरा ॥ ४९ ॥ २० सेना का २१ अग्रभाग

निखसि अनीकतैं अनीक जुत खोइ नाम ॥  
 रोस साहनातीको बिचारि तैसें अनिरुद्ध १९६।१,  
 भीत गीत आयो भजि धामदीन निजधाम ॥  
 धारनमें धसिकैं अकेले १ धीर गोवर्द्धन १९५।२,  
 राख्यो जसभागी बीर कोटाको अधिप राम १९८।३ ॥  
 सेस सेना साहकी इतेबिच पहुँचि संख्य; :  
 जट्टनके थट्ट जीति लैं लयो लारि दुर्जाम ॥ ५० ॥  
 इत अनिरुद्ध १९६।१ कुलधर्म कैंहैं दैं उदक,  
 आयो भजि बुंदी तापैं अमरखं साह आनि ॥  
 काहूँ नैं लयो न पुरपट्टनि कबहु क्योँहुँ,  
 जोपैं लयो छीनि सदा बुंदीके बँटहु जानि ॥  
 भूप बुधसिंह १९७।१ जैसो आत्म ४१।२ मरत भयो,  
 तैसोही यहैहु भयो ब्रीडों भजिबेकी तानि ॥  
 अैसी अपकित्ति उडी दिष्टेकरि जैसी उहाँ,  
 हड्ड ६१ न न पाइ सुरतानैं १८९।१ बिनु धर्महानि ॥ ५१ ॥  
 कोटैकी गई प्रसरि याहाँतैं अतुल किँत्ति,  
 ग्रामनसमेत पुरपट्टनि लहि स्वगेह ॥  
 कोटापति अँन्वयमें पुरुख उभैरन कहे,  
 उनको उदंतैं हयाँ प्रसंगसों सुनहु एह ॥  
 सुतजु मुकुंद १९४।१ को मरयो जब जगतसिंह १९५।१,  
 नीति करि पंचननैं कुल १ क्रम २ हेरि नेह ॥

१. बुरी रीति से निकलकर सेना सहित नाम खोकर २. वादशाह के पति का  
 क्रोध ३. मय का गान करता हुआ ४. उस स्थान को छोड़कर ५. तरवारों की  
 धारा में ६. यश में घेड़ करनेवाला ७. युद्ध में ८. प्रहर ॥ ५० ॥ ९. कुल के धर्म  
 को पानी देकर १०. क्रोध ११. किसी कारण से १२. बुन्दी के बंद में समझकर  
 १३. भागने की लज्जा १४. फैलाकर १५. भाग्य से १६. बुन्दी के राव सुरता-  
 णसिंह के बिना ॥ ५१ ॥ १७. कीर्ति १८. वंश में १९. वृत्तान्त



मोहन१९४१२के मूनुन मनाई तुमरो तखत,  
 तदपि जनाई तिन वास हसरेतो देह ॥ ५२ ॥  
 भाखि अँसँ सबन निवाहयो धुर भीखमको,  
 मोहन१९४१२अनुज कन्ह१९४१३सुत तव स्वामी मानि ॥  
 प्रेमसिंह१९६११बाल धरयो पंचननै कोटापट्ट,  
 आदि कुलरीतिसौ अनुक्रम उचित आनि ॥  
 ताकी सिंसुतामँ तास धात्रीनँ प्रसारि तोरँ,  
 वँयहि घटायो न बढायो कछु लौ कुबानि ॥  
 उँषिकाके अँसन करी१हय२निबल ईखि,  
 कोटातँ निकादिदये करी हय कहु कानि ॥ ५३ ॥  
 मूँधमँ मरयो न सुत पंचम५जो साधव१९३१२को,  
 लोहनतँ जर्जर बच्यो बलिष्ठ आयु लहि ॥  
 पंचननै सो तव किसोर१९७११धरयो कोटापट्ट,  
 करिकँ रहस्य नँय१सूरता२समान कहि ॥  
 ताकै राम१९८१३सुत तीन,  
 पहिले इहाँ दुव२परे गिनि प्रसाद प्रँहि ॥  
 पुत्र तीजो३राम१९८१३सु किसोर१९८१५मान पट्टपति,  
 गो दिवँ बहोरि चिँके घायन उदँके गहि ॥ ५४ ॥  
 पुत्र तसं तीजो३रामसिंह१९८१३त्व वैठो पट्ट;  
 जेठे दुव२भ्रात रहे ईरखा बहु जनात ॥  
 पै जो कहयो जनकँ विचारि निजदेस प्रभु,  
 मिँछहु पटाँ दै मान्यो ताहिकोँ ज्योँ तँस तात ॥

१पुत्रों ने २तोभी३शरीर४कल के साथ५बालपन में६धाय ने७प्रताप८स्वर९कु  
 रीति१०अल्प धान्यके११भोजन से हार्थी और घोड़ों को निर्मल देखकर॥५५॥  
 १२युद्ध में १३ एकान्त (गुप्त) १४ नीति १५प्रसाद के रूप में १६स्वर्ग १७अपकृत  
 हुए १८घावों से १९आगे आनेवाले समय का कर्म फल उत्पन्न करके ॥५६॥  
 २० पिता २१ बादशाह ने २२ उसके पिता को माना था निम्नीप्रकार

सोही रामसिंह १९८।३इहाँ कोटापुर सासक हो,  
 उक्त भूप १हैं पै वर्तमान अब जानौं बात ॥  
 पाई एक १भाई सेंटि यानैं पुरी पट्टनि सो,  
 बुंदीपति कीनौं जयजसरको जँह बिघात ॥ ५५ ॥  
 भागे सब हाडे ६१ पहिलैं तो यह रूपांत भई,  
 बुंदी देस १कोटादेस २सोक भो बिनु विसास ॥  
 तोहनपुरेस कविराज हरनाथ तहाँ,  
 गोवर्द्धन १९५।२भागो सुनि छोरयो लैन मुखग्रास ॥  
 भाख्यो यौं परिच्छा हम कीनी सो बितथ भई,  
 तो अब न जीवैं बजि चारन घटक तास ॥  
 अन्नबिनु या कविकौं असेँ कडे तीन ३अंह,  
 चोथे ४दिन पाई ज्यौं भई त्यों चारमुख चास ॥  
 हाडे ६१ और भागे पै न भागो सुत मोहन १९४।२को,  
 खेतपरयो गोवर्द्धन १६५।२जट्टन घनेन खाइ ॥  
 असो भयो निश्चय लयो तव सुकवि अन्न,  
 जो सु भजिआवैं निहचे तो यह मरिजाइ ॥  
 तूटिपरयो ताकाँ जानि प्रेत्युत सुमह तानि,  
 तानैं कविता करि परिच्छा जगकाँ जताइ ॥  
 कोटापति रूतिभोजी जीवन विचारयो कवि,  
 काव्य जाके डिंगल गिराँमैं अजौं चमकाइ ॥ ५७ ॥  
 साह असेँ पट्टनि उतारी अनिरुद्ध १९६।१सन,  
 कोटापति राम १९८।८को मिली सो सबग्राम साथ ॥

१पति २वदले में देकर ३ नाश ॥ ५५ ॥ ४प्रसिद्ध ५विश्वास ६ थूढ़ापुर का पति  
 कवि महियारिया जाला का चारण ७ परीक्षा ८ झूठी ९ इस चारणपन  
 का शरीरधारी बजकर १० दिन ११ हलकारों के मुख से, १२ खबर सुनी  
 ॥ ५६ ॥ १३ डल्ला १४ अष्ट उत्सव करके १५ परीक्षा १६ जीविका १७ खानेवाला

यातैं हमरेहु ग्राम खटहहि लवान१आदि,  
 पदनके संग गये पाथमैं ज्यों मिलि पाथ ॥  
 तब खटहए रहे वरोदिया नगर तंत्रै,  
 हरिना१प्रमुख अल्प प्रभुके कविन हाथ ॥  
 पहु बुधसिंह१९७१संग स्वकवि कहे न पीछैं,  
 यातैं सब खोइराख्यो हरिना१स्वगृह आर्थ ॥ ५८ ॥  
 सोपै राख्यो हमरे उमेद१९८१४नृपही सँदय,  
 नाँतो व्है दलैल१९८१२के रहे हे इम जातो नाम ॥  
 एह कहु भावी३वर्तमान२ प्रभु जानों अब,  
 कोटापतिके गये लवान१मुख यों छेदगाम ॥  
 जाइ तब कोटा रामसिंह१९८१३कोँ नँति जनाइ,  
 छुत्तपन ठानि कह्यो लेहु न स्वकवि धाम ॥  
 राम१९८१३कह्यो वृत्ति हमनैं तो सहियारिय२न,  
 सोँपी तुमतो१नटाइ क्यों अब इत सँकाम ॥ ५९ ॥  
 माधव१९३१२हमारे प्रपितामह उचित मानि,  
 तुमहि बुलाये पै न आये वहाँ प्रसभ तानि ॥  
 भाख्यो हम बुंदी तंत्रै कितकित हाहा भ्रमै,  
 माधव१९३१२तदपि लायो खंधिल । हिं निज मानि  
 बुंदी१ओ लवान२जेवो वरज्यो न मान्यो बलि,  
 ईससौ अधिक दीनी गोठि जयसिंह आनि ॥  
 उद्धत समुक्ति मान । खंधिल । तनय यातैं,  
 वृत्ति दीनी ओरनकोँ तुमरी लखि कुवानि ॥ ६० ॥

१ जिसप्रकार पानी में पानी मिलजावे तिसप्रकार मिल गये २ आश्रीन ३ हरणां आदि ४ आप के कवियों के हाथ से ५ राजा बुधसिंह के साथ ६ अपने घर का धन ॥ ५८ ॥ ७ दयावान् ८ बुधसिंह के विशाधी दलैलसिंह के हाँकर रहे थे इस कारण ९आदि १०नजना ११धृतिना करके १२कामना सहित क्यों होते हैं ॥ ५९ ॥ १३ दृष्ट करके १४ आश्रीन १५नाम है १६चञ्चल ॥ ६० ॥

आई अन्न पट्टनि हमारे तुम यातैं आई,  
 खोये जे लवान<sup>१</sup> आदि राखेचहो ग्राम खटव<sup>॥</sup>  
 तोतो आई अबहु हमारे होहु बुंदी तजि,  
 बलि सु न मानि छोरि पट्टनि प्रदेस बट<sup>॥</sup>  
 आवत बुलाइकैं लवानमें हवेलि<sup>१</sup> अरु,  
 पुहविशहवालेकी दईदे कछु द्रव्य<sup>१</sup> पटै<sup>२</sup> ॥  
 सो मुनि दई न लहि पट्टनिहू बुधसिंह<sup>१</sup> ९७१,  
 पछु दुवसंगी काँकताराज्याँ करे प्रकट<sup>॥</sup> ६१ ॥  
 पीछैं गई बुंदी बुधसिंह<sup>१</sup> ९७१ नृपके प्रसाद,  
 तब जो भई सो कही कहिहैं बहुरि तौम ॥  
 राखि पै हवेली<sup>१</sup> ओ हवाला<sup>२</sup> यों लवान<sup>१</sup> में रु,  
 आये उपालंभ लहि बुंदीको छवि ललाम ॥  
 इत अपराध अनिरुद्ध<sup>१</sup> ९६१ को भजत इहाँ,  
 जानि अवरंग<sup>१</sup> ४०३ अतिकोपको बिखम जाँम ॥  
 भेज्यो नृप कावलके सूबा अहदीन भेजि,  
 दीनीसुद्धि जाहु नदे प्रत्यह हजार<sup>१</sup> १००० दाम ॥ ६२ ॥  
 वज्रसो हुकम यहै साहको सुनत बुंदी,  
 धार भय माच्यो ज्यों अनारिं भखैं जेठ<sup>३</sup> घाम ॥  
 भाख्यो भूप सुजर्जन<sup>१</sup> ९९०१ नरेस करि कोल सात<sup>७</sup>,  
 तोरयो गुडवानाँ अकवर<sup>३</sup> ९११ के प्रसाद तौम ॥  
 भोज<sup>१</sup> ९११ रतनेस<sup>१</sup> ९९२ सत्रुसह<sup>१</sup> ९९१ अरु भाऊ<sup>१</sup> ९९५ भूप,  
 काहुन अटकैं लंघी स्वीयहुं विगारि काम ॥

१ पट्ट २ सुमि ३ वज्र ४ काक पत्ती की दृष्टि आगे पीछे दोनों ओर जाती है  
 ऐसे ॥ ६१ ॥ ५ वहाँ कहेंगे ६ ओलंभा लेकर ७ जहाँ ८ सवार ९ प्रति दिन  
 (हमसे) ॥ ६२ ॥ १० ज्येष्ठ मास की धूप में बिना पानीवाली मच्छी के समान  
 ११ वहाँ १२ नटकनड़ी १३ अपर्णा

हारि अब जेहों कहा कहिहैं सकल हाइ,  
 स्वीयेन वहाँ सुचि धुव रहिहैं गयेही धाम ॥ ६३ ॥  
 पाउसको अयो अनिरुद्ध १०६ १ नृप तोहू पेखि,  
 प्रतिदिन बंड सादको जो तराठाँ पुगाइ ॥  
 आठिन ७लों वारह हजार १२००० अहदीन अपि,  
 भीत सीत पानी बंसबिरुदन देवो भाइ ॥  
 लघु दुवरासी ओ खवासि कछु संग लैकैं,  
 जीवत मृतक भयो अटक परत्र जाइ ॥  
 राजा अठ्ठ पंचक १ अमीरखानपास रहि  
 सुजर्जन १०१ को कोविंद विगायो सर्वसों सिटाइ ॥ ६४ ॥  
 छठे ६ अठ्ठलें तैंहुँ कुदिष्ट करि रोग छाड़,  
 मास सुचि ४ मेचक २ द्वितीया रंगयो भूप मरि ॥  
 बुंदी लाये गानि १ न खवामि २ न सह विभूति,  
 कथित प्रामन उहाँ भूपतिको दाह करि ॥  
 दुर्जन १०६ १ दवायो कुँसलारुप १ मो सिलहदार,  
 महाराज २ नाथाउत साकलहु मज्झ पारि ॥  
 नयन कलंव सुनि इंदु १ ७५ २ सक बुंदीनैर,  
 सहसा अमंगल अनिष्ट मय्यो भे प्रसरि ॥ ६५ ॥

( चूडात दोहा )

बह ६ १ न इन अनिरुद्ध १०६ १ हुव, अटक पार विनु अंग अमंगल  
 इत बुंदी सब आकुले, सनु भये इहि संग समंगल ॥ ६६ ॥

१ अपने लोगों ने ॥ ६३ ॥ २ जालसा करने तथा दंड लेने को भेजे जाते थे  
 ३ लोगों को अटका कहने से जो राजपूताने में जालसा का नाम प्रसिद्ध  
 हो गया है ४ सच का सिद्ध होकर भेजेकी सुनि को पानी देना कहा ४  
 अटक नदी के पार जानने १ पांच वर्ष १ सुजर्न की पदवि ७ वर्ष में ॥ ६४ ॥  
 १ गुरे भाग्य में ६ पचास यदि दोज के दिन १० कुशलनिष्ठ नाम का १२ मध्य  
 १५ भय ॥ ६५ ॥ १३ हाथों का राजा १४ मंगल नातिन ॥ ६६ ॥

पुर्व१ मरी रानी प्रथम१, सह जेहोनि २हुतीहि सेस प्रसव ॥  
 उत न जरी न जरी इतहु, तीस ३० खवासि हुई ससंग तव ॥ ६७ ॥  
 महाराम१ सालक कुमति, पीछें सालम संग भयो पर ॥  
 सिलहदार१ कुसैलाख्य१ सह, आयो लै सब भूति इहाँ अर ॥ ६८ ॥  
 ॥ दोहा ॥

अटक पार मरतहि अधिप, हुव बुंदिय हाकार ॥  
 सिमु दुव २मातुल सदन सन, बुल्ले बिदित बिचार ॥ ६९ ॥  
 क्रमिंत चरित अनिरुद्ध१ ९६११ का, अल्पहि हो जिम आनि  
 कथन जथाश्रुत तिम कहिय, पुनि श्रुत १ लेख २ प्रमानि ॥ ७० ॥  
 ॥ ॥

सुपहु रचे सबही महलान सिर ३ इहि अनिरुद्ध महल १ अभिधान ॥  
 सबसन उच्च अजि २ छत्रि ३ न सह बहु तुंगित १ करि बहुत विधाना  
 गिरिगंढ द्वार अवधि सन सुभ गिनि क्रमकरि सबपुरविच पैरिकूट १  
 पाउस जल कर्हस दुख परिहरि लिय पहिलैं डम करि जस लूटा ॥ ७१ ॥  
 पुर कापरनि तथाहि कुमरपन प्रथित रुचिर बिरचे प्रासाद ३ ॥  
 नृपधातैर्यहु देव १ सनामक बाढिय जस जग मुख संवाद ॥  
 निज आख्या करि देवपुरा १ नवसाखापुर यह रचिय सयान ॥  
 बापी २ उपवन ३ महल ३ बनाइ रूथितिकिय तँहँ सुहिगिनि निजथान ॥  
 डक १ छत्रिय १ ५ बिरचिय तँहँ अनुपम चउरासिय थंभन चित चौर ॥  
 थिर जैसी कहियत बिरले थल किय तैसी प्रमुदित करि कार ॥

१ जादवणी सहित २ पति के साथ ॥ ६७ ॥ ३ कुशलसिंह के साथ ४ ऐश्वर्य  
 प्रसीध ॥ ६८ ॥ ५ मामा के घर ७ से उचित विचार से बुलाए ॥ ६९ ॥ १ चल  
 ताहुआ चरित्र १० सुनेहुए और लिखेहुए के अनुसार ॥ ७० ॥ ११ महलों के  
 ऊपर १२ चौक १३ ऊँचा १४ पर्वत के गढ के दरवाजे की सीमा से १५ नगर  
 का द्वार १६ वर्षा के जल के कीचड़ का दुःख मिटा कर ॥ ७१ ॥ १७ प्रसिद्ध  
 १८ धाय भाई १९ कहलाया २० अपने नाम से २१ शहर के बाहर का पुरा  
 ॥ ७२ ॥ २२ सुन्दर २३ कारीगरों (शिल्पियों) ने

विरचिय तिम दूजीरछत्री२।६वर पुनि तारागढ प्राच्यं१प्रदेस ॥  
कहियत सुत सजनक आख्या करि इम तबतैं छलिन जुग२एस ७३  
॥ दोहा ॥

पहुँ बुंदिय बाजार पथ, सिला खुग किय सँज्ज ॥  
पाउसमैं दुख पंकको, यातैं मचत न अँज्ज ॥ ७४ ॥  
किंते कहत खलु यह खुरा१, मंजु रच्यो नृप माइ ॥  
किमहु होहु पै कहुँमैं न, जिहिँ करि अबलगि जाइ ॥ ७५ ॥  
तज्यो देह नृप रचित जँहँ, अज्जहु चौराँ आहि ॥  
रच्यो चरित अनिरुद्ध१९६।१को, बिधि क्रम वँत निबाहि ॥  
जिहिँ संग न डक्क१हु जरी, अबला रानिन आदि ॥

यह अचिउँज पिक्खहु अधिप, उँज्जिय रीति अनादि ॥ ७७ ॥  
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
पत्यनिरुद्धसिंहचरित्रे ज्ञातदक्षिणागतानिरुद्धहाडादुर्जनसिंहबुन्दीवि-  
जयन १, यवनेन्द्रसेनासहायप्रद्रावितदुर्जनसिंहानिरुद्धसिंहबुन्दी-  
पुनराधिगमन २, क्रीतकलिकातानगरांगलफोर्टविलियमदुर्गनिर्मा-  
णा ३, सनसनीकजट्टयुद्धानिरुद्धसिंहपलायन ४, तद्युद्धकोटासेना-  
१ श्रेष्ठ २ तारागढ का पूर्व दिशा में ३ पिता सहित पुत्र के नाम से ॥ ७३ ॥ ४ राजा  
ने ५ पत्थर का खुरा तयार कराया ६ कीचड़ का ७ आज [ इस समय ] ॥ ७४ ॥  
८ निश्चय, ९ यह सुन्दर खुरा राजा की माता ने बनाया १० कादा [ कीचड़ ]  
॥ ७५ ॥ ११ शमशानों का १२ मंदिर १३ चार्ता का निर्याह करके  
॥ ७६ ॥ १४ स्त्री १५ आश्चर्य १६ अनादि रीति का छोटी ॥ ७७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के नृपति  
अनिरुद्धसिंह के चरित्र में अनिरुद्धसिंह को दक्षिण में जानकर हाडा दुर्जन-  
सिंह का बुन्दी विजय करना १ बादशाही सेना के बल से दुर्जनसिंह का भ-  
गाकर अनिरुद्धसिंह का बुन्दी पीछा लेना २ और अंगरेजों का कलकत्ता नगर  
मोल लेकर वहाँ फोर्टविलियम नामक गढ़ बनाना ३ सनसनीवाले जाटों के  
युद्ध में अनिरुद्धसिंह का भागना ४ इसी युद्ध में कोटा के सेनापति गोवर्धन

॥ पहिले समय में दाय स्थान पर मंदिर बनते थे अब उसके स्थान में छत्रियाँ बनती हैं किन्तु जोधपुर में  
तो शमशानों में अब भी मंदिर ही बनते हैं ॥

पतिगोवर्द्धनप्रदवश्रवणास्वपरीक्षानृतत्वहेतुकृतानशनव्रततूहणापु-  
रीयमहियारियाचारणाहरनाथस्य रणाहतगोवर्द्धनश्रवणात्सर्वपुरः-  
सराशनकरणा ५, रणापलायनापराधहतानिरुद्धपट्टनप्रान्तकोटा-  
धिपप्रदान ६, प्राप्तदण्डकृतसुर्जनसंधानिरुद्धसिंहयवननेन्द्रसेवासि-  
न्धुसरित्परतटगमन ७, उपितपञ्चदायनानिरुद्धसिंहतडूभिमरणा-  
तत्समयनिर्मितस्थानसूचनमेकादंशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदितोऽष्टत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३८ ॥

दाम का भागना सुनने के कारण अपनी परीक्षा को झूठी मानकर मरने के  
कारण अन्न जल छांडनेवाले तूहणपुर के महियारिया चारण हरनाथ का गो-  
वर्धन का युद्ध में काम आना सुनकर उत्सव करके अन्न जल लेना ५ युद्ध में  
भागजाने के अपराध से अनिरुद्धसिंह से पाटण का परगना ग्वालसे होकर  
कोटा बालों को मिलना ६ बादशाह से दंड पाकर सुर्जन के किये हुए कोल को  
तोड़कर अनिरुद्धसिंह का शाही सेवा में अटक नदी के पार जाना ७ पांच  
वर्ष रहकर अनिरुद्धसिंह का वहीं पर मरना और अनिरुद्धसिंह के समय के  
बने हुए स्थानों की सूचना का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि  
दो सौ अड़तीस २३८ मयूख हुए ॥

